अभिधान-अनुशीलन

(पुरुषों के हिन्दी व्यक्तिवाचक नामों का वैज्ञानिक विवेचन)

डॉ० विद्याभूषण विभु,

एम० ए०, डी० फिल०
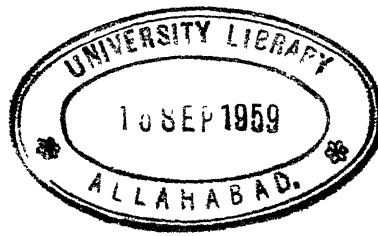
हिन्दुस्तानी एकेडेमी

उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डी० फिल० उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबंध
का संशोधित, परिवर्तित एवं
परिवर्द्धित संस्करण

नाम-शास्त्र का एक मौलिक ग्रन्थ

प्रकाशकीय

"अभिधान अनुशीलन" हिंदी प्रदेश में प्रचलित पुरुषों के नामों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है। भाषाविज्ञान से सम्बन्धित इस विषय का अपने देश में कदाचित् यह प्रथम अध्ययन है और इस क्षेत्र की संभावनाओं पर पूर्ण प्रकाश डालता है।

प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के तत्त्वावधान में डा० विद्याभूषण "विभु" ने इस दुरूह एवं नीरस विषय पर खोज कार्य करना प्रारम्भ किया। जीवन की प्रौढ़ावस्था में ऐसे जटिल एवं अछूते विषय पर खोजकार्य करना बहुत कठिन होता है। वीतरागी होकर उन्होंने कार्य किया और जब नौकरी से अवकाश ग्रहण करने का समय आया तो प्रायः उसी के लगभग इस विषय पर डी० फिल० की उपाधि प्राप्त की। वास्तव में डॉ० 'विभु' का धैर्य तथा अध्यवसाय प्रशंसनीय है।

गम्भीर एवं नीरस विषय होने पर भी "विभु" जी ने इस वैज्ञानिक अध्ययन को रोचक बनाने का प्रयत्न किया है। डा० सुनीतिकुमार चैटर्जी तथा डा० सिद्धेश्वर वर्मा जैसे विद्वान परीक्षकों ने इस ग्रंथ की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद से इस महत्त्वपूर्ण ग्रंथ का प्रकाशन संस्था के गौरव को बढ़ाता है। आशा है हिन्दी के विद्वान एवं भाषा-सम्बंधी खोज कार्य करनेवाले विद्यार्थी इसे उपयोगी और रोचक पावेंगे।

हिन्दुस्तानी एकेडेमी,
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

धीरेन्द्र वर्मा
मंत्री तथा कोषाध्यक्ष

विषयानुक्रमणिका

प्रबन्ध-परिचय (एक-चौबीस)

भाग १

नाम-निरूपण (१-६३)

भाग २

नामों का विश्लेषणात्मक विवेचन (६७-३५९)*

* गणना—विश्लेषण—विशेष नामों की व्याख्या—समीक्षण—इन मुख्य शीर्षकों को अनेक उपशीर्षकों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक प्रकरण में अध्ययन का अधिकांश यही क्रम रखा गया है।

भाग ३

हिन्दी नामों में भारतीय संस्कृति (३६३-३९८)

भाग ४

परिशिष्ट

शोध सम्बन्धी अन्य तथ्य (४०१-४६०)

प्रबन्ध-परिचय

विषय-प्रवेश—अभिधान-अनुशीलन एक नूतन, जटिल एवं विस्तृत विषय है। अभी तक किसी भारतीय वाङ्मय में इसकी कोई शास्त्रीय मीमांसा नहीं हुई है। गृह्यसूत्र केवल नामकरण-संस्कार का विधान बताकर ही मौन साध लेते हैं। देश के आधुनिक विद्वानों ने भी अभी तक इस विषय पर कोई गवेषणात्मक प्रकाश नहीं डाला है। अतः कोई भी प्राचीन एवम् अर्वाचीन, परिष्कृत तथा प्रशस्त पथ न होने से वर्ण्य विषय की दुरूहता अत्यधिक गहन एवं दुर्बोध हो जाती है। दूसरी बाधा है अवकीर्ण अभिधानों की संकलन सम्बन्धी असुविधाएँ। एक अन्य अंतराय विषय की प्रतीयमान नीरसता भी है। साहित्य की सी सरसता अथवा काव्यानंद का सा कोई आकर्षण यहाँ प्रतीत नहीं होता। इस अभिनव विषय से अनभिज्ञ होने के कारण कुछ व्यक्ति इसकी उपादेयता पर भी आशंका करने लगते हैं। किसी भी प्रकार के तत्त्वान्वेषण में अनुसन्धानक को पग-पग पर प्रत्यूहों से संघर्ष करना पड़ता है। विविध अनिष्टों-अरिष्टों के घात-प्रतिघात सहने पड़ते हैं। शारीरिक श्रम एवं मानसिक विक्रम तो इसके आनुषंगिक अंग हैं ही, आर्थिक आपत्तियों का आक्रमण भी प्रायः आरंभ हो जाया करता है। इस अन्वेषक के साथ भी इस शाश्वत नियम का कोई अपवाद नहीं बरता गया। अथ से इति तक इसे भी नाना प्रकार के विघ्नों-प्रतिबंधों से द्वंद्व करना पड़ा है। विकट संकटों और कंटकों में से आना-जाना पड़ा है। असमंजस, निराशा, विवशता, निरुत्साह आदि अनेक उपसर्ग आस-पास ही सर्वदा चक्कर लगाते रहे हैं। परन्तु यह सोचकर कि खनिक परुषप्रस्तराच्छादित भूगर्भस्थ महार्घ्य मणियों को कठोर परिश्रम करने पर ही निकाल सकता है, बहुमूल्य दुर्लभ मोतियों को प्राप्त करने के लिए मरजीवा प्राणापहारी झष-नक्र-घड़ियाल पूरित दुरत्यय समुद्र में डुबकी लगाता है तथा अगोष्पद दुर्लंघ्य कान्तार में प्रवेश करने पर ही उसकी उपादेय उपज का उपयोग किया जा सकता है—प्रतिकूल परिस्थितियों के होते हुए भी एक साधन-साधना-विहीन व्यक्ति यह भगीरथ-प्रयास करने के लिए इसलिए उद्यत हो गया कि कदाचित् वह भी कुछ मौलिक तथ्य संसार के समक्ष प्रस्तुत कर सके। आरम्भ में जो दुरवेश्य विषय शुष्क तथा रुक्ष दिखलाई देता था, प्रवेश करने पर शनैः-शनैः वह सरस प्रतीत होने लगा। इसमें आनंदोल्लास के साथ-साथ क्रीडाविलास भी पर्याप्त मिलने लगा। कौतूहलोत्पादक कथाएँ, अद्भुत प्रथाएँ, विनोदपूर्ण वार्ताएँ, विस्मयकारी घटनाएँ, रहस्य गर्भित उद्भावनाएँ एवं आश्चर्यजनक निष्कर्ष उत्तरोत्तर उद्भासित होने लगे। देश के वृहत् भूभाग में बिखरे हुए इन नामों को क्रमबद्ध कर, उनमें सुरक्षित भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति को रम्य रूप देकर प्रकाश में लाना ही इस शोध का चरम लक्ष्य है।

हिन्दी नामों का क्षेत्र—प्रस्तुत अध्ययन का विषय हिन्दी प्रदेशीय पुरुषों के वर्तमानकाल में प्रचलित हिन्दी नाम ही हैं। इस संग्रह में स्त्रियों तथा मराठी-द्राविड़ आदि अन्य भाषा-भाषियों के नाम सम्मिलित नहीं किये गये हैं। यदि ऐसा न किया जाता तो विषय अत्यन्त विस्तृत एवं जटिल हो जाता। हिन्दी के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, मध्यभारत विन्ध्यप्रदेश, राजस्थान, विहार, दिल्ली तथा पूर्वी पंजाब सम्मिलित हैं। सामान्यतः जैसलमीर से भागलपुर और अम्बाला से रायपुर का प्रदेश हिन्दी सीमान्तर्गत समझा जाता है।[1] काल के विचार से भी यह संग्रह एक व्यापक युग को समाच्छादित कर रहा है। सहस्रों वर्ष की इस परम्परा में अनेक पुरातन नाम तिरोहित एवं अनेक नूतन नाम आविर्भूत हुए। धार्मिक उत्क्रान्तियों, सामाजिक विप्लवों एवं राजनीतिक

---

[1] हिंदी के राष्ट्रभाषा हो जाने से इसका क्षेत्र अब उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है।

उपद्रवों से सुरक्षित पूर्वकाल के कतिपय नाम आज भी उसी रूप में दिखलाई दे रहे हैं। कुछ नामों ने अपना चोला बदल दिया है और अब वे विचित्रालय के निर्जीव पशुपक्षी एवं वनस्पति के शिलाजात रूप (Fossil) के सदृश भाषाविदों के अनुसन्धान की सामग्रीमात्र रह गये हैं। थोड़े से नामो के अर्थों में भी अंतर आ गया है। समय के प्रभाव से कुछ नये नाम जन्म ले रहे हैं*। इस प्रकार भौगोलिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से यह संकलन अत्यन्त व्यापक एवं महत्त्वपूर्ण है।

नाम भी शब्द ही हैं—नाम वह सांकेतिक एवं सार्थक शब्द अथवा शब्द समूह है जिससे किसी सत्ता का परिचयात्मक बोध होता हो। सत्ता के मूर्तामूर्त दो रूप होते हैं। प्रत्यक्ष पदार्थ के नाम के सदृश विचार, भाव, गुणादि अमूर्त एवं अदृष्ट रूपों के भी नाम हो सकते हैं। सार्थक ध्वनि-संकेत को ही शब्द माना गया है।[1] जिस प्रकार भिन्न-भिन्न अर्थों के लिए भिन्न-भिन्न ध्वनियाँ होती हैं, उसी प्रकार भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के अवबोधन के लिए भी भिन्न-भिन्न ध्वनि-संकेत होते हैं जिन्हें नाम कहते हैं। ये नाम-ध्वनियाँ भी शब्द (या शब्द-समूह) ही हैं अर्थात् नाम शब्दों से ही बनाये जाते हैं। शब्द और नाम में कोई अंतर नहीं है। लिखित या लिपिबद्ध ध्वनि अर्थात् भाषा परम्परागत, स्थायी एवं नित्य होती है। भाषण अर्थात् उच्चरित या कथित ध्वनि पदे-पदे, पले-पले परिवर्तित होती रहती है। शब्द और नाम दोनों ही ध्वनि-संकेत हैं। दोनों की रचना वर्णों से होती है। रूप तथा अर्थ में भी दोनों में बहुत कुछ समानता रहती है। भाषा की दृष्टि से दोनों के तत्सम, अर्द्ध तत्सम, तद्भव, देश्य (देशज) तथा विदेशी रूप होते हैं। नाम इन रूपो के मिश्रण भी हो सकते हैं। ऐसे मिश्रित नामों को वर्णशंकरी नाम कह सकते हैं। नामों मे भी शब्दों के सदृश समाहार तथा निष्पत्ति—दोनों विधियो से विकास होता रहता है। दोनों की प्रकृति विकृतिशीला है। देश अथवा समाज के उत्थान-पतन के सदृश शब्दों में भी उत्कर्ष-अपकर्ष होता रहता है। यही दशा नामों की भी है। नामों में भी दो प्रकार के विकार पाये जाते हैं। ध्वनि-परिवर्तन के कारण उनके रूप बदलते रहते हैं। दूसरा परिवर्तन उनके अर्थों में देखा जाता है। अर्थ भी प्रायः स्थायी नहीं रहते हैं। पर्यावरण तथा परिस्थिति के अनुसार वे उच्चावच पद को प्राप्त होते रहते हैं। दोनों में भेद केवल यह है कि शब्द नित्य माना गया है[2] और किसी-न-किसी अर्थ से सम्बद्ध रहता है। परन्तु यह अर्थ-सम्बंध नित्य नहीं, उसके अर्थों में परिवर्तन होता रहता है। नाम अनित्य है और अर्थ के स्थान पर सत्ता या सत्त्व का व्यंजक होता है।

---

[1] देश-काल, स्थिति-परिस्थिति, पर्यावरण-वातावरण, वक्ता-श्रोता, मनोभाव आदि अनेक कारणों से एक ही भाषाध्वनि की कई-कई विकृत भाषण-ध्वनियाँ श्रवणगोचर होती रहती हैं। मुखयंत्र में दोष आ जाने से भी मनुष्य हकलाने, तुतलाने, मिनमिनाने, नकियाने या गुंगियाने लगता है। ऐसी सदोष भाषण-ध्वनियों को शब्द शास्त्र ने कोई मान्यता नहीं दी है। अहिंदियों के दूषित उच्चारण भी ध्वनि विज्ञान से कोई सम्बन्ध नहीं रखते। पागल का अस्पष्ट प्रलाप और नशेबाज की निरर्थक बड़बड़ाहट का भी कोई मूल्य नहीं है। ब्रेल (Braille) तथा संकेत (सूक्ष्म) लिपियों की लिखावट में भिन्नता होते हुए भी उनके उच्चारण में कोई अन्तर नहीं होता।

[2] शब्द को मीमांसा नित्य और न्याय अनित्य मानता है।

नित्यस्तु स्याद्दर्शनस्य परार्थत्वात्—पू० मी० १।१८

आदिमत्वादैन्द्रियकत्वात् कृतकवदुपचाराच्च—न्याय० २।१३

भारतेतर एक अन्य मत का उल्लेख अन्यत्र किया गया है।

(देखिए भूमिका के पृष्ठ ३ में नाम और शब्द)

* अमेय नाम का जन्म अभी हाल में ही हुआ है [११ अगस्त १९५८]

नाम का व्याकरण से सम्बंध—पाणिनि आदि प्राचीन व्याकरणाचार्यों ने शब्द के नाम आख्यात तथा निपात—ये तीन प्रकार माने हैं। नाम यहाँ पर बहुत व्यापक अर्थ में लिया गया है। इसके अन्तर्गत क्रिया विवर्ज्य, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषणादि सभी कुछ आ जाते हैं। निपात भी विकलांग संज्ञा ही हैं। यत्किंचित् विभिन्नत्व होते हुए भी व्यवहार में नाम तथा संज्ञा पर्याय से हो गये हैं। व्याकरण में नाम को संज्ञा कहा गया है। मूलतः संज्ञा (सम् + ज्ञा) शब्द में अर्थ के अतिरिक्त नाम-संकेत, व्यक्ति-ज्ञानादि अनेक बातें सम्पृक्त रहती हैं। अतः व्यक्तिवाचक संज्ञा नाम-संकेत के साथ-साथ व्यक्ति का परिचय भी देती है। कृदंत, तद्धितांत, समास, एकशेष तथा नामधातु—शब्द की इन पंच वृत्तियों में से नाम-रचना में केवल प्रथम तीन वृत्तियों का ही समावेश पाया जाता है। एकशेष का मिथ्याभास भावातिरेक के कारण लघ्वीकृत दुलार आदि के नामों में मिल सकता है। परन्तु यह वृत्ति के एकशेष से भिन्न है। नामधातु-वृत्ति का कोई उदाहरण नामों में अभी तक देखने में नहीं आया है। शब्दों तथा नामों के अध्ययन से अनेक महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक तत्वों एवं सांस्कृतिक तथ्यों की सिद्धि होती है। अधीत तत्वों से भाषाविज्ञान, नामशास्त्र, मनोविज्ञानादि अनेक विद्याओं की सृष्टि, सम्पुष्टि एवं संवर्द्धन में सहायता मिलती है और सम्प्राप्त तथ्यों से सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास का सर्जन होता है।

साकृति-निराकृति-नाम—नाम किसी सत्ता के अस्तित्व को व्यक्त करता है। सत्ता किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, जाति (वर्ग) अथवा धर्म (गुण, भाव, दशा, व्यापार) की होती है। सत्ता की इकाई की वैयक्तिकता के बोधक शब्द व्यक्तिवाचक, इकाई के वर्ग की ओर संकेत करनेवाले शब्द जातिवाचक और इकाई के धर्म व्यंजक शब्द भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं। ये क्रमशः इकाई के व्यक्तित्व, जाति तथा गुणों की अभिव्यंजना करते हैं। जातिवाचक तथा भाववाचक संज्ञाएँ भी व्यक्तिवाचक नाम बनाने में सहायक होती हैं। नाम अनेकार्थी शब्द है जो परिचय, प्रसिद्धि, संज्ञा, सुन्दर नाम आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है। कहीं कहीं नाम ईश्वरवाची भी होता है। नाम वह माध्यम है जो नामी तथा नाम-प्रयोक्ता या प्रवक्ता के बीच सम्बंध स्थापित करता है। इसलिए नामाश्रयी अथवा नाम जप करने-वाले भक्त भगवान के नाम को शब्दब्रह्म कहते हैं। वे नाम का यह निर्वचन करते हैं—बलान्नमयतीति नाम। प्रभु का नाम भक्त के चित्त को नामी के चरणों में बलपूर्वक नमन करा देता है—नाम नामाश्रयी (संबोधक) को नामी तक पहुँचा देता है। यही नहीं, भक्त तो नामी तथा उसके नाम में कोई भेद नहीं समझता।[1] नाम जब किसी सत्ता या सत्त्व से संबद्ध रहता है तो उसे साकृति (Embodied) कहते हैं और जब उसका सम्बन्ध किसी संज्ञी से नहीं रहता—केवल ध्वनिमात्र होता है—तो उसे निराकृति (Disembodied) कहते हैं।[2] ये शब्द-ध्वनियाँ अथवा शब्दरूप (निराकृति-नाम) केवल शब्दशास्त्रियों (वैयाकरणों तथा भाषावैज्ञानिकों) के परिशीलन के साधन मात्र होते हैं। नामशास्त्र या इतिहास से उनका कोई सम्बन्ध नहीं रहता।

पाश्चात्य विचारधारा[3]—यूनानी भाषा में व्यक्तिवाचक संज्ञा के लिए (Ovoua Kupiov) (Onoma Kurion) व्यवहृत होता है जिसका लैटिन रूपान्तर Nomen Proprium यथार्थ नाम के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। सामान्य नाम या जातिवाचक संज्ञा के लिए ग्रीस निवासी πpoonyopia (Appellation) का प्रयोग करते हैं। जर्मन भाषा में संज्ञा के लिए Nomen

---

[1] नाम चिंतामणिः कृष्णश्चैतन्य रसविग्रहः।
पूर्णः शुद्धो नित्यमुक्तोऽभिन्नत्मा नामनामिनोः॥

[2] साकृति—निराकृति—नामों के विशेष विवरण के लिए नाम निरूपण (पृ० ३२) देखिए।

[3] संकलित (The Theory of Proper Names)

(Noun) और नाम के लिए Namen (Name) दो पृथक्-पृथक् शब्द व्यवहार में आते हैं। यूनान का प्रसिद्ध विद्वान् डायोनीसियस थ्रेक्स (Dionysius Thrax) संज्ञा या नाम से पत्थर जैसी सत्ता (वस्तु) या शिक्षा जैसी क्रिया, व्यापार अथवा शक्ति का अभिप्राय ग्रहण करता है। ये संज्ञाएँ (नाम) जातिगत तथा व्यक्तिगत दोनों प्रकार से प्रयुक्त हो सकती हैं। वह मनुष्य, अश्वादि को जातिगत और सुकरात (Socrates) आदि को व्यक्तिगत संज्ञा मानता है। यूरोप के भिन्न-भिन्न विद्वानों ने व्यक्तिवाचक नाम की भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ की हैं। सामान्यतः व्यक्तिवाचक नाम वह सांकेतिक शब्द अथवा शब्द समूह है जो किसी व्यक्ति, उसके व्यक्तित्व तथा उसकी वैयक्तिकता का अवबोधन कराता है और जिसका प्रयोग उससे सम्बद्ध समस्त व्यापारों-व्यवहारों में किया जाता है। व्यक्ति के स्वरूप का दिग्दर्शन, व्यक्तित्व का मूल्यांकन तथा वैयक्तिकता की मुद्रा—इन तीनों का अभिन्न सम्मिश्रण नाम में सम्पृक्त रहता है। स्वरूप से व्यक्ति की बाह्यरूपाकृति का चित्र झलकता है। आंतरिक गुण उसके व्यक्तित्व की व्यंजना करते हैं—उसकी अंतः प्रज्ञा का उद्घाटन करते हैं और वैयक्तिकता उसके अंतः करण के सहज रुचि-वैचित्र्य की विशेषता व्यक्त करती है। जे० एस० मिल मनुष्य की वैयक्तिकता (Individuality) पर अधिक बल देता है तो बर्ट्रेंड रसेल उसकी विशिष्टता (Peculiarity) को अधिक महत्त्वपूर्ण समझता है।[1]

रूपाभिधान का महत्त्व—'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' में श्रद्धा रखनेवाले ब्रह्मवादियों के लिए तो नामरूप मिथ्या ही होंगे। परंतु व्यावहारिक रूप से न तो यह व्यक्त, विस्तृतविश्व ही कोरी कल्पना है और न उसके पदार्थ ही स्वप्नवत हैं। सारगर्भित संसार के रूप-नाम कैसे असार या मिथ्या हो सकते हैं। दोनों का अस्तित्व नित्यप्रति अनुभव करते हैं। एक दृष्टिगोचर है, दूसरा श्रुतिगोचर। यथार्थ रूप-सृष्टि के लिए कल्पित नामसृष्टि परमावश्यक है। नाम के बिना रूप का कोई महत्त्व नहीं—कुछ मूल्य नहीं। यदि नाम न होता तो ब्रह्म का ब्रह्मत्व ही विलय के निलय में शाश्वत अंतर्हित रहता। रूपाभिधान के सम्बन्ध के बिना किसी का साक्षात ज्ञान नहीं हो सकता।[2] यह सत्य है कि कल्पना-प्रसूत नाम का सम्बंध शरीर से है न कि आत्मा से और वह भौतिक देह के सदृश ही नश्वर है—नाशवान है।[3]

---

[1] सामान्यतः व्यक्तित्व (Personality) एवं वैयक्तिकता (Individuality) में स्थूल रूप से यह विविक्ति है—व्यक्तित्व व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सौन्दर्यात्मक, नैतिक तथा सामाजिक गुणों, क्षमताओं एवं शक्तियों का पुञ्जीकरण है जो उसके स्वास्थ्य, ज्ञान, सौन्दर्य, सदाचार तथा आदर्शों से प्रदर्शित होता है। भाव-भावनाओं, आशा-अभिलाषाओं, संवेगों, अभिरुचियों, स्वभावजनित क्रियाओं आदि से सम्बन्ध रखनेवाली व्यक्तिगत विशिष्टताओं का सामूहिक रूप वैयक्तिकता है। व्यक्तित्व तथा वैयक्तिकता के समन्वय से चरित्र-निर्माण होता है—संकलित (A Dictionary of Psychology—J. Drever)

[2] देखिअहिं रूप नाम आधीना,
रूप ग्यान नहि नाम विहीना,
रूप विशेष नाम बिनु जाने,
करतलगत न परहि पहचाने।

[3] अपने बालक के प्रति मदालसा की उक्ति—
शुद्धोऽसि रे तात न तेऽस्ति नाम,
कृतं हि ते कल्पनयाधुनैव,
पंचात्मकं देहमिदं न तेऽस्ति,
नैवास्य त्वं रोदिषि कस्यहेतोः (मारकंडेय पु० २३—११)

नाम एक कोमल कल्पना है--नाम प्रवृत्तियों का प्यारा पुतला है। वह भावनाओं की कोमल शय्या पर पलता है और संस्कृति के सुंदर पालने में खेलता है। भाषा उसका रूप सँवारती है। प्रतिभा उसे जीवनतत्व देती है तो कल्पना कमनीयता। नया नाम, नया संदेश। जो हर्ष सूत्रकार को केवल अर्द्धमात्रा की न्यूनता से होता है वही आनंद अन्वेषक को नूतन प्रवृत्तिमूलक नाम के दर्शन से मिलता है।[1]

त्रिधा जिज्ञासा—किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में प्रायः तीन प्रकार की जिज्ञासा हुआ करती है। (१) वह कौन है? (२) कहाँ रहता है और (३) क्या करता है? इन प्रश्नों के उत्तर जिज्ञासु को उस मनुष्य के नाम, धाम तथा काम का परिचय दे देते हैं। कल्पनाजन्य पदार्थों एवं भावों के व्यक्तीकरण के लिए भी यह त्रिधा ज्ञान आवश्यक समझा जाता है। व्यक्ति समाज का एक अंग है। समाज ही उसके स्वत्व, अधिकार तथा कर्त्तव्य निर्धारित करता है। इसलिए उसके पूर्ण परिचय में ही समाज का हित निहित रहता है। नामकरण एक सामाजिक कृत्य है। नाम की स्वीकृति समाज के सम्मुख ही होती है। इसीलिए समाचार-पत्रों में नाम-परिवर्तन-सूचना देना भी विधानतः अनिवार्य समझा जाता है। राजनीति के अन्तर्गत उसके धाम अथवा ग्राम की गणना की जा सकती है। उसके व्यवसाय या व्यापार से उसकी आर्थिक स्थिति अवगत होती है। मानव जीवन के ये तीन पक्ष-सामाजिक, आर्थिक तथा नैतिक उसके व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। नाम उस व्यक्तित्व का प्रस्फुटन करता है। धाम में वह व्यक्तित्व केन्द्रीभूत होकर पलता-फलता रहता है तथा उसे विकसित करने के लिए काम आवश्यक होता है। कभी-कभी काम या धाम पृथक्-पृथक् अथवा दोनों संयुक्त रूप से नाम के ही अंग बन जाते हैं। बहुत से मदरासी, पारसी, मारवाड़ी और महाराष्ट्र नामों में पूर्वजों के मूल निवास का नाम संयुक्त रहता है। एतद्देशीय नामों में भी स्थान सम्बन्धी अनेक जातिनाम संयुक्त रहते हैं। कुछ मनुष्य अपने नाम के बाद अपने खेरे लिखने लगे हैं। खेड़े वस्तुतः उनके पूर्वजों के आदिम निवास ही होते हैं। उर्दू कवि अपने नाम के साथ अपने गाँव या नगर का नाम सर्वदा लिखा करते हैं। झूँझनूवाला, पत्नोकर, श्रीवास्तव, कनोजिया, तांज्योर, तारापुरवाला, माथुर आदि स्थान सम्बन्धी उपनाम (Surname) पूर्वपुरुषों के मूल निवास स्थान की ओर ही संकेत करते हैं। बजाज, विश्वकर्मा, खादीवाल, दीवान, मुंशी, रेवड़ीवाला,[2] गांधी, मोदी आदि उपनाम (जाति नाम) पूर्वजों के व्यवसाय के कारण ही प्रचलित हुए हैं। उपर्युक्त तीनों बातों में से व्यक्ति के नाम की ही अधिक महत्ता मानी गई है। मनुष्यों में सबसे प्रथम नाम जानने की उत्कंठा ही प्रबल दिखाई देती है। व्यक्तिवाचक नाम में पिता पितामह आदि किसी पूर्वज के नाम के अतिरिक्त धाम और काम का भी उल्लेख हो तभी उसमें पूर्णता आ सकती है। परन्तु इस प्रकार का पूर्ण नाम खोजने पर भी कदाचित् ही कहीं मिल सकेगा। उच्चारण की सुगमता के कारण लोक में यथासम्भव लघु नाम ही अधिक प्रिय रहा है। इसीलिए दीर्घनामधारी अभिजात रईसों के घरेलू नाम प्रायः अत्यन्त लघु ही हुआ करते हैं।

नाम-निर्माण के मूलतत्व—प्रकृत्यादि—सृष्टि का ऐसा कोई पदार्थ नहीं जो नाम-निर्माण में काम न आता हो। प्राकृतिक, कृत्रिम तथा कल्पित तीनों ही प्रकार की वस्तुएँ इन नामों के आधार हैं। प्राकृतिक पदार्थों में पंचतत्व, ग्रहनक्षत्र, वनस्पति, पशुपक्षी, फल-फूल आदि सम्मिलित हैं। स्वतन्त्र एवं संयुक्त दोनों रूपों से इन नामों में प्रकृति का प्रयोग हुआ है। कमल और कमलकृष्ण क्रमशः दोनों के उदाहरण हैं। विशाल बटवृक्ष से लेकर तुच्छ तृणों तक नामों में दिखलाई देते

[1] अर्द्धमात्रालाघवेनापि पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणाः।

[2] पारसियों में 'सोडावाटरबाटलकार्कओपनरवाला।' (Sodawater - bottle cork openerwalla) भी सुना गया है।

हैं। अखैवर (अक्षय बट) के साथ धावी, तिनकू और कुश भी खड़े हुए हैं। नाना प्रकार के खिले हुए फूलों की फुलवारी में भाँति-भाँति के सुन्दर पक्षी अपनी अनोखी छटा दिखला रहे हैं।

प्रकृति का अनेक प्रकार से और अनेक रूपों में इन नामों में प्रयोग किया गया है। प्रकृति का शुद्ध वर्णन फूल गेंदासिंह, अर्ध्य कुसुम, प्रत्यूषप्रसून, चंद्रोदय, फूलगंध, गुलहजारीलाल, फूलरेणु आदि नामों में पाया जाता है। अलंकार के रूप में भी प्रकृति का उपयोग प्रचुर मात्रा में दिखलाई दे रहा है। नलिन विलोचन, चद्रानन, फूलबदन, रामवृक्ष, चद्रहंस आदि नामों में प्रकृति के अलंकारिक प्रयोग हैं। गुणों के सर्वोत्तम प्रतीक प्रकृति से ही लिये जाते हैं। इन प्रतीकों पर भी बहुसंख्या में नाम पाये जाते हैं। मंजुल मयंक, गुलाब, सरोज, चारुचंद्र, घनश्यामादि, प्रतीकात्मक नाम हैं। प्रकृति उद्दीपन का काम भी करती है। एक शोभासम्पन्न आधारपात्र में रखा हुआ हीरा अत्यधिक कातियुक्त हो चमकता है। प्रकृति की भूमिका या पीठिका से नाम में निरालापन आ जाता है। कुंजीलाल, पुलिनविहारी, पद्महंस, वेनीशंकर, अरविंदमोहन, गगनचन्द्रादि ऐसे ही नाम हैं। काव्य के सदृश नामों में सौन्दर्य को व्यक्त करने के लिए भी प्रकृति का ही सहारा लिया जाता है। घनसुन्दरलाल, चारुचन्द्र आदि नाम सौदर्योन्मेषण के नमूने हैं। हिन्दू संस्कृति की यह विशेषता है कि उसने निसर्ग के साथ आत्मीयता एवं तादात्म्य स्थापित कर, न केवल उसका मानवीकरण ही किया है, अपितु दैवीकरण भी कर डाला है। प्रकृति के अंग-अंग में चेतना का आरोप कर उसे सचेतन बना दिया है। नदियों का आवाहन, निर्जीव पदार्थों को सम्बोधन, वृक्षों से वार्तालाप आदि अनेक विधानों से इस बात की पुष्टि होती है कि प्रकृति भी मानव के साथ-साथ सुख-दुख का अनुभव करती है। उदाहरणस्वरूप पुलकचंद, रजनी रंजन आदि अनेक नाम प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

कृत्रिम वस्तुओं में रत्नाभूषण, मिठाइयाँ और खिलौने मुख्य मालूम पड़ते हैं। कल्पित द्रव्यों की संख्या इनो-गिनो होने से उन पर नाम भी निदर्शन मात्र ही दृष्टिगोचर होते हैं। अमृत तथा कल्पवृक्ष कल्पित ही समझना चाहिए।

इन वस्तु या जाति सम्बन्धी व्यक्तिवाचक नामों के अतिरिक्त बहुत से नामों के आधार भाव, विचार या गुण होते हैं। कुछ नाम क्रिया या व्यापार से सम्बन्ध रखते हैं।

वैधानिक तथा प्रवृत्तिमूलक नाम—नाम या तो वैधानिक होता है या प्रवृत्तिमूलक। राशि के निर्दिष्ट वर्ण अथवा धर्म ग्रंथ के किसी पृष्ठ के आद्यक्षर से विधिपूर्वक विनिर्मित नाम वैधानिक नाम हैं और मानवीय मनोभावाश्रित नाम प्रवृत्तिमूलक नाम होता है। वैधानिक नामों के संकीर्ण क्षेत्र में प्रवृत्तियों के पनपने का बहुत कम अवकाश रहता है। एक ही निर्दिष्ट वर्ण से बनने के कारण वैधानिक नाम कभी-कभी अयथार्थ नाम (Misnomer) भी हो जाता है। अतः उसमें यथा नाम तथागुण न होने से "नाम बड़े दर्शन थोड़े" वाली कहावत चरितार्थ होने लगती है। वैधानिक नामों में भी प्रवृत्तियों का प्रवेश हो सकता है। एक नाम में दोनों का समन्वय भी सम्भव है। नाम में प्रवृत्ति प्रत्यक्ष रहती है, वैधानिकता प्रच्छन्न एवं संदिग्ध रूप से रहती है। राशि नाम से जातक की जन्म-लग्न सम्बन्धी अनेक बातें ज्ञात हो जाती हैं। धर्म ग्रंथ से निकाले हुए नाम में ऐसी कोई विशेषता नहीं पाई जाती। नामों के अध्ययन में प्रवृत्तियों का विशेष मूल्य माना गया है। अनुप्रासित नामों की रचना भी वैधानिक नामों के सदृश किसी एक ही निर्दिष्ट वर्ण से होती है। नाम-निर्माण का एक प्रकार यह भी है कि किसी प्रचलित नाम में ही उपसर्ग, प्रत्यय या कोई अन्य शब्द जोड़ देते हैं। जैसे एक ही प्रकृति अथवा प्रातिपदिक में प्रत्ययादि लगाने से विविध शब्द बना लिये जाते हैं। अज्ञातवास के समय पंच पांडवों ने आपस में पुकारने के लिए अपने नाम जय, विजय, जयंत, जयत्सेन, जयत्बल रखे थे। इन नामों में 'जय' सर्वनिष्ठ है। सत्यभामा और कृष्ण के दश पुत्रों के नाम 'भानु'[1] शब्द से ही बनाये गये हैं।

---

[1] भानु, सुभानु, स्वर्भानु, प्रभानु, भानुमान, चन्द्रभानु, बृहद्भानु, अतिभानु, श्रीभान, प्रतिभानु।

विशिष्ट से साधारण—नाम वह अभिन्न अभिज्ञानात्मक शब्द प्रतीक है जिसका विनिमय-मूल्य निर्धारित करना सरल नहीं है। एक नाम से एक ही व्यक्ति या वस्तु का बोधहोता है, परन्तु जब वह नाम केवल शब्द-ध्वनि मात्र होता है—किसी एक ही द्रव्य का नाम-निर्देश नहीं करता अर्थात् किसी व्यक्ति-विशेष की ओर नाम-संकेत न करने के कारण उसका संकेत-ग्रहण सामान्य रूप धारण कर लेता है तब वह व्यक्तिवाचक से जातिवाचक बन जाता है। ऐसे लाक्षणिक प्रयोग ६ प्रकार के देखने में आते हैं—

१—जबकोई नाम व्यक्ति का व्यंजक न होकर उसके असाधारण धर्म या गुण का बोधक होता है अर्थात् गुण के स्थान में व्यक्ति के नाम से काम लिया जाता है, यथा—वह पक्का चाणक्य है, तुलसी को हिन्दी का वाल्मीकि कहा गया है। भामाशाह कलियुगी कर्ण है, इन उदाहरणों में चाणक्य, वाल्मीकि तथा कर्ण जातिवाचक की तरह प्रयुक्त हुए हैं।

२—जब कोई नाम भाषण द्वारा सामान्य प्रयोग में आकर अपने व्यक्तित्व की विशेषता या निजत्व खो बैठता है तो उसके व्याकरण तथा शब्दार्थ-विज्ञान में परिवर्तन हो जाया करता है। उस घर से एक गंगासागर (टोंटीदार लोटा) लाओ। यहाँ गंगासागर जातिवाचक है। इससे बंगाल की खाड़ी के गंगा और सागर के संगम की ओर संकेत नहीं होता। यहाँ अर्थ-विशेष के स्थान में सामान्य अर्थ ही ग्रहण किया गया है।

३—मूल सत्ता के एकत्व के स्थान में जब बहुरूपत्व की धारणा की गई हो तो उस वस्तु की जाति-वाचक संज्ञा हो जायगी। इस मन्दिर में कितने शालग्राम रखे हैं। यहाँ शालग्राम की बटियों से तात्पर्य है। मायावी युद्ध में रावण ही रावण लड़ रहे थे। अंगद रावण से पूछता है—तुम कौन से रावण हो। यहाँ रावण के अनेकत्व की कल्पना की गई है। अहिरावण, महिरावण, महारावण आदि नामों के कारण भी रावण के नाम में बहुरूपता आ सकती है।

४—जब एक ही नाम से कई व्यक्तियों की अभिव्यक्ति होती हो—यथा तीनों राम अपने-अपने व्यक्तित्व में अनोखे थे। यहाँ राम जातिवाचक है क्योंकि वह रामचंद्र, परशुराम तथा बलराम का वाचक है।

५—एक ही स्थान या वस्तु के विभिन्न खंडों को जब मूल नाम से ही अभिहित करते हैं तो वह नाम सामान्य संज्ञा की श्रेणी में स्थान पा लेता है—पजाब (पाकिस्तानी पंजाब और भारतीय पंजाब); बंगाल (पूर्वी बंगाल और पश्चिमी बंगाल) आदि इसके उदाहरण हैं। राहु और केतु, एक ही दैत्य के दो खंड होते हुए भी नामों की विभिन्नता के कारण इस कोटि में नहीं आ सकते।

६—जब कोई द्रव्य सम्बंध या संसर्ग के कारण किसी व्यक्ति या स्थान विशेष के नाम से ही प्रसिद्ध हो जाता है तब वह नाम सामान्य संज्ञा के अन्तर्गत आ जाता है। वह फोर्ड में बैठकर आया, आज मालदा बहुत सस्ता है, कुछ लोगों को महोबा रुचिकर होता है। यहाँ फोर्ड (फोर्ड मोटर), मालदा (आम), महोबा (पान) जातिवाचक संज्ञा हैं। अनेक आविष्कार अपने अनुसंधानकों के नाम से ही प्रसिद्ध हो गये हैं। कुछ वस्तुएँ अपने निर्माण-स्थान के नाम से भी प्रचलित हो जाती हैं।

जातिवाचक होने पर व्यक्तिवाचक नाम बहुवचन में भी प्रयुक्त हो सकते हैं।

यौन-विपर्यय और लिङ्ग-भेद—साइंस के प्रगतिशील युग में यौन परिवर्तन भी जीवविज्ञान का एक अद्भुत चमत्कार है। अनेक व्यक्ति इसके द्वारा पुरुष से स्त्री और स्त्री से पुरुष बन गये हैं। विधि-विधान के तुल्य विज्ञान का यह जादू भी कैसा विचित्र एवं आश्चर्यजनक है। इस लैंगिक परिवर्तन का प्रभाव नामों पर भी प्रत्यक्ष हो रहा है। नाम-परिवर्तन अब केवल रुचि, आश्रम तथाधर्म पर ही निर्भर नहीं रहा, अपितु यौन-विपर्यय के साथ नाम-परिवर्तन भी अनिवार्य सा हो रहा है। कल जो श्रीमान् थे आज वे विज्ञान के बल से श्रीमती हो रहे हैं। पुराणों में भी कहीं-कहीं लिंग परिवर्तन

के उदाहरण मिलते हैं। राजा सुद्युम्न पहले इला नामक स्त्री था।[1] शिखंडी के यौन परिवर्तन की कथा से अधिकांश मनुष्य परिचित होंगे।[2] लिंग-विपर्यय न केवल व्यक्तियों में ही अपितु नामों में भी कभी-कभी हो जाया करता है। विशेषत: स्त्रीलिंग शब्दों से बने पुरुषों के आधे नामों में और पुंल्लिंग शब्दों से बने स्त्रियों के आधे नामों में लिंग का गोलमाल हो जाया करता है। पार्वतीप्रसाद का पार्वती स्त्रीलिंग शब्द होते हुए भी पुंल्लिंग ही माना जायगा। इसी प्रकार मिथिलेश कुमारी का आधा नाम मिथिलेश पुंल्लिंग होते हुए भी स्त्रीलिंग ही मानना पड़ेगा। सरोज (पुं०) जैसे नाम उभयलिंग के सदृश स्त्री-पुरुष दोनों में प्रचलित हो रहे हैं। ऐसे नामों पर लिंग-परिवर्तन का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

नामों में ऐतिहासिक उपादान—नाम का सम्बंध भाषा और इतिहास दोनों से ही रहता है। व्यक्तियों तथा स्थानों के सदृश नामों का इतिहास भी हो सकता है, परन्तु पर्याप्त उपकरण न मिलने के कारण यह इतिहास अपूर्ण ही रहेगा। अवतारी राम या कृष्ण से पहले कितने राम या कृष्णनामधारी अज्ञात व्यक्ति हुए होंगे। इस बात का निर्णय करना असम्भव ही होगा कि सबसे पहले किस व्यक्ति ने राम नाम अपनाया होगा। न तो उस मूल पुरुष का पता ही लग सकता है और न बाद के उन नामधारियों का कोई लेखा जोखा ही मिलता है। गीता के कृष्ण से पहले भी कितने अन्य कृष्ण हो चुके हैं जिनके विषय में कुछ ज्ञात नहीं। पूर्वपरम्परागत ज्ञान के अभाव में किसी प्रयास के सफल होने की कोई सम्भावना नहीं दिखलाई देती।

नामों का ऐतिहासिक अध्ययन कई प्रकार से हो सकता है (१) नाम की दृष्टि से (२) शब्द की दृष्टि से तथा (३) भाव या अर्थ की दृष्टि से। देश, समाज तथा काल के विचार से प्रथम के भी तीन भेद हो सकते हैं। किस किस स्थान पर कौन-कौन से नाम अधिक पाये जाते हैं। किस प्रभाव के कारण वे नाम अपनाये गये हैं। भूमिका में यह बतलाया गया है कि ब्रज में कृष्ण के नामों की प्रचुरता हो सकती है। उन नामों में भी कौन सा नाम अधिक आकर्षक है और क्यों। इसी प्रकार अवध के आसपास रामनाम का बाहुल्य सम्भव है। राजस्थान में राजपूतों के नाम शौर्य-सम्बंधी अधिक होंगे और मारवाड़ियों में धन सम्बन्धी नामों की प्रचुरता हो सकती है। दक्षिण में मोरोपंत (स्कंद), धोंधू (ढुंढि-गणेश) पंत, कुमारप्पा (पाद), सुब्रह्मण्य (स्कंद,) गणेश विनायक, शिव सुन्दरम् जैसे नामों का प्रचलन हो तो कोई आश्चर्य नहीं। इसी प्रकार समाज या सम्प्रदाय-विशेष के नामों में भी कोई न कोई विलक्षणता रहती है। सिक्खों के नाम प्रायः गुरुओं या धर्म से सम्बंध रखते हैं। अशिक्षित देहातियों में अन्धरूढियों के कारण झगड़ू, ओरी, घूरे जैसे नाम अधिक प्रचलित दिखलाई देते हैं। नन्हू नाटे, बौना, ननकू आदि आकृतिमूलक नामों को सभ्य समाज वामन, अल्प आदि साधु शब्दों से व्यक्त करता है। पहाड़ियों में बंबबहादुर दलबहादुर, हस्तबहादुर, पान-सिंह आदि प्रिय नाम हैं। इसी प्रकार युग-युग के नामों में यत्किंचित् विशेषता रहती है। नामी के इतिहास के सदृश नाम का भी इतिहास हो सकता है। अमुक नाम का आरम्भ किस काल में हुआ। किस गुण या विशेषता के कारण नामी ने उसे अपनाया, वह नाम जनता में प्रिय हुआ या नहीं। यदि वह नाम लोकप्रिय हुआ तो उसने कितने व्यक्तियों को प्रभावित किया और उसकी परम्परा में उस नाम के कितने प्रसिद्ध पुरुष हुए। उसने नामी तथा उसके व्यक्तित्व एवं चरित्र का पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व किया या नहीं, आदि अनेक बातों का अध्ययन किया जा सकता है। अंगद नाम

---

[1] पृष्ठ ४८१ पर सुद्युम्न की आख्यायिका देखिए।

[2] एक यक्ष के अनुग्रह से शिखंडिनी को सावधि पुंसत्व प्राप्त हुआ, वही शंकर के वरदान से चिरकालीन हो गया। शिखंडिनी का नाम शिखंडी हो गया।

के उदाहरण से यह बात अधिक स्पष्ट हो जायगी। अंगद नाम का अज्ञात मूलोद्भव शिबिदधीचि के सदृश कोई आत्मयाजी [अंग (देह) + दा] अथवा देहावतंस (अंग + दै— अंग को विभूषित करनेवाला बाजूबन्द, केयूर) रहा होगा। तदुपरांत अनेक अप्रसिद्ध अंगद नामधारी हुए होंगे। इस नाम के निरन्तर प्रचलित रहने से यह ज्ञात होता है कि वह अभी अप्रयोगावस्था को नहीं पहुँचा। त्रेतायुग में प्रसिद्ध अंगद नामक बालि और तारा का पुत्र हुआ। वह राम हनुमान आदि का समकालीन तथा सहयोगी था। उसने रामदूत बन कर रावण की सभा में अंगद नाम का आतंक जमा दिया। राम-रावण-युद्ध में भी उसने पर्याप्त पराक्रम दिखलाया। उस नाम से प्रभावित होकर उसके अनुकरण पर अनेक छोटे-छोटे अन्य अंगद भी हुए होंगे जिनका कोई इतिवृत्त विदित नहीं है। इसके पश्चात् उर्मिला और लक्ष्मण के पुत्र अंगद का नाम मिलता है। द्वापर में भी अंगद नाम का उल्लेख मिलता है। चित्रांगद और रुक्मांगद (स्वर्ण केयूर) नाम से कुछ व्यक्ति अवश्य परिचित होंगे। बीच की कड़ियों का कुछ पता नहीं चलता। एक दीर्घ युग के बाद सिक्खो के दूसरे गुरु लहना अंगदनाम से इतिहासप्रसिद्ध हुए। क्योंकि उन्होंने अपने गुरु नानक की सेवा में अपने अंग (देह) की कुछ चिन्ता नहीं की। गुरु ने भी उनको अपना अंग ही समझा और प्रसन्न होकर उनका सार्थक नाम अंगद रखा। स्वामी दयानन्द से शास्त्रार्थ करने के कारण ईषल्लब्धकीर्ति अंगदराम शास्त्री हुए। स्वनामधन्य अंगद गुरु के अनुकरण पर सिक्खों में आजकल सैकड़ों अंगदसिंह दिखलाई दे रहे हैं। हिन्दुओं में भी अंगदों की कमी नहीं है। सिंह[1] और राम गौण शब्द समाज के प्रभाव के कारण संलग्न हैं। प्रयोगावस्था से अप्रयोगावस्था तक नाम अपने सुदीर्घ जीवन में कभी तो महान् व्यक्तियों के सम्पर्क से प्रकाश में आ जाता है और कभी पांडवों के सदृश अज्ञातवास में रहता है। इस जीवन में देश, काल तथा समाज के विभिन्नत्व के कारण वह नाना व्यक्तियों के साथ नये नये खेल खेलता है। कभी चोला बदलता है तो कभी आत्मा (अर्थ) और कभी-कभी दोनों ही। अप्रयोगावस्था तक पहुँचने में न जाने कितना समय लगे। इसलिए अपूर्ण जीवन का इतिहास भी अभी अपूर्ण ही है। उपकरणों का अभाव, नाम के जीवन की अपूर्णता एवं ऐतिहासिक अनुपादेयता के कारण इस प्रकार का अध्ययन कोई विशेषता नहीं रखता।

शाब्दी इतिहास के भी दो रूप हो सकते हैं—(अ) व्याकरण सम्बंधी—इसमें नाम के प्रकृति, प्रत्यय, संज्ञा, लिंग, बचन आदि का परिचय दिया जाता है। इसका वर्तमान विषय से कोई विशेष सम्बंध नहीं है। इसलिए भूमिका में उस पर बहुत थोड़ा ही विचार किया गया है। (आ) ध्वनि-विज्ञान सम्बंधी—इसमें नामों की ध्वनियों के क्रमिक विकास की मुख्य-मुख्य विकृतावस्थाओं का उल्लेख रहता है। अंगद नाम में कोई रूपान्तर नहीं हुआ, अभी वह अविकसितावस्था में ही है। इसलिए इस प्रकार का उसका कोई अपना इतिहास नहीं हो सकता। चौंड़ा चामुंडराय का विकसित

---

[1] देखिए सिंह शब्द का इतिहास (पृ० ४७६)

[2] सामान्यत: विकार तथा विकास को एक दूसरे के पर्याय रूप में प्रयुक्त किया गया है। अंतर केवल इतना ही है कि मूल शब्द का विकसित रूप (तद्भव) किसी भाषा का स्थायी रूप होता है। यह एक प्रकार का रूपान्तर है। विकृति में भाषण भेद के कारण अनेक स्थानिक, अस्थायी परिवर्तन होते रहते हैं। भाषा सम्बन्धी विकार को विकास कह सकते हैं जो कुछ सिद्धान्तों के अनुसार स्थायी होता है। भाषण सम्बन्धी उच्चारण भेद केवल विकार ही कहलायेंगे। जब कोई यूरुप निवासी शतानंद को सटानंडा (Satananda), आर्त त्राण को आर्टट्रान (Art tran) या लुत्फुल्ला को लुटपुल्ला (Lut Pulla) कहता है तो ये भाषण-ध्वनि के विकार हैं न कि भाषा के विकसित रूप।

रूप है। उसका अपना पृथक् इतिवृत्त है। देवकर्ण को ढेवा बनते-बनते कितना कालयापन हुआ होगा। कितने स्थानों में भ्रमण करना पड़ा होगा। किस-किस वर्ग से संसर्ग हुआ होगा।। इन बातों का पता भाषाशास्त्रीय इतिहास से ही चल सकता है। देश-देश की बोलियों में रमते-विरमते हुए ढेवा शब्द ने अपना इतिहास स्वतः बना लिया है।

पुरातत्त्व वस्तुओं के सदृश नाम भी अपने समय की अवस्था की व्यवस्था देते हैं। नामों में इतिहास से अभिप्राय उन सांस्कृतिक तथ्यों का प्रत्यक्षीकरण करना है जो उनमें सन्निहित रहते हैं। यह अर्थातिशय्य के अंतर्गत है जिसमें अर्थ मूलक व्यवस्था का निरूपण रहता है।

नामों में बहुरूपता—प्रस्तुत संकलन में अत्यंत लघु नाम से लेकर समाससमन्वित लंबे-लंबे नाम तक पाये जाते हैं। कुछ अलंकृत एवं कलात्मक भद्र नामों में सुरुचि झलकती है तो कुछ बेढंगे, फूहड़, घृणित तथा भद्दे नामों से कुरुचि टपकती है। एक ओर प्रसादगुणी सरल नाम हैं तो दूसरी ओर कूटार्थी गूढ़, अबूझ तथा निरर्थक नाम। लाड़ प्यार के अटपटे सरस घरेलू नामों के साथ-साथ हंसाने चिढ़ानेवाले चटपटे और अलबेले नाम भी हैं। टेढ़े-मेढ़े ठेठ और शिलाजात विकृत नामों की भी कमी नहीं है। देश-विदेश के पूर्व प्रचलित लोकप्रिय नामों के अतिरिक्त अश्रुतपूर्व सर्वथा नूतन निराले नाम भी सन्निविष्ट हैं। कहीं लोलालोडन कर्णकटु नाम हैं[1] तो कहीं श्रुतिमधुर कोमलकांतवर्णी। कहने का तात्पर्य यह है कि नामों के इस अजायबघर में शुभाशुभ, ऋजु-कुटिल एवं प्रियाप्रिय सभी प्रकार के नमूने देखने को मिलेंगे।

नामों का कायाकल्प—सुन्दर नाम बिखरे-निखरे निराले मोती हैं। इन सच्चे मोतियों की महार्घ्य माला में संस्कृति की मुक्ताभा—देश की गौरव-गरिमा निरंतर झलकती रहती है। अंधविश्वास, दुलार तथा व्यंग्य के नामों में बहुत ही कम नाम ऐसे हैं जिनसे अभिभावक या वत्सपाल की कलात्मक कल्पना, रुचिर रुचि एवं बुद्धि-वैदग्ध्य का परिचय मिलता हो। पुत्र का सुन्दर नाम पिता के पांडित्य का सूचक है[2]। आधुनिक काल के असंगत, निरर्थक अयथार्थ, अशुभ तथा अप्रिय नामों में आमूल क्रांति करनेवाले युगप्रवर्तक ऋषि दयानंद को कौन भूल सकता है। स्वामी जी में यह विशेषता थी कि वह वर्तमान काल की प्रत्येक बात को प्राचीन युग की वैदिक कसौटी पर परखते थे। उन्होंने अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा, अप्रतिहत कल्पना, प्रखर प्रज्ञा एवं दिव्य दृष्टि से न केवल धर्म में ही सुधार किया प्रत्युत मानव-जीवन के सामाजिक, नैतिक, आर्थिक आदि सभी क्षेत्रों में देश का कायाकल्प किया। संस्कार विधि में नामकरण संस्कार का बहुत ही शुद्ध, शुचि तथा सुन्दर रूप प्रस्तुत किया है।

विश्वेक्षण का सार[3]—नामों का वैज्ञानिक अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यूरुप के उन्नतिशील देशों में विशेष महत्त्व का माना गया है। किसी नाम के मूलस्रोत को खोजते-खोजते अंततोगत्वा अतीत के एक ऐसे दुर्लभ, अमूल्य तथ्य तक पहुँच जाते हैं जिसके विषय में लोगों को अब तक कुछ भी पता न था और उससे अवगत होने का न कोई अन्य साधन ही था। अशिक्षित आदिवासियों की प्रागैतिहासिक प्रथाओं, रहन-सहन, आचार-विचार आदि का अविच्छिन्न विकास किसी लिखित साधन के अभाव में भी, उनके व्यक्तिगत तथा जातिगत नामों की व्याकृति से जाना जा

---

[1] कल्हण, बिल्हण आदि नामों में जीभ रपटने लगती है तो जैयट, कैयट, मम्मट, उव्वट, वज्रट, रुद्रट, धर्मट, कल्लट, भल्लट नामों में वह तालु से टकराकर लौटने लगती है। जैसे कोई वस्तु चट्टान से टक्कर खाकर लौट आती है। इस प्रकार के प्राचीन नाम कश्मीर में अब प्रचलित नहीं दिखलाई देते।

[2] ज्ञायते पितृ-पांडित्यंनामधारणकारणात्।

[3] संकलित (Articles on names in Encyclopaedia Britannica, Nelson's Encyclopaedia & New Popular Encyclopedia).

सकता है। एशिया, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और अमरीका महाद्वीपों को सुदूर बसनेवाली तथा विभिन्न भाषा-भाषी अति प्राचीनतम जातियों के युग-युग के नाम तथा रहन-सहन के समान ढंग से सिद्ध होता है कि उन सबका आदिम पैतृक अभिज्ञान (Totem टोटम) एक ही था। वृक (Wolf), सूर्य, नरकट (Reed), सारस (Crane) आदि जड़ और जंगम दोनो ही प्रकार के परंपरागत पैतृक अभिज्ञान (टोटम) पाये जाते हैं। असभ्य आदिम जातियों के टोटम-नाम बहुधा सूरज, चांद, बादल, पवनादि प्राकृतिक पदार्थों पर रखे जाते देखे गये हैं। अंधविश्वासी जूलू लोग अनिष्ट की आशंका से अपना असली नाम लेने से भय खाते हैं। जंगली टोरकोई 'बादल' (असली नाम) को सबेरे का बादल और 'भूखा भेड़िया' (असली नाम) को 'श्वेतांग-कपाल-भंजक' (He that raises the white fellow's scalp) कहेंगे। सभ्य समाज में टोटम नामों का स्थान जैंटाइल (Gentile—Clan गोत्र) नामों ने ले लिया जो सम्भवत: अपत्यवाचक होते थे। तदुपरांत स्थानिक नाम प्रयुक्त होने लगे।

हिब्रू, मिस्री, असीरी, बेबीलोनी, ईरानी और यूनानी लोगों में उपनाम (Surname) रखने की रीति न थी। शुरू-शुरू में रोमनों के भी उपनाम नहीं होते थे। आगे चलकर एक व्यक्ति के नाम में तीन-तीन और चार-चार नामों का समुच्चय होने लगा।[1] प्राचीन यूनानी नाम किसी महत्वपूर्ण गुण के द्योतक होते थे। यथा—कैलीमेकस (Callimachus—Excellent fighter)। रोमन नाम अधिक गौरवास्पद न थे। सिसरो (Cicero—Vetch grower—तृणरोपक, घसियारा) पोरकस (Porcus शूकरपाल, भंगो) आदि। नैसो (Naso—long Nosed—बड़ नक्कू), क्रेसस (Crassus—fat—मोटा) आदि नाम अंग-वैकल्य के व्यंजक हैं। कैल्टिक तथा ट्यूटेनिक नाम महत्वपूर्ण होते हैं। यथा—Conrad (Bold in council सभाशूर), ईथेल (Ethel-Noble सभ्य) आदि। ईसाइयों के प्राचीन धर्मग्रंथ के नाम जन्म-परिस्थिति अथवा धार्मिक भावना से सम्बंध रखते हैं। जैकब (Jacob याकूब—Suppliant याचक)। इसाइया (Isaiah—Salvation of Jehovah जेहोवा का निर्वाण), हेन्ना (Hannah—favour अनुग्रह, दया)।

आधुनिक यूरप में बपतिस्मा के नाम के साथ कोई न कोई उपनाम (Surname) अवश्य संलग्न रहता है। प्राचीनकाल में एंग्लो सैक्सन परिवारों में उपनाम न थे। नारमन लोग इनको अपने साथ इगलेंड ले गये। शताब्दियों तक उपनाम केवल उच्च जातियों में ही प्रचलित रहा। १२वीं शती के लगभग इसका प्रचार स्काटलेंड में हुआ। वेल्स के दुर्गम प्रांतों में आजकल भी उपनाम नहीं पाये जाते। अँग्रेजी बपतिस्माजन्य नाम जातक की जन्म-परिस्थिति, पिता के पद या धर्म के व्यंजक होते थे। तदनन्तर व्यक्ति के रूप-चरितादिपरक नाम रखे जाने लगे। बाद के नाम कायिक विशेषताओं, गुणो, पशु-पक्षी, पेड़ पौधो, देवताओं और धार्मिक विश्वासों या मान्यताओं पर होने लगे। आयरिश, वेल्स तथा स्काटिश मार्गों से केल्टिक नामों का प्रवेश हुआ जिनका मूल स्रोत लातीन (Latin) भाषा थी। अँग्रेजों के पूर्वज समस्तपदी नाम रखते थे, यथा इथिलवुल्फ (Ethel wolf—noble wolf or wolf of war श्रेष्ठ वृक या रणव्याघ्र)। तदुपरात ग्रामीण व्यंग्यात्मक[3] तथा रूपाकृति परक नामों का जन्म हुआ। व्यवसाय धंधों और स्थानो पर भी नाम रखे जाने लगे।

मुख्य-मुख्य आंदोलनों का प्रभाव भी नाम-निर्माण पर पड़ा है। ईसाई धर्म ने बाइबिल के नामों का प्रचार किया। मेरी (Mary) तथा एलिजाबेथ भी मूलतः धर्मग्रंथ से लिये गये नाम हैं। रिफार्मेशन

[1] दे० पृ० १७ अनुच्छेद ३।

[2] उपनाम को जब सामान्य अर्थ में ग्रहण करते हैं तो उसके अन्तर्गत मूलनाम को छोड़ कर जाति नाम, साहित्यिक नाम, पदवी नाम आदि अन्य सब नाम सम्मिलित समझे जाते हैं।

[3] व्यक्तिगत व्यंग्य नाम के सदृश जातिगत व्यंग्य नाम भी होते हैं। जान बुल (John Bull) अंगरेजों का जातीय व्यंग्य नाम है।

के पश्चात् प्यूरीटन और स्काटिश कवेंटरोंने श्रद्धा, आशा, सद्यता, बुद्धि, दया जैसे संवेग तथा गुण संबंधी नामों का प्रचलन किया। संतों (Saints) के नामों के प्रति प्रतिक्रिया के कारण भी बाइबिल के नामो का विशेष प्रोत्साहन मिला। फ्रेंच क्रातिकाल में यूनान तथा रोम के स्वनामख्यात राष्ट्रवीरों के नाम अपनाये जाने लगे। विलियम, चार्ल्स, जार्ज, आर्थर आदि प्रसिद्ध राजाओं और वीरों के नाम लोकप्रिय हो गये। व्यक्तिवाचक नाम आरंभ में सार्थक होते थे और जीवन की किसी घटना विशेष पर बदले भी जा सकते थे। जेकब (Jacob याकूब) का नाम इसराइल हो गया। ग्रेट ब्रिटेन में आजकल नाम तथा उपनाम दोनों ही परिवर्तित हो सकते हैं।[1]

आरम्भ में अंग्रेजी उपनाम (Surname) व्यक्तिगत विशेषता—घर, पिता का नाम, व्यवसाय या रूपाकृति अथवा चरित्र की विलक्षणता—से सम्बंध रखता था। ११वीं शती में इंगलेंड में ऐसे नाम पूर्व परम्परा से प्रयुक्त होते आये हैं। ये उपनाम (Surnames) निम्नलिखित प्रमुख उद्गमों से प्राप्त हुए हैं—

(क) स्वालक्षण्य सम्बंधी—इन नामों से व्यक्ति की रूपाकृति, वस्त्राभूषण, स्वभावादि का अनोखापन व्यक्त होता है। इनमें व्यंग्य नाम भी सम्मिलित हैं। ये नाम विशेषण या विशेष्य-विशेषण से बनाये गये हैं—ब्लेक (Black काला), शार्ट (Short नाटा), स्ट्रोंग (Strong बलिष्ठ), वाइज (Wise चतुर), लाइट फुट (Light foot तीव्रपद), ट्रूमेन (Trueman सज्जन) आदि। जरमनी तथा फ्रांस में भी ऐसे नाम पाये जाते हैं:—

अंगरेजी	Black (काला)	Whyte (white सफेद)	Brown (भूरा)
जरमन	Schwartz "	Weiss "	" "
फ्रेंच	Lenoir "	Leblanc "	Lebrun "

(ख) भौगोलिक या स्थान सम्बंधी नाम—हिल (Hill पहाड़ी), फारेस्ट (forest जंगल) ग्राव (Grove कुंज), लंदन (London), केंट (Kent), फ्लेमिंग (Fleming)। कुछ नामों में स्थान से पहले de, atte, at या a प्रत्यय रहते हैं—

ऐट्वेल (Atwell or Attewell), डावेलेरा (DeValera)। रईसों और जमींदारों के नामों में उपर्युक्त प्रत्ययों के स्थान में 'आव' (of, German 'Von', French 'at') का प्रयोग पाया जाता है।

(ग) पद-पदवी या व्यवसाय सम्बंधी नाम—राजा, राजकुमार, पोप, पादरी, कारपेंटर (Carpenter बढ़ई), टेलर (Taylor दर्जी), बेकर (Baker पाचक), मरचेंट (Merchant सौदागर), बटलर (Butler मुख्य पाचक), फुलर (Fuller)

(घ) पशु-पक्षी तथा प्राकृतिक पदार्थ सम्बंधी नाम[2]—बुल (Bull वृषभ), बर्ड (Bird पक्षी), फाक्स (Fox लोमड़ी), हाग (Hogg[3] सूअर), स्टोन (Stone पत्थर), ट्री (Tree वृक्ष), फ्लिंट (flint चकमक)। संभव है ये पदार्थ पूर्वजों के टोटम रहे हों।

---

[1] नाम पर धर्म का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है। अन्य धर्म ग्रहण करने के कारण परिवर्तित नाम में सांस्कृतिक विभिन्नता भी हो जाया करती है।

[2] यह एक विलक्षण बात है कि निरामिष गुजराती नागरों के नाम मनकड (खटमल), मनकोडी (कालीचींटी), मच्छर आदि जीव जन्तुओं पर मिलते हैं और आमिषभोजी काश्मीरियों के "हक" (साग) आदि नाम वनस्पतियों पर पाये जाते हैं। (Dr. K. L. S.—A. B. Patrika, June 29,58)

[3] दुराशय को छिपाने के लिए बहुधा शब्द की वर्तनी (Spelling) बदल देते हैं। Hog (सूअर) में एक और g बढ़ा कर Hogg बना लिया गया है।

(ङ) अपत्यवाचक— बपतिस्मा के नामों में सन (Son सूनु) या उसके पर्याय अथवा उसका सूक्ष्म रूप एस (S सं० ज) जोड़कर ये नाम बनाये गये हैं—Johnson, Jonson, Jones, Williams। बपतिस्मा के नामों और उनके संक्षिप्त रूपों में लघुवाचक प्रत्यय (Kin, Cock, et, in लगाकर भी उपनाम (Surname) बना लिये गये हैं यथा—Robert, Rob, Robin, Watkin; Willcock, ।

अनेक सरनेम पिता के व्यवसाय में Son लगाकर बन गये हैं यथा Smith (लुहार) से Smithson। अन्य भाषाओं के कुछ अपत्यवाचक प्रत्यय नीचे दिये जाते हैं—

सूनु (संस्कृत), Son (Eng.), Vitch (Russian वत्स), Sen (Scandinavian), Sohn or Son (German), Fitz (Norman—French), O' (Irish), Mac (Gaelic), Ben (Hebrew)—Soloman ben David दाऊदात्मज सुलेमान, Ibn (Arabic—Abraham ibn Esra), Ap(Welsh—Evan ap Richard—John, Son of Richard)।

Arnold, Oswold आदि कुछ नाम ही Surname हो गये हैं। स्पेन मे विवाहित स्त्री अपना Surname प्रयुक्त करती है। इसलिए उसका पुत्र ननसाल या ददसाल में से किसी उपनाम का प्रयोग कर सकता है।

संकलन के मूलोद्गम—यह नाम-संकलन निम्नलिखित पाँच प्रमुख उद्गमो से किया गया है:—

(१) शिक्षा संस्थाएँ—(अ) प्रयाग, आगरा, काशी, दिल्ली तथा लखनऊ विश्वविद्यालयो के पञ्चाङ्ग (Calendars) तथा परीक्षाफल; नागपुर तथा सागर विश्वविद्यालयों के परीक्षाफल (दैनिक पत्रों द्वारा); (आ) सरकारी गजटों में प्रकाशित इंटर, हाईस्कूल, काशी की संस्कृत तथा हिन्दी मिडिल परीक्षाओं के फल[१]।

(इ) अखिल भारतवर्षीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन-परीक्षाफल (सम्मेलन पत्रिका द्वारा)।

(ई) हिन्दी विश्वविद्यालय पंचाङ्ग।

(उ) स्थानीय स्कूलों की पत्रिकाओं में प्रकाशित परीक्षाफल।

(ऊ) अनेक स्कूलो, कालिजो, पाठशालाओं एवं गुरुकुलो से प्राप्त नामावली।

(ऋ) यू० पी० एस० टी० ए० द्वारा प्रकाशित यू० पी० सेकेण्डरी एजूकेशन डायरेक्टरी।

(२) राजकीय विभाग—(अ) सिविल सूची (Civil list), (आ) गजटों में प्रकाशित अफसरों की नाम-सूची, (इ) कुछ रंगरूटों तथा पटवारियों के रजिस्टरों से प्राप्त ग्रामीण नाम, (ई) कुछ सरकारी दफ्तरो के कर्मचारियो की नाम-पंजिकाएं, (उ) दैनिक पत्रों में प्रकाशित हाईकोर्ट के अभियोगों, विज्ञप्तियों तथा सम्मनों से प्राप्त नाम-सूची (दैनिक पत्रों द्वारा)।

(३) कांग्रेस, हिन्दूमहासभा, आर्यसमाज, सेवासमिति, काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा, हिन्दी-साहित्य सम्मेलन, किसान-सभा आदि सभा-समितियों के सभासदों के नामों की सूचियाँ।

(४) निर्वाचन नामावली—म्यूनिसपलबोर्ड, जिलाबोर्ड तथा राजसभा के मतदाताओं की नामावली।

(५) प्रकीर्णक—(अ) धुलेकर का मातृभूमि अब्द कोष (झाँसी) (आ) हूइज हू आफ इंडिया (Who's Who of India) (इ) ट्रेड डाइरेक्टरी, थैकर्स डाइरेक्टरी (ई) पुस्तकालयों के

[१] पहले मिडिल परीक्षार्थियों के नाम के साथ उनके संरक्षकों के नाम भी गजट में प्रकाशित होते थे।

पाठकों, अजायबघरों के दर्शकों, पत्रपत्रिकाओं के ग्राहकों, वैद्यों तथा अनाथालयों के रजिस्टर (उ) रेल, प्रेस, मिल तथा फैक्टरियों के कर्मचारियों, कुलियों तथा मजदूरों की नाम-सूचियाँ (ऊ) वकीलों की डायरियाँ (ऋ) पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित दान दाताओं तथा अन्य व्यक्तियों की नामावलियाँ (ॠ) पुस्तकों के सूची पत्र (ए) मित्रों से प्राप्त तथा यात्राओं में संगृहीत नामावली, (ऐ) उत्तर प्रदेश के जिलों के कुछ डिप्टी इंस्पेक्टरों से प्राप्त अति प्रचलित तथा विचित्र नाम। (ओ) साप्ताहिक आर्यमित्र (लखनऊ) की संस्कार-सूचनाएँ (औ) शिशु (प्रयाग) के नये ग्राहक। (अं) अंग्रेजी के दैनिक पत्र Leader, A. B. Patrika आदि में प्रकाशित नाम। (अः) साप्ताहिक अमृत पत्रिका, भारत तथा हिन्दुस्तान आदि पत्रों से प्राप्त नाम।

इस सर्वतोमुखी प्रयत्न में कोई क्षेत्र ऐसा अवशिष्ट नहीं दिखलाई देता जिसके प्रतिनिधि नाम इस संग्रह में न आ गये हों। इस संकलन में समस्त नामों की संख्या १६२६३ है।[१]

नाम-चयन के कुछ सिद्धांत—नामों के चयन तथा संकलन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा गया है :—

(क) जिन नामों के तत्सम तथा प्राकृत दोनों रूप मिलते हैं। उनमें से प्राकृत रूपों के निदर्शन मात्र कुछ नाम लेकर शेष नाम यथासंभव तत्सम रूपों में ही लिखे गये हैं, क्योंकि दोनों रूप लिखने से एक ही नाम की पुनरावृत्ति के कारण स्थान का दुरुपयोग होता। देश की परिस्थिति, कुछ आन्तरिक प्रभाव तथा अन्य कारणों से आजकल मनुष्यों में प्रायः शुद्ध तत्सम रूपों का प्रयोग ही विशेष रुचिकर तथा प्रिय हो रहा दिखलाई देता है।

(ख) सरलता को ध्येय में रखते हुए संयुक्त वर्णों में वर्ग के पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार से ही काम लिया गया है अर्थात् चन्द्र के स्थान में चंद्र लिखा गया है। हिन्दी के वर्त्तमान कोशों में भी इसी प्रणाली का अनुसरण किया जाता है। शिक्षित समुदाय दोनों प्रकार से अपना नाम लिखता है।

(ग) उच्चारण की सुगमता के कारण कतिपय व्यक्ति ह्रस्व इ, उ के स्थान में दीर्घ ई, ऊ बोलते तथा लिखते हैं। इस ग्रन्थ में हरी के स्थान में तत्सम रूप हरि का ही प्रयोग किया गया है।

(घ) दो या दो से अधिक खंड वाले नामों में से प्रायः पूर्वांश समस्त नाम का द्योतक माना जाता है,[२] रामप्रसाद के प्रथमांश 'राम' से पूरे नाम (रामप्रसाद) का बोध होता है। अंग्रेजी में उत्तरांश (प्रसाद) से यह आशय प्रकट किया जाता है। भारतीय नामों में भी यह प्रवृत्ति यदा-कदा दिखलाई देती है। दोनों भाइयों के अर्थ में राम-कृष्ण में राम बलराम का उत्तरार्द्ध है। इसी प्रकार "रामोरामश्च कृष्णश्च" में प्रथम 'राम' परशुराम का उत्तरार्द्ध और द्वितीय राम दाशरथि रामचंद्र का पूर्वार्द्ध[१] है। भावातिरेक—प्यार, तिरस्कार, क्रोधादि में बहुधा नाम का आधा प्रथमांश ही बोला जाता है। निम्न तथा निर्धन श्रेणी के अशिक्षित व्यक्तियों को प्रायः आधे नाम से ही पुकारते हैं। इस आधे नाम से अनेक अपभ्रंश नामों की सृष्टि की जाती है। राम से रामू, रमुआ, रम्मी, रमोला, रम्मन, रम्मू आदि अनेक नाम प्रचलित हो गये हैं। शिक्षा-शून्य ग्रामीण जनता प्रायः इसी प्रकार नाम के प्रथमांश को विकृत कर एक ही नाम के कई रूप बना लेती है। ऐसे नामों में से निदर्शन स्वरूप कुछ नाम ही लिये गये हैं। अर्द्ध नाम में देव, नारायण, प्रसाद, लाल आदि पूरक शब्दों से युक्त नामों को स्थान अवश्य दिया गया है। इस प्रकार निर्वाचन करने से दो लाभ दिखलाई देते हैं। (१) एक ही प्रकार के नामों की अनावश्यक आवृत्तियाँ न होंगी तथा (२) नूतन नामों के लिए कुछ अधिक स्थान बच रहेगा।

---

[१] ग्रंथ के समस्त नामों का योग = १७४२७ (१६२६३ + ११६३ + १)

[२] नामैक देश ग्रहणे नाममात्र ग्रहणम्।

(ङ) सिंह शब्द के योग से बने हुए केवल वे ही नाम लिये गये हैं (अ) जो किसी उपाधि के बोधक हैं—यथा समरसिंह, (आ) जिनमें वह सार्थक रूप में प्रयुक्त हुआ है यथा—देवसिंह (देवो में श्रेष्ठ) (इ) जो पत्नी के नाम से निर्मित पति के वाचक हैं यथा—भवानीसिंह (शिव), (ई) जो श्रृंखलाबद्ध क्रम के अंग हैं, (उ) जिनका मूल रूप पहले नहीं आया है और (ऊ) जो व्यक्ति-विशेष के लिए प्रयुक्त हुए हैं। उपर्युक्त छै अवस्थाओ के अतिरिक्त सिंह वाले शेष नाम छोड़ दिये गये हैं क्योंकि उनके रखने से व्यर्थ संख्या-वृद्धि होती है।

(च) ब व के प्रयोग मे अत्यंत उच्छृंखलता दिखलाई देती है। शिक्षित समाज में भी अनभिज्ञता अथवा प्रमाद के कारण "वकार बकारयोर्मेदोनास्ति" वार्तिक का अनुसरण प्रचुर रूप से हो रहा है। प्रस्तुत ग्रंथ में संस्कृत तत्सम रूपों का ही व्यवहार किया गया है। कुछ अति प्रचलित अपभ्रंश नाम उदाहरणस्वरूप विकृत रूप मे भी रखे गये है। अतः बिहारी दोनों रूपो में लिखा गया है।

(छ) इसी प्रकार श तथा स के प्रयोगमें भी शिथिलता दिखाई देती है। 'प्रसाद' के स्थान में 'प्रशाद' लिखते हुए कुछ सज्जनों को देखा है। शीतल तथा सीतल दोनो रूप प्रचलित है। इन नामों में देवी के अर्थ में अति प्रचलित प्राकृत रूप सीतला ही रखा गया है, अन्यत्र तत्सम शब्द शीतल दिया गया है।

(ज) अर्द्धशिक्षित तथा उर्दू पठित व्यक्ति अर्द्ध रेफ को पूरा लिखते हैं। चंद्र तथा कर्त्ता को उनके तद्भव रूप में चंदर और करता लिखते हुए देखा जाता है। इस ग्रंथ में दो एक नमूनों के अतिरिक्त तत्सम रूप ही लिखे गये हैं। व्रज के विरज, व्रिज या वृज रूप जनता में प्रचलित हैं। उदाहरण स्वरूप ही कुछ नाम इस प्रकार लिखे गये हैं। अधिकाश नामो में संस्कृत तत्सम शब्दो का ही प्रयोग किया गया है। परकाश, परसाद आदि स्वरभक्ति के केवल दो-चार नमूने ही दिये गये हैं।

(झ) ऋ भी प्रायः मनुष्यों को भ्रम में डाल देती है। कोई-कोई ऋक्षपाल के स्थान पर रिच्छपाल लिखते हैं। इस प्रकार के दो-चार नाम ही पाये जाते हैं। इसलिए उन्हें दोनो रूपों में लिखा गया है।

(ञ) तत्सम शब्दों के 'क्ष' को अपभ्रश में 'च्छ' छ अथवा ख लिखते हैं। यथा—अक्षय के अच्छय, अछय तथा अखय तीन विकसित रूप मिलते हैं।

(ट) ण के स्थान में उच्चारण की सुविधा के कारण न विशेष प्रचलित रहा है। गणेश को गनेश लिखने की प्रवृत्ति रही है, किन्तु आजकल तत्सम रूप का अधिक प्रयोग हो रहा है। इसलिए अधिकाश में शुद्ध रूप ही लिखे गये हैं। थोड़े से विकसित रूप भी नमूने के लिए दे दिये गये हैं।

(ठ) नारायण के कई रूप मिलते है—नारायन, नरायन, नराइन, नरैना। अंतिम नाम के अतिरिक्त शेष नाम तत्सम रूप में ही लिखे गये हैं।

(ड) ग्रामीण जनता तथा प्राचीन पंडित-मंडली मूर्धन्य 'ष' के स्थान में 'ख' और य के स्थान में ज बोलने एवं लिखने में अभ्यस्त हैं। प्रथम प्रकार के नाम अत्यल्प हैं। अतः उनको तत्सम रूप में बदलना उचित नहीं समझा गया। पुखई, पोखपालादि नामों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। द्वितीय प्रकार के नाम लोक रुचि के अनुसार 'य' से ही अधिकतर लिखे गये हैं। निदर्शन के लिए कुछ ज के नाम भी रखे गये हैं। यमुना-जमुना दोनों रूप लिये गये हैं।

(ढ) खान, धौकल आदि शिलाजात नामो को उनके विकसित रूप में ही लिखा गया है। क्योंकि उनको मूल रूप मे रखने से विकास के इतिहास का ही सत्यानाश हो जाता है।

(ण) मैकू जैसे ठेठ नामो के भी प्रचलित रूप ही दिये गये हैं।

(त) मिथ्या सादृश्य (उपमान) पर गढ़े हुए सैकू, विष्णानंद, किसंवर आदि कुछ ऐसे नाम हैं[1] जिनमें कोई परिवर्तन सम्भव नहीं है ! उनको यथारूप में ही लिखा गया है ।

इनके अतिरिक्त नामों के रूपों में अन्य कोई परिवर्तन करना उचित नहीं समझा गया। अन्य नामों को उनके अक्षुण्ण रूप में ही लिखा गया है। उत्तरार्द्ध में नामो के विकास पर भाषा-विज्ञान की दृष्टि से पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। इस चयन-पद्धति की यह विशेषता है कि समस्त संग्रह में किसी नाम की पुनरावृत्ति नहीं होने पाई है। न कोई आवश्यक नाम छूटा है और न किसी अनावश्यक नाम की भरती हुई है।

अनुशीलन-शैली—अभिधान-अनुशीलन-शैली की सामान्य रूपरेखा निम्नलिखित है :—

प्रवृत्ति का नाम—

१—गणना

क—क्रमिक गणना

(१) नामों की संख्या

(२) मूल शब्दों की संख्या

(३) गौण शब्दों की संख्या

ख—रचनात्मक गणना।

२—विश्लेषण

क—मूल प्रवृत्तिद्योतक शब्द

(१) एकपदी

(२) समस्तपदी

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ

ग—मूल शब्दों की निरुक्ति

घ—गौण प्रवृत्ति द्योतक शब्द

(१) वर्गात्मक

(अ) जातीय

(आ) साम्प्रदायिक

(२) सम्मानार्थक

(अ) आदर सूचक

(आ) उपाधि सूचक

(३) भक्तिपरक—नवधा भक्ति अथवा एकादश आसक्तियो के आधार पर भक्ति के भी अनेक भेद हो सकते हैं।

ङ—गौण शब्दों की विवृति

३—विशेष नामों की व्याख्या—इसमें वे ही नाम चुने गये हैं जो मूल शब्दों की निरुक्ति में स्पष्ट नहीं हो पाये हैं अथवा जिनके सम्बंध में कोई विशेष बात कहनी है।

---

[1] मिथ्या उपमान पर निर्मित नामों के कुछ नमूने—सतोवन (तपोवन), सुलहड (बिल्हड), सन्हैया (कन्हैया), किसंभर (विसंभर), विश्नानंद (कृष्णानंद), सहंगू (महंगू), सैकू (मैकू), सुर्जन (दुर्जन), सुद्धू (बुद्धू)।

४— समीक्षण— इस शीर्षक में निरूपित नामो से उपलब्ध विविध महत्त्वपूर्ण निष्कर्षों पर प्रकाश डाला गया है।

इस परिशीलन-पद्धति में यत्र तत्र यथावसर कुछ परिवर्तन भी करना पड़ा है जिसका उल्लेख यथास्थान कर दिया गया है। किन्तु इससे उसके सामान्य रूप में कोई विकार उपस्थित नहीं होने पाया है।

प्रबन्ध की रूपरेखा—प्रस्तुत प्रबंध मूल शोध-निबंध (Thesis) का संशोधित, परिवर्तित एवं परिवर्द्धित रूप है। इस संस्करण में नाम सम्बंधी अनेक नवीन समस्याओं को सुलझाने की चेष्टा की गई है। विद्वान् परीक्षक-प्रवरो के महत्वपूर्ण निर्देशों से भी यथासम्भव लाभ उठाया गया है। इस अध्ययन मे स्वाध्याय-सत्संगमूलक अनुभव, अनुमान एवं उद्भावना—तीनों का ही आश्रय लिया गया है। समस्त ग्रंथ चार भागों में विभाजित हुआ है। १—नाम-निरूपण—यह मूल विषय की पृष्ठभूमि है जिस पर प्रकाश डालने से उसके समझने में विशेष सहायता मिलने की संभावना है। इस अंश को आमूल परिवर्तित कर अनेक नवीन शंकाओं का समाधान करने के लिए कुछ नूतन शीर्षक भी सन्निविष्ट किये गये हैं। इसलिए इसका कलेवर पहले से कई गुना अधिक बढ़ गया है। इस भूमिका के

(अ) पूर्वार्द्ध में नाम सम्बंधी सामान्य समस्याओं पर विचार-विमर्श हुआ है। और

(आ) उत्तरार्द्ध में प्रस्तुत अध्ययन की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख है।

इस प्रकार नाम सम्बंधी विविध विचारों. नाना मतों (वादों), विभिन्न मंतव्यो, अनेक सिद्धातो एवं तथ्यों से यह भूमिका प्रायः ओत-प्रोत हो गई है।

२—नामों का विश्लेषणात्मक विवेचन—यह शोध का मुख्य अग है जो २० प्रकरणो में समाप्त हुआ है। इसमें प्रत्येक प्रवृत्ति के नामों का विश्लेषणात्मक, संश्लेषणात्मक तथा आलोचनात्मक दृष्टिकोणों से परिशीलन किया गया है। श्लाघात्मक विशेषण तथा नायक-निष्ठा नाम की दो नई प्रवृत्तियाँ और बढ़ा दी गई हैं। विषय को विशेष रोचक तथा सजीव बनाने के लिए पाद-टिप्पणियों में पहले की अपेक्षा अधिक वृद्धि कर दी गई है। भाषा विज्ञान में शब्दों के विकास को अध्ययन का एक महत्वपूर्ण अग माना गया है। इसलिए विकसित रूपो के—विशेषतः, अंधविश्वास, दुलार तथा व्यंग्य के नामों में—मूल शब्द भी देने की चेष्टा की गई है। नामों के अंतर्गत संस्कृत तथा अन्य विदेशी भाषाओं के क्लिष्ट शब्दो तथा निगूढ़ तद्भव एवं देशज नामों को ही बोधगम्य बनाने का विशेष प्रयास किया गया है। अतर्हित कथाओं, संदर्भगर्भित घटनाओ तथा अन्य अपेक्षित वृत्तों को प्रकाश में लाया गया है। कोश. इतिहास, भूगोल आदि परिचयात्मक ग्रंथों में सहज प्राप्य विवरणो को संक्षिप्त कर दिया गया है या नितांत छोड़ दिया गया है। व्रतों की तिथियो तथा फलों की ओर ही संकेत किया गया है। उनके पूजा-विधानो, दीर्घ उपाख्यानों, प्रभावपूर्ण माहात्म्यों तथा स्तवनों का उल्लेख करना यहाँ उचित नहीं समझा गया, क्योंकि व्रत सम्बंधी अनेक सुंदर ग्रंथ सुगमता से मिल सकते हैं। प्रत्येक सम्प्रदाय में कुछ पारिभाषिक शब्द व्यवहार में लाये जाते हैं[1]। ऐसे शब्द-विशिष्ट भी स्पष्ट किये गये हैं। परम्परागत कुछ अंधरूढ़ियों का दिग्दर्शन भी आवश्यकतानुसार यथास्थान कर दिया गया है। अधिकांश स्थलों पर अर्थ की अपेक्षा भाव पर ही विशेष बल दिया गया है।

अर्थ से भाव को सबल कहा गया है इसका तात्पर्य यह नहीं कि अर्थ हेय है—उसका कोई मूल्य ही नहीं है। अर्थ भी उतना ही आवश्यक है जितना भाव। असली अर्थ से अनभिज्ञ व्यक्ति

---

[1] उदाहरणार्थ—आदेश, आज्ञा, उपदेश, नियम. बोल. वचन, वानी, शब्द, हुक्म आदि शब्द गुरुमुख से उच्चरित या धर्मग्रंथ के मूल वचनों के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं।

गुजराती के 'हाथी भाई' नाम को सुनकर खिलखिला उठेंगे।[1] हाथी भाई से वे लोग किसी बड़े डील वाले हाथी के समान मोटा मनुष्य समझेंगे। वस्तुत: हाथी गजानन के लिए है और गणेश का भाई हुआ षडानन। यह अर्थ सुनते ही विहँसित मुख की मुद्रा गंभीर हो जायगी। इसी प्रकार सिंधी-पंजाबी नाम खोतासिंह है। अर्थ न जानकर जो उसे अपनायेगा अंत में उसको अपने नाम से ग्लानि ही होगी। खोतासिंह हमारे विचारे वैसाखनंदन ही है। खोतों (गदहों) में सिंह (श्रेष्ठ अर्थात् बड़ा गदहा) अर्थ में कैसा गहरा व्यंग्य है। क्या आप जानते हैं कि कुक्कुट जी महाराज अरुणध्वज महोदय का भव्य भेष धारण कर आ गये हैं। खियामल एक सम्पन्न मारवाड़ी का नाम है। कोई सामान्य व्यक्ति सेठ के वैभव से प्रभावित हो अपना नाम खियामल इस आशा से रख ले कि वह भी इसी तरह धनी हो जायगा। यदि वह यह जान ले कि खिया (छिया) मल और विष्ठा-मल में कोई अन्तर नहीं है तो उसे अपने नाम से बड़ी घृणा हो जायगी और संगी साथी भी छी: छी: करके दूर भाग जायेंगे। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि अर्थ के न जानने से भी कितना अनर्थ हो सकता है।

नाम को सम्यक्रीत्या समझने के लिए न तो कोरे अर्थ से ही काम चलता है और न केवल भाव से ही। उससे सम्बद्ध घटना, इतिहास, प्रसिद्धि-हेतु अथवा कथा-प्रसंग का जानना भी परमावश्यक है। 'पताली' कुएँ का, 'तूफानी' ऋतु का और सुतुआ सुप्तावस्था के प्रसव का स्मरण दिला रहे हैं[2]।

यह बात भी ध्यान में रखने योग्य है कि टिप्पणियों में दिये हुए घटनापरक नामों के हेतु-विशेष अपवादमात्र ही हैं। एक ही नाम के सब नामधारियों के जीवन में वही घटना घटित न हुई होगी। अन्य व्यक्तियों ने या तो मूल नाम का अनुकरण कर लिया है या वे नाम किसी प्रवृत्ति के कारण रखे गये हैं।

मीमांसा एवं समीक्षा की दृष्टि से यह परीक्षण कितना लाभप्रद सिद्ध होगा, इसका निर्णय विज्ञ पाठक ही कर सकते हैं।

---

[1] कहते हैं कि एक बार श्री ढेबर ने राजकोट से भावनगर को तार दिया कि हाथी को शीघ्र भेज दो। भावनगर के महाराज ने तुरन्त ही एक हाथी राजकोट की ओर भेजा। ४० मील जाने पर पता चला कि हाथी पशु नहीं मनुष्य चाहिए। (यह घटना उस समय की है जब काँग्रेस-सभापति श्री ढेबर सौराष्ट्र के मुख्य मंत्री थे और श्री हाथीजी उनके निजी सचिव थे)

[2] नाम रखने में परम्परागत रूढियों का नियंत्रण भी बहुधा देखा जाता है। अतः अर्थ लगाने में रूढ़ियों के प्रभाव को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। क्षमा एक बंगाली लड़की का नाम है। इस नाम का सम्बन्ध धर्म के दूसरे अंग क्षमा या काली देवी से नहीं है। यह गुण का व्यंजक नहीं वरन् समाज की एक परम्परा या रूढ़ि का द्योतक है। भगवान अथवा इष्ट देव के प्रति क्षमायाचना है। भगवान क्षमा कीजिए और पुत्रियों की आवश्यकता नहीं। यह नाम संतति-निरोध की अंतिम मुद्रा समझी जाती है। यह आशा की जाती है कि आगे और संतान न होगी। तृप्ति नाम से भी यही भावना है। भगवान अब हम तृप्त हो गये और संतति न चाहिए। संपूर्ण नाम से भी कुछ-कुछ ऐसी ही अभिव्यक्ति होती है। सब आशा पूर्ण हो गई अब और संतान की इच्छा नहीं। ये नाम अंध विश्वास के नामों से भिन्न होते हैं। अंधविश्वास में संतान के होने के लिए मनौती मानी जाती है। इसमें संतति-प्रवाह-निरोध के लिए याचना की जाती है। पहले में अपेक्षा है, दूसरे में उपेक्षा। क्षमा, तृप्ति, आदि नामों के पीछे दो बातें छिपी हुई हैं। (१) परिवार की निर्धनता और (२) समाज की दहेज कुप्रथा। इन्हीं बातों से डरकर माता-पिता अधिक संतान की अनिच्छा प्रकट करते हैं।

३—हिन्दी नामों में भारतीय संस्कृति—प्रागैतिहासिकता ही इस प्रकार के शोध का प्राण माना गया है। भूगर्भ प्रवेरित गुप्तधन के सदृश सभ्यता-सम्पत्ति इन अभिधानों में समाकीर्ण एवं सन्निहित रहती है। अभिधान देश के दीपक एवं समाज के दर्पण हैं। इनके द्वारा देश दर्शन अत्यन्त सुलभ हो जाता है। किसी परिवार के नामों से उसकी गृह-दशा प्रतिबिंबित होती है। किसी प्रदेश के नामों से उस स्थान की जनता की जीवनचर्या व्यक्त होती है। किसी जाति के भौतिक उत्कर्ष तथा मानसिक विकास के बीजांकुर उसके अभिधानों में सुरक्षित रहते हैं। इस भाग में नामों के अध्ययन से उपलब्ध संस्कृति के मुख्य अगों पर विचार किया है। संस्कृति के ये अंग भारतीयों की धर्मपरायणता, आध्यात्मिकवाङ्मयता, एवं समाज की अवस्था व्यवस्था, शासन-प्रबंध की नीतिपटुता तथा ज्ञान-विज्ञान एवं कलाओं की प्रगति को व्यक्त रूप देनेवाले अभिज्ञानस्वरूप हैं। आशा है यह परिवर्द्धित रूपरेखा आर्य-सभ्यता के प्रांजल, मनोमोहक तथा महत्वपूर्ण चित्रण प्रस्तुत करेगी। पहले यह अंश भी अत्यंत सूक्ष्म था। अब इसकी पृष्ठ-संख्या लगभग दुगुनी हो गई है। विचार तो यह था कि इसको और बृहत् रूप दिया जाय, किंतु कई कारणों से यह शोध अभी सिद्धावस्था को न पहुँच सकी।

४—परिशिष्ट में निम्नलिखित महत्वपूर्ण विषय सम्मिलित हैं :—

(य) नामों का प्रवृत्तिमूलक वर्गीकरण—२० प्रकरणों में अधीत नामों को प्रत्येक प्रवृत्ति के अंतर्गत अकारादि क्रम से दिया गया है। कहीं-कहीं नामों के साथ टिप्पणियाँ भी दे दी गई हैं। प्रत्येक प्रवृत्ति पर स्वतंत्र लेख भी लिखे जा सकते हैं[१]।

(र) कुछ आवश्यक तालिकाएँ तथा ग्राफ (चित्रांकन)—तुलनात्मक अध्ययन के लिए यह अंश अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

(ल) नाम के सम्बन्ध में कुछ स्मरणीय बातें—इसको नाम सर्वेक्षण का सार ही समझना चाहिए।

(व) लम्बे नामों के स्पष्टीकरण के कुछ नमूने—इन उदाहरणों से अन्य नामों के अर्थ लगाने में सुगमता होगी।

(श) अतिरिक्त नाम सूची—ये नाम बाद में संग्रह किये गये हैं। कहीं-कहीं विकसित शब्दों के मूलरूप, अर्थ तथा टिप्पणी देकर उनको स्पष्ट भी किया गया है। इनके अतिरिक्त नये नाम अब बहुत कम दिखलाई देते हैं। तथाकथित नूतन नाम अधिकांशतः पुराने नामों के केवल मिश्रित नये रूप ही होते हैं। इस सूची में ११६३ नाम हैं।

(ष) संदर्भ-ग्रन्थ तथा ग्रन्थकार—इस सूची में केवल उन्हीं ग्रंथों को स्थान दिया गया है जिनसे इस प्रबन्ध के लिखने में सहायता मिली है।

स्थानाभाव के कारण अभिधान संग्रह को इस निबंध से पृथक् करना पड़ा है जिसमें समस्त नामधेय अकारादि क्रम से लिखे गये हैं।

जो बातें मूल ग्रंथ में लिखने से छूट गई थीं उनका उल्लेख इस परिचय में कर दिया गया है। अपूर्ण एवं संदिग्ध स्थलों को भी पूर्णतया स्पष्ट करने का भरसक प्रयास किया है। अनेकार्थी शब्दों

---

[१] देखिए हिन्दी अनुशीलन (प्रयाग) में लेखक के दो निबंध—
भारतीय अभिधान क्षेत्र में आभूषणों का महत्व (हि० अनु० वर्ष ७ अंक १)
अभिवादन-आशीर्वाद- अभिधान (वही, वर्ष ८ अं० १-२)

से रचित नामों के अर्थ भी कभी-कभी अनेक हो सकते हैं।[1] भाषा के लचीलेपन के कारण अथवा समझ के फेर से कुछ बातें विवादास्पद भी हो सकती हैं। अतः अनेक स्थलों पर अर्थो-भावों में विद्या-बुद्धि-विशारदों के सूक्ष्म दृष्टिकोण से मतभेद का होना भी स्वाभाविक ही है, परन्तु इस अकैतवगोरण में अपनी समझ, सूझ तथा सहज धारणा से ही काम लिया गया है।

देवो से सम्बंधित कुश, दीप, घंटा घटादि छोटी-छोटी वस्तुओ का प्रभाव भी नामों पर दिखलाई दे रहा है। इसलिए उनका माहात्म्य प्रदर्शित करनेवाले मंत्र, स्तोत्रादि आवश्यक जानकर टिप्पणियों में दे दिये गये हैं। कहीं-कहीं विशेष स्थलों पर नाम सूची में भी आवश्यक टिप्पणियाँ दे दी गई हैं।

इस प्रकार समस्त विषय को टिप्पणियों, तालिकाओं, चार्ट, वंश-वृत्त, ग्राफ, मानचित्र आदि से हृदयंगम कराने की यथाशक्ति चेष्टा की गई है। स्खलित श्रृंखला की विलुप्त कड़ियों को संवलित करने की दृष्टि से अथवा उपयुक्त नाम न मिलने के कारण या नवीनता लाने के लिए या सुविधा के विचार से कहीं-कहीं उदाहरण इस संग्रह के बाहर से भी दिये गये हैं। विषय-पूर्ति अथवा स्पष्टता लाने के लिए दो-चार स्थलों पर उदाहरणस्वरूप स्त्रियो के नामों से भी काम लिया गया है।

क्लिष्ट विषय को सरल, सुबोध एवं सरस बनाने की दृष्टि से बहुत सी बातों की आवृत्तियाँ हो जाया करती हैं। विशेषतः शोध सम्बंधी लेखों में पुनरुक्ति अनिवार्य है। प्रस्तुत प्रबंध में प्रवृत्तियों का वर्गीकरण, समीक्षण तथा भारतीय संस्कृति—इन तीन स्थलों पर पुनरुक्ति का कुछ-कुछ आभास होता है। वस्तुतः इन तीनों का विषय बहुत कुछ मिलता-जुलतासा है। ऐसी दशा में आवृत्तियाँ अवश्यम्भावी होती हैं। परन्तु विवरण-साम्य होते हुए भी उनमें बहुत कुछ अन्तर है—प्रत्येक की अपनी-अपनी विशेषता है। प्रवृत्ति-वर्गीकरण में भक्ति पक्ष के महत्व पर विशेष बल दिया गया है जिसके कारण साधक किसी साध्य के प्रति आकृष्ट होता है। समीक्षण में अध्ययन से समाहृत तत्वों एवं सिद्धांतों का तुलनात्मक विवेचन किया गया है और उन्हीं उपलब्ध तथ्यो की क्रमबद्ध श्रृंखला-माला से संस्कृति का सर्जन हुआ है। अन्यत्र पुनरुक्तिदोष-परिहार का पर्याप्त प्रयत्न किया गया है।

आशा है प्रस्तुत प्रबंध का यह वैज्ञानिक ऋजु रूप अतिशय उपादेय, रुचिकर अथच संग्राह्य होगा।

भ्रांतिपूर्ण धारणा—अनुसंधान के सम्बंध में कुछ लोगों में यह भ्रांति फैली हुई है कि अनुसंधानक कोई नई चीज प्रस्तुत नहीं करता। वे बहुधा यह उपालंभ दिया करते हैं कि आजकल की शोध-कृतियो में पुरानी बातों का ही पिष्टपेषण रहता है। न कोई नई खोज, न कोई नई ईजाद, न कोई नई वस्तु और न कोई नई बात। अतः ऐसी कृतियों का कोई मूल्य नहीं। उनको यह स्मरण रखना चाहिए कि प्रत्येक गवेषणा का उद्देश्य पृथक् पृथक् हुआ करता है। वैज्ञानिकों का कार्य किसी नूतन यंत्र अथवा द्रव्य का आविष्कार करना है। ज्योतिर्विदों या अन्वेषकों की खोज किसी नवीन नक्षत्र, देश, तत्वादि का पता लगाना है। अधिकांशतः शोध का परम साध्य—चरमलक्ष्य इतना ही होता है कि वह किसी व्यापक सत्य को प्रत्यक्ष करा दे जो सामान्यतः लोकदृष्टि से निगूढ़

---

[1] पुण्यश्लोक निम्नलिखित अर्थों में आता है—

'पुण्यश्लोकों नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः।

पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः।

जिस विकसित शब्द के अनेक निकास (स्रोत) संभव हैं उसका अर्थ करना दुःसाध्य हो जाता है। लुचई (खाद्य पदार्थ), लुच्चा (दुष्ट), लोच (कोमलता) और लोचन लुचई के संभाव्य उद्गम हैं। इसलिए लुचई का कोई भी एक अर्थ संतोषजनक न होगा। केवल एक पक्ष का प्रदर्शन करेगा।

रहता है। तत्व, द्रव्य के उपकरण, नक्षत्र, देशादि तथाकथित अभिनव पदार्थ पहले से ही विद्यमान थे, अन्वेषक उन्हें केवल प्रकाश में ले आया। वर्तमान प्रबन्ध का प्रयोजन इस रहस्यपूर्ण तथ्य का केवल उद्घाटन करना है कि अभिधानों में देश की संस्कृति संनिहित रहती है। उसका प्रत्यक्षीकरण ही इस शोध की नवीनता है।

निबंध और उसकी मौलिक विशेषताएँ—अनुसंधान के नियमों के अनुसार निबंध की मौलिकता के सम्बन्ध में भी कुछ संकेत करना आवश्यक समझा जाता है। संसार में वास्तविक मौलिक विचारों अथवा भावों की देन बहुत ही कम होती है। यथार्थ एवं सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो बहुत सी तथाकथित मौलिकताएँ अतीत के किसी न किसी प्रच्छन्न तथ्य के उच्छिष्ट अंश के व्यक्त रूप में स्पष्टीकरणमात्र हैं। वेदों में सब ज्ञान बीज रूप से बतलाया जाता है, पुराणों में अनेक विद्याएँ भरी पड़ी हैं। महाभारत का दावा है कि दुनियां में जो कुछ ज्ञान है सब उसमें सन्निविष्ट है और जो उसमें नहीं है वह कहीं भी नहीं है[1]। अन्य मनीषी भी ज्ञान-विज्ञान के नवीनतम रहस्यों का उद्घाटन करते रहे हैं। ज्ञान फिर भी अनंत है। अन्वेषक अपनी सूझ-बूझ के अनुसार कुछ न कुछ पा ही जाता है—'जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठि।' भिन्न-भिन्न प्रकार के शोधों की मौलिकता भी भिन्न-भिन्न होती है। और कुछ नहीं तो पुराने परिधान में ही चित्रकलाका प्रदर्शन कर कुछ विचित्रता दिखलाई जा सकती है। प्रस्तुत शोध-कार्य के सम्पूर्ण अवलोकन से विवेकशील विद्वानों को इसमें अनेक प्रकार की मौलिक विशेषताएँ मिलेंगी। विस्तृत भूभाग से सोलह सहस्र से अधिक नामो का संकलन, चयन तथा क्रमबद्ध करना अत्यंत श्रमसाध्य कार्य है। उस विशाल अभिधानमाला का प्रवृत्तियों के अनुसार वर्गीकरण करना इसकी अन्यतम मौलिकता है। अनुकृत नामों का विभाजन, वर्गीकृत प्रवृत्तियों का विश्लेषणात्मक विवेचन आदि अनेक नई चीजें हैं। इसका साहित्यिक सौंदर्य भी चमत्कार से शून्य नहीं है। भूमिका में अनेक नवीन समस्याओं का नये रंग-ढंग से समाधान किया गया है। द्वितीय भाग मौलिकता से ओतप्रोत है—गणना, विश्लेषण, विजातीय प्रभाव, बीजकथा, टिप्पणियों तथा समीक्षण के रोचक निष्कर्षों से स्पष्ट हो जाता है कि अधिकांश सामग्री अछूती है और उसे नूतन एवं निराले रूप में ही प्रस्तुत किया गया है। शैली की अभिव्यंजना तथा परिणामों के परीक्षण की नवीनता में तो किसी को संदेह नहीं हो सकता। इस अनुशीलन से प्राप्त महत्वपूर्ण निष्कर्षों का उल्लेख तृतीय भाग में किया गया है। यह भारतीय संस्कृति भी अभिनव रूप में ही प्रदर्शित की गई है। इस ग्रन्थ का परिशिष्ट भाग अनेक अपूर्व प्रसंगों से परिपूर्ण है।

नामों का यह सांगोपांग निरूपण लेखक की संकीर्ण दृष्टि से सर्वथा मौलिक ही मौलिक दिखलाई दे रहा है। कदाचित् इसका कारण उसकी अनतिदूरान्वीक्षणक्षमा प्रज्ञा हो अथवा स्वार्थ-दृष्टि-दोष—आत्मश्लाघा नहीं।

शोध में अवरोध—परिचय के प्रारंभ में ही संकेत किया गया है कि शोधकार्य में पग-पग पर अवरोध रहता है। आदि के आदि से लेकर अंत के अंत पर्यन्त अन्वेषक को नाना प्रकार की आधिव्याधियों के मध्य काम करना पड़ता है। विषय की खोज, निर्देशक की खोज, सामग्री की खोज, साधनों की खोज, सहायक ग्रन्थों की खोज आदि अनेक खोजों को खोजते-खोजते खोजक स्वयं अपने को खो बैठता है। "हेरत हेरत हे सखी हेरनहार हिरान" की सी अवस्था हो जाती है। शोध समाप्ति तथा उपाधि प्राप्ति के उपरान्त भी एक अन्य उपाधि आरम्भ हो जाती है, वह है प्रकाशकों की खोज। भाग्य ने साथ दिया तो सफलता शीघ्र मिल गई, नहीं तो लखचौरासी का चक्कर काटते फिरिए। किसी ग्रन्थ का परिचय उसके प्रत्यूहों का उल्लेख किये बिना अधूरा ही रहता है। नाना प्रकार के प्रतिबन्ध भी उसके अनुषंग ही होते हैं। उनके कारण ही सफलता या सिद्धि का रूपलावण्य

[1] यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्—(महा भा० १-५६-३३)

अतिशय मधुर एवम् आनन्दप्रिय हो जाता है। सम्भव है कुछ पाठकों को उनका उल्लेख रुचिकर तथा सुखद न हो या भारस्वरूप प्रतीत हो। इसलिए कुछ थोड़ी सी अप्रिय घटनाओं का दिग्दर्शन ही कराया गया है। उनसे किसी का मनोरंजन होगा तो किसी को अनुभव-लाभ। किसी-किसी को प्रोत्साहन या उद्बोधन मिलने की भी सम्भावना है। व्यस्त या व्यग्र व्यक्ति चाहे तो उनकी उपेक्षा भी कर सकता है। उनका पाठ अनिवार्य नहीं है।

यह दुनिया निराली है। नित्य नवीनता की खोज में तो रहती हैं; परतु प्रारम्भ में प्रत्येक नई बात से भड़कती है। इस थासिस की भी यही दशा हुई। बहुत से लोग तो इस विचित्र विषय का नाम सुनकर ही चौंक पड़ते थे। कुछ इसके मूल्य को संदेह की दृष्टि से आँकते थे। यह भी कोई शोध का विषय है यह आशंका अनेक मनस्वी मस्तिष्कों को मंथन करने लगती थी। कतिपय महारथियो ने इसे टटोल कर ही अंतिम नमस्कार कर दिया था। कुछ मित्र हँसी में 'नाम के डाक्टर' कहकर आनंद लूटते थे। इस प्रकार यह शोध कार्य मनुष्यों के विनोद का—कौतुक-क्रीड़ा का विषय बन गया था। इन बातो से मन इतना आविष्ट हो गया कि एक रात को स्वप्न में पूज्य महामना मालवीय जी भी विषय को सुनकर आश्चर्य से हँसने लगे। यह सब होते हुए भी देश के विशाल भूक्षेत्र से उञ्छ के दाने के सदृश एक-एक नाम को संकलित किया गया और उन्हें चिटों पर लिख-लिखकर अकारादि क्रम से अलमारियों में रख दिया गया। दैवयोग से अनुपस्थिति में एक दिन एक चोर ताला तोड़कर घर में घुस आया और उन खोज की चिटों को जला-जलाकर ट्रङ्कों में रुपयों की खोज करने लगा। विलम्ब होते देख वह कपड़ो सहित ट्रङ्क ही लेकर चलता बना। पुलिस भी अपनी परंपरागत परिपाटी के अनुसार असफल अभिनय करती रही। 'शौर्य न तु चौर्य' का पक्ष ही प्रबल रहा। कुछ दिन इन जले और अधजले नामों की क्षति-पूर्ति होती रही।

पहले अँगरेजी का बोलबाला था, इसलिए इसे अँगरेजी में ही लिखना प्रारम्भ किया था। किन्तु कुछ काल बाद देश ने करवट बदला। स्वतन्त्र भारत ने हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया। लेखक को भी अपने प्रबन्ध का चोला बदलना पड़ा।

कार्य की मंथर प्रगति देखकर ९० वर्ष से अधिक के एक वयोवृद्ध पड़ोसी प्रतिदिन आकर बार-बार यही पूछा करते थे—मास्टर साहब आपका यह महाभारत कब समाप्त होगा। कितने राज्य परिवर्तन हो गये। पंचम जार्ज का स्वर्गारोहण हो गया। आठवें एडवर्ड ने चक्रवर्ती राज्य को एक देवी पर बलिदान कर दिया। छठे जार्ज इंगलैंड में सिंहासनारूढ़ हो गये। गांधीजी, मालवीयजी आदि न जाने कितने देश के देवता यहाँ से उठ गये। परंतु आपके काम का कोई अंत नहीं। देश-विदेश में क्रान्तियाँ हो गईं, इतिहास का पन्ना उलट गया, भूगोल का भेष पलट गया। बापू के वरदान से भारत को स्वराज्य मिल गया। अखंड भरतखंड के खंड-खंड हो गये। दुनियाँ बदल गई। आपके काम की भी कोई सीमा है? नाम—नाम—नाम, रातदिन नाम, जब देखो तब नाम। कितने लिपिक विचारे इन नामों से ऊबकर चले गये। कितने दर्जन निबें और पैंसिलें घिस गईं। सेरों स्याही खर्च हो गई। मनों कागज लाल काले हो गये। सैकड़ो पुस्तकों के पन्ने उलटे गये। सहस्त्रों मीलों की यात्रा की गई। लाखों मनुष्यो से भेंट करनी पड़ी। सैकड़ों रुपये स्वाहा हो गये। फिर भी इन नामों से पीछा न छूटा। कितने युग यह और लेगा। मैं भी हंसकर कह देता—मुंशी जी, यह महाखहसननामा तैयार हो रहा है। इस बातचीत से कुछ-कुछ अनुमान लगाया जा सकता है कि अनुसन्धानक का जीवन कितने संकट एवं संघर्ष का होता है।

सम्पूर्ण पांडुलिपि को एक टाइपिस्ट निर्दिष्ट समय से न दे सका, तो दूसरा टाइपिस्ट नियुक्त करना पड़ा। येन किन प्रकारेण टाइप कार्य समाप्त हुआ तो शीघ्र ही परीक्षकों के पास कृति की एक-एक प्रति भेज दी गई, परन्तु भाग्य का फेर, प्रति के पहुँचने से दो एक दिन पहले ही डा०

चाटुर्ज्या महोदय अमरीका के विश्वविद्यालय में व्याख्यान देने चल दिये। कई मासपर्यन्त वे भारत लौट कर आये। उनकी निरीक्षण-रिपोर्ट समय पर न आने से उपाधि एक वर्ष के लिए और टल गई। इतना दीर्घकाल परीक्षार्थी के लिए कितनी व्यग्रता का होता है इसका अनुमान वे ही लगा सकते हैं जिनके साथ कभी इस प्रकार की दुर्घटना घटित हुई हो। इसके प्रकाशन में भी कुछ कम कठिनाइयाँ नहीं पड़ी हैं।

चेतना के सजग रहते हुए भी प्रेस सम्बंधी अनेक अशुद्धियाँ लुक-छिपकर मौनवृत्ति से प्रविष्ट हो जाया करती हैं। ये आदिमूकअंतबाचाल दूतियाँ पुस्तक प्रकाशन के बाद स्वत: उभकने, झाँकने, फुदकने, चिल्लाने और चुगली खाने लगती हैं। उनके लिए लाचारी है, विवशता है। इस प्रेस बाधा से कोई विरला ही ग्रंथ मुक्त होगा। प्रेस (प्रेत) ग्रस्त पुस्तकपिंड में भी आगम, लोप विपर्यय आदि अनेक विकार हो जाया करते हैं। कभी-कभी तो विचारा अक्षर शीर्षासन करने लगता है। ये वर्णव्यायाम भाषा के विकसित रूप नहीं हैं। अर्थ को व्यर्थ करनेवाले कम पढ़े कम्पोजीटरों की कारीगरी के कला-पूर्ण कौतुक हैं। दोष-शान्ति की तो कोई आशा नहीं, अतः उनके लिए क्षमा-याचना के लोकाचार से ही क्या लाभ?

खेद है कि प्रवास में समुचित साधन न होने के कारण कई स्थानों पर अपने कथन की सम्पुष्टि तथा समर्थन में मूल ग्रन्थों का सदर्भ न दिया जा सका। दो एक स्थलों पर मूल ग्रन्थ के तथा विषयानुक्रमणिका के शीर्षकों में विभिन्नता दिखलाई देती है। पाठकों से प्रार्थना है कि अनु-क्रमणिका के अनुसार ही उक्त शीर्षकों को सुधारने का कष्ट करें।

ग्रंथ के दोष-गुण—अल्पज्ञ मानव त्रुटियों, दोषों एवं दुर्बलताओं का केन्द्र है। अतः किसी कार्य में भी उससे पूर्णता की आशा रखना विडम्बनामात्र है। भूल भोलेपन की निशानी है जो कभी प्रमाद से और कभी अज्ञान से हो जाया करती है। असमर्थता भी भूल की जननी है। प्रस्तुत पुस्तक में भी दोषों का कुछ कमी नहीं है और छिद्रान्वेषी के लिए तो पर्याप्त सामग्री उसकी मनस्तुष्टि के लिए मिल सकेगी—सच्चे आलोचक को इसमें गुणदोष—दोनों का ही समन्वय दृष्टिगोचर होगा। जन-साधारण के मनोरंजन की भी कुछ-कुछ आशा है। अनुसंधान का पटु विद्यार्थी इस शिलान्यास पर अपना एक नूतन प्रासाद निर्माण कर सकता है। स्थानादि के नामों पर अनुसंधान कार्य करनेवाले विद्यार्थी के लिए तो यह ग्रंथ एक सच्चा निर्देशक या परम मित्र ही सिद्ध होगा। इसके पन्ने पलटने पर विद्या- व्यसनी यदि कुछ पायेगा नहीं, तो कुछ खोयेगा भी नहीं, और कुछ नहीं तो जातक के नामनिर्वाचन में तो इससे अवश्य ही कुछ न कुछ सहायता मिल सकती है। किसी प्रवीण पारखी को यदि कोई मनोवाछित महार्घ्य मणि मिल जाय तो यह उसका ही श्रमकौशल है। लेखक का तो यह स्वांतःसुखाय अध्यवसाय है। जो कुछ लिखा गया है उस अनन्त संवित्स्वरूप प्रभु की प्रेरणा का ही फल है।

साळु की मंजुळ बोलत से वाणी
बोलविता धणी वेगळाची
कायम्यां पामरें बोलवीं उत्तरें
परित्या विश्वंभरें बोलविले[1] ॥ (संत तुकाराम)

कृतज्ञताभार—अंत में प्रतिपाद्य विषय के अनुसंधान करने में जिन प्रतिभावान मनीषियों की सहकारिता प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में प्राप्त होने का सौभाग्य मिला है उन सब का लेखक अत्यत आभारी है। अपने पूर्ववर्ती तथा समकालीन अनेक विद्वानों के ग्रंथ-रत्नों से इसे अमूल्य

[1] मैना बहुत मीठा गाती है, परन्तु उसके मुँह से गवानेवाला तो कोई और ही है। मैं विचारा बोलना क्या जानूँ! उस प्रभु ने मुझसे यह सब बुलवाया है।

सहायता प्राप्त हुई है जिससे उऋण होना इसके सामर्थ्य से परे है। विद्वद्वर्य श्री डा० धीरेन्द्र वर्मा को जिनके तत्वाभिधान में यह शोध-कार्य सम्पन्न हुआ है, किन शब्दों में धन्यवाद दिया जाय। सच तो यह है कि उनके सौजन्य, स्नेह एवं सौहार्द्र यदि न मिले होते तो लेखक इस गंभीर एवं गूढ़ गवेषणा में कभी भी कृतकार्य न हुआ होता। विषय-निर्वाचन से लेकर ग्रंथ-प्रकाशन तक, समस्त कार्य उनके ही अनुग्रह से सफल हो सका है। इस प्रबन्ध के विद्वान् परीक्षक —डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० सिद्धेश्वर वर्मा तथा डा० धीरेन्द्र वर्मा—तीनो ही आचार्य भाषा-विज्ञान के प्रकाण्ड पंडित हैं। उनके अमूल्य निर्देशो, गुणग्राहकता एवं प्रोत्साहन के लिए यह अन्वेषक उनके प्रति हृदय से कृतज्ञ है। प्रयाग विश्वविद्यालय ने इस थीसिस के प्रकाशन की आज्ञा देकर जो उदारता दिखलाई है उसके लिए यह निबन्धकार विशेष आभारी है। महामान्य श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय के पुस्तकालय तथा उनके स्वरचित दर्शन ग्रंथों से विशेष सहायता मिली है। अंधविश्वासमूलक बुढ़िया पुराण के सुलझाने में पूजनीया बहन श्रीमती कलादेवी ने यथार्थ प्रयत्न किया है। इन युगल मूर्तियों के शाश्वत आशीर्वाद का ही यह फल है। कुछ दिवंगत आत्माओं का शुभाशिस तथा मंगल कामनाएँ लेखक के सर्वदा साथ रही हैं। उनके प्रति यह इसकी स्वल्प श्रद्धांजलि है। खेद है कि ज्ञात न होने के कारण कई उद्धरणों में कुछ मेधावी रचनाकारो के नाम नहीं दिये जा सके हैं, यह लेखक उनका भी सदा आभारी रहेगा। प्रयाग की प्रसिद्ध प्रकाशन संस्था हिन्दुस्तानी एकेडेमी का श्रेय भी चिरस्मरण रहेगा, जिसने इसके प्रकाशन का गुरुतर भार अपने ऊपर लेकर यह स्तुत्य साहस किया है। इसके लिए न केवल यह लेखक ही, अपितु समस्त हिन्दी संसार चिरऋणी रहेगा। इसके सुचारु मुद्रण में न्यू ईरा प्रेस (प्रयाग) के अध्यक्ष और कर्मचारियों ने यथा-साध्य श्रम किया है, लेखक उन सबके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता है। डी० ए० वी० कालेज प्रयाग के जिस पुस्तकालय से लगभग ३५ वर्ष तक अविच्छिन्न सम्बन्ध रहा है उसे कैसे विस्मरण किया जा सकता है। पत्र-पत्रिकाओं के अमूल्य ज्ञान-कोष से सभी क्षेत्र लाभ उठाते रहते हैं। इस दिशा में भी उसी मार्ग का अनुसरण हुआ है। अतः उनके सर्वतोमुखीप्रतिभासम्पन्न सुधी सम्पादकों का कृतज्ञताभार स्वीकार करने में यह ग्रन्थकार अपना अहोभाग्य समझता है। किसी ग्रंथ के-गुण-दोष-निरूपण का गुरुतम भार क्षीर-नीर-विवेकी, विषय-मर्मज्ञ आलोचकों पर ही रहता है, इसलिए उनके महान् उपकार का आभार पहले से ही अंगीकार है। सबसे अधिक ऋण तो उन विज्ञ पाठकों का होता रहता है जो पुस्तक को उपयोग में लाकर उसकी उपादेयता सिद्ध करते रहते हैं। छात्रो, मित्रों, हितैषियों एवं आत्मीय जनों को न आशीर्वाद की अपेक्षा है, न धन्यवाद की आकांक्षा। यह कृति ही उनके परम स्नेह की चिरस्मृति रहेगी।

: १ :

नाम-निरूपण

पूर्वार्द्ध—नाम संबंधी सामान्य समस्याएँ

उत्तरार्द्ध—प्रस्तुत अध्ययन की प्रमुख विशेषताएँ
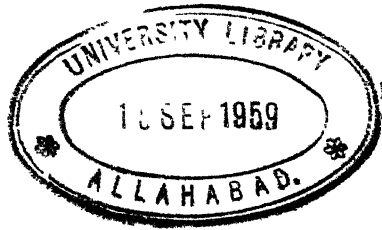
नाम-निरूपण

नाम और रूप—ये दो इस विश्व की विचित्र विभूतियाँ हैं। प्रथम कल्पित एवं कृत्रिम है तो द्वितीय प्रकृति प्रदत्त। एक अदृश्य है तो दूसरा प्रत्यक्ष। दोनों में कला-कौशल है। एक में चातुर्य है, दूसरे में सौंदर्य। वाणी नाम का अनुष्ठान करती है, श्रवण उसका अभिनंदन करते हैं। रूप से नेत्रों का रंजन होता है। दोनों अंतःकरण के आकर्षण-विकर्षण के कारण होते हैं। दोनो में पारस्परिक सम्बन्ध है, दोनों किसी पदार्थ का परिचय देते हैं। नाम से किसी सत्ता के व्यक्तित्व का बोध होता है, तो रूप से उसके धर्म अथवा गुण का। दोनों अनिवार्य रूप से आवश्यक हैं। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व चिरकाल तक स्थिर नहीं रह सकता। अनामी रूप या अरूपी नाम कहीं न मिलेगा। परन्तु नाम में एक विशेषता यह है कि वह गतिवान है। अपने आधार से दूर भी जा सकता है, परोक्ष मे भी काम आ सकता है। देशकाल का उसके प्रति कोई प्रतिबंध नही रहता।

नाना कोटि के नाम—प्रत्येक पदार्थ का कोई न कोई नाम होता है। कुछ नाम जातिगत होते हैं, कुछ व्यक्तिगत। जातिगत नाम या संज्ञा से जातिमात्र का बोध होता है और व्यक्तिगत नाम से केवल एक व्यक्ति का। कुछ वस्तुएँ जातिवाचक नामों से अभिहित होती हैं और कुछ व्यक्तिगत नामों से। व्यक्तिगत नाम बहुत थोड़े से द्रव्यों के ही पाये जाते हैं। अधिकांश संख्या जातिगत नामों ही की होती है। मत्स्यादि जलचर, पशु आदि थलचर, पक्षी आदि खेचर तथा कृमि कीट पतंगादि संख्यातीत जीवो का कोई अपना निजी नाम नहीं होता। ये जातिगत नामों से ही पुकारे जाते हैं। जड पदार्थों की एक अपरिमित संख्या भी इसी के अंतर्गत आती है। व्यक्तिवाचक नामों का वर्गीकरण निम्नलिखित कोटियों में हो सकता है:—

(क) मनुष्यों के नाम—व्यक्तिगत नामों में सबसे बड़ी संख्या मनुष्यों के नामो की है, क्योंकि उनमें कोई भी व्यक्ति ऐसा नही होता जिसका कोई अपना निजी नाम न हो।

(ख) स्थानो के नामों की गणना उसके उपरांत आती है। महाद्वीपों से लेकर छोटे से अंतरीप तक का अपना नाम होता है।[१] देश, द्वीप, नगर अथवा ग्राम कोई भी बिना नाम के नहीं पाया जाता। इसी प्रकार बड़े-बड़े महासागरों से लेकर छोटे-छोटे जलाशय, झरनों तक के नाम मिलते हैं।[२] प्रत्येक पर्वत और नदी का नाम होता है। स्थानों के नाम प्रायः अन्वेषकों, यात्रियो, अथवा राज-पुरुषों के नाम पर रख लिये जाते हैं। कुछ नाम आकृति अथवा परिस्थिति-विशेष पर भी पड़ जाते हैं। किसी नूतन स्थान का पता लगते ही उसका नाम रख लिया जाता है।

---

१ The longest Place-name in Great Britain has 58 letters—*Llanfairpwllgwyngyllgogerychwyrndrobwllllantysiliogogogoch*—a railway station on the Holyhead-Euston line. (Leader, Allahabad.)

यह विलायत के एक छोटे से स्टेशन का ५८ अक्षरों का सबसे लम्बा नाम है।

२ *Kardivilliwarrakurrakurrieapparlarndoo*—This is not a misprint. It is an Australian aboriginal word. It is the name of a lake in the Northern Territory, and it means 'the starlight shining on the waters of the lake'

Wales and New Zealand have even longer place-names; but the name of the Australian lake shows that the aboriginal peoples of Australia—thought by ethnologists to be among the oldest remaining types of original homo sapiens—were not behindhand in inventing words which, besides having

(ग) प्रत्येक पुस्तक का नाम होता है, इसके नाम में यह विशेषता होती है कि वह उसके प्रकाशन से पहले ही रखना पड़ता है। इसके विपरीत मनुष्य का नाम कुछ दिनों बाद रखा जाता है। पुस्तकों के नाम प्रायः लेखक, नायक, पात्र-विशेष, विषय, भाव, घटना, परिस्थिति आदि से संबंध रखते हैं।

(घ) व्यापार में विशेष महत्त्व के होने के कारण जलयानों के स्वामी अपने पोतों के नाम रख लेते हैं।[१] ये नाम किसी व्यक्ति-विशेष के नाम पर अथवा जल-संबंधी होते हैं। विमानों के नाम रखने में भी विशेष अभिरुचि दिखलाई देती है।

(ङ) मुख्य-मुख्य चमकीले तारों, १२ राशियों, २७ नक्षत्रों एवं तारा-मंडलों, तथा नवग्रहों के नाम भी रखे गये हैं। ये प्रायः गुण, आकृति, देवो के नाम आदि पर होते हैं।

(च) दिन, मास, ऋतु, पर्व तथा त्योहार के नाम प्रायः ग्रहों, नक्षत्रों, देवों की जयंतियों अथवा पौराणिक कथाओं-घटनाओं के आधार पर रखे जाते हैं।

(छ) स्वायत्तभावना एवं भावातिरेक के कारण कभी-कभी पालतू पशुओं को भी दुलारसूचक, व्यंग्य अथवा गुणात्मक नाम दे दिये जाते हैं। घरों के नामों में भी यही भावना काम करती है। ये नाम गृहपति अथवा किसी प्रिय व्यक्ति के नाम पर होते हैं। कभी-कभी कोई पौराणिक नाम भी रख लिया जाता है। सुंदर दृश्यो पर भी कुछ नाम पाये जाते हैं।

(ज) व्यापारिक कंपनियों, कारखानों, गोष्ठियों, सभासमितियों, संसदों तथा अन्य संस्थाओं के नामों को कुछ विद्वान् समुच्चयात्मक व्यक्तिवाचक नाम मानते हैं और दिन-मासादि के नामों को जात्यर्थक व्यक्तिवाचक में गिनते हैं।

(झ) औषधियों तथा अन्य पण्य-द्रव्यों के नाम भी जात्यर्थक व्यक्तिवाचक ही समझना चाहिए।

(ञ) पुराणों में देवों तथा उनके अस्त्र-शस्त्रों, आभूषणो और वाहनों के नामों का उल्लेख आता है। किसी-किसी देव के एक-एक सहस्र नाम तक पाये जाते हैं। विष्णु सहस्रनाम, शिव सहस्रनाम आदि अनेक सहस्रनाम इस कथन की पुष्टि करते हैं। ये नाम उनके रूप, गुण, लीला एवं धाम पर रखे गये हैं। श्रुतियों ने ईश्वर के अनन्त नामो का स्तवन किया है।

उल्लिखित नामों की कोटियों में से यहाँ केवल प्रथम कोटि अर्थात् मनुष्यों के नामो का विवेचन ही अभिप्रेत है।

---

a poetically beautiful meaning, could twist the tongue of the uninitiated into knots.

Like all long Place-names the world over, the Australian long-distance ones are composites, made up of a number of shorter words, several of which are elided together. The result, spoken by an aboriginal who knows the dialect of the particular district, is a sound of invariable beauty : *gunyawarildi*, *Nelungaloo*, *Cadibarrawirracanna*. (Leader)

यह आस्ट्रेलिया के आदिनिवासियों की भाषा में एक झील का नाम है, जो कई शब्द समूहों से बनाया गया है; सुन्दर अर्थवाले होते हुए भी उनके उच्चारण में जीभ को बहुत तोड़ना-मोड़ना पड़ता है।

[१] जल मयूर, जल मोती, जल मंजरी आदि।

नाम की विवृत्ति—किसी व्यक्ति, वस्तु एवं स्थान-विशेष का परिचय नाम निर्देश के द्वारा ही दिया जा सकता है। नाम वह विशेष शब्द अथवा शब्द-समूह है जो किसी पदार्थ विशेष की ओर संकेत करता है। यह शब्द-विशिष्ट उसकी निजी सम्पत्ति समझी जाती है। वह उसका स्थायी स्वामी होता है। इस प्रकार नाम-नामी का शाश्वत संबंध हो जाता है। नामी जब तक चाहे उसे अपने पास रख सकता है। अन्य मनुष्य उसका प्रयोग नामी के साहचर्य्य अथवा सम्बन्ध में ही कर सकते हैं। इस प्रकार के शब्द को व्याकरण में व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं, क्योंकि वह व्यक्ति के व्यक्तित्व का व्यक्तीकरण करती है। नाम की व्युत्पत्ति इस प्रकार की गई है—"म्नायते अभ्यस्यते नम्यते अभिधीयते अर्थोऽनेनवा" अर्थात् जिससे अर्थ का ग्रहण अथवा बोध होता है उसे नाम कहते हैं। 'म्ना' धातु अभ्यास अर्थात् आवृत्ति करने के अर्थ में प्रयुक्त होती है। जो शब्द किसी एक को पुकारने के अर्थ में मनुष्यों द्वारा बार-बार दुहराया जाता है—उसी एक ही शब्द से सम्बोधित करने का पुनः पुनः अभ्यास किया जाता है, उसी आवृत्यर्थक शब्द को नाम कहते हैं। नम् धातु से भी नाम सिद्ध होता है जो पुकारने या बुलाने के अर्थ में व्यवहृत होती है। अमरकोश[1] में नाम के यह छः पर्यायशब्द दिये गये हैं—आह्वय, आख्या, आह्वा, अभिधान, नामधेय, नाम—जो अभिधेय को पुकारने, सम्बोधित करने, आमंत्रित करने आदि अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। नाम एकपदी, समस्तपदी अथवा समुच्चयपदी होते हैं। जैसे राम एकपदी नाम है। राम सेवक समस्तपदी है। वह राम का सेवक इन शब्दों का समस्त रूप है। श्रीरामजी यह तीन शब्द-समूह का नाम समुच्चयपदी है। इनमें कोई समास नही है। कभी-कभी समास तथा समुच्चय के मिश्रित रूप भी देखने में आते हैं।

नाम और शब्द—शब्द और नाम वस्तुतः एक ही हैं। दोनों ही ध्वनि संकेत हैं। भिन्न-भिन्न अर्थों के लिए भिन्न-भिन्न ध्वनियाँ होती हैं जिन्हें शब्द कहते हैं। नाम इन शब्दों से बनाये जाते हैं। शब्दों के सदृश नामों के भी तत्सम, अर्द्धतत्सम, तद्भव तथा देश्य रूप होते हैं। अतर केवल इतना ही है कि प्रथम का ध्वनि-संकेत मन को अर्थ की ओर ले जाता है और द्वितीय का ध्वनि-संकेत उस संज्ञी की ओर आकर्षित करता है जो उसका आदि स्रोत है—उसका मूलाधार है। नाम का जन्म शब्द से पहले हुआ है। भाषा और उसका व्याकरण बाद को बने हैं। घोर वनों के मध्य में रहनेवाली अशिक्षित जंगली जातियों के यहाँ भी नाम का प्रयोग पाया जाता है। सृष्टि के आदि में अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरस नाम के ऋषि पहले प्रादुर्भूत हुए, फिर उन्हीं से ज्ञानोदय हुआ। मुसलिम और ईसाइयो के आदि पुरुष आदम ने सबसे पहले प्रत्येक जीव का पृथक्-पृथक् नाम रक्खा। इन बातों से यही निष्कर्ष निकलता है कि नाम की उत्पत्ति शब्द से पहले हुई।

नामों में अनुकृति—मनुष्य स्वभाव से ही अनुकरण-प्रिय होता है। भोजन-वस्त्र में ही नहीं, नामों में भी वह अन्य की अनुकृति करने लगता है। अनुकरण-प्रियता से एक ही प्रकार के नामों की अभिवृद्धि होती है। एक ही नाम सैकड़ों मनुष्यों के पाये गये हैं। इससे उस नाम की लोकप्रियता सिद्ध होती है। यही कारण है कि आज सहस्रो राम दिखलाई दे रहे हैं, किन्तु राम के गुणों का नितांत अभाव है। मौलिक नामों में जो गुण या प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं उनका अनुकृत अभिधानों में प्रायः अभाव ही रहता है। मौलिक नाम से अभिप्राय उस आदि नाम से है जो राम को आदर्श मानकर अपनाया गया था। अनुकृत नाम केवल शब्द-सौंदर्य, माधुर्य अथवा श्रद्धा के कारण ही प्रायः रख लिये जाते हैं। गुरुकुलों ने ऋषि-कालीन वैदिक नामो को आश्रय दिया है, तो विहार आदि संस्थाओं ने बौद्ध नामों को पुनर्जीवित किया है। सिनेमा के कारण भी कुछ नाम जनता में प्रचलित हो गये हैं। अनुकरण की प्रवृति महिलाओं में विशेष पाई जाती है। किसी के यहाँ नये प्रकार के वस्त्राभूषण देखकर

---

[1] स्यादर्थाह्वयः।
आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च (३२५-२६ प्रथम कांडे शब्दादिवर्गः)

उनके हृदय में उन्हें प्राप्त करने की प्रबल उत्कंठा जाग्रत हो जाती है। नामों में भी यही भावना काम करती है। कोई नाम उन्हें रुचिकर लगा तो संतान के अभाव में भी वे भावी संतति का वही नाम रखने का संकल्प मनमें कर लेती हैं। कल्पना-विहीन मनुष्य भी इसी प्रकार अनुकरण-प्रिय होते हैं।

अनुकृत नामों में दोष—प्रवृत्ति-प्रलय के अतिरिक्त अनुकृत नामों में एक दोष यह भी है कि उनसे नाम-सादृश्य के कारण लोगों को भ्रम हो जाने की आशंका रहती है। "अश्वत्थामा हतो (नरो वा कुंजरो वा)," इस संकेत से द्रोण ने अपने प्रिय पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु समझी। अजामिल ने अपने पुत्र नारायण को पुकारा तो यमदूतों को भगवन्नारायण का भ्रम हुआ।[१] नाम सादृश्य से ही 'जूलियस सीज़र' के 'सिन्ना' की बड़ी दुर्गति हुई।[२] यही नहीं, पूर्वी पाकिस्तान में तो बेचारे एक उपन्यास-लेखक को हर्जाना तक देना पड़ा क्योंकि उसके एक पात्र का नाम एक व्यापारी के नाम से मिलता था।[३] "हाय हमारी 'मुसलिम लीग' मर गई[४]"—इस वाक्य से तो न जाने कितने श्रोताओं को मति-विभ्रम हो गया। दर्शकों ने समझा कि मृतक के प्रति शोक प्रदर्शित करने के स्थान में ये लोग 'मुसलिम लीग' नामक राजनीतिक संस्था के लिए नारे लगा रहे हैं। वास्तविक बात यह थी कि एक बंजारा शेख ने पाकिस्तान बनने के दिनों में आवेश के कारण अपने लड़के का नाम 'पाकिस्तान' तथा लड़की का नाम 'मुसलिम लीग' रखा था। चेचक से लड़की की मृत्यु हो गई। यह उसी की अर्थी थी जिसके साथ उपर्युक्त वाक्य दुहराते हुए लोग जा रहे थे। नारद नाम के ७ व्यक्ति प्रसिद्ध हैं। नारद कहनेमात्र से सातों में से किसी का भ्रम हो सकता है। ऐसी अवस्था में अभीष्ट नारद का निर्णय कठिन होगा।

नामों में नवीनता—इसके विपरीत दूसरी ओर मानव-प्रवृत्ति विचित्रता की खोज में सतत प्रयत्नशील रहती है। इसी प्रवृत्ति के कारण नामो में अनेकरूपता आती है। अभिनव द्वारों तथा मार्गों का अनुसरण करती हुई वह नूतन भाव-लोक में प्रवेश करती है—कल्पना से नवीन नामों का सृजन करती है। इसी वैचित्र्य-भावना से नाम-शास्त्र में नयी प्रवृत्तियों का समावेश हुआ जिससे नूतन

---

[१] **'पापी अजामिल पार कियो जिन नाम लियो सुत ही को नरायन।'**

[२] 3rd Citizen—Your name Sir, truly.
Cinna—Truly, my name is Cinna
1st Citizen—Tear him to pieces, he's a conspirator.
Cinna—I am Cinna the poet. I am Cinna the poet, I am not Cinna the conspirator (Shakespeare's Julius Caesar, Act III, Scene III)

[३] Amrita Bazar Patrika, 4-9-55.

[४] Death of "Muslim League"

KARACHI, Jan 5. Things are not always what they seem. For instance, people watching a funeral procession in the small Punjabi village of Bhowana were surprized to hear the mourners crying "Oh; Our Muslim League is dead: goes our Muslim League." and shocked to think that instead of crying for the deceased they should discuss the decline of a political party once all powerful in Pakistan.

However, on inquiry a 'Pakistan Times' reporter learned that 'Muslim League' was the name of the dead girl. Her Parents who belong to a nomadic tribe of Shaikhs, in the political enthusiasm of the first independence days called their children 'Muslim League' for the girl and 'Pakistan' for the boy. The girl died of small pox but 'Pakistan' still lives—(U. P. I.—A. P. P.) Amrita Bazar Patrika.

नामो की संख्या में विशेष अभिवृद्धि हुई। आश्वलायन, शुनःशेप, जरत्कारु, मौद्गल्य, मांडव्य, अघमर्षण, विभाड, कैय्यट, मम्मट, लोल्लट, कल्हण, कणप्पा, रुद्रट, दोखंधिया, धर्वरिया, भल्लूहण, मित्रावरुण, पुरूरवा, यास्क, सायण, श्यावाश्व, शाकटायन, ऐतरेय, कृशाश्व, आपस्तम्ब, अर्चनाना, अप्पय, दध्यङ्आथर्वण (दधीचि) आदि प्राचीन भारतीय नामो के आजकल दर्शन दुर्लभ हो गये हैं।

नामों के दो प्रकार—उपर्युक्त विवेचना के अनुसार नाम दो प्रकार के होते हैं—(१) अनुकृत तथा (२) अभिनव। अनुकृत नाम वह है जो किसी प्राचीन अथवा प्रचलित नाम के अनुकरण पर रखा गया है। कल्पना के द्वारा सोच-विचारकर नूतन निर्मित नाम जिसका भूत तथा वर्तमान काल में अस्तित्व न हो अभिनव नाम कहलाता है। कुछ मनुष्यो का सहज स्नेह अनुकृत नामों से रहता है तो कुछ अभिनव नामों पर मुग्ध रहते हैं, क्योंकि वे मानवीय उत्सुकता को शांत करते हैं। उनसे नवीनता अथवा विलक्षणता की पिपासा परितृप्त होती है। इसी वैचित्र्य-विधान के अन्वेषण से मिथ्या-सादृश्य के द्वारा अर्द्ध अभिनव नामों की सृष्टि हुई। सहँगू और सैकू, महँगू और मैकू के मिथ्या-सादृश्य से रखे हुए अर्द्ध अभिनव नाम हैं। अभिनव तथा अनुकृत नामो का यह मिश्रित रूप नृसिंह अथवा किन्नरों के सदृश कल्पना की एक अद्भुत सूझ है।

अनुकृति तथा आवृत्ति—अनुकरण तथा आवृत्ति में आनुपातिक संबंध है। जितना ही अधिक अनुकरण किया जाता है उतनी ही आवृत्ति में वृद्धि होती जाती है। अनुकरण से एक ही नाम की कभी-कभी सैकडो आवृत्तियाँ हो जाती हैं। अनुकृति नामों की संख्या नहीं वरन् आवृत्तियों की संख्या बढ़ाती है। इससे प्रवृत्तियो की हत्या होती है। अनुकरण से एक बड़ी हानि यह होती है कि उससे नये नामों की संख्या-वृद्धि में बाधा पड़ती है। आवृत्तियाँ क्यों होती हैं? इस प्रश्न का समाधान करने से पहले अनुकरण के हेतुओं पर विचार कर लेना उचित होगा। शब्द-सौष्ठव एवं माधुर्य के अतिरिक्त कुछ अन्य कारण भी हैं जो अनुकरण करने को बाध्य करते हैं। सबसे बड़ा नियन्त्रण राशियो का रहता है जो शिक्षिताशिक्षित सबको अपने सीमित क्षेत्र से बाहर नहीं जाने देती। कुछ साहित्य प्रेमियों को अनुप्रास का मोह भी बहुत सताता है। वे अपने परिवार में अनुप्रासित नाम रखना ही अधिक पसंद करते हैं।[1] इससे प्रवृत्ति के प्रतिकूल अनुकृत नाम रखने को विवश हो जाते हैं। किसी नाम की लोकप्रियता भी अनुकरण का हेतु बन जाती है, जो व्यक्ति जितना ही लोकसंग्रही होगा उसके नाम में उतनी ही साधारणीकरण की शक्ति होगी, वही नाम सर्वप्रिय बन सकेगा। उसी से सत्यं, शिवं एवं सुन्दरं की मङ्गलमयी त्रिधारा प्रवाहित हो सकेगी। यही आवृत्तियों की आवृत्ति के कारण हैं। अनुकरण के सबंध में यह न भूलना चाहिए कि जब अनुकृत नाम किसी देवता के नाम पर श्रद्धा-भक्ति तथा निष्ठा के कारण रख लिया जाता है तो वह इस कोटि में नहीं आता। जब किसी मनुष्य का कोई सुंदर और रोचक नाम अपना लिया जाता है वही अनुकृत नाम कहलाता है। कभी-कभी एक ही कक्षा में पाँच-पाँच ओमप्रकाश नाम देखे गये हैं। किसी-किसी के विचार से नामो की ये पुनरुक्तियाँ पृथक्-पृथक् नाम हैं जो एक ही समध्वनि से पुकारे जाते हैं। उनके मत से जितने भी ओमप्रकाश हैं वे सब भिन्न-भिन्न अर्थवाले पृथक्-पृथक् शब्द हैं, केवल सबोधित करने की शब्द ध्वनि ही एक है। आवृत्यक नाम को वे वही नाम नहीं मानते। जिस प्रकार यमकालंकार में एक ही ध्वनिवाले शब्दो की आवृत्तियाँ होती हैं, किंतु प्रत्येक शब्द का अर्थ भिन्न-भिन्न होता है, उसी प्रकार जितने नाम उतने अर्थ। हरि नाम के जितने व्यक्ति होंगे उतने ही पृथक्-पृथ क्

[1] मिश्र के पदच्युत राजा फारुख की बेगम (फरीदा) और बच्चों के नाम 'फ' से ही आरंभ होते हैं। पुरुवंशीय राजा रौद्राश्व के दश पुत्रों के नामों में अंत्यानुप्रास का कैसा अपूर्व आनंद मिलता है। ऋतेषु, कक्षेषु, स्थण्डिलेषु, कृतेषु, जलेषु, धर्मेषु, धृतेषु, स्थलेषु, सन्नतेषु, वनेषु। (विष्णु पु०)

अर्थ लिये जायंगे। यद्यपि उन सब नामों की ध्वनि समान ही है। इसलिए हरि संबंधी जितने नाम हैं सब भिन्न-भिन्न हैं। एक ही ध्वन्यात्मक हरि[1] साँप, मेढक, ताल, पानी आदि अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है। यदि हरि का श्लेषात्मक प्रयोग मान लिया जाय तो एक ही ध्वनि से अनेक अर्थ निकल आयेंगे। शब्द एक ही है, ध्वनि एक ही है, अर्थ अनेक हैं। वैशम्पायन नाम के तीन व्यक्ति हैं। तीनों नाम के तीन भिन्न-भिन्न निर्वचन किये जा सकते हैं।[2] अतः ध्वनि साम्य होते हुए भी तीनो वैशम्पायन पृथक्-पृथक् तीन शब्द हैं, एक नहीं। इस तर्क से वे अपने इस सिद्धांत का समर्थन करते हैं कि नामों की आवृत्ति नहीं होती। समान ध्वनि-सूचक होते हुए भी वे भिन्न-भिन्न नाम हैं। इन युक्तियों से आवृत्यक नामों की विभिन्नता सिद्ध नहीं होती।

(१) यमक तथा श्लेषालंकार वाक्य में ही आ सकते हैं, क्योंकि उनका वाक्य के अन्य शब्दों से संबंध रहता है। स्फुट तथा विकीर्ण नामो का अन्य शब्दों से कोई संबंध नहीं होता। इसलिए उनको यमक तथा श्लेष समझना उचित नहीं।

(२) वैशम्पायन की तीन व्युत्पत्तियाँ हो गईं किंतु जब सैकड़ों वैशम्पायन हों तो क्या किया जायगा, एक सीमा के बाद तो आवृत्ति मानी ही जायगी।

(३) निर्वाचक नाम की व्युत्पत्ति पर इतना सूक्ष्म विचार नहीं करते, उन्हे तो किसी अभीष्ट नाम का अनुकरण करना होता है।

(४) यह भी ध्यान रखना चाहिए कि नाम रखने में अर्थ से भाव प्रबल होता है।

उपर्युक्त बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि अनुकरण से नामों की आवृत्ति होती है। एक नाम की समस्त आवृत्तियाँ एक ही होती हैं और उनका अर्थ भी एक ही होता है। वे पृथक्-पृथक् शब्द नहीं होते। अब प्रश्न यह होता है कि जब एक ही नाम की अनेक आवृत्तियाँ हैं तो उनको जातिवाचक मानना उचित होगा न कि व्यक्तिवाचक। उनको जातिवाचक मानना युक्तिसंगति नहीं, क्योंकि एक ही नाम के समस्त पुरुषों में कोई ऐसा सामान्य लक्षण नहीं जो उस वर्ग के सब व्यक्तियों में पाया जाता हो जिस प्रकार सब पशुओं में एक सामान्य पशुत्व या सब शुकों में एक सामान्य शुकत्व पाया जाता है। सब मनुष्य में जातीयता प्रकट करने के लिए जिस प्रकार एक चिह्न-विशेष होता है जिसे मनुष्यत्व कहते हैं उस प्रकार का सब रामों या कृष्णों में रामत्व या कृष्णत्व धर्म का समरूपेण कोई सम्बन्ध नहीं दिखलाई देता। एक गौर वर्ण बालक भी अंधविश्वासजन्य रुढ़ियों के कारण कृष्ण संज्ञक हो सकता है। कुछ विद्वान् ऐसे नामों को सामान्य व्यक्तिवाचक कहना अधिक उचित समझते हैं।

---

१. **हरि आये हरि लेन को, हरि बैठे हरि पास।**
हरि हरि सुत हरि में चले, तब हरि भये उदास॥

२. (अ) त्रिशं मनुजं पातीति विशम्पः। त्रिशाम्पतिरित्यर्थः। आतोऽनुपसर्गे कः [३।२।३] इति कर्तरि कः।

बाहुलकाद् विभक्तेरलुक्। विशम्पशब्दश्चायमश्वादिषु पठ्यते। अतएव विशम्पस्य गोत्रापत्यं पुमान् इत्यर्थे अश्वादिभ्यः फञ् [४।१।११०] इति फञि वैशम्पायन इति पदं निष्पन्नम्।

(आ) शम्पाशब्दो विद्युदर्थे सुप्रसिद्धः विगता शम्पा यस्मात् स इति वा, यस्य स इति वा विशम्पः। विद्युच्छब्दोऽत्रोपचारात् प्रज्ञाया वा प्रतिभाया वा शारीरकान्तेर्वाबोधक। अतएव निष्प्रज्ञो वा निष्प्रतिभो वा निष्प्रभो वा विशम्पशब्दस्यार्थः तस्य गोत्रापत्यं वैशम्पायन.।

(इ) वैयाकरणप्रवरेण वर्धमानेनोक्तम्-विविधं शं सुखं पातीति विशम्पः। तस्य वैशम्पायन इति। (मञ्जूषा, अष्टम वर्ष, द्वितीया संख्या अक्टूबर, १९५२)।

किसी आविष्कारक अथवा स्थान-विशेष के नाम से कोई वस्तु बाज़ार में बिकने लगती हैं। ऐसे नामों को कोई व्यक्तिवाचक और कोई जातिवाचक कहता है। मैं दुकान से कुछ पनामा (blade) लाया हूँ। यहाँ पनामा जात्यर्थक व्यक्तिवाचक मानना अच्छा है। कम्पनी, पुस्तकालय, सभा-समिति आदि के नामों को कुछ विद्वान् सामूहिक व्यक्तिवाचक कहते हैं। नरनारायण, दत्तात्रेय, त्रिमूर्ति आदि नाम अनेक देववाची होते हुए भी समस्त पद होने के कारण एकवचन, व्यक्तिवाचक संज्ञा ही होंगे। किसी-किसी नाम की सैकड़ों ही नहीं, हजारों आवृत्तियाँ श्रुतिगोचर होती हैं। यह उसकी लोकप्रियता का कारण है। इस सर्वप्रियता का अन्वेषण करने के लिए किसी सीमित क्षेत्र के नामों का अध्ययन करना उचित होगा। प्रत्येक नाम की कितनी आवृत्तियाँ हुई हैं? किस नाम का सबसे अधिक मनुष्यों ने अनुकरण किया है? इस गणना से यह पता चल सकता है कि अमुक नाम वहाँ पर जनता में अधिक प्रचलित है। अवध के नामों की गणना में संभव है वहाँ राम का नाम अधिक प्रचलित हो। व्रज में कृष्ण का कौन-सा पर्यायवाचक नाम सबसे अधिक प्रसिद्ध होगा, यह वहाँ की नाम-गणना से ही सिद्ध हो सकता है। अंत में इतना ही कहा जा सकता है कि किसी नाम की अनुकृति एवं आवृत्ति उसकी लोकप्रियता के कारण होती है जो स्वतः श्रुतिमाधुर्य, रचना-सौष्ठव, अर्थ-गौरव, भव्य-भावना तथा व्यक्ति-विशेष आदि बातों पर निर्भर रहती हैं।

अनुकृत नामों के भेद—नवीन नाम रखने की प्रवृत्ति कतिपय मनुष्यों में ही पाई जाती है। अधिकांश में पूर्व प्रचलित नाम ही रख लिये जाते हैं। अनुकृत नामों के अविकारी तथा विकारी ये दो रूप पाये जाते हैं। अविकारी अपने यथार्थ रूप में रहता है। हरिश्चंद्र अविकारी नाम है, उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ, विकारी के कई प्रकार मिलते हैं :—

(१) धनात्मक विकारी नाम—इनमें यथार्थ नाम के अतिरिक्त कुछ अन्य शब्द आगे या पीछे जोड़ दिये जाते हैं। हरिश्चंद्र सिंह, वेदव्यास नामों में सिंह तथा वेद अतिरिक्त शब्द हैं।

(२) ऋणात्मक विकारी नाम—इसमें यथार्थ नाम में से कुछ शब्द घटा दिये जाते हैं यथा-प्रतापसिंह में सिंह पृथक् कर देने से प्रताप नाम बन गया।

(३) आंशिक विकारी नाम—नाम के पूर्व अथवा उत्तर अंश को लेकर नाम बना लेते हैं। हिन्दी नामों में प्रायः पूर्व अंश ही लिया जाता है। कहीं-कहीं दोनो अंशों पर भी नाम पाये जाते हैं। बलराम के पूर्वांश से बलदेव, बलबिहारी और उत्तरांश से रामकृष्ण, रामव्रज आदि नामों का सृजन हुआ।

(४) अपभ्रंश विकारी नाम—संपूर्ण नाम अथवा उसके किसी अंश को विकृत कर ये नाम बनाये जाते हैं—रमचंदा रामचंद्र से और रमुआ राम से बने हैं।

(५) संक्षिप्त विकारी नाम—इसमें लम्बे नाम का ह्रस्वरूप कर दिया जाता है, यथा-व्रज नारायण का विजनू, नारायण का नरेना, ध्रुव कर्ण का धौकल। जिन बालकों का घरेलू (लाड़-प्यार का) नाम नहीं होता उन्हें ऐसे ही नामों से पुकारते हैं—रमला (रामलाल), हन्नू (हरनारायण, हनुमान), बिसिया (विश्वम्भरनाथ) ये केवल पुकारने के नाम हैं, लिखने में इनका प्रयोग बहुत कम देखा गया है।

नाम और नम्बर—जो मनुष्य नाम को केवल संकेतमात्र ही मानते हैं, उनका कहना है कि नाम के स्थान पर किसी संख्या से भी काम ले सकते हैं। मौजीलाल नाम न रखकर नं० ४ या किसी अन्य अंक पर नाम मान लिया जाय तो कोई हानि नहीं। नौ अगस्त और सन् बयालीस भी तो नाम हैं। इसमें यह आपत्ति हो सकती है कि संख्यावाचक नाम निरर्थक तथा भावना-रहित होंगे किंतु उपर्युक्त दोनों नाम उस देशव्यापी क्रांति की ज्वलंत चिनगारियाँ हैं जिन्होंने विदेशी दासता के बंधन को भस्म कर दिया है। वे दोनों सार्थक हैं, उनसे हृदय में भावोदय होता है। इसके विपरीत संख्या-

वाचक नाम उस शुष्क स्थाणु के सदृश होंगे जो किसी के अंतःकरण में किसी प्रकार का राग-विराग उत्पन्न नहीं कर सकता। उनमें अभिधा, लक्षणा और व्यंजना शक्तियों का अभाव रहता है। इसलिए उनसे किसी प्रकार का अर्थ नहीं निकल सकता। कुछ लोग उसका विद्योत्तमा तथा कालिदास के शास्त्रार्थ का सा मनमाना अर्थ लगाने की चेष्टा करेंगे। सेना में नम्बरों से विशेष काम लिया जाता है। कोई सैनिक बिना नम्बर के नहीं होता। किसी सैनिक के नम्बर से केवल दो बातें व्यंजित होती हैं—(१) क्रमांक (२) उसका व्यवसाय। नं० ५५५ का यह तात्पर्य है कि सिपाही का क्रमांक ५५४ और ५५६ के मध्य में है और वह किसी सेना विभाग में काम करता है। इस प्रकार कोई भी संख्या उपर्युक्त दो बातें ही किसी व्यक्ति के विषय में व्यक्त कर सकेंगी। इससे स्पष्ट हो जाता है कि संख्या-वाचक नामों से व्यक्तियों के व्यक्तित्व विनष्ट हो जाते हैं। किसी-किसी को यह आक्षेप भी हो सकता है कि जब मुख्य-मुख्य तारों और नक्षत्र-मंडलों के अतिरिक्त अधिकांश तारो के नाम के स्थान पर संख्या से ही काम लिया गया है तो यह नियम मनुष्यों में क्यों लागू नहीं हो सकता? इसक निराकरण यह है कि छायापथ में असंख्य तारे हैं। फिर न जाने इस विशाल ब्रह्मांड में कितनी गगन-ा गंगा और चमचमाती होंगी। नाम से काम चलना वहाँ सम्भव नही है। एक ही नाम के अनेक तारों में से किसी एक तारे को पहचानने में बड़ी कठिनाई होगी। दूसरी बात यह है कि साधारण जनता को तारों के नाम की कोई चिंता नहीं, क्योंकि उनमें उसकी आसक्ति की कुछ सामग्री नहीं पाई जाती। उनके नाम की आकांक्षा तो केवल थोड़े से ज्योतिषियों को ही रहती है। इसलिए नाम के संबंध में मनुष्य और तारों की तुलना का कुछ मूल्य नहीं है।

संख्यावाचक नामों से अव्यवस्था की भी बड़ी आशंका रहती है। प्रत्येक शहर अंधेर-नगरी बन जायगा। मनुष्य कितने नम्बर याद रख सकेगा? यदि घर-घर के अलग-अलग नम्बर होंगे तो एक ही मुहल्ले में एक नम्बर के अनेक व्यक्ति हो जायँगे। एक ही कक्षा में एक-एक नम्बर के इतने विद्यार्थी हो जायँगे कि उनकी हाजिरी लेना कठिन हो जायगा। यदि मुहल्लेवार नम्बर दिये जायँ तो एक ही नगर में एक नम्बर के बहुत से मनुष्य हो जायँगे। मुहल्ला बदलने पर बड़ी गड़बड़ी रहेगी। यदि कुल शहर का एक ही क्रम से नम्बर हो तो जो व्यक्ति शहर छोड़कर चला जायगा तो उसका नम्बर ही लुप्त हो जायगा। इस प्रकार न तो उनके विभाजन का कोई आधार हो सकता है और न कोई क्रम। लंबे-लंबे नम्बरों को याद रखना भी सम्भव नहीं होगा। इसमें नामी से स्वय भी भूल हो सकती है। १७५६८६ नम्बर का छोटा विद्यार्थी हाजिरी के समय अवश्य भूल कर देगा। उपन्यासादि साहित्य में भी संख्या-वाचक नाम कथानकों के आनन्द को किरकिरा कर देंगे। श्री ८३६ अपनी श्रीमती ५७४ और दो बच्चे ४५ तथा ४६ के साथ बाग नं०२ में सड़क नं० ३ पर टहल रहे थे। यह वाक्य किसको अच्छा लगेगा। कचेहरी का मुंशी लिखेगा १७५ सुत ५२५ आदि। अदालत का चपरासी जब ५३६ नम्बर को पुकारेगा तो असली व्यक्ति की अनुपस्थिति में उसी संख्या का कोई अन्य अभियोगी या कर्मचारी भ्रम से वहाँ उपस्थित हो जायगा। सहस्रनामों तथा स्तोत्रों का लिखना तो बंद ही हो जायगा। नामों के स्थान पर अंक लिखकर विष्णु-सहस्रनाम का पाठ कीजिए। यदि १७५६८८ राम या कृष्ण का नाम होता तो भक्तों को नाम जपने में कितना कष्ट होता। जपते जपते न जाने कितनी भूलें करते। पुलिस को भी अंधेर नगरी की सी मनमानी करने की सुविधा हो जायगी।

अन्य असुविधा लिंग भेद की होगी, क्योंकि अंक सब पुंल्लिग हैं। स्त्रियों के नामों का लिंग ही बदल जायगा। नाम से स्त्री पुरुष की पहचान न हो सकेगी। इससे यह लाभ अवश्य होगा कि अहिंदियों को लिंगानुशासन वचन-भेद तथा वर्तनी के उठ जाने से भाषा सीखने में बड़ी सरलता हो जायगी। सुभद्रा आता है सुनकर तो सब हँसते है। परंतु ३६७ आता है इस वाक्य में हँसने का कोई अवसर नहीं रहेगा। कुछ अंक अशुभ समझे जाते हैं और कुछ विशेष कारणों से बदनाम हो

गये हैं। मृत्यु के साथ सम्बंध होने से १३ अशुभ समझा जाता है उसे कोई व्यक्ति स्वीकार न करेगा। हर्बर्टस्पेंसर[1] ने इसके अमांगल्य के विषय में एक रोचक घटना का उल्लेख किया है। १० नं० पुलिस में कुख्यात है। ७४ का सम्बंध एक हत्याकांड से है। मुसलमानों में ७८६ संख्या अत्यंत शुभ मानी जाती है। जिसको ४२० कहा जायगा वह लड़ने को उद्यत हो जायगा। प्रायः सम संख्या शुभ और विषम अशुभ मानी जाती है। इसके विरुद्ध परीक्षार्थी वर्ग विषम को शुभ मानता है। ऐसी परिस्थिति में संख्यावाचक नामो का प्रचार असम्भव है। सबसे बड़ी बाधा यह है कि भावना की पृष्ठभूमि न होने के कारण उनमें प्रवृत्तियों का भी अभाव रहता है, इससे व्यक्तियों के व्यक्तित्व का व्यक्तीकरण नहीं होने पाता। यही व्यक्तीकरण नाम की विशेषता है।

एक घर में १, २, ३, ४ नाम के चार भाई हैं। नं० ३ के चार पुत्र पहले हुए, उनके नाम रखे गये ५, ६, ७, ८। इसके बाद सबसे बड़े के चार पुत्र हुए, उनके नाम ६, १०, ११, १२। इस प्रकार संख्या मे जो क्रम की विशेषता थी वह भी भंग हो गई। चारों भाइयो के चार चार पुत्र हुए, उन सबके नाम क्रमशः १, २, ३, ४ रखे गये। सब भाई खेल रहे हैं। यदि कोई व्यक्ति उन भाइयो मे से नं० ३ को बुलाना चाहे तो ब ब ब ब[2] की भाँति ३ ३ ३ ३ पर कौन-सा बलाघात किया जाय कि उन चारों भाइयो में भेद स्पष्ट हो जाय। प्रजापति के द द द के से मनमाने अर्थ लगाने से मनोरथ सिद्ध न होगा।[3] सड़क, मकान आदि अचल स्थानों या रेलादि चलयानो के लिए तो नम्बर से काम चल सकता है। संयुक्त राज्य (अमरीका) में प्रायः पूर्व-पश्चिम सड़के सम संख्यावाची होती हैं और उत्तर-दक्षिण विषम संख्यावाची। मनुष्यों में तो संख्या का प्रयोग केवल आपत्ति का मूल ही होगा।

इससे यह परिणाम निकलता है कि ऐसे अर्थ शून्य, भावना विहीन एवं अनेक दोषपूर्ण नामो का प्रयोग असुविधा-जनक, अशोभनीय एवं असंगत होगा। कितने आश्चर्य एवं उपहास की बात होगी कि मनुष्य अपने मकानों, यानो आदि के तो सुन्दर तथा सार्थक नाम रखे और अपने लिए निरर्थक, अनुपयुक्त तथा अप्रिय नाम स्वीकार करे।

नाम का स्वरूप—यह पहले ही बतलाया जा चुका है कि नाम व्यक्ति के व्यक्तित्व का व्यक्तीकरण करता है। प्रत्येक व्यक्तिवाचक संज्ञा व्यक्ति एवं उसके व्यक्तित्व का परिचय देती है। समष्टि से व्यष्टि को पृथक् करती है। अव्यक्त को व्यक्त करने, उसको प्रकाश में लाने का केवल नाम ही एक साधन है। निराकार नाम साकार की सीमा निर्धारित करता है। नाम से जिस व्यक्तित्व की व्यंजना होती है उसके

---

[1] एक बार किसी भोज में कुछ व्यक्तियों को निमंत्रण दिया गया। संयोग से १३ व्यक्तियों के लिए १३ कुर्सियाँ एक मेज के चारों ओर लगी हुई थीं। कुछ लोग आकर अपने-अपने स्थान पर बैठ गये। एक व्यक्ति देर से आया। उसने देखा कि १२ कुर्सियों पर १२ मनुष्य बैठे हुए हैं, केवल १३वीं कुर्सी खाली है। इस अशुभ नम्बर १३ से उसे कुछ भय-सा प्रतीत हुआ। उसे घबराया हुआ देखकर एक मनुष्य ने एक देवी जी की ओर संकेत करते हुए हँस कर कहा, "आप बच्चे से हैं, इसलिये श्रीमान् जी का नम्बर १३ नहीं, १४ है"। यह सुनकर उसे कुछ सांत्वना हुई। अन्य श्रोता भी हँस पड़े।

[2] केवल 'ब' चतुष्टय से बनाया हुआ विदेशी भाषा का यह एक वाक्य है, चारों बकारों पर भिन्न-भिन्न बलाघात देने से इसका अर्थ होता है—पत्नी ने पति के कान उमेंठे।

[3] एक दिन देव, दानव तथा मनुष्य प्रजापति से उपदेश लेने गये। प्रजापति ने उन तीनों वर्गों को 'द' की ही शिक्षा दी। इस 'द' से विलासी देवों ने 'दमन', हिंसक असुरों ने 'दया', तथा लोभी मनुष्यों ने 'दान' अर्थ समझा (बृहदारण्यक उपनिषद, अध्याय ५, ब्राह्मण २, मंत्र १-३)।

दो अंग हैं। एक से रूपाकृति का बोध होता है और द्वितीय से चरित्र का। आकृति से यह अभिप्राय होता है कि वह मनुष्य विशालकाय है अथवा वामनाकृति किम्वा मध्यमाकार। रूप से तात्पर्य उसके सितासित वर्ण तथा सौंदर्य से है, यही नहीं अन्य बाह्य बातें भी रूपाकृति के अंतर्गत सम्मिलित हैं। उसके वस्त्राभूषण, चालढाल, सजधज आदि अनेक व्यक्तिगत विशेषताओं पर प्रकाश पड़ता है। किसी को लम्बे केश रुचिकर हैं तो किसी को छोटे और किसी को काकुल रखना प्रिय होता है। कोई टेढ़ी टोपी पहनता है तो किसी को जूते की विलक्षणता आकर्षित करती है। वस्त्रों में नाना प्रकार के फैशन प्रचलित हैं। वार्तालाप का प्रत्येक का अपना निराला ही ढङ्ग होता है। ये सब वहिर्चिह्न प्रत्येक व्यक्ति में पृथक्-पृथक् होते हैं। चरित्र में गुणों के अतिरिक्त विचार भावनाएँ एवं क्रिया व्यापार भी समाविष्ट रहते हैं। इन दोनों वाह्य तथा आभ्यंतर कारणों के द्वारा ही प्राणियो में नाम के स्वरूप की अभिव्यक्ति होती है। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि नाम व्यक्तित्व का प्रतीक एवं व्यक्ति का प्रतिनिधि होता है।

नाम का उद्देश्य—नाम एक अत्यंत सुंदर कल्पना है जिसके बिना समाज में बड़ी अव्यवस्था-दुरूहता, एवं जटिलता उत्पन्न होने की आशंका रहती है। सहस्रों मनुष्यों के समूह में से हमें एक व्यक्ति विशेष से मिलना है। उसे हम किस प्रकार संबोधित करें कि वह उस भीड़ से निकल कर हम तक पहुँच जाय। कलकत्ता में किसी को अपने मित्र के लिए एक पत्र भेजना है, बिना नाम के वह उस तक किस प्रकार पहुँचे। पारस्परिक संबंध प्रदर्शित करने के लिए भी नाम की आवश्यकता होती हैं। केदारी बिहारी का पुत्र, बलई का भाई, सुमेरा का पिता और सुखिया का स्वामी है। कहने का तात्पर्य यह है कि बिना नाम के मनुष्य के संपूर्ण कार्य स्थगित हो जाते, सारा जीवन-व्यापार अस्त-व्यस्त हो जाता। जीवन की इन जटिल समस्याओं को सुलझाने के लिए—समाज की दुरूहताओं को दूर करने के लिए—नाम का आविर्भाव हुआ।

नाम केवल संबोधित करने के लिए ही नहीं होता। उसके अन्य उद्देश्य भी होते हैं। जब समान वस्तुओं की एक वृहत् राशि से प्रत्येक वस्तु को पहचान कर छाँटना या उसको थोड़े से शब्दों में वर्णन करना अत्यंत कठिन होता है, तब नाम की आवश्यकता पड़ती है अथवा किसी जाति या समाज का कोई वर्ग किसी पदार्थ में इतनी तीव्र आसक्ति रखता है कि उसको एक छोटा सा नाम देना अवश्यंभावी हो जाता है। किसी एक का रूप निश्चित हो जाने पर अन्यों के पहचानने में अथवा उन अन्यों के समुदाय या वर्ग का लक्षण करने में नाम से सहायता मिलती है। प्रत्यक्ष लाभ एक यह भी है कि वह नाम द्रव्य को पूर्ण रूप से व्याप्त कर लेता है तथा उसके संबंध एवं स्वरूप को व्यक्त करने में मस्तिष्क को अनावश्यक तथा व्यर्थ बातें नहीं सोचनी पड़तीं। एक लघु शब्द से ही काम चल जाता है। संक्षेप में नाम रखने के ये ही चार मुख्य अभिप्राय हो सकते हैं। एक पत्रवाहक अथवा पर्यटक नाम का मूल्य अच्छी प्रकार जानता है।

नाम का महत्त्व—संसार में नाम का बड़ा महत्त्व दिखलाई देता है। प्रत्येक मानव की यह महदाकांक्षा रहती है कि उसका नाम पृथ्वी पर प्रसिद्धि प्राप्त करे और उसके विनश्वर कलेवर के विनष्ट होने के उपरात भी वह अक्षुण्ण एवं अमर रहे। एतदर्थ वह अनेक उपाय तथा उपचार करता है। भयङ्कर संग्राम में प्राणों की अवहेलना कर प्रबल विपक्षियों पर विजय प्राप्त करता है। कीर्ति स्तम्भ इसी भाव-व्यञ्जना के प्रतीक होते हैं। प्राचीन दिग्विजय, अश्वमेध-यज्ञादि इसी अमूल्य लालसा के क्रियात्मक स्वरूप थे। नाम की यही भव्य भावना इष्टापूर्तादि शुभ कर्मों में भी साकार हो जाती है। प्रच्छन्न एवं प्रत्यक्ष रूप में यही अभिधान-अमरत्व की प्रेरणा मनुष्य को अतिमानवता के कार्य करने को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करती रहती है।

नाम की सबसे अधिक महत्ता एवं सार्थकता उस अवस्था में प्रदर्शित होती है जब वह अधिक से अधिक जन मन को अपनी ओर आकृष्ट कर सकता है। जो बहुसंख्यक व्यक्तियों के अंतःकरणों

में रसानंद के सदृश अनुभूति उत्पन्न करता है, उसी नाम की व्यापकता अधिक होती है अर्थात् जिस नाम में जितनी अधिक साधारणीकरण की शक्ति होगी वह उतना ही मानव-मानस को प्रभावित कर सकेगा। इसी शक्ति पर नाम की श्रेष्ठता तथा लोक-प्रियता अवलम्बित रहती है। राम का नाम सबसे अधिक प्राणियों के हृदय में समान भावना जाग्रत करता है। इसीलिए वह सब का प्रिय शब्द बन गया है। सब कोई इसे अपनाने में प्रयत्नशील रहते हैं, कोई नाम के आदि में, कोई अंत में, एवं कोई मध्य में। हिंदी प्रदेश के नामों की गणना में राम सबसे अधिक व्यापक नाम है। पूर्वी प्रदेश-वासियों में तो वह इतना प्रिय हो गया है कि वे उसे आद्यवसान एवं मध्य तीनों स्थानों में व्यवहृत करते हैं। रामलगन राम, राममगन राम, पतिराम राम आदि अनेक नाम इसके उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत किये जा सकते हैं। राम प्रवृत्ति के अतर्गत ८४८ नामों की रचना केवल राम के ही योग से हुई है। कृष्ण, शिव, विष्णु आदि अन्य किसी देव का कोई एक नाम इतना व्यापक न हो सका। विष्णु के नामों में हरि (१०३), महेश के नामों में शिव (२१५) तथा गोपाल के नामों में कृष्ण (२६२) अधिक प्रचलित प्रतीत होते हैं।

संत महात्माओं ने नाम की महिमा का मुहुर्मुहः स्तवन किया है। तुलसीदास ने राम के नाम को राम से भी अधिक महत्त्व दिया है। राम का दर्शन सब के लिए सुलभ नहीं है, कोई विरला योगी ही पा सकता है। परन्तु नाम-स्मरण जपादि से अष्टसिद्धि एवं नवनिधि स्वतः चली आती हैं। जब नाम किसी गुण का प्रतीक हो जाता है तो उसका मूल्यांकन करना सरल नहीं होता। दानवीर कर्ण, सत्यवीर मोरध्वज, प्रणवीर भीष्मादि वीरपुंगव अपने अविनाशी नाम के द्वारा अमर हो गये हैं। गांधी के नाम पर आज भी मनुष्य सर्वस्व अर्पण करने को उद्यत रहते हैं। रुस्तम के नाम के आतंक से ही शत्रु भयभीत हो जाते थे। हरीसिंह नलवा का नाम सुनकर ही रोते हुए अफ़गानी बच्चे चुप हो जाते थे। नाम से न केवल अमरत्व ही प्राप्त होता है, वरन् यश-अपयश कमाने का भी वही एक साधन है। मनुष्य बहुधा कहा करते हैं—मेरे नाम को कलंकित न करना, धब्बा न लगाना, अपने नाम को उसने ऊँचा कर दिया इत्यादि, इत्यादि। ऐसे वाक्यों से स्पष्ट होता है कि मनुष्य को नाम की कितनी चिंता रहती है। उसकी पवित्रता को अक्षुण्ण रखने के लिए वह अत्यंत आतुर रहता है क्योंकि वह उसका मूल्य पहचानता है। इस प्रकार आस्तिक गुणों का स्थायी प्रतीक खड़ा करने, क्षणभंगुर शरीर को अमृतत्व देने एवं अविनश्वर, अजीर्ण यशोपार्जन करने के लिए नाम ही सर्वोत्तम उपकरण हो सकता है।

जीवन के समस्त प्रसंग वाणिज्य-व्यापार, आचार-विचार, आमोद-प्रमोद, खेल-कूद, बातचीत, मेल-जोल, पत्र-व्यवहार, शुभाशुभ कृत्य नाम पर ही निर्भर रहते हैं। मारण, मोहन, उच्चाटन वशीकरण आदि तांत्रिक उच्चारों में भी नाम के बिना काम नहीं चल सकता। १६ संस्कारों में से ७ संस्कारों में नाम का प्रयोग आवश्यक होता है। हिन्दुओं का संकल्प मंत्र भी नाम के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। संपर्क-विच्छेद, किसी भी दशा में मनुष्य नाम के बिना नहीं रह सकता। पालने से श्मशान तक तो नाम मनुष्य के साथ रहता ही है, मरणोपरांत भी वह अपने मुक्त रूप से उस दिवंगत आत्मा का पुनः-पुनः स्मरण दिलाया करता है। नाम का सबसे अधिक महत्व इसी से व्यक्त होता है कि मनुष्य जिसे अनामी कहता है उस ईश्वर के अनंत नाम पाये जाते हैं। 'नेति-नेति' कहने से भी उसके नामों की इति नहीं होती। सिक्ख गुरुओं ने नाम को भी ईश्वर की एक संज्ञा माना है। "म्हारे नातो नाम को रे और न नातो कोय" मीरा के ये मनोज्ञ, मधुर हृदयोद्गार नाम की महिमा को सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा रहे हैं। सच तो यह है कि यदि नाम का आश्रय न होता तो मनुष्य की तो बात ही क्या, देव भी न जाने किस कोने में पड़े रहते, कोई उन्हें जानता भी न। नाम का ऐसा ही विश्वव्यापी प्रभाव है। वस्तुतः नाम मनुष्य की एक अमूल्य निधि है।

नाम की सार्थकता—नाम कल्पित तथा कृत्रिम होते हुए भी समाज के लिए अनिवार्य है।

उसके बिना मानव समाज का न तो संगठन ही सम्मुख है, न कोई अन्य कार्य ही चल सकता है। असभ्य तथा अशिक्षित वन्य जातियों में भी कोई नामवर्जित व्यक्ति न मिलेगा। व्यक्तित्व का बोधक होने से नाम मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव अथवा स्वरूप का चित्रण करता है। उसके अंतःकरण-चतुष्टय के प्रस्फुटन में सहायक होता है और शीघ्र ही उसका चित्र नेत्रों के संमुख उपस्थित कर देता है जिसके द्वारा न केवल उसकी वाह्याकृति, वर्ण-स्वरूपादि का ही उद्‌बोधन होता है, अपितु उसकी आभ्यतर प्रवृत्तियाँ, हृदय भावनाएँ एवं मानसिक कल्पनाएँ समूर्त अभिव्यंजित हो जाती हैं। शब्दों के सदृश नामों में भी शक्तित्रय के कारण तीनों अर्थों की अभिव्यक्ति हो सकती है। राम का वाच्यार्थ सुन्दर, प्रिय अथवा रमण करनेवाला होता है। रामराज्य में राम का लाक्षणिक अर्थ राम के सदृश सात्विक गुणोंवाला हुआ। यदि किसी खल के लिए "आप तो साक्षात् राम हैं" यह वाक्य प्रयोग किया जाय तो काकु या ध्वनि से राम का विपरीत अर्थ लिया जायगा। उससे वक्ता का अभिप्राय यह है कि आप दुष्ट रावण हैं। सत्य, शिव एवं सुन्दर नाम लोक-संग्रही होता है। राम के मन में सत्य, वाणी में शिव-संकल्प एवं कर्मों में सौंदर्य था। उनके नाम में भी सत्यता, प्रियता तथा सुन्दरता का समन्वय पाया जाता है। अतः उनका शील, उनकी शक्ति, उनका स्वरूप सभी कुछ लोकेतर एवं लोकोत्तर है। इसी हेतु राम कृष्णादि अनेक नाम पतितपावन तथा जगतारक माने जाते हैं।

इतने शक्ति-सम्पन्न नाम को भी कुछ व्यक्ति निरर्थक अथवा साकेतिक शब्द[1] ही समझते हैं। यह उनकी भ्रान्तिमयी धारणा है। अभिधान-कोश का नाम निर्जीव अथवा निष्क्रिय हो सकता है किन्तु नाम शास्त्र के अनुसार जब उसका सम्बंध किसी व्यक्ति-विशेष से हो जाता है तब उसमें उस मनुष्य के व्यक्तित्व की छाप लग जाती है। नाम-नामी के सम्पर्क से सजीव हो जाता है, उसमें चेतना प्रविष्ट हो जाती है, वह व्यक्ति की आभ्यन्तरिक वृत्तियों, गुणों, भाव-भावनाओं एवं रूप-रंग को धारण कर लेता है। नाम के बिना नामी का अस्तित्व ही मिट जाता है। नामी की मृत्यु के पश्चात् भी नाम चिरकाल तक जीवित रहता है। कोई-कोई नाम तो अपने यशस्काय के रूप में चिरंजीव हो जाते हैं। वाल्मीकि, व्यास, कालिदासादि ऐसे ही अमर नामों में हैं। अल्प से अल्प नाम में भी भूगोल-इतिहासादि सम्बंधी अनेक ज्ञातव्य ज्ञान सन्निहित रहते हैं जिसके स्मरण से ही सम्पूर्ण जीवन-वृत्त का चित्र सम्मुख आ जाता है। राम का नाम लेते ही अयोध्या, रघुकुल, वनवास, रावणवध, राम-राज्यादि पूर्ण कथानक चित्रपट के चलचित्र के सदृश दृष्टिगोचर होने लगता है। कृष्ण नाम में ब्रज के वन, उपवन, यमुना केलि, गोप-गोपियों के संग बाल-लीला, कंसादि अनेक दुष्ट राजाओं का दमन, महाभारत के विवरण एवं चित्रण प्रत्यक्ष हो जाते है। कुंभकर्ण का नाम सुनते ही विपुलभक्षी, पृथुलकाय तथा आलस्य की भीषण मूर्ति नेत्रों के सम्मुख झूमने लगती है। गांधी कहते ही कृशकाय, नग्नप्रायः, सत्य तथा अहिंसा के प्रतीक महात्मा मोहनदास करमचंद गांधी का चित्र मानस-पटल पर अनावृत्त हो जाता है। यही नाम की सार्थकता[2] है। अभिधेय में जब किसी गुण अथवा प्रवृत्ति का प्राबल्य हो जाता है तब अभिधान उस गुण का प्रतीक बन जाता है। हरिश्चंद्र सत्य का प्रतीक है, तो शिवि, दधीचि त्याग के। वस्तुतः नाम मनुष्य की आकृति-प्रकृति की प्रतिकृति होता है।

---

[1] इंगलैंड के प्रसिद्ध दार्शनिक जेम्स मिल के जीवन-काल में एक मनोरंजक विवाद इस विषय पर उठ खड़ा हुआ कि नाम सार्थक है या निरर्थक। यह संघर्ष बहुत दिनों तक चलता रहा। मिल तथा उसके अनुयायी नाम की निरर्थकता के पोषक थे और उसके विरोधी उसकी सार्थकता के पक्ष में अपने प्रमाण प्रस्तुत करते थे।

[2] साभिप्राय नाम की निम्नलिखित मनोरंजक आख्यायिका स्कंद पुराण में वर्णन की गई है :—

याचमानस्य विप्रस्य लिखत्येष धरा तले ।।
नोत्तरं यच्छते किञ्चित्तेनासौलेखकः स्मृतः ॥३२॥

नामों में वैधर्म्य—कुछ लोगों का यह उपालम्भ किसी सीमा तक समुचित है कि नाम तथा नामी में प्रायः विषमता रहती है। व्यक्तिवाचक नामो में असंगति दिखलाई देती है। नाम से जो गुण प्रकट होता है उसका आश्रय में प्रायः अभाव रहता है। मँगतूराम महलो में सुख चैन से जीवन बिता रहा है किंतु भूपाल घर-घर भीख माँग रहा है। इस अंतर से—इस प्रत्यक्ष भेद से वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि नाम में क्या रखा है', उसका कुछ महत्त्व नहीं, नाम तो प्राणी को संबोधित करने का प्रतीकमात्र है। यदि ध्यानपूर्वक मनन किया जाय तो उनका यह उद्भ्रांत विचार निर्मूल ही सिद्ध होता है। आलोचना से प्रथम यह देखना चाहिए कि यह असामञ्जस्य क्यो है। यदि रामसेवक राम का भक्त नहीं बन सका तो किसका दोष है। करुणानिधान में यदि दयाभाव का उद्रेक नहीं हुआ तो क्या हेतु है। हरिश्चंद्र राजा हरिश्चंद्र के सदृश सत्यवादी तथा त्यागी क्यो नहीं हैं? ऋषि कुमार के ऋषि कुमार न बनने का क्या कारण है। दलथम्मन सिंह, जंगजीत या शेर सिंह में भीरुता कैसे आ गई। चिरंजीलाल की अर्थी इतनी लघु आयु में क्यों सजाई जा रही है। करोड़ीमल के पास फूटी कौड़ी भी नहीं और कंगलिया की कोठी चल रही है। क्यो? सुखिया संकट में है और दुक्खी सब प्रकार का आनंद ले रहा है? इस विरोधाभास का क्या कारण है? इन वैषम्यो पर मनुष्य गम्भीर विचार न करके नामों की निस्सारता पर अगत्या पहुँच जाते हैं। नामों की

द्वितीयो ब्राह्मणभयात् प्रासादमधिरोहति ॥
ततोऽसौरोहकाख्यो भूच्छृणु विप्रतृतीयकः ॥३३॥
सूचितावहवोनेन ब्राह्मणा वित्तसंयुत्ताः ॥
राज्ञे पापेनतेनासौ सूचको भुविविश्रुतः ॥३४॥
ब्राह्मणैः प्रार्थ्यमानस्तुशीघ्रंधावतिनित्यशः ॥
न कस्मैचिद्ददा तिस्मतेनासौशीघ्रग· स्मृत ॥३५॥
मयाकदन्नंदत्तञ्चपर्युषितन्द्विजोत्तम ॥
ब्राह्मणेभ्यः सदात्मानं मिष्टान्नैरप्यपोषयम् ॥ ३६ ॥
(स्कं० पु०, प्रभास अ० २१६, पृ० ६१४)

एक बार पाँच प्रेत देवदर्शन के लिए प्रभास क्षेत्र को चले। पाप तथा निंद्ययोनि के कारण देवदूतों ने उन्हें पुण्य क्षेत्र की सीमा पर ही रोक दिया। इस आपत्ति में भटकते-भटकते उन्हें बहुत दिन हो गये फिर भी अंदर जाकर दर्शन करने में सफल न हुए। भाग्यवश एक दिन उनकी भेंट गौतम मुनि से हो गई। प्रेतों ने मुनि को अपना-अपना परिचय इस प्रकार दिया—विप्रों के मांगने पर मैं धरती पर लिखता ही रहता था इससे लोग मुझे लेखक कहने लगे। दूसरे ने कहा, मेरा नाम रोहक इसलिए पड़ा कि मैं उन्हें देखकर महल पर चढ़ जाया करता था। तीसरे ने कहा, राजा को उनकी सम्पत्ति की सूचना देने से मेरा नाम सूचक हो गया। चौथा बोला, मेरा नाम शीघ्रग है क्योंकि मैं विप्र-याचना सुनते ही शीघ्र ही भाग जाया करता था। पाँचवें ने बतलाया कि मैं स्वयं तो अच्छी-अच्छी मिठाइयाँ उड़ाता था परंतु याचकों को सड़ा-गला बासी भोजन देता था। इसलिए मैं पर्युषित नाम से प्रसिद्ध हो गया।

उनकी यह कष्ट-कथा सुनकर गौतम को दया आ गई और तीर्थ में उनका प्रायश्चित करा दिया जिससे वे पांचों प्रेतयोनि से मुक्त हो गये।

सार्थक नाम की एक दूसरी कथा दशकुमार चरित में आती है। एक पात्र कहता है कि मैं कुरूप होने से विरूपक कहलाया तथा मेरा भाई रूपवान् होने से सुन्दरक।

वैरूप्यान्मम विरूपक इति प्रसिद्धिरासीत्। अन्यश्चात्र सुन्दरक इति यथार्थनामा।
(दशकुमार चरित उत्तर पीठिकायां द्वितीयोच्छ्वासः, २२अनु०)

What's in a name!

सारहीनता के संबंध में एक ग्रामीण कहानी है—सेठ ठंठंपाल की स्त्री प्रतिदिन सेठजी के कान खाती थी कि तुमने यह कैसा भद्दा नाम रखा है। पंडित से किसी शुभ मुहूर्त में कोई सुंदर नाम क्यों नहीं रखा लेते, लाखों की संपत्ति और नाम ठठंपाल (ठंठं=निर्धन)। सेठजी यह सुनते-सुनते तंग आ गये तो एक दिन सेठानी को लेकर बाहर निकले। घर से थोड़ी दूर ही पहुँचे थे कि एक मुर्दे की अर्थी को जाते देखा। सेठ ने एक से पूछा, "कौन मर गया?" उत्तर मिला—"अमरसिंह।" आगे जाने पर एक आदमी पेड से लकडियाँ तोड़ रहा था। सेठ ने उससे पूछा, "भाई! तेरा क्या नाम है?" उसने कहा—"धनपाल।" कुछ दूर चलने पर एक खेत में कुछ स्त्रियाँ सिला (उंछ) बीन रही थीं। ठंठंपाल ने एक से उसका नाम पूछा तो उत्तर मिला—"लक्ष्मी।" सेठजी बोले, "सेठानी अब लौट चलो, देखा, नाम में क्या रखा है" :—

> अम्मर को मैं मरत देख्यौ, लकड़ी तुडत धनपाल।
> साँई बीनत लछिमी देखी, भलौ नाम ठँठंपाल ॥[1]

उस दिन से सेठानी चुप हो गई। सेठ के समान अन्य मनुष्य भी उपर्युक्त प्रश्नों पर भली-भाँति विचार न कर इस निर्णय पर पहुँच जाते हैं कि नाम का कोई महत्त्व नहीं, वस्तुतः इस असमानता की भूल-भुलैयों में पड़कर ही मनुष्य तथ्य को विस्मृत कर देते हैं। नाम रखने में अनेक बातों का ध्यान रखना पड़ता है। देश, काल, घटना, राशि, गुण तथा वृत्ति—इन षड्चक्रों में भ्रमण कर अभिभावक का मन बालक का नाम निर्वाचन करता है। इनमें से कभी एक, कभी अनेक का संबंध नाम से रहता है। प्रथम तीन से संबंधित नामों में प्रतिकूलता इसलिए प्रकट नहीं होती कि जन-समाज उनकी वास्तविकता से अच्छी तरह परिचित नहीं है। कितने मनुष्य जानते होंगे कि काश्मीरी लाल कहाँ पैदा हुए हैं। देश, काल तथा घटना आँख से ओझल रहते हैं। इसलिए उनका भेद भी स्पष्ट नहीं होता। सिद्ध-योग वर्ज्य राशि के अन्य नामों में भी विभिन्नता गुप्त रहती है। केवल गुण तथा वृत्तिपरक नामों में ही अधिक अव्यवस्था दृष्टिगोचर होती है। इसका मुख्य हेतु यह है कि नामी के नित्य व्यवहार एवं दिनचर्या से उसके वैधर्म्य गुण तथा प्रतिकूल प्रकृति स्वतः अभिव्यञ्जित होते रहते हैं।

वैधर्म्य के हेतु—अभिधान तथा अभिधेय में विषमता के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं:—(१) अधिकांश नाम अनुकरणात्मक होते हैं—प्रयाग में उत्पन्न हुए बच्चे का नाम भी उसका पिता बिना बिचारे लाहौरीलाल रख लेता है क्योंकि यह नाम उसे अत्यंत प्रिय है। इसी प्रकार अनुकरण-प्रियता के कारण मध्याह्न में उत्पत्ति होते हुए भी 'चंद्रोदय सिंह' नाम रख लिया जाता है; गृहजात पुत्र भी विदेशी अथवा परदेशी-संज्ञक होता है। अमुक व्यक्ति को अमुक नाम बहुत रुचिकर है अतः देश, काल अथवा घटनादि के आनुषंगिक न होते हुए भी अविवेकी संरक्षक ऐसे असंगत नाम दे देते हैं। यद्यपि आदिम नामधेय निश्चय ही यथार्थता पर अवलम्बित रहा होगा। (२) राशिपरक नामों के

---

[1] यह कथा इस प्रकार भी कही जाती है :—

> लकरी बेचत लाखन देखे, घास खोदतन धनधनराय।
> अमर हते ते मरतन देखे, तुमई भले मेरे ठनठन राय॥

पाली भाषा की नाम-सिद्धि जातक गाथा (संख्या ६७) भी इसी प्रकार है :—

> जीवकञ्च मतं दिस्वा, धनपालिञ्च दुग्गतं।
> पन्थकञ्च वने मूळ्हं पापको पुनरागतो॥

"जीवक को मरते, धनपाली को पिटते तथा पंथक को बन में भटकते देख पापक नाम का एक व्यक्ति सुंदर नाम की खोज से विरक्त हो अपने घर लौट आया"।

लिए मार्ग अत्यंत संकुचित रहता है। कुछ सीमित वर्णों पर ही नाम रखना पड़ता है। इससे कभी-कभी नाम बड़े असम्बद्ध तथा ऊँटपटांग हो जाया करते हैं। मेष राशि के बच्चे का नाम चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ वर्ण से ही आरम्भ हो सकता है। ६ अक्षरों में प्रत्येक राशि सीमाबद्ध होने से रुचि-वैचित्र्य को स्थान नहीं रहता। (३) राशि का सम्बंध सिद्धयोग से भी रहता है। गणनादि में त्रुटि के कारण भी सिद्ध योग का फल प्रतिकूल हो जाया करता है। इससे नाम नामी के सम्बंध में अंतर पड़ जाता है। (४) नामकरण संस्कार बच्चे के जन्म से प्रायः १० दिन पश्चात् होता है। इतने थोड़े समय में उसके गुणों का सम्यक् प्रस्फुटन नहीं होने पाता। एक बात यह भी है कि इन दिनों बच्चा प्रायः सूतिकागृह में ही रहता है, अतएव नाम देने के पूर्व परिजन उसकी प्रकृति से पूर्णतया परिचित नहीं होने पाते और उसके गुणों से इतर नाम दे दिया जाता है। (५) प्रत्येक संरक्षक यह चाहता है कि उसका पुत्र बल, विद्या तथा वित्त में विशेष उत्कर्ष प्राप्त करे, दिन-दिन उसकी कीर्ति का प्रस्तार हो। संसार में सब प्रकार से उत्तरोत्तर उसकी वृद्धि हो। इसीलिए गुरुजनों का यह आशीर्वचन होता है—"आयुष्मान् तेजस्वी वर्चस्वी श्रीमान् भूयाः!" महत्त्वाकांक्षी भिक्षुक के मन में भी यह लालसा रहती है कि मेरा पुत्र भी धनी राजा या कोई समृद्धिशाली व्यक्ति बने जिससे वह सुखपूर्वक रह सके। यह उसकी कामना है—आशीर्वाद है। सफल हो या विफल यह उसकी शक्ति से परे है। ऐसे आशीर्वादात्मक नाम भी प्रायः नामी की आकृति-प्रकृति के विरुद्ध होते हैं। उनमें किसी प्रकार का संबंध नहीं होता। यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए कि इन नामों में आशीर्वाद है न कि वरदान जिसकी सिद्धि ध्रुव सत्य हो सकती है। (६) अंध-विश्वास तथा व्यंग्य के कारण अनेक निरर्थक, असम्बद्ध तथा अवांछित नाम प्रचलित हो गये हैं जो नाम तथा नामी में विभिन्नता प्रकट करते हैं। छदामीलाल के पास हजारों की सपत्ति है, अंधरूढ़ि के कारण श्वेतवर्णी मनुष्य भी कलुआ नाम से पुकारा जाता है। इस विमर्श को ध्यान में रखने से नाम और नामधारी में अन्वय के विरोध की संभावना मिट सकती है। नाम रखने में अत्यंत सावधानी की आवश्यकता है। मूर्ख को ज्ञानेन्द्र या दुर्बल को पहलवान सिंह कहना नितांत अन्याय होगा। सुंदर नाम श्रुति मधुर, अर्थ गर्भित एवं नामी के रूप रङ्ग प्रकृति-प्रवृत्ति आदि से समन्वित केवल कृत्रिम संकेतमात्र न रहकर मानवता का सजीव प्रकृत प्रतीक बन जाता है। यूरप के प्रसिद्ध विद्वान् वालज़क ने भी नामौचित्य के सम्बन्ध में यही भाव व्यक्त किये हैं।[१]

पुरुषों के नाम—प्रस्तुत प्रबंध का ध्येय केवल पुरुषों के नामों का अध्ययन करना है। प्रदत्तों की प्रचुरता, प्रवृत्तियों की व्यापकता, अर्थों की महत्ता, सार्थकता एवं विचित्रता आदि दृष्टियों से ये नाम विशेष महत्त्व के हैं। पुत्रों के नाम रखने में उनके अभिभावक अधिक प्रयास तथा धन व्यय करने में अतिशय अभिरुचि दिखलाते हैं। कुछ नाम तो अत्यंत कलात्मक होते हैं। देश, काल तथा धर्म का इन नामों पर बड़ा प्रभाव देखा जाता है। काशीप्रसाद, परागी, अंगनू, बस्तीराम आदि नामों में स्थान की ओर निर्देश किया गया है। इतवारी, प्रभात, मंगरू, नौ अगस्त आदि नाम समय के सूचक हैं। वैष्णव अपने पुत्र का नाम रामकृष्ण या विष्णु के नामों पर रखता है और शैव के बालक का नाम शिव के

---

[१] "For my principal character I must have a name in keeping with his destiny, a name which explains and pictures and proclaims him, and not possibly the cognomen of any other. I have tried every vocal combination without success. I will not baptise my type with a stupid name. We must find one that shall fit the man as the gum to the tooth, and the root, the hair and nail, the flesh. I am not the only one who believes in the miraculous conjunction of a man with his name which he bears as a divine or devilish talisman to light his way on earth." (Balzac)

नामो पर होता है। वेद-प्रकाश, रामायनजी, गीतमलाल आदि ग्रंथ सम्बंधी नामों का आधार धर्म ही है। नामी और नाम का संम्बंध आधार-आधेय का होता है। नामोच्चारण करते ही सहसा व्यक्ति की ओर ध्यान आकर्षित हो जाता है। व्यक्तिवाची नाम के साथ व्यक्ति, व्यक्तित्व, शब्द, ध्वनि (स्वर), अर्थ, भावादि अनेक बातें सम्बद्ध रहती हैं।

नामों का सबंध स्थूलतः गणना, घटना अथवा भावना से रहता है। कभी-कभी. इन तीनों में से दो का योग भी हो सकता है। गया में जन्म होने से गयादीन नाम में घटना तथा भावना का योग है क्योंकि गया तीर्थ भी है। मिथुनी नाम में गणना तथा घटना दोनो सम्मिलित हैं क्योंकि राशि के अतिरिक्त मिथुन एक साथ उत्पन्न दो बच्चो का भी व्यंजक होता है। इसी प्रकार तुलाराम में गणना तथा भावना का सम्मिश्रण है। ग्रह, नक्षत्र, राशि, समय और फलयोगसूचक ज्योतिष के नाम गणना के अंतर्गत आ सकते हैं। घटना में स्थान, परिस्थिति, ऐतिहासिक अथवा आकस्मिक घटना, व्यापार, व्यवसाय पद तथा उपाधिपरक नाम आ सकते हैं। भावना के दो पक्ष हैं (१) रागात्मक—इसके भी दो रूप हैं: (अ) ऐहिक आसक्ति में दुलार के नाम आते—हैं, (आ) भक्ति-भावना से ईश्वर, देवता, तीर्थ, धर्म-ग्रंथ, पर्व, धार्मिक कृत्य, महात्मा, गुरुवर्ग अथवा सद्गुणो के प्रति निष्ठा, श्रद्धा तथा विश्वास के कारण रखे गये नामो का संबंध रहता है। आशीर्वाद एवं अभिवादन के नाम भी इसी में सम्मिलित हैं। स्थूल रूप से यह कह सकते हैं कि धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक, ऐतिहासिक तथा अधिकांश राजनीतिक नाम इसके अंतर्गत आते हैं। (२) विरागात्मक पक्ष में व्यंग्य नाम आते हैं।

नाम के विषय में मनुष्यों की विभिन्न धारणाएँ हैं। कोई छोटा नाम पसंद करता है तो कोई लम्बा नाम रखने का प्रेमी है। प्राचीन काल में भारतीय प्रवृत्ति नाम की लघुता की ओर विशेष झुकी हुई प्रतीत होती है, किंतु वर्त्तमान काल में कुछ मनुष्यो में बडे लम्बे-लम्बे नाम रखना बड़प्पन का लक्षण समझा जाता है। कदाचित् इसीलिए यहाॅ के राजा-महाराजाओं और बड़े-बड़े जमींदारों के लम्बे नाम पाये जाते हैं। बिहार में कुछ मनुष्य अत्यन्त लम्बे नाम रखते देखे गये हैं। कुछ विदेशी बृहत्तम नाम भी बड़े अनोखे देखने में आये हैं[1]। ऐसे विलक्षण नाम कोरी कल्पना के कौतूहलमात्र

---

[1] **तिब्बत के दलाई-लामा का बृहत्तर नाम—जेसम जम्पेल नगा वांग योशे तेनाजिंग ग्यात्सो।**

हकीम आबीसेना का असली अरबी नाम—अबू-अली-हुसेन-इब्न-अब्द्-अल्लाह-इब्न-सीना।

इङ्गलैंड की एक प्यूरीटन लड़की का नाम—Through-Much-Tribulation We-Enter-The kingdom-of-Heaven.

एक अन्य लड़की का नाम—Ann-Bertha-Cecila-Diana-Emily-Fanny-Gurtrude-Hypatia-Inez-Jane-Kate-Louisa- Maud- Nora- Ophelia-Priscilla- Quince- Rebecca-Starkey-Teresa-Ulisses-Venuo-Winifred-Xenop-on-Yelta-Zenus **यह बृहत्तर नाम २६ सामूहिक नामों का समुदाय है जिसमें "ए" से "जेड" तक संपूर्ण अंग्रेजी वर्णमाला सन्निविष्ट है।**

The full name of Dr. J. S. Moroka, African Leader is James Sobebuijivas-egokgobotharile Morka, meaning 'I have come at last, having been criminally enslaved and oppressed, but will bring rain of peace and freedom to my people.'

हैं। इन लम्बे-लम्बे नामों में विचित्रता के अतिरिक्त और कुछ नहीं रहता। एक डाक्टर महोदय अपनी संतान के अनुप्रासित युग्म नाम रखने के अत्यंत प्रेमी हैं। चिन्मयानंद चमनजी, सच्चिदानद शिवाजी आदि द्वंद्वात्मक नाम उनके परिवार में पाये जाते हैं।

उच्चारण की सुविधा भी नाम रखने में अपना महत्त्व रखती है। टेढ़े-मेढ़े नाम, जिनमें जीभ को तोड़ना-मोड़ना बहुत पड़ता है, कोई नहीं रखना चाहता। मुख-सुख के पश्चात् शब्द-माधुर्य ध्यान देने योग्य है। जिस नाम के सुनते ही कानों को धक्का-सा प्रतीत हो, ऐसे कर्ण-कटु नाम को विरला ही अपनाता है। अर्थ-सौंदर्य भी नाम का एक विशेष विधान है। कोमलकांत अक्षरों का नाम भी यदि निरर्थक हो तो शोभा नहीं पाता। शिष्ट-समाज में अशिष्ट, अटपटा नाम केवल हास्यास्पद ही होता है। एक पुरानी उक्ति है कि एक मनुष्य अपने पिता के पांडित्य की बड़ी प्रशंसा कर रहा था। लोगों ने उसका नाम पूछा तो उसने 'टुंडई' बतलाया। इसपर सब हँसकर कहने लगे "ज्ञायते पितृपांडित्यं "टुंडई" नाम धारणात्।" वास्तव में उपर्युक्त तीनों ही दोष इस नाम में पाये जाते हैं। कहने का प्रयोजन यह है कि नाम सरल, सरस, सुबोध, सार्थक और लघु हो जिससे उसके उच्चारण तथा समझने में अल्पकाल ही अपेक्षित हो।

नाम नामी का प्रतिनिधि होता है, इसलिए नाम ऐसा होना चाहिए कि जिससे नामी के आंतरिक एवं बाह्य परिचय का कुछ आभास प्राप्त हो जाय, तभी तो उसकी सार्थकता है। इस विषय में महाराष्ट्र तथा गुजरात के नाम विशेष प्रौढ़ एवं समुन्नत अवस्था में पाये जाते हैं। कुछ जातियाँ अपने नामों के साथ अपने जन्म-स्थान या अपने पूर्वजों के मूल स्थान का नाम भी रखती हैं। स्थान का नाम मद्रास में अपने नाम से पहले लगाते हैं[१] और महाराष्ट्र में नाम के अंत में लगाया जाता है[२]। पारसियों के नाम तो चार-चार नामों के समुदाय होते हैं जिनमें पहले व्यक्ति का नाम तत्पश्चात् पिता का नाम फिर पितामाह का, तदनंतर जन्म-स्थान का नाम रहता है[३]। इस प्रकार नाम से ही उस व्यक्ति का पूरा पता मिल जाता है। प्रारम्भ में रोम में भी एक-एक व्यक्ति के नाम में (१) Praenomen अर्थात् व्यक्तिगत नाम (२) Nomen अर्थात् गोत्र, आस्पद अथवा प्रवर (३) Cognomen अर्थात् वंश का नाम तथा (४) Agnomen अर्थात् उपाधिसूचक नाम मिश्रित रहते थे[४], जिससे उस व्यक्ति के विषय में अनेक बातें ज्ञात हो जाती थीं। नाम की सबसे मुख्य विशेषता प्रवृत्ति-परिचायकता है। मौलिक नामों में यह प्रचुर मात्रा में पाई जाती है, परंतु अनुकृत नामो में उत्तरोत्तर उसका ह्रास होता जाता है।

नामों की कुछ विशेषताएँ—भिन्न-भिन्न जाति के नामों में पहले कुछ समानता रहती थी जिससे संज्ञी के वर्ण का कुछ संकेत हो जाया करता था। मनुस्मृति आदि धर्म-ग्रंथों में ब्राह्मण को अपने नाम के अंत में शर्मा, क्षत्रिय को वर्मा, वैश्य को गुप्त तथा शूद्र को दास लिखने का आदेश और अधिकार था। इसके अतिरिक्त ब्राह्मण के नाम में ज्ञान तथा मंगलवाची, क्षत्रिय के नाम में प्रताप एवं शौर्यव्यञ्जक और वैश्य के नाम में धन-सम्बन्धी तथा शूद्र के नाम में सेवा-शुश्रूषा भाववाले शब्द होते थे। इस स्वालक्षण्य के कारण संज्ञी अपने नाम को गर्व और गौरव की दृष्टि से देखता था। किंतु आजकल वर्णाश्रम-व्यवस्था के लोप होने से नामों में भी बड़ी अव्यवस्था हो गई है। संप्रति भारत में अनेक जातियाँ-उपजातियाँ हैं और उनके भेद-प्रभेद, शाखा-प्रशाखा गणनातीत हैं।

---

[१] तूरणी (स्थान) वैद्यनाथन भास्करन। [२] गणेश त्र्यंबक केतकर।

[३] Irach Jehangir Sorabji Taraporewala (एरच जहाँगीर सोराबजी तारापुरी)

[४] Publius Cornelius Scipio Africanus.

इस आधुनिक परिस्थिति में भी कुछ नामों में समानता दिखलाई देती है। क्षत्रिय और सिक्खों के नाम के अंत में सिंह का प्रयोग अनिवार्य-सा हो गया है। बिहार के कायस्थों में सिनहा लिखने का प्रचलन है। 'मल' मारवाड़ियों के नामों में बहुधा पाया जाता है। पार्वत्य-प्रदेश के वैश्यों का शाह शब्द मैदान के निम्नस्तर के वैश्यों में साहु हो गया है। गोरखपुर के मल्ल ठाकुरों में शाही लिखते हैं। संस्कृतज्ञों में तत्सम रूप व्यवहृत होते हैं। अशिक्षित प्रायः तद्भव शब्दों का प्रयोग करते हैं। ग्रामीण अशिक्षित जनता तद्भव और देशी शब्दों से काम चलाती है। उर्दू पोषित परिवारों में विकृत हिन्दी-उर्दू के मिश्रित या उर्दू के शब्द प्रयुक्त होते हैं। सन्यासियों के नाम बहुधा आनन्द से अन्त होते हैं। जैनाचार्यों के अन्त में "सूरि" शब्द पाया जाता है। बौद्ध-साधु भिक्षु का प्रयोग करते हैं। कुछ मनुष्य शर्मा, वर्मा, आदि प्राचीन प्रयोग भी व्यवहार में लाते हैं। नाथ और राय क्रमशः जोगियों और भाटों के नामों के अंग बन गये है।[1] पुरुषों के नामों का विशद विवरण विविध रूप से बीस प्रकरणों में आगे दिया गया है।

स्त्रियों के नाम--स्त्रियो के नामों में न तो विशेष कलात्मकता प्रदर्शित होती है और न प्रवृत्तियों की अधिकता। इसका हेतु यह है कि कुछ समय पहले कन्याओं को कई कारणों से उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता था। पुत्रियों को पुत्रों के समान प्यार नहीं करते थे। राजपूतों के यहाँ तो उनका मार डालना ही उत्तम समझा जाता था। जिनके जीवन ही का कुछ मूल्य नही, उनके नाम की ही क्या चिंता! यही कारण है कि उनके अंधविश्वास और दुलार के नाम निदर्शन-मात्र ही मिलतेहैं। उच्च कोटि के तत्सम नाम भी बहुत ही कम पाये जाते हैं। किंतु आजकल यह मनोवृत्ति दूर होती जा रही है और उनके सुन्दर गुणात्मक नाम ही अधिकतर रखे जा रहे हैं। स्त्रियों के नाम प्रायः आकारांत अथवा ईकारांत होते हैं जो बहुधा निम्नलिखित आधार पर रखे जाते हैं :—

(क) देवियों के नाम—पार्वती, लक्ष्मी, सरस्वती, रमा, राधा, सीता आदि।
(ख) फूलों के नाम--चंपा, चमेली, बेला, गुलाब आदि।
(ग) पशु पक्षियों के नाम—कोकिला, हंसा।
(घ) आभूषणों के नाम—कंठी, लौंगा, टिक्को, माला, फुलवा आदि।
(ङ) प्राचीन स्त्रियों के नाम—गार्गी, मैत्रेयी, मदालसा, सुलभा, मीरा आदि।
(च) पौराणिक आख्यानों में आये हुए नाम--कलावती, लीलावती, यशोदा, चित्रलेखा, सावित्री आदि।
(छ) मणियों के नाम —मूँगा, मनियाँ, नीलम, आदि।
(ज) बहुमूल्य वस्तुओं के नाम—कस्तूरी, कपूरा, केसर, चंदनिया आदि।
(झ) रूपात्मक नाम—शोभा, सुन्दरिया, रूपा, चंद्रकला, सुलोचना।
(ञ) सौभाग्यसूचक नाम—सुखिया, भगवती, धनवंती।
(ट) गुणबोधक नाम—ज्ञानो, शीला।
(ठ) समयसूचक नाम—उषा, रजनी, पुनियाँ, मंगलिया।
(ड) स्थान-सम्बंधी नाम—अंगनियाँ।
(ढ) अंधविश्वास के नाम—पाला, चुनिया।
(ण) व्यंग्य नाम—भोरी, खिल्लो, छबीली।
(त) दुलार के नाम—लाड़ो, मुनिया।
(थ) पुल्लिंग नामों के स्त्रीलिंग रूप—रानी, भवानी, कल्याणी, बीरा, मोहनी।

---

[1] अयोध्या के गुरुकुल में ब्रह्मचारियों के नाम मित्रांत ही होते हैं।

(द) किशोर, कुमार, दास, देव आदि गौण प्रवृत्तियों के स्त्रीलिंगों की सहायता से भी नाम बनाये जाते हैं—राजकिशोरी, फूलकुँवरि (कुमारी) सेवादासी, सुखदेई (देवी), जैदेवी।

(ध) नदियों के नाम—गंगा, जमुना, त्रिवेणी।

(न) मिठाई के नाम—इमरती, बतासो।

(प) गृह-पदार्थों के नाम—कटोरी।

(फ) बाला, कला, रानी, दुलारी, प्यारी, प्रभादि के योग से भी कुछ नाम बनाये जाते हैं—शशिबाला।

(ब) नक्षत्र-तारों के नाम—तारा, रोहिनी, विशाखा।

(भ) रागिनियो के नाम—रामकली।

प्रायः ये ही मुख्य प्रवृत्तियाँ महिलाओं के नामों में मिलती हैं। इन नामों की यह विशेषता है कि इनमें अधिकांश नाम गौण प्रवृत्ति के बिना ही पाये जाते हैं। अशिक्षित ग्रामीण जनता में तद्भव रूप ही अधिक प्रचलित हैं, किंतु नगरों में शिक्षित पुरुष अपनी कन्याओं के सुन्दर तत्सम नाम अधिकतर रखते हैं। महिलाओ के वर्तमान नामों में अपने पति के नाम का उत्तर पद अपने नाम के अंत में जोड़ने की मनोवृत्ति दिखलाई दे रही है। रामशरण की पत्नी विमला अपने नाम के अंत में "शरण" का प्रयोग करेगी अर्थात् वह अपना नाम विमला शरण लिखेगी।[1] कोई-कोई माता-पिता अपनी पुत्रियों को न केवल पुत्रों के से वस्त्र ही धारण कराते हैं, अपितु उनके नाम भी बालकों के से रखते हैं।[2] उपर्युक्त दोनों दशाओं में लिंग-भेद लुप्त हो जाता है। ऐसे भ्रमोत्पादक नामो से यह पता लगाना कठिन होगा कि नामी 'नर है कि नारी है।'

सखी सम्प्रदाय के नाम—टट्टी या सखी सम्प्रदाय के नामों ने एक विचित्र समस्या प्रस्तुत कर दी। उनका समावेश इस सङ्कलन में उचित है या नहीं ? वस्तुतः विचार किया जाय तो ये नाम अवसर विशेष के लिए ही अपनाये गये हैं। उस समय न केवल नाम तथा वेश-भूषा ही, अपितु हाव-भाव भी भक्ति के आवेश के कारण स्त्रियो के से ही होते हैं जिससे वे भक्त प्रेयसी के रूप में अपने प्रियतम (भगवान्) को रिझा सकें। उस समय वे अपने को भगवान् की गोपियाँ ही समझते हैं। उन स्त्रीसंज्ञक पुरुषो के लोक-व्यवहार के लिए अन्य नाम भी होते हैं। उनके स्त्री नामों से सामान्य जनता परिचित नहीं होती, केवल उस सम्प्रदायवाले ही अवस्था-विशेष में उन नामों का प्रयोग करते हैं, अन्यथा वे गुप्त ही रक्खे जाते हैं। अतः उनको उपनाम भी नहीं कह सकते और न वे वास्तविक नाम ही हैं। वे गोत्र प्रवरादि सूचक शब्द भी नहीं हैं जिनका प्रयोग प्रत्येक समय एवं प्रत्येक अवस्था में हो सकता है। पुरुषों के स्त्री नाम की विकट पहेली न सुलझनेवाली एक उलझन है। ललित किशोरी के भेष में कोई पुरुष अपने दफ्तर में काम करने के लिए जाते हुए नहीं देखा गया है और न वह कचहरी में उस नाम से सम्बोधित होना ही पसन्द करेगा। उर्दू की तरह उनको उर्फ लगाकर भी प्रयोग करते नहीं देखा गया है। हरिकृष्ण उर्फ ललित किशोरी कहते कभी नहीं सुना गया। अभिनय के नाटक-पात्रो के सदृश भी ये नाम नहीं हैं। नाटक में किञ्चित् काल के लिए ही पात्र अपनी वेश-भूषा एवं नाम परिवर्तन करता है। अन्य अभिनय में वह अन्य नाम रख लेता है। कभी-कभी एक ही खेल में उसको कई नामों से कई पार्ट खेलने पड़ते हैं। ये नाम ललित किशोरी की भाँति जीवन में प्रयुक्त नहीं होते। माधुर्यभाव, कोमल भावना, अवस्था विशेष, भक्ति का आवेश आदि बातों के कारण ये नाम रखे गये हैं। ऐसे स्त्रीसंज्ञक नामों को पुरुषवाची नामों में स्थान न देना ही उचित

---

[1] मलाबार में कहीं-कहीं कन्या के नाम के साथ साथ माता-पिता के नाम भी संयुक्त रहते हैं। विवाहोपरांत पिता के नाम का स्थान पति का नाम ले लेता है।

[2] सरोज, मिथिलेश।

समझा गया। कोई-कोई यहाँ यह शंका उपस्थित कर सकते हैं कि राधा, सीता, पार्वती आदि स्त्री-लिङ्ग नाम इस संग्रह में क्यों सम्मिलित हैं ? इसका समाधान यह है कि ये नाम पुरुषवाचक नामों के प्रथमांश अथवा सूक्ष्मरूप हैं—राधाचरण, सीताशरण, पार्वतीप्रसाद आदि पूरे नामों के अवशिष्ट अंश हैं जो प्रयत्न-लाघव के कारण व्यवहृत होते हैं। संक्षेप में यह कह सकते हैं कि टट्टी सम्प्रदाय के ये नाम केवल टट्टी की ओट में ही व्यवहृत किये जाते हैं। वनितावेशी क्लीव समुदाय के नामों पर यह आक्षेप नहीं हो सकता, क्योंकि उनके नाम अन्य पुरुषों के से ही होते हैं।

साहित्य के नाम—नाम के आधार पर साहित्य चार श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम श्रेणी में वह साहित्य है जिसमें वास्तविक व्यक्तियों के वही तथ्य नाम होते हैं जिनसे वे इस संसार में प्रसिद्ध हैं। ऐसे नाम इतिहास, जीवनचरित, कोश, विश्वकोश और परिचयात्मक ग्रंथों में आते हैं। नाटक संबंधी ग्रंथ द्वितीय श्रेणी के अंतर्गत हैं जिनमें वास्तविक तथा कल्पित दोनों ही प्रकार के नाम होते हैं। उपन्यास, आख्यान, कथा, कहानी, गल्पादि में प्रायः कल्पित नाम ही होते हैं। निराकृत नाम सम्बन्धी अभिधान–संग्रह के साहित्य को चतुर्थ श्रेणी में रख सकते हैं। इनके अतिरिक्त अन्य साहित्य का नामों से कोई सम्बन्ध नहीं रहता।

साहित्य के नाम तथा साहित्यिक नाम में जो अंतर है उसे स्मरण रखना चाहिए। साहित्य में प्रयुक्त होनेवाले व्यक्तियों के नाम साहित्य के नाम हैं। लेखक के नाम से इनका कोई सम्बन्ध नहीं होता, और साहित्यिक नाम वे हैं जो कवि, लेखक तथा साहित्य-प्रेमी नाम के अतिरिक्त अपना एक अन्य नाम (उपनाम) भी रख लेते हैं।

उपनाम—उपनाम अधिकांश में साहित्यिकों में ही पाये जाते हैं। कवि का पूरा नाम कविता में रखना प्रायः असम्भव होता है। इसलिए कुछ कवि अपने नाम के प्रथमांश का प्रयोग अपनी कविता में करते हैं। तुलसी, सूर, केशवादि ने प्रथम शब्द से ही काम लिया है। कुछ कवि अपना एक अन्य अतिरिक्त नाम भी रख लेते हैं। यह प्रायः सरल, कोमल, मधुर और छोटा सा शब्द होता है। यही उपनाम कहलाता है। इसे साहित्यिक नाम भी कह सकते हैं।

उपनाम से कई लाभ हैं—(१) उससे साहित्य-प्रेम प्रकट होता है। (२) वह कविता में सरलता से प्रयुक्त हो सकता है। (३) उसके प्रयोग से कविता की चोरी नहीं हो सकती। (४) वह कवि के नाम को दीर्घजीवी बनाता है। (५) जहाँ दो लेखक एक ही नाम के हों वहाँ उपनाम से ही उन दोनों की विभिन्नता व्यक्त हो सकती है। कोई कोई साहित्यकार अपने नाम के उत्तर पद से ही उपनाम का काम चलाते हैं। जयशंकर प्रसाद का उपनाम 'प्रसाद' ही प्रसिद्ध है। दीन दयाल ने अपने पूरे नाम का ही प्रयोग किया है। कविराज, कविरत्नादि कुछ उपाधियाँ भी उपनाम का काम देती हैं। कुछ उपनाम इतने प्रबल हो जाते हैं कि असली नाम को लुप्तप्राय कर देते हैं। पद्माकर और प्रेमचंद के वास्तविक नामों को बहुत ही कम मनुष्य जानते होंगे। भूषण के नाम का तो आजतक किसी को पता ही न चला। अब्दुर्रहीम ने अपने दोहों में रहीम या रहिमन का प्रयोग किया है। सैयद इब्राहीम का हिन्दी उपनाम 'रसखान' बहुत लोक-प्रिय है। जायसी जायस स्थान से प्रसिद्ध हो गये।

उपनाम के खोजने में पर्याप्त परिश्रम करना पड़ता है, दीर्घकाल तक माथा पच्ची करनी पड़ती है तब कहीं अच्छा और उपयुक्त उपनाम सुझाई देता है। नाम को दूसरे मनुष्य रखते हैं और वह बदला भी जा सकता है। परन्तु उपनाम स्वयं कवि की अपनी कल्पना होती है जिसका बदलना प्रायः सम्भव नहीं होता। उपनाम भी व्यक्तिवाचक के सदृश प्रयुक्त होते हैं। कवियों को प्रायः उपनाम से ही सम्बोधित करते हैं, क्योंकि उनका रूप प्रायः छोटा और सरल होता है। कुछ उपनाम बड़े रहस्य पूर्ण होते हैं। अयोध्यासिंह उपाध्याय के उपनाम 'हरिऔध' का परीक्षण कीजिए। पहले उन्हें कवि सम्मेलनों में अपने कवित्त-सवैये सुनाने का अवसर मिलता था। इन छंदों में उनके नाम का समावेश

होना असम्भव था। कवि की सूझ निराली ही होती है। दोनो पदों का विपर्यय कर उनके पर्याय रख उर्दू समास बना लिया। इस प्रकार "हरिऔध" उपनाम बन गया, नाम और उपनाम दोनों का अर्थ एक ही है। विद्याभूषण के 'वि' और 'भू' से "विभु" बनाया गया है। परमेश्वर नाम में दो रेफ होने से भ्रमर के सादृश्य पर कवि ने अपना उपनाम द्विरेफ रख लिया, अनेक उपनाम इसी प्रकार बन गये हैं, जिनका इतिहास अज्ञात है। रचना तथा उपादेयता के विचार से इन उपनामों में बहुत थोड़ी प्रवृत्तियाँ ही काम करती हैं; संस्कृत साहित्य में उपनामों का अभाव है। हिन्दी में यह प्रवृत्ति उर्दू से आई हुई प्रतीत होती है। नाम के प्रथमांश के अतिरिक्त पुष्प सम्बन्धी सुमन, कमलादि पक्षी सम्बधी कोकिलादि, व्यंग्य के वेढ़बादि, भाव सम्बन्धी व्याकुलादि, प्रकृति सम्बन्धी चंद्रादि, गुण संबंधी ज्ञानी, माधुरी आदि अनेक प्रकार के उपनाम स्त्री पुरुषो के पाये जाते हैं। एक ही जाति-नाम अनेक व्यक्तियो का होता है, इसलिए ऐसा नाम उपनाम के लिए उपयुक्त नहीं है। उपनामों को भी व्यक्तिवाचक ही समझना उचित होगा क्योंकि उनसे भी व्यक्ति विशेष का ही बोध होता है। कभी-कभी यह देखने में आया है कि जो शब्द एक व्यक्ति का नाम है, वही दूसरे का उपनाम है। ऐसे स्थानों में व्याप्ति होने की सम्भावना रहती है।

उपाधिनाम—कुछ उपाधियाँ भी जाति नाम के सदृश नाम के अन्त में लिखी जाती हैं। देश काल, जाति, भेद से उपाधियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की होती हैं। हिन्दू काल में नवरत्नादि उपाधियाँ थीं, मुसलिम शासन में अमीर, दीवान, मुंशी आदि तथा अँग्रेजों के समय रायसाहब, रायबहादुर आदि उपाधियाँ प्रचलित रहीं। अंतिम दो उपाधियों के दो खंड कर नाम के आदि और अंत में एक एक खंड रख देते हैं। कभी नाम से पहले ही पूरी उपाधि लिखते हैं। अधिकांश उपाधियाँ व्यक्तिगत होती हैं। वंश परम्परागत उपाधियाँ जाति नाम का रूप धारण कर लेती हैं। राजकीय उपाधियो के अतिरिक्त विद्या, धन, वीरता, त्याग, दान तथा गुण, लोकसेवा, समाज सेवा, परोपकारिता आदि सम्बन्धी अनेक प्रकार के उपाधि-नाम पाये जाते हैं। उपाधि प्रवृति के नाम मनुष्यों के नाम होते हैं और उपाधि-नाम उपनाम के सदृश अधिकतर नाम के अंत में प्रयुक्त होते हैं। ये नाम इतने प्रबल होते हैं कि असली नाम ओट में पड़ जाते हैं। व्यवहार में प्रायः इन्हीं से काम चल जाता है। मनुष्य इन्हें उपनाम तथा जाति नाम के सदृश काम में लाते हैं। उपाधि के सम्बन्ध में विशेष चर्चा अभिव्यंजनात्मक प्रवृत्ति में की गई है।

छद्म नाम—उपनामों से मिलते-जुलते कुछ अन्य नाम भी होते हैं जिनका उद्देश्य लेखक तथा उसके व्यक्तित्व को गुप्त रखना होता है। ऐसे छद्म नामों को प्रच्छन्ननाम भी कह सकते हैं। नकली और प्रच्छन्न दोनों ही कृत्रिम तथा कालापेक्षित नाम होते हैं परन्तु उनमें थोड़ा-सा भेद भी होता है। बहुरूपिया किसी की नकल उतारने के समय रूप और नाम तद्रूप ही रखता है। उसका बदला हुआ यह नाम वास्तविक नाम का अनुकरण ही होता है। वह रूप और नाम के साथ-साथ उसका सा व्यवहार भी करता है। यह बहुरूपिया का नकली नाम हुआ। वस्तुतः नाटक के पात्रों के नाम नकली ही होते हैं। जब एक राजद्रोही या डाकू अपना भेष और नाम बदलता है तो उसका उद्देश्य अपने को छिपा-कर शत्रु से बचना होता है न कि किसी की नकल उतारना। यह प्रच्छन्न नाम हुआ। वह इसकी ओट अपने असली नाम को छिपाकर अपनी तथा अपने व्यक्तित्व की रक्षा करता है। यदि यह विद्रोही या डाकू किसी व्यक्ति विशेष का रूप और नाम धारण कर तद्रूप व्यवहार द्वारा राजा के गुप्तचरों और सिपाहियों को धोखा देता है तो उसका यह नाम भी नकली होगा। प्रच्छन्न नामी को रूप बदलकर धोखा देने की आवश्यकता नहीं। वह स्वयं भी इस नये नाम की ओट में गुप्त रहता है और अपने असली नाम को भी छिपाना चाहता है। यह नया अज्ञात नाम दोनों को शरण देकर गुप्त रूप से उनकी रक्षा करता है। अनुकृत नाम न नकली है न प्रच्छन्न, क्योंकि उसका उद्देश्य भिन्न होता है।

हास्यरस तथा समालोचना के लेखक अपनी बचत के लिए कभी-कभी प्रच्छन्न नाम का आश्रय लेते हैं। ये नाम एक अक्षर से लेकर शब्द समूह तक के होते हैं। कोई कोई लेखक अंक से भी काम चला लेता है। पत्र पत्रिकाओं में प्रायः लेखक के नाम के स्थान में क्ष, ज्ञ, त्र, अज्ञात आदि प्रच्छन्न नाम छपते रहते हैं। रामदास गौड़ अब्दुल्ला के नाम से भी कभी-कभी लिखा करते थे। वस्तुत: प्रेम चन्द धनपतराय का कहानियों के लिए प्रच्छन्न नाम ही था।

जाति नाम—जातियों की इतनी वृहत् संख्या भारत के अतिरिक्त अन्यत्र मिलना सम्भव प्रतीत नहीं होती। एक-एक जाति अनेक उपजातियों में विभक्त है और प्रत्येक उपजाति की अनेक शाखा, प्रशाखाएँ विशाल वट वृक्ष के सदृश फैली हुई हैं। मनुष्य प्रायः इन जाति-सूचक शब्दों को अपने नाम के अन्त में लिखते हैं। यही जातिसूचक शब्द जाति नाम हैं। जाति नाम वह अतिरिक्त शब्द है जिसे किसी देश, जाति, समुदाय, वर्ग या राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए प्रयोग कर सकता हो। भिन्न-भिन्न जातियों का आधार भिन्न-भिन्न होता है। ब्राह्मण आदि कुछ जातियाँ अपना आदि उद्भव ऋषियों से मानती हैं। ऋषि-मुनियों के नाम से ही उनके अनेक गोत्र-प्रवर प्रसिद्ध हो गये हैं। कुछ जातियों ने अपनी उत्पत्ति अपने पूर्वजों से मानी है। उनके वंश के पूर्वज ही मूल पुरुष समझे जाते हैं।[1] बहुत से राजकुल अपने को सूर्य अथवा चन्द्रवंश की संतति मानते हैं। अपने आदि स्थान को ही कुछ जातियों ने अपनालिया है। कुछ जातियाँ उपाधियों से निर्मित हुई हैं। अनेक के नाम उनके व्यवसाय के कारण पड़ गये। कुछ जातियाँ कर्म-कांड और कुछ दन्त कथाओ के आधार पर भी बन गई हैं। इस प्रकार इन मुख्य धाराओं से अनेक प्रकार के जाति नाम प्रादुर्भूत हुए हैं :—

(१) गोत्र-प्रवर सम्बन्धी जाति नाम—भारद्वाज, भार्गव, आत्रेय।

(२) पूर्वज सम्बन्धी जाति नाम—यादव, अग्रवाल, सक्सेना।

(३) स्थान सम्बन्धी जाति नाम—मालवीय, कनवजिया, सरजूपारी, श्रीवास्तव, माथुर।

(४) उपाधि सम्बन्धी जाति नाम—द्विवेदी, चतुर्वेदी, त्रिपाठी, आचार्य, शास्त्री।

(५) व्यवसाय सम्बन्धी जाति नाम—नाई, धोबी, चमार, भंगी, काछी, कलवार, अहीर, बढ़ई, मछुआ, लुहार, आदि।

(६) कर्म-कांड सम्बन्धी जाति नाम—बाजपेई, निगम, श्रोत्रिय।

(७) दन्त कथा सम्बन्धी जाति नाम—राजपूतों की उत्पत्ति।

कुछ जातियों ने अपने नामों के नवीन संस्करण कर लिये हैं। नाई से न्यायी, चमार से जाटव, काछी से कुशवाहा, कलवार से जायसवाल, धोबी से प्रजापति, भंगी से वाल्मीकि, अहीर से यादव, बढ़ई से मैथिल, लुहार से विश्वकर्मा बन गये हैं। इनके अतिरिक्त अन्य जाति नामों का उल्लेख करना भी आवश्यक है, क्योंकि नामों में उनका प्रयोग भी बहुधा देखा जाता है :—

(क) चार प्रकार के साधु (१) परमहंस (२) निर्मला, (३) उदासी। (४) वैरागी।

(ख) चार प्रकार के वैरागी (१) श्री गौडीय (२) निम्बार्क (३) वैष्णव (४) और वैरागी।

(ग) दशनामी संन्यासी—तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती, पुरी।

(घ) नाना पंथी—कबीरपंथी, नानक पंथी, दादू पंथी, लाल पंथी आदि।

---

[1] स्पेन देश में पिता के वंश-नाम के स्थान में माता के वंश-नाम का प्रयोग भी कर सकते हैं, मालाबार की कुछ जातियों में मातृ-पक्ष प्रबल होने के कारण माता का गोत्र ही मान्य है।

(ङ) वर्णाश्रम सम्बन्धी नाम—वैश्य, शर्मा, वर्मा, गुप्त, दास, सिंह, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी, संन्यासी आदि।

देश तथा काल के भेद से इनके अतिरिक्त कुछ अन्य जाति नाम भी हो सकते हैं। ये नाम व्यक्तिवाचक नहीं हैं, इन्हें जाति-वाचक अथवा जात्यर्थक व्यक्ति-वाचक कह सकते हैं। कोई-कोई जाति नाम किसी व्यक्ति विशेष की महत्ता के कारण व्यक्तिवाचक की कोटि में पहुँच जाता है। मालवीय कहने से मदनमोहन मालवीय ही समझा जायगा। विद्यार्थी, स्नातक, पंडा, पुजारी महंत आदि शब्द भी जाति नाम का काम देते हैं। जाति नामो को गोत्र नाम या अल्ल भी कह सकते हैं।

नाम का शास्त्रीय रूप—वैदिक युग में नामो का निर्वाचन श्रुतियों के शब्दों में से ही किया जाता था[1]। शनैः शनैः यह प्रवृत्ति लुप्त होती गई। मनुष्यों ने यथेप्सित नाम रखना प्रारम्भ कर दिया। गृह्य सूत्रों ने इस अव्यवस्था को नियंत्रित कर नाम रखने के कुछ नियम निर्धारित किये। आश्वलायन तथा पारस्कर गृह्य सूत्रों[2] ने यह व्यवस्था कर दी कि घोषाक्षरों के संग अन्तःस्थ अथवा ऊष्म वर्णों के मेल से नाम की रचना होनी चाहिए। पुरुषो के नाम दो या चार अक्षरों के समवर्णी तथा स्त्रियों के एक, तीन या पाँच वर्ण के विषमाक्षर हों। पुरुषो के नाम कृत् और स्त्रियों के नाम तद्धित प्रत्यय वाले हों। ब्राह्मणो के नाम में शर्मा, क्षत्रियों के वर्मा और वैश्यों के गुप्त प्रयुक्त करना चाहिए। दो अक्षरों का नाम प्रतिष्ठा देता है तथा चार अक्षरों का ब्रह्मवर्चस। मानव, आपस्तम्बीय, गोभिलीय, शौनकादि गृह्य-सूत्रों में भी इसी प्रकार का विधान पाया जाता है। पातजलि[3] ने नाम-निर्वाचन के सम्बन्ध में निम्नलिखित नियमों का उल्लेख किया है:—

(१) पुत्र के नाम का आदि अक्षर घोष (वर्ग का तृतीय, चतुर्थ अथवा पंचमाक्षर) हो।

(२) नाम के मध्य में अन्तःस्थ (य, र, ल, व) में से कोई अक्षर हो।

(३) नाम वृद्धि संज्ञक अर्थात् आ, ऐ, औ, स्वरयुक्त वर्ण से प्रारम्भ न हो।

(४) नाम त्रिपुरुषानूक[4] हो अर्थात् नाम रखने वाले पिता की तीन पीढ़ी (पिता, पितामह, प्रपितामह) का अनुसरण करता हो।

---

[1] यत् प्रैरत नामधेयं दधानाः। (ऋ० १०-७१-१)।

जो (वेदवाणी) नाम धारण कराने में सहायक होती है, उससे ही सृष्टि के पदार्थों की संज्ञा तथा कर्मों का निर्धारण होता है।

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक्।
वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे॥

(मनु० १।२१)

[2] नाम चास्मै दद्युः ॥१॥ घोषवदाद्यन्तरन्तःस्थमभिनिष्ठानान्तं द्व्यक्षरम् ॥२॥ चतुरक्षरं वा ॥३॥ द्व्यक्षरं प्रतिष्ठाकामश्चतुरक्षरं ब्रह्मवर्चस कामः ॥४॥ युग्मानित्वेव पुंसाम् ॥५॥ अयुजानि स्त्रीणाम् ॥६॥ आश्वलायन गृह्य-सूत्र (१।१५।१-६)

द्व्यक्षरं चतुरक्षरं वा घोषवदाद्यन्तरन्तःस्थ दीर्घाभिनिष्ठानं कृतं कुर्यान्न तद्धितम्॥
अयुजाक्षरमाकारान्तं स्त्रियै तद्धितम् शर्म ब्राह्मणस्य वर्म क्षत्रियस्य गुप्तेतिवैश्यस्य॥

पार० १।१७।२४।।

[3] याज्ञिकाः पठन्ति—"दशम्युत्तरकालं पुत्रस्य जातस्य नाम विदध्याद्
घोषवदाद्यन्तरन्तःस्थमवृद्धं त्रिपुरुषानूकमनरिप्रतिष्ठितम्।
तद्धि प्रतिष्ठिततमं भवति। द्व्यक्षरं चतुरक्षरं वा नाम कृतंकुर्यान्न तद्धितम्"
(म० भाष्य १ अ १ पा १—आह्निके शब्दानुशासन प्रयोजननिरूपणम्)

[4] तच्च पितामहमातामहादिसंबद्धं कुलदेवता संबद्धं वा। (मिताक्षरा २-१२)

(५) वह नाम शत्रुओं में प्रसिद्ध न हो अर्थात् किसी प्रभावशाली शत्रु के प्रसिद्ध नाम की अनुकृति न हो। देव अथवा मित्र के नाम का अनुकरण हो सकता है।

(६) दो या चार अक्षरों का नाम हो।

(७) नाम कृत् प्रत्ययात हो अर्थात् किसी क्रिया से बनाया गया हो। तद्धित प्रत्ययांत न हो अर्थात् संज्ञा से न बनाया गया हो। ऐसा नाम ही अत्यन्त प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

इस विषय में विष्णु पुराण[1] ने अपना अभिमत इन शब्दो में अभिव्यक्त किया है:—

पुरुष का नाम देववाचक शब्द[2] से प्रारम्भ होता हो। उसके अन्त में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र के लिए क्रमशः शर्मा, वर्मा, गुप्त, तथा दास शब्द प्रयुक्त हो।[3] अर्थहीन, अविहित, अपशब्द युक्त, अमाङ्गलिक, जुगुप्सित, असमाक्षर, अति दीर्घ, अति लघु एव कटु वर्णिक नाम न रखना चाहिए। जिसके अन्त में लघु वर्ण हो और जिसका उच्चारण सुख पूर्वक हो सके, वही नाम अभीष्ट होता है।

मनुस्मृति[4] में लिखा है कि ब्राह्मण के नाम में मङ्गल बोधक, क्षत्रिय के नाम में बलव्यंजक, वैश्य के नाम में अर्थमूलक तथा शूद्र के नाम में सेवा-सूचक शब्द व्यवहृत हों। महिलाओं के नक्षत्र, वृक्ष, नदी, अंत्य, पर्वत, पक्षी, सर्प, प्रेश्य पर रखे गये तथा भीषण नाम दूषित तथा अग्राह्य हैं।[5] स्त्रियों के नाम सुखपूर्वक उच्चारण योग्य, कोमल, स्पष्टार्थक, मनोहर, मङ्गलवाची, दीर्घस्वरांत एवं आशीर्वादात्मक शब्दों से युक्त हों।[6]

इस शास्त्रीय-विधान में संक्षेपतः इन तीन आवश्यक विशेषताओं की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है :—

---

[1] ततश्च नाम कुर्वीत पितैव दशमेऽहनि। देव पूर्वं नराख्यं हि शर्मवर्मादिसंयुतम् ॥८॥
शर्मेति ब्राह्मणस्योक्तं वर्मेति क्षत्रसंश्रयम्। गुप्तदासात्मकं नाम प्रशस्तं वैश्यशूद्रयोः ॥९॥
नार्थहीनं न चाशस्तं नापशब्दयुत तथा। नामाङ्गल्यं जुगुप्स्यं वा नाम कुर्यात्समाक्षरम् ॥१०॥
नातिदीर्घं नातिह्रस्वं नाति गुर्वक्षरान्वितम्। सुखोच्चार्यं तु तन्नाम कुर्याद्यत्प्रवणाक्षरम् ॥११॥
(विष्णु पु०, ३ अं० १० अ० ८-११ श्लोक)

[2] कुलदेवता संबद्धं पिता नाम कुर्यात् इति शङ्ख।

[3] शर्मवद् ब्राह्मणस्य स्याद्राज्ञो रक्षासमन्वितम्।
वैश्यस्य पुष्टिसंयुक्तं शूद्रस्य प्रेष्यसंयुतम् ॥३२॥ (मनु० २-३२)

[4] माङ्गल्यं ब्राह्मणस्य स्यात्क्षत्रियस्य बलान्वितम्।
वैश्यस्य धन-संयुक्तं शूद्रस्य जुगुप्सितम् ॥३१॥ मनु० (३१, ३२ श्लोक)

[5] नर्क्षवृक्ष नदी नाम्नी नान्त्यपर्वतनामिकाम्।
न पक्ष्यहिप्रेष्यनाम्नी नच भीषणनामिकाम् ॥ (मनु० ३।९ ॥)

दयानंद सरस्वती ने इसकी व्याख्या अपनी संस्कार विधि के नाम प्रकरण में इस प्रकार की है:—(ऋक्ष) रोहिणी, रेवती, इत्यादि, (वृक्ष) आम्रा, अश्वत्था, बदरी इत्यादि, (नदी) गंगा, यमुना इत्यादि, (अन्त्य) चाण्डाली इत्यादि, (पर्वत) विन्ध्याचला, हिमालया इत्यादि (पक्षी) श्येनी, काकी इत्यादि, (अहि) सर्पिणी, नागी इत्यादि (प्रेश्य) दासी, किङ्करी इत्यादि (भयंकर) भीमा, भयंकरी, चण्डिका इत्यादि नाम निषिद्ध हैं। (संस्कार विधि पृ० ६९ की पाद टिप्पणी।)

[6] स्त्रीणां सुखोद्यमक्रूरं विस्पष्टार्थंमनोहरम्।
माङ्गल्यं दीर्घवर्णान्तमाशीर्वादाभिधानवत् ॥३३॥ (मनु० २ अ०)

(१) सुखोचार्य, कोमलवर्णी, श्रुति-मधुर, रुचिकर एवं सरल शब्दों का नाम ही सहज रीत्या उच्चारण किया जा सकता है। मुख-सुख पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

(२) नाम की दूसरी विशेषता है सुन्दर अर्थ जो बालक को सर्वथा उत्कर्ष की ओर प्रेरित करता रहे। उसके जीवन का उदात्त एवं शुभ ध्येय—प्रतिष्ठा, विद्याधर्म गुणादि की प्राप्ति—सज्ञी के नाम से ही अभिव्यक्त होता हो। उत्तम, सार्थक नाम ही मन पर मंगलमय संस्कार डाल सकता है। जिस नाम से संज्ञी के व्यक्तित्व अथवा विशेषत्व की कल्पना न हो या उसके संरक्षक की अभ्युदय-निश्रेयसमूलकआकांक्षाऐंसंवलित न कीगई हो, वह केवल अशुद्ध या अयथार्थ नाम (Misnomer) है। ऐसे नामाभास सार्थक नहीं कहलाते।

(३) नाम से ही स्त्री-पुरुष का भेद व्यक्त होता हो। यह नाम की तीसरी विशेषता है। नामों का ऐसा सुन्दर एवं समुज्ज्वल रूप अन्यत्र सुलभ नहीं है।

नामोच्चारण-निषेध—नामोच्चारण के सम्बन्ध में भी एक विचित्र विवाद किसी समय उठ खड़ा हुआ प्रतीत होता है। एक पक्ष का कहना है कि किसी शुभाकांक्षी व्यक्ति को अपना, गुरु का, कृपण का, ज्येष्ठ पुत्र तथा स्त्री का नाम न लेना चाहिए[१]। प्रतिपक्षी उपहास करता हुआ कहता है कि फिर नाम रखने का प्रयोजन ही क्या? किसी अपरिचित व्यक्ति को बिना नाम लिये अपना परिचय किस प्रकार दिया जा सकता है। अंगद रावण को अपना परिचय नाम लेकर ही देता है—"अंगद नाम बालि कर बेटा"। मनु ने अपना नामोच्चारण सहित अभिवादन करने का आदेश दिया है[२]। बौधायन[३] आश्वलायन[४] प्रभृति ऋषि, गोभिल[५] तथा आपस्तम्ब[६] गृह्यसूत्र और वेदांग-ज्योतिष[७] नामोच्चारण का प्रतिपादन करते हैं। अनेक यज्ञ-संस्कारो में स्त्री-पुरुष दोनों का नाम उच्चारण किया जाता है[८]। वाल्मीकि-रामायण का प्रत्येक व्यक्ति अपना तथा अन्य का नाम लेने में कुछ संकोच नहीं करता। स्त्री पुरुष का नाम लेती हैं और पुरुष स्त्री का; पति-पत्नी आपस में एक दूसरे का नामोच्चारण करते हैं। जबाला अपने पुत्र से कहती है "तू सत्यकाम है, और मैं जाबाला। अतः तू अपने को सत्य काम जाबाल[९] ही कह"। इन उद्धरणों से यह विदित हो जाता है कि पहले नामोच्चारण में किसी प्रकार की बाधा न थी।

---

[१] आत्मनाम गुरोर्नाम नामातिकृपणस्य च।
श्रेयस्कामो न गृह्णीयाज्ज्येष्ठापत्यकलत्रयोः॥

[२] अभिवादात्परं विप्रो ज्यायांसमभिवादयन्।
असौनामाहमस्मीति स्वं नाम परिकीर्तयेत्॥ (मनु० २ अ. १२२ श्लो)

[३] पुत्रस्य नाम गृह्णाति रौहिणाय तिष्यायेति। (बौधायन)

[४] निर्दिशेद्यजमानः स्वं नाम सांव्यवहारिकम्।
नाक्षत्रं च यथा कृष्णशर्मा रौहिण इत्यपि॥

[५] अभिवादनीयं नामधेयं कल्पयित्वा।
देवताश्रयं वा नक्षत्राश्रयं वा गोत्राश्रयमप्येके॥

[६] नाक्षत्रं नाम च निर्दिशति। तद्रहस्यं भवति॥

[७] नक्षत्र देवता एता एताभिर्यज्ञकर्मणि।
यजमानस्य शास्त्रज्ञैर्नाम नक्षत्रजं स्मृतम्॥

[८] पुमानयं जनिष्यते-असौनामेति नामधेयं गृह्णाति।
यत्तद्गुह्यमेव भवति- अमुष्यासाविति पति नाम गृह्णीयादात्मनश्च।

[९] जबाला तु नामाहमस्मि सत्यकामो नाम त्वमसि।
स सत्यकाम एव जाबालो ब्रुवीथा॥

आजकल हिन्दू परिवारों में बहुओं के लिए ससुर, पति अथवा अन्य वयोवृद्ध मान्य संबंधियों का नाम लेना लोकरीति एवं शिष्टाचार के विरुद्ध समझा जाता है। अतः नाम रखते समय इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि बच्चे के नाम में कुल किसी के वयोवृद्ध के नाम की आवृत्ति न हो। हरिप्रसाद के लड़के का नाम हरि से आरम्भ नहीं हो सकता। यह बन्धन इतना जटिल होता है कि मिश्रीलाल के परिवार की बहुएँ मिश्री शब्द का उच्चारण तक नहीं कर सकतीं। उन्हें मिश्री को मीठा नमक कहते सुना गया है। इस लोक-मर्यादा के सम्बन्ध में एक रोचक कहानी प्रसिद्ध है। एक दिन एक स्त्री ने गुरुदीक्षा लेने के लिए एक पंडित को आमंत्रित किया। पंडित ने पूजा के पश्चात् उसे यह गुरुमन्त्र उच्चारण करने को कहा—'असुर निकन्दन सुर-उर चंदन देवकीनंदन तव शरणम्'। वह स्त्री "असुर निकन्दन सुर उर चंदन" कहकर चुप हो जाती थी। गुरु जी ने कई बार इस मन्त्र को कहलाने का प्रयत्न किया। किन्तु वह सुर उरचन्दन के आगे ही न बढ़ती थी, क्योंकि देवकीनंदन उसके पति का नाम था। गुरु-शिष्य में यह संघर्ष देर तक होता रहा। अंत में उस स्त्री को एक उपाय सूझा और वह झट इस प्रकार गुरुमंत्र पढ़ने लगी—"असुर निकदन सुर-उर-चन्दन लल्लू के चच्चा तव शरणम्।"

जिस प्रकार नामोच्चारण में स्त्रियो को अनेक बन्धन हैं उसी प्रकार उनके नामों के उच्चारण में भी स्वतन्त्रता नहीं पाई जाती। कुलीन परिवार में स्त्रियों का नाम भी गुप्त रखा जाता है। कोई उनको अपने व्यक्तिगत नाम से नहीं पुकार सकता क्योंकि ऐसा करना एक अशिष्टता का चिह्न समझा जाता है। सास ससुर तथा अन्य व्यक्ति उसको बहू अथवा अमुक की बहू कहकर ही बुलाते हैं। राजकीय कार्यों में नाम के स्थान पर प्रायः अमुक व्यक्ति की स्त्री या धर्मपत्नी ही लिखा जाता है। गावो में बहुधा उसे उसके जन्म-स्थान के नाम से—कासगंज वाली, खुर्जावाली आदि कहने लगते हैं। पंजाब में नव विवाहिता अजातपुत्रा वधू को उसके पिता के आस्पद गोत्रादि से अभिहित करते हैं। सन्तान होने पर उसे अमुक की माँ कहकर भी सम्बोधित करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि ससुराल को प्रस्थान करते समय वह अपने बचपन का नाम अपने मायके में ही छोड़ चली हो। अँगरेजी पद्धति के अनुकरण पर कुछ शिक्षित वर्ग में पति के नाम के पहले मिसेज (Mrs.) अथवा श्रीमती लगाकर उसकी पत्नी को सम्बोधन करने की प्रथा चल पड़ी है। रामप्रसाद की स्त्री को मिसेज (श्रीमती) रामप्रसाद या मिसेज (श्रीमती) प्रसाद कह सकते हैं। किन्तु स्त्री-शिक्षा-प्रसार के साथ-साथ महिलाओं में व्यक्तिगत नाम से सम्बोधन करने की प्रवृत्ति फिर जाग्रत हो रही है। शनैः शनैः नामोच्चारण की यह समस्या स्वतः ही समाधान हो जायगी।

नाम लेखन तथा सम्बोधन विधि—पूर्वकाल में पूरा नाम लिखने की पद्धति रही प्रतीत होती है। ताम्रपत्रों, शिलालेखों और भोजपत्रों पर लिखित ग्रंथों में दी हुई पुष्पिकाओं में पूरे नाम ही पाये जाते हैं। यत्र-तत्र इसका अपवाद भी मिलता है, किन्तु बहुत थोड़ा। पहले लेखक हस्ताक्षर पूरा ही करते थे। साहित्य में नाम के कभी पूर्वांश और कभी उत्तरांश से काम लिया गया है। राम क्रमशः परशुराम, रामचन्द्र तथा बलराम के लिए प्रयुक्त हुआ है। सत्यभामा का उत्तरार्द्ध लेकर भामाशाह नाम की सृष्टि हुई है। अगरेजी प्रभाव के कारण नाम लिखने की एक नई प्रथा चल पड़ी है। दोनों अंशों के अँगरेजी के प्रारम्भिक अक्षर हिन्दी में लिखने के बाद जाति, उपजाति सूचक शब्द अथवा उपनाम जोड़ देते हैं। राम लखन पाण्डेय आर० यल० पाण्डेय लिखा जायगा। अब यह हिन्दी रूपान्तर होकर रा० ल० पाण्डेय लिखा जाने लगा है। बलदेव सिंह, ब० दे० सिंह लिखा जाता है। आजकल हस्ताक्षर में दोनों पद्धतियों का प्रयोग होता है। इससे समय तथा स्थान की

कुछ बचत तो अवश्य हो जाती है परन्तु व्यक्तित्व में सर्वग्रासी नहीं ,तो आंशिक ग्रहण अवश्य लग जाता है।[१]

सम्बोधन के भी आजकल अनेक ढंग प्रचलित हैं। संभ्रान्त तथा सम्पन्न पुरुष को मिस्टर बलदेव सिंह, श्री बलदेव सिंह जी, बलदेव बाबू , सिनहा साहब आदि कहते हैं। यदि वही अशिक्षित ग्रामीण अथवा निम्नस्तर का व्यक्ति है तो बलदेवा, बलदुआ, बलुआ, बल्ला, बल्ली, बल्लू, नामों से पुकारा जाता है।[२] धीरे-धीरे शिक्षा के प्रचार से तथा स्तर के उच्च होने से यह ऊंच-नीच की भावना उठती जा रही है। और शिष्ट सम्बोधन का प्रयोग बढ़ रहा है। संक्षेप में, रामप्रसाद नामक व्यक्ति को निम्नलिखित प्रकार से सम्बोधित कर सकते हैं :—

मुन्ना (प्यार का नाम), रम्मू (सूक्ष्म नाम), रामप्रसाद (पूरा नाम), पं० रामप्रसाद शर्मा, आर०पी० शर्मा (सकेत नाम—यह अँगरेजी का प्रभाव है इसका हिन्दी रूप रा० प्र० होगा।), चन्दन (उपनाम), शर्मा जी (जाति नाम), वैद्य महोदय (व्यवसाय सूचक शब्द), भाई जी (सम्बन्ध सूचक शब्द), महाशय जी (आदर सूचक शब्द), राय साहब (पद या पदवी सूचक शब्द), राम बाबू (अर्द्ध नाम) स्त्रियों के नामो के विषय में उनके नामो के साथ उल्लेख किया गया है।

नाम परिवर्तन—कुछ मनुष्यों को अपने नाम से बड़ा मोह होता है। किसी दशा में भी वे उससे विछोह नहीं करना चाहते। इसके विपरीत कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं जो उसे पुराने वस्त्र की भाँति सर्वदा उतार फेंकने को उद्यत रहते हैं। कुछ मनुष्यों के लिए तो नया नाम नये जन्म के सदृश होता

---

[१] संकेत नामों से भ्रम होने की सम्भावना अधिक रहती है। क्योंकि एक ही वर्ण संकेत कई-कई नामों के लिए प्रयुक्त हो सकते हैं। रा० ना० से रामनाथ, रामनारायण, राजनाथ, राजनारायण, राजेन्द्रनाथ, रामेश्वरनाथ, आदि अनेक नाम व्यक्त होते हैं। एक कवि ने संकेत नामों को कैसी मीठी चुटकी ली है।

हिन्दी के पढ़ैयन के बहुतै विचित्र हालु,
जाइकै कचेहरी मां काल्हि हम जाना है।
चूहन की चहँकि वे घुसत रजाई माँ पै,
'रामनाथ' अपना क लिखें लागि रा० ना० है॥
आँधर हैं "सूरज रतन" सो तौ 'सू० र० लिखैं,
इनका कहा तौ भला सही सही माना है।
बड़ी बड़ी आँखी तौ है लिहिने अंगारा सी पै,
कासीनाथ अपना क लिखैं लागि का० ना० है॥
यही तना नावँन माँ तुमतें बताई सबै
दीन्हेनि मचाय खूब गड़-बड़ भाला है।
जीजा कै चलावै को ना जी जी का ठिकाना मुला,
साधौ लाल साँच कही लिखैं लागि सा०ला० है॥
मुँह मटका समान पेट लटका है मुला,
प्यारेलाल अपना का लिखैं लागि प्या० ला० है।
ज्यादा का बताई अरे मरद का रूप पाइ,
'बाबूलाल' अपना क कहत कि 'बा० ला० हैं॥

[२] निम्नलिखित वक्रोक्ति के मूल में यही भावना काम कर रही प्रतीत होती है—

माया तेरे तीन नाम
परसा, परसी, परशुराम।

है। वे नाम परिवर्तन को आवागमन अथवा पुनर्जन्म समझते हैं। जिस प्रकार जीव पूर्व काया तथा तत्सम्बन्धी कर्मों से मुक्त हो नवजात शरीर से नवीन कार्य-कलाप प्रारम्भ करता है, उसी प्रकार नाम परिवर्तन कर लेने से पूर्व नाम के संसर्गोद्भूत सब दूषण तथा दुर्गुण धुल जाते हैं। नूतन नाम से नवीन कृत्यों का श्रीगणेश होता है। उसके पूर्व के राग, द्वेष, यश-अपयश, गुण-दोषादि सब कुछ परिवर्तन की जवनिका के पीछे तिरोभूत हो जाते हैं और नये नाम से नया जीवन आरम्भ हो जाता है। वाल्मीकि में रत्नाकर का लाछन न रहा।

प्रायः एक ही नाम मनुष्य की आयुपर्यंत रहता है किन्तु कभी-कभी अवस्था विशेष में अनेक नामों को परिवर्तित होते हुए भी देखा गया है। नाम में परिवर्तन और नाम का परिवर्तन इन दोनों में भेद है। नाम में परिवर्तन से आशय उन विकारों से है जो देशकाल तथा परिस्थिति के कारण नाम में स्वतः होते रहते हैं। उनका नामी से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। नाम के वर्णों (ध्वनियों) में परिवर्तन होता रहता है। नाम का परिवर्तन पहले नाम के स्थान में दूसरा नाम रख लेने से होता है। इससे पहला नाम लोप हो जाता है। कभी-कभी दोनों नाम साथ-साथ चलते रहते हैं। यह परिवर्तन नामी स्वयं करता है।

नाम एक घटना है, एक आख्यान है, एक रूपक है, एक संदर्भ है। नाम में अनेक समस्याएँ सन्निहित रहती हैं। परिस्थितियों की अभिव्यंजना, गार्हस्थ्य जीवन की झाँकियाँ अथवा मानव भावनाओं का प्रस्फुटन नाम के द्वारा ही होता है। नाम प्रच्छन्न को प्रत्यक्ष करता है। वस्तुतः नाम एक ऐसा अदृश्य परिधान है जिसका निर्माण विचित्र तन्तुओं से होता है। उसके किसी ताना-बाना के विच्छिन्न होते ही मनुष्य की क्रमबद्ध जीवनचर्या में विकार उत्पन्न हो जाता है। इसलिए कुछ विचारकों का मत है कि नाम परिवर्तन श्रेयस्कर नहीं है, क्योंकि इससे उसके पूर्व व्यक्तित्व का अंत हो जाता है। उसके अब तक के कार्य-कलापों पर पानी फिर जाता है। निस्संदेह इस उक्ति में कुछ तथ्य अवश्य है। मुंशीराम नाम के साथ वकालत, 'सद्धर्म-प्रचारक' का सम्पादकत्व, गुरुकुल का अधिष्ठातृत्वादि अनेक कार्य सम्बन्धित हैं जिनका श्रद्धानन्द नाम से कोई सम्बन्ध नहीं है। मुंशीराम का व्यक्तित्व श्रद्धानन्द नाम रखते ही तिरोहित हो जाता है। यह सब होते हुए भी कुछ परिस्थितियों में मनुष्य अपना नाम-परिवर्तन करने को विवश हो जाता है। नामों में कई प्रकार का परिवर्तन देखा गया है, (१) बचपन के अंध-विश्वास, व्यंग्य अथवा दुलार के भद्दे तथा लज्जाजनक नामों से मनुष्यों को प्रौढ़ावस्था में प्रायः अरुचि होने लगती है। झगड़ू, दमड़ी, घूरे आदि नाम मित्र-मण्डली, सभा-समिति तथा जनता में उपहास-भाजन बन जाते हैं। इसीलिए बड़े होने पर मनुष्य उनके स्थान में कोई सुन्दर, सार्थक एवं प्रिय नाम रख लेते हैं। छदामीलाल चंद्रशेखर बन गये। समाचार-पत्रों में कभी-कभी ऐसी विज्ञप्तियाँ प्रकाशित होती रहती हैं कि अमुक व्यक्ति ने अपना पहला नाम बदल कर अमुक नाम रख लिया है। उदाहरण स्वरूप खचेरूमल कृष्ण मुरारी, घुरपत्री प्रेमनारायण और लोटीराम बलदेवसिंह हो गये।[1] आभूषण सम्बन्धी

---

[1] **इलाहाबाद के अँग्रेजी दैनिक पत्र लीडर** (Leader) **में निम्नलिखित विज्ञप्तियाँ निकली थीं :—**

"It is hereby given that I, Khacherumal Sharma M. A., L. T. son of Shri Pt. Gian Chandra, resident of village Chaprawat (Bulandshahr) at present serving as Principal at Shri Ram Higher Secondary School, Daurala (Meerut) have changed my name to Krishna Murari Sharma" (Leader 1-11-50)

Be it known to all that I, Ghurpatri Yadva roll no. 109213 who passed the U. P. Inter Board's High School Examination of 1952, want to change my name to Prem Narayan Yadva. (Leader 17-9-54)

Be it known to all that I, Loti Ram Yadva Roll no. 3354, who passed the U P. Inter Board's High School Examination of 1950, want to change my name to Baldev Singh. (Leader 27-11-53)

नाम भी बड़ी आयु में विशेष प्रिय नहीं होते। चन्द्रहरि का नया चोला पहनने के कारण अब भूमक लाल को कौन पहचान सकता है ? (२) संन्यास आश्रम में प्रवेश करते समय संन्यासी संसार की माया-ममता के साथ-साथ अपने पुराने नाम का मोह भी त्याग देता है और अपनी भावना के अनुसार एक नया नाम रख लेता है। मुंशीराम ने संन्यासी बनने पर अपना नाम श्रद्धानन्द रखा था। कभी-कभी वानप्रस्थी और ब्रह्मचारी भी अपने नाम परिवर्तन करते देखे गये हैं, (३) धर्म परिवर्तन के साथ नाम-परिवर्तन भी प्रायः कर लिया जाता है। बौद्ध-धर्म की दीक्षा लेते ही केदारनाथ राहुल सांकृत्यायन बन गये। धर्म पाल अब्दुल गफूर और निवेदिता (Margaret E. Noble) के नाम सभी जानते हैं।

(४) कभी-कभी यह भी देखा गया है कि अपने नगर के किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का नाम होने से बच्चे का नाम बदल दिया जाता है। इसी कारण गोपालचन्द्र का नया नाम जगनन्दनलाल हो गया। नाम परिवर्तन के साथ-साथ प्राय: प्रवृत्ति परिवर्तन भी हो जाया करता है किन्तु यहाँ ऐसा नही हुआ। बहुरुपिया, राजद्रोही और डाकू भी धोखा देने के लिए कुछ काल के लिए अपना नाम बदल लेते हैं परन्तु यह नाम परिवर्तन नहीं कहलायेगा क्योंकि वह अस्थायी तथा प्रवचनापूर्ण नाम अवस्था-विशेष में विशेष अवसर पर ही अपनाया गया है। स्त्रियाँ भी कभी-कभी बालकों को शिष्टाचार से विवश हो दूसरे नामों से पुकारने लगती हैं। ऐसे नाम भी नाम परिवर्तन के अन्तर्गत नही आते, क्योंकि इन नामों से नामी का व्यक्तीकरण नहीं होने पाता। नाम परिवर्तन की एक विचित्र प्रथा दक्षिणी अमरीका के रेड इंडियन में प्रचलित है। प्रतिश्याय पीडित रेड इंडियन स्वस्थ होने पर अपना नाम परिवर्तन कर लेता है ताकि रोग का देव उसको पहचान कर फिर आक्रमण न कर दे।[1] जंगलिया का विपिन विहारी पर्यायमूलक परिवर्तन का एक अद्‌भुत उदाहरण देखने में आया है। एक अन्य प्रकार का परिवर्तन भी देखा जाता है जिसे नाम संस्कार या सुधार भी कह सकते हैं। आर्यसमाज के सम्पर्क से मनुष्यों में एक नूतन जागृति उत्पन्न हो गई है। नामों में एक अभिनव चेतना-युग का आविर्भाव दिखलाई दे रहा है। इसके फलस्वरूप प्रायः अरुचिकर और अप्रिय नामों में यत्किंचित् परिवर्तन कर उन्हें सुव्यवस्थित रूप दे दिया जाता है। गुरुदत्त विद्यार्थी का पहला नाम गुरुदत्तामल था। मदारीलाल से मदारि (मद+अरि) लाल, सूबेदार सिंह से सुवेदार्य सिंह, बुद्धूलाल से बुधलाल बन गये हैं। इस थोडे से परिष्कार से प्रथम दो नामों में से विजातीयता की मुद्रा विलय हो गई है। अब उन्होंने आर्ष संस्कृति का परिधान धारण कर लिया है। बुद्धूलाल का बुद्धूपन दूर होने से अब वह बुद्धिमान बन गयेहैं। बाग में उत्पन्न बागेसर अब वागेश्वरी देवी के भक्तों में दिखलाई देते हैं तो आँगन में जन्मे हुए ऑगनेलाल अग्नेलाल आग्नेय होते-होते अन्ततोगत्वा अग्नि शर्मा के रूप में प्रकट हुए। महेश्वर बक्स सिंह का ईषत् परिवर्तित भारतीय संस्करण महेश्वर वत्स सिंह कैसा सुन्दर लगता है। यह स्पष्ट है कि एतादृश परिष्कृत रूप प्रथम नामो के न तो तत्सम या पर्याय हैं, न विकसित रूप और न नाम परिवर्तन ही इनको कहा जा सकता है। इन्हें उनके परिमार्जित रूप कह सकते हैं।[2]

---

[1] When a Red Indian becomes ill and suffers from sneezing he believes that his sickness is due to evil spirits. When he recovers he changes his name, thus foiling the demon who will fail to recognize him.

(Christian Herald)

[2] **नाम-परिवर्तन के सम्बन्ध में तामिल-लोक-कथाओं में एक अत्यन्त विनोदपूर्ण चुटकुला प्रसिद्ध है जिसका उल्लेख राजाजी (राजगोपालाचार्य) ने साप्ताहिक पत्र स्वराज्य में अभी हाल में इस प्रकार किया है।**

स्वराज्य के पश्चात् भारतीय ईसाइयों के नामो में विशेष परिवर्तन दिखलाई दे रहा है। कुछ ईसाइयों ने अपने अँगरेजी नामों के साथ हिन्दू आस्पद लगाने प्रारम्भ कर दिये हैं। कुछ अँगरेजी नाम के स्थान में हिन्दी तत्सम नाम रखने लगे हैं। श्रद्धानन्द प्रभु, विजयानन्द तथा धीरानन्द भट्ट—ये तीन परिवर्तित नाम तीन पादरियों ने अभी हाल में अपनाये हैं।[1] कुछ अपने बच्चों के हिन्दी नाम ही रखते हैं। मुसलमानों में हिंदी नाम रखने की प्रवृत्ति अभी तक दिखलाई नही देती।

नाम के पर्याय—पुराण, रामायण और महाभारत काल के कवियो ने नामो के पर्यायो का प्रयोग पर्याप्त रूप से किया है। कविता में किसी नाम के समावेश करने में कठिनाई प्रतीत हुई तो उसका पर्याय रखकर काम चला लिया करते थे। तीन प्रकार के पर्याय नामों में पाये जाते हैं :—

(क) सहस्रनाम अथवा स्तोत्र पद्धति के पर्याय—विभिन्न प्रवृत्तियो पर रखे गये तदर्थवाची नाम इसके अंतर्गत आते हैं—अर्जुन के पर्याय—धनंजय, शक्रनदन, जिष्णु, गाडीवी, वृषसेन, फाल्गुन, मध्यमपाडवादि।

(ख) नाम के किसी अंश के पर्याय—दश के पश्चात् मुख के पर्याय रखने से रावण के पर्याय बन जाते हैं, यथा—दशमुख, दशानन, दशकंठ, दशग्रीवादि।

(ग) प्रहेलिकात्मक पर्याय—यथा—रथ पूर्वदश अर्थात् दशरथ। नररूप हरि अर्थात् नरहरि[2] इसको पर्याय न कहकर प्रहेलिकात्मक प्रयोग कहना अच्छा होगा।

आजकल नामों के पर्याय का प्रचलन दृष्टिगोचर नहीं होता। गङ्गाशरण व्यक्ति को जाह्नवी शरण नहीं कह सकते। अंतिम नाम से किसी अन्य व्यक्ति का ही बोध होगा। इसी प्रकार कृष्ण, श्याम, कलुआ, साँवलिया, असितादि नामों से समानार्थी होते हुए भी पृथक्-पृथक् व्यक्ति ही समझे जायँगे। नामों में इनको पर्याय नहीं माना जायगा क्योंकि ऐसे प्रयोगों से आजकल बहुत अव्यवस्था फैलने की सम्भावना रहती है।

नामों की आयु—पृथ्वी के पदार्थों में नाम ही दीर्घतम आयु वाला देखा गया है। जीवों में

एक बार किसी गाँव में एक अछूत चौकीदार रखवाली के लिए नियुक्त किया गया। उसका नाम था पेरूमाल (ईश्वर), उस गाँव के मुखिया को यह बहुत बुरा लगता था कि एक नीच जाति के व्यक्ति को भगवान (पेरूमाल) के नाम से बुलाया जाय। मुखिया ने पेरूमाल से कहा, "तुम अपना नाम बदल डालो।" पेरूमाल बोला, "बहुत अच्छा महाराज, लेकिन हमारी जाति में नाम बदलने में बड़ा खर्च होता है।" मुखिया ने पूछा, "कितना?" पेरूमाल ने एक बड़ी धन-राशि नाम-परिवर्तन-संस्कार के लिए बतला दी और मुखिया से उक्त धन लेकर वह अपने घर चला गया। एक सप्ताह बाद जब वह लौटकर आया तो मुखिया ने उससे पूछा, "तू ने अपना नाम बदला।" पेरूमाल ने उत्तर दिया, "हाँ सरकार।" मुखिया बोला, "क्या नाम रखा है?" चौकीदार ने कहा, "पेरिय पेरूमाल (महेश्वर)।" नाम-परिवर्तन का यह निराला नमूना है।

[1] We, Sebastian Aloysius Monis, Vincent Francis Fernandes, and Charles Marian Alva, priests of the Roman catholic Diocese of Allahabad, residing at 32, Thornhill Road, Allahabad, hereby notify the public that with effect from 31-3-55 we have dropped our aforementioned names and adopted the names Shraddhanand Prabhu, Vijayanand and Dhiranand Bhatt, respectively, and have affirmed affidavits to that effect, and filed them with the Bishop of the said Diocese. (A P 157—A) A. B. P. 4-4-55

[2] **बंदउ गुरु-पद-कंज, कृपासिन्धु-नररूप हरि।**

(रामचरित मानस, बालकाण्ड सो० ५)

हाथी १०० वर्ष, मगर ३०० वर्ष, कछुआ ३५० वर्ष जीवित रहते हैं। ह्वेल मछली आदि कुछ जानवरों की आयु अधिक लम्बी पाई जाती है। किन्तु यह आयु ५०० वर्ष से अधिक नहीं होती। उद्भिजों में उत्तरी अमरीका के सिकूकिया तरु की आयु लगभग ४००० वर्ष तक बतलाई जाती है। कनारी द्वीप के कुछ वृक्ष ८, १० हजार वर्ष तक रहते हैं। भारत का वट वृक्ष भी सुदीर्घतम आयु का होता है। आजकल मनुष्य की आयु १५० वर्ष से अधिक नहीं देखी जाती। किन्तु नाम इनसे भी अधिक आयु के देखे गये हैं। ये नाम मनुष्य की मृत्यु के साथ लोप नहीं होते, अपितु दीर्घ काल तक विचरण करते रहते हैं। साधारणतः विवाह में गोत्रोच्चार के समय तथा श्राद्ध में तर्पण के समय मनुष्य की तीन-तीन पीढ़ियों के पूर्वजों के नाम उच्चारण किये जाते हैं। गया में पिण्डदान के समय ७ पीढ़ियों के नाम तक स्मरण करते हैं। आयुके विचार से नामों को पाँच कालों में विभक्त कर सकते हैं—(१)कल्प जीवी नाम सृष्टि की प्रलय तक रहते हैं। ये अमर नाम अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरस आदि जीवन्मुक्त आत्माओं के हैं। (२) षड्चिरंजीवियों के सदृश कुछ मृत्युंजयी महात्माओं के नाम भी चिरजीवी होते हैं। (३) युगजीवी नामों में धर्मप्रवर्तकों के नाम सम्मिलित हैं। (४) लेखक, कलाकार, राजा, महाराजा, देशभक्त नेता, परोपकारी महापुरुषों के नाम दीर्घजीवी की श्रेणी में आ सकते हैं। (५) अल्पजीवी वे नाम हैं जो नामी के साथ-साथ अथवा उससे भी पहले समाप्त हो जाते हैं। कुछ नाम तो कीड़े-मकोड़े के जीवन के समान घड़ी-दो घड़ी के ही अतिथि होते हैं। यह स्मरण रखना चाहिए कि यह विभाजन सर्वथा चिरस्थायी नहीं है। कहीं-कहीं इसमें कुछ परिवर्तन भी हो सकता है। जिस प्रकार ब्रह्मचर्य से मनुष्य की आयु बढ़ती है उसी प्रकार लोकसंग्रही कार्यों से नाम का जीवन भी बढ़ता जाता है। जो नाम जितना ही सर्वप्रिय बनेगा उतना ही वह आयुष्मान होगा।

नामों का विकास—शब्दों (नामों) में दो प्रकार का परिवर्तन देखा जाता है—(१) पहला रूप-परिवर्तन जिसे विकास कहते हैं। (२) दूसरा अर्थ-परिवर्तन। नामों में आगम, लोप, विपर्यय तथा विकार[1] ये चार प्रकार के रूप-परिवर्तन होते हैं। कभी-कभी संस्कृत भाषा का कोई मूल नाम प्राकृत, अपभ्रंशादि भाषाओं में होता हुआ अपनी चिरकालीन दीर्घ यात्रा में "जैसा देश वैसा भेष" के अनुसार अपना रूप यत् किंचित् परिवर्तित कर स्थिति के अनुकूल बना लेता है। एक उदाहरण से यह विषय अधिक स्पष्ट हो जायगा। खान शब्द का मूल रूप कृष्ण है जो कृष् (खींचना, आकर्षित करना) धातु से निकला है और जो समय-समय पर विभिन्न बोलियों में ध्वनि परिवर्तन होते-होते आज अनेक विकसित रूपों में दिखलाई दे रहा है। यथा-कृष्ण—किशन, किसुन, कर्षण, कन्हैया, कन्हैया, कहन, कान्ह, कान, कहान, खान आदि। इस विकृति के मूल में प्रायः मुख सुख, जलवायु, भावातिरेक, बलाघातादि हेतु होते हैं। व्याकरण संबंधी परिवर्तन विकास के अंतर्गत नहीं आते हैं। कुछ नामों में बहुत ही कम परिवर्तन होता है और कुछ में अधिक। कुछ नामों में इतना अधिक परिवर्तन हो जाता है कि उनका मूल रूप पहचानना असाध्य अथवा दुःसाध्य हो जाता है। जिनमें स्वरभक्ति आदि के कारण बहुत ही कम विकार हुआ है तथा जिनके रूपांतर को अभी थोड़ा ही समय हुआ है वे अर्द्धतत्सम नाम हैं। वे नाम जो दीर्घकाल की यात्रा करते-करते अपने रूप में अधिक परिवर्तन कर लेते हैं तद्भव कहलाते हैं। कुछ ऐसे नाम होते हैं जिनको अत्यधिक रूपांतर के कारण पहचानना सरल नहीं होता अथवा जो किसी ग्रामीण बोली के स्थानिक रूप होते हैं वे देशज या देश्य कहलाते हैं। जो सर्वदा अपने मूल रूप में ही रहते हैं वे तत्सम नाम हैं। हरी अर्द्धतत्सम, साँवलिया तद्भव, छन्नू देशज तथा विष्णुस्वरूप तत्सम नाम हैं। संधि, समास प्रत्ययादि के कारण विकृत होनेवाले रूप तत्सम ही होंगे। इस प्रकार

[1] **वर्णागमो गवेन्द्रादौ सिंहे वर्ण विपर्ययः।**
षोडशादौ विकारस्तु वर्णनाशः पृषोदरे॥ शा० सू० २।२।१७२

तत्सम नामो का विकास अर्द्धतत्सम, तद्भव तथा देशज के रूप में होता है। ये विकसित नाम ही हिन्दी के अतीत की अपनी अमूल्य निधि हैं।

नामों में व्याप्ति—संबंध की दृष्टि से नाम के दो अन्य रूप और हो सकते हैं—(१) साकृत अथवा शरीरी रूप वह है जो किसी संज्ञी के सम्पर्क में विद्यमान रहकर उसके व्यक्तित्व का बोधक होता है। कोश, विश्वकोश, जीवन चरित, परिचयात्मक ग्रन्थ, पुराण, इतिहास, भूगोल आदि में कथित नाम साकृत नाम हैं क्योंकि इनका व्यक्ति-विशेष से संबंध रहता है।

(२) निराकृत नाम वे शब्द—ध्वनियाँ हैं जिनका संबंध व्यक्तियों से नहीं होता। वे सामन्य शब्दों के सदृश ही व्यवहृत होते हैं। व्याकरण के उदाहरणों और अंकगणित के प्रश्नों में इसी प्रकार के नाम मिलते हैं। मोहन ने आम खाया। मोहन कर्त्ता कारक है। यहाँ मोहन से किसी व्यक्ति-विशेष का तात्पर्य नही। मोहन के स्थान पर सोहन कहने से भी वही काम निकल सकता है। इसी प्रकार मुन्नू और छुन्नू एक काम को १० दिन में करते हैं आदि वाक्यो में मुन्नू और छुन्नू कोई पुरुष-विशेष नहीं हैं। उनकी जगह दूसरे नाम भी रख सकते हैं। इसलिए ये भी सामान्य नाम ही हैं। ये व्यक्तियां की ओर संकेत नहीं करते। इन दोनों उदाहरणों में मोहन, मुन्नू और छुन्नू निराकृत या अशरीरी नाम हैं। इस देश में अनेक गौतम तथा कणाद उत्पन्न होते रहते हैं—इस वाक्य में गौतम तथा कणाद सामान्य नाम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं। उपन्यास और कहानियों के नाम भी इसी कोटि में आते हैं। ऐसे मृत, अप्रयुक्त नामों का अध्ययन केवल वैयाकरण अथवा भाषा विज्ञान के विद्यार्थी उनकी व्युत्पत्ति, आवृत्ति तथा वितरण की दृष्टि से करते हैं। अभिधान संग्रह, नाम माला, निघंटु-निरुक्त आदि में इसी प्रकार के नाम मिलते हैं। फ्रांस, डेनमार्क आदि कुछ देशो में निराकृत नामो के रजिस्टर रखे जाते हैं जिनसे मनुष्यों के नाम तथा उपनाम चुन लिये जाते हैं। ये अशरीरी नाम साकारता धारण करने को सर्वदा उद्यत रहते हैं, किन्तु कुछ अभागे नामों की बारी तो कभी आती ही नहीं।

कभी-कभी साकृत और निराकृत नाम आपस में एक दूसरे को व्याप्त कर लेते हैं अर्थात् नाम की एक ही शब्द-ध्वनि शरीरी और अशरीरी दोनों प्रकार के नामो की ओर संकेत करती है। जब कोई भाषाविद् 'गौरीशकर' शब्द का विवेचन करने बैठेगा तो उस नाम का पर्वत शिखर उस समय लोप नहीं हो जाएगा। यद्यपि भाषाविज्ञानी का ध्यान गौरीशंकर शिखर की ओर नहीं है। सब से अधिक कठिनाई उस समय दिखलाई देती है। जब एक ही नाम के वास्तविक तथा कल्पित व्यक्ति सैकड़ों की सख्या में होते हैं। सहस्रों राजाराम होंगे। इसका कारण यह है कि व्यक्तियों की संख्या इतनी अधिक है कि प्रत्येक को नया नाम देना असम्भव हो जाता है। यही दशा कभी-कभी स्थानों के नामों की भी होती है। एक ही नाम के अनेक स्थान पाये जाते हैं। जब निरुक्तकार राजाराम की व्युत्पत्ति करने में संलग्न होगा तो वह साकृत राजारामों में से निराकृत राजाराम पर ध्यान लगायेगा। उनकी संख्या से उसे कोई प्रयोजन नहीं। वह उस नाम को निराकृत बना लेता है। इस प्रकार शरीरी नाम अशरीरी और अशरीरी नाम शरीरी बनते रहते हैं। यह बात स्मरण रखना चाहिए कि साकृत नाम निराकृत नामों के अग्रज एव जन्मदाता होते हैं।

नाम-स्थानांतरण—मनुष्यों के सदृश नाम भी भ्रमणशील होते हैं। अच्छे नाम देश के एक कोने से दूसरे कोने में व्याप्त हो अपना स्थायी स्थान बना लेते हैं। परदेश प्रवास करते हुए भी अनेक नाम पाये जाते हैं। कुछ भारतीय प्राचीन नाम सुदूरवर्ती मलय प्रदेश में अद्यावधि प्रचलित देखे जाते हैं। इतना ही नहीं, अनेक नाम लंबी-लंबी विदेश यात्रा भी करते देखे गये हैं। उनके मार्ग में कोई बंधन, कोई नियंत्रण बाधा डालते नहीं देखे गये हैं। इस प्रवास में कभी-कभी जलवायु अथवा परिस्थिति के कारण उनके रूप तथा ध्वनि में कुछ विकार भी हो जाते हैं। यूनान, ईरान आदि देशों के कतिपय नाम भारत में आज भी बसे हुए मिलते हैं। यह आवश्यक नहीं कि नाम

नामी के साथ ही देशातरो का भ्रमण करे। अनेक नाम स्वतः उन दूरस्थ देशों में बसे हुए पाये जाते हैं जिनको देखने का नामी को कभी सौभाग्य भी प्राप्त नहीं हुआ था।

किसी देश-विशेष में प्रचलित नाम जब किसी दूरवर्ती देश में अपनालिया जाता है तो उसे नाम का स्थानांतरण या स्थानांतरीकरण कहते हैं। यह स्थानांतरण न केवल विदेशो में ही अपितु विजातियों, विभिन्न सप्रदायों अथवा विभिन्न भाषाओं में भी हो सकता है। इस अवस्था में उसे प्रभाव कहा जाता है।

इस स्थानातरण के कई कारण होते हैं (१) किसी व्यक्ति के गुण-विशिष्ट के हेतु उसके नाम की महिमा भी विस्तृत होती जाती है। अयोध्या के राम के अलौकिक जीवन के साथ उनके नाम की महत्ता भी बढ़ती गई और वह देश के कोने-कोने में विविध रूपों में अपनालिया गया है। ब्रज के कृष्ण का नाम भी इसी कारण देशव्यापी हो गया है। ईरान के हातिम और रुस्तम के नाम उनकी दानशीलता तथा वीरता के कारण ही भारतवर्ष में प्रचलित हुए। लुकमान का नाम उसके वाक्-वैदग्ध्य के साथ-साथ दूरस्थ यूनान से यहाँ आ गया। (२) कभी-कभी जलवायु की उग्रता अथवा धार्मिक अत्याचारों से जातियाँ विस्थापित हो स्वदेश त्यागकर अन्य देश में बस जाती हैं। धार्मिक क्रांति के कारण ही अग्निपूजक पारसी ईरान से भारत को भाग आये। बहराम, जमसेद आदि नाम इसी की ओर संकेत करते हैं। पंजाबियो के विस्थापन में भी राजनीति के साथ-साथ धर्म को ही मूल हेतु समझना चाहिए। कुछ काल पर्यंत इनके नामो में भी विनिमय होने लगेगा। (३) जब कोई बलवान राजा दूसरे देशों पर आक्रमण कर विजय प्राप्त कर लेता है तो विजित जातियाँ विजयी के आतंक में आकर उसका नाम अपना लेती हैं। सिकंदर, नादिर आदि नाम इसी के अवशिष्ट चिह्न हैं। (४) वाणिज्य-व्यवसाय के कारण भी विभिन्न देशों के मनुष्य एक दूसरे के सम्पर्क में आते हैं। क्रय-विक्रय के साथ विचार-विनिमय भी होता रहता है। इसी आदान-प्रदान में नामों पर भी कुछ न कुछ प्रभाव पड़ता ही है। (५) देशाटन, कलाप्रशिक्षण, विद्या-प्राप्ति आदि के लिए विदेश यात्रा करने से भी नामो पर यत्किंचित् प्रभाव पड़ने की सम्भावना रहती है। मीराबेन, निवेदिता आदि कुछ नाम इसकी पुष्टि करते हैं। (६) विजातीय धर्म दीक्षा के कारण सैकड़ो विदेशी नाम ईसाई और मुसलमानों ने अपना लिये हैं यथा—डेविड लाल। (७) विजातीय शासन के कारण सबसे अधिक विदेशी भाषा के नाम प्रचलित हो जाते हैं। मुसद्दीलाल, खुरशेद बहादुर, कलक्टर आदि मनुष्यो के नाम और विक्टोरिया स्टेशन, अलफ्रेडपार्क, सुलतानपुर, सिकंदरा आदि स्थानों के नाम विदेशी प्रभुत्व के द्योतक हैं।

इस प्रकार स्थानांतरित होकर नाम एक देश से दूसरे देश में पहुँच जाता है।

नामों का इतिहास—नामों के इतिहास का अध्ययन भी एक रोचक एवं महत्त्वपूर्ण विषय है। प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं में होते हुए अनेक मूल शब्द विकास को प्राप्त होते रहते हैं। इस प्रकार के विकसित रूप अतीत की सम्पत्ति समझे जाते हैं। तत्सम नाम प्रायः आधुनिक काल के ही होते हैं। जिस प्रकार मनुष्य जन्म से मृत्यु तक अनेक अवस्थाओं से गुजरता है और प्रत्येक अवस्था में उसके अनेक कार्य-कलाप होते रहते हैं। उसी प्रकार नाम भी उत्पत्ति से लेकर अनेक रूपो में विकसित होता हुआ अंततोगत्वा अप्रयोगात्मकता को पहुँच जाता है—साकृत से निराकृत बन जाता है। आत्मा की भाँति नाम कभी मरता नहीं। मुक्त होता रहता है। अधिकांश नाम व्यक्ति का आमरण साथ नहीं छोड़ते। कुछ नाम मारकण्डेयादि सप्त चिरंजीवी ऋषियों के सदृश सुदीर्घायु पाते हैं। कोई कोई नाम अमरता को भी प्राप्त कर लेता है। मृत नाम भी समय पाकर पुनर्जीवित हो सकता है। कभी एक ही नाम कई व्यक्तियों के साथ रहकर अपनी लोक-प्रियता का संदेश देता है। व्युत्पत्ति से लेकर विकास तक अनुशीलन करना ही नाम के इतिहास का परिचय है। इससे नाम का निर्वचन, विकास,

ध्वनि परिवर्तन, अर्थबोध, संस्कृति का स्वरूप आदि अनेक तत्वों पर प्रकाश पड़ता है। संक्षेप में भाषा शास्त्रीय विवेचन, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवं सांस्कृतिक मीमांसा का अध्ययन ही नाम का इतिहास है। यह ऐतिहासिक परिशीलन केवल प्राकृत या तद्भव नामों में ही सम्भव होता है।

नामों का अर्थ—व्याकरण सम्मत शब्द होने से नामों का वाच्यार्थ तो होता ही है। इनमें भावार्थ एवं तात्पर्यार्थ भी पाये जाते हैं। अर्थ की संगति लगाने के लिए संकेत ग्रहण की अपेक्षा होती है क्योंकि संकेत भेद से एक शब्द के अनेक अर्थ हो सकते हैं। देश, काल, परिस्थिति, प्रसंग, साहचर्य, किसी प्रसिद्ध शब्द का सान्निध्यादि अनेक उपाय संकेत-ग्रहण अथवा शक्ति-ग्रह के होते हैं। मोर मुकुट का मुख्यार्थ है मोरपंखी किरीट, किंतु लक्षणा से यह कृष्ण का बोधक है क्योंकि वह सदा मोरमुकुट धारण करते थे। कृष्ण और मोर मुकुट का सदैव साहचर्य रहा है। इसी प्रकार साहचर्य से बनमाली भी कृष्ण का वाचक होता है। घनश्याम (काले बादलों के समान कृष्ण), मेघसिंह (मेघ सदृश असित वर्णी कृष्ण), मेघवरण, अहिवरण, कोवरण, सुनील, असित कुमार आदि अनेक नाम कृष्ण के लिए ही प्रयुक्त हुए हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम नाम का अर्थ मर्यादा-शब्द-सान्निध्य से राम ही समझना उचित होगा। यद्यपि पुरुषोत्तम विष्णु, शिव, कृष्ण, अर्जुन, राम, मलमास, एक पुण्य क्षेत्र आदि अर्थों में भी आता है।

जालिमसिंह ने न तो कोई हत्या की और न किसी पर कभी अत्याचार ही किया। बहुत भला आदमी है। इसका अर्थ करने से अनर्थ हो जायगा। जब मुख्यार्थ में बाधा हो तो भावार्थ या तात्पर्यार्थ बतलाना भी अत्यंत आवश्यक होता है क्योंकि नामों में मुख्यार्थ से भावार्थ सबल होता है। यह उपेक्षित बुरा नाम माता-पिता ने बच्चे की दीर्घायु की शुभकामना से रखा है। मर्कट बिहारीलाल में वाचक धर्म लुप्तोपमा अलंकार है। इसका अर्थ होगा मर्कट (बंदर) के समान नटखट बिहारीलाल (कृष्ण)। यह कृष्ण की बाल चपलता का द्योतक है। हनुमानादि बंदरों के साहचर्य से कोई-कोई व्यक्ति इसे बंदरों के साथ घूमनेवाले बनवासी राम के अर्थ में लेंगे। हनुमान के अर्थ में भी आ सकता है। विपिन बिहारीलाल का सम्बंध कृष्ण से है। क्योंकि उन्होंने बचपन से ही अनेक लीलाएँ वन में की थीं। नीलांबर का अर्थ है नीला वस्त्र। यह बलदेव के लिए योग रूढ़ हो गया है जैसा कि पीतांबर कृष्ण के लिए। दूल्हा सिंह विचित्र नाम लगता है। १२ दिनों के दुधमुहे बच्चे का दूल्हा से क्या संबंध हो सकता है। दूल्हा का अर्थ है बर जो सिर पर मौर बाँधकर बारात के संग ब्याह करने जाता है। इस नाम में इस अर्थ की कोई संगति नहीं। वस्तुतः यह रहस्यवाद का प्रतीकात्मक शब्द है जो ईश्वर के लिए प्रयुक्त हुआ है। संत मत में आत्मा को ईश्वर की पत्नी या दुलहिन माना है और परमात्मा को उसका प्रियतम दूल्हा।

शन्नोदेवी एक महिला का नाम है जो संध्या के आचमन मंत्र के प्रथम चार अक्षरों से बना है। इसमें शम्+नः+देवी ये तीन शब्द हैं और क्रिया लुप्त है इसका अर्थ है दिव्य गुणी ईश्वर (देवी) हमको (नः) शांति (शम्) हो या दे। प्रकट रूप में यह पार्वती, लक्ष्मी आदि के सदृश किसी शक्ति (देवी) का ही नाम प्रतीत होता है। बहुत से अनभिज्ञ व्यक्ति भ्रम से इसे कोई देवी ही समझेंगे। इंद्र, विष्णु, वरुणादि वेद के शब्द पहले भी नामों के लिए प्रयुक्त होते थे। परन्तु किसी ऋचा के प्रतीक को इस प्रकार नाम के लिए अपनाना—एक निराला ही निदर्शन है।

अनेक ख्याति प्राप्त नाम रूढ़ हो जाया करते हैं। इतिहास के नामों को रूढ़ ही समझना चाहिए। ये नाम व्यक्ति-विशेष की ओर संकेत करते हैं। विक्रमादित्य, संग्रामसिंह का नाम सुनते ही उज्जयिनी के महाराज विक्रमादित्य एवं चित्तौड़ के महाराणा संग्राम सिंह की ओर ही सहसा ध्यान जाता है। ये दोनों नरेंद्र अपने गुणातिरेक के कारण इतिहास प्रसिद्ध हो गये हैं। अतः ये नाम

उनके लिए रूढ हो गये हैं। सामान्य जनता ऐसे नामों के अर्थों पर विचार नहीं करती। उसकी दृष्टि भाव पर ही विशेष रहती है। भावावेश के कारण ही इन नामों का अनुकरण हुआ है। इसी प्रकार देवता, ऋषिमुनि, साधु-संत आदि के नामों का अर्थ न लिखकर उनका इति-वृत्त ही दे दिया गया है। कुछ नामों का संबंध किसी कथा लोकवार्ता, किम्वदंती अथवा घटना से रहता है। प्रवृत्ति लिखते समय उसका उल्लेख कर दिया गया है। अन्य नामों का साधारणतया वाच्यार्थ ही लिखा गया है। किंतु उसके अभाव में आवश्यकतानुसार लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ भी दिये गये हैं। अत्यंत सरल नामों का अर्थ व्यर्थ समझकर नहीं लिखा गया है। जहाँ तक हो सका संदिग्ध नामो को स्पष्ट करने का यथाशक्ति प्रयत्न किया गया है। अनेकार्थी नामों को विभिन्न प्रवृत्तियों में रखकर समझाया गया है। जिन नामों का समास-विग्रह कई प्रकार से हो सकता है उनका अर्थ भी विग्रह के अनुसार बदल जाता है। ऐसे नाम अर्थानुसार कई प्रवृत्तियो में रखे जा सकते हैं, यथा—भालचंद्र का समास भाल का चंद्रमा षष्ठी तत्पुरुष मानने से यह नाम चंद्र प्रवृत्ति के अंतर्गत आना चाहिए। चंद्र है जिसके भाल पर अर्थात् शिव इस बहुव्रीहि समास के अनुसार शिव प्रवृत्ति में आता है। इन विशेषताओ की ओर यत्र-तत्र केवल इंगित-मात्र कर दिया है। अधिकाश में प्रचलित तथा प्रसिद्ध अर्थ ही लिखे गये हैं। नाम में शब्द-सौंदर्य तथा अर्थ गौरव के अतिरिक्त भाव का भी विशेष महत्त्व है। कोई-कोई साधक शब्दार्थ की अपेक्षा भाव पर अधिक बल देते है। सच तो यह है कि सम्पूर्ण प्रवृत्तियों का अवलम्बन भाव ही होता है। जिज्ञासुओ के लिए इनकी अभिव्यञ्जना भी प्रायः सर्वत्र ही मिलेगी। देशज तथा कुछ तद्भव नामों के अर्थ क्लिष्टसाध्य हैं। कुछ नामों की व्याख्या प्रवृत्तियो के अंतर्गत की गई है। थोड़े से दीर्घ तथा क्लिष्ट नामों को परिशिष्ट में विशद तथा विस्तृत रूप से समझाया गया है। भूमिका के उत्तरार्द्ध में यह दिखलाया गया है कि देश-काल आदि के विचार से कभी-कभी नामों में अर्थ परिवर्तन भी हो जाया करता है।

नामों में प्रवृत्तियाँ—'भिन्नरुचिर्हि लोकः' संसार में जितने व्यक्ति उतना ही अभिरुचियों में विभिन्नत्व। फलतः मनुष्य के भोजन, भजन, आचार-विचार, वस्त्राभूषण आदि समस्त जीवनचर्या में असमानता दिखलाई देती है। किसी की पूजा में आसक्ति होती है तो कोई दार्शनिकता में आस्था रखता है। कोई सामाजिक विचार का होता है तो कोई राजनीति का पोषक; कोई इतिहास-प्रेमी है तो किसी की प्रवणता किसी अन्य विषय की ओर होती है। इस प्रकार लोक में चित्त की विविध वृत्तियों की अभिव्यंजना होती रहती है। यह नानात्व इन भारतीय नामों में भी दृष्टिगोचर होता है जिसका मूल कारण मानव मनोवृत्तियाँ हैं।[१] अर्थ के विचार से प्रवृत्तियो को सरल, संयुक्त तथा संश्लिष्ट—इन तीन भेदों में विभक्त कर सकते हैं।

---

[१] भिन्न-भिन्न मनुष्य एक ही बात, वस्तु या घटना को भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से देखते हैं। उनके विचारों में, उनकी मनोवृत्तियों में कुछ न कुछ अन्तर रहता ही है। इसकी पुष्टि में बुद्ध-परिवार का दृष्टांत देना उपयुक्त होगा। बुद्ध जन्म पर मंगलोत्सव मनाया जाता है। राजा शुद्धोदन पुत्र-जन्म से अपनी सब कामना पूर्ण हो गई समझकर अपने उत्तराधिकारी का नाम सिद्धार्थ रखता है। यद्यपि बुद्ध का जन्म उसकी माता माया देवी के लिये अनिष्टकर ही हुआ, क्योंकि जातक के जन्म के एक सप्ताह भीतर ही मा की मृत्यु हो गई। उसके विपरीत राहुल के जन्म पर सिद्धार्थ सोच-विचार में पड़ गया। उसके विरक्त अंतःकरण को बड़ा आघात पहुँचा। उसने पुत्र-जन्म को अपने लिए भव-पाश, माया का बंधन एवं क्रूर राहु समझा। इसलिए उसने अपने आत्मज का नाम राहुल रखा एक ही परिवार के दो पिताओं पर अपने अपने पुत्र के जन्म का पृथक्-पृथक् प्रभाव पड़ा।

(१) जिसमें एक ही अर्थ विद्यमान हो वह सरल प्रवृत्ति है, 'रामप्रसाद' में रामपरक धार्मिक प्रवृत्ति है।

(२) जिस नाम में एक से अधिक अर्थों का योग हो वह संयुक्त प्रवृत्ति है। यथा—रामकृष्ण, गंगा विष्णु, गौरीशंकर में दो-दो प्रवृत्तियों का योग है। घूरेराम में भी अन्ध विश्वास तथा राम-परक दो प्रवृत्तियाँ सम्मिलित हैं।

(३) संश्लिष्ट प्रवृत्ति से हमारा तात्पर्य उस प्रवृत्ति से है जिसमें नाम के अनेकार्थ मूलक अनेक भाव मिश्रित हों। यह अनेकता समास विग्रह अथवा संधि-विच्छेद के कारण भी हो सकती है। हंसनाथ में ब्रह्म, ब्रह्मा, हंसावतार परक प्रवृत्तियाँ मिश्रित हैं। लोकनाथ को षष्ठी तत्पुरुष मानने से ईश्वर, शिव, विष्णु, राजा परक प्रवृत्ति हुई, किन्तु लोक है नाथ जिसका—इस प्रकार विग्रह करने से बहुव्रीहि समास से उसका अर्थ हुआ एक भिक्षुक जो उसकी दीन-हीन परिस्थिति का परिचायक है। इस प्रकार लोकनाथ में संश्लिष्ट प्रवृत्ति हुई। प्रवृत्तियों का एक अन्य सुंदर एवं मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण भावना की दृष्टि से भी हो सकता है।

प्रवृत्तियों के दो भेद—भाव-भावना की दृष्टि से दो या दो से अधिक शब्द वाले नाम के दो अंग हो सकते हैं—पहला मूल प्रवृत्तिपरक तथा दूसरा गौण प्रवृत्तिपरक। मूल प्रवृत्ति को प्रकृति और गौण प्रवृत्ति को प्रत्यय कह सकते हैं। नाम का जो अंश मुख्य विषय की ओर संकेत करता है उसको मूलप्रवृत्ति द्योतक अथवा मुख्य (मूल) शब्द कह सकते हैं। मूल प्रवृत्ति के अतिरिक्त अवशिष्ट अंश को जो नाम की पूर्ति में सहायता करता है या जो इष्टदेव के प्रति मनुष्य की अंतर्भावनाएँ, भाव एवं आसक्तियाँ प्रकट करता है गौण प्रवृत्ति द्योतक अथवा सहायक (पूरक) शब्द कह सकते हैं। कभी-कभी ऐसे सहायक शब्द जाति या सम्प्रदाय सूचक भी होते हैं। ये कई प्रकार के होते हैं। इस प्रकार के दो या दो से अधिक शब्दवाले नाम मूल तथा गौण प्रवृत्तियों के योग से बने होते हैं। एकपदी नाम मुख्य विषय के ही व्यंजक होने से मूल प्रवृत्ति की श्रेणी में ही आ जाते हैं। कभी-कभी मूल प्रवृत्ति समस्त पद से भी प्रकट होती है—उदाहरणस्वरूप परमात्मा शरण में परमात्मा समस्त पद दो शब्दो के योग से बना है और ईश्वर का वाचक होने से मूल प्रवृत्ति के अंतर्गत आता है। शरण आत्मनिवेदना-सक्ति मूलक गौण प्रवृत्ति है। नाम के आधारभूत मूल तथा गौण प्रवृत्तियाँ कई प्रकार की होती हैं। इनके अनेक भेदोपभेदों का विशद विवरण उत्तरार्द्ध में दिया गया है।

देश काल तथा धर्म के प्रभाव से कभी-कभी अर्थों में परिवर्तन होने से एक ही नाम विभिन्न प्रवृत्तियों में स्थान पा सकता है। राजा पहले उपाधिबोधक शब्द था। कालान्तर में उसमे वात्सल्य भावना प्रबल हो जाने से वह दुलार प्रवृत्ति में प्रयुक्त होने लगा और आजकल आवारा प्रकृति के व्यक्ति उसे व्यंग्य में भी व्यवहार कर लेते हैं। अरब का व्यंग्यात्मक हिन्दू नाम स्थानांतरित होकर भारत में जातीयता का बोधक बन गया। ऐसे नामों को प्रायः भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों में न रखकर उनका स्पष्टी-करण मुख्यार्थ के साथ एक ही स्थान पर कर दिया गया है। एक ही शब्द विभिन्न नामो में मूल तथा गौण दोनों प्रवृत्तियों में प्रयुक्त हो सकता है। देवदत्त और नारायण देव इन दोनों नामो की प्रवृत्तियों में पहले में देव मूल है और दूसरे में गौण। मूल से गौण में जाने से शब्द के मूल्य में भी कमी आ जाती है।

नामों में संस्कृति तथा सभ्यता—भाषा विज्ञान का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंग है किसी जाति के सांस्कृतिक इतिहास का अन्वेषण करना। इससे उसके प्रागितिहास पर प्रकाश पड़ता है। अतीत तथा वर्तमान मूर्तिमन्त हो सम्मुख खड़े हो जाते हैं। जीवन की अतीत रूढ़ियों का प्रत्यक्ष अनुभव हो जाता है। शब्दशास्त्री नामों का विन्यास कर उनमें अंतर्हित संस्कृति के अंकुरों को बाहर निकाल लेता है। नाम संस्कृति के बीजो के सदृश हैं जो यत्र-तत्र फैले हुए हैं। जिस प्रकार एक निपुण कृषक

अन्न के अच्छे-अच्छे दानों को संचय कर अपने सुव्यवस्थित क्षेत्र में बोता है तो थोड़े दिनों में एक हरा-भरा खेत उसकी आँखों के सामने लहलहाने लगता है, उसी प्रकार एक भाषा-तत्वविद् नामों का संकलन एवं वर्गीकरण कर नियमित रूप से उनका अध्ययन करता है तो उसके फलस्वरूप एक सुंदर चित्र का प्रत्यक्षीकरण होने लगता है। यही संस्कृति का उज्ज्वल रूप है, यही उस जाति का ऐतिह्य है जो शब्दो या नामो से प्राप्त हुआ है। भाषा विज्ञान का विद्यार्थी न केवल शब्दो की उत्पत्ति, उनके रूप विकास अथवा अर्थ पर ही ध्यान देता है अपितु वह इस सास्कृतिक अनुशीलन में अत्यधिक संलग्न रहना अपना परम कर्त्तव्य समझता है।

संस्कृति किसी मानव जाति की अंतःप्रज्ञा का बाह्य प्रदर्शन है जो उसके राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न अंगों में धर्म, दर्शन, साहित्य, कला एवं संस्थाओं में अभिव्यंजित होता है। संस्कृतियों का विकसित सामूहिक रूप ही सभ्यता है। किसी देश की सभ्यता का दिग्दर्शन संस्कृतियों के द्वारा ही सम्भव होता है। सामान्यतः सभ्यता का तात्पर्य मानवीय कृतियों, उनसे आविष्कृत विविध कला-कौशल, यातायात के साधन तथा उन सर्व प्रयत्नो एव चेष्टाओं से है जो जीवन को सुसम्पन्न अथच सम्पूर्ण बनाने में सहायक होते हैं।

भाषाविद् से शब्द स्वतः बोलने लगता है। वह नाम और नामी दोनों के इतिहास का परिचय देता है। यही उसका मुख्य कार्य है। 'बेअंतसिंह' रंगून में कई सौ मील की दूरी पर बैठा हुआ है और उसका नाम यहाँ पर उसका जीवन-चरित इस प्रकार सुना रहा है:—

बेअंतसिह एक पञ्जाबी सिक्ख है। (बंगाल, मद्रास तथा महाराष्ट्र में सिहों का अभाव है, काठियावाड़ के असली सिह अपने बनो को छोड़कर अन्यत्र नहीं जा सकते और हिन्दी प्रांत के सिह प्रायः घर के सिंह ही होते हैं, विदेश में बसना उनके लिए कठिन हो जाता है।) बचपन में उसने गुरुद्वारे में अमृत छका था। इससे वह सिंह कहलाया। उसके घर के लोग बहुत पढ़े-लिखे न थे। केवल थोड़ी सी उर्दू जानते थे (अधिक उर्दू जानते होते तो नाम में कठिन उर्दू शब्द प्रयोग करते और संस्कृत या हिन्दी पढ़े होते तो बेअंत के स्थान पर अनंत का प्रयोग करते)। जन्म का तो था जाट, परन्तु लड़ने-भिड़ने में उसकी अधिक रुचि न थी इसलिए वह सेना में भरती न हुआ। घर का न तो मालदार ही था कि जो वहीं कुछ व्यापार करता और न खेती-बारी ही पास थी जिसमें वह लगा रहता। पंजाबी स्वभाव से ही पुरुषार्थी होता है। उसने परदेश कमाने की ठान ली। जैसे-तैसे वह ब्रह्मा पहुँचा। वहाँ पर अब वह खाता कमाता है। यह है बेअंत सिंह का बेअंत इतिहास जो उसके नाम ने बतलाया है। इसी प्रकार के इति-वृत्त अन्य नामों से भी व्यक्त होते हैं। शशिशेखर का वाच्यार्थ है। 'शिव'। इससे यह संकेत है कि नामी का कुल शिव का उपासक है। यह संस्कृति का धार्मिक अंग है। कंगलिया नाम से उसकी आर्थिक स्थिति का पता लगता है घिनऊ उसकी अविद्या का द्योतक है। खुन्नीलाल नाम से अंधविश्वास टपकता है। परोपकारीसिह से गुणों का आभास मिलता है। शिक्षाप्रेम 'विद्या-विनोद' से व्यक्त होता है। आत्माराम का संबंध एक गहन दार्शनिक

[1] Culture is the owter expression of the inner genius of a people manifesting in the nation's outlook on life—its religion, philosophy, literature, arts and institutions.

(The Growth of Civilization by W. J. Perry M. A., D. Sc. Page 141—42 Pelican Books)

[2] Civilization broadly speaking connotes the sum-total of the activities of men, the various arts and crafts that they have invented, the means of inter-communication, and all that goes to make life richer and fuller. (Ibid)

विषय आत्मा तथा परमात्मा से है। इस प्रकार प्रायः प्रत्येक नाम में संस्कृति का कोई कोई न तत्व रहता है। ये ही तत्व मिलकर संस्कृति के विभिन्न अंगों का सृजन करते हैं। भारतीय संस्कृति अत्यंत प्राचीन है। नामों में अग्नि, सूर्य, इंद्रादि उसके सनातनत्व के बोधक हैं। नित्य नूतन नामों की अभिवृद्धि होती रहती है। अत: उसके विनाश की कभी आशंका नहीं रहती। वह इतनी लचीली है कि उसमें आवश्यकतानुसार सरलता से सामजस्य हो सकता है। इकबाल (नरायन), नूरसिंह, आदि अनेक विजातीय नामों को अपने साँचे में ढाल कर उसने अपना बना लिया है। इतना ही नहीं, खुरशेदबहादुर, आदि उर्दू शब्दों के पूरे नामों को ग्रहण कर उसने अपनी सहज ग्राह्यशक्ति तथा सहन-शीलता का परिचय दिया है। इससे इन नामों में अनेक संस्कृतियाँ घुल मिल कर एक हो गई हैं।

इस प्रकार नामों के सम्यक् अध्ययन से संस्कृति की एक मनोमोहक रूप-रेखा प्रस्तुत हो जाती है। उत्तरार्द्ध में संस्कृति के विविध अंगों पर विचार किया जायगा।

नाम करण संस्कार—नाम रखने की मनोवृत्ति मनुष्यों में प्रायः स्वाभाविक होती है। जंगली जातियों में भी नाम पाये जाते हैं। पुराणों में देवों के नाम मिलते हैं। विश्व के इतिहास में चार अश्वों के नाम भी प्रसिद्ध हैं। रुस्तम का रुख़, सिकंदर का वेसीफेलस, ऊदल का बेंदुला और प्रताप का चेतक। भिन्न भिन्न जातियों में नाम रखने की भिन्न-भिन्न प्रथाएँ हैं। देशकाल तथा धर्म का इस संस्कार पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। वैदिक कालीन भारत में अग्नि, इन्द्रादि प्राकृतिक शक्तियो पर सूक्ष्म नाम रखे जाते थे। शनैः शनैः ये शक्तियाँ देवताओं के रूप में परिणत हो गईं। तेतीस कोटि देवों की कल्पना के सूत्रपात के साथ फलित ज्योतिष का प्रभुत्व देश में छा गया जिसके फलस्वरूप नाम रखने की प्रथा में विचित्र परिवर्तन हो गया। फलित ज्योतिष के अनुसार पुत्र का जन्म-समय जिसे इष्ट काल कहते हैं—लिखा जाता है। इसी इष्ट से उसका जन्म-पत्र बनाया जाता है, क्योंकि इष्ट के द्वारा राशि, नक्षत्र, चंद्र और फलाफल सब कुछ ज्ञात हो जाता है। एक राशि में सवा दो नक्षत्र और एक नक्षत्र में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण एक विशेष अक्षर से पुकारा जाता है।* यथा-इष्ट से

---

* राशि-नक्षत्र-देवता-बोध-चक्र

चरण				नक्षत्र	देवता	चरण				नक्षत्र	देवता
१	२	३	४			१	२	३	४		
चू	चे	चो	ला	अश्विनी	अश्विनीकुमार	के	को	ह[3]	ही	पुनर्वसु	अदिति
ली	लू	ले	लो	भरणी	यम	हु	हे	हो	डा	पुष्य	वृहस्पति
आ[1]	इ	ऊ	ए	कृत्तिका	अग्नि	डी	डू	डे	डो[4]	श्लेषा	सर्प
अ	वा	वि	वु	रोहिणी	प्रजापतिब्रह्मा	म	मो	मू	मे	मघा	पितृ
वे	बो[2]	क	को	मृगशिरा	सोम	मो	टा	टी	टू	पू० फा०	भग
						टे[5]	टो	प	पी	उ० फा०	अर्यमन्
कु	घ	ङ	छ	आर्द्रा	रुद्र	यू	ष	ण	ढ	हस्त	सवितृ(सूर्य)
						पे	पो[6]	रा	री	चित्रा	त्वष्ट्रा

यह अवगत हुआ कि उस समय अश्विनी नक्षत्र का द्वितीय चरण और मेष राशि का चद्रमा था। इस चरण का अक्षर 'चे' है। यह नाम इसी अक्षर से आरम्भ होना चाहिए—चेता, चेतू, चेतराम, चैनसुख, चैना, चेला, चेतकर उसके राशि नाम हो सकते हैं। नाम के देखते ही राशि नक्षत्रादि सब ज्ञात हो जाते हैं। इसी प्रकार बुद्धू या बुद्धि प्रकाश की राशि नक्षत्रादि जानना हो तो 'बु' अक्षर रोहिणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में है जो वृष राशि के अंतर्गत है। इस प्रकार राशि के नाम निकाले जाते हैं। इसमें रुचि-वैचिभ्य को अत्यंत संकुचित स्थान रहता है, अतएव मनुष्य बहुधा इनके साथ-साथ अपनी अभिरुचि का कोई अन्य नाम भी रख लेते हैं। कुछ भी हो हिन्दुओं में राशि नाम की कल्पना अत्यंत महत्व की है। जीवन के अनेक कार्य-कलाप इस पर निर्भर रहते हैं।

ज्योतिष-सर्वसंग्रह[१] में लिखा है कि जातकर्म के ११,१२ दिन[२] उपरांत पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, मृगशिरा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद नक्षत्रों में बुधवार, चंद्रवार, रविवार, गुरुवार के दिन बालक का नाम रखना शुभ है।

चरण				नक्षत्र	देवता	चरण				नक्षत्र	देवता
रु	रे	रो	ता	स्वाति	वायु	भे[९]	भो	ज	जो	उत्तराषाढ	विश्वेदेव
ति	तू	ते[७]	तो	विशाखा	चद्राग्नि	जू	जे	ज़ो	खा	अभिजित	विधि
न	नी	नू	ने	अनुराधा	मित्र	खो	खी	खू	खे	श्रवण	विष्णु
तो	या	यी	यू[८]	ज्येष्ठा	इन्द्र	ग	गी[१०]	गू	गे	धनिष्ठा	बसु
ये	यो	भ	भी	मूल	निऋर्ति (राक्षस)	गो	शा	शि	शू	शतभिष	बरुण
भू	ध	फा	डा	पूर्वाषाढ़	अप् (जल)	से	सो	द[११]	दी	पू० भाद्रपद	अजैकपाद
						दू	थ	झ	ञ	उ० भाद्रपद	अहिर्बुध्न्य
						दे	दो	च	ची[१२]	रेवती	पूषन्

नोट :—नौ अक्षरों की एक राशि होती है। इस चक्र में राशियाँ अंको से दिखलाई है—
१—मेष २—वृष ३—मिथुन ४—कर्क ५—सिंह ६—कन्या ७—तुला ८—वृश्चिक ९—धनु १०—मकर ११—कुम्भ १२—मीन।

[१] **पुनर्वसुद्वयं हस्तत्रयं मैत्रद्वयं मृगः।**
मूलोत्तरानविष्ठास्तु द्वादशैकादशेदिने॥
अन्यत्रापि शुभे योगे वारे बुधे शशांकयोः।
भानौ गुरौ स्थिरे लग्ने बालनाम कृतं शुभम्॥
(ज्योतिष सर्व सग्रह मुहूर्त प्रकरण भाग ३ पृ० १२२)

[२] **दशम्यामुत्थाप्य पिता नाम करोति।१। (पार० १॥१७॥ १)**
'अहन्येकादशे नाम' (याज्ञवल्क्य स्मृति, १—१२)
नामधेयं दशम्यां तु द्वादश्यांवाऽस्य कारयेत्।
पुण्ये तिथौ मुहूर्ते वा नक्षत्रे वा गुणान्विते॥३०॥ (मनु० २ अ०)
संस्कार विधि नाम प्रकरण

हिन्दुओं के सोलह संस्कार प्रसिद्ध हैं जो आत्ममंदिर की सम्पन्नता के लिए किये जाते हैं। संस्कारों का सम्यक् विधान हिन्दुओं के संस्कार संबंधी ग्रंथों में वर्णन किया गया है, आर्य समाज में स्वामी दयानंद कृत संस्कार विधि प्रचलित तथा मान्य है। भिखारी दास[1] ने जाति, यदृच्छा, गुण तथा क्रिया को नाम का आधार माना है। जाति परक नामो का प्रचार केवल नाम मात्र ही पाया जाता है दुलार, व्यंग्यादि नाम यदृच्छा के अंतर्गत आ सकते हैं। आधुनिक अभिरुचि उत्तरोत्तर गुणों की ओर जा रही है। क्रियात्मक नाम दीर्घायु में ही सम्भव हो सकते हैं।

नाम-करण संस्कार किसी न किसी रूप में सब धर्मों में तथा सब जातियों में होता है। जैन तथा बौद्धों में नामकरण का कोई विशेष विधान प्रचलित नहीं है। उनमें हिन्दुओं के सदृश ही नाम रख लिये जाते हैं। सिक्ख आदि पंथो और मुसलमानों में किसी शुभ दिन अपने धर्म ग्रंथ को खोला जाता है और खुले पृष्ठ के प्रथम अक्षर पर नाम रख लिया जाता है। ईसाइयों में प्रायः बपतिस्मा के साथ ही बाइबिल के प्रथमाक्षरों पर नाम रखने की रीति है। पारसियों में अपने धर्म ग्रंथ के अनुसार राशि परक नाम रखे जाते हैं।

ए० टी० स्टील साहब तिब्बत में नाम की प्रथा का उल्लेख अपने लेख में इस प्रकार करते हैं[2]—इनके नाम बहुधा सप्ताह के दिनों पर रख लिये जाते हैं अर्थात् जो बच्चा जिस दिन जन्म लेता है उसी दिन के नाम पर उसका नाम रख लिया जाता है। मेरे साथी का नाम 'पा-संग' (शुक्र) था तथा रसोइये का नाम 'नारभू' (आभूषण)। दिनों के नाम पर नाम रखने की परिपाटी जंगली जातियों में अधिक प्रचलित है। संथाल परगना की वन्य प्रजा जाति के नाम रखने के विषय में एक डा० महाशय लिखते हैं जिसका सारांश यह है[3]—ये प्रजा लोग सोमवार को उत्पन्न बच्चे का नाम सोम तथा कन्या का सोमी रखते हैं। इतवार को एता या एती, मगल का बच्चा मंगला या मंगली अथवा अंगिरा या अंगिरी (अंगारको कुंजोभौमो), बुधवार का लड़का या लड़की बुद्धा, गुरुवार से गुरु तथा कन्या गुरी या गुरवारी। इस दिन को बृहस्पति भी कहते हैं, इससे बिहसा, शनिवार का पुत्र सोनिया और पुत्री सोनी कहलाते हैं।

नामकरण एक विश्वव्यापी विचित्र संस्कार है जो अतिशय विनोद पूर्ण, अत्यंत कौतूहल जनक एवं बहु-विवेक मूलक है। यह दिवस बहुत महत्वपूर्ण समझा जाता है जब कि एक बिना नाम के व्यक्ति के जीवन में व्यक्तित्व की छाप लग जाती है। उसके जीवन की यह अभूतपूर्व घटना है। आज से एक अज्ञात तथा अबोध बालक का अपना पृथक् अस्तित्व हो गया। यदि वह बोल सकता तो अपने नाम के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर अवश्य ही अपार आनंद प्रदर्शित करता। यह पितृ-प्रदत्त नाम उसकी अपनी अतुल सम्पत्ति है।

---

[1] जाति जदिच्छा गुन क्रिया, नाम जु चारि प्रमान।
सब की संज्ञा जाति गनि, वाचक कहैं सुजान॥
जाति नाम जदुनाथ अरु, कान्ह जदिच्छा धारि।
गुनते कहिए श्याम अरु, क्रिया नाम कंसारि॥
रूप रंग रस गंधगनि, औरहु निश्चल धर्म।
इन सब को गुन कहत हैं, गुनि राखौ यह मर्म॥
(काव्य निर्णय)

[2] "दलाई लामा के राज्य में"—लीडर १९ अप्रैल सन् १९४९ ई०

[3] "माडर्न रिव्यू"—मार्च सन् १९४४ ई०

नाम निरूपण—उत्तरार्द्ध

अनुशीलन-पद्धतियाँ

नामो का अध्ययन अनेक दृष्टियों से हो सकता है। वैयाकरण उनकी व्युत्पत्ति की ओर ध्यान देते हैं। शब्द, ध्वनि तथा अर्थ की परीक्षा भाषाविद् करते हैं, मनोवैज्ञानिकों के विचार उनकी प्रवृत्तियों पर जाते हैं; दार्शनिक उनमें आध्यात्मिक रहस्य खोजते हैं; समाजवादी उनसे जातीय संगठन की रूपरेखा पाते हैं, नीतिज्ञ उनमें नैतिक जीवन की ज्योति देखते हैं, धार्मिक भक्तजनो के लिए वे भक्ति रस के उद्गम होते हैं। तात्पर्य यह है कि जो जिस भावना से उनका परिशीलन करता है उसको वैसी ही सामग्री उनसे उपलब्ध हो जाती है। अनुशीलन को सर्वांगीण एवं महत्त्वपूर्ण बनाने के लिए मुख्य मुख्य कई शैलियो का सम्मिश्रण कर दिया गया है। निम्नलिखित पद्धतियाँ विशेष महत्त्व रखती हैं :—

(क) कोश पद्धति—इसमें शब्दो को अकारादि क्रम से रखकर उनके वाच्यार्थ दे दिये जाते हैं। शब्दों के लिंग भी उनके साथ रहते हैं। कोई-कोई कोषकार शब्द का मूल रूप अर्थात् धातु भी लिख देते हैं।

(ख) शांकर-पद्धति—शंकर ने विष्णु सहस्र नाम का भाष्य लिखने में यह पद्धति अपनाई है। इसमें विष्णु के नामों की व्युत्पत्ति देकर उनका स्पष्टीकरण किया गया है। कहीं-कहीं अपनी पुष्टि में धर्मग्रथो के वाक्य भी उद्धृत किये हैं। यत्र-तत्र शब्द-विशेष का व्याकरण भी दिया गया है।

(ग) भाषाविज्ञान पद्धति—इसमें शब्द, ध्वनि तथा अर्थ पर विचार किया जाता है। पहले समस्त नामो को तत्सम, अर्द्धतत्सम, तद्भव तथा देशज श्रेणियो में विभाजित कर उनकी रचना, विकास आदि का अध्ययन करते हैं। अर्थों के साथ-साथ उनसे उपलब्ध सांस्कृतिक तत्त्वों का भी दिग्दर्शन कराते जाते हैं।

(घ) मनोविज्ञान पद्धति—इसमें समस्त नामों को मनोवृत्तियों में विभक्त कर उनके भावनानुकूल अर्थों की मीमासा की जाती है। इस प्रकार प्राप्त नाना प्रवृत्तियों से संस्कृति के अंगों की उपलब्धि होती है।

इनके अतिरिक्त निरुक्त तथा मल्लिनाथ की पर्याय पद्धतियाँ भी प्रसिद्ध हैं। प्रथम वेदों के लिए और द्वितीय काव्यों के लिए विशेष उपयुक्त हैं।

इन पद्धतियो से यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी एक ही शैली का अनुसरण करने से अध्ययन में पूर्णता नहीं आ सकती। प्रत्येक पद्धति की अपनी-अपनी विशेषता होती है। (क) और (ख) पद्धतियाँ इस प्रकार के अध्ययन के लिए अपूर्ण ही सिद्ध होगी—(ग) पद्धति में सांस्कृतिक तत्त्व इतने विकीर्ण रहते है कि उनसे संस्कृति का समवेत रूपेण कोई सुन्दर चित्रण प्रस्तुत नहीं हो सकता। (घ) पद्धति में शब्दों की रचना, विकासादि अनेक ज्ञातव्य बातें नितांत छूट जाती हैं। इस अपूर्ण अध्ययन से कोई परिणाम न निकलता। अतएव यह उचित समझा गया कि इस अनुशीलन में विविध पद्धतियो के मिश्रित रूप से काम लिया जाय। पहले कोश-पद्धति के सदृश सब नामों को अकारादि क्रम से संकलित किया गया है। इसके पश्चात् मनोविज्ञान-पद्धति से उनका प्रवृत्तियों में वर्गीकरण हुआ है। पुनः भाषाविज्ञान के अनुसार नामों की रचना, विकासादि पर प्रकाश डाला गया है। संस्कृति के तत्त्व भी इससे प्राप्त हो जाते हैं। अर्थों में कहीं-कहीं शांकर-पद्धति का अनुकरण किया गया है। व्याकरण की विशेषता तथा वाह्य प्रभाव का परिचय भी दिया गया है। इस पद्धति-समन्वय से विषय अधिकाधिक सरल, सुबोध, उपादेय एवं रोचक हो गया है।

इस प्रकार के अनुशीलन से नामों की प्रवृत्तियों, शब्दों की रचनाओं, गणनात्मक प्रत्ययों, भाषाध्वनि के विकारों एवं अर्थों, दार्शनिक भावों, अंतर्कथाओं, घटना गर्भित प्रसंगों, बहिर्प्रभावों तथा देश अथवा जाति के तत्कालीन सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन पर विशेष प्रकाश पड़ता है।

हिन्दी नामों पर आभ्यंतर एवं वाह्य प्रभाव

आभ्यंतर प्रभाव—हिन्दू समाज में शनैः शनैः अनेक दुर्बलताओं ने घर कर लिया था। अतः उसके नामों में भी बहुत से दोष आकर बस गये थे। नामों की यह आविल धारा अनियंत्रित रूप से दलदल की ओर प्रवाहित हो रही थी। उसमें झलकती थी अविद्या, अज्ञानता तथा अशिष्टता। उसकी तलहटी में कुछ सुंदर सुचिक्कण शिलाखंड भी थे, परंतु थे नगण्य ही। इसलिए धरातल पर केवल संस्कृति का विकृत रूप ही दृष्टिगोचर होता रहा। जैन धर्म प्राचीन होते हुए भी बहुत ही परिमित क्षेत्र में प्रचार तथा प्रसार पा सका। एक कारण यह भी था कि वह भी हिन्दुओं के नामों को ही अपनाने लगा। कुछ तीर्थंकरों और कुछ जैनाचार्यों के नाम ही हिन्दी की सम्पत्ति बन सके हैं। बौद्ध-धर्म भारत से विदा हो चुका था। पाली भाषा का प्रचार भी न रहा। ऐसी अवस्था में कुछ गिनती के नामों के अतिरिक्त बौद्ध-धर्म का नामों पर कोई प्रभाव नहीं दिखलाई देता। संतों का प्रभाव निम्नस्तर के अशिक्षित मनुष्यों तक ही सीमित रहा। उनके अनुयायी अपने मतप्रवर्तक के नाम को ही सब कुछ जानकर उसे प्रायः अपनाने लगे। उनमें से कुछ गुरुओं के नाम पर भी अपने बालकों के नाम रखने लगे। विशेष प्रवृत्ति के कुछ मनुष्यों ने निर्गुण ईश्वर सम्बन्धी निराले नामों को स्वीकार कर लिया। इन नामों में प्रायः सुरुचि, ऊर्जस्विता, मोहकता, सार्थकता एवं विशुद्ध संस्कृति का अभाव प्रतीत होने लगा।

सबसे प्रबल अंतरंग कारण यह हो सकता है कि स्वामी दयानन्द की धार्मिक क्रांति ने नामकरण-संस्कार की धारा को नितांत पुरातन आदर्श की ओर मोड़ दिया। उसके फलस्वरूप दो लाभ हुए (१) जनता वैदिक नामों का अनुकरण और अनुसरण करने लगी। (२) ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव एवं स्वरूप, सच्छास्त्र तथा नैतिक गुणों पर नूतन नाम रखे जाने लगे। देववाणी के इन नामों में है शब्द-सौंदर्य, ध्वनि माधुर्य, अर्थ-गौरव एवं भावोत्कर्ष। दार्शनिकता का समावेश रहने से अभिधानों में रमणीयता एवं सजीवता व्यंजित होने लगी। आधुनिक बंग समाज ने भी संस्कृत गर्भित नामों को प्रविष्ट कर तथा इंद्रादि शब्दों का पुट देकर उन्हें ललित, रोचक एवं स्फूर्तिमय बना दिया है। ऐसे परिमार्जित तथा परिष्कृत नाम आजकल अधिक प्रिय हो रहे हैं।

हिन्दी नामों पर बाह्य प्रभाव—हिन्दी नामों पर बाह्य अथवा विजातीय प्रभाव भी नगण्य ही समझना चाहिए, भारतवर्ष में क्रमशः दो बहिर्संस्कृतियों ने अपना प्रभुत्व जमाया था। प्रथम मुसलिम संस्कृति थी जिसमें अरबी, ईरानी तथा तुर्की संस्कृतियों का सम्मिश्रण था। सहस्र वर्ष के दीर्घकाल में भी इसने शासित जाति के नामों पर कोई उल्लेखनीय चिह्न नहीं छोड़ा। कारण यह कि इसने देश में बसकर भी यहाँ की संस्कृति एवं सभ्यता से अनुराग उत्पन्न नहीं किया।

मुसलिम प्रभाव—इस ओर अकबर आदि मुगल सम्राटों ने कुछ प्रयत्न अवश्य किया, किन्तु मुसलिम जनता के असहयोग के कारण वे अधिक कृतकार्य न हुए। मुसलमानों की भाषा, वेश-भूषा, आचार-विचार एवं प्रथाएँ हिन्दुओं से नितांत भिन्न थीं। अतएव इन दोनों की संस्कृतियों में समन्वय सर्वथा असम्भव था। यही कारण है कि कुछ मुगल बादशाहों के नामों के अतिरिक्त अन्य मुसलिम नाम हिन्दुओं की नामावली में नहीं पाये जाते। अन्ध-विश्वास के कारण कुछ मुसलमान पीर-फकीरों तथा उनकी समाधि से सम्बन्धित नाम यत्र-तत्र अवश्य दिखलाई दे जाते हैं। इकबाल, इज्जत, उलफत, खुशी, खूब, खुशवख्त, हुरमत आदि शब्दों से बने हुए कुछ नाम उर्दू-पोषित परिवारों में

पाये जाते हैं। पद तथा पदवी सूचक दीवान, मुंशी, दरोगा, मुसद्दी आदि कुछ नाम भी मुसलिम सभ्यता के अवशिष्ट चिह्न स्वरूप मिलते हैं।

अँगरेजी प्रभाव—मुसलमानी राज्य के अधःपतन के पश्चात् अँगरेजों का देश में आधिपत्य स्थापित हो गया। उन्होंने न तो विजित जाति से अपना सम्पर्क ही बढ़ाया और न यहाँ पर बसने का प्रयत्न ही किया। विजेता एवं विजित में कोई सादृश्य न था। भाषा भिन्न, वेश-भूषा भिन्न। यूरुप की भौतिकवाद प्रधान-संस्कृति यहाँ की आध्यात्मिक संस्कृति से मेल न खा सकी। अँगरेजी भाषा का प्रचार करने पर भी उनकी प्रगति मंद रही। न तो उन्होंने भारतीय नाम अपनाये और न हिन्दुओं ने उनके। इसका कारण यही प्रतीत होता है कि उभय संस्कृतियाँ विभिन्न थीं। कलक्टर, इंस्पेक्टर आदि कुछ पद-सूचक नाम अवश्य पाये जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकांश हिन्दू तथा अँगरेजों का घनिष्ट मेल-जोल न था। इसलिए अपरिचित भाषा के नाम उनके लिए कुछ आकर्षक न बन सके। दूसरी बात यह भी हो सकती है कि अँगरेज अधिकारियों के प्रायः पिग (सूअर), फाक्स (लोमड़ी), वाइल्ड (जंगली) आदि नाम वर्तनी बदलने पर भी उन्हें विशेष रुचिकर न हुए। हाँ जिन परिवारों का अँगरेजों से घनिष्ट संबंध रहा उनके घरो में पापा (पिता), बेबी (बच्चा), डारलिङ्ग (प्रिय), रूबी (लाल), लिली (कुई) आदि दुलार के नाम कभी-कभी अब भी सुनाई पड़ जाते है। ईसाइयों में आजकल नाम की एक अद्भुत परिपाटी चल पड़ी है। अँगरेजी नामो में हिन्दी गौण प्रवृत्तियाँ (विशेषतः जाति सूचक) लगाना आरम्भ कर दिया है। इसके परिणाम-स्वरूप, एलन सिंह आदि मिश्रित नाम सुनाई पड़ते हैं। ऐसे नामो को हमने दो कारणो से यहाँ स्थान नहीं दिया है—(१) इनका मूल अथवा आधार हिन्दी नहीं, प्रत्युत विदेशी है। (२) ये हिन्दुओं के नाम नहीं हैं।

ईरानी या पारसी प्रभाव—अग्निपूजक पारसी धार्मिक विप्लव के कारण ईरान छोड़कर भारतवर्ष के पश्चिमी-तट पर आकर बस गये। वे व्यवसायी मात्र थे। उनका व्यापार वाणिज्य अंताराष्ट्रीय रूप में होता रहा। देश के अन्तर्भाग से उनका कोई विशेष सम्पर्क तथा संसर्ग न हो सका। इसलिए उनके नामो का प्रभाव भी हिन्दी नामों पर नहीं के तुल्य ही दिखलाई देता है। बहराम, सुहराब, रुस्तम, खुरशेद, मेहर, आसमान आदि नाम अँगुलियों पर ही गिने जा सकते हैं। विजय का फरिश्ता बहराम के नाम पर इनका बीसवाँ दिन प्रसिद्ध है। अंतिम तीन देवताओं का संबंध क्रमशः ग्यारहवें, सोलहवें और सत्ताइसवें दिन से बतलाया जाता है।

अन्य प्रभाव—पुर्तगाली, डच और फ्रांसीसियों का संबंध इस देश के कुछ अहिन्दी भूभाग से ही रहा है। इसलिए हिन्दी नामों पर उनके प्रभाव का कोई चिह्न नहीं पाया जाता। अँगरेजी, फिरंगी आदि दो-चार नाम अवश्य इन भाषाओं द्वारा हिन्दी में व्यवहृत हुए हैं।

भाषा और व्याकरण

भाषा तथा व्याकरण की दृष्टि से भी प्रस्तुत नामों पर विचार कर लेना अप्रासंगिक तथा अनुचित न होगा। इस नाम संग्रह का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत होने से इसमें अनेक भाषाओं, उपभाषाओं, विभाषाओं एवं बोलियों का समावेश पाया जाता है। संस्कृत, हिंदी, प्राकृत, अपभ्रंश, अरबी, फारसी, अँगरेजी, व्रज, अवधी, कनौजी, बुन्देलखंडी, बघेलखंडी, भोजपुरी, राजस्थानी, मारवाड़ी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, बंगाली, बिहारी आदि अनेक देशी एवं विदेशी भाषाओं के शब्द इन नामों के आधार है। इनमें प्रायः हिन्दी व्याकरण के नियम ही व्यवहृत हुए हैं। बहुसंख्यक नाम संज्ञाओं से ही बने हैं। ये व्यक्ति वाचक नाम बहुधा पदार्थों, भावों या गुणों और व्यक्तियों के नामों से बनाये गये हैं। झांझन लाल में जाति वाचक, शांतिस्वरूप में भाव वाचक और रामकृष्ण में व्यक्ति वाचक संज्ञाएँ हैं। विशेषण तथा विशेष्य के योग से बने हुए नाम भी पर्याप्त हैं। श्रीमन्नारायण सविशेषण नाम है 'तुही राम' स्वयंभू सर्वनाम के उदाहरण हैं। क्रिया के रूप भी "मिलो नारायण"

तथा 'भजामिशंकर' में पाये जाते हैं। 'नमोनारायण और सदा बिहारीलाल' नामों में नमो और सदा अव्यय हैं। हो राम तथा हरे कृष्ण में हो और हरे विस्मयादि-बोधक अव्यय हैं। मिलो नारायण यह एक वाक्य है परंतु आज मिलो नारायण घर पर नहीं है। इस वाक्य में मिलो नारायण संज्ञा शब्द है क्योंकि वह एक मनुष्य का नाम है। शब्द की भाँति ही उसके रूप सब कारकों और वचनों में चल सकते हैं।

पुरुषो के नाम कृदतों से और स्त्रियों के तद्धितों से बनाने का आदेश रहा है। इसलिए इन दोनों प्रत्ययों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है। काश्यप अपत्य वाचक है। अवतार सिंह, उपदेश नारायण, प्रमोद कुमार, अभिनन्दन आदि अनेक नामों में बहुत से उपसर्ग मिलते हैं। घूरे रूढ़, नीलावर योग रूढ़ और रणवीर यौगिक शब्द हैं। पुरुषों के सब नाम पुल्लिङ्ग ही होते हैं और स्त्रियो के स्त्रीलिंग। लाघव-प्रयत्न के कारण अवशिष्ट अंश स्त्रीलिंग होते हुए भी पुंल्लिग ही माना जायगा क्योकि वह पुरुष का नाम है। शारदा प्रसाद का सूक्ष्म शारदा पुल्लिङ्ग है। इसी प्रकार गौरी, लक्ष्मी, देवी आदि सूक्ष्म नाम पुरुषो के नाम होने से पुल्लिंग ही कहलायेंगे। यद्यपि वे स्त्रियों के नाम हैं। लिंग-भ्रम के कारण चमेलासिंह और मोता दो अनोखे नाम बन गये हैं। पहला नाम वस्तुतः चमेली सिंह था। परन्तु सूक्ष्म नाम करने से चमेली भ्रम से स्त्रीलिंग समझा जाने लगा। इसलिए थैली का पुंल्लिग थैला के मिथ्या सादृश्य से चमेली से चमेला बना लिया गया है। नामी ने यह न सोचा कि चमेली का कही पुल्लिग भी होता है या चमेला का क्या अर्थ है। यह स्त्रीलिंग से पुलिंग बनाने का उपहासजनक प्रयत्न हुआ। पूर्व में हाथी, दही के सदृश मोती को भी स्त्रीलिंग बोलते हैं। ईका-रांत होने से भी उसके स्त्रीलिग होने का भ्रम हो जाता है। इसलिए मोती का पुल्लिंग मोता बना लिया। पंजाबी भी बीबी का पुल्लिग बीबा बोलते हैं। बीबासिंह नाम इसी भ्रममूलक आधार पर बनाया गया है। स्त्रियों के नाम होने से रामश्री तथा राजश्री स्त्रीलिंग होंगे। परन्तु श्री नाथ, श्री प्रकाश, श्री पति आदि नामों का प्रथम अवशिष्ट पद श्री पुंल्लिग ही माना जायगा क्योकि वहाँ श्री पुरुषों का द्योतक है।

सब नाम एक वचन ही होते हैं चाहे उनके नाम में कितनी ही संज्ञाएँ हों। हरिहर में दो नाम हरि-हर है। परन्तु समस्त पद होने से एक बचन ही होगा। इसी प्रकार गोपीकृष्ण, शिवशंकर, नर नारायण आदि नाम एक वचन ही हैं। बड़े से बड़ा नाम भी एक ही बचन होगा क्योंकि वह एक ही व्यक्ति का नाम है। त्रिमूर्ति तीनों देवों का व्यजक है ऐसे नाम भी एक वचन ही माने जाते हैं। एक नाम के चाहे कितने ही व्यक्ति हो वह नाम एक वचन ही रहेगा। परन्तु यदि एक नाम के कई व्यक्ति सामूहिक रूप से किसी कार्य में संलग्न हो तो उस दशा में वह नाम बहुवचन के रूप में होगा। यदि कहा जाय कि आज सब नारायणों की टोली संगम जायगी। यहाँ नारायण बहुवचन है। गंगा तीन हैं—आकाश गंगा, पाताल गंगा और भू गंगा। यहाँ गंगा भी बहुबचन है। स्वर, विसर्ग तथा व्यंजन तीनों प्रकार की संधियाँ नामों में पाई जाती हैं। यशोविमलानंद के संधि विच्छेद यशः + विमल + आनन्द में विसर्ग तथा स्वर संधियाँ हैं। शरच्चन्द्र में शरत् + चंद्र व्यंजन संधि है। न, म, ल के महाप्राण रूप न्ह, म्ह, ल्ह भी नन्हू, ब्रह्मा तथा आल्हा में पाये जाते हैं। अकार का अवग्रह रूप सोऽहं के मध्य में बैठा हुआ अवग्रह डाल रहा है। सन्धि में भी विच्छेद।

नामों में प्रायः समस्त प्रमुख समासों का प्रयोग हुआ है। माताप्रसाद तत्पुरुष, महासिंह तथा रामरतन कर्मधारय, चंद्रमौलि बहुव्रीहि रामगोपाल द्वंद्व, त्रिभुवन द्विगु और दलेसिंह अलुक समास हैं। अनेक नाम उर्दू समास के ढंग से भी बनाये गये हैं, यथा—इकबाल शंकर (शंकर का इकबाल)। ग्राम-भाषा के कुछ ऐसे शब्द भी पाये जाते हैं जिनका अर्थ समझना असम्भव सा प्रतीत होता है। कुछ विद्वान् इनकी गणना ग्राम्य दोषों में करेंगे। किन्तु जो हमारे लिए अपरिचित है—आगंतुक हैं वह उनके

घर की वस्तु है। तत्सम, तद्भव तथा देशज तीनो रूपों का प्रयोग नामो में मिलता है। कुछ नामों ने ऐसा चोला बदल दिया है कि उनका पहचानना अत्यंत कष्टसाध्य है। ऐसे नाम बहुरूपियों के सदृश हैं। आगाओं के देश में पहुँचकर खाँ लोगो के संसर्ग से हमारे कृष्ण कान्ह होकर 'खान' बन गये। प्रच्छन्न रूप के कारण धोकल व्यंग के रंग में रंग गये। इसी प्रकार सिंह पूर्वाभिमुखी हो विहार में अँगरेजी प्रभाव से 'सिनहा' तथा पश्चिमाभिमुखी हो राजस्थान तथा गुजरात में 'सी' हो गया है। गुजरात के नरसी (नृसिंह) भगत प्रसिद्ध हैं। इस प्रकार के रहस्य पूर्ण नाम भाषा की एक अनुपम देन है।

साहित्य-सौंदर्य

(१) शब्द शक्ति—नाम माला साहित्य का दर्पण है। काव्य के अनेक अंगो का आनन्द उसमें झलकता रहता है। उस आनंदरस का अनुभव कराना ही इस अनुच्छेद का उद्देश्य है। शब्द की तीन शक्तियाँ मानी जाती है—अभिधा, लक्षणा तथा व्यजना। नाम भी शब्दों से बनता है। अतः इसका अर्थ करने में भी इन शक्तियों का प्रयोग किया जाता है। एक ही नाम में शक्ति-त्रय का समावेश बहुत ही कम पाया जाता है। अभिधा शक्ति से जो अर्थ जाना जाता है उसे मुख्यार्थ या वाच्यार्थ कहते हैं। यह अर्थ कोश में दिये हुए शब्दार्थ पर निर्भर रहता है। सुन्दरलाल का वाच्यार्थ होगा रूपवान पुत्र। अभिधार्थ के सहस्रो उदाहरण इस अध्ययन में पाये जाते हैं। लक्षणा के कई उदाहरण पूर्वार्द्ध के नामों का अर्थ वाले अनुच्छेद में दिये गये हैं। जिस प्रकार लाल पगड़ी से पुलिस का सिपाही ही लक्षित होता है उसी प्रकार मोरमुकुट का लक्ष्यार्थ है कृष्ण। व्यंग्यार्थ के उदाहरण में राम और राजा नाम अन्यत्र दिये हैं। जब किसी कुरूप पुरुष के लिए कहा जाय आप तो सचमुच मदन मोहन ही हैं। आपके आगे कामदेव भी लज्जित हो जायगा। यहाँ मदनमोहन का विपरीतार्थ ही व्यंजित होगा। इसी प्रकार सज्जन, सूरदास आदि अनेक नाम व्यंग्यार्थ में प्रयुक्त हो सकते हैं। अहोरूपमहोध्वनि' में लोमड़ी की व्यजना न समझने के कारण ही काले कौए को अपने मुँह की रोटी के टुकड़े से भी वंचित होना पड़ा था।

(२) रस—मनोभावों को उद्वेलित करने के लिए अनेक रसों की निष्पत्ति इन नामों से उपलब्ध होती है। शृंगार, वीर तथा शांत रस के नाम स्पष्ट रूपेण सम्मिलित हैं। हास्य का हास (हासानंद), करुणा का शोक (खेदू), भयानक का भय (भयदेव) और अद्भुत का आश्चर्य स्थायी भाव उपस्थित हैं। रसराज का स्थायी भाव प्रेम अपने अनेक रूपों में मिलता है। इसके अतिरिक्त अन्य नामों से भी रसो की सिद्धि हो जाती है। व्यंग्यों में हास्यरस का प्रचुर पुट रहता है। फुटबाल सिंह या बिल्हड़ नाम सुनते ही किसकी बत्तीसी दिखलाई न देगी।[१] वीभत्स रस की पूर्ति अंधविश्वास

---

[१] इस संबंध में प्रयाग के अहियापुर मुहल्ले का एक मनोरंजक दृश्य उल्लेखनीय है—जब-जब मियां अजबउल्लू अपनी लम्बी दाढ़ी हिलाते हुए अहियापुर की गलियों में होकर निकल जाते बच्चे तालियाँ पीटते और आनन्द से उछलते हुए पीछे पीछे चिल्लाते चलते-अजब-उल्लू किधर चले? अजब उल्लू किधर चले? यह तमाशा देख पथिक स्वय तो रुक जाते, परन्तु उनकी हंसी न रुकती। स्त्रियां ऊपर से झांक-झांक मन ही मन मुसकराती, नवयुवक हहहा कर अट्टहास करने लगते, बुड्ढे द्वार पर खड़े-खड़े अपने पोपले मुंह से खोखली हँसी हँसते। मियाँ अजब उल्लू भी अपनी लम्बी दाढ़ी को हिलाते हुए खुश-खुश चले जाते। मन में आया तो कुछ जवाब दे दिया। उसे सुन कोई तो हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाता, कोई खिल खिलाने लगता। चारों ओर हँसी ही हँसी। उस समय ऐसा प्रतीत होता मानो छै प्रकार का हास्य उस पतली गली में बह रहा है।

के अनेक नामों से हो जाती है। यदि हृदय में जुगुप्सोदय न हो तो बिचारे "कूड़े मल"[१] का क्या दोष! वात्सल्य रस का सा मीठा घूँट लाड़-प्यार के नामों से ले सकते हैं। मिट्ठू, मुन्ना आदि नामो में वात्सल्य रस की सी ही मिठास है। उज्ज्वल रस अर्थात् भक्ति रस का तो यहाँ सागर ही उमड़ रहा है। अधिकांश धार्मिक प्रवृत्ति इसी रस से आप्लावित है।

(३) **गुण**—रस के उपरांत तीन प्रकार के गुण—ओज, माधुर्य तथा प्रसाद भी साहित्य के आवश्यक अग है। ओज में टवर्ग, संयुक्ताक्षर तथा दीर्घ समास रहते हैं यथा—टुंडा, ढोडई, पब्बर, एडविड-भू। माधुर्य में कोमलकांत वर्णावली का प्रयोग होता है। यथा—नंद-नंदन, ललित मोहन, सुंदरी कांत। जिसका अर्थ सुनते ही समझ में आ जाय उसे प्रसाद गुण कहते हैं यथा—सीताराम। निम्नलिखित अभिधान विवर्ज्य अधिकाश नाम इसी प्रसाद गुण के अंतर्गत आते हैं।

(अ) विकृत नाम—टीकमजी, धौकलसिंह, खानचंद। (आ) क्लिष्ट तत्सम नाम—पुण्यश्लोक, एडविड-भू। (इ) स्थानिक ठेठ नाम—झरिहग, चौहरजा प्रसाद। (ई) कथापेक्षित अथवा घटना-मूलक नाम—जयहिन्द, पटवर्धन, गोकर्ण नाथ, कोकिला। (उ) अप्रयुक्त तथा अप्रचलित शब्दान्वित नाम—कोलाहल, गोला। (ऊ) अन्धविश्वास मूलक, दुलार संबंधी तथा व्यंग्यात्मक कुछ नाम—छीतरिया, पटे, टीमल। (ए) कुछ अटपटे तुकबंदी के नाम विश्नानन्द (कृष्णानन्द की तुक), किसम्बर (बिसम्बर का अनु०), सन्हैया (कन्हैया की मिथ्या प्रतीति)। अभिधानों का यह त्रिगुणात्मक संग्रह विविध रसों एवं अलंकारों का आधार है।

(४) **अलंकार**—जिस प्रकार अलंकार काव्य की शोभा-वृद्धि करते हैं उसी प्रकार वे नामो को भी विभूषित करते हैं। मुख्य-मुख्य अलंकार उदाहरण सहित नीचे दिये जाते हैं:—

अनुप्रास—चारुचंद्र, ललिता लाल, सिद्धि सदन शरण, भुजंग भूषण, लल्लूलाल। रजनी रंजन

यमक—राम राम (रमण करनेवाला राम), नन्दनंदन, धरनीधर।

पुनरुक्तवदाभास—पवित्र पावन (पावन = विष्णु)।

पुनरुक्ति प्रकाश—भजु राम राम, जय-जय राम (राम तथा जय की आवृत्ति से नाम में सौंदर्य आ गया है।)

वीप्सा—कृष्ण कन्हैया, शिवशंकर, राघव राम (एक ही अर्थवाले भिन्न शब्दों की आवृत्ति से आराधक की प्रगाढ़ भक्ति प्रकट होती है।)

श्लेष—कुमार (कृष्ण, कार्तिकेय, बालक, आदि अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है।) जीवन चन्द्र में 'जीवन' जल तथा जीवन का द्योतक है। जैसे चन्द्रोदय से समुद्र में ज्वार-भाटा उठते हैं वैसे ही पुत्र-दर्शन से माता-पिता के हृदय में आनन्द की उमंगें उठती हैं।

वक्रोक्ति—(अंध-विश्वास अथवा व्यंग्य से इस प्रकार के नाम रखे जाते हैं। पशुपति (शिव का अर्थ न लेकर श्लेष से सिंह का अर्थ लिया जाने पर यह अलंकार होता है)।

भाषा समक—गुलशन विहारी लाल, एलवर्ट कृष्ण अली।

अर्थालंकार—उपमा—राम कुबेर। (राम की उपमा धन के स्वामी कुबेर से दी गई हैं जिसमें राम उपमेय, कुबेर उपमान, धर्म तथा वाचक (धनी, सदृश) लुप्त हैं।

रूपक—कृष्ण चन्द्र, शिवगोविन्द। इसमें उपमेय तथा उपमान में कोई अन्तर नहीं रहता है। कृष्ण ही चन्द्र हैं।

---

[१] एक दिन कोई व्यक्ति स्वामी दयानंद से मिलने आया। स्वामीजी के पूछने पर उसने अपना नाम कूड़ेमल बतलाया। स्वामीदयानंद ने हँसते हुए कहा—कूड़े में क्या कमी थी जो मल और लाद लिया।

रूपकातिशयोक्ति—रूपचन्द्र। केवल उपमानों द्वारा रूप का वर्णन किया जाता है।

अत्युक्ति—(भिखारी का नाम) भूपाल।

परिकर—धनुर्धर राम। इसमें साभिप्राय विशेषण द्वारा प्रस्तुत विषय का वर्णन किया जाता है।

परिकरांकुर—हरक। इसमें विशेष्य साभिप्राय होता है। संहार करने से शिव का नाम हरक पड़ा।

व्याजस्तुति—निठुरराम। निठुर शब्द से यहाँ राम की निंदा प्रतीत होती है किन्तु यह वस्तुतः उनकी मर्यादा का व्यञ्जक है।

विरोधाभास—भानु चन्द्र। यहाँ भानु तथा चन्द्र में विरोध सा प्रतीत होता है। वास्तव में चन्द्र श्रेष्ठत्व का बोधक है।

विषम—घूरे राम। इसमें विभिन्न पदार्थों का अनुचित सम्बन्ध दिखलाया जाता है। घूरे घृणित तथा गर्हित और राम प्रिय, इन दोना का सम्बन्ध अनुचित है।

असंगति—(अंधविश्वास में अधिकांश नाम इसके उदाहरण हैं) कलुआ (गोरा)—जहाँ कार्य एवं कारण का स्वाभाविक सम्बन्ध से उलटा वर्णन हो। यहाँ पर कलुआ गौरवर्ण को कहा गया है। यही असंगति है। दुर्जन (सज्जन), मोहन (मोहन=मोह नही, मोहने वाला)।

मुद्रा—सोबरन सिंह, छप्पन लाल। मुख्य अर्थ के अतिरिक्त इन नामों में सुवर्ण मुद्रा तथा छप्पन (५६) की ओर भी संकेत पाया जाता है।

निरुक्ति—मोह न राख्यौ मातु मैं 'मोहन' नाम-प्रभाव।
कहा चली अपनी अली! अब समुझी यह भाव॥[1]

देहरी-दीपक—गोपाल चन्द्र नाथ। इस नाम में चन्द्र दोनों ओर काम दे रहा है। गोपाल चन्द्र कृष्ण तथा चन्द्र नाथ शिव के अर्थ में हैं।

(५) **छंद**—आदि काल से ही भारतवर्ष काव्य-प्रधान देश रहा है। इसके साहित्य में पद्य का प्राबल्य मिलता है। कविता तंरगिणी संतत प्रवाहित होती रहती है। इसमें उसे जन्म-जात सिद्धि है। अतः पिङ्गल शास्त्र का स्मरण दिलाना भी अनुचित न होगा। प्रत्येक नाम स्वच्छन्द है—मुक्तक है। प्रस्तार भेद से अनेक नाम छंदों के किसी न किसी चरण के अंश ही सिद्ध होंगे।

शब्द भाषा तथा साहित्य में सम्बन्ध स्थापित करते हैं। भाषा-विचारों तथा भावों को व्यक्त करने का साधन है तो साहित्य उनको संचित एवं सुरक्षित रखता है। कोमलकांत पदावली भाषा को ललित तथा मधुर बना देती है जिससे साहित्य में सुन्दरता, सरसता एवं भावुकता आ जाती है। ऐसी भाषा के नामों में भी ये गुण अपरिहार्य रूप से आ जाते हैं। इनमें से बहुत से नामों में ध्वनि, रस, गति आदि अनेक बातें पिंगल शास्त्र की पाई जाती हैं। वस्तुतः अनेक नाम छदों के अंश से ही प्रतीत होते हैं, नहीं तो उनसे छंद बनाना संभव न होता। नामों से रचे गये चार अतिप्रसिद्ध छंदों का एक एक चरण नीचे दिया जाता है:—

चौपाई—राम लखन बलदेव कन्हैया।

दोहा—जंग बहादुर जानकी जगन जवाहर लाल।

कवित्त—केशरी किशोर, इंद्र, चन्द्रभाल, भगवन्त,
प्रबल प्रताप सिंह, कन्त लाल, राम जी।

सवैया—राम प्रताप, हरी, मन मोहन, सोहन, रोहन, नन्द दुलारे।

---

[1] भारती-भूषण पृष्ठ ३६०, छंद ४

उपर्युक्त पंक्तियों में स्वर, लय, गति, यति आदि के पद्य सम्बन्धी सभी नियम मिलते हैं। धृष्टद्युम्न, एडविड-भू आदि कुछ नाम ऐसे अवश्य हैं जिनका प्रत्येक अक्षर जीभ को ठुकराता हुआ निकलता है। इनको कड़खा छंद या शिवतांडव स्तोत्र के खण्ड सा समझ लेना चाहिए। मनुष्यों के नामों में छंद-अलंकार के नाम ढूँढ़ना भारी भूल होगी। वे न तो जनता में प्रसिद्ध ही हैं और न नाम रखने के उपयुक्त तथा अनुकूल ही होते हैं। नामों से जिस प्रकार विविध अलंकार प्राप्त होते हैं उसी प्रकार अनेक छंदो के अवयव भी मिल सकते हैं। प्रयास करने पर सम्भव है छंदों के कुछ नाम भी मिल सकें। परन्तु वे नाम छंदो पर नहीं रखे गये हैं। यह समानता संयोग का ही फल है।

(६) **काम कला**—महाकाव्यों के सदृश अनेक चमत्कारपूर्ण चित्र भी इन नामों में विद्यमान हैं जिनकी ओर केवल संकेत ही किया जा सकता है। पंचवर्णात्मक नाम लल्लू लाल केवल एक ही व्यंजन लकार पर लटका हुआ है। अनुलोम-प्रतिलोम नन्दनन्दन, रमाकुमार, नवीन, करता (तारक) ऊदा (दाऊ) आदि नामों में झलक रहे हैं। एक वर्गीय नाम दातादीन केवल तवर्ग के ही अश्रित है। चरण-शरण अमात्रिक नाम है। निरोष्ठ्य का उदाहरण नथुनीनारायण में मिलता है। कोवरनशाह (रंगों का राजा कौन ?—कृष्णवर्ण अर्थात् श्याम रंग) में अतर्लापिका प्रहेलिका है। चंदन(चंद-न, चन्दन अर्थात् चंद्रमा नहीं, चंदन है), नंदन (नंद-न, नंदन अथात् नन्द बाबा नहीं, कृष्ण) आदि में खुशरों की "कहमुकरी" का सा आनन्द है तो बलरमेंद्रकांत (रमेंद्र-राम, बलराम के कांत कृष्ण) में सूरदास के "दृष्टिकूट" की सी अर्थ-ग्रन्थि लगी हुई है। सुयोधन, धर्मराज तथा सूरदास मंगलभाषित के उदाहरण हैं।

यह साहित्य विमर्श का निदर्शन मात्र है। इस प्रकार के अध्ययन के लिए प्रचुर स्थान तथा दीर्घ काल अपेक्षित होते हैं, किन्तु यहाँ दोनों का अभाव है। इसके अतिरिक्त यह विषय प्रस्तुत प्रसंग से परे भी है। सम्भव है इस प्रकार का अनुशीलन कुछ सज्जनों को कौतूहल जनक एवं विस्मयकारी प्रतीत होता हो, किन्तु ज्ञानपूर्ण होने से यह हेय एवं त्याज्य नही है और रोचकता से शून्य भी नहीं है। नाम में मानव हृदय की पूर्ण अभिव्यक्ति रहती है। माता-पिता के लिए वात्सल्य रस का स्रोत है, दम्पती के माधुर्य रस का मूल है, आत्मीय बन्धु वर्ग एवं मित्रों के आनन्द का हेतु है, श्रद्धालुओं के लिए भक्ति का भाजन है। एक नाम अनेक रूपो में अध्यन्तरित हो जाता है। उल्लेखालङ्कार का कैसा सुन्दर दृष्टान्त है। स्मरण का स्मरण तो प्रतिक्षण होता रहता है। इस प्रकार साहित्य समीक्षा की कसौटी पर कसने से भी अभिधानों का स्वरूप अतिशय समुज्ज्वल, भव्य तथा मनोमोहक ही रहता है।

विकास के सिद्धांत

यह पहले बतलाया गया है कि आगम, लोप, विपर्यय और विकार—ये चार प्रकार के परिवर्तन प्रयत्न-लाघव के कारण भाषा में होते रहते हैं। यह शाब्दी विकासवाद भाषा विज्ञान के कुछ ध्वनि नियमों पर ही अवलंबित रहता है। कभी-कभी एक ही तत्सम नाम विभिन्न स्थानों, विभिन्न समयों, विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न रूप धारण कर लेता है। कृष्ण को खान तक पहुँचते-पहुँचते अनेक नियम-चक्रों को पार करना पड़ा है। इन विकृतियों के मूल में उच्चारण की सुगमता ही अपना कार्य कर रही है। प्रस्तुत नामों में विकास के निम्नलिखित सिद्धान्त विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

(१) स्वर भक्ति—दो संयुक्ताक्षरों के मध्य उच्चारण की सुगमता के लिए एक स्वर का प्रयोग कर देते हैं—यथा—कर्ण > करन, इंद्र > इंदर, पूर्ण > पूरन, मिश्री > मिसरी, स्नेही > सनेही आदि।

(२) संस्कृत का आदि 'य' प्राकृतों में (मागधी विवर्ज्य) ज हो जाता है—यमुना > जमुना यशोदा > जसोदा, यदु > जदु, यशवंत > जसवंत।

(३) स और थ संयुक्त होने पर विकसित शब्द में स का लोप हो जाता है—स्थान > थान, स्थविर > थविर।

(४) क्ष के स्थान में च्छ, छ, ष और ख, भिन्न-भिन्न बोलियों से आये प्रतीत होते हैं—लक्ष्मण>लच्छमन, लछिमन, लषन>लखन; अक्षयवट>अच्छैवर-अछैवर, अखैबर; लक्ष्मी लच्छिमी-लखमी; क्षेत्रपाल, खेतपाल; क्षत्रपति>छत्रपति आदि।

(५) ऋ के उच्चारण में कुछ कठिनाई प्रतीत होती है इसलिए उसका स्थान 'रि' ले लेती है—ऋक्षपाल>रिच्छपाल; ऋषभ>रिषभ आदि।

(६) समीकरण के कारण दो प्रकार के परिवर्तन पाये जाते हैं।

(क) पुरोगामी—मस्तिष्क जब पहली ध्वनि पर केन्द्रित हो जाता है तो आगे की भिन्न ध्वनि भी पहला ही रूप धारण कर लेती है—पद्म>पद्द, कृष्ण>किस्सू, युग्म>जुग्गी।

(ख) पश्चगामी मस्तिष्क पहली ध्वनि पर आते ही आगे बढ़ जाता है। इसमें पूर्ववर्ती ध्वनि परवर्तीध्वनि के समान हो जाती है। अनुसूया में असूया>उसूया, सरनाम>सन्नाम, मुरली>मुल्ली। समीकरण सान्निध्य की दो भिन्न-भिन्न ध्वनियाँ प्रयत्न लाघव से सम हो जाती हैं।

(७) विषमीकरण—इसमें समीकरण के विपरीत ध्वनि-परिवर्तन होता है अर्थात् पार्श्ववर्ती दो समध्वनियाँ विषम कर ली जाती है। मुकुट>मउड>मौर

(८) आगम—उच्चारण की सुविधा के लिए किसी अक्षर का आगम हो जाता है—हरि> हरिया, लोपी>अलोपी।

(९) लोप—इसमें ध्वनिया अक्षर लोप हो जाते हैं। विष्णु+आनन्द>विश्नानंद, नरसिंह> नरसी, पार्श्व>पारस। घरेलू संक्षित नामो में यह प्रवृत्ति विशेष रूप से दिखलाई देती है।

(१०) वर्ण विपर्यय या विनिमय—इसमें वर्णों या ध्वनियों का स्थान परिवर्तन हो जाता है। पश्यक>कश्यप, तपंजलि>पतंजलि, हिंस>सिंह।

(११) बलाघात और भावातिरेक के कारण भी नामों में विकार हो जाया करता है। बलाघात के समय किसी अक्षर पर प्राण शक्ति विशेष व्यय हो जाने से समीपस्थ अक्षर दुर्बल हो जाते हैं और कोई-कोई उनमें बहुधा लोप भी हो जाता है। बलाघात के ही कारण नाम का अंतिम लघुवर्ण प्रायः गुरु कर लिया जाता है इससे उच्चारण में सुविधा हो जाती है—भजन भजना, हरि हरी, परम>परमा। पूर्व का कलवा और पश्चिम का कलुआ भी बलाघात के ही उदाहरण हैं। दीर्घ करने की यह प्रवृत्ति ग्रामों में तथा अशिक्षितो में अधिक प्रचलित दिखलाई देती है। स्वराघात से वाह गुरु (धूर्त) के अर्थ का कैसा अनर्थ हो जाता है। भावातिरेक से भी ध्वनियो में परिवर्तन हो जाते हैं—बच्चा> बचुल्ली, हीरा>हिरिया मन्ना>मनिया, मिट्ठू>मिठुआ, शुक>सुआ>सुअना, फुल्ला>फुल्लू, श्याम>साँवलिया आदि अनेक उदाहरण प्रेमातिरेक के हैं। यह प्रवृत्ति दुलार के नामो में अधिक व्यापक है। क्रोध के कारण भी ऐसे परिवर्तन हो जाते हैं—रामचन्द्र>रमचन्दा, नल>नलवा, शंकर>शंकरिया, बलवंत>बलवंताआदि।

(१२) सुगमता के लिए पूरे नाम के स्थान पर कुछ अक्षरों अथवा प्रथम पद से ही काम चला लेते हैं—कालीचरण>काली[1] महेशप्रसाद>महेश, हरि नारायण>हरू हनुमान>हनू, कृष्ण बहादुर>कृष्णा, शिवशंकर सिह>सिंह।

(१३) र, ड और ल प्रायः परस्पर परिवर्तित हो जाया करते हैं। इस प्रकार की छूट का अनुमोदन व्याकरण भी करता है।[2] दुलार>दुलाल, तुलसी>तुरसी, इंदर>इंदल, जडभरत> जलभरत।

---

[1] **नामैकदेश ग्रहणे नाममात्र ग्रहणम्।**

[2] **रलयोरभेदः, डलयोरभेदः।**

(१४) कभी-कभी तालव्य श का दंत्य स और दंत्य स का तालव्य रूप पाया जाता है—गणेश>गनेस, प्रसाद>परशाद। मूर्धन्य ष का ख या क हो जाता है—भीष्म>भीखम, भीखम>भीकम।

(१५) नामों का अंत्य व मुख सुख के कारण ओ हो जाता है—माधव>माधो, राघव>राघो, केशव>केसो, भैरव>भैरो।

(१६) सुविधा के लिए ण भी न में परिवर्तित हो जाता है—गणपति>गनपति, प्रवीण>प्रवीन।

(१७) अंतःस्थ व और पवर्गीय अभिन्न रूपों से प्रयुक्त होते रहते हैं—वसुदेव—बसुदेव, विहारी—बिहारी, बल—वल। व्याकरण भी इस भेद को उपेक्षा की दृष्टि से देखता है।[1] यही कारण है कि वशिष्ट—वसिष्ठ, बाल्मीकि—वाल्मीकि, वटुक—बटुक आदि अनेक नामों के दोनों रूप कोशों में पाये जाते हैं।

(१८) अग्रागम—किसी शब्द के उच्चारण में जब असुविधा प्रतीत होती है तो कोई स्वर उसके पूर्व आ जाता है—लोपी>अलोपी।

(१९) उभय सम्मिश्रण—उच्चारण के समय मिलते-जुलते दो भावनावाले शब्द एक साथ ही मस्तिष्क में उठते हैं तो उन दोनों के मेल से एक तीसरा नया शब्द बन जाता है—सहता+मँहगा—सँहगा, सँहगू, सासुरा—मायका (मैकू)>सैकू। सहता का 'स' और महँगा का "हँगा" मिश्रित होकर सँहगू बन गया।

(२०) पृषोदर के सदृश कुछ स्वतंत्र परिवर्तन भी हो जाया करते हैं—केशी+बध>केशव।

इनके अतिरिक्त अन्य वर्ण-विकार भी होते हैं जिनका उल्लेख यथास्थान कर दिया गया है। ध्वनि विकास के नियम कहीं अधिक व्यापक हैं, कहीं कम। विकसित रूपों का प्रयोग दुलार, व्यंग्य तथा अंधविश्वास प्रवृत्तियों में विशेषतः मिलता है। नामों का अध्ययन करते हुए उन प्रवृत्तियों में उन पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

अर्थ-परिवर्तन

ध्वनियों के सदृश शब्दों के अर्थ में भी परिवर्तन या विकास होते रहते हैं। जो शब्द पहले किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होता था कालांतर में वह सामान्य अर्थ में व्यवहृत होने लगा और जो शब्द पहले सामान्य अर्थ का द्योतक था वह अब विशेष अर्थ में सीमित हो गया। कभी-कभी कोई शब्द अपने पहले अर्थ को सर्वथा त्यागकर किसी भिन्न अर्थ का बोधक हो जाता है। भाषा-विज्ञान में ये तीन प्रकार के अर्थ-विकास बतलाये गये हैं।

(१) अर्थ-विस्तार—इसका यह तात्पर्य है कि कोई शब्द-विशिष्ट अपने विशेषअर्थ के अतिरिक्त अन्य अर्थों का बोधक भी हो जाता है यथा—नारायण पहले निराकार ईश्वर के लिए प्रयुक्त हुआ। पौराणिक काल में यह विष्णु का वाचक बन गया। तदनन्तर भक्तिके कारण इसका उपयोग अन्य देवताओं के नाम के साथ होने लगा किन्तु आजकल यह प्रभुत्व-सूचक शब्द सा बन गया है। महाराज शब्द केवल राजाओं का ही द्योतक नहीं अपितु ब्राह्मण, रसोइया तथा स्टेशनों पर पानी पिलानेवालों के लिए भी व्यवहृत होने लगा। सिंह शब्द हिंसक के अर्थ से विस्तृत होते-होते बनपशु, श्रेष्ठत्व, शूरवीरता, क्षत्रियत्व, प्रभुत्व, सिंह, राशि, नृसिंह अवतारादि अर्थों में व्यापक हो गया और 'घर के सिंह' का अर्थ यदि वनराज समझ पाता तो मन में अत्यन्त लज्जित होता। इसी प्रकार भैया शब्द न केवल भाई के लिए ही अपितु संस्कृत के तात शब्द के सदृश भाई, पुत्र, मित्र, परिचितापरिचित आदि किसी भी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होने

---

[1] वकारो बकारो भेदो नास्ति।

लगा है और अब यह स्नेह एवं आत्मीयता का व्यंजक बन गया है। राजा और गुरु शब्द अशिष्ट समुदाय में व्यंग्य रूप को भी पहुँच गये हैं।

(२) अर्थ संकोच में अर्थ अपने व्यापक रूप को त्याग एक सीमित रूप धारण कर लेता है। पीताम्बर का अर्थ पहले पीला वस्त्र धारण करनेवाला रहा होगा। किन्तु अब यह कृष्ण के संकुचित अर्थ में ग्रहण किया जाता है। इसी प्रकार वनमाली, भारतेंदु, विद्यासागर आदि नाम संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होने लगे।

(३) अर्थादेश में एक शब्द अपने वास्तविक अर्थ के स्थान में कोई अन्य अर्थ प्रकट करता है—अर्थ-विकार प्रायः देश-काल, भौगोलिक-सामाजिक तथा अन्य परिस्थितियों, भ्रम तथा अज्ञान, भावातिरेक, प्रेमातिशय्य, शिष्टाचार, मंगलभाषित, आलंकारिक एवं औपचारिक प्रयोगादि के कारण होता है। व्यंग्य, दुलार, उपाधि, आभूषण तथा अंधविश्वास प्रवृत्तियों में इसके अधिकांश उदाहरण मिलेंगे। सूरदास अंधे के अर्थ में प्रयोग होने लगा। विचारा अघोरी घृणित अर्थ का वाचक बन गया। यमराज के अर्थ में धर्मराज अर्थादेश ही है। स्नेहातिशय्य के कारण ही दुर्जनसिंह, घूरे नाम रखे गये। असली अर्थों से इनका कोई सम्बन्ध न रहा। अर्थ-विकार एवं ध्वनिविकार मनोविज्ञान के आश्रित रहते हैं क्योकि दोनों प्रकार के परिवर्तनों का मूल हेतु मन ही होता है।

मूल प्रवृत्तियों के भेदोपभेद

इस वृहत् नाम माला के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से निम्नलिखित मुख्य प्रवृत्तियाँ प्राप्त होती हैं :—१—धार्मिक प्रवृत्ति २—दार्शनिक प्रवृत्ति, ३—राजनीतिक प्रवृत्ति, ४—सामाजिक प्रवृत्ति और ५—अभिव्यंजनात्मक प्रवृत्ति। १—धार्मिक प्रवृत्ति से तात्पर्य उस मनोवृत्ति से है जो मनुष्य को अभ्युदय एवं निःश्रेयस की ओर ले जाती है। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी इष्टदेव का भक्त होता है, महात्माओ में श्रद्धा रखता है, धर्म-ग्रंथ का पाठ करता है, व्रत रखता है और अपने सम्प्रदाय की अनेक परम्परागत रूढ़ियो को मानता है। उसका तीर्थों में अटल विश्वास होता है। धर्मानुराग उसके नामो में भी परिलक्षित होता है। पूजा-पाठ, व्रतोपचार, यज्ञयाग दि मानव-जीवन की दिनचर्या के अंग बन गये हैं। इसके अंतर्गत निम्नलिखित विषय सम्मिलित हैं :—

(क) ईश्वर—निर्गुण तथा निराकार ब्रह्म के अनन्त गुण, अनन्त व्यापार एवं अनंत नाम माने गये हैं वह सच्चिदानन्द-स्वरूप है। ईश्वर वस्तुतः सर्व सद्गुणोपेत एक दिव्य शक्ति है, उसकी सर्वज्ञता, सर्वव्यापकता एवं सर्वशक्तिमत्ता से प्रभावित हो न केवल मनुष्य ही अपितु देवता भी उसकी महत्ता स्वीकार करते हैं। उसके आश्रय में शान्ति है, आनंद है, मुक्ति है और है स्वर्ग-सुख। उस परमानन्द की प्राप्ति के लिए भक्ति भावना की प्रवृत्ति के मनुष्य आनन्द के मूलोद्गम परमात्मा की मानसी परापूजा में तल्लीन रहते हैं।

(ख) देववर्ग—इस शीर्षक के अंतर्गत आते हैं। (१) त्रिदेव (२), लोकपाल (३) त्रिदेव वंश, (४) विष्णु के दशावतार (५), इतर देव देवियाँ, (६) राम-कृष्णसम्बन्धी देवयोनियाँ, (७) नदियाँ, (८) तीर्थंकर। देवों को शक्ति का अक्षय भंडार माना गया है। उनकी प्रसन्नता से अभीष्ट की सिद्धि होती है। उनके वरदान से मनोवांछित फल मिलता है, उनके क्रोध में अभिशाप एवं मृत्यु का आवाहन समझा जाता है। इसलिए मनुष्य उन्हें नाना उपायों के द्वारा संतुष्ट करना चाहते हैं। किसी की त्रिदेवों में आस्था है, तो कोई पंच देवों का पुजारी है। श्रद्धालु भक्तों में विष्णु, शिव, पार्वती, गणेश, सूर्य, राम-कृष्णादि देवों की मूर्तियाँ भी अत्यधिक पूजी जाती हैं। उनकी अर्चना के अनेक विधान—नाना उपचार प्रचलित हैं। देव विविध आकृतियाँ-प्रकृतियों के माने गये हैं। संकट पड़ने पर भक्तों की सहायता करते हैं। देवाराधना का बड़ा माहात्म्य बतलाया गया है। उनकी महिमा स्तवन के लिए अनेक स्तोत्रो की रचना की गई है।

प्रायः प्रत्येक परिवार का एक इष्टदेव अथवा कुलदेव होता है जिसकी उस परिवार के व्यक्ति प्रार्थना, स्तुति तथा उपासना करते हैं, संकट में उससे रक्षा की आशा रखते हैं। आवश्यकता पूर्ति के लिए उससे याचना करते हैं, निष्काम आराधना तो विरले ही कर सकते हैं, सर्वसाधारण तो उनको प्रायः निज स्वार्थ सिद्धि के साधन ही समझता है। भागवत[1] में यह बतलाया गया है कि अमुकदेव की पूजा से अमुक फल मिलता है। निष्काम और सकाम पूजन दोनों ही भक्त के लिए आवश्यक हो जाते हैं। वह अपने बालको के नाम, अपने इष्टदेव के रूप, गुण, लीला, धामादि पर रखता है।

यह स्मरण रखना चाहिए कि देवों से सम्बन्धित सब नाम उनके प्रति केवल श्रद्धा भक्ति के कारण ही नही रखे जाते हैं। कभी-कभी उन देवों का सम्बन्ध जातक की जन्म-लग्न के नक्षत्र, राशि, ग्रह, दिन, पर्व, तिथि, आदि से होने के कारण भी ऐसे नाम रख लिये जाते हैं। उस दशा में भी ऐसे नाम पड़ जाते हैं जब दोनों का सम्बंध किसी एक ही स्थान, जलाशय या जयंतो से ही। विशेषतः निम्न कोटि के अप्रसिद्ध देवों के नाम तो कदाचित् इसी लिये अपना लिये जाते हैं। राग रागिनियों के भी देवता माने गये हैं।

(१) **त्रिदेव**—महत्व के विचार से ईश्वर के पश्चात् ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन तीनों देवो के नाम आते हैं। ब्रह्मा सृष्टिकर्ता, विष्णु पालक तथा शिव संहारक माने जाते हैं। अद्वैतवादियो ने उनको ईश्वर का सगुण एवं साकार रूप माना है। किन्तु अपने निराकार-निर्गुण रूप में वे साक्षात् ईश्वर ही माने जाते हैं। अपरिमेय शक्तिशाली होने से उनकी प्रभविष्णुता अतुलनीय है। संकट के समय देवों की भी सहायता करते हैं। प्रसन्न होने पर अपने भक्तो को वरदान देते हैं। तीनों देवों की सरस्वती, लक्ष्मी तथा पार्वती तीन शक्तियाँ हैं जो आदि शक्ति महामाया के ही रूपान्तर हैं। शिव के दो पुत्र स्वामिकार्तिकेय तथा गणेश अत्यंत प्रभावशाली हैं।

(२) **लोकपाल**—दश दिशाओं के दश रक्षक दिक्पाल या लोकपाल कहलाते हैं, उनकी

---

[1] देवाराधना-फल सिद्धि

किस-किस देवता की आराधना से क्या-क्या फल मिलता है। यह नीचे की तालिका से स्पष्ट हो जायगा।

देव	फल	देव	फल
ब्रह्मा	ब्रह्म तेज, संसार-शासन	विष्णु	यश, धर्म
रुद्र	पराक्रम	शंकर	विद्या
दुर्गा	सम्पत्ति	पार्वती	पति-पत्नी-प्रेम
इंद्र	इंद्रियों की श्रेष्ठता	दक्षादि प्रजापति	संतान
अग्नि	तेज	वसु	धन
देवमाता अदिति	अन्नादि	अदिति-पुत्र	स्वर्ग
विश्वेदेवा	राज्य	अश्विनीकुमार	आयुष्य वृद्धि
पृथ्वी	पुष्टि	स्वर्ग-पृथ्वी	प्रतिष्ठा
गंधर्व	सौंदर्य	उर्वसी	रूपवती स्त्री
वरुण	कोष वृद्धि	पितर	वंश वृद्धि
यक्ष	बाधाओं से संरक्षण	मरुत्	बल
चंद्रमा	विषय कामना पूर्ति	परमेश्वर	वैराग्य
परम पुरुष	मुक्ति, सर्वार्थसिद्धि		

[श्रीमद् भागवत महापुराण से संकलित]

उत्पत्ति ब्रह्मा के अंगो से बतलाई जाती है। उनकी संख्या तथा नामो में कहीं-कहीं मतभेद पाया जाता है। नैऋ्र्त्य कोण के नैऋ्र्त के स्थान पर सूर्य लिया गया है क्योंकि नैऋ्र्त न तो प्रसिद्ध ही है और न उसके नाम पर कोई नाम मिलता है। ईशान कोण के शिव के स्थान में चन्द्र का नाम रख लिया गया है क्योंकि शिव त्रिदेव में आ चुके हैं। ब्रह्मा का नाम भी त्रिदेव में आ गया है, इसलिए यहाँ तत्संबंधी नामों का पुनरुल्लेख करना भी अपेक्षित न रहा।

(३) **विष्णु के अवतार**—विष्णु के चौबीस अवतारो में से मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, रामकृष्ण, बुद्ध और कल्कि प्रसिद्ध है।[1] इन दशावतारों में भी राम और कृष्ण विशेष महत्त्व के हैं। कुछ नाम हंस तथा हयग्रीव अवतारो पर भी पाये जाते हैं, किन्तु ये दोनो लोक में प्रसिद्ध नहीं हैं। इसलिए इनसे सम्बन्धित नाम विष्णु तथा अन्य प्रवृतियो में सम्मिलित कर दिये गये हैं। अवतार किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही होते हैं।[2] गीता में कृष्ण ने कहा है कि जब-जब धर्म का लोप होने लगेगा तब-तब मै गौ की रक्षा करने, विप्रों का संकट हरने तथा पृथ्वी का उद्धार करने के लिए संसार में अवतार लूँगा।[3]

अवतार पाँच प्रकार के बतलाये गये हैं (य) अर्चा (भगवान् की चलाचल मूर्तियाँ), (र) विभव (मत्स्य-कूर्मादि अंशावतार), (ल) व्यूह (रामादि भ्रातृचतुष्टय अथवा कृष्ण, बलदेव, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध), (व) पर (रामकृष्ण पूर्णावतार), (श) अंतर्यामी (निराकार ईश्वर)।

राम-कृष्ण—इन दोनों की विष्णु के पूर्णावतारो में गणना की जाती है। निराकार रूप में साक्षात् ईश्वर, सुराकार रूप में विष्णु तथा नराकार रूप में अवतार मानकर भक्त जन इनकी पूजा करते हैं। अपने दिव्य रूप लावण्य, लोक संग्रही गुणों एवं अलौकिक लीलाओं के कारण ये अत्यन्त

तिथि देवता

(१) ब्रह्मन्, (२) त्वष्ट्र, (३) विष्णु, (४) यम, (५) सोम, (६) कुमार, (७) मुनि, (८) वसु (९) शिव, (१०) धर्म, (११) रुद्र, (१२) वायु, (१३) काम, (१४) अनन्त, (१५) विश्वेदेव, (१६) पितर।

वाचस्पत्य अभिधान के अनुसार तिथि देवता :—वह्नि, रवि, विश्वेदेवा, सलिलाधिप, वषट्कार, वासवः ऋषि, अजएकपात्, यम, वायु, उमा, पितर, कुवेर, पशुपति और प्रजापति।

[1] मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नरसिंहोऽथवामनः।
रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्कीः चते दश॥

—वराह पुराण अध्याय ४

[2] वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते
दैत्यान् दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः॥
(गीत गोविन्द काव्य, सर्ग १, श्लोक १२)

[3] यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥ ७ श्लो
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥ श्लो ८
(श्रीमद्भगवद् गीता अध्याय ४)

ही लोकप्रिय बन गये हैं। अपने पावन- चरितों से लोककल्याण करते हैं। निर्गुणी संतों तथा महात्मा गांधी ने राम को निराकार ईश्वर के अर्थ में ही स्वीकार किया है।[1] भागवत में लिखा है—कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्।

बुद्ध—बौद्धधर्म के प्रवर्तक भगवान बुद्ध की गणना विष्णु के अवतारों में की जाती है। उन्होंने अपना समस्त जीवन अहिंसा, तप तथा त्याग के उपदेश में बिताया।

'बुद्धंशरणं गच्छामि' बौद्ध भिक्षुओं का अमूल्य वचन है।

(४) **अन्य देव-देवियाँ**—इन देवताओं के नामों से संबंध चार प्रकार से हो सकता है (अ) दिनों से—यथा—शुकरु, बृहस्पति, मंगलसेन, शनि लाल (आ) गुणों से गंधर्वसेन (गाने में प्रवीण) (इ) किसी मंदिर या मूर्ति के स्थानीय प्रभाव से (ई) मनौती के कारण।

(५) **राम कृष्ण सम्बन्धी व्यक्ति**—राम की पत्नी सीता लक्ष्मी का अवतार और लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न राम के भाई विष्णु के आंशिक अवतार माने जाते हैं।[2]

बलराम प्रद्युम्न अनिरुद्ध व्यूहावतारों में गिने जाते हैं। वसुदेव और देवकी पूर्वजन्म के पृश्नि तथा सुतपा प्रजापति थे। नन्द और यशोदा पूर्व जन्म के द्रोण और धरा (उनकी भार्या) वसु माने जाते हैं।[3] गोप गोपियाँ स्वर्ग की अन्य देवयोनियाँ हैं जो इस लोक में भगवान् कृष्ण की लीलाओं को अवलोकन करने के लिए अवतरित हुई हैं। राधा आदि-शक्ति है।

हनुमान—पंच देवों के सदृश पवन के अवतार हनुमान की पूजा भी देश में सर्वत्र ही प्रचलित है। अतिमानवता के कार्य करने के कारण महावीर का जनता में बड़ा मान है। नित्य ही सहस्रों भक्त 'को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो' की दुहाई देते हैं।

(६) **नदियाँ**—प्रत्येक नदी का संबंध किसी न किसी देवता से रहता है। साधारणतः महादेव से सब नदियों का संबंध बतलाया जाता है। नदियों में गंगा अपनी दिव्य उत्पत्ति और अपने तट के तीर्थों के कारण पतित-पावनी मानी जाती है। कृष्ण के सम्पर्क से यमुना, रामसंसर्ग से सरयू और महेश के प्रभाव से नर्वदा का महत्त्व है। अन्य नदियाँ भी अपनी स्थानिक विशेषता रखती हैं।

---

[1] मेरा राम, हमारी प्रार्थना के समय का राम, वह ऐतिहासिक राम नहीं है जो दशरथ का पुत्र और अयोध्या का राजा था। यह तो सनातन, अजन्मा राम है। और अद्वितीय भी है। मैं उसकी पूजा करता हूँ, उसी की मदद चाहता हूँ। आपको भी यही करना चाहिए। (हरिजन सेवक ५-५-४६ ई०)

[2] जो आनंद सिंधु सुख रासी। सीकर ते त्रैलोक सुपासी॥
सो सुख धाम राम अस नामा। अखिल लोकदायक बिश्रामा॥
बिश्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई॥
जाके सुमिरन ते रिपु नासा। नाम शत्रुहन बेद प्रकासा॥
लच्छन-धाम राम प्रिय, सकल जगत-आधार,
गुरु वसिष्ठ तेहि राखा, लछिमन नाम उदार॥ १९७

राम चरित मानस बाल कांड

बसिष्ठ राम भरतादि चारों भाइयों के देवत्व की ओर संकेत करते हुए कैसे सार्थक तथा सुन्दर नाम रखते हैं।

[3] पृश्नि सती सुतपा सु प्रजापति दंपति श्रीपति तें बर पाइ कै।
देवकी औ वसुदेव भये तिनके मथुरा प्रगटे प्रभु आइ कै॥
त्यौं बर दै बसु द्रौण धराहिं भए सुत नंद जसोमति माइ कै।
दासी ह्वै मुक्ति रही ब्रज मैं रही गोकुल तें गऊ-लोक लजाइ कै॥

नदियों पर नाम मान्यता के कारण रखे जाते हैं। स्त्रियाँ उन पर जाकर पुत्र जन्म या उसकी दीर्घायु के लिये मनौती मनाती हैं। उनके तट पर मुंडन कराती हैं, पार या मेंढ बँधाती हैं आदि अनेक क्रियाएँ वत्सकामा-स्त्रियाँ उनको प्रसन्न करने के लिए करती हैं। कभी-कभी उनके तीर पर जन्म होने से भी तत्सम्बंधी नाम पड़ जाता है।

गंगा—त्रिदेवों से संबंध होने के कारण गंगा पंचदेवों के सदृश ही लोकप्रिय है। उसके नामोच्चारण, दर्शन तथा स्नान से भक्त अपने पापों, अभितापों एवं अभिशापों से मुक्त हो मोक्ष के अधिकारी बन जाते हैं। उसके पुण्य पुलिन पर चिरनिवास करने में साधक अपना अहोभाग्य समझते हैं।[1] "भागीरथी हम दोष भरे पै भरोस यही कि परोस तिहारो।"

(७) तीर्थंकर—जैनियो के २४ महापुरुष प्रत्येक कल्प-काल में जन्म लेते हैं। वे धर्म तीर्थ की स्थापना करने से तीर्थंकर, परम पूज्य होने से अर्हत, षड्रिपुओं को जीतने से जिन या जिनेन्द्र, निपरिग्रही तथा निरस्संग होने से निर्ग्रंथ और अत्यंत समभावी एव संयमशील होने से श्रमण कहलाते हैं। इन्हीं नामो के कारण उनके धर्म को क्रमशः तीर्थक, आर्हत, जैन, निर्ग्रंथ और श्रमण नाम से पुकारते हैं। ये जैनियों के देवता माने जाते हैं। २४ गत उत्सर्पिणी और २४ वर्तमान अवसर्पिणी के तीर्थंकर माने गये हैं। निम्नलिखित विशेषताएँ प्रायः सब तीर्थंकरो में सामान्य रूप से समान पाई जाती हैं।

(१) तीर्थंकर के गर्भ में आने से पहले उसकी माता को १६ शुभ स्पप्न दिखाई देते हैं।

(२) तीर्थंकरों के गर्भावतरण, जन्माभिषेक, जिनदीक्षा, केवल-ज्ञान-प्राप्ति और निर्वाण-प्राप्ति यह महाकल्याणोत्सव मनाये जाते हैं। जिनमें इन्द्रादिक देव भी सम्मिलित होते हैं। इन पंच महा-कल्याणक रूप पूजा के कारण तीर्थंकर को अर्हत भी कहते हैं।

(३) वे मति, श्रुति, अवधि ज्ञान तथा दस अतिशयो सहित जन्म लेते हैं।

(४) उनको तप और संयम के प्रभाव से मनः पर्यज्ञान प्राप्त होता है। उस समय तप कल्याण (जिनदीक्षा) मनाया जाता है।

(५) तदनंतर उनको केवल-ज्ञान की प्राप्ति होती है और वे सर्वत्र विहार कर उपदेश देते हैं जिसके सुनने के लिए पशु-पक्षी तक उनकी समवशरण (सभा) में उपस्थित होते हैं।

(६) निर्वाण प्राप्त हो जाने पर उनका शरीर कर्पूरवत् हो जाता है। केवल नख-केश रह जाते हैं। तब इन्द्रादि चार प्रकार के देव आकर उन नख-केशों को लेकर मायामयी शरीर की रचना करते हैं। फिर अग्निकुमार देवों के मुकुट की अग्नि से निर्वाण संस्कार करते हैं।

तीर्थंकर अनंत दर्शन, अनंत ज्ञान, अनंत सुख और अनंत वीर्यवान् साक्षात् भगवान् या ईश्वर होते हैं। जन्म से ही उनका शरीर अपूर्व कांतिमान् होता है। उनके निःश्वास में अपूर्व सुगंधि रहती है। उनके शरीर का रक्त और मांस श्वेत होता है। उनके संसार में आते ही देश में सर्वत्र शांति छा जाती है। कैवल्य-लाभ करने के पश्चात् वे अपना शेष जीवन संसार के प्राणियों का उद्धार करने में ही व्यतीत करते हैं। इसी से जैनों के परम पवित्र पंच नमस्कार मंत्र में अर्हतों को प्रथम स्थान दिया गया है। णमो अरिहंताणं—अर्हतों को नमस्कार है।

---

[1] **विचत्तां निःशकंनिरवधि समाधिविधिरहो।**
सुखं शेषे शेतां हरिरविरतं नृत्यतु हरः॥
कृतं प्रायश्चित्तैरलमथ तपोदानयजनैः।
सवित्री कामानां यदिजगति जागर्ति भवती॥

(जगन्नाथ कृत गंगा लहरी श्लोक २३)

तीर्थंकर परिचायक सारिणी

क्रम	नाम	माता-पिता का नाम	जन्म स्थान	जन्म तिथि	आयु	शरीर की ऊँचाई	वर्ण	निर्वाण स्थान तथा तिथि	चिह्न
१	ऋषभदेव (आदि-नाथ)	मरुदेवी-नाभिराय	अयोध्या	चैत वदी ९	८४ लाख पूर्व	५०० धनुष	सुवर्ण	कैलाश, माघ सुदी १४	वृषभ
२	अजित नाथ	विजयसेना जितशत्रु	अयोध्या	माघ सुदी १०	७२ लाख पूर्व	४५० धनुष	सुवर्ण	सम्मेद शिखर सिद्धवर कूट चैतसुदी ५	गज
३	अभिनंदन	सिद्धार्था-संवर	अयोध्या	माघ सुदी १२	५० लाख पूर्व	३५० धनुष	सुवर्ण	सम्मेद शिखर वैशाख सुदी ६(उ) आनन्दकूट वै० सुदी ५	कपि
४	सुमतिनाथ	मंगला-मेघरथ	अयोध्या	चैत सुदी ११ (उ) श्रावण ११ (ह)	४० लाख पूर्व	३०० धनुष	सुवर्ण	सम्मेद शिखर अविचल कूट चैत सुदी ११ चैत सुदी १०	चातक
५	सुपार्श्व-नाथ	पृथ्वी सेना-सुप्रतिष्ठित	काशी	जेठ सुदी १२	२० लाख पूर्व	२०० धनुष	प्रियंगु वृक्ष के समान नीले	सम्मेद शिखर प्रभासकूट फागुन बदी ७ (उ) फा० बदी ६ (ह)	स्वस्तिक
६	शीतल नाथ	सुनन्दा-दृढ़रथ	भद्रपुर	माघ वदी १२	१ लाख पूर्व	९० धनुष	सुवर्ण (ह)	सम्मेद शिखर विद्युद्वर कूट आश्विन सुदी १३ एवं आ० सुदी ५ (ह)	कल्पवृक्ष
७	श्रेयांश नाथ	नदाविष्णु	सिंहपुर	फाल्गुन-वदी ११	८४ लाख पूर्व	८० धनुष	सुवर्ण	सम्मेद शिखर संकल कूट श्रावण सुदी १५	गेंडा
८	विमलनाथ	जैश्यामा-कृत वर्मा	कम्पिला	माघ सुदी १	६० लाख वर्ष	६० धनुष	सुवर्ण	सम्मेद शिखर सुवीर कूट अषाढ़ वदी ८	वाराह
९	अनन्त-नाथ	सुरजा-सिंह सेन	अयोध्या	जेठ वदी १२	३० लाख वर्ष	५० धनुष	सुवर्ण	सम्मेद शिखर स्वयं प्रभ-कूट चैत वदी १५	सेही
१०	धर्म नाथ	सुव्रता-सुप्रभाभानु	रतनपुर	माघ सुदी १३	१० लाख वर्ष	४५ धनुष	सुवर्ण	सम्मेद शिखर सुदत्त वर-कूट जेठ सुदी ४	वज्र
११	शांतिनाथ	ऐरादेवी-विश्वसेन	हस्तिना-पुर	जेठ वदी १४	१ लाख वर्ष	१८० हाथ	सुवर्ण	सम्मेद शिखर प्रभास कूट जेठ वदी १४	मृग
१२	नेमिनाथ	शिवादेवी-समुद्र-विजय	द्वारावती या सूर्य-पुर	श्रावण-वदी ६ (उ) वैशाख सुदी १३	१ हजार वर्ष	धनुष ४० हाथ १०	नीलकंठ समान श्याम	गिरिनार अषाढ़ सुदी ७ (उ) अषाढ़ सुदी ६ (ह)	शंख
१३	पार्श्वनाथ	वामादेवी-अश्वसेन	काशी	पौष वदी ११	१०० वर्ष	९ हाथ	मेघ के समान नीले	सम्मेद शिखर सुवर्ण भद्र श्रावण सुदी ७	सर्प
१४	महावीर	प्रिय कारिणी त्रिशला-सिद्धार्थ	कुंडल-पुर	चैत सुदी १३	७२ वर्ष	७ हाथ	सुवर्ण	पावापुरी पद्म सरोवर तट कार्तिक वदी १४	सिंह

(६) महात्मा (अ) ऋषि-मुनि—इस वर्ग में अनेक धर्मात्माओं के नाम आये हैं जिनमें कुछ पौराणिक कालीन महात्मा हैं और कुछ महाभारत तथा रामायण के समय के महापुरुष हैं। थोड़े से वैदिक युग के ऋषि-मुनियों के नाम भी सम्मिलित हैं। इन पुण्यात्माओं के पवित्र जीवन, लोक हितैषिता एवं त्याग-तपस्या ने मानव हृदय में उनके प्रति श्रद्धा, प्रेम तथा भक्ति की प्रबल धारा प्रवाहित कर दी है। इसी कृतज्ञता प्रकाशन के लिए—उनकी स्मृति को चिरस्थायी रखने के लिए ये नाम रखे गये हैं। कभी-कभी ऋषि पंचमी आदि पर्व के दिन उत्पन्न होने से या पुत्र कामना से उस दिन व्रत रखने अथवा मनौती मानने से भी इस प्रकार के नाम पड़ सकते हैं।

(आ) मत-प्रवर्त्तक—पौराणिक काल में निर्गुण तथा निराकार एक ईश्वर के स्थान में अनेक सगुण तथा साकार देवो की पूजा आरम्भ हो गई। फलतः नाना पंथ इस उर्वरा भारतभूमि पर प्रादुर्भूत, पल्लवित एवं परिवर्द्धित हुए। इन सम्प्रदायों के तीन मुख्य वर्ग यहाँ प्रत्यक्ष हो रहे हैं।

(१) वैदिक वर्ग में आर्यसमाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानंद तथा ब्रह्म समाज के जन्मदाता राजा राममोहन राय मुख्य हैं। इनके अनुयायी प्राचीन वैदिक आदर्शों के उपासक है तथा एक निर्गुण ईश्वर के अतिरिक्त किसी देवता को नहीं मानते हैं।

(२) पौराणिक तथा सनातनी वर्ग में शंकरादि संस्कृत के प्रकाड पडित एवं आचार्य सम्मिलित हैं। इन्होंने प्रचलित हिन्दू धर्म में हीं कुछ परिवर्तन कर नये-नये सम्प्रदायो की सृष्टि की।

(३) संत या साधक समाज में कबीरादि निर्गुणी संत हैं।[1]

(इ) साधु-सन्तगुरु आदि—ऋषिमुनि प्रवृत्ति वाली भावना ही इन नामो में भी काम कर रही है। इन महापुरुषों के उदात्त चरित, परमार्थ प्रवृत्तियों ने इन्हें विशेष श्रद्धास्पद बना दिया है, भगवान् के इन भक्तो ने लोक-कल्याण की कामना से मानव जीवन को उच्च बनाने का प्रयत्न किया। निम्नकोटि के साधुओ के नाम प्राय: अंधविश्वास के कारण ही अपनाये जाते हैं। भक्त पुत्र का जन्म आशीर्वाद से मानते है। गुरुपरक नाम श्रद्धा, विश्वास के अतिरिक्त गुरु पूर्णिमा आदि पर्व या गुरुवार से भी हो सकते हैं।

(१०) तीर्थ—भारतवर्ष में तीर्थों का वृहत् जाल सा बिछा हुआ है। तीर्थाटन करने से संपूर्ण

---

[1] कुछ मुख्य पंथ-प्रवर्तक-तालिका

पंथ या सम्प्रदाय का नाम	प्रवर्तक	अनुमानित समय	मुख्य केन्द्र
कबीरपंथी	कबीर	१४७०	बनारस
सिक्ख	नानक	१५००	पंजाब
दादू पंथी	दादू	१५७५	राजस्थान
लालदासी	लालदास	१६००	अलवर
सतनामी		१६००	नारनौल (दिल्ली के दक्षिण में)
बाबालाली	बाबालाल	१६२५	देहनपुर (सरहिन्द के पास)
साध	वीरभान	१६५८	देहली के पास
चरनदासी	चरनदास	१७३०	देहली
शिवनरायनी	शिवनरायन	१७३४	चन्द्रवार (गाजीपुर)
गरीबदासी	गरीबदास	१७४०	छुरानी (रोहतक)
रामसनेही	रामचरन	१७५०	शाहपुरा (राजस्थान)

Farquahar & Griswold } Tho Religious Quest of India P. 334.

देश का भ्रमण अनायास ही हो जाता है। हिन्दू शास्त्रों में तीर्थ-यात्रा का बड़ा माहात्म्य माना गया है।[1] वे ऐहिक अभ्युदय तथा स्वर्गिक निःश्रेयस के देनेवाले बतलाये गये हैं। किन्तु देवों के सदृश उनका आवाहन नहीं हो सकता। उनके पुण्य दर्शनों के लिए प्रयत्न करना पड़ता है। प्रत्येक तीर्थ की अपनी निराली विशेषता है। चारों दिशाओं में अवस्थित बद्रीनाथ, जगन्नाथ, रामेश्वर तथा द्वारिका चार धाम हैं। इनके मध्य में सप्त पावन पुरियाँ बसी हुई हैं।[2] तीर्थ-यात्रा से देव दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त होता है और साथ ही साधु महात्माओं का सत्सङ्ग भी हो जाता है जिनके सुन्दर उपदेश से आत्मा शुद्ध तथा मुक्ति की अधिकारी हो जाती है। अधिकांश तीर्थ नदियों के तट पर अथवा पर्वतों के मध्य स्थित हैं। कुछ तीर्थ समुद्र के किनारे भी बसे हुए हैं। सुन्दर भौगोलिक परि-स्थिति के कारण यात्री को प्रकृति-पर्यवेक्षण का सुअवसर भी प्राप्त होता है। ऐतिहासिक तथा व्यापारिक दृष्टि से भी वे बड़े मूल्यवान् होते हैं। ज्ञान अनुभव की वृद्धि, अर्थ प्राप्ति, काया-मन, आत्मा की शुद्धि आदि अनेक प्रकार के लाभ तीर्थों से बतलाये जाते हैं। नदियों के सदृश यहाँ पर भी वही तीन मनो-वृत्तियाँ कार्य कर रही हैं। तीर्थ की पुण्य भावना से, उनकी मनौती मनाने से अथवा वहाँ पर उत्पन्न होने से ये नाम रखे गये हैं।

(११) **धर्म-ग्रंथ**—कुछ ग्रन्थ जनता में अत्यंत प्रिय हो गये हैं। कोई गीता का पाठ करता है तो कोई रामायण का। जो जिस ग्रन्थ में अटल श्रद्धा रखता है वह उसी पर नाम रख लेता है। इन नामों में केवल धर्म भावना पाई जाती है। कभी कभी पुत्र के लिए इनका पारायण भी कराया जाता है।

(१२) मङ्गल अनुष्ठान—

(अ) धार्मिक कृत्य—यज्ञ-यागादि धर्म के अंग माने जाते हैं क्योंकि उनके द्वारा मनुष्य अभ्युदय तथा निःश्रेयस की सिद्धि प्राप्त करता है।

(आ) पर्व तथा उत्सव—पर्व, व्रत, त्यौहार—ये शब्द विभिन्न अर्थी होते हुए भी प्रायः समानार्थक ही समझे जाते हैं। पुण्य तिथियाँ पर्व कहलाती हैं जिनमें मनुष्य प्रायः सरिता-स्नान करते और व्रत रखते हैं। इसमें पूजन, पारायण, दान आदि अनेक विधान किये जाते हैं। चंद्रकला के विचार से अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्था तथा पूर्णिमा पर्व तिथियाँ समझी जाती हैं। सूर्य तथा चंद्र-ग्रहण भी पर्व माने जाते हैं। महापुरुषों की जयंतियाँ उनके जन्म-दिवस पर मनाई जाती हैं। अवतारों की भी जयंतियाँ उनके जन्म-दिवस पर मनाई जाती हैं। "मैं चर्खा कैसे कातूँ" यह गीत बहुधा ग्रामीण स्त्रियों के मुख से सुनाई देता है। इसमें एक कामचोर, आलसी स्त्री अपने पति को १५ तिथियों के १५ पर्वों के नाम गिना देती है। "आज यह पर्व है, कल अमुक व्रत होगा, परसों वह त्यौहार मनाया जायगा। इन पुण्य तिथियों में मैं कोई काम कैसे कर सकती हूँ?" इस दृष्टांत से यह परिणाम निक-लता है कि हिन्दू धर्म में प्रत्येक दिन कोई न कोई पुण्यतिथि मानी जाती है। इस अभिधान संग्रह

---

[1] तीर्थमाहात्म्य

एक दिये जहँ कोटिक होत हैं सो कुरुखेत मैं जाइ अन्हाइय।
तीरथ-राज प्रयाग बड़े मनवांछित के फल पाइ अघाइय॥
श्री मथुरा बसि 'केशवदासजू' द्वै भुज तें भुज चार ह्वै जाइय।
काशी पुरी की कुरीति बुरी जहँ देह दिये पुनि देह न पाइय॥

—केशवदास (द्वितीय)

[2] विष्णोः पादमवन्तिकां गुणवतीं मध्ये च कांचीपुरीम्
नाभिं द्वारवतीं तथा च हृदये मायापुरीं पुण्यदाम्।
ग्रीवामूलमुदाहरन्ति मथुरां नासाग्रवाराणसीम्
एतद् ब्रह्मविदो वदन्ति मुनयोऽयोध्यापुरीं मस्तकम्।

में १२ महीनों के मुख्य-मुख्य सभी पर्वों का उल्लेख मिलता है। ये पर्व किसी निश्चित तिथि को ही मनाये जाते हैं। इन्द्र-दमन, ग्रहण आदि कुछ ऐसे पर्व हैं जिनकी कोई एक तिथि निश्चित नहीं है। कुम्भ मेला स्थान परिवर्तन करता रहता है, वह बारह वर्ष उपरांत फिर उसी स्थान पर मनाया जाता है। कुछ त्यौहार स्थानिक भी होते हैं। व्रत सामान्य रूप से किसी शुभ कार्य के करने या अशुभ कार्य के न करने का दृढ़ संकल्प करने के अर्थ में आता है। सुख, सन्तति, सौभाग्य, सम्पत्ति, सुयश, सुकृत तथा स्वर्ग-सिद्धि के उद्देश्य से व्रत का अनुष्ठान किया जाता है। व्रती में ब्रह्मचर्य, सत्यवादिता, अहिंसा एवं आमिष का त्याग—ये चार बातें अवश्य होनी चाहिए। उपवास करने से स्वास्थ्य तथा आयुष्य में वृद्धि होती है।

(इ) षोडशोपचार[1]—हिन्दुओं में अतिथि-सत्कार एक विशेष स्थान रखता है। अतएव जब किसी देवता का आवाहन किया जाता है तो अतिथि के सदृश ही सम्पूर्ण आतिथ्य सामग्री उसके अर्चन में प्रयुक्त की जाती है। आमंत्रित देव को सर्वप्रथम आसन देकर पद-प्रक्षालन, आचमन तथा स्नान के लिए जल दिया जाता है। इससे मार्ग का श्रम दूर हो जाता है तथा शारीरिक शुद्धि हो जाती है। इसके पश्चात् वस्त्राभूषण तथा मंगलसूत्रादि धारण कराये जाते हैं। सुगंधित वस्तुओं के प्रयोग के बाद पुष्पों की सुन्दर माला दी जाती है और दूषित वायु को पवित्र करने के लिए अगर अथवा धूपबत्ती जलाई जाती है। नौबत, घंटा, शंखादि वाद्य बजाकर दीपक से आरती उतारते हैं। नीराजना के पश्चात् फल, मेवे तथा मिष्ठान्न का भोग लगाया जाता है। प्रसाद के पश्चात् ताम्बूल देकर प्रदक्षिणा करते हुए वंदना के साथ अतिथि बिदा किया जाता है। देव-पूजा से सम्बन्धित होने के कारण षोडशोपचार के उपकरण—कलश, दीप, घंटा और शंख का पूजन भी पहले आवश्यक होता है। पंचांग-पूजन सूक्ष्म रूप से होता है, उसमें केवल गंध, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य ही प्रयोग में आते हैं। देवार्पण करने से फूलों से सौभाग्य, गंध से सुगंधित द्रव्य, धूप से राज्य, दीपक से दीप्ति, ध्वज-दान से पाप नाश का फल मिलता है। लौंग, कपूर, ताम्बूल, फल-फूल से अनायास ही चन्द्रलोक की प्राप्ति बतलाई जाती है। उपचार के प्रत्येक साधन का पृथक्-पृथक् मंत्र से पूजन किया जाता है।

(१३) ज्योतिष—

(अ) राशि नक्षत्र—मेषादि १२ राशियों तथा अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों का मनुष्य के भाग्यफल पर विशेष प्रभाव माना गया है।

(आ) सिद्धियोग—प्रत्येक प्राणी सुख, सुयश, सम्पत्ति, संतति, सौभाग्य, स्वास्थ्य आदि का अभिलाषी है तथा अंत में स्वर्ग का आनंद अनुभव करना चाहता है। दो शब्दों में इन्हें अभ्युदय तथा निःश्रेयस अथवा प्रेय तथा श्रेय कह सकते हैं। अभ्युदय में सब पूर्वोक्त गुण सम्मिलित हैं और निःश्रेयस मुक्ति के आनंद को कहते हैं। इनका एक अन्य वर्गीकरण भी धर्मशास्त्रियों ने चार पदार्थ या चतुष्फल नाम से किया है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष यही जीवन के चार फल हैं जिनकी प्राप्ति के लिए प्रत्येक मनुष्य प्रयत्नशील रहता है। धर्म सदाचारमूलक सात्विक मनोवृत्तियों का आधार है। धर्म की सहायता से अर्जित अर्थ सांसारिक कामनाओं की सिद्धि का साधक बन जाता है एवं धर्मार्थ-काम के सोपान द्वारा भक्त को मोक्ष का परम पद प्राप्त हो जाता है—मनुष्य संसार के बंधनों से मुक्त हो जाता है। किसी-किसी ने इनके एषणा के अनुसार वित्तैषणा पुत्रैषणा तथा लोकैषणा, नामक तीन विभाजन किये हैं। लोकैषणा में दो भावनाएँ सन्निहित हैं। इस लोक में यश एवं परलोक में परमानंद।

इस सिद्धियोग प्रवृत्ति में नामों को धर्म, अर्थ, काम (भोग-विलासादि सुख) तथा मुक्ति इन

---

[1] षोडशोपचार :—**आवाहन, आसन, अर्घ्य पाद्य, आचमन, मधुपर्क स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा, वन्दना।**

चार भागों में विभक्त किया है। जन्म-पत्रिका बनाते समय इस बात का विचार रखा जाता है कि बालक की कुंडली में राशि के अनुसार किस शुभ नक्षत्र का योग हुआ है तथा उसका क्या फल-होगा। किसी के भाग्य में एक, किसी के दो, किसी के तीन एव किसी-किसी भाग्यशाली का ऐसा फल योग होता है कि "चार पदारथ करतल जाके" हो जाते हैं।

(१४) **संप्रदाय**—विविध धर्मों, सम्प्रदायों तथा पथों में कुछ ऐसे पारिभाषिक शब्द पाये जाते हैं जिनकी उनके अनुयायियो में बडी मान्यता होती है। इस निष्ठा के कारण अनेक नाम उन शब्द-विशेष पर रख लिये जाते हैं।

अंधविश्वास—अंधविश्वास के कारण कुछ नाम ऐसे रख लिये जाते हैं जिनसे बालकों के प्रति अवज्ञा, उपेक्षा अथवा तिरस्कार के भाव व्यक्त हों। इस प्रकार के दूषित नाम बच्चों के लिए रक्षा कवच समझे जाते हैं। कुछ मनुष्यों की यह धारणा है कि इससे बालक दीर्घायु तथा चिरंजीवी होते हैं।

२—दार्शनिक प्रवृत्ति

इसके अंतर्गत वे गहन विषय आते हैं जिनका सम्बन्ध ब्रह्म, आत्मा, प्रकृति (माया), सृष्टि-रचना, प्रलय, स्वर्ग, मुक्ति आदि आध्यात्मिक; अंतःकरण चतुष्टय, पचतन्मात्राएँ, मनोभाव आदि मनोवैज्ञानिक; यम, नियम, धर्म के अंगादि नैतिक; शिष्टाचार आदि नागरिक तथा सौन्दर्यात्मक तथ्यों से रहता है।

३—राजनीतिक प्रवृत्ति

राजनीतिक प्रवृत्ति के दो अंग दिखलाई देते हैं। पहला राष्ट्रीय आंदोलन जिसके अंतर्गत स्वदेशभक्ति, स्वदेशी, स्वराज्य, स्वतंत्रता तथा वीर पूजा की भावना जाग्रत होती है एवं जिससे जातीयता तथा राष्ट्रीयता का विकास, उत्थान तथा पतन का परिचय प्राप्त होता है। ऐतिहासिक प्रवृत्ति इसका दूसरा अंग है जिसके अन्तर्गत प्रसिद्ध शासक वर्ग के नाम हैं जो अपने शासन-प्रबंध, रण-कौशल, प्रजारंजन, लोक संग्रहादि गुणों के लिए विख्यात हैं।

४—सामाजिक प्रवृत्ति

इससे समाज की व्यवस्था एवं मनुष्य के भौतिक जीवन पर प्रकाश पड़ता है। समाज के विकास से संस्कृति एवं सभ्यता की अभिवृद्धि होती है। देश समृद्धिशाली होता है। वर्णाश्रम, उत्सव, मेले आदि संस्थाएँ; उद्योग-धंधे, कला-कौशल, दिक्काल; एवं जीवन-सम्बन्धी कलात्मक सामग्री आदि विषय इस प्रवृत्ति के अन्तर्गत आते हैं।

५—अभिव्यंजनात्मक प्रवृत्ति

यह प्रवृत्ति गुणातिरेक तथा भावावेश की विशेष व्यंजना करती है। इसलिए इसे अभिव्यंजनात्मक कहा गया है। अभिव्यंजना के द्वारा सामान्य अर्थ के स्थान में किसी विशेष अर्थ का बोध होता है। इन नामों से आत्मीयता, विशिष्टता अथवा विलक्षणता व्यंजित होती है। दुलार के नाम, उपाधियाँ तथा व्यंग्य इसके अन्तर्गत सम्मिलित किये गये हैं।

उपाधि सम्बन्धी नाम गुणों से बनाए जाते हैं। कुछ गुणों की विवेचना दार्शनिक प्रवृत्ति में भी की गई है। वहाँ वे केवल गुणबोधक शब्द हैं उनसे गुणों का आतिशय्य प्रकट नहीं होता। गुण-निर्मित उपाधि नाम की यह विशेषता है कि उससे गुण, नाम तथा नामी तीनों की महत्ता चरमोत्कर्ष

को पहुँच जाती है। जिस प्रकार मणि-मंडित मुकुट के धारण करने से मणि, मुकुट तथा मुकुटधारी तीनों का मूल्य बढ़ जाता है। धर्म, गुण, धन, परोपकार, स्वदेशभक्ति, समाज सेवा आदि से सम्बन्धित कई प्रकार की उपाधियाँ होती हैं।

भाव के दो पक्ष होते हैं (१) रागात्मक तथा (१) विरागात्मक। राग से किसी वस्तु के प्रति स्नेह प्रकट होता है, विराग से विद्वेष। प्रथम पक्ष में दुलार के नाम आते हैं और द्वितीय में व्यंग्य के। बच्चों की प्यारी वस्तुओं, शिशुओ के सदृश प्रिय तथा आह्लादक पदार्थों तथा प्यार के सरस, सुन्दर, सरल निरीह एवं प्रिय शब्दों से लाड़-प्यार के नामो का सम्बन्ध रहता है। जिन शब्दों में वात्सल्यरसाप्लावित ममता की स्निग्धता रहती है वे ऐसे नामों के लिए अत्यंत उपयुक्त होते हैं। इन नामों में बच्चे के पर्याय, खेल-खिलौने, मिठाई, फल-फूल, मनोहर पशु-पक्षी, चंद्रादि कुछ दिव्य तथा भव्य नैसर्गिक रूप, आभूषण, दुर्लभ, सुन्दर, प्रिय तथा बहुमूल्य द्रव्य; राजा आदि कुछ महत्त्वपूर्ण तथा भैया, मुन्ना आदि कुछ प्यार के शब्दों से इन नामो की रचना होती है।

व्यंग्य दुलार के विपरीत होता है। इसमें चिढ़ाने की मनोवृत्ति सन्निहित रहती है। विद्वेषात्मक भावना होने से अच्छे से अच्छा शब्द भी विरोधी अर्थ का व्यंजक बन जाता है 'देवानां प्रिय' तथा 'वैसाखनन्दन' के निर्वचन परक अर्थ बुरे न थे। किन्तु कालातर की परिस्थित विशेष में उनका भाव परिवर्तन हो जाने से वे अब मूर्ख तथा गर्दभ के अर्थ में रूढ़ होकर व्यंग्य बन गये। अन्ध-विश्वास का कुत्सित तथा गर्हित नाम ओछेलाल शिव-संकल्प मूलक समझा जाता है परन्तु व्यंग्य का अच्छेलाल अच्छा नहीं। अंगवैकल्य, रूपाकृति—स्वभाव-गुण-कृति की विलक्षणता तथा घटना-परिस्थित की असाधारणता के कारण व्यंग्य के अनेक रूप हो गये हैं।

उल्लिखित समस्त प्रवृत्तियों में कभी-कभी साहित्यिक तथा अन्य अंतर्धाराएँ भी सन्निहित रहती हैं। वस्तुतः ये प्रवृत्तियाँ प्रस्तुत प्रबन्ध के मेरुदंडस्वरूप हैं। इनके सम्यक् ज्ञान से वर्ण्य विषय तथा उसकी पृष्ठभूमि के समझने में विशेष सहायता मिलती है।

गौण प्रवृत्तियों की शाखा-प्रशाखाएँ

इस अध्ययन के फलस्वरूप प्राप्त गौण प्रवृत्तियो को निम्न प्रकार से विभाजित कर सकते हैं। (१) **वर्गात्मक गौण प्रवृत्तियाँ**—इनका सम्बन्ध जाति या सम्प्रदाय से रहता है और ये परम्परागत विशिष्ट शब्दों द्वारा व्यक्त की जाती हैं। समस्त जाति अथवा सम्प्रदाय का कोई भी व्यक्ति इनको अपने नाम के अंत में प्रयुक्त कर सकता है। मूल शब्द के साथ ये शब्द समस्त पद न बनाकर शब्द समुच्चय बनाते हैं। इनसे मनुष्य की भौगोलिक अथवा ऐतिहासिक परिस्थिति का परिचय प्राप्त होता है। परन्तु जब ऐसे शब्द वाच्यार्थ द्वारा समस्त पद बनाते हैं अथवा मूलपद की विशेषता बतलाते हैं तो वे इसके अंतर्गत नहीं आते। रामपुरी समस्त पद है, इसका अर्थ है राम की पुरी अर्थात् अयोध्या। यहाँ पुरी वर्गात्मक गौण प्रवृत्ति नहीं है। जब पुरी शब्द दशनामी संन्यासियों के एक भेद-विशेष की ओर संकेत करेगा तो वह इस गौण प्रवृत्ति के अन्तर्गत समझा जायगा। इनके दो भेद हो सकते हैं (अ) जातीय—सिंह, राय, सिनहा, वर्मा, शर्मादि। (आ) साम्प्रदायिक—पुरी, नाथ, शाह आदि।

(२) **सम्मानार्थक गौण प्रवृत्तियाँ**—ये प्रवृत्तियाँ मान-मर्यादा, पूजनीय भावना अथवा किसी पद या पदवी विशेष के परिचायक शब्दों से प्रकट की जाती हैं। ये सम्मानार्थक शब्द भी समस्त पद न होकर शब्द समुच्चय की श्रेणी में ही आते हैं। इनकी दो प्रशाखाएँ हैं :—

(अ) **आदरसूचक शब्द**—ये आदर या शिष्टाचार के लिए नाम के आदि या अंत में उपसर्ग या प्रत्यय की भाँति प्रयुक्त किये जाते हैं यथा—श्री, जी, जू, देव।

(आ) उपाधिसूचक शब्द—ये उपाधियाँ किसी राजा, संस्था या संभ्रांत पुरुष द्वारा प्राचीन काल में वितरित हुईं और अब वे पैतृक संपत्ति के सदृश वंशपरम्परा से चली आ रही हैं, कुल का कोई भी मनुष्य अपने नाम के साथ इनका प्रयोग कर सकता है। इससे प्रयोग करनेवाला अपना बहुत गौरव समझता है यथा—दीवान, राय, लाल, शास्त्री, बक्सी आदि। आधुनिक उपाधियाँ प्रायः व्यक्तिगत होती हैं।

(३) भक्तिपरक गौण प्रवृत्तियाँ—(अ)—श्रद्धा भक्तिमूलक—इनसे भक्त की भावनाएँ व्यंजित होती हैं। ये कई तरह से प्रकट की जा सकती हैं। मनुष्य प्रार्थना करते हैं, मन्दिर में जाते हैं, शंख बजाते हैं, भजन गाते हैं, आरती उतारते हैं, नैवेद्य अर्पण करते हैं अथवा किसी अन्य प्रकार से अपने इष्टदेव को प्रसन्न करने की चेष्टा करते हैं। भिन्न-भिन्न मनुष्यों के भिन्न-भिन्न आचार-विचार होते हैं। अतएव उनके पूजा करने के ढङ्ग में भी विभिन्नता अनिवार्य रूप में रहती है। भागवत में नवधा भक्ति[1] कही गई है। नारद के कथानानुसार भक्ति की ग्यारह प्रकार की आसक्तियाँ[2] मानी गई हैं। कुछ भक्त अपने भगवान् को रिझाने के लिए षोडशोपचार करते हैं, और भी बहुत सी अंतर्भावनाएँ हैं जिनसे आराधक अपने आराध्यदेव के प्रति अपनी भक्ति प्रदर्शित कर सकते हैं, नामों में भक्ति भावना प्रायः इन शब्दों से सूचित की जाती है :—आनंद, किशोर, कुमार, चंद्र, चरण, दत्त, दयाल, दास, दीन, देव, नंदन, नाथ, नारायण, प्रसाद, बक्स, बहादुर, भगवान्, भूषण, मल, राय, लाल, बिहारी, शरण, सरूप, सहाय, सुमिरन, सेन, सेवक, स्वरूप आदि आदि।

(आ) गुणबोधक गौण प्रवृत्तियाँ—कभी-कभी नाम में कुछ विशेषण अथवा विशेष्य मूल पद की विशिष्टता बतलाते हैं उनको गुणबोधक शब्द कह सकते हैं। वे अधिकांश गुणासक्ति भक्ति के ही व्यंजक होते हैं। अतः उनको भक्तिपरक शब्दों के अंतर्गत ही रखा है। जहाँ कहीं अन्यथा प्रयोग हुआ है वहाँ उसका निर्देश कर दिया गया है।

अधोलिखित सार-वृक्ष से समस्त प्रवृत्तियों के विश्लेषण का निष्कर्ष अधिक सरल एवं बोधगम्य हो जाता है :—
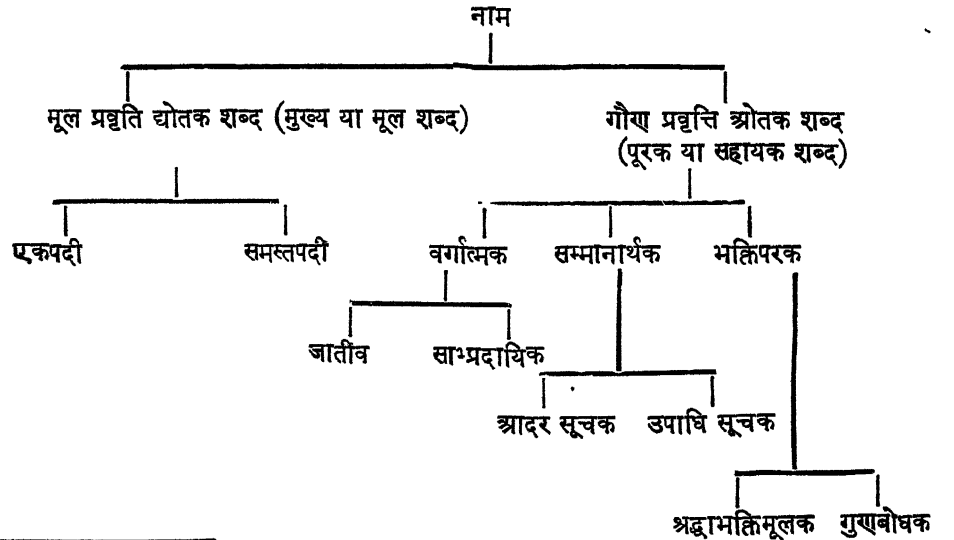
[1] श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्॥
(श्रीमद्भागवत ७।५।२३)

[2] ११ आसक्तियाँ—(१) गुणमाहात्म्यासक्ति, (२) रूपासक्ति (३) पूजासक्ति (४) स्मरणासक्ति (५) दास्यासक्ति (६) सख्यासक्ति (७) वात्सल्यासक्ति (८) कांतासक्ति (९) आत्मनिवेदनासक्ति (१०) तन्मयासक्ति (११) परमविरहासक्ति।

संस्कृति के अंग

मानव विलक्षणता का केन्द्र है। उसका सम्पूर्ण जीवन विषमताओं से परिपूर्ण है, इसीलिए कोई भी दो मनुष्य पूर्णरीत्या एक से नहीं दिखलाई देते। आकृतियों में असमानता, प्रकृतियों में विचित्रता तथा प्रवृत्तियो में विभिन्नता। किन्तु इस अनेकता में भी एकता है— सामंजस्य है। यही एकरूपता सौदर्य एवं आनंद की जननी है। वह जीवन को प्राणदान देती है। विषमता भी मनोरम संस्कृतियों के प्रिय रूपों से जीवन को जीने योग्य बनाती है। दोनो के समन्वय से ही मनुष्य मनुष्य कहलाता है। नामों की विभिन्नता में भी यही रहस्य कार्य कर रहा है। उसके गर्भ में अनेक संस्कृतियों का पोषण होता रहता है।

यह पहले ही बतलाया जा चुका है कि अभिधानो का अनुशीलन न केवल रोचक अथवा कौतूहलजनक ही है, अपितु उससे अनेक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकलते हैं। नाम देश की सभ्यता एवं संस्कृति का सुन्दर चित्र उपस्थित करते हैं। सहस्रो शताब्दियों की सभ्यता तथा संस्कृति का गौरव किस प्रकार प्रच्छन्न रूप से विखरा पड़ा है इस बात का परिचय नामों के निरूपण से ही मिल सकता है। नामों के द्वारा ही तत्कालीन सामाजिक धार्मिक एवं राजनीतिक व्यवस्था का परिचय प्राप्त हो जाता है। मानवीय जीवन के विविध अंगो पर प्रकाश पड़ता है। साहित्य तथा कला के स्वरूप का उद्बोधन होता है। देश के इतिहास तथा भूगोल का दिग्दर्शन हो जाता है। आर्थिक परिस्थिति के प्रत्यक्षीकरण तथा अनेक ज्ञातव्य तथ्यों के जानने में सहायता मिलती है। साराश यह कि नाम शास्त्र के वैज्ञानिक परिशीलन से देश के तत्कालीन सांस्कृतिक इतिहास का चारु-चित्रण उपलब्ध हो जाता है। संक्षेप में प्रस्तुत नाम-संग्रह भारतीय संस्कृति के निम्नलिखित अंगों पर प्रकाश डालता है। (१) धर्म (२) दर्शन (३) साहित्य (४) ललितकलाएँ (५) विज्ञान (६) सामाजिक व्यवस्था तथा भौतिक जीवन (७) राजनीतिक प्रगति (८) इतिहास (९) भूगोल।

उपसंहार—प्रस्तुत नाममाला में वाङ्मय का सुन्दर स्वरूप उद्भासित होता है। काव्य का कोई अंग, साहित्य की कोई विशेषता छूटने नहीं पाई है। इसका शब्द-भाण्डार अपूर्व है। सहस्रों नूतन शब्द इसके गौरव की श्रीवृद्धि कर रहे हैं। संस्कृत जननी अपने विशाल वंश के साथ विराजमान है जिसमें हिन्दी, व्रज, अवधी आदि प्रांतीय भाषाएँ तथा अनेक ग्रामीण बोलियाँ अपने-अपने निराले वेश में सुशोभित हैं। तत्सम, तद्भव, अपभ्रंश तथा ठेठ रूपों का विचित्र समन्वय यहाँ देखने को मिलता है। अलंकारों का चमत्कार तथा रसों का आनंद पर्याप्त रूप से इनमें विद्यमान है। चरित्र-चित्रण का आभास भी अनेक नामों से प्रस्फुटित होता है। अंतर्कथाओं का ज्ञान भी यत्र-तत्र हो जाता है। इन नामों में भावों की एक अद्भुत उद्भावना अपना कौशल प्रदर्शित करती है, कल्पना भी अपने नाना रूपों में कौतुक क्रीडा कर रही है।

यही नहीं, इनमें निगमागम के निष्कर्ष, पुराण, रामायण, महाभारतादि के तथ्य एवं अनेक ज्ञान-विज्ञान के तत्त्व सन्निविष्ट हैं। इन नामों में भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि विखरी, मिली और छिपी हुई है।

: २ :

नामों का विवेचनात्मक अध्ययन

(प्रकरण १—२०)

पहला प्रकरण

ईश्वर

१—गणना—

क—क्रमिक गणना—

१—इस धार्मिक प्रवृत्ति के अंतर्गत ईश्वर सम्बन्धी नामों की संख्या ४२८ है।

२—मूल शब्दों की संख्या १८४

३—गौण शब्दों की संख्या ६४

इस प्रवृति में गौण शब्दों की अपेक्षा मूल शब्दों की संख्या अधिक है। इसके दो कारण है, कुछ नामो में गौण शब्दों का प्रयोग नहीं हुआ है और कुछ में गौण शब्दों की आवृत्तियाँ हुई हैं। लगभग तीन मूल शब्दों के साथ एक गौण शब्द का अनुपात है। भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों में यह अनुपात भिन्न-भिन्न देखा गया है। राम प्रवृत्ति में यह उलटा हो गया है। उसमें मूल शब्दों की अपेक्षा गौण शब्दों की संख्या अत्यधिक है क्योंकि वहाँ अकेले राम शब्द से ही विविध प्रकार के गौण शब्दों के योग से बहुसंख्यक नूतन नामो का निर्माण हुआ है।

ख—रचनात्मक गणना

एक पदी नाम,	द्विपदी नाम,	त्रिपदी नाम,	चतुष्पदी नाम,	पंचपदी नाम	योग
३४	२८८	८८	१६	२	४२८

इस प्रवृत्ति के अन्तर्गत पाँच से अधिक शब्दों के नाम नहीं पाये जाते। सबसे अधिक संख्या ो शब्द वाले नामों की है।

ग—तुलनात्मक गणना

नीचे एक तालिका दी जाती है जिसमें इस प्रवृत्ति के नामों के साथ त्रिदेव, पंचदेव तथा राम-कृष्ण सम्बन्धी नामों पर तुलनात्मक विचार किया गया है।

देवों के नाम	नामों की संख्या	समस्त नामों में प्रतिशत	विवरण
ईश्वर	४२८	२.६३	नामों की संख्या के
ब्रह्म	१०१	.६२	अनुसार इन देवों की
विष्णु	८१७	५.३१	लोकप्रियता का
शिव	१७१३	१०.५	क्रम इस प्रकार होगा
पार्वती	५२८	३.२	१. शिव, २. कृष्ण,
गणेश	११५	.४	३. राम, ४. विष्णु,
सूर्य	३००	१.२	५. पार्वती, ६. ईश्वर,
राम	१०५२	६.४	७. सूर्य, ८. गणेश,
कृष्ण	१६४२	१०.१	९, ब्रह्मा

इस तुलना से यह स्पष्ट दिखलाई देता है कि शनैः शनैः ब्रह्मा की सत्ता तथा महत्ता जनता के जीवन से उठ सी रही है। नामो की इतनी अल्प संख्या ही इसकी साक्षी है। यही कारण है कि उसको पंचदेवों में स्थान न मिल सका। विष्णु के बहुत से नाम उनके अवतार राम कृष्ण के लिए भी प्रयुक्त हो रहे हैं। उनको पृथक् करना असम्भव ही है। अवतारों की सर्वप्रिय लीलाओं ने उन्हे मानव जीवन के सन्निकट कर दिया है। वे जनता की दिनचर्या के अंग बन गए हैं। जन साधारण उन्हें साक्षात् भगवान् ही मानते हैं। उनसे सम्बन्धित नामों की संख्या इसीलिए अधिक है। निर्गुण ब्रह्म सामान्य मनुष्यों के लिए क्लिष्ट कल्पना है। अनेकरूपता तथा प्रबल परिवार के कारण शिव सम्बन्धी नामों की संख्या सबसे अधिक है। पार्वती आदिशक्ति तथा दया की मूर्ती जगदम्बा मानी जाती है इससे वह अधिक प्रिय हो रही है। गणेश को लोग भय के कारण पूजते हैं क्योंकि वह विघ्नों के देवता हैं। सूर्य प्रकाश एवं ताप का मूल स्रोत एक प्रत्यक्ष प्राकृतिक शक्ति है जिसके नित्य दर्शन होते रहते हैं।

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द

(१) **एकपदी एकाकी**—अकलंक, अकलू, अक्षर, अखंड, अखिल, अगम, अचित्य, अच्युत, अजात, अतुल, अद्वैत, अनंत, अनघ, अनादि, अनुपम, अनूप, अपूर्व, अभय, अभेद, अमर, अमल, अरूप, अलख, अलेष, अविनाश, अव्यक्त, अशेष, असीम, आनंद, ईश, ईश्वर, ओंकार, ओज, ओम्, कंत्, करिमन, कर्त्ता, कर्त्तार, कृपाल, केवल, केवला, जीवधर, दयाल, दयालु, दाता, नित्य, निरंजन, निकार, निराकार, निर्गुण, निर्दोष, निर्भय, निर्मल, निर्विकार, नूर, पति, पतिपाल, पतिराखन, परम, परमा, परिपूर्ण, पीतम, पूर्ण, प्यारे, प्रणव, प्रभु, प्रिय, प्रियतम, प्रीतम, बंधु, बालम, ब्रह्म, मलिक, महबूब मालिक, मौला, विभु, विमल, विरज, विशुद्ध, संपूरन, संपूर्ण, सकल, साईं, साहब, साहिब, सृष्टिधर, स्वयभू, स्वामी, हजूर, हाकिम,।

(२) **समस्त पदी**—अगम सुख, अनाथ नाथ, अशरण शरण, आत्माराम, आनंदरूप, आनंदसागर, आनन्द स्वरूप, करुणाकर, करुणानिधान, करुणानिधि, करुणापति, करुणाभूषण, करुणा सागर, करुणा सिंधु, कृपा सिंधु, चिदानद, जी राज, जीव नंदन, जीव नाथ, जीव प्रकाश, जीव बोध, जीव राखन, जीव हर्षण, जीवानन्द, जीवाराम, जीवेंद्र, जीवेश्वर, जीसुख, ज्ञान स्वरूप, दिलेश, दिलेश्वर, दीन दयाल, दीन बंधु, दीना नाथ, दीनेश्वर, दुनियापति, दुनिया राय, पतित पावन, पति राज, परम कीर्ति, परम गुरु, परम जीव, परम दयाल, परम सुख, परम हंस, परमात्मा, परमानन्द, परमेश्वर, प्रकाश स्वरूप, प्रजापति, प्राण जीवन, प्राणपति, प्राण वल्लभ, प्राण सुख, प्राणेश्वर, माया कांत, बर नाम, विश्वपति, विश्व पाल, वेद कात, वेद नाथ, वेद निधि, वेद पाल, वेद मूर्ति, वेद राज, श्रुति कात, सच्चिदानन्द, सज्जन, सत गुरु, सत नाम, सत्य नाम, सत्य स्वरूप, सदानन्द, सर्वगुण, सर्वदानन्द, सर्वशक्तिमान्, सर्व सुख, सर्वेश्वर, सृष्टि नारायण, स्वयं प्रकाश, हंस नाथ, हृदयनन्दन, हृदय नाथ, हृदय नारायण, हृदय प्रकाश, हृदय मोहन, हृदय राय, हृदय स्वरूप, हृदयानन्द, हृदयेश, हृदेश, हृदेश्वर।

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ

(१) **रचनात्मक टिप्पणियाँ**—ईश्वर के अधिकांश नाम गुण अथवा तज्जन्य उपाधियों से सम्बन्ध रखते हैं यथा :—

अगम, अजात, अनादि, अनुपम, अभय, अरूप, दयालु, निर्गुण नाम गुणों पर रखे गये है और अनाथ नाथ, अशरण शरण, करुणाकर, करुणासागर, जीवनाथ, जीवेंद्र, दीनदयाल, दीनबंधु,

दीनानाथ, दुनियापति, दुनियाराय, पतित पावन आदि उपाधि सूचक नाम हैं। प्रिय तथा हृदय शब्दों से निर्मित नाम माधुर्य भाव की व्यंजना करते हैं।

शब्द रचना के विचार से इन नामों में तीन विशेषताएँ पाई जाती हैं :—

(अ) **निषेधात्मक नाम**—यह नाम गुण का निषेध करके बना दिये जाते हैं जैसे अनादि, अमर, निरंजन, निराकार, निर्दोष, निर्विकार, विरज।

(आ) कुछ नाम ऐसे भी होते हैं जिनमे गुण का नित्यत्व पाया जाता है जैसे नित्यानन्द, सदानन्द, सर्वदानन्द।

(इ) कुछ नामों में गुणों का आधिक्य रहता है जैसे परमानन्द, परमेश्वर, सर्वसुख, सर्वशक्तिमान् इत्यादि।

(२) **पर्यायवाचक शब्द**—इन नामों में केवल तीन ही मुख्य शब्दों के पर्याय व्यवहृत किये गये है जिनके योग से ईश्वर के नाम बने हैं :—

जीव—आत्मा, जीव, प्रजा, हंस।

संसार—दुनिया, विश्व, सृष्टि।

वेद—वेद, श्रुति।

(३) **विकृत शब्दों के शुद्ध रूप** :—

विकसित रूप	तत्सम रूप	विकसित रूप	तत्सम रूप
अनूप	अनुपम	बालम	वल्लभ
कर्तार	कर्त्ता	सम्पूरन	सम्पूर्ण
कृपाल	कृपालु	सांई	स्वामी
दयाल	दयालु		
पीतम, प्रीतम	प्रियतम		

(४) **विजातीय प्रभाव** :—इन अरबी शब्दों से मुसलिम संस्कृति का प्रभाव प्रकट होता है।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
करिमन (करीम)	दयालु	मौला	ईश्वर
नूर	ज्योति	साहब	स्वामी
मलिक	अधीश्वर	हजूर	उच्चपदाधिकारी के लिए शिष्ट शब्द
महबूब	प्यारा, प्रिय		
मालिक	स्वामी	हाकिम	मालिक

ग—मूल शब्दों की निरुक्ति

भक्त ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव अथवा स्वरूप से आकर्षित होकर उसकी आराधना में तत्पर होता है। इन्हीं चार बातों का ध्यान रखकर वह अपने आराध्य देव का नाम रखता है। उपर्युक्त मूल शब्दों में अनन्त, अनादि, अनुपम, निराकार, सर्व शक्तिमान् आदि नाम उसके गुणों को प्रकट करते हैं। कर्त्ता, दीनबंधु, प्रजापति, विश्वपाल, सृष्टि नारायण आदि नाम उसके कर्म की ओर संकेत करते हैं तथा अजात, अविनाशी, चिदानंद, दयालु, विशुद्ध, सच्चिदानंद, सर्वसुख आदि नाम

उसके स्वभाव एवं स्वरूप को बतलाते हैं। अनेकार्थ वाची होने के कारण "ओम्" गुण कर्म, स्वभाव तथा स्वरूप सब में घटित हो सकता है। अतः इसको ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत नाम माना गया है। कभी-कभी अंतर्कथा, तत्कालीन घटना अथवा सम्प्रदाय-विशेष की भावना से नामों में दुरूहता आ जाती है, ऐसे नामों पर प्रकाश डालना भी उचित होगा।

अकलंक, अनघ, केवल, निरंजन, निर्विकार, निर्दोष, विरज विशुद्ध—ईश्वर के ये नाम उसके शुद्ध स्वरूप तथा स्वभाव का परिचय देते हैं। वह स्वयं पाप रहित है तथा दूसरो को भी पवित्र बनाता है। निरंजन की व्याख्या आगे लिखी जायगी।

अकलू—यह शब्द अकल का अपभ्रंश है जिसका अर्थ अवयव रहित, निर्गुण तथा अखंड होता है। कोई माप न होने के कारण भी ईश्वर को अकल[1] कहा गया है।

अक्षर, अमर, अविनाश—यह नाम परमात्मा की अमरता के सूचक हैं। वह सदा से है और सदा रहेगा। उसका कभी नाश नहीं होता।

अखंड, अखिल, अच्युत,[2] अभेद, अलेष, अशेष, परिपूर्ण, पूर्ण, सम्पूर्ण, सकल—यह नाम ईश्वर के गुण के द्योतक हैं। परमात्मा पूर्ण[3] है। वह किसी पदार्थ के समान खंडों में विभक्त नहीं किया जा सकता।

अगम सुख, परमसुख, परमानन्द, सदानन्द, सर्वदानन्द, सर्व सुख—ईश्वर को आनंद स्वरूप कहा गया है। वह संसार के जन्म मरणादि बंधनों से मुक्त है। त्रिताप तथा पञ्च क्लेश उसको कभी नहीं सताते। वह वास्तविक आनंद का स्रोत है।

अचिंत्य—कल्पनातीत होने से ईश्वर अचिंत्य कहलाता है।

अजात—जन्म के बंधन से मुक्त होने के कारण ईश्वर को अजात या अजन्मा कहते हैं।

अतुल—तुलना रहित अनुपम।

अद्वैत—यह ईश्वर के एकत्व गुण का बोधक है। वह अद्वितीय है। शंकरादि कुछ दार्शनिक ब्रह्म के अतिरिक्त किसी जीव या प्रकृति का अस्तित्व नहीं मानते हैं। उनकी धारणा है कि व्यक्ताव्यक्त जगत् ईश्वर ही है जो मायाविष्ट होकर अनेकरूपता धारण कर लेता है। "एकोऽहं बहुस्याम" सिद्धान्त में वे आस्था रखते हैं।

अपूर्व—विलक्षण, अनुपम ईश्वर के गुण का सूचक है।

अरूप—निराकार, सर्व व्यापक होने से ईश्वर की कोई आकृति विशेष नहीं है। इसीलिए उसे अरूप या निराकार कहते हैं।

अलख—अलखिया सम्प्रदाय का विष्णु-गर्भ पुराण नामक एक ग्रंथ उड़िया भाषा में है जिसमें अलख की महिमा का वर्णन किया गया है। अलखिया साधु अपने को बड़ा रहस्यदर्शी, योगी और अलख को लखनेवाला मानते हैं। एक दिन ऐसा ही एक साधु गोस्वामी तुलसीदास जी के पास आकर "अलख-अलख" चिल्लाने लगा। इस पर उन्होंने उसे इस प्रकार फटकारा :—

हम लखि, लखहि हमार लखि, हम हमार के बीच।
तुलसी अलखहि का लखे, राम नाम जपु नीच ॥[4]

---

[1] अवरण अकल एक अबिनाशी घट-घट आप रहै। कबीर ग्रंथावली पृ० १०२—४२

[2] "त्वमच्युतमसि" (छांदोग्यउप)

[3] पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥ ५-१-१

[4] रामचन्द्र शुक्ल कृत गोस्वामी तुलसीदास पृष्ठ १२-१३

अव्यक्त—व्यक्त संसार में व्याप्त होने पर भी वह अप्रत्यक्ष है, अतः ब्रह्म को अव्यक्त कहा है।

असीम—सीमा रहित, अनंत अपार ईश्वर के गुण का द्योतक है।

आत्माराम—आत्मा में रमण करनेवाला अर्थात् ईश्वर।

ईश्वर—पतंजलि ने योग दर्शन में लिखा है :—

क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुष विशेष ईश्वर :

योगसूत्र (समाधि पाद सू० २४)

अर्थात् जिसको क्लेश कर्म, विपाक तथा आशय स्पर्श नहीं कर सकते, जो आत्मा से स्वतंत्र रहता है और जो त्रिकाल से पृथक् है उसे ईश्वर कहते हैं।

ईश एवाहमित्यर्थे न च नामीशते परे। ददामि सदैश्वर्यमीश्वरस्तेन कीर्तितः।

ओम्—यह ईश्वर का व्यक्तिगत नाम बतलाया गया है। शब्द व्युत्पत्ति के अनुसार यह "अवरक्षणे" अर्थात् बचाने के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। मनुस्मृति[1], ऐतरेय ब्राह्मण[2] तथा मांडूक्योपनिषद्[3] में ओम् को अ, उ तथा म के योग से बना हुआ कहा गया है। भूः (जीवन), भुवः (ज्ञान), स्वः (आनन्द) इन तीन व्याहृतियों से रचित ओम् ईश्वर के सच्चिदानंद स्वरूप की अभिव्यंजना करता है। उपनिषदों का यह गूढ़ रहस्यमय ओम् त्रिकालातीत, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, अज्ञेय, नित्य एवं अनिर्वचनीय है। इसको प्रणव या एकाक्षर भी कहते हैं। कुछ काल पश्चात् यह "अ" से विष्णु, "उ" से शिव तथा "म" से ब्रह्मा हो त्रिदेव[4] का प्रतीक बन गया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश[5] में ओम् की विशेष व्याख्या की है। मंत्रों के आद्यंत में ओम् का उच्चारण अनिवार्य बतलाया गया है। कुछ बच्चे, के जन्म लेते ही इसकी जीभ पर सोने की शलाका द्वारा शहद से ओम् शब्द लिखा जाता है। मरणासन्न मनुष्य को "ओम् क्रतोस्मर" का स्मरण दिलाया जाता है। जन्म से मरणपर्यंत हिन्दुओं का जीवन ओम्मय हो गया है। मंत्र, यंत्र तथा तंत्र सब में ओम् शब्द व्यवहृत होता है। हिन्दुओं[6], बौद्धों[7] तथा जैनियों[8] के गुरु मंत्र ओम् ही से आरम्भ होते हैं। कठोपनिषद्[9] में लिखा है कि इसी अक्षर की उपासना करके मनुष्य सब कुछ

---

[1] अकारञ्चाप्युकारञ्च मकारञ्च प्रजापतिः। (मनुस्मृति २।७६)

[2] ऐतरेय ब्रा० ५ पंचिका, खण्ड ३२।

[3] मांडूक्योपनिषद्। मंत्र १—६

[4] अकारो विष्णु रुद्दिष्ट उकारस्तु महेश्वरः।
मकारेणोच्यते ब्रह्म प्रणवेण त्रयोमतः।

[5] ओम्-यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है क्योंकि इससे अ, उ और म तीन अक्षर मिलकर एक समुदाय हुआ है। इस एक शब्द से ईश्वर के बहुत से नाम प्रकट होते हैं। जैसे अकार से विराट, अग्नि और विश्वादि, उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तेजसादि, मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि।
(सत्यार्थ प्रकाश प्रथम समुल्लास)

[6] ओम् नमो भगवते वासुदेवाय।

[7] ओम मणिपद्मने हुम्।

[8] जैनियों का णमोकार मंत्र—
णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरीयाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सब्ब साहूणम्
ॐ पंच परमेष्ठी का वाचक है—अरहंत का अ, सिद्ध (अशरीरी) का अ, आचार्य का आ, उपाध्याय का उ, साधु (मुनि) का म्। इन प्रथमाक्षरों के योग से ओम्, (ॐ) बना है।

[9] एतद्ध्येवाक्षरं ब्रह्म एतद्ध्येवाक्षरं परम्।
एतद्ध्येवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्यतत्॥ (कठोपनिषद् १।२।१६)

प्राप्त कर सकता है। मुसलमानों का 'आमीन' तथा ईसाइयों का अमेन ओम् के ही रूपान्तर बतलाये जाते हैं।

कर्त्ता, प्रजापति, सृष्टि नारायण—ईश्वर के यह नाम कर्म के अनुसार रखे गये हैं। जगत का निमित्त कारण होने से कर्त्ता, जीवों का पालन करने से प्रजा (जीव) पति तथा सृष्टि रचने से सृष्टि नारायण नाम पड़ा।

जीवधर, जीवेश्वर—जीवों का पालन-पोषण करने के कारण ईश्वर के ये नाम पड़े। निरंकार यह संस्कृत निराकार का अपभ्रंश है जिसका प्रयोग अशिक्षित साधु निराकार परमेश्वर के लिए करते हैं। रावलपिंडी के जिले में बाबा रत्ता नाम के एक सिक्ख साधु के भक्त निरंकारी कहलाते हैं।

निरंजन—शुद्ध स्वरूप ब्रह्म को निरंजन[1] कहते हैं। निरंकारी की तरह सिक्खों का एक सम्प्रदाय निरंजनी कहलाता है।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि निरंजन, ईश्वर का ही दूसरा नाम है। गोरखपंथियो में ब्रह्म की वह स्थिति जिसमें नाद और विन्दु दोनो का लय हो जाता है[2] :—

निर्गुण—सत्, चित्, आनन्द आदि गुणों से युक्त होने के कारण ब्रह्म को सगुण तथा अनन्त, अनादि, निराकार, निर्विकार आदि नञात्मक गुणों के कारण निर्गुण कहा गया है। प्रकृति के सत्, रज, तम् तीन गुणों के प्रभाव से परे होने के कारण भी ईश्वर को निर्गुण कहा जा सकता है।

पीतम, प्रिय, प्रियतम, प्रीतम,—ये शब्द प्यारे के अर्थ में व्यवहृत होते हैं जिसका लक्ष्य पति की ओर है। सूफी मत तथा सखी सम्प्रदाय से प्रभावित होकर सन्त सम्प्रदाय में ये नाम ईश्वर के लिए प्रचलित हो गये प्रतीत होते हैं। भक्त अपने को ईश्वर (प्रियतम) की प्रेयसी समझता है।

प्रजापति—देखिए कर्त्ता।

प्रणव[3]—यह शब्द ओम् के ही अर्थ में आता है।

ब्रह्म—उसे कहते हैं जो नित्य, शुद्ध स्वरूप, ज्ञानी, मुक्त, सर्वज्ञ तथा सर्वशक्तिमान् है[4]। (देखिए, दर्शन प्रवृत्ति में ब्रह्म)

मलिक, मालिक—यह दोनों विजातीय शब्द स्वामी के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

मायाकांत—प्रकृति का नाम माया है जिसे सांख्य दर्शन में प्रधान कहा गया है। अतः ईश्वर (पुरुष) का नाम मायाकांत हुआ। (देखिए दर्शन अंतर्गत माया)

वरनाम—वर का अर्थ श्रेष्ठ होता है। ईश्वर का ही सर्वश्रेष्ठ नाम है।

विभु—शाश्वत तथा सर्व व्यापक होने से परमात्मा का नाम विभु है।

सच्चिदानंद—यह तीन शब्दों से बना है सत्+चित+आनन्द। सत् से अस्तित्व, चित् से चैतन्य और आनद से सुख स्वरूप ग्राह्य हुआ। इस शब्द में एक बात और भी दार्शनिक मालूम होती है। इसी शब्द से प्रकृति, जीव और ईश्वर का भेद ज्ञात हो जाता है। सत् प्रकृति का बोधक

---

[1] तै तौ आहि निरंजना आदि अनादि न आन।
कहन सुनन को कीन्ह जग आपै आप भुलान॥ (कबीर ग्रंथावली पृ० २२७)

[2] "नाद कोटि सहस्राणि विन्दु कोटि शतानि च। सर्वे तत्र लयं यान्ति यत्रदेवो निरंजन :"

[3] य उद्गीथः स प्रणवः यः प्रणवः स उद्गीथ (छां० १-५-१)

[4] अस्ति तावन्नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभावं सर्वज्ञं सर्वशक्तिसमन्वितं ब्रह्म (शा० भा०)

है। जीव में सत् तथा चित (चेतनता) रहते हैं। ईश्वर में सत्, चित् एवं आनंद तीनों गुण हैं। इस प्रकार तीनों गुणों से युक्त ईश्वर का नाम एक शब्द सच्चिदानंद से ही विदित हो गया।

सतगुरु—संत सम्प्रदाय में गुरु की महिमा बहुत गाई गई है। ईश्वर गुरु का भी गुरु है। उसके लिए सतगुरु[1] शब्द आया है। यथा :—

सतनाम[2] सत्यनाम—संतमतवालों ने इस शब्द का प्रयोग ईश्वर के अर्थ में किया है। दिल्ली के दक्षिण नारनोल में सतनामी सम्प्रदाय से यह नाम प्रचलित हो गया है।

सर्वगुण—ईश्वर सर्व श्रेष्ठ गुणों का आगार है इसलिए उसका नाम सर्वगुण पड़ा।

सर्व शक्तिमान्—कर्तृत्व, सर्वज्ञत्व, पूर्णत्व, नित्यत्व, व्यापकत्व आदि शक्तियों के कारण ईश्वर को सर्वशक्तिमान् कहा गया है।

साहब[3]—मालिक के समान यह विजातीय शब्द भी स्वामी अर्थात् ईश्वर के अर्थ में संत मत द्वारा प्रचारित हुआ। इसके दो विकृत रूप साहिब तथा साहेब भी पाये जाते हैं।

सृष्टि नारायण—देखिए कर्त्ता।

स्वयं प्रकाश, स्वयंभू—स्वयं प्रकाशित होने से ईश्वर का नाम स्वयं प्रकाश तथा स्वयं अस्तित्व में होने से स्वयंभू है।

स्वामी—स्वामी का अर्थ प्रभु अथवा ईश्वर होता है। यह राधा स्वामी सम्प्रदाय में अधिक प्रसिद्ध है। उस मत के अनुसार यह राधा स्वामी का आंशिक रूप है। राधा स्वामी मत के अनुयायी ईश्वर के अर्थ में इसका प्रयोग करते हैं।[4]

इनकी प्रार्थना से भी राधा स्वामी[5] ईश्वर का वाचक प्रतीत होता है :—

साईं शब्द भी स्वामी का अपभ्रंश है। इसको निर्गुणी साधुओं ने ईश्वर के अर्थ में प्रयुक्त किया है। जैनियों की गत उत्सर्पिणी के ग्यारहवें तीर्थंकर का नाम भी स्वामी था। संन्यासियों के लिए भी हिन्दुओं में उनके सम्मान के लिए स्वामी शब्द जोड़ दिया जाता है। इससे ये नाम अन्य प्रवृत्तियों में जा सकते हैं।

हंस नाथ—हंस शब्द पाँच अर्थों में प्रयुक्त होता है :—

(१) ईश्वर (२) जीव (३) सूर्य (४) पक्षी विशेष (५) हंसावतार।

(१) ईश्वर—श्वेताश्वतर उपनिषद् में हंस[6] शब्द ईश्वर के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

---

[1] सतगुरु सत्य पुरुष है अकेला, पिंड ब्रह्मंड ते बाहर मेला।
दूरि ते दूरि, ऊँच से ऊँचा, बाट न घाट गली नहि कूँचा (म० बा० पृ० ३७३)

[2] ॐ सतिनामु करता पुरख निरभौ निरवैर अकाल मूरति अजूनि
सैभं गुरु प्रसादि (ना० स० प० १८) सम्भवतः सन् १६०० के लगभग

[3] जहँ देखौं तहँ एक ही साहिब का दीदार।
(संतवाणी संगह प्रथम भाग पृ० ३३)

[4] Discourses on Radha Swami Faith पृ० १६२

[5] कृपा सिंधु समरथ पुरुष, आदि अनादि अपार।
राधास्वामी परम पितु, मैं तुम सदा अधार।

[6] एको हँसो भुवनस्यास्य मध्ये, सएवाग्निः सलिले संनिविष्टः।
तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पंथा विद्यतेऽयनाय॥ श्वेता० ६-१५
इसकी व्याख्या शंकर स्वामी इस प्रकार लिखते हैं :—
एकः परमात्मा हन्त्यविद्यादिबन्धकारणमिति हंसो।
अर्थात् अविद्या से उत्पन्न बंधन के कारणों को विनष्ट करने से ईश्वर का नाम हंस हुआ।

(२) जीव—आत्मा हंस इसलिए कहलाता है क्योंकि यह हंस तुल्य एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है और ब्रह्म को माया से पृथक् करता है। कठोपनिषद् में आत्मा को हंस[1] कहा है :—

संत सम्प्रदाय में भी जीव को हंस माना है क्योंकि वह नव द्वार के पिंजड़े में बन्द रहता है।[2] प्रायः सिद्ध साधु परमहंस के नाम से पुकारे जाते हैं।

(३) सूर्य—तुलसीदास ने रामायण में यह शब्द सूर्य के अर्थ में लिया है। यथा-हंस वंश अवतंत इत्यादि।

(४) पक्षी-विशेष—यह सुन्दर पक्षी अपनी कई विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध हैं :—

(क) वर्षा में यह मानसरोवर झील चला जाता है।

(ख) इस में क्षीर नीर पृथक् करने की शक्ति बतलाई जाती है।

(ग) ब्रह्मा इस पर सवारी करते हैं। इसी कारण ब्रह्मा को हंसनाथ कहते हैं।

(घ) प्राचीन काल में यह संदेशवाहक का काम देता था। दमयंती ने हंस के द्वारा ही नल को संदेश भेजा था।

(५) हंसावतार—विष्णु के २४ अवतारों में से एक हंसावतार[3] भी है : —

(हंस शब्द की विशेष व्याख्या इसलिए की है क्योंकि इसका प्रयोग कई प्रवृत्तियों में हुआ है।)

हजूर—(हुजूर) यह एक अत्यंत आदरसूचक विजातीय सम्बोधन है जिसका प्रयोग मुसलिम संस्कृति में पले हुए मनुष्य शासक, अधिकारी तथा अन्य संभ्रांत पुरुषों के लिए करते हैं। ईश्वर को संसार का अधिपति तथा अपने को उसका हजूरी (सेवक) मानकर संत सम्प्रदाय वाले इसका व्यवहार ईश्वर के लिए करते हैं।[4] इससे उपासक का अपने उपास्य देव के साथ सामीप्य प्रकट होता है।

हाकिम—संसार का शासन करने के कारण ईश्वर को हाकिम कहा गया है।

घ—गौण प्रवृत्ति द्योतक शब्द

(१) **वर्गात्मक**—(अ) जातीय—राय, शाह, सिंह, सिनहा। (आ) साम्प्रदायिक—पुरी, सागर।

(२) **सम्मानार्थक**—(अ) आदरसूचक—जी, श्री।

(३) **भक्ति परक**—आनन्द, इंद्र, ईश्वर, ओंकार, कांत, किशोर, कुमार, चंद, चन्द्र, चरण, जाहिर, झलक, दत्त, दयाल, दास, दीन, देव, नंदन, नाथ, नारायण, निधि, निरंजन, परम, पाल, प्रकाश, प्रताप, प्रसाद, प्रिय, प्रेम, बक्स, बल, बहादुर, ब्रह्म, भक्त, भगवान्, भूषण, मणि, मल, मित्र,

---

[1] हंस शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्
नृष द्वरस दृत सद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्बृहत् (कठोपनिषद् ५-२)

[2] उड़ जायगा हंस अकेला यह थोड़े दिन का मेला।

[3] यः सहस्रसमे सत्रे जज्ञे विश्वसृजामृषिः।
हिरण्यपक्षः शकुनिस्तस्मै हंसात्मने नमः॥
महाभारत—शांति पर्व अध्याय ४७, श्लोक ४९

[4] रूप नाम गुन सूँ रहित, पाँच तत्त सूं दूर।
चरन दास गुरु ने कही, सहजो क्रिपा हजूर॥ (सहज प्रकाश पृष्ठ ४१)

रंजन, रत्न, राज, राम, लाल, वल्लभ, बिहारी, व्रत, शरण, शिव, सरूप, सहाय, सुख, सुमिरन, सेन, सेवक, स्वरूप, हुकुम ।

हिन्दू समाज में मूर्ति पूजा की प्रधानता होने के कारण अमूर्त मूल प्रवृत्ति के साथ मूर्त गौण प्रवृत्तियों का समावेश भी इन नामों में पाया जाता है। षोडशोपचार मूर्त सगुण देव पूजा में ही संभव है। चरण, प्रसाद आदि शब्द मूर्ति-पूजा के ही द्योतक हैं। परा-पूजा के कल्पित प्रतीक भी उपासको ने प्रचलित किये हैं। इसके लिए ईश्वर के विराट् रूप की कल्पना की गई है। शंकर ने भी परापूजा स्तोत्र की रचना की है।

ङ—गौड़ शब्दों की विवृत्ति

आनन्द—भक्त ईश्वर के आनंद स्वरूप से आकृष्ट हुआ है। और स्वयं भी आनंद की प्राप्ति का अभिलाषी है।

इन्द्र—यह शब्द श्रेष्ठ के अर्थ में मूल प्रवृत्ति की विशेषता बतलाता है अथवा उपाधि सूचक होता है और जब स्वामी के अर्थ में प्रयुक्त होता है तो समस्त पद मूल (प्रवृत्ति) का अंश बन जाता है।

ओंकार—यह परब्रह्म वाचक शब्द प्रणव है। पुनरुक्ति से आराधक की प्रगाढ़ भक्ति व्यञ्जित होती है।

कांत—यह शब्द प्रिय तथा स्वामी के अर्थ में इष्टदेव की विशेषता बतलाता है और भक्त की कांतासक्ति का भी सूचक है।

किशोर—(कुमार, नंदन, लाल) भक्त ईश्वर के प्रति अपना वात्सल्य प्रेम दिखलाता है। पिता तुल्य परमात्मा मे अपने संरक्षण की भावना रखता है।

कुमार—देखिए किशोर।

चद या चंद्र—चंद्रमा अपने प्रकाश, शीतलता तथा सौंदर्य[1] से सब के मन को प्रसन्न करता है। यहाँ पर भक्त अपने भगवान् में चंद्र के स्वरूप का आरोप करता है और उसकी यह कामना है कि ईश्वर भी उसी प्रकार उसके हृदय को आह्लादित करे। चंद्र, श्रेष्ठत्व के अर्थ में भी आता है। वह अपने पूज्य देव को सबसे उत्तम समझता है। चंद्र और चंद दोनों शब्द प्रचलित हैं। तत्सम शब्दों के साथ प्रायः चंद्र का प्रयोग किया जाता है।

चरण—भक्त ईश्वर के चरणों की अर्चना कर अपनी मंगल-कामना चाहते हैं। आत्म निवेदनासक्ति का बोधक है।

जाहिर—यह शब्द उर्दू भाषा का है जो विख्यात के अर्थ में प्रयुक्त होता है। ईश्वर का विशेषण है।

जी—यह शब्द जीव का अवशिष्ट है और आदर के लिए प्रयुक्त होता है। ताल्लुकेदारों तथा राजाओ के लिए जी के स्थान में जू का प्रयोग देखा जाता है।

झलक—(प्रकाश) इससे इष्टदेव का गुण प्रकट होता है। उपासक अपने उपास्य देव की झांकी का आकांक्षी है।

दत्त—प्राचीन काल में यह शब्द वैश्यों की उपाधि[1] का व्यंजक था। किन्तु आजकल दत्त का प्रयोग दिया गया के अर्थ में सर्व साधारण में प्रचलित हो गया है। केवल शर्मा तथा वर्मा शब्द ही जातियो के सूचक रह गये हैं, दास शब्द भी सब जातियों में प्रयुक्त होने लगा है और अपने इष्टदेव के प्रति सेवा भाव प्रदर्शित करता है। दत्त शब्द से ईश्वर की दानशीलता प्रकट

---

[1] शर्मा देवश्च विप्रस्य वर्मा त्राता च भूभुजा।
भूतिर्दत्तश्च वैश्यस्य दासः शूद्रस्य कारयेत ॥

होती है। उर्दू का वक्स शब्द भी इसी अर्थ का बोधक है। दीन से भी दत्त का अभिप्राय सिद्ध होता है।

दयाल (दयालु)—भक्त अपने देवता की दयालुता पर विशेष आस्था रखता है।

दास (सेवक)—मनुस्मृति[1] के अनुसार दास शब्द पहले शूद्रों की उपाधि समझा जाता था परन्तु आजकल प्रत्येक जाति के मनुष्य इसे दास्य भाव के अर्थ में प्रयोग करते हैं।

दीन—यह शब्द भक्त के दैन्य भाव की व्यञ्जना करता है, परन्तु अधिकतर दत्त के अर्थ में ही लिया जाता है।

देव—यह शब्द दिव् धातु से निकला है। इसका अर्थ है चमकना। यह ईश्वर के गुणों को प्रकट करता है। मनुस्मृति[1] के अनुसार यह पहले ब्राह्मणों के नाम के साथ लगाया जाता था परन्तु आजकल इस नियम का पालन नहीं होता और प्रत्येक व्यक्ति अपने नाम के साथ इसे प्रयोग करता है। यह प्राय: सम्मानार्थ देवता, राजा, महाराजा तथा संभ्रांत पुरुषो के नाम के आगे प्रयुक्त किया जाता है।

नन्दन—यह शब्द नन्द (प्रसन्न करना) से बना है और पुत्र का बोधक है (देखिए किशोर)

नाथ—यह शब्द स्वामी के अर्थ में आता है और सम्मानार्थ देवता, राजा-महाराजा तथा संभ्रांत पुरुषों के नाम के आगे प्रयुक्त होता है। गोरखपंथी साधुओं की उपाधि-विशेष है।

नारायण—नारा शब्द जल तथा जीव के अर्थ में आता है और अयन स्थान के अर्थ में[1]। ईश्वर को नारायण इसलिए कहते हैं कि यह सब जीवों में व्याप्त है। पुराणों में नारायण विष्णु का नाम है क्योंकि वे क्षीर-सागर में शेषशय्या पर शयन करते हैं। परन्तु आजकल नारायण देव शब्द की भाँति आदर-सम्मान के लिए प्रयुक्त हो रहा है, अशिक्षित मनुष्य इस शब्द को कई प्रकार से लिखते हैं यथा—नरायन, नारायन, नराइन, नरेना।

निधि—भक्त अपने इष्टदेव को अमूल्य निधि के रूप में मानता है।

निरञ्जन—यह शब्द ईश्वर के शुद्ध स्वरूप को प्रकट करता है।

परम—इससे इष्टदेव की महत्ता सूचित होती है।

पाल—यह शब्द ईश्वर के संरक्षण गुण को प्रकट करता है।

पुरी—यह सम्प्रदाय सूचक शब्द दशनामी[2] साधुओ के एक वर्ग के लिए प्रयुक्त होता है।

प्रकाश—यह इष्टदेव के तेज की ओर संकेत करता है।

प्रताप—भगवान् के गुण का बोधक है।

प्रसाद—यह शब्द इष्टदेव के अनुग्रह का द्योतक है। पौराणिक नवधा भक्ति में इष्टदेव के सम्मुख कुछ नैवेद्य (प्रसाद) रखा जाता है और देवता पर चढ़ाने के पश्चात् भक्तों को वितरण कर दिया जाता है।

प्रिय—भक्त तथा भगवान् दोनों के प्रेम की व्यञ्जना करता है।

प्रेम—यह शब्द भी प्रिय शब्द के समान पारस्परिक स्नेह का सूचक है। भक्त अपने इष्टदेव के प्रति चार प्रकार से प्रेम प्रदर्शित कर सकते हैं।

---

[1] आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः।
ताघदस्यायनं पूर्वं तेन नारायण स्मृतः॥ मनु० १, १०

[2] तीर्थ, आश्रम, गिरि, पर्वत, बन, अरण्य, पुरी सागर, भारती तथा सरस्वती—ये दस प्रकार के संन्यासी हैं जिनका वर्गीकरण शंकराचार्य के एक शिष्य ने किया था।

१—दास्यासक्ति—सेवक-स्वामी का प्रेम,

२—वात्सल्यसक्ति—पुत्र-पिता का प्रेम,

३—सख्यासक्ति—मित्र-मित्र का प्रेम,

४—कान्तासक्ति—पत्नी-पति का प्रेम,

बक्स—(देखिए दत्त)

बहादुर—यह उर्दू शब्द इष्टदेव का गुण बतलाता है।

भगवान्—यह शब्द इष्टदेव के ऐश्वर्य का द्योतक है। आजकल यह देव शब्द की तरह देवताओं तथा अन्य आदरणीय व्यक्तियो के नाम के साथ प्रयुक्त होता है।

भूषण—निधि के समान आराधक अपने आराध्यदेव को अमूल्य अलंकार की तरह प्रेम करता है अथवा वह स्वयं भगवान् का आभूषण है।

मणि—रत्न—(देखिए भूषण)

मल—यह शब्द कई अर्थ में प्रयुक्त हो सकता है।

(१) मल—(कूड़ा, करकट) इससे भक्त का अंधविश्वास प्रकट होता है। भक्त अपने को अत्यंत क्षुद्र मानता है।

(२) **मल**—यह मल्ल का अपभ्रंश रूप प्रतीत होता है जो श्रेष्ठत्व के अर्थ में प्रयुक्त होता है और मूल प्रवृत्ति की विशेषता बतलाता है।

(३) **मल**—यह गोरखपुर की ओर ठाकुरों की एक जाति-विशेष है। इस अवस्था में यह जातिसूचक गौण प्रवृत्ति होगा। संभव है यह लोग मल्ल देश के रहनेवाले हों। इस जाति के लोग शाही भी कहलाते हैं।

(४) **मल** से मलमास का अभिप्राय भी इंगित होता है। यह शब्द प्रायः वैश्यों के नाम के साथ लगाया जाता है।

मित्र—यह शब्द सख्य भाव प्रदर्शित करता है। वेद मंत्र में आत्मा को परमात्मा का मित्र[1] कहा गया है।

रंजन—यह शब्द भगवान् के आनद गुण का द्योतक है अथवा इष्टदेव को प्रसन्न करने के अर्थ में प्रयुक्त कर सकते हैं।

रत्न—यह महार्घता, दृढ़ता, विरलता तथा सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है और निधि के समान भक्तों को संचनीय है। चंद्र के समान यह भी श्रेष्ठत्व का सूचक है।

राज—यह राजा का रूप है और ईश्वर का महत्त्व बतलाता है।

राम—सर्वव्यापी होने से ईश्वर को राम[2] कहा गया है। किन्तु पुराणों में विष्णु के अवतार राम का महत्त्व विशेष होने के कारण जनता में अवतारी राम की आराधना अधिक प्रचलित हो गई है। इसलिए मनुष्य प्रायः अपनी भक्ति प्रदर्शित करने के लिए राम शब्द अपने नाम के साथ लगा देते हैं।

राय—यह शब्द राजा का अपभ्रंश है। कुछ कायस्थ तथा वैश्यों की उपाधि भी है। ब्रह्म भट्ट जाति के मनुष्य अपने नाम के आगे राय शब्द का प्रयोग करते हैं।

---

[1] द्वासुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्यो अभि चाकशीति॥
ऋ० मं० १। सू० १६४। मं० २०॥

[2] रमन्ते योगिनोऽस्मिन् अथवा रमन्ते सर्वं भूतेषु।

लाल—यह वात्सल्य भाव का द्योतक है (देखिये किशोर)। बघेलखंड के कुछ राजपूत उपाधि के रूप में लाल शब्द अपने नाम के पहले लगाते हैं। कुछ मनुष्यों का कहना है कि राजा का पहला लड़का युवराज कहलाता है और दूसरा लड़का तथा उसकी संतति लाल की उपाधि से प्रसिद्ध हो जाती है।

वल्लभ—कांतासक्ति का सूचक है और प्रिय के अर्थ में आता है।

विहारी—तन्मयासक्ति का द्योतक है।

व्रत—भक्त की ईश्वर आराधना की प्रतिज्ञा का सूचक है।

शंकर—यह शब्द इष्टदेव के कल्याण-स्वरूप का बोधक है और उपासक की गुणासक्ति प्रदर्शित करता है।

शरण—इससे भक्त की आत्मनिवेदनासक्ति का बोध होता है।

शाह—यह फारसी शब्द राजा के अर्थ में प्रयुक्त होता है। मुसलिम फकीरों के नाम के साथ भी आदर के लिए प्रायः जोड़ दिया जाता है। कुछ मैदान के क्षत्रिय तथा कुछ पर्वतीय वैश्य अपने नामों के साथ इस शब्द का प्रयोग करते हैं। निम्न श्रेणी के वैश्य इसका अपभ्रंश रूप साहु अपने नाम के आगे लिखते हैं। गोरखपुर के मल्ल ठाकुर अपने नामों के आगे शाही प्रयुक्त करते हैं। जब यह शब्द किसी अर्थ का सूचक नहीं होता तब वह जाति के अर्थ में समझा जाता है। साहु को कुछ व्यक्ति साधु का विकसित रूप मानते हैं।

श्री—यह शब्द नाम के पहले सम्मानार्थ प्रयुक्त होता है। पहले श्री प्रयोग करने का विधान अनेक प्रकार से था।[1]

प्रायः संन्यासियों के नाम के पहले १०८ श्री प्रयोग करते देखा गया है।

सरूप—सरूप तथा स्वरूप शब्दों से आराधक की इष्टदेव के प्रति रूपासक्ति प्रकट होती है।

सहाय—यह शब्द ईश्वर का महत्त्व तथा भक्त की गुणासक्ति प्रकट करता है।

सागर—देखिए पूर्वोल्लिखित पुरी।

सिंह, सिनहा—सिंह शब्द हिंस् धातु का विपर्यय रूप है।[2] सिंह अपनी वीरता, विकरालता तथा शौर्य के लिए प्रसिद्ध है, इसलिए क्षत्रियों ने अपने नाम के साथ सिंह लगाना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार यह जाति सूचक शब्द हो गया। इसके बाद सिक्खों ने इस शब्द को अपने नाम के साथ प्रयोग किया। अमृत पान के बाद सिक्ख बालक सिंह कहलाता है तथा लड़की कौर (कुमारी)। धीरे-धीरे इस शब्द का प्रचार कुछ कायस्थों में भी आरम्भ हो गया। पूर्वी प्रान्त के कायस्थ अंग्रेजी प्रभाव के कारण सिंह के स्थान पर सिनहा लिखने लगे। इसका विकृत रूप सिंध अब प्रयोग में नहीं आता। उपर्युक्त प्रकार के जाति या धर्म सूचक नाम शब्द-समुच्चय कहलाये जा सकते हैं, क्योंकि उनमें सिंह का कोई विशेष अर्थ न होकर जातिपरक भाव का ही बोध होता है। किन्तु समस्त पद नाम में सिंह श्रेष्ठत्व का अर्थ देता है। कुर्मी, अहीर आदि जातियाँ भी जो अपनी गणना क्षत्रिय वर्ण में करती हैं अपने नाम के साथ सिंह शब्द का प्रयोग करती हैं। पश्चिम की ओर राजस्थान पहुँचते-पहुँचते इसका रूप "सी" हो गया। गुजरात के नरसी भगत में यही सिंह का रूपान्तर है जो नृसिंह से बिगड़ कर बन गया है। पंचानन की हिंसात्मक प्रवृत्ति के पाँच रूपों में से सिंह सिनहा तथा सी अभी प्रचलित हैं। सिंघ केवल अंग्रेजी वर्तनी में ही दिखलाई देता है, सींग रूप इस प्रकार लोप हो गया जैसे गदहे के सिर से सींग।

---

[1] श्री लिखिए षट् गुरुन को, पाँच स्वामि रिपु चारि।
तीन मित्र दो भ्रात को, एक पुत्र अरु नारि॥

[2] भवेद्वर्णागमाद्धंसः सिंहो वर्ण विपर्ययात्॥

सुमिरन—ईश्वर का स्मरण करना या ध्यान धरना। नवधा भक्ति[1] का एक भेद।

सेन—यह पूरक शब्द आश्रित के अर्थ में आता है।

सेवक—इस शब्द से दास्यासक्ति का बोध होता है।

स्वरूप—(देखिए सरूप)

हुकुम या हुक्म—यह विजातीय भाषा का शब्द भक्त की भगवान के प्रति दास्यासक्ति प्रदर्शित करता है। कभी-कभी धर्म-ग्रंथ के उपदेश अथवा शब्द भी उनके अनुयायियों द्वारा इसी नाम से अभिहित होते हैं।

३—विशेष नामों की व्याख्या

अखंडानन्द—अखंड तथा आनंद पृथक्-पृथक् दोनों शब्द ईश्वर वाचक हैं और दोनो के योग से बना हुआ अखंडानंद नाम भी उसी का अर्थ देता है। इसका विग्रह अखंड है आनंद जिसका अर्थात् ईश्वर। इसी प्रकार आनंद के योग से विशेषणों द्वारा बने हुए योगिक शब्द भी ईश्वर के अर्थ में आ सकते हैं जैसे अखिलानंद, नित्यानंद, परमानंद, पूर्णानंद, विरजानंदादि।

अगम स्वरूप—यह समस्त पद ईश्वरवाची हैं क्योंकि ईश्वर के अज्ञेय होने से उसका स्वरूप भी अवगत नहीं है।

अलख निरंजन—ये दोनो शब्द ईश्वरवाची हैं। आवृत्ति से भक्त का प्रगाढ़ अनुराग प्रकट होता है। इसमें वीप्सालंकार है।

आत्माराम—ईश्वर प्रत्येक आत्मा में रमण करता है। इससे उसके सर्व व्यापकत्व का बोध होता है। आत्मा भी ईश्वर का वाचक होता है।

आनन्द ब्रह्म शाह—आनंदमय ब्रह्म जो समस्त संसार का स्वामी है।

आनंद सागर—इस समस्त पद से ईश्वर का बोध होता है। यदि सागर को दशनामी संन्यासियों का एक वर्ग माना जाय तो आनंद शब्द अकेला ही ईश्वर का वाचक होगा।

ओजो मित्र—ओज से ईश्वर का ग्रहण होता है। आराधक ओजः स्वरूप परमात्मा से ओज (तेज, बल, प्रताप) की याञ्चा करता है।[2]

ओमेश्वर दयाल—इस नाम में परमात्मा के दो नाम ओम् तथा ईश्वर संकलित हैं। इस वीप्सालंकार से भक्त की भावना का प्रबल आवेश प्रकट होता है। दयाल गौण प्रवृत्ति से ईश्वर के गुण की व्यंजना होती है।

जी राज मल—जी शब्द जीव का अवशिष्ट अंश है, जीवों का राजा ईश्वर है क्योंकि वही उन पर अनुशासन करता है।

झलक निरंजन स्वरूप—भक्त ईश्वर के निर्मल स्वरूप के प्रकाश (झलक) की झाँकी चाहता है।

नूर दयाल—मुसलमानों में नूर[3] नाम अल्लाह (ईश्वर) का है। प्रकाश स्वरूप होने से ईश्वर को नूर कहा गया है।

---

[1] श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्॥ भागवत ७-५-२३

[2] ओजोऽसि ओजोमयि धेहि।

[3] ज्यों रवि एक अकाश है ऐसे सकल भरपूर।
दादू तेज अनंत है अल्ला आले नूर॥ (दादू)

पतिपाल—इस नाम से कई भावनाएँ उद्बोधित होती हैं (१) यह प्रतिपाल का अपभ्रंश है और रक्षक के अर्थ में प्रयुक्त होता है। (२) पति-लज्जा अथवा प्रतिष्ठा के अर्थ में भी व्यवहृत होता है अतएव पतिपाल का आशय लज्जा का रक्षक अर्थात् ईश्वर हुआ। पति राखन नाम से भी यही भाव प्रदर्शित होता है। (३) पति का अर्थ स्वामी भी होता है। इससे माधुर्य भाव भी प्रकट होता है। संत तथा सूफ़ी सम्प्रदाय में भक्त ईश्वर को अपना पति तथा अपने को उसकी पत्नी मानता है। पतिराज तथा पतिराम नाम भी इसी अंतिम भाव के द्योतक हैं।

परमहंस भक्तसिंह—हंस जीव को कहते हैं अतः परमहंस परमात्मा का वाचक है। समस्त नाम का आशय परमात्मा के भक्तों में श्रेष्ठ हुआ। सिंह यहाँ सार्थक है और समस्त पद बनाता है। सिद्ध साधु-सन्तों को भी परम हंस कहते हैं। कदाचित् संज्ञी किसी परम हंस के आशीर्वाद का फल हो।

बंधुदास—ईश्वर को बंधु माना गया है।[1]

बालमसिंह—बालम शब्द वल्लभ का विकृत रूप है जो प्रिय पति या स्वामी के अर्थ में आता है। जीव ईश्वर को अपना प्रियतम समझता है। संत सम्प्रदाय से इस प्रकार के शब्दों की सृष्टि हुई।

ब्रह्म ओंकार—इस नाम में निर्गुण ब्रह्म तथा सगुण ओंकार (शिव) के सम्मिश्रण का आभास पाया जाता है। यहाँ पर मूर्तामूर्त का सम्मिश्रण है। अथवा दोनों पर्याय शब्द ईश्वर वाचक हैं (वीप्सालंकार)

ब्रह्म भूषण प्रसाद—ब्रह्म भूषण का अभिप्राय ब्रह्म है। भूषण जिसका अर्थात् साधु-संन्यासी या भक्त। उसका प्रसाद (अनुग्रह) अर्थात् साधु महात्माओं की कृपा से प्राप्त पुत्र। ब्रह्म-रत्न का भी यही आशय है। दूसरा आशय यह है कि भक्त ब्रह्म को ही अमूल्य आभूषण समझता है अथवा वह स्वयं ब्रह्म का अलंकार है।

ब्रह्म वल्लभ—इसके दो अर्थ हो सकते हैं (१) ब्रह्म का प्यारा (२) ब्रह्म है प्रिय जिसको।

ब्रह्मानन्द—इसका विच्छेद दो प्रकार से हो सकता है (१) ब्रह्मा+आनंद इस दशा में ब्रह्मा के अंतर्गत जायगा (२) ब्रह्म+आनंद जिसका अर्थ है ब्रह्म का आनंद अथवा ब्रह्म ही आनंद है जिसका।

विरजानन्द—यह नाम विरज+आनंद से बना है। विरज का अर्थ निर्मल होता है।

वेदकान्त—वेद ईश्वरीय ज्ञान है जो सृष्टि के आदि में चार ऋषियों द्वारा प्रकट होता है।

श्री ओम् भगवान् चंद्र—यह विचित्र नाम अभिभावक की विलक्षण बुद्धि का परिचय देता है। श्री आदर सूचक है, ओम् मूल प्रवृत्ति, भगवान् तथा चन्द्र गौण प्रवृत्ति के बोधक हैं। इसमें भक्त चार देवताओं को प्रसन्न करने का अभिलाषी है।

(१) **श्री**—लक्ष्मी

(२) **ओम्**—सर्वव्यापक सर्वज्ञ तथा सर्वशक्तिमान् ब्रह्म का वाचक है।

(३) **भगवान्**—इससे तात्पर्य विश्व के पालन करनेवाले विष्णु से है।

(४) **चंद्र देव**—यह चारों देवता चतुर्वर्ग के देनेवाले हैं। श्री से अर्थ, ओम से धर्म, भगवान् से सांसारिक सुख समृद्धि और चंद्र से मुक्ति। इस प्रकार भक्त अभ्युदय तथा निःश्रेयस दोनों सिद्धियाँ चाहता है। चंद्र तथा भगवान् सौंदर्य तथा ऐश्वर्य के भी बोधक हैं। इससे प्रवृत्ति की विचित्रता अथवा कौतूहल प्रियता की अभिव्यञ्जना भी होती है।

श्रुतिकांत—श्रुति का अर्थ वेद होता है देखिए वेदकांत।

---

[1] त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव। स नो बंधुर्जनिता स विधाता··· यजु० अ० ३२ मं० १०।

सकलानन्द—यह नाम सकल + आनन्द दो शब्दों से बना है। सकल का अर्थ सब, सम्पूर्ण होता है। इसका आशय हुआ सम्पूर्ण (ईश्वर) का आनन्द अथवा विशेषण विशेष्य मान कर सम्पूर्ण आनन्दमय ईश्वर के अर्थ में ले सकते हैं।

सच्चिदानन्द—देखिए मूल प्रवृत्ति में।

सज्जन सिंह—सज्जन प्रियतम के अर्थ में आता है। साजन तथा सजन इसी के विकृत रूप हैं (माधुर्य भाव)। पति के अर्थ में अमीर खुसरो ने अपनी कहमुकरियो में इसका अधिक प्रयोग किया है।[1]

सदानन्द—इसके दो विच्छेद हैं (१) सदा+आनन्द (२) सत्+आनन्द। ये दोनों अर्थ ईश्वर के वाचक है।

सर्वेश्वर दयाल—सब का स्वामी होने से ईश्वर का नाम सर्वेश्वर है।

हंसनाथ—देखिए मूल प्रवृत्ति में।

हजूर सिंह—यदि यह समस्त पद माना जाय तो सिंह शब्द जातिसूचक न होकर श्रेष्ठत्व का बोधक होगा। इस दशा में इस नाम का अर्थ होगा श्रेष्ठ स्वामी (देखिए मूल में हजूर)।

हृदयनन्दन—हृदय तथा हृत् शब्दों से निर्मित शिष्ट सम्बोधन कान्तासक्ति की अभिव्यञ्जना करते हैं।

४—समीक्षण

नामों के इस संकलन में ब्रह्म के दो रूप व्यक्त हो रहे हैं। अनादि लाल, निराकार आदि नाम उसके निर्गुण स्वरूप को प्रदर्शित करते हैं तथा सर्वशक्तिमान लाल, दयालु आदि नामों से उसके सगुण रूप का बोध होता है। प्रथम उसकी निषेधात्मक विशेषताओं को प्रकट करता है एवं द्वितीय से उसके विधेयात्मक गुणों का ग्रहण होता है। सगुण से तात्पर्य पौराणिक देवता से नहीं, अपितु आनन्द, शुद्ध, नित्यादि गुणों से युक्त अमूर्त ईश्वर के अर्थ में ही इस शब्द का प्रयोग यहाँ पर किया गया है। अमूर्त ईश्वर, अगम, अजन्मा, अनन्त, अनादि, अनुपम, अभय, अमर, ज्ञानी, दयालु, नित्य, निरंजन, निराकार, निर्विकार, पवित्र, विभु, सच्चिदानन्द स्वरूप, सर्वशक्तिमान, सर्वेश्वर, सृष्टिकर्त्ता, आदि लक्षण युक्त है।[2] ईश्वर के ये नाम उसके गुण, कर्म, स्वभाव, तथा स्वरूप पर अवलंबित हैं। यही प्रवृत्ति नामों में भी व्याप्त है। दयासागर प्रजापति, अविनाश चंद, सच्चिदानन्द सिनहा आदि नाम इसी प्रकार के उदाहरण हैं। परमात्मा की इन्हीं चार बातों से आकृष्ट होकर आराधक अपने नाम रखते हैं।

भारत की धार्मिक परिस्थिति के अनेक स्तर प्रस्तुत नामों में स्पष्ट दिखलाई पड़ते हैं जिन्हें तीन कालों में विभाजित किया जा सकता है :—

(क) वेदान्त काल (ख) निर्गुणी सन्त काल तथा (ग) आधुनिक काल।

(क) वेदान्त काल—शंकर स्वामी का वेदान्त सामान्य जनता के लिए गूढ़ तथा नीरस था। अतएव वह शिक्षित समुदाय में ही सीमित रहा। इस काल के नामों में ये विशेषताएँ पाई जाती हैं।

(१) नञ् समासान्वित नाम अद्वैतानन्द, अभेदानन्द, अव्यक्तानन्द।

---

[1] **जब मोरे मंदिर में आवे। सोते मुझको आन जगावे॥**
पढ़त फिरत वह विरह के अच्छर। ए सखि सज्जन ! ना सखि मच्छर॥

[2] **ईश्वर सच्चिदानंदस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है। (आर्य समाज का दूसरा नियम)**

(२) ब्रह्म, आत्मा, मायादि शब्दों से निर्मित नाम-ब्रह्मदेव, आत्मानन्द, मायाकान्त।

(३) शंकराचार्य स्वयं शैव थे अतः कुछ नाम मूर्तामूर्त दोनों श्रेणियों में आ सकते हैं। जैसे अविनाशचन्द्र, अच्युतानन्द, सच्चिदानन्द।

(४) ये नाम प्रायः शुद्ध तत्सम शब्दों से बने हैं?

(ख) निर्गुणी संत काल—नानक, कबीर, दादू आदि, मत प्रवर्तक संत प्रायः अशिक्षित, अल्प शिक्षित तथा निम्नश्रेणी के व्यक्ति थे। अतः उच्चकोटि की जनता पर इनका कोई प्रभाव न पड़ा। इनके नामों में निम्नलिखित बातें विशेष उल्लेखनीय हैं।

(१) निषेधात्मक नाम—अकलू, निरंकार देव, अनूप चंद्र, अलखनिरंजन।

(२) मुसलमानों के संसर्ग में रहने के कारण कुछ विजातीय शब्द इनके नामों में पाये जाते हैं। मालिक, साहब, हजूर, हाकिम आदि।

(३) सूफ़ी तथा सखी सम्प्रदाय से प्रभावित होने से इस प्रकार के नाम प्रचलित हो गये। यथा दूल्हासिंह पीतम दास, प्रियतम चन्द्र, बालम सिंह, सजनसिंह, सांईदास हृदयेश।

(४) इस काल के नामों में विकृत शब्द अधिक मिलते हैं।

(ग) आधुनिक काल

(अ) इस युग के नामों में सुधार करने का श्रेय आर्यसमाज को सबसे अधिक है। इन नामों में मुख्यतः ये लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं।

(१) निर्गुणात्मक नाम—निर्विकार शरण, विरजानन्द।

(२) वेद, विश्व तथा गुण विशिष्ट शब्दों से विनिर्मित नाम—विश्वपति, श्रुति कांत, विभुकुमार सर्वगुणप्रसाद।

(३) ओम् या प्रणव के सहयोग से निर्मित नाम ओमप्रकाश, ओमानन्द प्रणवकुमार आदि।

(४) विष्णु, इन्द्रादि वैदिक नाम ईश्वर के अर्थ में पुनः प्रयुक्त होने लगे हैं। किंतु मूर्तिपूजा के युग में ऐसे नाम भ्रमोत्पादक ही हैं क्योंकि उनको प्रायः मूर्त देवता वाचक ही समझा जाता है। अतः उनको इस प्रवृत्ति में सम्मिलित नहीं किया गया है।

(५) ये नाम लघु, शुद्ध तत्सम तथा प्रायः बिना गौण प्रवृत्ति सूचक शब्द के होते हैं। इन नामों में चरण, प्रसाद आदि षोडशोपचार या नवधा भक्ति सूचक शब्दों के स्थान में प्रताप, प्रकाश आदि गुण निर्देशक शब्द प्रयुक्त किये जाते हैं।

(आ) स्वामी शब्द से बने नाम राधास्वामी सम्प्रदाय की देन प्रतीत होती है, क्योंकि इस मत के अनुयायी राधास्वामी या स्वामी को निर्गुण अमूर्त ईश्वर के अर्थ में लेते हैं।

निर्गुणोपासना में मानस-आराधना ही सम्भव हो सकती है। उसमें ध्यान, धारणा तथा समाधि द्वारा ही ब्रह्म की प्राप्ति मानी गई है। भक्त उसके गुण तथा क्रिया कलाप का ही वर्णन कर सकता है। किंतु यहाँ बहुत से नामों में षोडशोपचार तथा नवधाभक्ति सम्बन्धी गौण प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं। इससे यह स्पष्ट है कि सगुण देव पूजा का हिन्दू समाज में प्रावल्य है। देवार्चना में ही श्रृंगार तथा लीलाओं को स्थान मिल सकता है। चरण सेवा, नैवेद्य अर्पण, नीराजनादि निर्गुण ब्रह्म की सम्भव नहीं। ऐसे नामों में निर्गुण ब्रह्माराधना तथा सगुण देव पूजा—इन दो विभिन्न प्रवृत्तियों का सम्मिश्रण पाया जाता है। जन साधारण में प्रचलित न होने से उनमें विकृत या अपभ्रंश रूप भी नगण्य ही हैं। करीम, मौला, हाकिम आदि केवल थोड़े से नामों में ही इसलाम धर्म का प्रभाव दिखलाई दे रहा है। सामान्य जनता की बुद्धि से परे होते हुए भी मूर्तिपूजा के इस युग में निर्गुण ब्रह्म प्रवृत्ति में इतने नामों का होना कुछ कम गौरव की बात नहीं है।

दूसरा प्रकरण

त्रिदेव*—१ ब्रह्मा

(१) गणना :—

(क) **क्रमिक गणना :—**

(१) नामो की सख्या १०१

(२) मूल शब्दो की संख्या ७०

(३) गौण शब्दो की संख्या २४

(ख) **रचनात्मक गणना :—**

एकपदी नाम	द्विपदी नाम,	त्रिपदी नाम,	चतुष्पदी नाम,	पंचपदी नाम—	योग
४	६०	३०	६	१	१०१

इसमें दो शब्द वाले नामों की संख्या अधिक है।

२—विश्लेषण

(क) **मूल शब्द :—**

(१) **एकाकी**—कर्त्ता, कर्त्तार, धातृ, परमेष्ठी, बरमा, बिरम, बिरमन, बिधि, बीधा, ब्रह्म, ब्रह्मा, विरचि, विरंची, श्रुतिधर।

(२) **समस्त-पदी**—अंबुज कुमार, अब्ज नारायण, कमल अयन, कमल किशोर, कमल कुमार, कमलदेव, कमल नाथ, कमल नारायण, कमल वास, कमलासन, कम्मल लाल, गिराराम, गिरेंद्र, चतुरानन, चिंतामणि, नलिनीकुमार, नियति देव, पंकज लाल, पदुम लाल, पद्म किशोर, पद्मगर्भ, पद्म देव, पद्मनारायण, पद्म प्रसाद, पद्माधार, प्रजापति, बागेश्वर, बानी राम, बानीसुर, भारतीराम, मेधापति, राजिव नारायण, वागीश, वागीश्वर, वाणीश, विद्याकांत, विद्यानिवास, विद्या-मोहन, विद्याराम, विद्या साहब, विमलेंद्र, विमलेश, विश्वकर्मा, शारदाकांत, शारदाराम, श्रुतिदेव, सरस्वती नारायण, सरस्वती मणि, सरोज कुमार, सारस पाल, सृष्टि नारायण, हंसदेव, हंसध्वज, हंसनाथ, हंस नारायण, हंसराज।

(ख) **मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ**

(१) **रचनात्मक :—**

मूल प्रवृत्ति द्योतक समस्त पदों की रचना इस प्रकार हुई है :—

(अ) कमल या उसके पर्यायवाची शब्दों के योग से—यथा :— अंबुज कुमार।

(आ) सरस्वती या उसके पर्यायवाचक शब्दो के योग से—यथा :—शारदा कांत।

(इ) हंसादि शब्दों के योग से—यथा—हंस नाथ।

(ई) कुछ समस्त पद ब्रह्मा के कार्य का वर्णन करते हैं-यथा :—प्रजापति।

*** त्रिदेवों का सुन्दर, सूक्ष्म परिचय इस आशीर्वाद में मिलता है।**

गवहा वाहनंयेषोंत्रिकचा कर भूषणम्।

लपसा पत्नयेमेषां ते देवाः पान्तु वः सदा॥

गरुड़-वृषभ-हंसारोही, त्रिशूल-कमंडल-चक्रधारी तथा लक्ष्मी-पार्वती-सरस्वती-पति—त्रिदेव तुम्हारी रक्षा करें।

(उ) कुछ शब्द उसकी आकृति का परिचय देते हैं—यथा :—चतुरानन।

(२) पर्यायवाचक शब्द :—

ब्रह्मा के अधिकतर नाम कमल तथा सरस्वती के पर्यायवाची शब्दों के योग से बने हैं। इन नामों में आये हुए दोनों शब्दो के पर्यायवाची इस प्रकार हैं :—

कमल—अंबुज, अब्ज, नलिनी, पंकज, पद्म, राजीव, सरोज, सारस।

सरस्वती—गिरा, भारती, मेधा, वाक्, वाणी, विद्या, विमला, शारदा।

(३) विकसित रूपों के तत्सम रूप :—

विकसित	तत्सम	विकसित	तत्सम
कर्त्तार	कर्त्ता	पदुमलाल	पद्मलाल
बरमा	ब्रह्मा	बागेश्वर	वागीश्वर
बिरम	ब्रह्मा	बानीराम	वाणीराम
बिरमन	ब्रह्मा	बानीसुर	वाणीश्वर
बीधा	बिधि	विरञ्ची	विरञ्चि

(४) विजातीय प्रभाव :—केवल साहब शब्द ही मुसलिम संस्कृति का द्योतक है।

(५) वीज कथा :—

इन नामों से ब्रह्मा का यह परिचय प्राप्त होता है :—

जन्मस्थान	कमल	(पद्मगर्भ)
आकृति	चारमुख	(चतुरानन)
पत्नी	सरस्वती	(वाणीश)
वाहन	हंस	(हंसदेव)
अवस्था	ज्येष्ठ	(परमेष्ठी)
कार्य	सृष्टिसृजन	(विश्वकर्मा)
	प्रजा पालन	(प्रजापति)

(ग) मूल शब्दों की निरुक्ति :—

कर्त्तार—यह कर्त्ता का विकृत रूप है। संसार को रचने के कारण ब्रह्मा को कर्त्ता कहा गया है।

गिराराम—गिरा अर्थात् सरस्वती में रमण करनेवाले ब्रह्मा।

गिरेंद्र—यह नाम गिरा + इन्द्र से बना है, गिरा (सरस्वती) के इन्द्र (स्वामी) अर्थात् ब्रह्मा।

चतुरानन—सरस्वती की उत्पत्ति के बाद ब्रह्मा उसको प्रेम की दृष्टि से देखने लगे। उस कुदृष्टि से बचने के लिए सरस्वती कभी दाहिनी ओर, कभी बायें ओर कभी पीछे छिपने लगी। जिधर जिधर वह छिपती थी उधर उधर ही एक नये मुख का आविर्भाव हो जाता था। अंत में सरस्वती आकाश की ओर उड़ी तो ब्रह्मा के सिर पर एक और सिर प्रकट हो गया उसको शिव ने काट दिया। श्रीमद्भागवत् में ब्रह्मा के चार सिरों की उत्पत्ति का हेतु इससे अधिक सुन्दर है।[1]

चिंतामणि—यह एक काल्पनिक मणि है जो अपने स्वामी की सब कामनाओं को पूर्ण करती है। ब्रह्मा भी सब कामनाओं को पूर्ण करनेवाला है। अतएव उसे चिंतामणि कहते हैं। अथवा

---

[1] तस्यां च अम्भोरुहकर्णिकायामवस्थितो लोकमपश्यमानः।
परिभ्रमन् व्योम्नि विवृत्तनेत्रश्चत्वारि लेभेऽनुदिशं मुखानि ॥१६॥
(तृतीय स्कंध अध्याय ८)

अमूल्य मणि के सदृश वह (ब्रह्मा) चिंतनीय है। तुलसीदास इस शब्द से राम की ओर संकेत करते है यथा :—

तुलसी चित चिंता न मिटे बिनु चिंतामणि[1] पहिचाने।

धातृ, प्रजापति—प्राणियों की सृष्टि करने तथा पालने के कारण ब्रह्मा को धातृ तथा प्रजापति कहते हैं।

नलिनी कुमार—ब्रह्मा की उत्पत्ति नलिनी अर्थात् कमल से हुई है।

नियति देव—ब्रह्मा को भाग्यविधाता माना गया है। इसलिए उनका यह नाम हुआ।

पदुमलाल—पदुम पद्म का अपभ्रंश रूप है। हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान् लेखक श्री पदुमलाल पुन्नालाल बक्सी का कहना है कि जो भावना मेरे पूज्य पिता जी की पदुमलाल नाम में पाई जाती है वह उसके परिवर्तित शुद्ध रूप पद्मलाल में नहीं दिखलाई पड़ती। अतएव वह अपने नाम में कोई परिवर्तन नहीं चाहते।[2] इसके विपरीत मेरे मित्र श्री वागेश्वरदयाल एम० ए० अपने नाम की कथा इस प्रकार बतलाते हैं। "महामारी के दिन थे, मेरा परिवार एक बाग में डेरा डाले हुए था। मैं उसी बाग में पैदा हुआ। मेरे मा बाप ने मेरा नाम बागेसर रक्खा। जब मै पढ़-लिखकर बड़ा हुआ तो मैंने अपना नाम बागीश्वरदयाल कर लिया।" इस अवस्था में बागेश्वर वाले नाम स्थान द्योतक प्रवृत्ति में जाने चाहिए। संस्कृत से अनभिज्ञ होने के कारण बागीश्वर के स्थान में मनुष्य बागेश्वर प्रयोग करने लगते हैं। यदि बाघेश्वर रूप माना जाय तो ये नाम शिव के साथ लिखे जायँगे।

पद्म गर्भ—यह नाम ब्रह्मा की उत्पत्ति के विषय में प्रकाश डालता है। ब्रह्मा विष्णु की नाभि से उत्पन्न कमल में पैदा हुए।[3]

परमेष्ठी—त्रिदेव में ज्येष्ठ होने के कारण ब्रह्मा को परमेष्ठी कहते हैं।

बागेश्वर—देखिए पदुमलाल।

वागीश, वागीश्वर, वाणीश, विद्याकांत—वाक्, वाणी, विद्या, यह सरस्वती के पर्यायी शब्द हैं। इसलिए इन नामों का अर्थ ब्रह्मा है।

विश्वकर्मा—विश्व का निर्माण करने से ब्रह्मा का यह नाम पड़ा।

श्रुतिधर—प्रलय के अंत में ब्रह्मा वेदो की रक्षा करता है।

सारसपाल—सारस कमल तथा हंस के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। एक से उत्पत्ति दूसरे से वाहन का संकेत है। एक ही नाम से दो काम सिद्ध होते हैं।

सृष्टिनारायण—सृष्टि रचना करने से यह नाम हुआ।

हंसनाथ—हंस ब्रह्मा का वाहन है।

हंसध्वज—ब्रह्मा की पताका पर हंस का चित्र होने से यह नाम पड़ा।

घ—गौण शब्द :—

(१) वर्गात्मक :—

---

[1] निर्गुणी संतों ने इसका प्रयोग ब्रह्म के लिए किया है—
'नानक कहत चेत चिंतामणि अंतहु होहि सहाई।

[2] "कुछ" नामक पुस्तक का 'नाम' प्रकरण देखिए।

[3] स पद्म कोशः सहसोऽवतिष्टत् कालेन कर्म प्रतिबोधितेन।
स्वरोचिषा तत्सलिलं विशालं विद्योतयन्नर्क इवात्मयोनिः ॥१४॥
श्रीमद्भागवत् महापुराण तृतीय स्कंध अध्याय ॥८॥

(अ) जातीय—शाह, सिंह, सिनहा।

(२) **भक्तिपरक**—आनन्द, इंद्र, कुमार, चंद्र, दत्त, दयाल, दास, दीन, देव, नाथ, नारायण, प्रताप, प्रसाद, बहादुर, राम, लाल, शरण, सहाय, स्वरूप।

(३) सम्मिश्रण :—

ब्रह्म—इस सम्मिश्रण में भक्त की तीन भावनाएँ पाई जाती हैं :—

(अ) ब्रह्म ही हंस नारायण (ब्रह्मा) है। इस रूपकालकार से दोनों देवों में अभिन्नत्व पाया जाता है।

(आ) अन्य देव के द्वारा इष्ट देव की आराधना की जाती है। ब्रह्म के हंस नारायण इस तत्पुरुष समास से यह भावना प्रकट होती है कि भक्त ब्रह्म के द्वारा ब्रह्मा के समीप पहुँचना चाहता है।

(इ) दोनों देवों में से एक को विशेषण दूसरे को विशेष्य माना जाय। यहाँ पर ब्रह्म विशेषण और हंस नारायण विशेष्य है। ब्रह्मा में निर्गुण ब्रह्म के गुणों का आरोपण किया गया है। देखिए विशेष नामो की व्याख्या में ब्रह्म हंस नारायण।

शंकर—इस सम्मिश्रण में भी उपर्युक्त तीनों भावनाएँ हैं। देखिए विशेष नामो की व्याख्या में ब्रह्मा शंकर।

ङ—गौण शब्दों की विवृत्ति

देखिए ईश्वर प्रवृत्ति के अंतर्गत गौण शब्दों की विवृत्ति।

(३) विशेष नामों की व्याख्या :—

अंबुज कुमार, अब्ज नारायण, कमल किशोर—कमल शब्द स्वतः ब्रह्मा का बोधक है किंतु जन साधारण में यह इस अर्थ में प्रचलित नहीं है। इससे इसका वाचक अर्थ सुन्दर, कोमल कमल का फूल ही समझा जाता है। अतः कमल सम्बन्धी समस्त पद कमल किशोर ब्रह्मा के अर्थ में लेना उपयुक्त होगा क्योंकि ब्रह्मा की उत्पत्ति कमल से हुई है।

कमलासन सिंह—कमल + आसन से कमलासन बना है। कमल में बास होने से यह ब्रह्मा के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

पद्माधार सिनहा—पद्माधार का विग्रह दो प्रकार से हो सकता है। (१) पद्म + आधार अर्थात् पद्म है आधार जिसका (ब्रह्मा) (२) पद्मा + आधार, पद्मा (लक्ष्मी) के आधार अर्थात् विष्णु इस अवस्था में यह नाम विष्णु के अन्तर्गत रहेगा। सिनहा शब्द सिंह का विकृत रूप है जिसका प्रयोग पूर्वप्रांतवासी विशेषतः बिहारी करते हैं।

बागेश्वर दयाल—बागेश्वर का शुद्ध रूप बागीश्वर है जो वाक्+ईश्वर से बना है। वाणी का स्वामी होने से यह ब्रह्मा का नाम हुआ। प्रायः बाग में उत्पन्न होने से भी बागेस या बागेश्वर नाम पड़ जाता है। देखिए सरस्वती के अंतर्गत विशेष नामों की व्याख्या में वागीश्वरी।

ब्रह्मदेव—ब्रह्म शब्द भी ब्रह्मा के अर्थ में प्रयोग होता है।

ब्रह्महंसनारायण—हिंदू समाज अपने इष्टदेव की मूर्तामूर्त अथवा सगुण निर्गुण इन दो रूपों में आराधना करता है। सगुण देव के रूप में ब्रह्मा हंस नारायण है क्योंकि हंस उनका वाहन है किंतु निर्गुण ब्रह्म के रूप में वह सर्वव्यापक, सर्वज्ञ तथा सर्वशक्तिमान् है। इन दो मूर्तामूर्त अंतर्भावनाओं का इस नाम में सम्मिश्रण पाया जाता है। हंस जीव के अर्थ में लेने से समस्त पद ब्रह्म का वाचक होगा (वीप्सालंकार)।

ब्रह्मा शंकर—इससे भक्त की दो भिन्न देवों के प्रति समनिष्ठा प्रतिभासित होती है। आराधक चाहता है कि ब्रह्मा तथा शंकर दोनो देव एक साथ ही प्रसन्न हो। अन्य भावना यह हो सकती है कि ब्रह्म हमारे लिए कल्याणकारी (शंकर) हो। तीसरी बात यह है कि उपासक सीधा शंकर तक न

जाकर ब्रह्मा के द्वारा शंकर तक पहुँचकर अपनी साधना-सिद्धि का अभिलाषी है। ऐसी दशा में उत्तर पद (शंकर) प्रधान होगा और यह नाम (ब्रह्मा शंकर) शिव प्रवृत्ति के अंतर्गत स्थान पायेगा। इस समस्त पद का विग्रह कई प्रकार से हो सकता है—एतदर्थ इनमें सम्बन्ध भी विभिन्न होंगे—(१) ब्रह्मा और शंकर—(द्वंद्व समास)—भक्त दोनों देवों के प्रति समान श्रद्धा रखता है। अतः इससे सम सम्बन्ध प्रकट होता है।

(२) ब्रह्मा ही शंकर है (कर्मधारय समास)—यह उपमेय उपमान सम्बन्ध दोनों के अभिन्नत्व का बोधक है (रूपकालंकार)।

(३) ब्रह्मा के शंकर (षष्ठी तत्पुरूप समास) इस साधन-साध्य सम्बन्ध से भक्त ब्रह्मा के द्वारा शंकर तक पहुँचना चाहता है।

(४) ब्रह्मा-शंकर (कर्मधारय समास)—यहाँ विशेष विशेष्य सम्बन्ध होने से एक विशेषण का कार्य करता है दूसरा विशेष्य का। इस प्रकार वे पारस्परिक विशेषता बतलाते हैं।

ब्रह्मेंद्र प्रताप सिंह—इसमें धार्मिक प्रवृत्ति के अतिरिक्त ऐश्वर्य, तेज आदि गुणो का भी बोध होता है। इससे यह नाम क्षत्रियो का प्रतीत होता है।

४—समीक्षण :

इस अल्पसंख्यक नाम संग्रह से विदित होता है कि ब्रह्मा की अर्चना जन साधारण से उठती जा रही है। इस ह्रास के कतिपय कारण हैं।

ब्रह्मा के न तो विष्णु के से अवतार ही थे और न शिव के सदृश उनके कुल में कोई पराक्रमी व्यक्ति ही हुए जो भक्तो की संख्याभिवृद्धि में सहायक होते और न उनमें कोई विशेष आकर्षक गुण ही था। उनकी पत्नी सरस्वती ने केवल थोड़े से पठित समाज में ही आदर पाया और उनके मानस पुत्र प्रायः संसार से विरक्त ही रहे। ब्रह्मा की पूजा उठने के कई कारण पुराणों में बतलाये गये हैं। इनके अतिरिक्त कुछ राजनीतिक कारण भी हो सकते हैं। जिससे उनके भक्तों का प्रभुत्व देश से उठ रहा प्रतीत होता है। ऐसा मालूम होता है कि उनके अनुयायी न जन समूह में और न शिष्ट समुदाय में अपना सिक्का जमा सके। उपासको की संख्या घटने से पंचदेवों भी में उनको स्थान न मिला, देश के अन्य स्थानों से उनकी महत्ता एवं सत्ता तिरोहित होती हुई दिखलाई देती है क्योंकि अब केवल पुष्कर में ही ब्रह्मा का एक मंदिर पाया जाता है। इस नाममाला से ब्रह्मा की पौराणिक कथा अति सूक्ष्म रूप से ही प्राप्त हो रही है।

——

त्रिदेव—२ विष्णु

१—गणना

क—क्रमिक गणना :—

(१) नामों की संख्या—८१७

(२) मूल शब्दों की संख्या—२६१

(३) गौण शब्दों की संख्या—१३४

ख—रचनात्मक गणना :—

एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	पंचपदी नाम	षट्पदी नाम
३४	३५६	३३४	७४	१८	१

योग ८१७

दो शब्दों के नामों की संख्या सबसे अधिक है।

विष्णु के प्राप्त मुख्य अभिधानों में न्यूनाधिक संख्या के विचार से यह क्रम दृष्टिगोचर होता है :—हरि १०३; भगवान् ४६; विष्णु ३८; मुकुंद २२; माधव १७।

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द :—

(१) **एकाकी** :—अच्युत, अजुग, अनन्त, उपेंद्र, कवलधारी, कमलाकर, कुमुद, गजाधर, गदाधर, गुप्तार, चक्की, चक्रधर, चक्रधारी, जगतार, जगधारी, जनार्दन, ज्योतिष, तारन, तुलसीधर, त्रिजुगी, त्रिलोकी, धनंजय, पद्मधर, पावन, प्रभु, बद्रीधर, बिशंवर, बिशंभर, बिशन, बिशुन, बिश्न, भगवन्त, भगवत, भगवन्ना, भगवान्, भगेलू, भगोले, भगौने, भग्गन, भग्गू, भागवत, मधुसूदन, मनधारी, मुकुंद, मुकुंदी, मुरहू, मुराहू, विट्ठल, विशुन, विश्वंभर, विश्वधर, विष्णु, वैकुंठ, शंखधर, शार्ङ्गधर, श्रीधर, सत्य, सगुन, सदातन, सलिका, सलेकू, सारंगधर, सालिक, सुदर्शन, हरि, हरिया।

(२) **समस्तपदी** :—अरविंदेक्षण, आदिपुरुष, इंदिरारमण, कमलनयन, कमलनेत्र, कमलमोहन, कमलाकांत, कमलाचन्द्र, कमलानाथ, कमलापति, कमलामोहन, कमलासुख, कमलेंद्र, कमलेश, कमलेश्वर, कौस्तुभचंद्र, कौस्तुभानन्द, गजराम, गजेंद्र, गयेंद्र, गरुड़ध्वज, चक्रपाणि चक्रपाल, चक्रेश्वर, चतुर्भुज, जगतपाल, जगदीश, जगदीश्वर, जगदेव, जगनायक, जगन्नाथ, जगपति, जगपाल, जगबंधु, जगमूरत, जगराज, जगरूप, जगेश्वर, जनेश्वर, जयकांत, जयनाथ, जयपति, जयपाल, जयरत्न, जयेंद्र, जागेश्वर, जैरक्खन, जैराखन, तुलसीनाथ, तुलसीरमण, तुलसीवल्लभ, त्रिभुवनसुख, देवलोक सिंह, ध्रुवनाथ ध्रुवपति, ध्रुवराज, नरवर, नरायन, नरैना, नरोत्तम, नलिनविलोचन, नागेंद्रनाथ, नारायण, पद्मकांत, पद्मनाभ, पद्मपाणि, पद्माकांत, पद्माधार, पद्मापति, पुंडरीकाक्ष, पुण्यदेव, पुण्यश्लोक, पुरुषोत्तम, बदरीराम, बद्रीनाथ, बद्रीनारायण, बद्रीराज, बद्रीविशाल, बैंकटेश, भक्तवत्सल, भक्तीश, मखदेव, माधव, माधो, मायाराम, मुनिप्राण, मुनीश, मुनीश्वर, मुनेश्वर, यज्ञदेव, यज्ञराम, यज्ञेश, यज्ञेश्वर, यागेंद्र, यागेश्वर, रमाकांत, रमानन्द, रमानाथ, रमानिवास, रमापति, रमाराम, रमेंद्र, रमेश, राजिवलोचन, लक्ष्मीकांत, लक्ष्मीनाथ, लक्ष्मीनिधि, लक्ष्मीनिवास, लक्ष्मीपति, लक्ष्मीप्रकाश, लक्ष्मीराज, लक्ष्मीराम, लक्ष्मीविलास, लक्ष्मीविहारी, लक्ष्मीसहाय, लक्ष्मेंद्र, लक्ष्मेश्वर, लखीचंद, लखीराम, लछीराम, लच्छीराम, लच्छुराम, लोकराज, लोकेंद्र, लोलापति, लोलासिंह,

लोलीराम, विजयकांत, विजयदेव, विजयनरेश, विजयपाल, विजयराज, विजयराम, विजयवल्लभ, विजयेंद्र, विजेंद्र, विमलदेव, विश्वकात, विश्वदेव, विश्वपति, विश्वपाल, विश्वरूप, वेंकटरमण, वेंकटेश, वेंकटेश्वर वैकुंठचंद्र, वैकुंठनाथ, वैकुंठराम, वैकुंठविहारी, व्यंकटेश, शातराम, शांताकार, शांतिस्वरूप, शालिग्राम, शिववल्लभ, शेषनारायण, शेषराज, शेषराम,, श्रीइंद्र, श्रीकरण, श्रीकांत, श्रीदेव, श्रीनंद, श्रीनन्दन, श्रीनाथ, श्रीनायक, श्रीनिकेत, श्रीनिधि, श्रीनिवास, श्रीनेति, श्रीपति, श्रीपाल, श्रीभावन, श्रीभूषण, श्रीमणि, श्रीमनोहर, श्रीमोहन, श्रीरंग, श्रीरंजन, श्रीरत्न, श्रीराज, श्रीवल्लभ, श्रीविलास, श्रीविहारी, श्रीश, श्रीसहाय, श्रीसिंह, श्रुतिनाथ, श्वेत वैकुंठ, सत्यदेव, सत्यनारायण, सदारंग, सालिगराम, सिरपत (श्रीपति), स्वर्गवीर, हंसनारायण हयवर।

टिप्पणी—(१) रचनात्मक—उपर्युक्त विष्णु के नामों का संगठन इस प्रकार हुआ है।

(अ) कुछ नाम उनकी स्त्री लक्ष्मी तथा उसके पर्यायवची शब्दों के योग से बने हैं। यथा—लक्ष्मीनिधि, श्रीनाथ।

लक्ष्मी के पर्यायवाची शब्द—इंदिरा, कमला पद्मा, मा, माया, रमा, लोला, श्री। श्री के योग से ८० नामों की रचना हुई है।

(आ) कुछ नाम उनके प्रिय पदार्थों के आधार पर रखे गये हैं यथा—गदाधर, चक्रधर, पद्मधर, शंखधर, शार्ङ्गधर, कौस्तुभानन्द।

(इ) कुछ नाम उनके सेवक जय-विजय से सम्बन्ध रखते हैं यथा :—जयेंद्र, विजयकांत।

(ई) कुछ नाम विष्णु की अचल मूर्तियाँ—जगन्नाथ, तथा बद्रीनाथ और चलमूर्ति शालग्राम परक हैं।

(उ) कुछ नाम उनके रूप तथा आकृति के परिचायक हैं यथा—पुंडरीकाक्ष, चतुर्भुज।

(ऊ) कुछ गुणीभूत नाम हैं—सत्यदेव, पुण्यदेव, अच्युत।

(ए) कुछ नाम सार्वभौम अधिकारसूचक हैं—विश्वपति, त्रिलोकराम, जगतपाल।

(ऐ) कुछ नाम उनकी अलौकिक लीलाओ पर अवलम्बित हैं—मधु सूदन

(ओ) कुछ नाम उनके स्वर्गधाम की ओर संकेत करते हैं :—वैकुंठनारायण।

(औ) कुछ नामो से उनका अनुपम क्रिया-कलाप प्रकट होता है :—मुकुंद।

विकृत या विकसित शब्दों के तत्सम रूप :—

विकृत	शुद्ध	विकृत	शुद्ध	विकृत	शुद्ध
अजुग	अयुग				
कँवलधारी	कमलधारी	तारन	तारण	माधो	माधव
				मुकुंदी	मुकुंद
गजाधर	गदाधर	त्रिजुगी	त्रियुगी	मुनेश्वर	मुनीश्वर
				मुरहू, मुराहू	मुरहा
गयेंद्र	गजेंद्र	नराइन, नरेना	नारायण	लक्ष्मेंद्र	लक्ष्मींद्र
				लक्ष्मेश्वर	लक्ष्मीश्वर
गुसार	गोप्तृ	बद्रीराम	बदरीराम	लखी, लछी, लच्छू	लक्ष्मी
				लोलीराम	लोलाराम
चक्की	चक्री	विशंवर, विशंभर	विश्वम्भर	सगुन	सगुण
				सलिका, सलेकू,	शालग्राम
जगमूरत	जगमूर्ति	विशन, विशुन, विश्न	विष्णु	सालिक,	सालिगराम
		भगवन्ना, भगेलू, भगोले		सिरपत	श्रीपति
जागेश्वर	यागेश्वर	भग्गन, भग्गू	भगवान		
जैरक्खन, जैराखन	जय रक्षक	मनधारी	मणिधारी	हरिया	हरि

ख—बीज कथा—इन नामों से विष्णु की यह बीज कथा संकलित मिलती है जिसका पुराणों में विशद वर्णन पाया जाता है।

नाम—विष्णु
रूपाकृति—चतुर्भुज, नलिनविलोचन
स्वभाव—सौम्य, शांत
अलंकार—कौस्तुभमणि
स्त्री—लक्ष्मी
आयुध—शंख, चक्रसुदर्शन, गदा, पद्म, शार्ङ्गधनु
निवास—वैकुंठ
सेवक—जय-विजय
वाहन—गरुड
गुण—सत्य, पवित्रादि
कर्म—पालक, मुक्तिदाता
अचल मूर्तियाँ—जगन्नाथ, बद्रीनाथ
चलमूर्ति—शालग्राम
लीला—गज-उद्धारणादि

ग—मूल शब्दों की निरुक्ति :—

अच्युत—अविनाशी, अखंड तथा एक रस होने के कारण विष्णु का नाम अच्युत हुआ।

अरविंदेक्षण—कमलनयन विष्णु।

आदिपुरुष[1]—यह विष्णु की उपाधि है।

उपेंद्र—इंद्र के छोटे भाई होने के कारण विष्णु को उपेंद्र कहते हैं।

कुमुद—यह विष्णु का बोधक है।

गजराम, गजेंद्रनाथ—एक बार पानी पीते हुए एक हाथी की सूँड़ को एक मगर ने पकड़ लिया। बड़ी देर तक दोनों में खींचातानी होती रही, किन्तु हाथी अपनी सूँड़ को न छुड़ा सका और मगर उसको गहरे पानी की ओर खींचकर ले जाने लगा, तब हाथी ने विवश होकर आर्तनाद से भगवान् को पुकारा, विष्णु गरुड़ पर सवार होकर आये और उसका उद्धार किया।

गजाधर—गदाधर का विकृत रूप है। गदा विष्णु का एक आयुध है।

गदाधर—विष्णु का गदाधर नाम पड़ने का कारण सनत्कुमार ने नारद को इस प्रकार बतलाया, विश्वकर्मा ने ब्रह्मा की आज्ञा से गद नामक असुर की हड्डी की गदा बनाई जो स्वर्ग में रखी गई। हेती राक्षस से इंद्रादिक देव पराजित हो विष्णु के पास सहायता माँगने के लिए गये। विष्णु ने उस गदा से असुर का विध्वंस किया। इसी से विष्णु को गदाधर कहते हैं।

गरुड़ध्वज—विष्णु की पताका पर उनके वाहन गरुड़ की मूर्ति है।

गुप्तार—रक्षक

चक्की—देखिए सुदर्शन।

जगमूरत, जगरूप, विश्वरूप—इन शब्दों से विष्णु के विराट् रूप का बोध होता है।

जैरक्खन—(जयरक्षक) जय नामक द्वारपाल की रक्षा करनेवाले अथवा जय प्रदान करनेवाले विष्णु।

---

[1] **ते च प्रापुरुदन्वंतं बुबुधे चादिपूरुषः। (रघु० १०-६)**

ज्योतिष--अत्यंत तेजमय होने से विष्णु को ज्योतिः कहा गया है।

तुलसीरमण--जलंधर दैत्य ने अपने प्रबल पराक्रम से देवताओं को परास्त किया। तब देवताओं ने विष्णु भगवान् से प्रार्थना की कि यदि आप जलंधर की पत्नी वृन्दा का सतीत्व भंग कर दें तो वह राक्षस मारा जाय। जब दैत्यराज देवताओं से लड रहा था, तब विष्णु उसका रूप धारण कर उसके घर गये और उसकी स्त्री का सतीत्व नष्ट कर दिया। जलंधर मारा गया। वृंदा को जब यह षड्यंत्र विदित हुआ तो उसने विष्णु को अभिशाप दिया कि तुम पत्थर हो जाओ। विष्णु ने वृन्दा को शाप दिया जिससे वह जलकर भस्म हो गई और उसकी भस्म से तुलसी, मालती, आँवला उत्पन्न हुए। तभी से तुलसी को विष्णुवल्लभा या हरिप्रिया कहते हैं। कार्तिक के महीने में भक्त लोग तुलसी का विवाह शालग्राम से करते हैं।

देवलोक सिंह--देवलोक अर्थात् वैकुंठ उसके सिंह विष्णु।

नरवर--पुरुषोत्तम।

नारायण--देखिए नारायण ईश्वर प्रवृत्ति में गौण प्रवृत्ति के अतर्गत।

पद्मनाभ--पद्म (कमल) है नाभि में जिसके अर्थात् विष्णु।

पावन--पाप रहित होने से विष्णु का नाम पावन पड़ा।

पुण्डरीकाक्ष--कमलनयन विष्णु।

पुण्यश्लोक--पवित्र कीर्तिवाले विष्णु।

बैंकटेश्वर--वेंकट पर्वत मद्रास प्रान्त में त्रिपती स्टेशन के पास है। यहाँ पर विष्णु का मंदिर है।

भक्तवत्सल--भक्तों के प्रिय अथवा भक्त जिन्हे प्रिय हैं अर्थात् विष्णु।

मखदेव, यज्ञदेव, यागेंद्र--विष्णु को यज्ञ का स्वामी माना गया है।

मधुसूदन--मधु दैत्य को मारने के कारण विष्णु का नाम मधुसूदन हुआ।

मनधारी, कौस्तुभानन्द--कौस्तुभ मणिधारी विष्णु। समुद्र से प्राप्त इस मणि को विष्णु अपने वक्षस्थल पर धारण करते हैं।

मुकुंदी--मुक्ति देने के कारण विष्णु को मुकुंद कहा गया है।

मुनीश, मुनीश्वर--मुनियों के स्वामी अर्थात् विष्णु।

मुरहू, मुराहू, मुरारी--मुर नामक दैत्य को मारने के कारण विष्णु के ये नाम पड़े।

यज्ञेश, यज्ञेश्वर, यागेंद्र, यागेश्वर--यज्ञ शब्द विष्णु के अर्थ में भी आता है और विष्णु यज्ञ के देवता भी माने गये हैं।

रमाराम--रमा (लक्ष्मी) में रमण करनेवाले विष्णु।

लक्ष्मीनारायण[1]--विष्णु की एक मूर्ति

लक्ष्मीविलास--लक्ष्मी के आनन्द अर्थात् विष्णु।

लक्ष्मेंद्र, लच्छूराम, लखीराम, लछीराम--लक्ष्मी के स्वामी अथवा लक्ष्मी में रमण वाले विष्णु।

लोलीराम--लोला अर्थात् लक्ष्मी, चंचता में रमण करने वाले विष्णु।

---

[1] डा० लक्ष्मीनारायण (कटरा, प्रयाग) ने अपने नाम की यह घटना बतलाई। मेरे घर पर एक प्रीतिभोज था। अतिथियों के सामने सब प्रकार का भोजन परोसा जा चुका था। मेरे पिता ने जैसे ही "लक्ष्मीनारायण कीजिए" कहकर प्रारम्भ करने का संकेत किया। उसी क्षण उनको पुत्र-जन्म की शुभ सूचना मिली। पिताजी हर्ष प्रकट करते हुए बोले--लक्ष्मीनारायण आ गये। इस प्रकार मेरा नाम लक्ष्मीनारायण रखा गया।

विट्ठल या बिठोबा—विष्णु की एक मूर्ति चन्द्रभागा नदी के किनारे पंढरपुर में स्थित है जो बम्बई प्रान्त के शोलापुर जिले में है। एक रोचक[1] कहानी इसकी उत्पत्ति के विषय में प्रचलित है।

विश्वम्भर—विश्व का भरण-पोषण करनेवाला।

विश्वदेव—विश्व विष्णु का नाम है।

विष्णु—यह शब्द विश्[2] धातु से प्रवेश करने या व्याप्त होने के अर्थ में लिया गया है।

वेंकटेश, व्यंकटेश—देखिए बैंकटेश्वर।

वैकुंठ, वैकुठनाथ—यह अपत्यवाचक शब्द है। विकुंठा के पुत्र होने से विष्णु का नाम वैकुंठ पड़ा किंतु बैकुंठ उनके लोक का भी नाम है। इस विचार से उनके बैकुंठनाथ आदि नाम हुए।

शंखधर—शंख को धारण करने से विष्णु को शंखधर कहते हैं।

शांताकार—शांत है आकृति जिसकी अर्थात् विष्णु।

शार्ङ्गधर—शार्ङ्ग विष्णु के धनुष का नाम है जिससे उन्होंने दैत्यों का संहार किया था।

शिववल्लभ—शिव के प्यारे अर्थात् विष्णु।

शेष नारायण—विष्णु भगवान् क्षीरसागर में शेष-शय्या पर शयन करते हैं।

श्वेत वाराह, श्वेत वैकुंठ—विष्णु की मूर्तियाँ।

श्री इंद्र—लक्ष्मी के स्वामी।

श्रीकरण—लक्ष्मी के आभूषण अर्थात् विष्णु।

सदातन—इससे विष्णु का नित्यत्व प्रकट होता है।

सलिका, सलेकू, सालिगराम—यह तीनों शब्द शालग्राम[3] के विकृत रूप है जो अशिक्षित

---

[1] बिठोबा की पूजा चौदहवीं शताब्दी में आरम्भ हुई। इसका सम्बन्ध संत पुण्डलीक से बताया जाता है। यह संत अपने प्रारम्भिक जीवन में अपने माता-पिता की सेवा से बहुत विमुख रहा करते थे। जब कुछ बड़े हुए तो यह जानकर कि इस कर्त्तव्य के बिना मुक्ति पाना असम्भव है, उन्होंने अपने माता-पिता को कामर में बिठाकर तीर्थ-यात्रा प्रारम्भ की। उनकी पितृभक्ति देखकर विष्णु भगवान् अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्हें दर्शन दिया। पितृभक्त पुंडलीक ने एक ईंट (विट) फेंककर हरि को उस पर बैठने के लिए कहा और स्वयं पितृसेवा में लग गये। सेवा समाप्त कर विष्णु के पास आराधना करने उपस्थित हुए। यह प्रगाढ़ भक्ति देखकर विष्णु उसी ईंट पर खड़े होकर प्रति एकादशी को अपने भक्तों को आशीर्वाद देते हैं। उस समय से उनका विट्ठल या बिठोवा नाम पड़ा क्योंकि मराठी में विट ईंट के अर्थ में और बिठोवा ईंट पर खड़े होनेवाले के अर्थ में आता है। आषाढ़ और कार्तिक की एकादशी के दिन देश के विभिन्न भागों के यात्री बिठोवा की आराधना करने आते हैं। एक बार एक हरिजन कवि संत चोकामेला को बिठोवा के मंदिर में पुजारियों ने दर्शनार्थ न जाने दिया। चोकामेला ने मराठी में बहुत भक्तिसमर्था कविता में भगवान् की प्रार्थना की। १० मई सन् १९४७ में इस देवालय के फाटक अंत्यज तथा अछूतों के लिए साने गुरु के प्रयत्न से खुल गये। (माडर्न रिव्यू दिसम्बर सन् १९४७)

[2] यस्माद्विश्वमिदं सर्वं तस्य शक्त्या महात्मनः।
तस्मादेवोच्यते विष्णुर्विशधातोः प्रवेशनात्॥

[3] यह कहा जाता है कि वृंदा के शाप से विष्णु गोल पत्थर के शालग्राम हो गये। वास्तव में ये Fossil ammonites हैं जो प्रायः कृष्ण वर्ण तथा गोल होते हैं। वैष्णव उनकी पूजा करते हैं। (Mythology of All Nations Vol VI India by Keith) दूसरी कथा इस प्रकार है—एक बार विष्णु सुन्दरी भ्रमर बनकर विचरण कर रहे थे तो अन्य देवता भी वही रूप धारण कर उनके पीछे-पीछे उड़ने लगे। इस पर विष्णु ने पत्थर का रूप धारण कर लिया। तब दूसरे देवों ने भी उसमें छेद बनाकर अपना निवास बना लिया। सबसे बड़े (सवा मन के) शालग्राम का मंदिर जोई बाज़ार (ब्रज) में है। शालग्राम गंडक नदी में पाये जाते हैं।

जनना में प्रचलित हैं। यह विष्णु की चल मूर्ति है जिसको वैष्णव लोग अपने घर पूजा के लिए रखते हैं।

सुदर्शन, चक्री—यह चक्र सुदर्शन महादेव ने प्रसन्न होकर विष्णु को दिया था तब से यह उन्हीं के पास रहता है।

घ—गौण शब्द :

(१) वर्गात्मक—(अ) जातीय—राय, शर्मा, सिंह, सिनहा।
(आ) साम्प्रदायिक—पुरी।

(२) सम्मानार्थक—

(अ) आदरसूचक—जी, जू, श्री, श्रीमंत, श्रीमत्।

(आ) उपाधिसूचक—आचार्य।

(३) भक्तिपरक—अजुग, अनुग्रह, अनुभव, अनूप, अपूर्व, अमर, अवतार, अशोक, आधार, आनन्द, ओतार, इंद्र, इकबाल, इष्ट, उत्तम, ऐश्वर्य, करण, कांत, किशोर, कुमार, केवल, कृपाल, गुन, चंद्र, चरण, जीत, ज्ञान, त्रिजुगी, दत्त, दयाल, दास, दीन, देव, धन, नंदन, नाथ, नाम, नारायण, नित्य, निर्भय, निवास, पति, पवित्र, पाल, प्रकाश, प्रताप, प्रपन्न, प्रसाद, प्रसिद्ध, बक्स, बली, बहादुर, भगवत, भगवान्, भजन, भूषण, मंगल, मणि, मनोहर, मल, महा, महाजीत, मित्र, मुक्त, मूर्ति, मोहन, यश, यम, रत्न, रमण, राज, राम, रूप, लाल, वल्लभ विजय, विमल, विलास, विशेष, विहारी, वीर, व्रत, शरण, शुद्ध, शुभ, श्रुति, श्लोक, सत, सहाय, सुदिष्ट, सुदृष्टि, सुध, सुमिरन, सुरति, सेवक, स्मृति, स्वरूप।

(४) सम्मिश्रण :—

(अ) मूर्तामूर्त—ओम्—देखिए ब्रह्मा के सम्मिश्रण में ब्रह्म, सुराकार—विष्णु को निराकार ईश्वर के रूप में माना है।

(आ) मूर्त+मूर्त—

स्व पर्यायवाची शब्दों के साथ—माधव, मुकुंद, मुरारी, विष्णु, हरि, नामों की आवृत्ति से भक्त की विशेष निष्ठा प्रकट होती है।

अपने अवतारों के साथ—किशन, कृष्ण, गोपाल, गोविंद, मोहन, राम। अवतारों के द्वारा भक्त अपने इष्टदेव विष्णु तक पहुँचने का प्रयत्न करते हैं, नराकार से सुराकार की ओर जाते हैं।

स्व सम्बन्धियों के साथ—गगा, जय-विजय, लक्ष्मी।

गंगा—विष्णु के चरणों से उत्पन्न होने के कारण दोनो में उत्पादक-उत्पाद्य का सम्बन्ध है।

जय-विजय—यह दोनों विष्णु के द्वारपाल हैं। यहाँ पर स्वामि-सेवक सम्बन्ध है।

लक्ष्मी—विष्णु की प्रिया हैं। दोनों में पति-पत्नी का सम्बन्ध है।

अन्य देवों के साथ—महेश, शिव। देखिए ब्रह्मा के सम्मिश्रण में शंकर।

(इ) व्यक्ति सम्बन्धी –गयेंद्र, तुलसी, ध्रुव। इनमें आराध्य आराधक सम्बन्ध है। देखिए गयेंद्रनाथ, तुलसीरमण, मूल प्रवृत्ति की व्याख्या में और ध्रुवनाथ विशेष नामों की व्याख्या में।

(ई) स्थान सम्बन्धी—जग, जगत, त्रिभुवन, त्रिलोक, त्रिलोकी, विश्व—यह विष्णु का व्यापक रूप बतलाते हैं। बद्री, बैकुंठ, समुद्र यह विष्णु भगवान् के निवासस्थान की ओर संकेत करते हैं।

ङ—गौण शब्दों की विवृत्ति :

अजुग—अकेले के अर्थ में प्रयुक्त होता है।[१]

अनूप—अनोखा।

आचार्य—मनु के अनुसार शिष्य का उपनयन करानेवाला तथा वेदों की शिक्षा देनेवाला आचार्य कहलाता है।[२]

यह उपाधि कुछ कुलों में परम्परा से भी चली आ रही है। आजकल विश्वविद्यालय के अध्यापक, उपदेशक तथा डाक्टर आचार्य कहलाते हैं। सरकार की ओर से आचार्य उपाधि के लिए संस्कृत परीक्षा भी होती है।

आधार, प्रपन्न—यह दोनों शब्द भक्त की आत्म-निवेदनासक्ति प्रकट करते हैं, प्रपन्न शरणागत के अर्थ में आता है। (देखिए ईश्वर-प्रवृत्ति अंतर्गत शरण)

इकबाल—(प्रताप)—इष्ट (प्रिय), केवल (शुद्ध), श्लोक (यशस्वी), सुदिष्ट (सुंदर), सुदृष्टि (सुंदर आँखवाला), इनसे गुणासक्ति प्रगट होती है।

करण—यह आभूषण के अर्थ में आता है। (देखिए ईश्वर प्रवृत्ति में आभूषण)

कांत—कांत का अर्थ प्रिय तथा स्वामी होता है। यह कांतासक्ति का बोधक है।

ज्ञान—धन, मंगल—भक्ति के लिए भगवान् ज्ञान और धन के देने वाले तथा मगल के करनेवाले हैं। (मंगलायतनं हरि:)

नाम, भजन—भगवान् के नाम कीर्तन और भजन से भक्त की सब आशाएँ पूर्ण होती हैं। (देखिए ईश्वर प्रवृत्ति अंतर्गत सुमिरण)।

त्रिजुगी—तीनों कालों में रहनेवाला।

निवास—भक्त बैंकुंठ में रहकर सालोक्य मुक्ति का अभिलाषी है।

यज्ञ—यज्ञ के द्वारा देवताओं का पूजन किया जाता है। विष्णु को यज्ञ का देवता माना गया है।

वल्लभ—प्रिय, स्वामी।

विलास—इसका अर्थ लीला है। भगवान् की अनेक लीलाओं की ओर संकेत करता है।

श्रीमन्, श्रीमन्—यह सम्मानार्थक शब्द हैं और विष्णु के भी बोधक हैं।

श्लोक—यश, कीर्ति।

सत—उत्तम, श्रेष्ठ, नित्य, सत्य।

टिप्पणी—शेष शब्दो का स्पष्टीकरण ईश्वर प्रवृत्ति के अन्तर्गत गौण शब्दो की विवृत्ति में देखिए।

३—विशेष नामों की व्याख्या :—

अनन्तनारायण—अनन्त शब्द विष्णु का तथा शेष नाग का बोधक है। नारायण क्षीर-सागर में शेष-शय्या पर शयन करते हैं। इसलिए विष्णु का नाम अनन्तनारायण हुआ। अनन्त निर्गुण ब्रह्म के अर्थ में भी आता है। यह शब्द अनन्त चतुर्दशी पर्व की ओर भी संकेत करता है (देखिए पर्व)।

---

[१] एक.मेव द्वितीयो नास्तिः।

[२] उपनीयं तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेत द्विजः।
सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्य प्रचक्षते। मनु २११

ओम्श्रीधर, ओम् हरि—यह दोनों नाम मूर्तामूर्त भावनाएँ प्रकट करते है। विष्णु में ओम् के निर्गुणत्व निराकार रूप का आरोपण किया है।

कोस्तुभचन्द्र, कोस्तुभानन्द—कौस्तुभ मणि समुद्रमंथन के समय चतुर्दश रत्नों के साथ प्राप्त हुई थी जिसे विष्णु धारण करते हैं। इसलिए यह दोनो नाम विष्णु के हैं।

ध्रुवनाथ—राजा उत्तानपाद के सुरुचि तथा सुनीति दो रानियाँ थी। सुरुचि को वह अधिक प्यार करता था। एक दिन सुनीति का पुत्र ध्रुव राजा की गोद में जा बैठा, जहाँ कि सुरुचि का पुत्र उत्तम बैठा करता था। राजा तथा सुरुचि ने ध्रुव की बड़ी अवहेलना की। वह रोता हुआ अपनी मा के पास गया। माता के आदेशानुसार उसने बड़ी कठिन तपस्या की। तब विष्णु भगवान् ने प्रसन्न होकर उसे देवत्व पद प्रदान किया। वह आजकल ध्रुव नक्षत्र के नाम से प्रसिद्ध है।

जय विजय नारायण सिंह—जय विजय विष्णु के दो सेवक हैं जो सर्वदा उनके द्वार पर प्रहरी का कार्य करते हैं।

पुरुषोत्तम—यह विष्णु या कृष्ण का नाम है किन्तु प्रायःमलमास में जन्म लेने वाले बालको का नाम पुरुषोत्तम रखा जाता है। (देखिए पुरुषोत्तम पर्व में)

बक्सनारायण सिंह—बक्सनारायण का समास उर्दू की पद्धति पर बना है। इसका अर्थ हुआ नारायणदत्त।

बद्री विशालराम— बदरिका आश्रम में विष्णु की भव्य मूर्ति पर यह नाम रखा गया है।

बिश्नानन्द--बिश्न विष्णु का अपभ्रंश है और यह नाम कृष्णानन्द की तुक पर गढ़ लिया प्रतीत होता है।

महानारायण—विष्णु का त्रिविक्रम विराट् रूप जो उन्होने वामन रूप के पश्चात् आकाश-पाताल नापते समय राजा बलि के यहाँ धारण किया था।

माधव मुकुंद--यह दोनो नाम विष्णु के हैं, आवृत्ति से भक्त की प्रगाढ़ निष्ठा प्रतीत होती है। प्रथम का अर्थ लक्ष्मीपति तथा द्वितीय मुक्तिदाता के अर्थ में आता है।

राजिवलोचन--कमल नयन अर्थात् विष्णु। तुलसीदास ने इसे राम के लिए विशेषण की भाँति प्रयोग किया है।[1]

विष्णु चरण--फल्गु नदी पर गया के सब मंदिरो में विष्णु पद का मंदिर प्रधान है। मंदिर के मध्य में अठकौनी वेदी पर एक शिला पर विष्णु का १३ इच लम्बा काले पत्थर का एक चरण-चिह्न बना हुआ है।

श्रीरङ्ग जी—श्रीरङ्ग—विष्णु। त्रिचिनापल्ली के पास श्रीरङ्गम् में विष्णु का एक विशाल मन्दिर है।

सत्यकांत--सत्य = विष्णु, कांत = प्रिय या स्वामी।

सत्यदेव, सत्यनारायण--सत्यनारायण[2]। की कथा लोक में बहुत प्रचलित है। साधू

---

[1] राजिवलोचनराम चले तजि बाप को राज बटाऊ की नाईं।

[2] कलावती का ब्याह एक उच्च कुल में हो गया। साधू और उसके दामाद दोनों व्यापार में इतने संलग्न रहे कि वे अपनी प्रतिज्ञा को नितांत भूल गये। इसका फल यह हुआ कि वे दोनों विदेश में चोरी के अपराध में कारागार भेज दिये गये। घर पर लीलावती और उसकी कन्या बड़े संकट में पड़ीं। लीलावती ने संयोग से अपने पड़ोसी के यहाँ सत्यदेव की कथा सुनी। उसने इस कथा को कराने का संकल्प किया। उसका परिणाम यह हुआ कि साधू और उसका दामाद कारागार से मुक्त हो गये। घर आते हुए मार्ग में बनिये के झूठ बोलने पर उसकी सारी नौका का अमूल्य सामान ब्राह्मण के शाप से लतापत्र हो गया। बनिये के बहुत गिड़गिड़ाने पर ब्राह्मण रूपी विष्णु भगवान् शान्त हुए और उसकी नौका फिर धन-धान्य से परिपूर्ण हो गई। कलावती से अपने पति और पिता के स्वागत में दत्तचित्त होने के कारण भगवान् के प्रसाद की अवहेलना हो गई। इस कारण उसका पति जलमग्न हो गया, किन्तु प्रसाद को लेते ही फिर वे दोनों मिल गये। सत्यनारायण की पूजा से सब मनकामना पूर्ण हो जाती है। इस कथा से मनुष्यों को सत्य से प्रेम तथा मिथ्या भाषण से घृणा करने का उपदेश मिलता है।

नाम के बनिये ने सन्तति के लिए सत्यनारायण की पूजा का व्रत लिया। कुछ काल उपरांत कलावती नाम की कन्या उत्पन्न हुई, किन्तु उसने अपनी प्रतिज्ञा पूरी नहीं की। इससे उसे बहुत दुख भोगना पड़ा। व्रत पूरा करने पर ही उसे कष्टों से छुटकारा मिला।

सदहरी लाल—सत=श्रेष्ठ, हरी (हरि)=विष्णु।

समुद्र नारायण—विष्णु क्षीरसागर में शेष शय्या पर सोते हैं।

स्वर्गवीरप्रसाद—स्वर्ग के वीर अर्थात् विष्णु।

हयवर प्रताप, हयवर प्रसाद—हय हयग्रीव का प्रथम अर्द्धांश है। हयग्रीव का अर्थ विष्णु है तथा उनका एक अवतार भी माना जाता है जो अश्व के सदृश होने से हयग्रीव कहलाता है।

हरिभूषण—विष्णु का आभूषण समुद्र से प्राप्त कौस्तुभ मणि है।

हरे राज—हरे हरि का सम्बोधनकारक रूप है। हे प्रभु विष्णु।

४—समीक्षण

इस विवेचन के फलस्वरूप हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि आराधक अपने आराध्यदेव के प्रति गुण, रूप, लीला तथा धाम द्वारा आकृष्ट होता है और अपने इष्टदेव के ध्यान के लिए वह एक मानस चित्र अथवा मूर्ति की कल्पना कर लेता है। विष्णुसहस्रनाम में वर्णित ध्यान[1] की प्रायः सम्पूर्ण सामग्री इस संकलन से प्राप्त हो जाती है। यही नहीं अपितु यत्र तत्र अवकीर्ण विष्णु को पौराणिक कथा का भी दिग्दर्शन हो जाता है। विष्णु की पूजा अनेक रूपों में होती है, ज्ञानी पुरुष उसको अमूर्त निर्गुण ब्रह्म की भावना से जपते हैं। हरि ओम् नाम इसी भाव का बोध कराता है। ध्यानी मनुष्य उसके विराट् रूप की धारणा करते हैं। इस बात का संकेत हमको "जगरूप", "विश्वरूप" आदि नामों से परिलक्षित होता है। (१) जगदीशपुरी या पुरुषोत्तमपुरी की जगन्नाथ की मूर्ति तथा बदरिकाश्रम की बद्रीनाथ की मूर्ति—ये दोनों अचल मूर्तियाँ—है। (२) वैष्णवों के घर प्रायः शालग्राम की एक चल मूर्ति भी रहती है जिसकी वह पूजा किया करते हैं। किंतु सबसे अधिक प्रिय एवं रुचिकर उसके मानव रूप अर्थात् रामकृष्ण अवतार हो गये हैं जिनके कारण वैष्णव धर्म की महत्ता जनता में विशेष रूप से गहरी तथा दृढ़ हो गई है।

पर्णकुटी में पले हुए भग्गू के तथा प्रासाद में पोषित भगवानबक्स सिंह के नामों में एक ही मनोवृत्ति की धारा प्रवाहित हो रही है। विकृत रूपों का समावेश पर्याप्त पाया जाता है, विशेषतः नारायण, भगवान्, विश्वम्भर, विष्णु, शालग्राम के अनेक तद्भव रूप मिलते हैं जो अनेक नामों के आधार हैं। इससे ज्ञात होता है कि विष्णु न केवल शिक्षित शिष्ट समाज में ही समादृत है, अपितु वह अशिक्षित ग्रामीण-जनता का भी महामान्य इष्टदेव है। यही कारण है कि सत्यनारायण की कथा आज हिन्दुओं के घर-घर में प्रचलित हो रही है।

विष्णु का सबसे अधिक प्यारा नाम हरि प्रतीत होता है।

---

[1] शांताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्॥
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

शिव

१—गणना—

(क) (१) क्रमिक गणना—नामों की संख्या—१७१३

(२) मूल शब्दों की संख्या—६६३

(३) गौण शब्दों की संख्या—५११

(ख) रचनात्मक गणना :—

एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	पंचपदी नाम	षट्पदी नाम	सप्तपदी नाम
४६	७६७	७७७	१०१	१८	३	१
			योग			
			१७१३			

इस प्रवृत्ति में त्रिशाब्दिक नामों की संख्या सबसे अधिक है। दूसरी विशेषता यह है कि मूल तथा गौण शब्दों की संख्या में अन्य प्रवृत्तियों की अपेक्षा अंतर भी कम है।

महेश के मुख्य मुख्य नामों की प्रसिद्धि का यह क्रम है—

शिव २१३, शकर १५१, हर ६४, भोला ३८, महेश २०, शंभु १६, महादेव १०।

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द—

(१) **एकाकी**—अंवधर, अक्षर, अखंड, अभयंकर, अभय, अमृत, अविनाश, ईश, ईशन, ईशान, ईश्वर, उग्र, उग्रइ, ओंकार, कपर्दी, केदारधर, कैलाशी, क्षमाधर, गगाधर, गंगाधारी, चंद्रधर, जंबू, जटाधर, तीरी, त्रिशूलधारी, द्वीपधर, धूर्जटी, निरंजन, निर्भय, बटुक, बटुकी, बालेंदुधर, बीजधर, भगवतीधर, भद्दर, भद्र, भव, भुलई, भुलुआ, भुल्लन, भुल्ल, भूल, भूला, भूली, भैरव, भैरौ, भोला, भोली, भोलू, भोले, मंगलाधर, मंथन, मृत्युंजय, मेखरी, रुद्र, रूदल, रूदा, रेवाधर, वटुक, शंकर, शंभु, शंभुआ, शंभू, शक्तिधर, शशिधर, शिब्बन, शिव, शूली, शेषधर, शोकहरण, श्यो, सर्व, सहाय, स्मरहर, हर, हरुआ, हरूं, हीराधर।

(२) **समस्त पदी**—अंबिकाकान्त, अंबिकेश, अंबिकेश्वर, अखिलेश, अखिलेश्वर, अघोरनाथ, अचलनाथ, अचलेश्वर, अदेशर, अद्भुतनाथ, अद्रिनारायण, अमरनाथ, अमरेश, अमरेश्वर, अर्द्धेंदु-भूषण, अलोपीनारायण, आदिज्योति, आदित्येश्वर, आद्यानाथ, आनंदकरण, आनंदकात, आनंदीकात, आनंदीश्वर, आनंदेश्वर, आर्येंद्र, आशकरण, आशाकात, आशापाल, आशाराम, आशुतोष, आशेश्वर, आसासिंह, इंदुकात, इंदुभूषण, इदुशेखर, इंदेश्वर, इंद्रेश, इंद्रेश्वर, इलाचन्द्र, इष्टनाथ, ईश्वरनारायण, उमाकांत, उमानंद, उमानाथ, उमानायक, उमापति, उमापाल उमाराम, उमेंद्र, उमेश, उमेश्वर, ऋषीश्वर, ऋषेश्वर, एकनाथ, एकराज, एकराम, ओमेश्वर, औसानसिंह, औसानेसर, कटेश्वर, कपिले-श्वर, कमलेश्वर, कमलेश्वरीनारायण, कलेसर, कलेश्वर, कल्पेश्वर, कल्याणकान्त, कल्याणदेव, कल्याणपति, कविलाससिंह, कातानाथ, कांताराम, कांतिनारायण, कांतिमोहन, कातिवल्लभ, कातेश्वर, कामतानाथ, कामताराय, कामतासिंह, कामदनाथ, कामाख्यानारायण, कामेश्वर, कालीकात, कालीनाथ,

कालीराम, कालीसहाय, कालीसिंह, कालीसुंदर, कालेंद्र, कालेश्वर, काशीनरेश, काशीनाथ, काशीनारायण, काशीराम, काशीविश्वम्भर, कुटेश्वर, कुलेश्वर, कुशलेंद्र, कुशेश्वर, कूरेश्वर, कृपलेश्वर, कृष्णेश्वर, केन्द्रपाल, केदारनाथ, केदारनारायण, केदारराम, केदाराविहारी, केदारेश्वर, कैलाशचंद्र, कैलाशनाथ, कैलाशनारायण, कैलाशपति, कैलाशपर्वतनारायण, कैलाशबहादुर, कैलाशबिहारी, कैलाशभानु, कैलाशभूषण, कैलाशमूर्ति, कैलाशराय, कैलाससिंह, कोतवालेश्वर, कौलेश, कौलेश्वर, क्षमानारायण, क्षमापति, क्षमापाल, क्षेत्रनाथ, क्षेत्रपाल, क्षेमकरण, क्षेमनाथ, क्षेमपाल, खेतपाल, खेदहरण, खेमकरण, खेमचन्द्र, खेमनारायण, खेमपाल, खेमराज, खेमसिंह, खेमसुंदरनारायण, खेमेश्वर, खेरेश्वर, गंगादेव, गंगानाथ, गंगानारायण, गंगाराम, गंगावल्लभ, गंगेश्वर, गनपतेश्वर, गनेशपाल, गिरिजानारायण, गिरिजापति, गिरिजाभूषण, गिरिजेश, गिरींद्र, गिरीश, गुटेश्वर, गुणेश्वर, गुप्तनाथ, गुप्तेश्वर, गैबीनाथ, गैबीराम, गोकरण, गोदावरीश, गोपेश्वर, गोरखेंद्र, गोलीराम, गौरसिंह, गौरीकांत, गौरीनाथ, गौरीराम, गौरीश्वर, चंडीनाथ, चंडीपाल, चंडीराम, चंद्रराखन, चंद्रकरण, चंद्रकांत, चद्रकेश, चन्द्रकेश्वर, चंद्रचूड़, चंद्रचूड़ामणि, चंद्रचूर, चंद्रपाल, चंद्रभाल, चन्द्रभावन, चंद्रभूषण, चंद्रमणि, चंद्रमुकुट, चंद्रमौलि, चंद्रबल्लभ, चंद्रशेखर, चंद्रेंद्र, चंद्रेश, चंद्रेश्वर, चक्रेश्वर, चाँदकरण, चितेश्वर, चिरमौलि, छितेश्वर, जगतेश्वरीसहाय, जगदंबानारायण, जगदंबापति, जगनेश्वर, जगबंधन, जगेश्वर, जतींद्र, जतेंद्र, जयंतीमोहन, जलेश्वर, जाग्रतेश्वर, जितेंद्रनाथ, जीवेश्वर, जोगदेव, जोगींद्र, जोगेंद्र, जोगेश, जोगेश्वर, टप्पेनाथ, टिकेश्वर, टीलेश्वर, डेलेश्वर, तपेश, तपेश्वर, तपेश्वरीनारायण, तरुणेंदुशेखर, तामेश्वर, तारकेश्वर, ताराकांत, ताराचंद्र, तारानाथ, तारापति, ताराराम, तारासिंह, तिलेश्वर, तुंगनाथ, तेजेश्वर, त्रिबंक, त्रिजुगीनाथ, त्रिनाथ, त्रिनेत्र, त्रिपुरारी, त्रिभुवननाथ, त्रिलोकनाथ, त्रिलोकीनाथ, त्रिलोचन, त्रैलोक्यनाथ, त्र्यंबक, त्र्यंबकेश्वर, दक्षिणामूर्ति, दक्षिणारंजन, दिगंबर, दिव्यानन्द, दीनेश्वर, दुग्धराम, दुर्गाकांत, दुर्गाचंद्र, दुर्गानारायण, दुर्गामाधव, दुर्गाविनायक, दुर्गाशाह, दुर्गेश, दूधनाथ, दूधराज, दूधेश्वर, देवव्रतीश, देवमणि, देवसिंह, देवीनाथ, देवीनारायण, देवीराम, देवीसहाय, देवीसिंह, देवेश्वर, दोदराज, धारेश्वर, धुरकंडीराम, नंदकेश्वर, नंदावल्लभ, नंदीनाथ, नंदेश्वर, नगनारायण नगेंद्र, नर्मदेश्वर, नर्वदेश्वर, नवनाथ, नागनाथ, नागभूषण, नागमणि, नागेंद्रभूषण, नित्यानंद, नित्यारंजन, निर्भयनाथ, निष्कामेश्वर, निहालकरण, निहालनाथ, नीतीश्वर, नीलकंठ, पंचानन, पंचमुखी, पंचवदन, पटेश्वरीभूषण, पंडेश्वर, परमेश्वर, परमेश्वरी नारायण, परमेश्वरीवल्लभ, पर्वतेश्वर, पशुपति, पाटेश्वर, पातालेश्वर पार्थिवेश्वर, पार्वतीनाथ, पार्वतीराम, पिनाकी, प्रपन्ननाथ, प्रभाचंद्र, प्रभेश, प्रमेश, प्रसन्नदेव, प्राणपतेश्वरीनारायण, फूलेश्वर, बंबेश्वर, बंभोली, बंभोले, बरखडेश्वर, बरमेश्वर, बलकेश्वर, बलरमेंद्रनाथ, बलेश, बलेश्वर, बालकेश, बालानन्द, बालाराम, बालेंदुभूषण, बालेंद्र, बालेंद्रधर, बालेश्वर, बीजासिंह, बुंदेश्वर, बैजनाथ, ब्रह्मेश्वर, भंगभोला, भंजूराम, भंबूल, भगवतीपति, भगवतीसहाय, भदेश्वर, भद्रपाल, भद्रसेन, भद्रेश्वर, भव, भवनाथ, भवानीवल्लभ, भवानीशाह, भार्ग्यनाथ, भालचंद्र, भीलचंद्र, भीलेश्वर, भुजंगभूषण, भुवनेश, भुवनेश्वर, भूतेंद्र, भूमेश्वर, भूलेश्वर, भोगेश्वर, भोला, भोलानाथ, भोलेश्वर, मंगलामोहन, मंगलेश्वर, मखसूदन, मणींद्र, मदनदहन, मदनसूदन, मदनेश्वर, मनकामेश्वर, मनसाराम, मनिराम, मनीराम, मनेश्वर, मयंकमोहन, मयंकरंजन, मल्लिकार्जुन, मसानीराम, महादेव, महारूप, महेश, महेश्वर, महेश्वरीनारायण, माताराम, मातावर, मातुराय, मायाकांत, मायापति, मित्रेश, मुक्तिनाथ, मुक्तेंद्र, मुक्तेश, मुक्तेश्वर, मुक्तेश्वरीमोहन, मुनींद्र, मुनींद्रनाथ, मूकेश्वर, मूलेश्वर, मृगेंद्रनाथ, मेधापति, मौलिचंद्र, यतींद्र, यतीश, युगेश्वर, योगपाल, योगराज, योगांबर, योगींद्र, योगीश्वर, योगेंद्र, योगेश, योगेश्वर, रत्नेश्वर, रमेश, रविकरण, रामेश, रामेश्वर, रेवानन्द, रेवाराम, लज्जानाथ, लज्जाराम, ललितारमण, ललिताराय, ललितेश्वर, लालेश्वर, लोकनाथ, लोकेंद्र, लोकेश, लोकेश्वर, वंगेश्वर, वटेश्वर, वनेश्वर, वामदेव, विजयेंद्र, विधुभूषण, विधुशेखर, विभूतिनाथ,

त्रिभूतिनारायण, विभूतिप्रसाद, विभूतिभूषण, विभूतिमणि, विभूतिराय, विभूतिलाल, विभूतिसिंह, विमलनाथ, विमलेश्वर, विशालेश्वर, विशेश्वर, विश्वनाथ, विश्वविमर्दन, विश्वेश्वर, वीरवाहन, वीरभद्र, वीरेश, वीरेश्वर, वृषकेतु, वैद्यनाथ, वैद्यपाल, व्योमकेश, शक्तिदेव, शक्तिनाथ, शक्तिनारायण, शक्तिपाल, शक्तिमोहन, शशिभाल, शशिभूषण, शशिमोहन, शशिमौलि, शशिशेखर, शांताराम, शांतिचंद्र, शांतिवीर, शांतिशेखर, शांत्यानंद, शिवाधार, शिवानंद, शिवेंद्र, शिवेश, शिवेश्वर, शुद्धेश्वर, शुभनाथ, शुभ्रेंदुभूषण, शुभ्रेश्वर, शूलीनारायण, शेषनाथ, शेषमणि, शैलनाथ, शैलेंद्र, शैलेश, शोभाकांत, शोभानंद, शोभानाथ, शोभापति, शोभाराय, श्रीकंठ, श्रीवर्धन, श्रुतिनाथ, श्लोकनाथ, सतेश्वर, सतींद्र, सतीश, सत्यानन्द, सत्येंद्र, सत्येश, सत्येश्वर, सदादयाल, सदानन्द, सदापति, सदाबली, सदारंग, सदाशिव, सदासहाय, सदासुख, सर्वचन्द्र, सर्वजीत, सर्वेश, सर्वेश्वर, सर्वोत्तम, सिंहेश्वर, सितेश्वर, सिद्धनाथ, सिद्धराज, सिद्धेश्वर, सुन्दरीकांत, सुंदरीराम, सुंदरेश्वर, सुधांशु-शेखर, सुधाकरनाथ, सुरेश्वर, सुरोत्तम, सूरजकरण, सूर्यकान्त, सेतुबंधनाथ, सोनेश्वर, सोमनाथ, सोमपति, सोमपाल, सोमरतन, सोमेंद्र, सोमेश, सोमेश्वर, सोमेश्वरीनारायण, स्थानेश्वर, स्मरहर, स्वयंप्रकाश, स्वयंभू, स्वामीश्वर, हरक, हरकेश, हरकेश्वर, हरगोंद्र, हरप्यारी देव, हरिहरनाथ, हरीश्वर, हितेंद्र, हितेश, हिमांशुधर, हिमांशुराय, हीराचंद्र, हीरानन्द, हीरानाथ, हीराबल, हीराबहादुर, हीरामणि, हीराराम, हीरावल्लभ, हीरासिंह, हेमनाथ, हेमराज, हेमेंद्र ।

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ :—

(१) रचनात्मक :—

शिव के नामों की रचना अत्यंत विचित्र है। सरल तथा सूक्ष्म नाम से लेकर बहुत विकट, अटपटे तथा अस्पष्ट नाम तक इसमें सम्मिलित हैं। गुण, रूप, लीला और धाम—भक्तों की यह चार भावनाएँ इन नामों में भी उद्भासित हो रही हैं। शिव के नामों की रचना के आधार निम्नलिखित हैं :—

(अ) **पार्वती के पर्यायवाची शब्द**—अंबा, अंबिका, अलोपी, आद्या, आनन्दी, आर्या, आशा, इला, ईश्वरी, उमा, कमला, कमलेश्वरी, कांता, कांति, कामाख्या, काली, क्षमा, खेमा (क्षेमा), गिरिजा, गोली (गोला), गौरी, चंडी, चंद्रिका, जगतेश्वरी, जगदम्बा, जयंती, तपेश्वरी, तारा, दक्षिणा, दुर्गा, देवी, नन्दा, नित्या, पटेश्वरी, परमेश्वरी, पार्वती, प्रभा, प्रमा, प्राणपतेश्वरी, बाला, भजू (भंजा = अन्नपूर्णा), भगवती, भवानी, भामा (पार्वती), भीमा, मंगला, मनसा, मसानी, महेश्वरी, माता, माया, मुक्तेश्वरी, मेधा, रमा, रेवती, लक्ष्मी, लज्जा, ललिता, लालता (ललिता), विद्या, शिवा, श्यामा, सती, सत्या, सुन्दरी, सोमेश्वरी, हीरा।

(आ) शंकर के आश्रित तीनो प्रकार की ज्योतियाँ पाई जाती हैं। उनका तीसरा नेत्र संसार को भस्मीभूत कर सकता है। चद्रमा उनके मस्तक पर विराजमान है। सूर्य उनका प्रतीक समझा जाता है। अनेक नाम सूर्य, चंद्र और नेत्र के आधार पर बने हैं।

चंद्रमा के पर्य्यायवाची शब्द—इन्दु, चंद्र, चाँद, मयंक, विधु, शशि, सुधांशु, सुधाकर, सोम।

सूर्य के पर्य्यायवाची शब्द—आदित्य, रवि, सूरज, सूर्य।

नेत्र—अंबक, नेत्र, लोचन।

(इ) शंकर का मूल निवासस्थान कैलास है जो हिमालय पर्वत की एक चोटी है। किन्तु भक्तो ने अपनी सुविधा के लिए अन्य स्थानों पर भी शिव की स्थापना कर ली है और वे उसी स्थान के नाम से प्रसिद्ध हो गये हैं। ऐसे स्थान, पर्वत, तीर्थ आदि हैं।

पर्वत के पर्य्यायवाची शब्द—अद्रि, गिरि, तुंग, नग, पर्वत, शैल।

तीर्थ तथा अन्य स्थान सम्बन्धी शब्द—कामता, काशी, केदार, कैलाश, क्षेत्र, खेत, खेरा, टप्पा, टीला, तारकेश्वर, तुंगनाथ धुरकंडी, पाताल, बरखडी, बैजनाथ, भूमा, वंग, वटेश्वर, वने, वेंकट, वैद्यनाथ, सेतुवध, सोमनाथ, स्थानेश्वर, हरिहर।

नदियों के नाम—गंगा, गोदावरी, यमुना, नर्वदा (नर्मदा)।

(ई) भक्त जन भगवान् शंकर की मूर्ति रचना नाना उपकरणों से करते हैं। प्रायः मिट्टी से लेकर स्वर्णादि की अमूल्य रत्न जटित मूर्तियाँ देखी गई हैं। गोबर (गौर), मिट्टी (भूमा) तिल, फूल, मणि-सुवर्णादि द्रव्यों से बनी हुई मूर्तियों के नाम इस संकलन में पाये जाते हैं।

(उ) कुछ नाम शिव की विविध परिस्थितियाँ तथा अवस्थाएँ बतलाते हैं जैसे—आशुतोष, कोतवालेश्वर, गुप्तनाथ, गैवीराम, गोकरण, टिकेश्वर, नीलकठ, भुलई, भोला, मूकेश्वर, योगेश्वर, रंगेश, वटुक, विश्वविमर्दन, वैद्यनाथ, श्रुतिनाथ आदि नाम शिव की विविध परिस्थितियों, घटनाओं अथवा अवस्थाओं से सम्बन्ध रखते हैं।

(ऊ) शिव के कुछ नाम द्वादश ज्योतिर्लिंग[1] तथा उनकी अष्टमूर्तियो से सम्बन्ध रखते हैं:—

(१) ओंकारेश्वर—(अमलेश्वर, अमश्रव, ओकारनाथ) (२) केदारनाथ (३) घुश्मेश्वर (घृष्णेश्वर, घृसुणेश्वर) एलोरा की गुफाओ के पास। (४) त्र्यंबकेश्वर (गोदावरी के उद्गम के पास) पंचवटी के पास।

(५) नागेश्वर (६) भीम शकर (७) मल्लिकार्जुन (८) महाकालेश्वर (९) रामेश्वर, (१०) विश्वेश्वर (११) वैद्यनाथ (१२) सोमनाथ।

(ए) शिव की अष्टमूर्तियों[2] पर भी अनेक नाम मिलते हैं:—

(१) सर्व—क्षितिमूर्ति—एकाग्रेश्वर—चमेली तेल स्नान—कांजीवरम् में।
(२) भव—जलमूर्ति, जंबुकेश्वर—झरने पर जलहरी-त्रिचिनापल्ली।
(३) उग्र—वायुमूर्ति—श्रीकाल हस्तीश्वर (श्री—मकड़ी + काल = सर्प + हस्ती = हाथी) चौकोर मूर्ति—स्वर्णमुखी नदी पर।
(४) रुद्र—अग्निमूर्ति—तेजोलिंग-उत्सव में मनों कपूर दो दिन रात जलता है-तिरुवन्नमलय में।
(५) भीम—आकाश मूर्ति—नटराज चिदंवरम् शिव—स्वर्ण मालाएँ चिदंवरम् में।
(६) पशुपति—जीवात्मामूर्ति। (नैपाल में)
(७) महादेव - सोममूर्ति (काठियावाड़ का सोमनाथ या चटगाँव का चद्रशेखर तीर्थ)
(८) ईशान—सूर्यलिंग—पुरी के पास कोणार्क में तथा प्रभास में सूर्य-मंदिर हैं।

विकसित शब्दों के तत्सम रूप

विकसित	तत्सम	विकसित	तत्सम
अदेसर	आर्द्रेश्वर, अद्रीश्वर	जोगदेव	योगदेव

[1] सौराष्ट्रे सोमनाथञ्च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्,
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारपरमेश्वरम्
केदारं हिमवत् पृष्ठे डाकिन्यां भीमशंकरम्
वाराणस्याञ्च विश्वेशं त्र्यंबकं गौतमीतटे
वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशंदारुकावने
सेतुबंधे च रामेशं घुश्मेशञ्च शिवालये। शिव० पु०।

[2] शर्वो भवस्तथा उग्रो रुद्रोभीमः पशुपतिः।
ईशानश्च महादेवः मूर्तयश्चाष्ट विश्रुताः॥

इंदेश्वर	इंद्रेश्वर	तीरी	तीरू
ईशान	ईशान	त्रिवक	त्र्यंबक
ऋषेश्वर	ऋषीश्वर	दोदराज	दूधराज
श्रोमेश्वर	श्रोमीश्वर	पतेश्वरी नारायण	पतीश्वरी नारायण
श्रौसानेसर	श्रवसानेश्वर	बंभूल, बंभोली, बंभोले	बंबंभोला
उग्रह	उग्र	वटुकी	वटुक
कलेसर	कलेश्वर	वरमेश्वर	ब्रह्मेश्वर
कविलास	कैलास	भद्दर	भद्र
खेमकरण	क्षेमकरण	मुलई, भुलुश्रा, भुल्लन, भुल्लू	

भूल, भूला, भूले, भोली, भोलू, भोले भोला

गनपतेश्वर	गणपतीश्वर		
गनेसपाल	गणेशपाल	मनेश्वर	मणीश्वर
गोलीराम	गोलाराम	मातुराम	मातृराम
चंदचूर	चंद्रचूड	मेखरी	मेखली
लच्मेश्वर	लक्ष्मीश्वर	सतेश्वर	सतीश्वर
लखेश्वर	लक्षेश्वर	हरुश्रा, हरू	हर
विशेश्वर	विश्वेश्वर	हर्जी	हर जी
सिव्वन, श्यो	शिव		

(४) **विजातीय प्रभाव**—निहाल तथा शाह ये दो शब्द विजातीय भाषा के हैं। इनसे मुसलिम संस्कृति का प्रभाव प्रगट होता है।

इन अभिधानो में बाह्य प्रभाव केवल नाम मात्र है। इतने बृहत् संग्रह में ख्याल, गुलाम, तवक्कुल, निहाल, बक्स, बहादुर, शाह विदेशी शब्द हैं।

(५) **बीजकथा**—इन नामों से निम्नलिखित शिव-कथा प्राप्त होती है :—

नाम—शिव

रूपाकृति—पंचमुख, तीन नेत्र, दिगंबर, भस्मधारी, जटायुक्त, नीलकंठ

स्वभाव—सरल, आशुतोषी, क्रुद्ध होने पर उग्र तथा रुद्र

स्त्री—पार्वती

पुत्र—स्कंद तथा गणेश

आयुध—पिनाक, त्रिशूल

वाद्य—डमरू

मूलनिवास—कैलास

सेवक—वीर भद्र

वाहन—नांदी

आभूषण—मस्तक पर चंद्रमा, गले में शेषनाग

गुण—अविनाशी, स्वयंभू, लोक कल्याणकारी

कर्म—सृष्टि-संहार

अचल मूर्तियाँ—एकादश ज्योतिर्लिंग तथा अष्टमूर्तियाँ

चलमूर्ति—नर्वदेश्वर

लीला—मदनदहन, यज्ञनाशन, त्रिपुर-विध्वंसन

ग—मूल शब्दों की निरुक्ति—

अंबधर—अंबा अथवा अंबिका पार्वती के लिए प्रयुक्त होता है क्योंकि वह विश्व का पालन करनेवाली माता है जो शिव की अर्द्धांगिनी है।

अक्षर—अखंड अविनाशी होने से शंकर को अक्षर कहा गया है।

अखिलेश—अखिल सम्पूर्ण के अर्थ में आता है।

अचल, अचलेश्वर—अलीगढ़ के अचल ताल पर अचलेश्वर महादेव का मंदिर है। यह कैलास की ओर भी संकेत करता है।

अदेसर, अद्रिनारायण—शिव कैलाश पर रहने के कारण सम्पूर्ण हिमालय पर शासन करते हैं। यह विस्तृत पर्वतमाला स्वर्ण, रत्न आदि अमूल्य पदार्थों का कोष है। इन्हीं कारणों से शिव के ये नाम रखे गये हैं। अदेसर—अद्रि + ईश्वर अथवा आर्द्रा (पार्वती) + ईश्वर से बना है।

अभयंकर, अभय—आपत्ति से बचाने के लिए अभयदान देनेवाले अर्थात् शंकर।

अमृत—अविनाशी।

अर्धेंदुभूषण—शिव के मस्तिष्क पर द्वितीया का चंद्रमा है। इसलिए उनको अर्धेंदुभूषण कहा गया है।

आशुतोष—शिव बड़ी आसानी से शीघ्र ही संतुष्ट हो जाते हैं। किसी कवि ने कहा है :—"चार फल पैये फूल एक दै धतूरे को" यह शंकर का व्यंग्यात्मक नाम प्रतीत होता है।

इंदुकांत—चंद्रमा के स्वामी, चंद्रमा शिवजी के भाल पर सुशोभित है।

इंदुशेखर—चन्द्रभूषण (शिव)।

ईशन—ईशान का विकृत रूप है। शिव अष्ट दिग्पालों में से एक है जो ईशान दिशा के स्वामी हैं। (ईशन एक नदी का नाम भी है)

उग्र—(क्रुद्ध) दुष्टों को दण्ड देने के लिए कभी-कभी शिव को उग्र रूप धारण करना पड़ता है।

औसानेश्वर—औसान का शुद्ध रूप अवसान = शेष, मृत्यु, मरघट।

कटेश्वर—(कट + ईश्वर) कट = शव, श्मशान, खंडित, समय। इससे मूर्ति के खंडित होने का संकेत मिलता है।

कपर्दी—जटा (कपर्द) धारी होने के कारण शिव को कपर्दी कहते हैं। जटिल जटाजूट होने से इनको धूर्जटी कहते हैं।

कालेंद्र, कालेश्वर—शिव काल के भी काल हैं इसलिए उन्हें कालेश्वर या महाकाल कहा है।

काशीनरेश—विश्वनाथ काशी के राजा माने जाते हैं।

कुटेश्वर—गंगोत्री जानेवाले मार्ग से देव प्रयाग के आगे खोवा गाँव से गंगा के किनारे कुटेश्वर महादेव को जाने का रास्ता है, कुट पर्वत को कहते हैं।

कुशेश्वर—(१) दरभंगा से ३० मील पूर्व कुश मुनि के आश्रम के पास कुशेश्वरनाथ महादेव का मंदिर है। (२) नासिक की यात्रा में ब्रह्मगिरि परिक्रमा में कुशेश्वर महादेव का मंदिर है।

कूरेश्वर—प्रयाग से लगभग ४ मील पश्चिम की ओर गंगा के तट पर कूरेश्वर महादेव का मंदिर है। यह कौरवों द्वारा स्थापित बतलाया जाता है।

केंद्रपाल—केंद्र (क = रुद्र या सूर्य, इन्द्र = स्वामी) शिव के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है जो सूर्य के स्वामी हैं। (केन्द्र = राजधानी, प्रशिक्षण कला केन्द्र, नाभिकेन्द्र, लग्न के १, ४, ७, १० केन्द्र है)

केदारेश्वर—केदारनाथ ज्योतिर्लिंग हिमालय की श्रेणी में स्थित है।

कोतवालेश्वर—काशी के काल भैरव कोतवाल के नाम से प्रसिद्ध हैं क्योंकि वह वाराणसी की सर्वदा रक्षा करते हैं और विश्वनाथ शंकर काशी के राजा हैं। इसलिए उनका नाम कोतवालेश्वर प्रचलित हुआ।

कौलेश—शैवों में कौल सम्प्रदाय है।

क्षेत्रनाथ, क्षेत्रपाल—प्रत्येक क्षेत्र या गाँव या नगर का रक्षक एक इष्टदेव होता है जिसको भूमियाँ या भुइयाँ कहते हैं। क्षेत्रपाल झाँसी के पास एक तीर्थ स्थान।

क्षेमकरण—यह दो अर्थों में लिया जा सकता है। (१) क्षेम (कुशल) करने के कारण शिव को क्षेमकरण कहा गया है। (२) क्षेमा=पार्वती के करण=आभूषण।

खेमसिंह—खेमा (क्षेमा) का विकृत रूप है जो पार्वती के अर्थ मे आता है। यहाँ सिंह जाति-सूचक अर्थ में नहीं लिया गया है अपितु अपने वाच्यार्थ का सूचक है।

खेरेश्वर—देखिए क्षेत्रनाथ।

गंगेश्वर—गंगेश्वर महादेव विमलेश्वर के मंदिर से ७, ८ मील दूर नर्वदा के बीच एक पक्के चबूतरे पर स्थापित है। पश्चिमवाहिनी नर्वदा इस चबूतरे के दोनों तरफ बड़े वेग से पूर्व दिशा में बहती है। इस चमत्कार के विषय में यह जनश्रुति प्रसिद्ध है कि यहाँ मातग ऋषि का निवास है। किसी समय कुछ ऋषि उनके यहाँ पधारे और उन्होंने इच्छा प्रगट की कि गगा जी में स्नान करने के बाद ही आतिथ्य ग्रहण करेंगे। मातंग ऋषि ने अपने तपोबल से नर्वदा के प्रवाह को पश्चिम से पूर्व की ओर बदल दिया। इस प्रकार नर्वदा वहाँ गंगा रूप हो गई। ऋषियों ने बड़े प्रेम से स्नान कर मातग ऋषि का आतिथ्य स्वीकार किया। उस समय से यह स्थान गगेश्वर नाम से प्रसिद्ध है।

गुटेश्वर— (१) गुट्ट=समूह, दल (२) गोट=गाँव।

गोकरण—गोकरण का अर्थ गाय के कान। एक समय रुष्ट पार्वती को संतुष्ट करने के लिए शिव ने यह रूप धारण किया था। गोकरण दक्षिण में एक तीर्थ है। उत्तर में गोला गोकरण-नाथ का मंदिर है।

गोदावरीश—शंकर को सब नदियो का स्वामी माना गया है।

गोपेश्वर—(१) एक बार शिव ब्रज का भ्रमण करते हुए कृष्ण से मिले जिन्होंने शंकर को गोपेश्वर के नाम से सम्बोधित किया। वास्तव में गोपेश्वर कृष्ण को कहते हैं। (२) तुंगनाथ से दो मील पर गोपेश्वर चट्टी पर गोपेश्वरनाथ का मंदिर है।

गोरखेंद्र—यह समस्त पद गोरखा+इंद्र दो शब्दों से बना है। गोरखा नैपाल के अंतर्गत एक प्रदेश है, अतः इस प्रदेश में स्थापित शिव को गोरखेंद्र कहा गया है। (गोरख नाथ के स्वामी=शिव)

गोलीराम—गोला—गोकरण नाम से यह स्पष्ट हो जाता है। गोली गोला (पार्वती) का विकृत रूप है।

गौरसिंह—गौर, शुभ्र, सित ये शब्द शिव के उज्ज्वल वर्ण की ओर संकेत करते हैं। गोबर के शिवलिंग को भी गौर कहते हैं।

चन्द्रकरण—चंद्र है आभूषण (करण) जिसका अर्थात् शिव।

चन्द्र चूड़ामणि—चूड़ामणि=आभूषण।

चक्रेश्वर—शिव चक्र सुदर्शन के स्वामी हैं। इन्होंने प्रसन्न होकर इसे विष्णु को दिया था।

चितेश्वर—चिता + ईश्वर शिव श्मशान के स्वामी हैं।

जगबंधन—यह जगबंधु का विकृत रूप है, इसलिए शिव की उपाधि समझना चाहिए। (बंधन—विनाश, शिव)

जतींद्र—यतियों में श्रेष्ठ, यह भी शिव की एक उपाधि है।

टप्पेनाथ—टप्पा मैदान को कहते हैं। टप्पेनाथ क्षेत्रपाल के समान है।

डेलेश्वर—महादेव की मूर्तियाँ जिन-जिन उपकरणों से बनाई गईं उन्हीं के नाम पर उनका नाम पड़ा। यथा—जो मूर्तियाँ मिट्टी की बनीं वे पार्थिवेश्वर, भूमेश्वर कहलाईं। जिनमें तिल का प्रयोग किया गया वह तिलेश्वर और फूलवाले फूलेश्वर कहलाये। बुंदेश्वर सम्भवतः अमरनाथ ज्योतिर्लिंग के सदृश्य हो जो पानी की बूँदों के टपकने से हिम के रूप में लिंग की आकृति का सा हो जाता है। अदेवर कदाचित् पत्थर का बना हो। ताम्रनिर्मित लिंग तामेश्वर के नाम से विख्यात हुआ।

तामेश्वर—देखिए डेलेश्वर।

तारकेश्वर—हावड़ा से १२ मील की दूरी पर महादेव का विशाल मंदिर है। शिवरात्रि और चैत्र संक्रांति पर वहाँ बड़ा मेला होता है।

तिलेश्वर—देखिए डेलेश्वर।

तीरी—तीरू का विकृत रूप है जो शिव के अर्थ में आता है। (तीर-नदी का तट, जन्म-समय तीर छोड़ने की प्रथा)

तुङ्गनाथ—हिमालय पर एक शिवलिंग और तीर्थ-स्थान। अखीमठ से १६ मील है। इसके पास आकाश-गंगा नामक एक धारा पहाड़ से निकलकर अमृत कुंड में गिरती है।

त्रिनाथ—(१) त्रि = त्रिकाल, त्रिगुण तथा त्रिलोक का सूचक है। तीनों काल, तीनों गुण, तथा तीनों लोकों के स्वामी हैं, (२) त्रिवर्ग के दाता (३) त्रिदेवों में मुख्य (४) सम्भव है नवनाथ के तुल्य यह भी कोई त्रिक्समुदाय हो अथवा (५) त्रेता के नाथ राम (६) त्रिदेव।

त्रिपुरारी—मय दानव द्वारा रचित तीन नगरों का समूह त्रिपुर के नाम से प्रसिद्ध था। आकाश, अंतरिक्ष और पृथ्वी पर स्थित वे नगर क्रमशः सोने, चाँदी और लोहे के बने हुए थे। देवों की प्रार्थना पर शिव ने इन तीनों अजेय नगरों का विध्वंस किया था।

त्र्यंबक—त्रि + अंबक—त्रिनेत्रवाले शिव जी त्र्यंबक नाम से प्रसिद्ध हैं। इस नाम का एक पर्वत भी है।

दक्षिणामूर्ति—तंत्र के अनुसार शिव की एक मूर्ति है।

दिगंबर—सर्वदा नंगा रहने के कारण शिव को दिगंबर कहते हैं।

दिव्यानंद—स्वर्गीय तथा अलौकिक आनंदवाले शिव।

दूधनाथ—मिर्जापुर के पास दूधनाथ महादेव का मंदिर है। भक्त लोग जाकर वहाँ दूध चढ़ाते हैं।

देवमणि, देवसिंह—देवताओं में श्रेष्ठ शिव। मणि तथा सिंह श्रेष्ठत्व के बोधक हैं।

द्वीपधर—द्वीप = व्याघ्र चर्म धारण करनेवाले शिव।

धारेश्वर—यह शिव की स्थिति बतलाता है। किसी नदी की धारा के समीप होने के कारण महादेव का नाम धारेश्वर हो। सम्भव है प्रसिद्ध राजा भोज की राजधानी धारानगरी की ओर संकेत हो।

धुरकंडी—यह भी बरखंडी की तरह शिव के स्थान का बोधक है।

धूर्जटी—जटाजूटवाले शिव।

नंदकेश्वर—अपने वाहन नादी के कारण शिव का नाम नंदकेश्वर हुआ।

नगनारायण—नग = पर्वत अत: यह नाम शिव का द्योतक है।

नर्वदेश्वर—यह शिव की चलमूर्ति जो नर्वदा नदी से प्राप्त होती है, अमरकंटक में, जहाँ से नर्वदा नदी निकलती है, महादेव का एक बड़ा मंदिर है। शिवरात्रि में सहस्रों रुपये पूजा में आते हैं, इस नदी के तटों पर अनेक महादेव के मंदिर हैं। नर्वदा से प्राप्त होनेवाले नर्वदेश्वर की मूर्तियों के विषय में यह कहावत प्रसिद्ध है "नर्वदा के कंकर सब शंकर समान हैं"।

नागनाथ—इन नामों के सम्बन्ध में यह पौराणिक कथा प्रसिद्ध है—दारुका राक्षसी सोलह योजन चौड़े वन में रहती थी। उसने पार्वती की तपस्या से यह वरदान माँग लिया कि जहाँ मैं जाऊँ मेरे साथ मेरा वन भी जाय। इसलिए पृथ्वी, वृक्ष, भवन आदि सब उसके साथ-साथ चलते थे। उसके उपद्रव से मनुष्य बड़े तंग आ गये थे। जब औरुर्व नामक ऋषि ने उसको शाप दिया तब उसने अपने वन को पश्चिम के समुद्र में स्थित किया, जहाँ देवता भी नहीं आ सकते थे। राक्षस ऋषि के अभिशाप से पृथ्वी पर तो नहीं आते थे परन्तु नाव में बैठनेवाले मनुष्यों पर बड़ा अत्याचार करते थे। एक दिन शिव के परम भक्त सुप्रिय वैश्य को उसके परिजनो के साथ बंदी बना लिया, तब नागनाथ शंकर ने सब राक्षसों को मार डाला और वे नागेश ज्योतिर्लिंग के नाम से दारुक वन में निवास करने लगे।

नागभूषण—महेश अपने गले में एक सर्प धारण करते हैं।

नागेंद्र—सर्पों के स्वामी शिव।

नागेश्वर—देखिए नागेंद्र।

निष्कामेश्वर—निष्काम = इच्छा रहित।

निहालकरण—निहाल फारसी शब्द है जिसका अर्थ है पूर्णकाम अर्थात् जो सब प्रकार से प्रसन्न और संतुष्ट हो। अतः निहालकरण शिव का द्योतक हुआ।

नीलकंठ—समुद्रमंथन के समय एक घड़ा विष का निकला था, उसको महादेव जी ने पान कर लिया तब से उनका गला श्याम वर्ण का हो गया। बेताब की यह पंक्ति—झिलेगी किससे शंकर के सिवा गरमी हलाहल की—इसी ओर संकेत करती है।

पंचानन—पाँच मुख होने के कारण शंकर को पंचानन कहते हैं।

पशुपति—पशु मृग या जीव के अर्थ में प्रयोग किया जाता है जिनके स्वामी शिव हैं। नैपाल राज्य में पशुपतिनाथ का मंदिर है जहाँ शिवरात्रि को बड़ा मेला होता है।

पार्थिवेश्वर—पार्थिव = मिट्टी का (शिवलिंग)।

पिनाकी—शिव का धनुष पिनाक कहलाता है, इसलिए उनका नाम पिनाकी पड़ा।

प्रपन्ननाथ—प्रपन्न = शरणागत।

फणींद्र भूषण—देखिए नागभूषण।

फूलेश्वर—देखिए डेलेश्वर।

बंबेश्वर—बम्बा मुम्बा देवी का रूपांतर प्रतीत होता है जिसके नाम पर बम्बई शहर बसाया गया है। अथवा बं बं से सम्बन्ध हो। बंबा (छोटी नहर) पर स्थित शिवमूर्ति।

बंभोली—जब भक्त लोग बं बं शब्द का उच्चारण करते हैं तो भोला भगवान् अर्थात प्रसन्न होते हैं।

बटुक, बटुकी—शिव से ब्याह करने के लिए पार्वती ने घोर तपस्या की। उस समय शिव ने बटुक अर्थात् विद्यार्थी का रूप धारण कर उनकी परीक्षा ली। काशी में बटुकनाथ महादेव का मंदिर है।

बलकेश्वर—बंबई में बालकेश्वर महादेव का मंदिर है। बलका (वलीक—औलती) + ईश्वर।

बीजधर—तंत्रों में कुछ देवताओं के बीज (मूल) मंत्र दिए हुए हैं जिनके कर्त्ता शिव माने जाते हैं।

बुंदेश्वर—देखिए डेलेश्वर।

ब्रह्मेश्वर—कांची से ३० मील के लगभग पद्मितीर्थ के पास ब्रह्मेश्वर महादेव का मंदिर है।

भंबूल—देखिए बंभोली।

भद्रपाल, भद्रसेन—भद्र = शिव या वीरभद्र।

भवनाथ—भव = शिव या संसार

भार्ग्यनाथ—भार्ग्य = भृगुवंशी परशुराम।

भीलचंद, भीलेश्वर—एकदा अर्जुन को दिव्यास्त्र लेने के लिए इंद्र के पास जाना पड़ा। शिव ने उसकी परीक्षा के लिए किरात (भील) का रूप धारण किया। एक वाराह के ऊपर शंकर और अर्जुन में युद्ध आरम्भ हो गया। अन्त में अर्जुन से प्रसन्न होकर उन्होंने अपना वास्तविक रूप प्रकट किया। इसी कथानक को भारवि ने किरातार्जुनीय महाकाव्य में वर्णन किया है। इसी प्रसंग के कारण यह दोनों नाम शिव के हुए।

भुवनेश, भुवनेश्वर—उड़ीसा प्रांत में भुवनेश्वर महादेव का मंदिर है जो सदा जल से भरा रहता है।

भूमेश्वर—देखिए डेलेश्वर।

भैरव[1]

भोलानाथ—(१) भोले स्वभाववाले होने से शिव शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। (२) भोले मनुष्यों के स्वामी। यह शिव का व्यंग्यात्मक नाम है।

मंथन—मथनेवाले, नाश करनेवाले शिव।

मखसूदन—जब दक्ष प्रजापति ने यज्ञ किया तो पार्वती बिना निमंत्रण के ही अपने पिता के यहाँ चली गईं। वहाँ पर उनको तथा उनके पति को अपमानसूचक शब्द कहे गये जिनको वह सहन न कर सकीं और यज्ञ में कूदकर प्राण विसर्जन कर दिये। शिव को जब यह सूचना मिली तो उन्होंने सम्पूर्ण यज्ञ को विध्वंस कर दिया।

मणीन्द्रभूषण—मणियों के स्वामी अर्थात् शेष नाग जो शिव जी का भूषण है।

मदन दहन—देवताओं की प्रार्थना पर कामदेव ने अपने बाण शंकर पर छोड़े। शंभु ने अपना तीसरा नेत्र खोलकर उसकी ओर देखा जिससे वह जलकर भस्म हो गया।

मयंकमोहन, मयंकरंजन—मयंक का अर्थ चंद्रमा है जो सर्वदा शंकर के मस्तक को सुशोभित करता है।

---

[1] महाराष्ट्र में यह खंडेराव या खंडोबा के नाम से प्रसिद्ध हैं। महादेव ने यह भयंकर रूप उभय दैत्यबंधु मणि तथा मल्ल को विध्वंस करने के लिए धारण किया था। इन दैत्यबंधुओं ने मणिचूड़ पर्वत पर सप्त ऋषियों के आश्रमों को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। ऋषियों की प्रार्थना पर शिव ने एक विकट कटक लेकर मणि को युद्ध में मार डाला और मल्ल को भी परास्त कर दिया। सप्त ऋषियों के आग्रह से शंकर स्वयंभू रूप से उसी पर्वत पर रहने लगे। भैरव के साथ एक कुत्ता रहता है। खंडेराव का वाहन पीला घोड़ा और पीला ही झंडा था तथा जिन राक्षसों को मारा वे भी पीले रंग के थे।

मल्लिकार्जुन—यह श्री कैलास पर एक ज्योतिर्लिंग है।

महारूप—शिव का एक नाम।

मातावर—माता पार्वती और उनके वर (पति) शिव।

मूकेश्वर—इलाहाबाद स्टेशन के समीप मूकेश्वर महादेव का मंदिर है। सम्भवतः शिव की मूक प्रार्थना होती हो इसलिए यह नाम पड़ा।

मृगेंद्र—देखिए पशुपति।

मेखरी—यह मेखलिन् का विकृत रूप है जो शिव के अर्थ में आता है। क्योंकि शिव मेखला (पटका) धारण करते हैं।

रंगनाथ—तांडव आदि नृत्य करने के कारण शङ्कर को नटराज या रंगनाथ कहते हैं।

रविकरण—सूर्य पहले शिव का प्रतीक समझा जाता था, करण = भूषण।

राजराजेश्वर—राजराज चन्द्रमा अथवा कुबेर को कहते हैं।

रेवानन्द—रेवा = नर्मदा जिसके उद्‌गम पर नर्वदेश्वर महादेव का मंदिर है।

रुद्र—दुष्टो को रुलाने से शिव का नाम रुद्र पड़ा।

वटुक—देखिए बटुक।

वटेश्वर—उत्तर प्रदेश में वटेश्वर तीर्थ में वटेश्वरनाथ महादेव का मंदिर है। यहाँ पर पशुओं का बड़ा भारी मेला लगता है।

विभूतिभूषण—शिव विभूति (अष्ट सिद्धियों) के दाता हैं। अथवा विभूति (भस्म) है भूषण जिसका अर्थात् शिव।

विशालेश्वर—शिव की दीर्घकाय मूर्ति की ओर संकेत करता है।

विश्वनाथ, विश्वेश्वर—काशी में विश्वनाथ महादेव का प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग है जिसे विश्वेश्वर भी कहते हैं।

विश्वविमर्दन—संसार को नाश करनेवाले महादेव।

वीरभद्र—महादेव के अधीन एक गण सेवक है। यह नाम शिव के लिए भी आता है।

वृषकेतु—शिव की पताका पर उनके वाहन नांदी की मूर्ति है।

शुभ्रेंदुभूषण—निर्मल चंद्रमा जिनका आभूषण है अर्थात् शिव।

शूली—त्रिशूल धारण करने से शिव को शूली कहते हैं।

शेषधर—शेषनाग धारण करनेवाले शिव।

शेषमणि—शेषनाग शिव का भूषण है।

शैलेंद्र, शैलेश—कैलासपति शंकर।

श्रीकंठ—शिव।

श्रीवर्धन—शिव।

श्रुतिनाथ—वेदों की रक्षा करना विष्णु का काम हैं। ब्रह्मा प्रलय काल में उनको सुरक्षित रखता है और शिव इस ज्ञान का स्वामी है।

श्लोकनाथ—श्लोक = यश, कीर्ति।

सतींद्र—सती दक्ष प्रजापति की कन्या थी जो शिव को ब्याही गई थी। शिव की निंदा सुनते ही अपने पिता के यज्ञ में कूदकर उसने अपने प्राण विसर्जन कर दिये। इस प्रकार अपने पातिव्रत धर्म का परिचय दिया। वह संसार में सती के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसीलिए जो स्त्रियाँ अपने मृत पति के साथ चिता पर जल जाती हैं वे सती कहलाती हैं।

सदापति—सदा रहनेवाले अर्थात् अमर, पार्वती का ब्याह प्रत्येक जन्म में अविनाशी शिव के साथ होता है। सदा पालन करने से भी यह नाम हो सकता है।

सदारंग—सदा प्रसन्न रहनेवाला।

सर्व—सर्व = देवता अथवा शर्व = शिव।

सर्वोत्तम—देखिए देवमणि।

सिंहेश्वर—सिंह शिव का वाहन है।

सितेश्वर—शुक्ल वर्ण शिव।

सिद्धनाथ—सिद्ध—योगियों के स्वामी। ८४ सिद्ध प्रसिद्ध हैं।

सुन्दरेश्वर—सुन्दर कृष्ण तथा कामदेव का नाम है, यह शिव के सुन्दर रूप की ओर संकेत करता है।

सुधांशुशेखर—सुधांशु = चन्द्रमा, शेखर = आभूषण।

सुरोत्तम—सुरों (देवताओं) में उत्तम।

सूरजकरण—सूर्य है आभूषण जिसका अर्थात् शिव। पहले सूर्य शिव का प्रतीक मानकर पूजा जाता था।

सूर्यकांत—सूर्य के स्वामी शिव।

सेतुबन्धनाथ—सेतुबन्ध रामेश्वर में शिव की मूर्ति जिसको रामचन्द्र ने स्थापित किया था।

सोनेश्वर—हेमशंकर, शंकर की स्वर्ण मूर्ति।

सोमनाथ—प्रभास क्षेत्र में शिव की मूर्ति है। सोमनाथ के पास सोमेश्वर।

स्थानेश्वर—दिल्ली के पास थानेश्वर में शिव की मूर्ति।

स्मरहर—स्मर (कामदेव) को नाश करनेवाला। देखिए मदन दहन।

स्वयंप्रकाश, स्वयंभू—जो स्वयं प्रकाशित या उत्पन्न हो।

हितेंद्र, हितेश—कल्याणकारी शिव।

हेमनाथ, हेमेंद्र—शंकर की स्वर्ण मूर्ति।

घ—गौण शब्द

(१) वर्गात्मक—

(अ) जातीय—राय, शाह, सिंह, सिनहा

(आ) साम्प्रदायिक—सागर

(२) सम्मानार्थक—

(अ) आदरसूचक—श्री, जी, बाबा, बाबू

(आ) उपाधिसूचक—आचार्य, लाल, राजा, राय

(३) भक्तिपरक—अंबर, अजय, अधीन, अनंत, अनुग्रह, अमृत, अवतार, आगम, आनंद, आनन, आधार, आराध्य, इंद्र, इकबाल, इष्ट, ईश्वर, उत्तम, औतार, कंठ, करण, करुणा, कांत, किरण, किशोर, कुमार, कृपा, कृपाल, कोटि, ख्याल, गायन, गुन, गुरु, गुलाम, गौर, चंद चंदन, चंद्र, चंद्रप्रभा, चयन, चरण, चेतन, जटा, जतन, जन्म, जस, जादिक, जित, जीत, जीवन, जूठन, जोर, ज्योति, ज्ञान, झलक, टहल, तवकुल, दत्त, दमन, दया, दयाल, दर्शन, दान, दाम, दास, दीन, दीनू, दीप, दुलारे, देनी, देव, धन, धनी, धारी, ध्यान, ध्यानी, नंद, नंदन, नरेश, नाथ, नाम, नायक, नारायण, निधि, निरंजन, निरीह, निहाल, पति, पदुम, पन्ना, परब्रह्म, पलटन, पाल, पूजन, पूरण, प्यारे, प्रकाश, प्रताप, प्रपन्न, प्रभु, प्रमोद, प्रवेश, प्रसन्न, प्रसाद, प्रेम, प्रेमहृदय, प्रेमी,

फल, फूल, फेर, बक्स, बच्चन, बच्चा, बंधन, बंधु, बदल, बल, बली, बहादुर, बाल, बालक, बोध, बोधन, भंग, भक्तीश, भगत, भगवान्, भज, भजन, भरोसे, भवन, भान, भावन, भीख, भीम, भूषण, भोला, मंगल, मणि, मन, मनमोहन, मनोग, मनोज्ञ, मल, महा, मित्र, मीत, मुनि, मूर्ति, मोहन, मौलि, यज्ञ, यत्न, यश, योगी, रती, रत्न, राखन, राज, राजेंद्र, राम, रूप, लहरी, लाल, लोचन, वंश, वंशी, वत्स, वदन, वरण, वरदानी, वल्लभ, विक्रम, विजय, विनोद, विमल, विलास, विशाल, विहारी, वीर, वीरेंद्र, व्रत, शरण, शेखर, संत, संपत्ति, सत्य, सदा, सनेही, सहाय, सिंहासन, सिद्ध, सुंदर, सुख, सुबोध, सुमिरण, सुमिरन, सूरत, सेन, सेवक, सोने, स्वरूप, हगी, हरख, हर्ष, हेत, हेतु, हेम।

(४) **सम्मिश्रण**—देव सम्बन्धी सम्मिश्रण तीन प्रकार का पाया जाता है।

(अ) **मूर्तामूर्त**—ओम्, परब्रह्म, ब्रह्म, सच्चिदानंद इसमें मूर्त इष्टदेव को अमूर्त निर्गुण ब्रह्म के रूप में माना गया है।

(आ) **मूर्त + मूर्त**—यह मिश्रण कई प्रकार का है।

(१) **स्व पर्य्यायवाची शब्दों के साथ**—ओंकार, गौरीनाथ, चंद्रशेखर, त्रिपुरारी, दुर्गेश, भोला, महेंद्र, महेश, शंकर, शंभू, शिव, हरेंद्र, हेमेंद्र।

इससे भक्त की अपने इष्टदेव के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा प्रकट होती है।

(२) **अन्य देवों के साथ**—इंद्र, उदयनारायण, उपेंद्र, कमल, कृष्ण, गोपाल, गोविन्द, जगदीश, जयेंद्र, तेजनारायण, दिनमणि, बनवारी, ब्रह्मा, भक्तीश, माधव, मुनिस्वामी, मुरारी, मोहन, यादवेंद्र, रणछोर, रमेश, राम, विष्णु, विहारी, व्रजेश, हरि।

इस सम्मिश्रण से निम्नलिखित सम्बन्ध प्रकट होते हैं :—

(१) सम सम्बन्ध (२) उपमेय-उपमान सम्बन्ध (३) साधन-साध्य सम्बन्ध (४) विशेषण-विशेष्य सम्बन्ध। इससे भक्त की तीन प्रकार की भावनाएँ प्रकट होती हैं। देखिए ब्रह्मा के सम्मिश्रण में शंकर।

(३) **पुत्र, कलत्रादि स्वसम्बन्धियों के साथ**—अंबा, अबिका, आद्या, आशा, उमा, कमला, काली, गंगा, गणेश, गिरिजा, गौरी, चन्द्र, जमुना, जाह्नवी, ज्वाला, तारा, दुर्गा, देवी, नर्वदा, पार्वती, प्रभा, प्रमा, बाली, भवानी, भामा, भीमा, मदन, मनसा, मया, माया, यमुना, रमा, रवि, राजेश्वरी, रेवती, रेवा, लक्ष्मी, लज्जा, ललिता, विजय, विद्या, शारदा, श्याम, श्यामा, सूर्य, हीरा।

जब भक्त इष्टदेव तक पहुँचने में अपनी असमर्थता देखता है या सिद्धि में संदेह तथा विलंब समझता है तो वह अपने उपास्य देव के किसी सम्बन्धी का आश्रय लेता है। गोस्वामी तुलसीदास ने श्री राम तक अपनी विनय-पत्रिका पहुँचाने के लिए हनुमान्, सीतादि कितने सम्बन्धियों से अभ्यर्थना की है, यह बात विनय-पत्रिका के आरम्भिक पदों से स्पष्ट हो जाती है।

(इ) **स्थान संबंधी**—यह भौगोलिक सम्बन्ध दो बातों की सूचना देता है :—

(१) त्रिभुवन, त्रिलोक, भव मेदिनी, विश्व, आदि शब्दो से शिव की व्यापकता तथा एकाधिपत्य सिद्ध होते हैं।

(२) कामता, काशी, केदार, कैलाश, त्रिवेणी, नैनी, मंदिर, वने, विपिन, वेणी, सेतुबंधु, हरिभवन, हरिहर आदि स्थल शिव के संसर्ग से पुण्यस्थान बन गये हैं। ये शिव के निवास स्थान के सूचक हैं।

(ई) **व्यक्ति संबंधी**—अपनी भक्ति-भावना के विचार से भक्त अपने निजी शंकर की प्रतिष्ठ कर लेते हैं। इसमें भक्त तथा भगवान् का नाम एक साथ ही रहता है।

ङ—गौण शब्दों की विवृत्ति—

नारद ने भक्ति सूत्र में एकादश आसक्तियों[१] का वर्णन किया है। इन शिवप्रवृत्तिमूलक नामों में निम्नलिखित आसक्तियाँ प्राप्त होती हैं। फूल मणि, मन (मणि), रत्न, सोने तथा हेम इन शब्दों का वर्गीकरण एक से अधिक आसक्तियों में हो सकता है।

(१) **गुण माहात्म्यासक्ति**—अजय, अनंत, अनुग्रह, अमृत, आनन्द, इंद्र, इष्ट, इकबाल, अवतार, करुणा, कांत, किरण, कृपा, कृपाल, गुन, गुरु, चंद, चंद्र, चंद्रप्रभा, जस, जित, जीत, जीवन, ज्योति, ज्ञान, झलक, दत्त, दमन, दया, दयाल, दान, देव, नंद, नारायण, निरीह (इच्छा रहित), निहाल (पूर्णकाम), पन्ना, पूरण, प्रकाश, प्रताप, पाल, प्रभु, प्रमोद (हर्ष), प्रसन्न, प्यारे, फूल (आनन्द), बक्स, बल, बली, बहादुर, बोध (ज्ञान), बोधन, भंग, भगत, भगवान्, भीम (भयंकर), मंगल, मनमोहन, मनोज्ञ (सुन्दर), मल, महा, मुनि, यश, योगी, राखन, राज, राजेंद्र, लहरी (मौजी), वरदानी, विजय, विनोद, विमल, विलास, विशाल, विहारी, वीर, वीरेंद्र, संत, संपत्ति, सत्य, सदा, सनेही, सहाय, सिद्ध, सुन्दर, सुख, सुबोध, हरख, हर्ष, हेत (कल्याण)।

(२) **रूपासक्ति**—आनन, गौर, चरण, जटा, मूर्ति, मौलि (सिर), रूप, लोचन (नेत्र) बदन, वरण, सूरत, स्वरूप।

(३) **पूजासक्ति**—अंबर(वस्त्र), आगम, आराध्य (पूजनीय), करण, दर्शन, दाम (माला), दीप, पदुम (पद्म = कमल), प्रवेश, प्रसाद, फल, फूल, मणि, मन, यज्ञ, यत्न, रत्न, व्रत, सिंहासन, सोने, हेम।

(४) **स्मरणासक्ति**—ख्याल, गायन, ध्यान, नाम, भज, भजन, सुमिरण।

(५) **दास्यासक्ति**—गुलाम, दास, बंदी, सेवक।

(६) **सख्यासक्ति**—बंधन, मित्र, मीत।

(७) वात्सल्यासक्ति—किशोर, कुमार, नन्दन, बच्चन, बच्चा, बाल, बालक, लाल, वंश, वंशी, वत्स।

(८) **कांतासक्ति**—कांत, नाथ, पति, रती, प्यारे, वल्लभ।

आत्मनिवेदनासक्ति—अधीन, आधार, दीन, दीनू, प्रपन्न, फेर, बदल, भरोसे, शरण, सेन (आश्रित)।

३—विशेष नामों की व्याख्या—

अघोरनाथ—अघोर शिव की एक मूर्ति है। (१) अघोर का अर्थ जो भयानक न हो अर्थात् प्रिय (२) अघोरपंथ एक सम्प्रदाय है। ये लोग अघोरनाथ नाम से महादेव की पूजा करते हैं। यह पंथ अघोरनाथ का चलाया हुआ है।

अद्भुतनाथ—सन् १८८० में सीतामढ़ी (बंगाल) के पास आकास से एक धूमकेतु का खंडित प्रस्तर अंश गिरा जिसको मनुष्य अद्भुतनाथ[२] महादेव के नाम से पूजने लगे।

अमरनाथ—अमरनाथ महादेव काश्मीर राज्य में स्थित है। अमरनाथ की पहाड़ी १८००० फुट ऊँची है। यहाँ का शिवलिंग बर्फ का है जो एक बड़ी भारी गुफा में स्थित है। इस गुफा में एक

---

[१] **गुणमाहात्म्यासक्तिरूपासक्तिपूजासक्तिस्मरणासक्तिदास्यासक्तिसख्यासक्तिकान्तासक्तिवात्सल्यासक्त्यात्मनिवेदनासक्तितन्मयासक्तिपरमविरहासक्तिरूपाएकधाप्येकादशधा भवति ॥८२॥**

[२] Mythology of All Races Vol. 6 (Indian) पृ० २३३

हज़ार आदमी आसानी से आ सकते हैं। यहाँ पर यात्रियो को दो कबूतरो के दर्शन होते हैं जिन्हें गौरीशंकर का रूप मानते हैं।

अलोपीनारायण—प्रयाग के अलोपी बाग में अलोपी (पार्वती) देवी का मंदिर है। यवन बादशाह के स्पर्श से बचने के लिए देवी मंदिर से लोप हो गई। अब यहाँ उसकी मूर्ति के स्थान पर एक छोटा गर्त है जिसकी भक्त पूजा करते हैं।

आदित्येश्वर—आदित्य = सूर्य।

आनन्दकरण—आनंद के करनेवाले शिव अथवा आनंद है भूषण जिनका अर्थात् शिव।

आनन्देश्वर—आनंद + ईश्वर अर्थात् कल्याणकारी शिव। यदि इसको आनंदीश्वर का विकृत रूप मानें तो आनंदी (कल्याणी = पार्वती) + ईश्वर अर्थात् शिव।

उग्रहसिंह—उग्रह उग्र का विकृत रूप प्रतीत होता है अथवा ग्रहण · उग्रह के समय बालक उत्पन्न हुआ हो।

उपेंद्र शंकर—यह विष्णु तथा शिव दो देवताओं के नामों का सम्मिश्रण है। इससे भक्त के हृदय की अभिन्न भावना प्रकट होती है। शैव तथा वैष्णव के द्वैधी भाव को एकीकरण करने का उद्देश्य है।[1]

ओंकारनाथ—इंदौर के पास नर्वदा नदी की दो शाखाओं के बीच एक टापू पर ओंकारनाथ नामक एक शिवलिंग है।

ओंकार, सच्चिदानन्द—यह दोनों शंकर के नाम हैं, इससे भक्ति की प्रगाढ़ श्रद्धा प्रकट होती है। (वीप्सालंकार)।

ओमूशंकर—इसमें मूर्तामूर्त भावना है। सगुण शंकर में निगुण ब्रह्म का आरोप किया है।

औसानसिंह—शिव श्मशान (अवसान) में निवास करते हैं।

कपिलेश्वर—कपिल एक ऋषि, सफेद रंग, सूर्य, विष्णु, महादेव, मध्य प्रदेश की कपिला नदी, कामधेनु के अर्थ में आता है। ऐसा भी सम्भव है कि कपिल नामक किसी व्यक्ति-विशेष ने इसकी स्थापना की हो।

कलेसर (कलेश्वर)—कला + ईश्वर, शंकर ६४ कलाओ के स्वामी हैं।

कल्पेश्वरप्रसाद—कल्प के स्वामी शंकर हैं। दूसरी बात इस नाम से यह प्रकट होती है कि बालक कल्पवास के समय हुआ है।

कविलाससिंह—कैलास पर्वत पर शिव का निवास है।

कामतानाथ, कामदनाथ—चित्रकूट का कामदगिरि पर्वत जिस पर कामदनाथ महादेव का मंदिर है। कदाचित् श्रावण के कृष्ण पक्ष की कामदा एकादशी से यह नाम पड़ा हो।

कामेश्वर—काम का अर्थ कामदेव अथवा इच्छा होता है। महादेव सब कामनाओं को पूरा करते हैं।

काशीविश्वम्भर, काशीविश्वनाथ—काशी में विश्वनाथ महादेव का एक प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग है।

गुप्तेश्वर, गैबीनाथ—कहीं-कहीं देवालयों में देव की कोई प्रतिमा अथवा प्रतीक नहीं रखा जाता। इसका सम्बन्ध किसी परिस्थिति-विशेष[2] से रहता है। ये दोनों नाम इसी घटना की ओर संकेत करते हैं। भक्तजन जगमोहन में खड़े होकर मंदिर के गर्भ में केवल उस स्थान का दर्शन कर

---

[1] **शिवस्य हृदये विष्णुर्विष्णोस्तु हृदये शिवः।**
यथा शिवमयो विष्णुस्तथा विष्णुमयः शिवः।

लेते हैं जहाँ से मूर्ति लोप हो गई है। उदाहरण के लिए प्रयाग के अलोपी देवी के मंदिर में देवी की कोई मूर्ति नहीं है।

चिरमौलिराम--चिर का अर्थ सदा तथा मौलि का अर्थ सिर, चिरमौलि का अर्थ हुआ शंकर जो सर्वदा मुण्डमाला धारण किये रहते हैं।

झलक निरंजन--शुद्ध स्वरूप परमात्मा की झाँकी।

बलरमेंद्रनाथ—बल से तात्पर्य बलराम और रमेंद्र से कृष्ण हुआ, इसलिए बलरमेंद्रनाथ का अर्थ शिव।

भंग-भोला—महादेव भंगधतूरे के प्रेमी माने जाते हैं। इसलिए उनका व्यंग्यात्मक नाम है।

भंजूराम—भंजा (पार्वती) में रमण करने वाले शिव।

यादवेंद्र शंकर—यादवेंद्र का अर्थ है कृष्ण। शिव पार्वती को कृष्ण माहात्म्य सुनाते हैं और कृष्ण उनके भक्त हैं। इस प्रकार अन्योन्य भक्ति दिखाकर दोनों देवों के भक्तों में प्रेम का प्रचार किया।

रणछोर शंकर—रणछोर श्रीकृष्ण का नाम है क्योंकि वे कई बार जरासंध से युद्ध करते हुए भाग गये थे।

रामेश्वर—यह शिवलिंग दक्षिण में लंका जाते समय रामचन्द्र ने समुद्र के किनारे पर स्थापित किया था।

रेवतीशंकर—रेवती = दुर्गा।

लखेश्वर—शिव कोटि की तरह कदाचित् यह नाम लक्ष शिव की ओर संकेत करता है।

लोकनाथ—इस नाम के विषय में एक कहानी प्रसिद्ध है कि एक दिन एक भिक्षुक राजा के पास आया और कहने लगा महाराज आप में और मुझमें कोई अन्तर नहीं। हम दोनों ही लोकनाथ हैं। भेद केवल इतना ही है कि आप षष्ठी तत्पुरुष हैं और मैं बहुब्रीहि।[1] यह सुनकर राजा अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसको बहुत सा रुपया देकर विदा किया। (लोकनाथ-शिव, विष्णु, राजा, भिक्षुक)

वंगेश्वरनाथ—बंगाल में महादेव की मूर्ति। यह नामी की जन्मभूमि की ओर संकेत करता है।

वामदेव—वाम का अर्थ प्रतिकूल, सुंदर, प्राणी, कामदेव, धन तथा शिव होता है। इन शब्दों के साथ देव का योग होने से प्रत्येक दशा में शिव का अर्थ निकलता है।

विमलेश्वर—नर्वदा के किनारे बड़वाह स्टेशन से ५ मील पर विमलेश्वर महादेव का प्राचीन मंदिर है।

वीर वाहन—(१) वीर एक प्रकार के शिव के अनुचर हैं। (२) वीर विष्णु का भी नाम है जिन्होंने एक बार शिव को अपने कंधे पर बिठाया था।

वैद्यनाथ—यह संथाल परगना में एक प्रसिद्ध ज्योतिर्लिङ्ग है जहाँ पर शिव ने लोगों का रोग-निवारण किया था। इसीलिए वे वैद्यनाथ कहलाये।

व्योमकेश—व्योम के अर्थ आकाश, मेघ तथा जल हैं। शिव जी की जटाओं में गंगा जी के बहने के कारण सर्वदा जल रहता है अथवा मेघ के समान श्यामल वर्ण केश होने के कारण व्योम केश के नाम से प्रसिद्ध हुए।

शिवबोधन—यह शिव रात्रि की ओर संकेत करता है जिसे शिव बोधोत्सव भी कहते हैं।

---

[1] **अहं त्वञ्च राजेन्द्र ! लोकनाथावुभावपि।**
बहुव्रीहिरहं राजन् षष्ठीतत्पुरुषो भवान्॥

शिवावतार—विष्णु के तुल्य शैव शंकर के अट्ठाइस अवतार मानते हैं।

श्यामशंकर—(१) श्याम शब्द शिव के नील कंठ की ओर संकेत करता है। (२) कृष्ण (३) यमुना नदी के तट पर प्रयाग में श्याम नामक एक वटवृक्ष जिसके नीचे शंकर की मूर्ति स्थापित की गई हो।

सोमनाथ—सोमनाथ ज्योतिर्लिंग प्रभास-क्षेत्र में स्थित जिसे है। चद्रमा ने अपने रोग-निवारणार्थ स्थापित किया था।

हरकेश—यह नाम शिव के प्रसिद्ध जटाजूट की ओर संकेत करता है। सम्भव है यह व्यंग्यात्मक नाम शिव को भक्तों ने प्रदान किया हो। इसका विग्रह हरक (हर, शिव +ईश है। हर केस प्रगहनि याधान को भी कहते हैं, समय सूचक हो सकता है।

हरिहरनाथ—हरिहर क्षेत्र (सोनपुर) बिहार का एक प्रसिद्ध तीर्थ है। यहाँ शिव तथा विष्णु की सयुक्त मूर्ति है। इसका उद्देश्य विभिन्न देवों में सामंजस्य अथवा एकता स्थापन करना है, यहाँ पर पशुओ का संसार-प्रसिद्ध मेला कार्तिक मास में लगता है जिसमें हाथी तक बिकने आते हैं।

४—समीक्षण

शिव भक्तो ने अपने इष्टदेव के ऐसे विचित्र नाम रखे हैं जिनमें दो विरोधी गुणो का समन्वय मिलता है। संसार का कल्याण करनेवाला शंकर है तो साथ ही साथ दुष्टों को रुलानेवाला रुद्र भी है। सरल प्रकृति भोला होते हुए भी वह भयकर भैरव तथा उग्र कहलाता है। इन नामो में तद्भव शब्दों की अपेक्षा तत्सम शब्द अत्यधिक हैं तथा उनमें विचित्रता के साथ-साथ अनेकरूपता भी पाई जाती है। पंच देवों में उसकी स्त्री दुर्गा तथा गणेश सम्मिलित हैं। सूर्य भी किसी समय शिवका ही प्रतीक समझा जाता था। नामों की पर्याप्त संख्या दुर्गा, चंद्र, शेष, गगा तथा ज्योतिर्लिंगों के योग से ही बनी हुई है। द्वादश ज्योतिर्लिंगो में से ११ का उल्लेख इन नामों में मिलता है। शिव के पंच रूप तथा अष्टमूर्तियों का समावेश भी इनमें पाया जाता है। शिव के नामों से उसकी रूपाकृति, शील-स्वभाव, गुण, कार्य तथा परिवार आदि का सम्यक् परिचय मिल जाता है।

भोग एवं योग का अद्भुत समन्वय उसके चरित्र की विशेषता है। परोवरीण देव होते हुए भी वह परोवरीयस है। उसकी आराधना मूर्तामूर्त दोनो रूपों में की जाती हैं। शिव के भक्तो का बहुत कुछ ध्यान इन नामो में अंकित हुआ है। पार्वती से संयुक्त नाम उनकी अर्धनारीश्वर यवयुग्म मूर्ति की ओर संकेत करते हैं। देवो में सबसे अधिक नाम इस प्रवृत्ति में पाये जाते हैं। शंकर का सबसे अधिक प्रचलित तथा प्रिय नाम शिव प्रतीत होता है।

---

[१] अयं च कालिंदीतटे वटः श्यामो नाम। उत्तर रा० च० १
सोऽयं वटः श्याम इति प्रतीतः। रघु० १३-५३

[१] कोटिसूर्यप्रतीकाशं त्रिनेत्रं चंद्रशेखरं ॥
शूलटंकगदाचक्रकुंतपाशधरं विभुं ॥१॥
कैलासाद्रिपतिं शशांककलयास्फूर्जज्जटामंडलं।
नासालोकनतत्परत्रिनयनं वीरासनाध्यासितं ॥
मुद्राटंककुरंगजानुविलसद्बाहुं प्रसन्नाननं
कक्षाबद्धभुजंगमं मुनिवृत्तं वंदे महेशंपरं ॥ शिव सहस्र नाम स्तोत्रम् ५-६

तीसरा प्रकरण

त्रिदेव-वंश

ब्रह्मा की पत्नी, विद्या की देवी सरस्वती तथा उनके मानस पुत्र; विष्णु की गृह-लक्ष्मी, स्वयं लक्ष्मी तथा शिव की सहधर्मिणी आदिशक्ति पार्वती तथा उनके तनय-द्वय स्कंद तथा गणेश इस त्रिदेव वंश में सम्मिलित हैं। यह परिवार वृहत् न होते हुए भी अत्यंत प्रभावशाली है क्योंकि ये तीनों देवियाँ समस्त मानव जाति का कल्याण करने में तत्पर रहती हैं। विघ्न-विनायक गणेश का पूजन सर्व मंगल कार्यों में सबसे पहले किया जाता है।

सरस्वती तथा ब्रह्मा के मानस-पुत्र

१—गणना—

सरस्वती—क—क्रमिक गणना

(१) नामों की संख्या ४७

(२) मूल शब्दों की संख्या १०

(३) गौण शब्दों की संख्या २०

ख—रचनात्मक गणना

एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	योग
+	३५	११	१	४७

ब्रह्मा के मानस पुत्र—क—क्रमिक गणना

(१) चार पुत्र तथा नारद (१) नामों की संख्या ११

(२) मूल शब्दो की संख्या ७

(३) गौण शब्दो की संख्या ४

(२) कामदेव (१) नामों की संख्या ४१

(२) मूल शब्दों की संख्या २१

(३) गौण शब्दों की संख्या १६

ख—रचनात्मक गणना

	एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	योग
चार पुत्र	१	२		३
नारद	१	६	१	८
कामदेव	४	३०	७	४१
	६	३८	८	५२

२—विश्लेषण

क—मूल प्रवृत्ति-द्योतक शब्द—

सरस्वती—(१) एकाकी शब्द—भारती, वानी (वाणी), विद्या, विमला, शारदा, सरस्वती, सावित्री।

(२) समस्त पद—वागेश्वरी (वागीश्वरी), मनोरमा ।

चार मानस पुत्र और नारद—(१) एकाकी शब्द—नारद, सनातन ।

(२)समस्त पद—देवमुनि, देवर्षि, सनक-सनन्दन, सनत् कुमार ।

कामदेव—(१)एकाकी शब्द— अनंग, कंदर्प, काम, कामू, मदन, मनसिज, मनोभव, मनमथ, मैन (मयन), मैना (मयन) ।

(२) समस्त पद—अंग रहित, कामदेव, मकरध्वज, रतिकांत, रतिनाथ, रतिपाल, रतिभवन सिंह, रतिभानु, रतिराम, रतीश, रागदेव ।

ख—मूल—शब्दों की निरुक्ति—

सरस्वती, मनोरमा—सात सरस्वतियों में चौथी का नाम। इन सातों के नाम—सुप्रभा, काञ्चनाक्षी, विशाला, मनोरमा, सरस्वती, सुरेणु, और विमलोदका है ।

शारदा—शरत्काले पुरा यस्मान्नवम्यां बोधिता सुरैः। शारदा सा समाख्याता पीठे लोके च नामतः (आप्टेकृत संस्कृत-इंगलिश-कोश) ।

चार मानस पुत्र और नारद—देव मुनि, देवर्षि, नारद[1], नारद ब्रह्मा के दश मानस पुत्रों में से एक है जो उसकी जंघा से उत्पन्न हुआ। वह अपनी वीणा के साथ सर्वत्र विचरण करता रहता है। नारद की स्मृति प्रसिद्ध है।

सनक, सनन्दन, सनत्कुमार, सनातन—ये ब्रह्मा के चार मानस पुत्र हैं जो जन्म लेते ही तपस्या करने वन को चले गये।

कामदेव, अंग रहित, अनंग—देखिए मदन-दहन शिव प्रवृत्ति के अंतर्गत ।

कंदर्प—कंदर्पयामीति मदाज्जातमात्रो जगाद च ।

तेन कंदर्पनामानं तं चकार चतुर्मुखः ।

कामदेव—कामदेव की उत्पत्ति ब्रह्मा से मानी जाती है। यह देवताओं में सबसे अधिक सुंदर और सदा युवावस्था में रहता है। रति स्त्री और वसंत मित्र है। इसका वाहन शुक या कपोत है। यह अपने पंच बाणों से संसार को आहत करता रहता है। इसे शिव ने अपने तीसरे नेत्र से भस्म कर दिया।

कामू—यह काम का विकृत तथा कामदेव का संक्षिप्त रूप प्रतीत होता है। काम त्रिवर्ग का अंतिम शब्द है जो भोग-विलास तथा इच्छा का सूचक है।

मकरध्वज—कामदेव की ध्वजा पर मकर का चिह्न है।

मनसिज, मनोभव—शिव के भस्म करने पर कामदेव की स्त्री रति ने बड़ा विलाप किया तो शंकर ने दया कर उसको वरदान दिया कि तेरा पति अनंग रूप से मनुष्यों के मन से उत्पन्न होगा। इसलिए कामदेव को मनोभव या मनसिज कहते हैं।

रतिकांत—रति कामदेव की स्त्री का नाम है।

ग—गौण प्रवृत्ति द्योतक शब्द—

सरस्वती

(१) वर्गात्मक

(अ) जातीय—सिंह

---

[1] नारद नाम से सात व्यक्ति प्रसिद्ध हैं। (१) ब्रह्मा के एक मानसपुत्र (२) कुबेर के सभासद (३) अरुंधती की सखी सत्यवती के पति (४) राम की सभा के धर्म शास्त्री (५) पर्वत ऋषि के मामा (६) जनमेजय-सर्प-यज्ञ के एक सदस्य (७) कलह प्रिय नारद।

(२) भक्ति परक—आनंद, चंद्र, चरण, दत्त, दास, देव, नंदन, प्रकाश, प्रसाद, बक्स, मल, राम, लाल, विनोद, विलास, व्रत, शरण, सहाय, स्वरूप।

चार मानस पुत्र और नारद

(१) वर्गात्मक

(अ) जातीय—राय, सिंह।

(२) भक्ति परक—नंद, मुनि।

कामदेव

(१) वर्गात्मक

जातीय—राय, सिंह।

(२) भक्ति परक—आनंद, किशोर, कुमार, नाथ, नारायण, पाल, प्रकाश, प्रसाद, फल, बहादुर, भूषण, राम, लाल, स्वरूप।

३—विशेष नामों की व्याख्या—

सरस्वती

वागेश्वरी[1]—यह वागीश्वरी का अपभ्रंश रूप है। यह नाम जन्मस्थान की ओर भी संकेत करता है।

शारदा बक्स सिंह—इस नाम से यह सूचनाएँ मिलती हैं (१) हिन्दू मुसलिम संस्कृति का सम्मिश्रण (बक्स—विजातीय शब्द है) (२) सिंह शब्द से नामधारी क्षत्रिय प्रतीत है (३) शरद ऋतु की ओर संकेत करता है, सम्भवतः उसका जन्म काल है (४) शरद् ऋतु की शुक्ल चाँदनी के समान नामी गौर वर्ण हो (५) सरस्वती के प्रति विशेष श्रद्धा का बोध होता है। (१) शरदा दुर्गा,

सरस्वती—(१) सरस्वती वाणी तथा विद्या की देवी है (२) एक नदी-विशेष का नाम है।

सावित्री—(१) सावित्री ब्रह्मा की स्त्री का नाम। (२) सत्यवान की प्रसिद्ध सती स्त्री का नाम।

चार मानस पुत्र और नारद

सनत, कुमार—ब्रह्मा का पुत्र।

कामदेव

मैनराम—मैना—यह दोनों शब्द मदन के अपभ्रंश हैं जो उन्मत्त के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

रागदेव—अनुराग अर्थात् प्रेम का देवता कामदेव है।

४—समीक्षण

सरस्वती—सरस्वती मूलक नामों की संख्या अत्यंत न्यून है। अधिकतर नाम पर्यायवाची शब्दों के आधार पर ही बने हैं जो प्रायः उसके कुछ गुणों पर ही प्रकाश डालते हैं। इनसे इतना ही विदित होता है कि वह ब्रह्मा की पत्नी एवं विद्या की देवी है। यह स्पष्ट है कि शारदा के सेवकों की संख्या शिक्षित समाज में भी अत्यंत सीमित है। ४७ नामों में केवल ५ नाम विकृत शब्दों से बने हैं।

ब्रह्मा के मानस पुत्र—ब्रह्मा के मानस पुत्रो में से पहले चार का कोई परिचय नहीं मिलता

---

[1] मेरे गाँव में ताऊन फैला हुआ था। सब लोग गाँव के बाहर पड़े हुए थे। मेरे पिता ने भी एक बाग में अपना डेरा डाला, वहीं मेरा जन्म हुआ। बाग में उत्पन्न होने से मेरा नाम बगेसर पड़ा जो बाद को बागेश्वरी हो गया। (बागेश्वरी प्रसाद)।

है। सनक-सनन्दन दो नामों के योग से बना है। सनत्कुमार नाम ब्रह्मा की ओर संकेत करता है। देवमुनि एवं देवर्षि उपाधियों से विभूषित नारद के विषय में इतना ही ज्ञात होता है कि वह देवताओं में भी विशेष सम्मानित है। कामदेव ब्रह्मा का पुत्र, रति का पति तथा प्रेम का देवता है। रूप में अत्यंत सुंदर है। शिव ने उसको भस्म कर दिया था तब से वह अंग रहित है। उसकी उत्पत्ति मन से होती है और उसकी पताका पर मकर का चिह्न है।

लक्ष्मी

(१) गणना

क—क्रमिक गणना

(१) नामों की संख्या ५७

(२) मूल शब्दों की संख्या १८

(३) गौण शब्दों की संख्या २६

ख—रचनात्मक गणना

एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	योग
५	३६	११	५५

(२) विश्लेषण

क—मूल शब्द—

(१) एकाकी—अमला, कमला, कमली, पदमा, रमा। लक्ष्मी, लच्छमी (लक्ष्मी), लच्छी (लक्ष्मी), लच्छू (लक्ष्मी), लछी (लक्ष्मी), लोला, श्री, सिरिया (श्री)।

(२) समस्त पदी—केश्वरी, धनेश्वरी, नारायणी, मुनेश्वरी, हरिप्रिया।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति—

केश्वरी—यह समस्त पद क+ईश्वरी (क धन और जल के अर्थ में आता है) अतः केश्वरी लक्ष्मी के लिए प्रयुक्त हुआ है।

नारायणी—नारायण विष्णु का नाम है। इसलिए लक्ष्मी को नारायणी कहा गया है।

मुनेश्वरी—मुनीश्वर विष्णु का नाम होने से लक्ष्मी को मुनेश्वरी कहते हैं।

लक्ष्मी—समुद्र मंथन के समय १४ रत्नों के साथ लक्ष्मी का प्रादुर्भाव हुआ, वह धन की देवी एवं विष्णु की प्रिया है।

ग—गौण प्रवृत्ति द्योतक शब्द—

(१) वर्गात्मक—(१) जातीय—राय, सिंह।

(२) सम्मानार्थक—(अ) आदर सूचक—बाबू, श्री। (आ) उपाधि सूचक—आचार्य।

(३) भक्ति परक—आकर, आनन्द, किशोर, कुमार, चन्द्र, चरण, दत्त, दयाल, दास, पद, प्रकाश, प्रपन्न, प्रसाद, बक्स, भूषण, मल, लाल, वंश, विलास, शरण, सेवक।

(३) विशेष नामों की व्याख्या—

लोलादास—चंचल प्रकृति होने के कारण लक्ष्मी का नाम लोला हुआ [1]।

श्रीप्रपन्नाचार्य—श्री, धर्म, अर्थ तथा काम को देनेवाली लक्ष्मी है। भक्त इनकी प्राप्ति के लिए उसकी शरण आया है। आचार्य उपाधि-सूचक है।

हरिप्रिया—लक्ष्मी

---

[1] पुरुष पुरातन की तिया क्यों न चंचला होय।

(४) समीक्षण—

नामों के विषय में विष्णु भगवान् की भार्या भगवती लक्ष्मी की दशा संतोष-जनक नहीं है। उनकी लोकप्रियता की दृष्टि से यह नामो की संख्या इतनी अल्प है कि इससे उनके कथानक का इतना ही ज्ञान मिलता है कि वह धन की देवी तथा विष्णु की स्त्री हैं। उनका सम्बन्ध कमल तथा जल से है। यह नाम उसके गुणों के सूचक हैं। शुद्ध स्वरूप होने से अमला, कमल में निवास करने से कमला-पद्मा, आनन्द देने से रमा, धन, अभ्युदय तथा सौंदर्य की देवी होने से लक्ष्मी; चंचल स्वभाव होने से लोला और धर्म-अर्थ-काम इन तीनों वर्ग के देने के कारण श्री नाम पड़ा। लक्ष्मी का अपना व्यक्तित्व विष्णु के व्यक्तित्व में अंतर्हित हो गया है।

— —

पार्वती

(१) गणना

क—क्रमिक गणना—

(१) नामों की संख्या ५२८

(२) मूल शब्दों की संख्या १८६

(३) गौण शब्दो की संख्या ५६

ख—रचनात्मक गणना—

एक पदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	पंचपदी नाम	षट्पदी नाम	योग
३९	३४१	१३१	१४	२	१	५२८

२—विश्लेषण

क—मूल-शब्द

(१) एकाकी—अंबा, अंबिका, अन्नदा, अफला, अभया, अमला, अलोपी, आद्या, आनंदी, आर्या, आशा, आसा, इल्ला, ईश्वरी, उमा, कमच्छा, कलई, कलिया, कल्याणी, कांता, काति, कात्यायनी, कामाद्दा, कामाख्या, कालका, कालिका, काली, केवला, केशी, कौमारी, कौशिकी, क्षमा, खिमई, खिम्मन, खिम्मा, खेम, खेमा, गायत्री, गिरिजा, गोला, गोलैया, गौरी, चंडिका, चंडी, चंडू, चंद्रिका, जयंती, जयकरी, जया, जालपा, जाली, जैंती, ज्योत्स्ना, ज्वाला, ज्वाली, तमात्या, तारा, तारिणी, त्रिगुणा, दक्खी, दक्खिनी, दाक्षायणी, दुरगाई, दुर्गा, देवी, धूम, (धूम्रा), नंदा, नारायणी, नित्या, पार्वती, पूर्णा, पूर्वी, बाला, ब्राह्मी, भगवती, भवानी, भालदा, भीमा, भैरवी, मंगला, मतई, मतोले, मनसा, मसानी, मसुरिया, मा, माई, माता, मातृ, माधवी, माया, मैया, रानी, रुद्री, ललतू, ललिता, लालता, विजया, विरजा, शंकरी, शक्ति, शाकंवरी, शांता, शांति, शिवा, शीतला, संकटा, संकठा, सतई, सती, सत्तन, सत्ती, सत्या, सितलू, सुंदरी, हिरैया, हीरा।

(२) समस्त-पदी—अखिलेश्वरी, अनंतेश्वरी, अन्नपूर्णा, अमरेश्वरी, अष्टभुजा, इच्छापूरन, ऋषेश्वरी, कटेश्वरी, कमलेश्वरी, कामेश्वरी, खंडेश्वरी, गगेश्वरी, गुंजेश्वरी, गुप्तेश्वरी, गुह्येश्वरी, जगदंबा, जगदंबिका, जगदीश्वरी, जगमाता, जगेश्वरी, जनेश्वरी, जलेश्वरी, तपेश्वरी, तारकेश्वरी, तुंगेश्वरी, तेजेश्वरी, त्रिभुवनेश्वरी, दुर्गेश्वरी, नर्वदेश्वरी, पटेश्वरी, परमेश्वरी, वालेश्वरी, विंदेश्वरी, विजलेश्वरी, भद्रकाली, भागेश्वरी, भुवनेश्वरी, मंगलेश्वरी, मनगौरी, मनपूरन, महामाया, महारानी, महाविद्या, महेशी, महेश्वरी, मामेश्वरी, माहेश्वरी, मुनेश्वरी, मैजू, राजराजेश्वरी, राजेश्वरी, रामेश्वरी, लक्ष्मेश्वरी, विंध्यवासिनी, विंध्येश्वरी, विजयलक्ष्मी, विश्वंविका, वीरेश्वरी, शिवमाया, शिवशक्ति, सतनेश्वरी, सर्वशक्ति, सर्वेश्वरी, सिद्धेश्वरी, सिंहवाहिनी, सुरेश्वरी, हरेश्वरी।

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ :—

(१) **रचनात्मक**—पार्वती के भिन्न-भिन्न नामों की रचना प्रायः इस प्रकार हुई है :—

(१) **जीवमातृका के नाम**—अमला, (विमला), कमलेश्वरी (पद्मा), नंदा, मंगला, मंगलेश्वरी।

(२) **मातृकाओं के नाम**—कौमारी, नारायणी, ब्राह्मी, माधवी (वैष्णवी), माहेश्वरी।

(३) **नव कुमारियों के नाम**—कल्याणी, काली, चंडिका, चंडी, दुर्गा,

(४) **नव दुर्गा के नाम**—कात्यायनी, पार्वती।

(५) **नव शक्तियों के नाम**—जया, माया, विजया, सुद्धेश्वरी (विशुद्धा)।

(६) **महाविद्याओं के नाम**— काली, तारा, धूम (धूम्रा), भुवनेश्वरी, भैरवी।

(७) **निवासस्थान से सम्बंधित नाम**—दक्खी, दक्खिनी, नर्वदेश्वरी, पूर्वी, विंदेश्वरी, मसानी, मिथिलेश्वरी, रामेश्वरी, विंध्यवासिनी, विंध्येश्वरी, सतनेश्वरी।

(८) **शिव के नामों के स्त्रीलिंग**—अनंतेश्वरी, अभया, अमरेश्वरी, अखिलेश्वरी, ऋषेश्वरी, कटेश्वरी, कमलेश्वरी, कामेश्वरी, खडेश्वरी, गगेश्वरी, गुप्तेश्वरी, गुह्येश्वर, जगेश्वरी, जनेश्वरी, जलेश्वरी, तपेश्वरी, तारकेश्वरी, तुंगेश्वरी, तेजेश्वरी, त्रिभुवनेश्वरी, दुर्गेश्वरी, नर्वदेश्वरी, पटेश्वरी, परमेश्वरी, वालेश्वरी, विजलेश्वरी, भवानी, भागेश्वरी, भुवनेश्वरी, भैरवी, मंगलेश्वरी, महेशी, महेश्वरी, मामेश्वरी, माहेश्वरी, मुनेश्वरी, राजराजेश्वरी, राजेश्वरी, रामेश्वरी, रुद्री, लक्ष्मेश्वरी, वीरेश्वरी, शिवा, सर्वेश्वरी, सिद्धेश्वरी, सुरेश्वरी।

(९) शेष नाम गुण और कर्म का परिचय देते हैं।

(२) **पर्य्यायवाचक शब्द**—इन नामों की रचना में किसी अन्य पर्यायवाचक शब्द की सहायता नहीं ली गई है।

(३) **विकसित शब्दों के तत्सम रूप** :—

विकसित	तत्सम	विकसित	तत्सम
आसा	आशा	दुरगाई	दुर्गा
इच्छापूरण	इच्छापूर्णा	धूम	धूमा
कमाच्छा	कामाक्षी	मतई, मतोले	माता
कलई, कलिया	काली	मनपूरन	मनपूर्णा
		मैजू	माता जी
खिमई, खिम्मन, खेम	खेमा (क्षेमा)	ललतू, लालता	ललिता
गोलैया	गोला	शाकवरी	शाकम्भरी
चंडू	चंडी	संकठा	संकटा
जाली	ज्वाला	सतई, सत्तन, सत्ती	सती
जैंती	जयती	सितलू	शीतला
ज्वाली	ज्वाला	हिरैया	हीरा
दक्खी,	दक्खिनी (दक्षिणी)		

(४) **विजातीय प्रभाव**—पार्वती के नामों पर कोई विजातीय प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता।

(५) **पार्वती की बीजकथा**—

जन्म—पर्वत कन्या

रूपाकृति—गौर वर्ण अष्ट भुजा आदि

पति—शिव

पुत्र—गणेश, स्कंद

वाहन—सिंह

त्रिमूर्ति—विंध्यवासिनी, कामाख्या, ज्वालादेवी

गुण—बहुगुणालंकृता

कार्य—भक्तों का रक्षण तथा दानवों का दलन

अवतार—दुष्टों का दमन करने के लिए नाना रूप।

ग—मूल शब्दों की निरुक्ति—

आद्या—तन्त्रोक्त दुर्गा देवी—यह सत्ययुग में सुन्दरी, त्रेता में भुवनेश्वरी, द्वापर में तारिणी और कलियुग में काली कहलाती है।

आशा[1]—हरिद्वार स्टेशन से थोड़ी दूर रेलवे लाइन की दूसरी ओर एक पहाड़ी पर आशा देवी का सुन्दर मंदिर है।

उमा—ओः शिवस्य मा लक्ष्मीरिव, उ शिवं माति मन्यते पतित्वेन वा (तर्क० वाच०) कालिदास ने इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार की है। उमेति (तप न करो) मात्रा तपसो निषिद्धा, पश्चादुमाख्या सुमुखी जगाम (कुमार सं० -१-२६)

कमच्छा, कामाच्छा, कामाख्या—कामरूप की एक प्रसिद्ध तन्त्रोक्त देवी का नाम है।

कात्यायनी—नव दुर्गाओं में से एक।

१—पुरुषों के पार्वती आदि स्त्रीसंज्ञक गौणप्रवृत्तिहीन नाम लिंग-भेद के कारण बहुधा भ्रमोत्पादक होते हैं। गोदावरी या कमला नाम से स्त्री का ही बोध होगा। कुछ व्यक्ति कन्याओं के मिथिलेश जैसे पुरुषवाची नाम रखने लगे हैं। इन नामों में कुमारी आदि गौण प्रवृत्तियाँ न जोड़ी जाय तब तक यह जानना कठिन होगा कि वह किसी लड़की का नाम है। सरोज जैसे नाम स्त्री पुरुष दोनों के लिए प्रयुक्त होने लगे हैं। इन तीनों प्रकार के नामों से संज्ञी के यथार्थलिंग का परिचय नहीं मिलता। वस्तुतः ऐसे अधूरे नामों में पूर्ति के लिए एक गौण पद लगाने की आकांक्षा रहती है।

इस विषय में दैनिक पत्रिका में एक रोचक घटना का उल्लेख हुआ है। आकारांत होने के कारण या जावित्री से जबिता उपमान के सादृश्य पर सावित्री का विकसित रूप मानने के कारण सविता नाम ने कितने ही व्यक्तियों को भ्रम में डाल दिया। विद्यार्थी का सविता (सवितृ पुं०-सूर्य) नाम सुनकर कक्षा के विभ्रान्त अध्यापक उसे विद्यार्थिनी समझकर चौंक पड़े। एक सम्वाददाता ने सविता नाम के दूसरे सम्वाददाता को महिला समझ लिया। उसी पत्र में सविता नाम के सम्बन्ध में यह चुटकुला भी दिया हुआ है :—

हमारे साथ एक मित्र अर्पिता (स्त्री संज्ञक नामधारी) मुकर्जी रहते थे। एक दिन डाक से उनका एक लिफाफा आया, उसके ऊपर प्रेषक का नाम सविता लिखा हुआ था। मित्रों ने मुकर्जी बाबू को पत्र देते हुए कौतूहलवश पूछा "यह कौन युवती है"? "ओह मेरे पिताजी!" विस्मित मुकर्जी बोले।

Sometime ago, the same teacher-correspondent told us how the name 'Sabita' of his young son confused a professor in his class in the same way as I had been once confused by the same name of a correspondent whom I took for a lady Now. S. Barman 281/C Dum Dum Airport (Calcutta) sends a similar story:

Some time back, we had a friend namd Arpita Mukherjee in my quarters—not a lady, of course, One day, he got a letter and the 'sender' was Sabita Mukherjee written overleaf, In the evening when he returned home and we handed over to him the letter, keenly inquisitive about who this girl named Sabita was, he merely replied: 'Oh, my father.' (A, B, Patrika)

कामेश्वरी—तंत्र के अनुसार एक भैरवी का नाम है, कामाख्या की पाँच मूर्ति में से एक।

काली, कालिका—पार्वती की देह से जब कौशिकी निकल आई, तब पार्वती काली हो गई और कालिका नाम से प्रसिद्ध होकर हिमालय पर रहने लगीं। काली ने महिषासुर, चडमुंडादि प्रबल राक्षसो का वध किया

कौमारी, नारायणी, ब्राह्मी, माधवी, माहेश्वरी—यह देवो की शक्तियाँ दुर्गा के भिन्न-भिन्न रूप हैं। स्वामी कार्तिकेय से कौमारी, नारायण से नारायणी, ब्रह्मा से ब्राह्मी, माधव से माधवी, महेश्वर की शक्ति माहेश्वरी प्रादुर्भूत हुई।

कौशिकी—शिवा देवी पार्वती के शरीर कोश से प्रादुर्भूत होने से कौशिकी कहलाई।

खिमई—कुशम क्षेम करनेवाली पार्वती।

गुंजेश्वरी—अरुण दैत्य को मारने के लिए असंख्य भ्रमरों का रूप धारण करने से देवी का नाम भ्रामरी (गुंजेश्वरी) हुआ।

ज्वाला—ज्वाला देवी का स्थान नगरकोट (पंजाब) है। यहाँ कई स्थानों पर पृथ्वी के भीतर से आग की लपटें निकलती हैं।

त्रिगुणा—सत, रज, तम तीनों गुणों में व्याप्त होने से पार्वती को त्रिगुणा कहते हैं। तेजेश्वरी, राजेश्वरी और काली यह क्रमशः तीनों गुणों के तीन रूप हैं।

दुर्गा—दुर्ग दैत्य को मारकर दुर्गा कहलाई।

नन्दा—इसका असली नाम योगमाया है। नद के यहाँ उत्पन्न होने से देवी का नाम नन्दा हुआ।

भीमा—मुनियों के रक्षार्थ भयानक रूप धारण कर हिमालय पर राक्षसों का भक्षण किया इसीलिए भीमा नाम पड़ा।

मसुरिया, महारानी, शीतला—मसूरिका का विकसित रूप मसुरिया है जो चेचक के अर्थ में आता है। शीतला तथा महारानी भी उसी अर्थ के बोधक हैं। यह देवी इन रोगों से रक्षा करती है।

मेधा—सब शास्त्रों का मर्म जानने से मेधा।

लज्जा—सब प्राणियों में लज्जा रूप से स्थित है।

शाकंभरी—वर्षा न होने से दुर्भिक्ष काल में देवी ने अपनी देह से शाक उत्पन्न कर संसार का भरण पोषण किया, इससे वह शाकंभरी के नाम से विख्यात हुई। साँभर झील के आस-पास का प्रदेश शाकंभर प्रांत कहलाता था जहाँ पर इस देवी का एक मन्दिर है।

शिवा—देवताओं के तेज से सहस्रभुजा शिवा देवी उत्पन्न हुई।

घ—गौण शब्द—

(१) वर्गात्मक—जातीय—राय, सिंह

(२) सम्मानार्थक (अ) आदरसूचक—जू, बाबू, श्री (आ) उपाधि-राय, लाल।

(३) भक्तिपरक—अभिनंदन, आनन्द, औतार, किंकर, किशोर, गुलाम, चंद्र, चरण, जीत, टहल, तनय, दत्त, दयाल, दर्शन, दहल, दान, दास, दीन, नन्द, नन्दन, निवाज, पलट, प्रकाश, प्रताप, प्रपन्न, प्रसाद, फल, फेर, बक्स, बदल, बहादुर, भीख, भूषण, मणि, मल, मूर्ति, रतन, रत्न, राज, रूप, लाल, विशाल, शरण, सहाय, सुंदर, सेन, सेवक, स्वरूप

ङ—गौण शब्दों की विवृति—

अभिनन्दन—भक्त प्रशंसात्मक वाक्यों द्वारा अपने इष्टदेव के प्रति हृदय का हर्ष प्रकट करता है।

किंकर—यह दास के अर्थ का बोधक है। भक्त की दास्यासक्ति प्रकट करता है।

टहल—इसका अर्थ सेवा है, दास्यासक्ति का सूचक है।

दहल—विनय भक्ति की सात भूमिकाओं में से भय दर्शन भी एक भूमिका है जिसमें जीव को भय दिखाकर इष्टदेव के सम्मुख लाते हैं।

दान—यह राजपुताने में दत्त के स्थान पर प्रयुक्त किया जाता है।

निवाज—यह विजातीय शब्द दया के अर्थ में आता है।

फेर—इससे अंधविश्वास प्रकट होता है। जिन स्त्रियों के बच्चे जीवित नहीं रहते वे अपने बच्चे को देवी को समर्पण कर पालने के लिए माँग लेती हैं। भीख से भी यही भावव्यक्त होता है।

सेवक—आश्रित के अर्थ में आता है और भक्त की आत्म-निवेदनासक्ति प्रगट करता है।

४—**सम्मिश्रण**—शिव, हरि।

शिव—शिव पार्वती का पति-पत्नी का सामाजिक सम्बन्ध है।

हरि—पार्वती को विष्णु-माया कहा गया है।

३—**विशेष नामों की व्याख्या**

अन्नदा प्रसाद, अन्नपूर्णा दत्त—अन्नदा अथवा अन्नपूर्णा भी पार्वती का रूप है। शिव अपने परिवार का भिक्षा से पालन करते थे। एक दिन किसी कारण वे भिक्षावृत्ति को न जा पाये। पहले दिन की सामग्री भूखे बच्चे, गणेश का चूहा तथा कार्तिकेय का मोर खा गये। इससे परिवार के अन्य मनुष्य भूखे रह गये। शिव इस चिंता में निमग्न थे कि अन्य देव तो आनन्द कर रहे हैं और मै भूखों मर रहा हूँ। उसी समय नारद आ पहुँचे। उन्होने बताया कि यह सब संकट पार्वती के कारण है क्योकि शुभ पत्नी के साथ सम्पदा आती है और अशुभ के साथ आपदा। विष्णु को देखिए लक्ष्मी से ब्याह कर आनन्द कर रहे हैं। इतना कहकर नारद चिंताकुल पार्वती के पास पहुँचे। देवी ने भी अपनी इस विपदा का कारण पूछा तो नारद ने कहा यह सब दुख शंकर के कारण है क्योंकि योग्य पति अपने परिवार का अच्छी तरह पालन करता है। सरस्वती को देखिए वह ब्रह्मा से ब्याह कर ब्रह्मलोक में बड़े आनंद से रह रही हैं। पार्वती ने अपने स्वामी को त्यागने का निर्णय कर लिया। दूसरे दिन जब शिव भिक्षाटन के लिए गये तो वे अपने बच्चे ले कर अपने पिता के घर जाने को उद्यत हुईं। इतने में नारद आ गये, उन्होंने कहा कि यद्यपि शंकर में अनेक अवगुण हैं तथापि उनमें कुछ विशेषताएँ भी हैं जो अन्य देवो में नहीं पाई जातीं। मुनि ने पार्वती को सुझाया कि शिव से पहले वे स्वयं उन गृहो में जाकर भिक्षा माँग लावें जहाँ से शिव लाते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि उस दिन शिव को खाली हाथ ही लौटना पड़ा। तब पार्वती ने अपनी भिक्षा से शङ्कर को भोजन कराया। महादेव ने अपनी पत्नी से अत्यंत प्रसन्न हो ऐसा गूढ़ालिंगन किया कि वे दोनो एक हो गये और अर्द्धनारीश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए। उस समय से पार्वती का नाम अन्नपूर्णा पड़ा।

अलोपीदीन—यह किम्वदन्ती है कि जब अलाउद्दीन खिलजी प्रयाग में पहुँचकर देवी को स्पर्श करने का प्रयत्न करने लगा तब देवी की मूर्ति उसके अपवित्र करस्पर्श से बचने के लिए मंदिर से लोप हो गई। आजकल मंदिर के गर्भ में एक छोटा सा गर्त है जिसकी भक्त पूजा किया करते हैं।

गुह्येश्वरी—गुह्य शिव का नाम है। पुराणो के अनुसार त्रिदेव भी पार्वती के उपासक माने जाते है। कदाचित् गुह्य से गुह का अभिप्राय हो। इस दशा में गुह्येश्वरी स्कंद माता पार्वती हैं।

धूमबहादुर—धूम्रा या धूमावती पार्वती का नाम है, इसलिए यह शिव का नाम हुआ।

मस्सू—यह मसुरिया का सूक्ष्म रूप है। मसुरिया का मन्दिर इलाहाबाद के जिले में इमिलिया में है जहाँ देवी का बड़ा भारी मेला लगता है।

महाविद्या—यह तंत्र की दस देवियाँ हैं जिनके नाम ये हैं—काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, मंगला, मातंगी और कमलात्मिका। ये सिद्धियाँ महाविद्या कहलाती हैं।

मातावदल—मृतसंतान के पश्चात जब कोई जन्म ले जाता है इस नाम से यह है।[1] तो उसका इस प्रकार का नाम रख लिया जाता है इस नाम से यह विश्वास व्यक्ति होता है कि देवी ने मृतबालव के बदले में एक दूसरा बालक भेज दिया है।

मैजू—माई + जू से मिलकर बना है। मा जी का विकृत रूप है।

शक्ति—प्रधान शक्तियाँ आठ हैं—इन्द्राणी, वैष्णवी, ब्रह्माणी, कौमारी, नारसिंही, वाराही, माहेश्वरी और भैरवी हैं। तंत्रों में शक्ति-पूजा का माहात्म्य तथा विधान है। शक्ति के उपासक शाक्त कहलाते हैं।

४—समीक्षण—

पार्वती की गणना पंच देवों में की जाती है। यह अपने अलौकिक कार्यों से सर्व साधारण में इतनी विख्यात हो गई हैं कि देवी तथा माता इनके लिए रूढ़ शब्द हो गये हैं। मनुष्यों ने इनके अनेक गुणों के कारण ही इनके नाना स्वरूपों की कल्पना कर ली है। शिव के सदृश इनमें भी वैधर्म्य गुण पाये जाते हैं। कहीं कल्याणी हैं, तो कहीं चंडी और काली। इतनी अनेकरूपता महादेव के अतिरिक्त अन्य किसी देव में नहीं पाई जाती। भयंकर दैत्य जब देवों को उत्पीड़न करने लगे तो इन्होंने विकट रूप धारण कर उनका संहार किया। चेचक के प्रकोप में ग्रामीण जनता मसुरिया या शीतला की ही सहायता से अपने को सुरक्षित समझती है। भूत प्रेत की बाधा में स्त्रियाँ देवी की ही शरण लेती हैं। अपनी दयालुता के कारण ही ये न केवल माता का, अपितु जगदम्बा का पद प्राप्त कर चुकी हैं। पीड़ितों के आर्तनाद से ये शीघ्र द्रवित हो जाती हैं, किन्तु दुर्दान्त दैत्यों के लिए ये चंडी, चंडिका तथा चामुंडा का विकराल रूप धारण कर लेती हैं। यह संग्रह सरस्वती तथा लक्ष्मी की अपेक्षा अधिक विकसित और विशेष महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसमें आदिशक्ति महामाया के लोकोत्तर चरित्र का चित्रण अच्छा हुआ है।

पार्वती गिरिराज हिमालय की कन्या हैं। इनका ब्याह शिवजी से हुआ। सौम्य रूप में सुन्दर तथा तेजस्विनी हैं, सब मंगल की देनेवाली, करुणा की मूर्ति एवं कल्याणकारिणी हैं, माता के सदृश प्रत्येक संकट के समय ये मनुष्यों की सहायता करती हैं। दुर्भिक्ष में अन्नदा, अन्नपूर्णा तथा शाकंभरी हैं, चेचक के प्रकोप में मसुरिया तथा शीतला महारानी हैं। यहाँ तक कि समस्त आशाओं तथा इच्छाओं को पूर्ण करती हैं। दुर्द्धर्ष दानवों को विध्वंस करने के लिए अनेक रूप धारण करती हैं। इनके अष्टभुजा हैं और स्कंद तथा गणेश की माता हैं, सिंह उनका वाहन है, सती रूप से यह पुनः शंकर के साथ ब्याही जाती हैं। कैलास के अतिरिक्त इनके तीन मुख्य निवास विंध्याचल, नगरकोट (पंजाब) तथा कामरूप प्रसिद्ध तीर्थ बन गये हैं। महादेव के समान यह भी विभिन्न स्थानों पर ग्राम विशेष की देवी के नाम से प्रसिद्ध हो गई हैं। दुर्गा सप्तशती में इनके रूप, लीला एवं माहात्म्य का विशद वर्णन पाया जाता है। यद्यपि इनका ललिता सहस्रनाम प्रसिद्ध है तथापि यह अभिधान-समुच्चय अत्यंत अल्प है। इसका कारण यह हो सकता है कि इनके पति तथा पुत्र-द्वय परम प्रबल व्यक्ति हैं अतः बहुत से नाम उनके साथ परिगणित हो गये हैं। दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि अनेक स्थानों में देवी अपने किसी विशेष नाम से नहीं, अपितु उस ग्राम अथवा नगर के नाम से लोक में प्रसिद्ध हो गई हैं यथा कड़े की देवी, पाटन की देवी। अतः मनुष्यों ने उन स्थानों पर ही

---

[1] किसी किसी का मत है कि दो मृतवत्सा माताएँ आपस में एक दूसरे के नवजात शिशु को पालने के लिए बदल लेती हैं। बच्चों के इस प्रकार बदलने से उनकी माताएँ भी बदल जाती हैं। 'पगड़ी बदल भाई' की तरह वे दोनों बालक माता बदल भाई हुए। इस विनिमय में जातक की दीर्घायु की भावना निहित रहती है।

नाम रखना आरम्भ कर दिया यथा कड़ेदीन, पाटनदीन। यद्यपि भक्तों की भावना देवी की ही ओर है किन्तु उसका कोई नाम न होने के कारण उनको विवश होकर ऐसा करना पड़ा। पाटनदीन से उनका अभिप्राय वस्तुतः पाटन की देवी से ही है। पाटन तो एक बहुत ही नगण्य स्थान था जो देवी के संसर्ग से पुण्य स्थान की कोटि में आ गया है। इस प्रकार बहुत से नाम इस समुदाय से पृथक् हो गये। नामों की न्यून संख्या का हेतु यह भी है कि सरस्वती, लक्ष्मी तथा पार्वती के अनेक नामों में समानता पाई जाती है, इससे कुछ नाम यहाँ से हटाकर इन देवियों के नामों में समाविष्ट कर दिये गये हैं। महोबा के प्रसिद्ध वीर आल्हा की पूजनीया मैहर की देवी का नाम शारदा है जो कि वस्तुतः भगवती शिव शक्ति की ही प्रतिकृति है। किंतु लोक में शारदा का अर्थ सरस्वती ही विशेष प्रचलित है। अतः हमने ऐसे नामों का उल्लेख सरस्वती में करना ही उचित समझा। इसी प्रकार लक्ष्मी के नामों को भी समझना चाहिए। चौथी बात यह है कि कहीं-कहीं स्त्रीलिंग रूपों को विकृत रूप मानकर उनकी गणना शिव में करदी जाती है क्योंकि राजेश्वर को कभी-कभी राजेश्वरी कहकर भी पुकारने लगते हैं।

एक बात और भी सम्भव है कि इस गवेषणा में स्त्रियों के नाम सम्मिलित नहीं किये गये। महादेवी, कलावती आदि पार्वती के अनेक नाम महिलाओं में प्रसिद्ध हैं किन्तु पुरुषों में प्रचलित नहीं हो पाये। इन सबके संकलन होने पर ललिता सहस्र नाम प्रस्तुत हो जाता इसमें कोई आश्चर्य नहो। शक्ति के उपासक शाक्त कहलातेहैं, जो पंच मकार के अत्यन्त प्रेमी होते है। यह संप्रदाय तंत्र शास्त्र को अपना धर्म ग्रंथ मानता है। तंत्र चूड़ामणि में ५१ शक्तिपीठों का वर्णन किया गया है। जहाँ-जहाँ सती के अंग-पात हुए वहाँ-वहाँ एक शक्ति तथा उसका रक्षक एक भैरव प्रादुर्भूत हुए। इस प्रकार ५१ शक्तियों की उत्पत्ति हुई। अनेक नामों की रचना इन्हीं शक्तियों के नाम से भी हुई है। विभिन्न वर्ग की इतनी देवियों का परिचय इन नामों से मिलता है।

१—विधान पारिजात में वर्णित जीवों का पालन-पोषण तथा कल्याण करनेवाली सात जीव-मातृकाएँ इन नामों में अङ्कित हैं।

२—देवी पुराणान्तर्गत १२ देवियों में से ११ संकलन में सम्मिलित हैं।

३—षडानन को दूध पिलानेवाली मातृकाओं में से पाँच यहाँ पर उपस्थित हैं।

४—हिन्दुओं में नवरात्र में नव दुर्गापूजा होती है। उनमें से चार दुर्गा इस नाममाला में व्यवहृत हुई हैं।

५—नव शक्तियों में से सात का नाम यहाँ पर पाया जाता है।

६—नव कुमारियों में से ६ यहाँ संकलित है।

७—तंत्र की दश महाविद्याओं में से ६ का उल्लेख इस संग्रह में पाया जाता है।

८—६४ योगिनियों में से अनेक के नाम इसमें सम्मिलित हैं।

स्कंद

१—गणना

क—क्रमिक गणना—

(१) नामों की संख्या—७५

(२) मूल शब्दों की संख्या—१६

(३) गौण शब्दों की संख्या—३२

ख—रचनात्मक गणना—

एकपदी नाम,	द्विपदी नाम,	त्रिपदी नाम,	चतुष्पदी नाम,	योग
१	५१	२२	१	७५

०—विश्लेषण

क – मूल प्रवृत्तिद्योतक शब्द :—

(१) एकाकी—कंद (स्कंद), कार्तिकेय, कुमार, सुकुमार, स्कंद

(२) समस्तपदी—अग्निकुमार, अग्निलाल, चंद्रवदन, चंद्रानन, चमूपति, तारकजित, मोरदेव, शक्तिधर, श्यामकार्तिक, षड्बदन, सन्मुख (षण्मुख) सेनपाल, सेनापति, स्वामि कार्तिकेय।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति :—

अग्निकुमार, अग्निलाल, कार्तिक, कार्तिकेय, षड्वदन, सन्मुख—एक बार शिव-पार्वती एकांत में प्रेमालाप कर रहे थे। उस समय अग्नि पारावत का रूप धारण कर उनके समीप पहुँच गया, तो शिव ने अपना तेज उस पाराबत में डाल दिया। अग्नि ने उसको सहन न कर सकने के कारण गगा में गिरा दिया। वहाँ स्नान करने छः कृत्तिका आई थीं। उनके छः पुत्र हुए जो किसी दैवी शक्ति से मिलकर एक हो गये, इसलिए उनके छै सिर, बारह हाथ और बारह आँखें हैं।

चमूपति, सेनपाल, सेनापति—स्वामि कार्तिक देवताओं की सेना के नायक माने जाते है।

तारकजित—तारकासुर का कार्तिकेय ने वध किया था।

मोरदेव—स्वामि कार्तिकेय की सवारी मोर पत्ती है।

ग—गौण शब्द :—

(१) वर्गात्मक :—

(अ) जातीय—सिनहा, सिंह।

(२) सम्मानार्थक

(आ) उपाधि—सूचक—लाल

(३) भक्ति परक—अजय, अतुल, अद्रि, अनूप, कांत, कुमार, चंद, चरण, जयवंत, जितेंद्र, तरुण, तेज, दास, धन्य, नव, नवीन, पुनीत, प्रफुल्ल, प्रभु, प्रशान्त, प्रसन्न, प्रसाद, बाल, मंजुल, मनोहर, ललित, विजय, स्वामि, स्वामी।

घ—सम्मिश्रण—आशुतोष, काली, गिरिजा, चक्रेश्वर, प्रसन्न (शिव), भूतेन्द्र, महादेव, महेश, यतींद्र, वीरेश्वर, शंभू, शिव, शिवेन्द्र, शैलजा, शैलेंद्र, शैलेश, सतीद्र, सतीश।

समीक्षण

दक्षिण भारत में स्वामि कार्तिकेय का विशेष महत्त्व माना जाता है। यहाँ वे सुब्रह्मण्य नाम से प्रसिद्ध हैं। गुण तथा कार्य सीमित होने के कारण इनके नामों की संख्या भी अत्यंत परिमित है। बहुधा नाम शिव अथवा पार्वती के पर्यायवाची शब्दों में कुमार जोड़कर बना लिये गये हैं। स्वतंत्र नामों की संख्या केवल १६ है। इनका परिचय इस प्रकार है। देवताओं का सेनाध्यक्ष वीर स्कद शंकर-पार्वती का पुत्र है। रूप में सुन्दर तथा तेजस्वी है। चंद्र सदृश उसके षण्मुख हैं। शक्ति उसका अस्त्र और मयूर वाहन है। उसकी स्त्री सेना '(देवसेना) है। कार्तिकेय ने तारकासुर को युद्ध में हरा कर मार डाला। इस संकलन से उसका लोकप्रिय नाम कुमार प्रतीत होता है।

गणेश

१—गणना

(क) क्रमिक गणना—

(१) नामो की सख्या—११५

(२) मूल शब्दो की संख्या—४८

(३) गौण शब्दों की संख्या—३२

(ख) रचनात्मक गणना

एकपदी नाम,	द्विपदी नाम,	त्रिपदी नाम,	चतुष्पदी नाम,	पंचपदी नाम,	षट् पदी नाम
२	४३	६४	३	२	१
					योग ११५

२—विश्लेषण :—

क—मूल :—

(१) एकाकी—ढुढ़ी, विनायक, हेरंब ।

(२) समस्त पदी—उमाशंकर लाल, ऋद्धिनाथ, कमलाशंकरलाल, कुशलपाल, कुशलेंद्र, गजपत, गजराज, गजराम, गजरूप, गजवदन, गजसिंह, गज्जूसिंह, गजानन, गजेंद्र, गणपति, गण-रंजन, गणेश, गणेश्वर, गनपत, गनपति, गनेश, गनेशी, गयद (गजेंद्र), चिंताहरण, जयकरण, जैकू, ज्ञानेंद्र, द्विपेंद्र, बुद्धिदेव, बुद्धिनाथ, बुद्धिपाल, बुद्धिराम, बुद्धिवल्लभ, लंबोदर, वक्रतुंड, शिव-जादिक लाल, शुभकरण, शुभाकर, श्रीकरण, सकटहरण, सिद्धिनाथ, सिद्धिविनायक, सिद्धिसदन, सिद्धीश्वर, हरनंद, हानीराम ।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति—

ऋद्धि नाथ, सिद्धि नाथ—ऋद्धि और सिद्धि गणेश की दो दासियाँ हैं ।

गजानन—पार्वती ने अपने मल का एक पुतला बनाकर द्वार पर रक्षा के लिए खड़ा कर दिया और स्वयं स्नान करने लगीं । इतने में बाहर से शिव आकर अंदर जाने लगे तो उस पुतले (गणेश) ने उन्हे रोका । दोनो में युद्ध होने लगा । शिव ने गणेश का सिर काटकर फेंक दिया और भीतर चले गये । पार्वती ने उन्हें देखकर आश्चर्य किया और उनसे पूछा कि आप यहाँ कैसे आ गये । तब शिव ने बतलाया कि द्वारपाल को मार कर मै यहाँ आ गया हूँ । यह सुनकर पार्वती विलाप करने लगीं । शिव ने तुरन्त ही उत्पन्न हाथी के बच्चे का सिर काट कर गणेश के ऊपर लगा दिया और वह जीवित हो गये । तभी से वह गजानन कहलाते हैं ।

जैकू—यह जयकरण का संक्षिप्त रूप है ।

ढु ढी, लंबोदर—ढुढि का अर्थ नाभि है । गणेश का बड़ा पेट था इससे यह दोनो नाम पड़े ।

वक्रतुण्ड—वक्र का अर्थ टेढ़ा और तुंड का अर्थ मुख,

हेरंब—अपनी मा (अम्ब) पार्वती को जन्मते ही पुकारने के कारण गणेश को हेरंब कहते हैं ।

ग—गौण प्रवृत्ति द्योतक शब्द

(१) वर्गात्मक—जातीय—मणि, राय, सिंह ।

(२) सम्मानार्थक—आदरसूचक—श्री, बाबू ।

(३) भक्ति परक गौण शब्द—आनन्दकुमार, चन्द्र, दत्त, दास, दीन, देव, नंद, नाथ, नारायण, पाल, प्रकाश, प्रताप, प्रसाद, बहादुर, मल्ल, मोहन, रत्न, लाल, वल्लभ, बिहारी, शरण, सहाय, सिद्ध, स्वरूप ।

(४) सम्मिश्रण—गौरी, दुर्गा, शिव । इनसे आत्मीयता का संबंध प्रगट होता है ।

राम—इससे भक्ति-सम्बन्ध सूचित होता है ।

३—विशेष नामों की व्याख्या

राम गणेश—एक बार देवताओं में यह विवाद छिड़ा कि उनमें सबसे बड़ा देवता कौन है उसी की पूजा सर्व प्रथम होना चाहिए । यह निर्णय हुआ कि जो सबसे पहले इस पृथ्वी की प्रदक्षिणा कर लेगा वही सबसे बड़ा समझा जायगा और उसी की सबसे पहले पूजा होगी । सब देवता अपने-अपने वाहनों पर चल दिये । गणेश ने सोचा कि मेरा वाहन मूषक सबसे पीछे रह जायगा । इसलिए उनको यह युक्ति सूझी । उन्होंने पृथ्वी पर राम नाम लिखकर उसकी परिक्रमा लगा ली । सब देवता लौटकर आये तो गणेश को बैठा देखा । राम नाम की महिमा के कारण गणेश विजयी हुए और देवताओं में सबसे प्रथम अर्चना के योग्य ठहराये गये ।

सिद्ध गणेश—इसका अर्थ है सिद्धिदाता गणेश अथवा सिद्धि-स्वामी गणेश ।

समीक्षण

शिव के सदृश गणेश को भी गणों का अधिनायक माना गया है । नामों के आधार पर उसकी निम्नलिखित सूक्ष्म कथा प्राप्त होती है । वह शंकर और पार्वती का पुत्र, कुमार का भ्राता एवं ऋद्धि—सिद्धि का स्वामी है । बुद्धि उसकी सहधर्मिणी है, वह संकटहर्ता, मंगलकर्ता तथा ज्ञानदाता हैं । गणेश को गजानन तथा लंबोदर कहा गया है ।

कार्तिकेय परक संग्रह की अपेक्षा स्वतंत्र नामों की संख्या इसमें अधिक है । अपत्यता-सूचक कुछ नाम शंकर तथा पार्वती प्रवृत्ति में रख दिये गये हैं, यदि ऐसा न किया जाता तो शिव की भक्त वत्सलता का लोप हो जाता । गणपति ने अपनी विलक्षण बुद्धि के कारण पंचदेवों में स्थान पा लिया है । विघ्न-निवारणार्थ सर्वमंगल कार्यों में सर्वप्रथम विघ्नराज गणनायक की ही पूजा होती है । अधिकांश नाम, गज, गण तथा ज्ञान के योग से बने हैं । उसके नाम पर गाणपत्य धर्म का प्रचलन हुआ । विघ्नहर एवं विघ्नकर आदि वैषम्य प्रकृति के कारण उसकी गणना भी परोवरीण देवो में की जाती है ।

——

चौथा प्रकरण

लोकपाल[1]

पूर्व के देवता इंद्र, अग्निकोण के अग्नि, दक्षिण के यम, नैर्ऋत्य के सूर्य, पश्चिम के वरुण, वायु कोण के मारुत, उत्तर के कुबेर, ईशान कोण के चंद्र लोकपाल हैं। तुलना की सुगमता के विचार से सूर्य को अपने क्रम में न रखकर चद्र के पास ही रखा गया है क्योंकि इन दोनो का मनुष्यो से अधिक सम्बन्ध रहता है। सूर्य चद्र दो दिव्य ज्योतियाँ हैं जिनका मनुष्य प्रत्यक्ष दर्शन करते है। दोनों ही मानव-जीवन के आधार हैं। सूर्य किसी समय शिव का प्राकृतिक प्रतीक समझा जाता था, किन्तु अब उसकी गणना पंचदेवों में की जाती है। चंद्र शंकर का शिरोभूषण होने से और भी श्रद्धास्पद हो गया है। कतिपय तीर्थों में इनके मंदिर भी पाये जाते हैं। इस प्रकरण का विषय इन लोकपालों से सम्बन्धित नामों का अध्ययन होगा।

१—गणना

इंद्र—(क) क्रमिक गणना

(१) नामों की संख्या २१४
(२) मूल शब्दों की संख्या ४४
(३) गौण शब्दों की संख्या ४६

(ख) रचनात्मक गणना

एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम
४	६६	१००	३५

पचपदी नाम	षट्पदी नाम	योग
७	२	२१४

अग्नि—(क) क्रमिक गणना

(१) नामो की संख्या १३
(२) मूल शब्दो की सख्या ६
(३) गौण शब्दो की संख्या ४

(ख) रचनात्मक गणना

एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	योग
×	१२	१	१३

यम—(क) क्रमिक गणना

(१) नामों की संख्या २७
(२) मूल शब्दो की संख्या ११
(३) गौण शब्दों की संख्या १३

---

[1] इन्द्रानिलयमार्काणामग्नेश्चवरुणस्य च।
चन्द्रवित्तेशयोश्चैव ००००० ॥ (मनु०७ अ० ४ श्लो० ५)

(ख) रचनात्मक गणना

एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	पंचपदी नाम	योग
×	६	१६	×	२	२७

वरुण—(क) क्रमिक गणना

(१) नामों की संख्या १८
(२) मूल शब्दों की संख्या १२
(३) गौण शब्दों की संख्या ८

(ख) रचनात्मक गणना—

एक पदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	योग
१	७	६	१२	१८

वायु—(क) क्रमिक गणना

(१) नामों की संख्या १०
(२) मूल शब्दों की संख्या ७
(३) गौण शब्दों की संख्या ७

(ख) रचनात्मक गणना

एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी के नाम	योग
×	८	२	१०

कुबेर—(क) क्रमिक गणना

(१) नामों की संख्या ४६
(२) मूल शब्दों की संख्या २२
(३) गौण शब्दों की संख्या १६

ख—रचनात्मक गणना

एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	योग
२	२२	२२	४६

इंद्र

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द

(१) एकाकी—इंदर, इंदुल, इंदूरी, इंद्र, एदल (इंद्र), जैसन (जिष्णु) पुरंदर, बजरी (वज्री), वासव, शक्र।

(२) समस्त पदी—अमरपाल, अभरराज, अमरेंद्र, अमृतराज, अमृतराय, कंदपाल, घनेंद्र, दिवेंद्र, देवकात, देवनाथ, देवनायक, देवपाल, देवराज, देव स्वामी, देवेंद्र, महेंद्र, मेघनाथ मेघनारायण, मेघपाल, मेघभरन राय, मेघराज, मेनपाल, लेखनारायण, लेखराज, शचि कांत, शचींद्र, सर्वभूप, सर्वेंद्र, सुरपति, सुरभूप, सुरेंद्र, सुरेश, सुरेश्वर।

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ

अधिकांश नाम देव तथा उसके पर्यायवाची शब्दों के योग से बने हैं।

देव के पर्यायवाची—अमर, अमृत, लेख, सर्व, सुर।

ग—मूल शब्दों की निरुक्ति

बजरी—(१) वज्र धारण करने के कारण इन्द्र को बज्री कहते हैं। वज्र के विषय में यह लिखा है कि वज्र एक धातुमय तीक्ष्ण शिलाखंड है जिसमें शतशः पर्व, सहस्रशः शंकु तथा शतशः कोण होते हैं[1]। वज्र का दूसरा वर्णन इस प्रकार है। अमुक्तास्त्रों में सर्वप्रथम वज्र है जो वृत्रासुर के वधार्थ निर्मित हुआ था। यह कोटि सूर्यसमप्रभ है और प्रलयाग्नि के समान प्रकाशवान है। इसकी दाढ़ १० योजन लम्बी और जीभ अत्यंत भयंकर है। यह प्रलय की कालरात्रि के समान है और १०० गाँठों से आच्छादित है। इसकी लम्बाई १० योजन और चौड़ाई ५ योजन है। इसका घेरा तीक्ष्ण नोकों से ढका हुआ है। रंग में यह बिजली के समान है। इसमें चौड़ा और सुदृढ़ बेंट लगा हुआ है। (२) बाजार में उत्पन्न

महेंद्र—वृत्रासुर को मारने के उपलक्ष्य में इंद्र को महेंद्र की उपाधि प्रदान की गई थी।

घ—गौण शब्द

(१) वर्गात्मक—जातीय—सिंह, राय।

(२) सम्मानार्थक—(अ) आदरसूचक—जू, श्री। (आ) उपाधिसूचक—लाल

(३) भक्तिपरक—आनंद, आसन, इंद्र, कांत, किशोर, कुमार, चंद्र, जीत, दत्त, दयाल, दास, दीवान, देव, धर, नन्दन, नाथ, नारायण, पति, पाल, प्रकाश, प्रताप, प्रसाद, बली, बहादुर, भूप, भूषण, मणि, मल, मान, मोहन, मौलि, राज, राम, लाल, विक्रम, विजय, विहारी, वीर, व्रत, सहाय, सुख, सेन, सेवक, स्वरूप।

(४) सम्मिश्रण—कृष्ण, शंकर।

३—विशेष नामों की व्याख्या

कंद पाल—कं = जल + द = देनेवाला अर्थात् मेघ जिसका स्वामी इंद्र है।

पुरंदर—शत्रुओं के नगरों को नाश करने के कारण इंद्र को पुरंदर कहते हैं।

शक्र—कभी-कभी पदों के आद्यक्षरों से भी नया नाम बन जाता है। शक्र इसी प्रकार का नाम बतलाया जाता है जो पहले शतक्रतु का संकेत रूप (श० क्र०) था। शनैः शनैः यह सकेत नाम (शक्र) शतक्रतु (इंद्र) का पर्याय बन गया। कालांतर में जातक जनक के समकक्ष हो गया।

अग्नि

२—विश्लेषण

क—मूलशब्द

(१) एकाकी—अग्नि, अग्ने (अग्नि)

(२) समस्त पदी—उषर्बुध, वैश्वानर, हुताशन

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति

उषर्बुध—उषा के साथ बड़े सबेरे जगने वाली अग्नि को उषर्बुध कहते हैं।

वैश्वानर—विश्व के समस्त मनुष्यों के लिए उपयुक्त, अग्नि की एक उपाधि।

हुताशन—नैवेद्यादि भक्षण करने से अग्नि को हुताशन कहते हैं।

ग—गौण शब्द

भक्ति परक—कुमार, दत्त, देव, लाल।

३—विशेष नामों की व्याख्या—देखिए मूल शब्दों की निरुक्ति।

---

[1] Indian Mythology P. 32

यम

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द

(१) एकाकी—जम, यम

(२) समस्त पदी—कालेंद्र, धर्म देव, धर्म नाथ, धर्म नारायण, धर्म पाल, धर्म राज, धर्मेंद्र, धर्मेश्वर, सर्वजीत ।

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ

यहाँ पर धर्म का अर्थ जीव है जो शरीर से अलग होने के पश्चात् यमलोक में यम के अधीन रहता है। धर्म के योग से प्रचलित नाम प्रायः उपाधिसूचक हैं ।

ग—गौण शब्द

(१) वर्गात्मक

जातीय—राय, सिंह

(२) सम्मानार्थक

आदर सूचक—जी

(३) भक्तिपरक—कुमार, चंद्र, नाथ, नारायण, पाल, प्रसाद, मोहन, राम, शरण, सहाय, स्वरूप ।

वरुण

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द

(१) एकाकी—वरुण

(२) समस्त पदी—केंद्र, केश, केश्वर, केश्वरी (केश्वर), जलई राम, जलदेव, जलेश्वर, जलेसर (जलेश्वर), नीर सिंह, वारींद्र, वारीश ।

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ

अधिकांश नाम जल के पर्यायवाची शब्दों से बने हैं। कः—(जल), नीर, वारि। एकाक्षरी कोष में क का अर्थ जल दिया गया है; अतः केंद्र, केश, केश्वर वरुण के अर्थ में लिये गये हैं ।

ग—गौण शब्द

(१) वर्गात्मक—(अ) जातीय—राय, सिंह ।

(२) भक्तिपरक—चंद्र, दत्त, नाथ, प्रकाश, लाल, बीर ।

वायु

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द

(१) एकाकी—अनिल, पवन, प्रभंजन, वायु, समीर ।

(२) समस्त पदी—अग्निमित्र, महाबली ।

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ

अनिल, पवन, प्रभंजन, समीर वायु के पर्यायवाची शब्द हैं।

ग—गौण शब्द

(१) वर्गात्मक—जातीय—सिंह

(२) भक्तिपरक—चंद्र, पावन, प्रकाश, वत्स, शरण, स्वरूप।

३—विशेष नामों की व्याख्या

अग्निमित्र—पवन से अग्नि प्रज्वलित होती है। इसीलिये उसको मित्र कहा गया है।

कुबेर

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द

(१) एकाकी—एडविड, कुबेर, धनधारी।

(२) समस्त पदी—टंक नाथ, धन नारायण, धन पति, धन पाल, धनराज, धनेंद्र, धनेश, धनेश्वर, नव नाथ, नवनिधि, राय, निद्धिनारायण, निद्धू राम, निधीश, पुष्पेंद्र, यक्ष राज, रुक्म पाल, संपत राय, सोन पाल, हेम पाल।

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ

ये नाम प्रायः धन, निधि तथा स्वर्ण के योग से बने हैं।

स्वर्ण के पर्यायवाची शब्द—रुक्म, सोना, हेम।

ग—मूल शब्दों की निरुक्ति

एडविड (एलविल)—यह इलविला का अपत्यवाचक शब्द है। इलविला कुबेर की मा का नाम है। 'ल' के सदृश मराठी में एक अक्षर होता है जिसे ड की तरह पढ़ते हैं। "अग्नि मीले" मंत्र को "अग्नि मीडे" की भाँति उच्चारण किया जाता है। इस प्रकार एलबिल का एडविड रूप हो गया। उच्चारण में यह अंग्रेजी नाम सा प्रतीत होता है।

कुबेर-कुबेर का अर्थ कुत्सित शरीर वाला (कु=बुरा, वेर=शरीर)। इसके तीन पैर और मुँह में केवल आठ दाँत बतलाये जाते हैं। माथे पर आँख के स्थान में एक पीला धब्बा है। से कुरूपी होने से इसको कुबेर कहा गया है।

टक नाथ—टंक खजाने के अर्थ में आता है।

घ—गौण शब्द

(१) वर्गात्मक—(अ) जातीय—राय, सिंह

(२) भक्तिपरक—कुमार, चन्द्र, दत्त, दयाल, दास, नाथ, नारायण, पति, प्रकाश, प्रसाद, राय, लाल, शरण, सहाय।

३—विशेष नामों की व्याख्या

नवनाथ, नवनिधि, राय, निद्धिनारायण, निद्धू राम—कुबेर की नव निधियों के नाम हैं—पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील, खर्व। निद्धि, निद्धू दोनों निधि के विकृत रूप हैं।

समीक्षण

आज कल इन्द्र कुछ अधिक प्रचलित हो रहा है। बहुधा मनुष्य इसके योग से नाम रखना पसंद करते हैं। अग्नि, वायु तथा वरुण पर नाम बहुत ही कम हैं। यम तथा कुबेर अपनी स्थिति के कारण नामों में विशेष दृष्टिगोचर होते हैं। प्रथम मृत्यु का देवता है और द्वितीय

धन का। मृत्यु से मनुष्य भय खाते हैं तथा द्रव्य से प्रेम करते हैं। यही कारण है कि तात्विक देवताओं से इन दोनों की संख्या कुछ विशेष है। दूसरा कारण यह है कि यमद्वितीया तथा धन त्रयोदशी हिन्दुओं के प्रसिद्ध पर्व हैं जिनसे इन नामों का अस्तित्व प्रतीत होता है।

इंद्र—इन्द्र देवताओं का राजा है। उसकी स्त्री शचि है, मेघ तथा मदन उसके अनुचर हैं, अपने वज्र से वह शत्रुओं का उन्मूलन करता है। महेन्द्र, देवेंद्र आदि उसकी अनेक उपाधियाँ हैं। इस प्रवृति के नामों की प्रचुरता का केवल यही कारण हो सकता है कि इस शब्द के संयोग से नाम में सौंदर्य, सौष्ठव, माधुर्य आदि गुण आ जाते हैं। यह वंग समाज का अनुकरण प्रतीत होता है। क्योंकि उसमें सुरेंद्र नाथ बंध्योपाध्याय, महर्षि देवेन्द्र नाथ ठाकुर आदि इन्द्र संयुक्त नाम विशेष रूप से प्रचलित हैं।

अग्नि—यद्यपि गाँवों में भी लोग प्रायः लौंगादि से आग की पूजा करते हैं। किन्तु नामो पर इसका कोई प्रभाव प्रतीत नहीं होता। इतना ही जाना जा सकता है कि यह एक देवता है जो यज्ञ के प्रसाद को ग्रहण करता है।

यम– यह मृत्यु का देवता है। ऐहिक लीला के बाद जीव इसी के अधीन रहते हैं। धर्मेन्द्र तथा सर्वजीत इसकी उपाधियाँ हैं।

वरुण—यह जल का देवता है। पाश इसका प्रसिद्ध आयुध है।

वायु—यह महाबली देव अग्नि का मित्र हैं। कुछ नामो का समावेश इसके अवतार हनुमान् के साथ हो गया है।

कुबेर—यह धन का स्वामी तथा यक्ष-किन्नरों का राजा है। इसका कोश नवनिधि, स्वर्णादि अतुल सम्पत्ति से परिपूर्ण है। गमनागमन के लिए इसके पास पुष्पक विमान है। इसकी माता का नाम इलविला है।

सूर्य

४—गणना

क—क्रमिक गणना

(१) नामों की संख्या – ३००

(२) मूल शब्दों की संख्या—८१

(३) गौण शब्दों की संख्या—६५

ख—रचनात्मक गणना—

एक पदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	पंचपदी नाम	योग
१७	१७६	७७	२३	४	३००

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द—

(१) एकाकी—अंशधारी, अंशुधर, अरुण. अर्कू, अर्क. आदित्य, आफताब, किरण, खुरशेद, ज्योति, तेजधर, तेजधारी, दनकू, दिनकर, दिवाकर, परगास, प्रकाश, प्रकाशी, प्रभाकर, भाना, भानु, भास्कर, मिहिर, मेहर, रवि, सविता, सुरजन, सुरजा, सुरजू. सूरज, सूरजा, सूर्य।

(२) समस्त पदी :—अँजोर राय, अंशुमाली, अदित सहाय, आतप नारायण, आलोक नारायण, उदय कांत, उदयनाथ, उदय नारायण, उदित नारायण, उद्योत नारायण, उस्माकर, खरभान, जगत नयन, ज्योति नाथ, ज्योति नारायण, ज्योतिनिवास, ज्योति भूषण, ज्योति सिंह, ज्योति स्वरूप, ज्योतींद्र, झलकनाथ, तपन नारायण, तपनाथ, तपेश, तप्तनारायण, तेजकरण, तेजनारायण, तेज पति, तेजपाल, तेज प्रकाश, तेजबल, तेजबली, तेजमणि, तेजराज, तेजेन्द्र, तेजेश, तेजोराम, दिन देव, दिन पति, दिनेन्द्र, दिनेश, दिनेश्वर, दिवेद्र, दिव्य ज्योति, देवदीप, देवमणि, धूपनारायण, नवनाथ, प्रकाश देव, प्रकाश नाथ, प्रकाश नारायण, प्रकाश पति, प्रभाकांत, प्रभेश, वेदमूर्ति, सकल देव, सकल नारायण, सौरीश ।

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ

(१) रचनात्मक—अधिकाश नाम प्रकाश तथा दिन के पर्यायवाचक शब्दों के योग से बने हैं ।

(२) पर्यायवाचक शब्द

(अ) अँजोर, आलोक, उदय, उदित, ज्योति, झलक, तेज, प्रकाश, प्रभा, भान ।

(आ) दिन, दिवा ।

(३) विकृत रूप—दनकू (दिनकर), परगास (प्रकाश), भाना (भानु), मेहर (मिहिर), सुरजन, सुरजा, सुरजू, सूरजा (सूरज) सूर्य ।

(४) विजातीय प्रभाव—आफताव तथा खुरशेद मुसलिम संस्कृति से प्राप्त सूर्य के अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं ।

(५) बीज कथा

माता, अदिति; स्त्री, सौरी; नवग्रहों का स्वामी; दिनकर्ता, प्रकाशदाता; संतति—यम, अश्विनी कुमार, सुग्रीव, शनि तथा कर्ण ।

ग—मूल शब्दों की निरुक्ति

अदितसहाय—सूर्य की माँ का नाम अदिति है इसीलिए सूर्य को आदित्य कहते हैं ।

नवनाथ—सूर्य नवग्रहों में प्रमुख है ।

वेदमूर्ति—सूर्य को सामवेद का कर्ता माना गया है । अतः उसको वेदमूर्ति कहते हैं ।

सकल देव—सूर्य में बारह कलाएँ मानी गई हैं । अतः कलायुक्त होने से उसे सकल देव कहते हैं ।

सौरीश—दो अर्थों में प्रयुक्त हो सकता है ।

१—सौरी—सूर्य की स्त्री ।

२—सौरि से तात्पर्य सर्य के पुत्र अर्थात् यम, अश्विनीकुमार, शनि, सुग्रीव तथा कर्ण से है ।

घ—गौण शब्द

(१) वर्गात्मक

(अ) जातीय—राय, सिंह, सिनहा ।

(२) सम्मानार्थक

(अ) आदरसूचक—श्री

(आ) उपाधि—लाल

(३) भक्तिपरक—आदि, आनंद, इंद्र, उदय, कँवल, करण, कांत, किशोर, कुमार, केत, चंद, चंद्र, दत्त, दयाल, दर्शन, दास, दीन, देव, नंदन, नव, नाथ, नारायण, परम, पाल, प्रकाश,

प्रताप, प्रभा, प्रशाद, बक्स, बल, बली, बहादुर, बाल, बालक, भक्त, भान, भानु, भूषण, मंगल, मणि, मल, मोहन, रतन, रत्न, राज, राम, लाल, वंश वल्लभ, विक्रम, विहारी, वीर, शरण, शेखर, सहाय, सेन, स्वरूप,

(४) सम्मिश्रण—कृष्ण, चंद्र, शंकर।

३ विशेष नामों की व्याख्या

अंजोरराय—अंजोर प्रकाश के अर्थ में आता है इस नाम से यह विदित होता है कि नामी का जन्म दिन के समय हुआ है।

अंशधारी सिंह—अंश का अर्थ कला है। सूर्य बारह कला धारण करता है अतः उसका नाम अंशधारी हुआ।

अंशुधर, अंशुमाली—अंशु किरण को कहते है।

अदित सहाय लाल—अदिति है सहाय जिसकी वह लाल अर्थात् सूर्य। अदित आदित्य का अपभ्रंश प्रतीत होता है।

अरुण—प्रातःकालीन लाल वर्ण सूर्य को अरुण कहते हैं। सूर्य के सारथि को भी अरुणकहते हैं।

उदयकांत, उदितनारायण, उद्योतनारायण सिंह—उदय, उदित तथा उद्योत ये तीनों शब्द सूर्योदयवेला व्यक्त करते हैं।

उस्माकर—ऊष्मा (गर्मी) देने के कारण सूर्य का यह नाम पड़ा अथवा उष्म (ताप) × आकर (कोष) = सूर्य।

कँवलभान सिंह—सूर्य की किरणो के स्पर्श से प्रातःकाल कमल बिकसित होता है। इस प्राकृतिक घटना की ओर यह नाम संकेत करता है।

किरण प्रकाश—यहाँ पर अंग (किरण) अंगी सूर्य के भाव में प्रयुक्त हुआ है। (२) प्रकाश की किरण।

खरभान—खर से तात्पर्य प्रखर अर्थात् तीक्ष्ण से है तथा भान का अर्थ प्रकाश है।

जगतनयन :—सम्पूर्ण विश्व का तथा समस्त प्राणियो का अवलोकन करने के कारण सूर्य का यह नाम पड़ा।

ज्योतिनारायण :—ज्योति प्रकाश तथा सूर्य के अर्थ में आता है।

झलकनाथ :—झलक प्रकाश के अर्थ में आता है।

तपननारायण, तपनाथ, तप्तनारायण :—उष्णता के सूचक हैं।

देवदीप सिंह :—सूर्य चंद्र को मनुष्य देवताओं के दीपक समझते हैं।

नवादित्य लाल :—प्रातःकाल के सूर्य को नव आदित्य कहते हैं।

प्रकाश :—यह शब्द उजाला तथा सूर्य के अर्थ में आता है।

भानामल :—भाना भानु का विकृत रूप है।

मेहरचन्द :—मेहर[1] शब्द मिहिर का विकृत रूप है जो सूर्य के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

४—समीक्षण

सूर्य प्रकाश का देवता है। उदय से अस्त तक इसकी अनेक परिस्थितियों तथा अवस्थाओं का इन नामों में समावेश है। यह अदिति का आत्मज तथा सौरी (संज्ञा) का स्वामी है। इनके कई पुत्र हैं। यह नव ग्रहों में प्रमुख, वेद (साम) का रचयिता एवं ज्योति-र्मय है। द्वादश कलाधारी दिन-पति विश्व को आलोक तथा आतप प्रदान करता है। कमल पुष्प इसके करों से प्रस्फुटित होता है। भानु-शंकर नाम इसके पूर्व सम्बन्ध को व्यक्त करता है जब यह शंकर का प्रतीक माना जाता था।

[1] पूना का एक मुसलिम सिद्ध संत मेहर बाबा (१९६४), अंधविश्वास मूलक नाम भी हो सकता है। मेहर फा०—कृपा, दया।

सूर्य भक्ति के अतिरिक्त एक अन्य भावना यह भी प्रकट होती हैं कि नामी दिन में उत्पन्न हुआ है। उषा में होने से अरुण, प्रथम प्रहर में होने से वाल दिवाकर, नवादित्य लाल, मध्याह्न या ग्रीष्म में जन्म होने से खर भान[1], दिन में उत्पन्न होने से दिनेश, दिवाकर आदि तथा उजाले में होने से प्रकाश सम्बन्धी नाम रखे गये हैं। आदित्य, रवि आदि नाम इतवार की ओर भी संकेत करते हैं। अन्य पंच देवो के सदृश यह भी इतना प्रिय हो गया है कि सामान्य व्यक्ति भी स्नान करते समय सूर्य नारायण को जलाजलि अर्पण करदेता है। सूर्यदेव अपने सप्ताश्वरथ में बैठकर आकाश में दिन भर भ्रमण करता है। प्रातःकाल उसके भक्त सूर्यस्तोत्र का पाठ करते हैं। इससे सर्यवश तथा सौर संवत्सर का प्रारम्भ होता है।

चंद्र

गणना :—

क—क्रमिक गणना—

(१) नामों की संख्या—२०७

(२) मूल शब्दों की संख्या—५५

(३) गौण शब्दों की संख्या—८८

ख—रचनात्मक गणना :—

एक पदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	पचपदी नाम	योग
६	१४६	४५	३	१	२०७

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द

(१) एकाकी :—इंदु, कलाधर, चद, चंदा, चदी, चदू, चद्र, चद्रमा, चॉद, निशाकर, पीषधर, मयंक, महताव, शशि, सुधाधर, सोम, सोमन।

(२) समस्तपदी:—अमृतवास, अमृत सागर, ऋक्षेश्वर, कलानाथ, कलाराम, कुमुदकात, कुमुदिनीकात, कौमुदीकात, चद्र प्रभाकर, तारकनाथ, ताराकात, तारानाथ, तारापति, ताराराम, द्विजदेव, द्विजभूषण, द्विजराज, द्विजेद्र, नलिनीकांत, निशाकात, निशानाथ, निशिकात, निशिराज, निशेंद्र, बुधेश, यामिनीकात, रजनीकात, रामरत्न, रिछपाल, रोहिणीरमण, शर्वरीश, शिवकरण, शिव-भूषण, शिवशेखर, श्रीबन्धु, सुधाकर, सुधानिधि, हरभूषण, हिमकर, हिमाशु।

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ

(१) चद्र के अधिकाश नाम रात्रि, तारे, अमृत तथा, शिव के पर्य्यायवाचक शब्दो से बने हैं।

१—निशा, निशि, यामिनी, रजनी, शर्वरी।

२—ऋक्ष, तारक, तारा, द्विज।

३—अमृत, पीयूष, सुधा।

४—अतुलेश, असुरारी, शिव, सर्व, सर्वेश, हर।

(२) विकृत रूप—चंदा, चंदी, चंदू, चॉद (चंद्र), पूनम (पूर्णिमा) रिच्छ (ऋक्ष), सुकुल (शुक्ल), सोमन (सोम)

[1] अथवा खरमास अर्थात् पौष या चैत्र के अशुभ दिनों में उत्पन्न।

३—बीज कथा—स्त्री—रोहिणी, पुत्र—बुध, जन्म स्थान—सिन्धु, ताराापति, सुधासागर, लक्ष्मी का भाई, शिव का भूषण।

ग—मूल शब्दों की निरुक्ति—

कलाधर :—पूर्ण चंद्र में सोलह कलाएँ होती हैं।

चंद्रप्रभाकर—चन्द्रप्रभा का अर्थ चाँदनी होता है। चन्द्रमा चाँदनी देनेवाला है। अतः चंद्रप्रभाकर कहलाता है। प्रभाकर सूर्य के अर्थ में भी आता है।

ताराराम :—तारा बृहस्पति की स्त्री है जिसे चन्द्रमा ने हरण कर लिया था। तारा और चन्द्र से बुध की उत्पत्ति हुई।

द्विजराज :—द्विज (नक्षत्र) का स्वामी होने के कारण चन्द्रमा को द्विजराज कहते हैं।

बुधेश :—चंद्र और तारा से बुध का जन्म हुआ जिसने चंद्र वंश चलाया।

महताव :—यह फारसी शब्द चंद्र संज्ञक है और मुसलिम संस्कृति का सूचक है।

शिवकरण :—इसका अर्थ है शिवभूषण अर्थात् चन्द्रमा।

श्रीबन्धु[1] :—समुद्रमंथन के समय चौदह रत्नों में लक्ष्मी और चंद्रमा भी प्राप्त हुए थे। इसी सम्बन्ध से वह लक्ष्मी का भ्राता हुआ।

घ—गौण शब्द :—

(१) वर्गात्मक :— जातीय—राय, सिंह

(२) सम्मानार्थक :—

(अ) आदरसूचक :—बाबू

(३) भक्तिपरक :—अखिल, अतुल, अतुलेश, अनूप, अमी, असुरारी, आकाश, उदय, कांत, कार्तिक, किशोर, कीर्ति, कुमार, कुमुद, केवल, केश, चंद्र, चारु, जीत, ज्योति, ज्योतिष, तारक, तारा, दत्त, दास, देव, नंद, नलिन, नवल, नवीन, नाथ, नारायण, निखिल, निधि, पाल, पूनम, पूर्ण, प्रताप, प्रथम, प्रफुल्ल, प्रभात, प्रसन्न, प्रसाद, बक्स, बल, बली, बहादुर, बाली, भगवान्, भद्र, भान, भुज, मंजुल, मणि, मनोहर, मल, मित्र, मोहित, रंजन, रतन, राज, राम, रेख, लाल, वंश, वर्द्धन, विमल, विशाल, विशेष, विहारी, शरद, शिखर, शिशु, शीतल, शोभित, सकल, सर्व, सहाय, सुकुल, सुधर, सुदेव, सुलेश, सेन, सोमेश, स्वरूप, हंस।

३—विशेष नामों की व्याख्या :—

चन्द्र हंस—इस रूपक से नाम कर्त्ता की काव्य कल्पना का बोध होता है। चन्द्र अपने नक्षत्रों के साथ ऐसा प्रतीत होता है मानो हंस अपने दल के साथ मानसर को जा रहा है। एक अन्य आशय यह भी व्यक्त होता है कि नामी चंद्रलोक का सौम्य, आह्लादक, विवेकशील एव दिव्यरूप हंस (जीव) है अर्थात् उसमें चंद्र तथा हंस दोनों के गुणविधाद्यान हैं।

चारु चंद्र, मंजुल मयंक—ये दोनों नाम अनुप्रासित तथा कोमलकांत वर्णावली समन्वित हैं।

४ समीक्षण

चंद्र देव समुद्र से उत्पन्न होने के कारण लक्ष्मी सहोदर कहलाता है। वह स्वयं शीतल, सौम्य तथा सुन्दर है। शिव के साहचर्य से उसका महत्व और भी अधिक हो गया है। वह नक्षत्रों का स्वामी है और आकाश में रात्रि में विचरण करता है। उसके दर्शन से कुमुदिनी

[1] श्री, मणि, रंभा, वारुणी, सुधा, शंख, गजराजि,
कल्पद्रुम, शशि, धेनु, धनु, धन्वंतरि, विष, वाजि,

प्रफुल्लित होती है। शरत् का चंद्रमा अपनी शोभा के लिये प्रसिद्ध है। पूर्णेंदु अपनी चन्द्रिका द्वारा पृथ्वी पर अमृत की वर्षा करता है। द्वितीया के चंद्र से लेकर पूर्ण चंद्र तक उसकी, अनेक अवस्थाओं का दिग्दर्शन होता है। वृहस्पति की स्त्री से उसके बुध उत्पन्न हुआ। चंद्र की षोडश कलाएँ प्रसिद्ध हैं। अपनी सत्ताईस पत्नियों में से रोहिणी पर विशेष अनुराग रखने के कारण उसको क्षयरोग का अभिशाप लगा। शिव पूजन से वह रोगमुक्त हुआ।

नामों के आधार पर सूर्य तथा चंद्र में निम्नलिखित विभिन्नता पाई जाती है।

सूर्य	चंद्र
(१) सूर्य दिन में चमकता है।	(१) चंद्रमा रात्रि में प्रकाश देता है।
(२) सूर्य उष्ण धूप देता है।	(२) चंद्र की चाँदनी शीतल होती है।
(३) सूर्य के प्रकाश से कमल प्रातः काल खिलता है।	(३) चंद्र कुमुदिनी को रात्रि में खिलाता है।
(४) यह ग्रहों का स्वामी है।	(४) यह नक्षत्रों का स्वामी है।
(५) सूर्य प्रभाकर हैं।	(५) चंद्रमा सुधाकर है।
(६) सूर्य रंग बदलता है।	(६) चंद्र रूप बदलता है।
(७) सूर्य में द्वादश कलाएँ हैं।	(७) चंद्र में षोडश कलाएँ हैं।
(८) सूर्य से सूर्यवंशी राजाओं की उत्पत्ति हुई।	(८) चन्द्र के पुत्र बुध ने चंद्रवंश की स्थापना की।
(९) सूर्यकांत सूर्य की किरणों से द्रवित होता है।	(९) चंद्र किरणों से चन्द्रमणि द्रवित होता है।

पाँचवाँ प्रकरण

विष्णु के अवतार

१—गणना

क—क्रमिक गणना :—

(१) नामों की संख्या   १११

(२) मूल शब्दों की संख्या   ४५

(३) गौण शब्दों की संख्या   ३४

ख—रचनात्मक गणना :—

प्रवृत्ति	एक पदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	पंचपदी नाम	योग
मत्स्यावतार		४				४
कूर्मावतार		३				३
बराहावतार		२				२
नृसिंहावतार		४	२०	२	३	२९
वामनावतार	२	१५	११	२	१	३१
परशुरामावतार	३	९	८	१		२१
बुद्धावतार	१	१४	२			१७
कल्किअवतार		४				४
	६	५५	४१	५	४	१११

टिप्पणी—प्रयोग की दृष्टि से राम-कृष्ण के अतिरिक्त विष्णु के अन्यावतारों की प्रसिद्धि का क्रम इस प्रकार है :—

(१) वामन (२) नृसिंह (३) परशुराम (४) बुद्ध (५) मत्स्य—कल्कि (६) कूर्म (७) वराह ।

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द—

१—मत्स्यावतार—प्रथमावतार, मीन, मीना

२—कूर्मावतार—किच्छ, घर

३—बराहावतार—बाराह

४—नृसिंहावतार—नरसिंह, नरहरि, नूरसिंह १, नृसिंह, सिंह रूप

५—वामनावतार—अल्प नाथ, अल्प नारायण, उपेंद्र, टीकम, टीका, त्रिविक्रम, वलि राज राम, वलि राम, वलि जीत, वलिहारी, वामन।
६—परशुरामावतार—परशुराम, परसू (परशुराम), परसैया (परशुराम), भार्गव, भार्ग्य नाथ, भृगु आस, भृगु दत्त, भृगुनन्दन, भृगु नाथ, भृगु राम, भृगुरासन, भृगुसिंह, विप्र नारायण।
७—बुद्धावतार—अमिताभ, गौतम, बुद्ध, शाक्यमुनि, शाक्य सिंह, सिद्धार्थ।
८—कल्कि अवतार—अकलक, संवल राम, संबुलराव, संभर सिंह।
(सम्भल—मुरादाबाद जिला में सम्भल नामक एक नगर)

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति

प्रथमावतार[१] **या मत्स्यावतार**—सातवें मनु के शासन काल में पृथ्वी पापों से परिपूर्ण हो गई और एक ऐसा जल का प्रवाह आया जिसमे मनु तथा सप्त ऋषियों के अतिरिक्त सब प्राणी विनष्ट हो गये। उस समय विष्णु ने मत्स्य रूप धारण कर मनु के पोत को हिमालय पर पहुँचा दिया। इस मत्स्य का रंग सुनहरी और आगे एक शृंग था, उसकी काया १०० लाख योजन थी।

कूर्मावतार—यह विष्णु का दूसरा अवतार है। समुद्रमंथनसमय विष्णु ने कछुए का रूप धारण किया था।

वराह—विष्णु का तीसरा अवतार है जो हिरण्याक्ष दैत्य से पृथ्वी का उद्धार करने के लिए धारण किया था। वायु पुराण में वराह का वर्णन इस प्रकार है—यह दस योजन चौड़ा और हजार योजन ऊँचा, रंग काला, गर्जना बिजली की गड़गड़ाहट के समान, पर्वत के सदृश शरीर, दाँत सफेद, तेज और भयंकर थे; उसके नेत्रो से विद्युत् के सदृश अग्नि की ज्वालाएँ निकलती थीं और सूर्य के सदृश तेजस्वी था। कंधे गोल, मोटे तथा विशाल, शक्तिशाली सिंह के सदृश चाल, कूल्हे मोटे, कमर पतली तथा उसका शरीर चिकना और सुन्दर था।

नृसिंह—प्रह्लाद की रक्षा करने और हिरण्यकशिपु को मारने के लिए विष्णु का यह चौथा अवतार हुआ। हिरण्यकशिपु ने कठिन तपस्या कर ब्रह्मा से यह वरदान प्राप्त किया था कि वह न दिन में, न रात्रि मे, न घर के अन्दर, न घर के बाहर, न किसी देवता, पशु या आदमी के द्वारा मारा जाय। इसीलिए विष्णु ने सायंकाल के समय देहरी पर नृसिंह के रूप मे उसका वध किया।

वामन—बलि दानव के बढ़ते हुए ऐश्वर्य को देखकर इंद्र को आशंका हुई कि कहीं उसका इंद्रासन न छिन जाय। इसलिए उसने विष्णु से प्रार्थना की। कश्यप के यहाँ विष्णु ने वामन का अवतार लिया और बलि से तीन पग भूमि माँगकर अपने विराट् रूप से तीनो लोक नाप लिये और बलि को पाताल का राजा बना दिया प्रह्लाद का पोता राजा बलि भगवान का अनन्य भक्त था। अपनी प्रजा को वर्ष में एक बार देखने के लिए बलि ने विष्णु से आज्ञा ले ली थी। माला-

---

[१] प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदं विहितवहित्रचरित्रमखेदं।
केशव धृतमीन शरीर जय जगदीश हरे॥
क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे धरणि धरण किण चक्र गरिष्ठे।
केशव धृत कच्छप रूप जय जगदीश हरे।
वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना शशिनिकलंककलेव निमग्ना।
केशव धृत शूकर रूप जय जगदीश हरे। (गीत गोविन्द)

वार में राजा बलि के स्वागत के लिए श्रोनम पर्व मनाया जाता है जिसमें दस दिन तक सर्वत्र भोज होता है और आनन्द मनाया जाता है।

परशुराम—यमदग्नि के पुत्र परशुराम ने राजा कार्त्यवीर्य को मारकर अपनी कामधेनु लौटा ली। राजा के पुत्रों को जब विदित हुआ तो उन्होंने आक्रमण कर यमदग्नि को मार डाला इससे क्रुद्ध होकर उसने २१ बार क्षत्रियों का नाश किया। राजा जनक के यहाँ धनुष यज्ञ में राम से परशुराम की भेंट हुई।

बुद्ध—बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक बुद्ध को भगवान् विष्णु का नवाँ अवतार माना गया है। यह कपिलवस्तु के राजा शुद्धोदन के पुत्र थे। लुंबिनी बाग में पैदा हुए। गया में वट-वृक्ष के नीचे तपस्या करते हुए इनको ज्ञान हुआ। सबसे पहला उपदेश बुद्ध ने सारनाथ में दिया, इनकी मृत्यु कुशीनगर में हुई।

कल्कि—यह भावी अवतार संभल (मुरादाबाद) में होगा। जब पृथ्वी पर अधर्म की वृद्धि हो जायगी, राजा अत्याचार करने लगेंगे और प्रजा अनाचार में निमग्न हो जायगी।

ग—गौण शब्द

(१) **वर्गात्मक**—मणि, राय, सिंह।

(२) **भक्तिपरक**—अनूप, अवतार, ईक्षण, किशोर, कुमार, चन्द्र, दत्त, दयाल, दास, देव, नन्द, नाथ, नारायण, पाल, प्रकाश, प्रताप, प्रसाद, बहादुर, भज, मणि, मल महा, मोहन, राज, राम, लाल, बदन, वल्लभ, वीर. शरण, सेन।

३—विशेष नामों की व्याख्या

(१) **मत्स्यावतार :—**

प्रथमावतार—विष्णु का सबसे पहला अवतार मत्स्य है।

(२) **कूर्मावतार :—**

किच्छूमल—इसमें किच्छू कच्छप का विकृत रूप है। यह विष्णु का द्वितीय अवतार है।

धरकुमार. धरीक्षण—यहाँ धर से अभिप्राय कच्छप से है।

(३) **वराहावतार :—**

श्वेत वाराह—यह विष्णु की मूर्ति-विशेष है।

(४) **नृसिंहावतार :—**

नरहरि, सिंह रूप—ये विष्णु के नृसिंह अवतार की ओर संकेत करते हैं।

---

[1] तव करकमलवरं नखमद्भुतशृंगं दलित हिरण्यकशिपु तनुभृंगं।
केशव धृत नररह रह जय जगदीश हरे॥
छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुत वामन पदनख नीरज नित जलपावन।
केशव धृत वामन रूप जय जगदीश हरे।
क्षत्रिय रुधिरमये जगदयपापं स्नपयसि पयसि शमित भवतापम्।
केशव धृत भृगुपति रूप जय जगदीश हरे॥
निंदसि यज्ञ-विधे-रहह श्रुति जातं सदय हृदय दर्शित पशुघातं।
केशव धृत बुद्ध शरीर जय जगदीश हरे॥
म्लेच्छनिवह निधने कलयसि करवालम् धूमकेतुमिवकिमपिकरालम्।
केशव धृत कल्कि शरीर जय जगदीश हरे। (जयदेव कृत गीत गोविन्द)

(५) वामनावतार :—

अल्पनाथ, अल्पनारायण[1]—यह दोनों नाम विष्णु के वामन अवतार के बोधक हैं।

उपेंद्रकुमार —उपेंद्रनाथ का अर्थ इंद्र का अनुज होता है। यह वामनावतार की व्यंजना करता है।

टीकमचंद्र, त्रिविक्रम—टीकम त्रिक्रम का तद्भव रूप है और उसका रूपांतर टीका है। त्रिविक्रम विष्णु का वह विराट् रूप है जो उन्होंने बलि के छलने के लिए वामन रूप के उपरांत धारण किया था और जिसमें उन्होंने तीन पग में ही तीनों लोकों को नाप लिया था।

बलिराजराम, बलिजीत, बलिहारी—यह तीनों नाम वामन रूप विष्णु की ओर इंगित करते हैं जो उन्होंने राजा बलि को छलने के लिए धारण किया था।

(६) परशुरामावतार :—

भार्गव, भार्गवनाथ, भृगुदत्त—यह नाम परशुराम के हैं जो भृगुवंश में उत्पन्न हुए थे।

विप्रनारायण—यह परशुराम की जाति का सूचक है।

(७) बुद्धावतार :—

अमिताभ—यह भगवान बुद्ध का नाम उनके परम ऐश्वर्य की व्यञ्जना करता है (अमित = अतुल, अतिशय + आभा = शोभा)।

गौतम—गोतम गोत्र में होने के कारण बुद्ध को गौतम भी कहते हैं।

परमसुख—बुद्ध ने अतिशय त्याग तथा तपस्या के द्वारा परमानन्द प्राप्त किया था।

बुद्ध—गया में एक वट-वृक्ष के तले कई वर्ष तक तपस्या करते करते इनको बोध (ज्ञान) हुआ था। इसलिए इनको बुद्ध कहते हैं।

शाक्य मुनि—शाक्य वंश मे उत्पन्न होने तथा मुनियों के सदृश जीवन व्यतीत करने के कारण बुद्ध का यह नाम पड़ा।

सिद्धार्थ—जो अपने उद्देश्य में सफल हो गया है। उसे सिद्धार्थ कहते हैं। यह सर्वार्थ सिद्ध नाम का संक्षिप्त रूप बतलाया जाता है।[2]

(८) कल्कि अवतार :—

अकलंकप्रसाद—यह नाम निष्कलंक कल्कि अवतार का द्योतक है।

संवलराम, संबुलराय, संभल सिंह—यह तीनों नाम संभल नगर के सूचक हैं जहाँ पर कल्कि अवतार होनेवाला है।

४—समीक्षण

अवतार का व्युत्पत्यर्थ ऊपर से नीचे आना है। इसका अभिप्राय यह है कि विष्णु अपने भक्तों के हितार्थ बैकुण्ठ से पृथ्वी पर कोई न कोई रूप विशेष धारण करते हैं। इनके २४ अवतारों में से १० अवतारों के नाम इस संग्रह में संकलित हैं।

ये नाम अधिकतर अवतारों की जयन्तियों के कारण रखे गये प्रतीत होते हैं। इन विभव

---

[1] रहिमन याचकता गहे, बड़े छोट ह्वै जात।
नारायण हूँ को भयो, बावन आँगुर गात॥

[2] So they called
Their Prince Sarvarth Siddh,
"All Prosperity"
Briefer Siddhartha·
(Arnold's Light of Asia Canto 1)

अवतारों में प्रथम तीन अधिक प्रचलित नहीं हैं। भावी अवतार कल्कि से भी जनता-विशेष परिचित नहीं हैं। प्रह्लाद की रोचक कथा के कारण नृसिंह अवतार का प्रथम स्थान है। इसमें सिंह शब्द समास रूप से प्रयुक्त हुआ है। समस्त नाम प्रायः नर या नृ के योग से बने हैं। द्वितीय वामनावतार है जो दैत्यराज बलि के कारण प्रसिद्ध हो गया है। अल्पनाथ, वामन, त्रिविक्रमादि नाम आकृत्यनुसार तथा अन्य नाम इंद्र एवं बलि के सम्बन्ध में रखे गये हैं। भृगुवशी परशुराम का तृतीय स्थान है। परशु नामक आयुध रखने के कारण ये परशुराम कहलाते थे किन्तु आजकल यह नाम व्यग्य से क्रोधी व्यक्ति के दुराशय में व्यवहृत होने लगा है। भृगु सम्बन्धी नाम वश के परिचायक हैं, विप्र नारायण उनकी जाति की सूचना देता है।

अवतार के अतिरिक्त बुद्ध भगवान् संसार के एक महान् धर्म के प्रवर्तक भी माने जाते हैं। अशिक्षित जनता अज्ञता अथवा भ्रम के कारण बुद्ध तथा बुध में भेद नहीं कर पाती, अतः ऐसे नामों का निर्वाचन तथा निर्णय दुरूह हो जाता है। इसी अव्यवस्था के कारण कुछ नाम समयसूचक प्रवृत्ति में रखने पड़े हैं, बुद्धूलाल दोनों प्रवृत्ति में जा सकता है। भारत में आजकल बौद्ध धर्म का प्रचार अधिक नहीं है। इसलिए उसे बुधवार का सूचक ही मानकर अन्यत्र रखा गया है। बुद्धि सम्बन्धी नामों में भी कभी कभी ऐसी ही भ्रान्ति सम्भव है। सम्पूर्ण कलाओं के अवतार राम-कृष्ण का विवेचन आगे किया गया है।

राम

१—गणना

क—क्रमिक गणना

(१) नामों की सख्या—१०५४

(२) मूल शब्दों की संख्या—११०

(३) गौण शब्दों की संख्या—५७७

ख—रचनात्मक गणना

एक पदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	
११	५३२	४५३	
चतुष्पदी नाम	पञ्चपदी नाम	षट्पदी नाम	योग
५०	७	१	=१०५४

२—विश्लेषण

क—मूल प्रवृत्ति द्योतक शब्द :—

(१) एकाकी—रमई, रमन, रमनू, रमुआ, रमोसे, रम्मन, रम्मू, राघव, राघो, राम, रामू।

(२) समस्तपदी—अयोध्यानाथ, अयोध्यासिंह, अवधकिशोर, अवधकुमार, अवधनरेश, अवधनाथ, अवधनारायण, अवधपति, अवधबहादुर, अवधमणि, अवधराज, अवधलाल, अवधबिहारी, अवधेन्द्र, अवधेश, अवधेश्वर, इक्ष्वाकुनारायण, औधेश, औधराय, कौशलकिशोर, कौशलकुमार, कौशलनरेश, कौशलपति, कौशलपाल, कौशलबिहारी, कौशलाधीश, कौशलानन्द, कौशलेंद्र, कौशलेश, कौशिल्यानन्दन, जानकीकांत, जानकीजीवन, जानकीनाथ, जानकीरमण, जानकीवल्लभ, जानकीसिंह, तुलसीचन्द, तुलसीनाथ, तुलसीनारायण, तुलसीपति, तुलसीबहादुर, तुलसीवल्लभ, त्रेतानाथ, दशरथकुमार, दशरथनन्दन, दशरथलाल, बालजीत, भूमिजानाथ, मर्यादा, पुरुषोत्तम, मैथिलीमोहन, रघुकुलतिलक, रघुनन्दन, रघुनाथ, रघुपति, रघपाल, रघुराज, रघुवंश, रघुवंशकुमार, रघुवंशनारायण, रघुवंशभूषण, रघुवंशमणि, रघुवंशरत्न, रघुवंशलाल, रघुवंशबिहारी, रघुवंशसहाय,

रघुवंशस्वरूप, रघुवंशी, रघुवर, रघुवीर, रमचन्दी, रमचन्ना, रमला, रामापति, रामोश्याम, लक्ष्मणराय, लखनराय, लखनेश्वर, वशिष्ठनारायण, वैदेहीवल्लभ, शत्रुदमननाथ, शिलानाथ, सरजूशाह, सरजूसिंह, सरयूनारायण, सरयूकात, सर्यूनाथ, साकेतविहारीलाल, सियंवर, सियापति, सियारतन, सियावर, सीताकांत, सीतानाथ, सीतापति, सीतारमण, सीताराज. सीताराम. सीतावर, सुग्रीवपति, सुग्रीवराय, सुमंतपति।

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ

(१) **रचनात्मक**—राम के अधिकाश नाम अवध, सीता तथा रघु के संयोग से बने हैं।

(२) **पर्य्यायवाचक शब्द**—(१) अवध-अयोध्या, अवध, साकेत। (२) सीता—जानकी, भूमिजा, मैथिली, रामा, वैदेही, सिया, सीता।

(३) **विकृत शब्दों के शुद्ध रूप** :—

विकृत	शुद्ध	विकृत	शुद्ध
औधेश	अवधेश	रमई, रमन, रमुआ	राम
औधराय	अवधराय	रमोसे, रम्मन, रम्मू, रामू	राम
		राघो	राघव
बालजीत	बालिजीत	सितईराम	सीताराम
रमचन्दी	रामचन्द्र	सियंवर	सीतावर
रमचन्ना	रामचरण	सियापति	सीतापति
रमला	रामलाल	सियारतन	सीतारत्न
		सियावर	सीतावर

(४) **विजातीय प्रभाव**—इस मूल प्रवृत्ति में कोई विजातीय प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता।

(५) **बीजकथा**—जन्मस्थान—अयोध्या; पिता का नाम—दशरथ; माता का नाम—कौशल्या। स्त्री—सीता; भाई—लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न;। पुत्र—लवकुश; जन्मकाल—त्रेतायुग, कार्य—रावण—वध।

ग—मूल शब्दों की निरुक्ति

कौशल नरेश—कौशल एक प्रदेश है जिस पर रामचन्द्र का आधिपत्य था।

तुलसीचन्द—तुलसीदास रामचन्द्र के अनन्य भक्त थे।

त्रेतानाथ—रामावतार त्रेता-युग में हुआ था।

दाशरथि—दशरथ के अपत्य दाशरथि (राम)।

बालजीत—सुग्रीव के भाई बानरराज बालि को राम ने मारा था।

राम—विष्णु के अवतार राम सर्वप्रिय उपास्य देव हैं। उनके लोकोत्तर चरित्र की चर्चा अनेक ग्रंथों में हुई है किन्तु बाल्मीकीय रामायण अधिक प्रामाणिक समझी जाती है। राम के सबसे अधिक प्रचारक उनके अनन्य भक्त गोस्वामी तुलसीदास हैं जिनका रामचरितमानस हिन्दुओं का गृह दीप बना हुआ है। महात्मा गांधी की राम धुनि ने भी इसको सर्व सुलभ बना दिया है। राम के विषय में विभिन्न धारणा आजकल प्रचलित हो गई हैं। कोई उनको निराकार ब्रह्म समझता है तो कोई सगुण अशरीरी सुराकार विष्णु और कोई अवतारी नराकार रूप का ध्यान धरता है। निर्गुणी संत सम्प्रदाय ने उसके धात्वर्थ का अनुसरण करते हुए राम को "रमन्ते योगिनोऽस्मिन् अथवा रमन्ते सर्वभूतेषु" के व्यापक रूप में माना है। महात्मा गांधी ने भी इसी विचार की सम्पुष्टि की है, किन्तु

उनकी राम धुनि[1] के कारण जन समाज में यह भ्रमप्रसारित हो गया कि वे अवधवासी शरीरी राम के उपासक हैं। क्योंकि राम धुनि के सब शब्द अवतारी राम में ही घटित होते हैं। इसका निराकरण उन्हें हरिजन सेवक तथा हरिजन में कई बार करना पड़ा।[2] पुराण के अनुसार राम की व्याख्या इस प्रकार है :—

राशब्दोविश्ववचनोमश्चापीश्वरवाचकः। विश्वाधीनेश्वरो योहितेन रामः प्रकीर्तितः॥

गोस्वामीजी तीनों रूपों का समन्वय करते हुए अवतारी राम की भक्ति पर ही विशेष बल देते हैं। राम नाम की महिमा का वर्णन भी अनेक प्रकार से किया गया है। शिव पार्वती से कहते हैं—राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे। सहस्र नाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने।

सुमन्त पति—सुमन्त राजा दशरथ के एक वृद्ध मंत्री थे जो राम, सीता और लक्ष्मण को रथ में बैठाकर वन को ले गये थे।

घ—गौण शब्द

(१) वर्गात्मक :—

(अ) जातीय—मणि, राय, शाह, सिंह, सिनहा,

(आ) साम्प्रदायिक—पुरी, सागर।

(२) सम्मानार्थक :—

(अ) आदरसूचक—जी, जू, बाबू, श्री

(आ) उपाधिसूचक—आचार्य, राजा, लाल

(३) भक्तिपरक—अंजोर १, अकलू २, अखिल ३, अगम ४, अचरज, अचल, अच्छ जजी ५, अजेय, अड़ैते ६, अधार ७, अधिराज ८, अधीन अनन्त, अनुग्रह ९, अभय, अभिलाष, अयुग १०, अरज ११, अलख १२. अवतार १३, अवलव, अशीश १४, असीम, आज्ञा, आदर्श १५, आदि १६, आधार, आधारी १७, आनन्द, आन १८, आराध्य, आर्त १९, आश्चर्य, आश्रम, आश्रय, आसरे २०, इंद्र २१, इकबाल २२, इच्छा, ईश्वर, उग्रह २३, उच्छव २४, उचित २५. उछाह, उजागर २६, उजाड़, उदार, ऋतुपाल, ऋतुराज २७, ऋषि, औतार २८, कंत २९, कठिन, कदम ३०, कमल, करण ३१, कर्त्ता, कल्प ३२, कल्याण, कांत ३३, किंकर ३४, किनकन ३५, किशोर, कीर्ति, कुंडल ३६, कुँवर ३७, कुमार, कृत ३८, कृतार्थ ३९, कृपाल, केर ४०, केवल ४१, कोमल, कौली ४२, खासा (मुख्य), खातिर, खिलाड़ी, खिलावन, खिलोना ४३, खेलावन, खेवा, ख्याली, गति ४४, गरीब, गहन ४५, गुनई, गुलाम, गृही ४६, चंद्र, चम्मन ४७, चरण, चरित, चरित्र ४८, चहेली ४९, चिरंजीव ५०, चीज ५१, चीर ५२, चुंवन, छकन ५३,

---

[1] रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम।

[2] मेरा राम, हमारी प्रार्थना के समय का राम, वह ऐतिहासिक राम नहीं है जो दशरथ का पुत्र और अयोध्या का राजा था। यह तो सनातन, अजन्मा राम है और अद्वितीय है। मैं उसी की पूजा करता हूँ। उसी की मदद चाहता हूँ। (हरिजन सेवक ४-४-४६ ई०)

मैंने ईश्वर के इन सब नामों और रूपों को निराकार, सर्वव्यापक, राम के चिह्न के रूप में स्वीकार किया है। इसीलिए मेरे लिए सीतापति राम, दशरथ-पुत्र के रूप में वर्णित राम वह सर्वशक्तिमय तत्व है जिसका हृदय में अंकित नाम सब मानसिक, नैतिक और शारीरिक कष्टों को दूर कर देता है। (हरिजन २-७-४६ ई०)

छत्र ५४, छवि ५५, छवीला, छवीले, जग, जगई ५६, जगत, जगदीश, जगदेव, जगवरण, जगवल्लभ, जग्गो, जटाधारी, जट्टन ५७, जतन ५८, जती ५६, जन्म ६०, जयश्री ६१, जस, जागे, जान, जितावन ६२, जियावन ६३, जीत, जीवन, जैत ६४, जोखन ६५, जोर, ज्योतिष, ज्ञान, झलक, टहल, तपस्या, तपस्वी, तवक ६६, तवक्कुल ६७, तारक ६८, तुही ६६, तूफानी ७०, तेग, तेज, तोष ७१, त्रिभुवन, त्रिलोक, त्रिलोकी, दत्त, दयानिधि, दयाल, दयालु, दर्श ७२, दल, दलबल, दहल ७३, दहिन ७४, दाता, दानी, दास, दासरथी, दिलवर, दिलसुख ७५, दिलासा, दिशा, दीन, दुखछोर, दुखहर, दुलार, दुलारे, दुली ७६, दुल्ले (प्यारे), देनी, देव, देवी, दौड़ ७७, दौर, द्वार ७८, धिडाका ७६, धन, धनी, धन्वी ८०, धरीक्षण ८१, धारी ८२, धार्मिक, धीरज, धुन ८३, धोखे ८४, ध्यान, ध्वज ८५, नन्द, नन्दन, नक्षत्र ८६, नगीना ८७, नजर ८८, नयन, नरेश, नवल ८६, नसीब ६०, नागर ६१, नाथ, नामी (प्रसिद्ध), नायक, नारायण, निचोड ६२, निठुर, नित्य ६३, निधान, निधि, नियादी ६४, निरंजन, निर्भय, निर्मल, निवाज ६५, निवास ६६, निसानी ६७, निहाल ६८, निहोर ६६, निहोरे, नीकू १००, नूरा, नेक, नेकनाम, नेकी, नेत, नेति १०१, नैन, नौकर, पति, पद, पदार्थ १०२, पदुम, पन १०३, परसादी १०४, परिख, परीक्ष, पलट १०५, पलटन, पाद १०६, पाल, पालित १०७, पिता, पुत्र, पुन्नेश १०८, पूजन, पूरना पोखन १०६, प्यारे, प्रकट, प्रगट, प्रकाश, प्रताप, प्रतोष ११०, प्रदीप १११, प्रपन्न ११२, प्रभाव, प्रवीण, प्रवेश ११३, प्रसन्न, प्रसाद, प्रसादी, प्रिय, प्रीति, फकीर ११४, फल ११५, फुली ११६, फुलेल ११७, फूल, फूलधर ११८, फेर ११६, बंगाली १२०, बंधन १२१, बंधु, बक्स, बटोही १२२, बड़ाई, बदन १२३, बदल १२४, बरफ १२५, बल, बलवंत, बलिहारी १२६, बली, बहादुर, बहाल १२७, बहोर १२८, बहोरी, बाज १२६, बानू (स्वभाव) बालक, बुझावन बूझ १३०, बेटी १३१, वेदी १३२, बोध १३३, भगवान, भज १३४, भजन, भद्र १३५, भरोस भरोसा, भरोसे, भवन १३६, भाऊ १३७, भाल १३८, भावन १३६, भीख १४०, भुज, भुजी, भुलन १४१, भुवन १४२, भूषण, भोज १४३, मंगल, मंजुल १४४, मंजू, मंदिर १४५, मखोधर १४६ मगन, मणि, मदन १४७, मधुर १४८, मनहारी, मनावन १४६, मनुक, १५०, मनो, मनोज्ञ १५१, मनोरथ, मनोहर, मर्याद, मर्यादा, मल, महा, महाबल, महावीर, महातम १५२, मातवर, मानस, माया, मिलन, मुकुट, मुक्ति, मुदित, मुनि, मुनेश्वर, मुल्की १५३, मुहाल १५४, मेहर, मोहर, यज्ञ, यतन, यत्न, यश, यशवंत, याद, रंग, रंजन १५५, रक्ष, रक्षा, रख १५६, रज १५७, रजई, रतन, रत्न, रति १५८, रमद्दू १५६, रम्मन १६०, रसिक, राखन, रागी, राज, राजा, राजित १६१, राजी १६२, राज्य, राय, रिखपाल, रुचि, रुद्र १६३, रूप, रूरा १६४, रेख १६५, रेखा, रेज १६६, लगन, लग्न, लड़ेते १६७, ललक १६८, लला १६६, ललित १७०, लल्लू, लायक, लाल, लेख १७१, लोचन, लोट १७२, लोटन, लौट, लौलीन १७३, वंश, वचन १७४, वरन, वर्न, वल्लभ, १७५, वसंत १७६, वाण १७७, वासी १७८, विक्रम, विचार, विजय, विनय, विनायक, विनोद, विभूति १७६, विमल, विलास १८०, विवेकी, विशाल १८१, विश्वास, विहारी, वीर, वृक्ष १८२, व्यास १८३, वेद १८४, व्रत, शकल १८५, शब्द १८६, शरण, शरीक १८७, शांत, शांति, शाह, शिरोमणि, शीस, शुभ, शुहरत, शृंगार, शेखर, श्लोक १८८, सम्भार १८६, सँवारे, सकल १६०, सकुल १६१, सखी १६२, सचई १६३, सजीवन १६४, सज्जन, सत, सत्य, सदल, सदा १६५, सनेह, सनेही, समर १६६, समरथ, समुझ, समोख १६७, समोखन १६७, सम्मुख, सरोवर, सर्बसुख, सहवीर १६८, सहाय, सही (सत्य), साँवरे १६६, सांवलिया २००, सागर, साया २०१, सिंगार २०२, सिंहासन, सिद्ध, सुन्दर, सुकुल, सुख, सुचित २०३, सुदर्शन, सुदिष्ट, सुध, सुधार, सुधी २०४. सुधीर, सुपल, सुफेर, सुभग २०५, सुमिरन. सुमेर २०६, सुरंजन २०७, सरल

२०८, सुरति, सुर्जन (सूरज) सुलत्तान, सुवचन, सुशील, सुहाग २०६, सुहावन, सूरत २१०, सेन, सेवक, सोच, स्नेही, स्मरण, स्वयंवर २११, स्वरूप, स्वारथ २१२, स्वार्थ, हँस २१३, हजारी २१४, हजूर, हरख, हरे, हर्ष, हित, हितकारी, हुंकार २१५, हुजूर, हुब्ब २१६, हृदय, हेत, हो, होरिल २१७,

(४) सम्मिश्रण :—

(अ) मूर्तामूर्त :—ब्रह्म

(आ) मूर्त + मूर्त :—

अ—स्व पर्य्यायवाची शब्दों के साथ—रघुनाथ, रघुबर, रघुवीर, सियापति

(आ)—स्वसम्बधियों के साथ—जानकी, सितई, सिया, सीता, दशरथ, लक्ष्मण, भरत, लवकुश, जनक।

इ—अन्य देवों के साथ—ओंकार, कलानाथ, कलेश्वर, कुबेर, कृष्ण, देवेश, माधवेश्वर मिहिर, मुनेश्वर, मुरारी, यज्ञेश्वर, रुद्र, शंकर, शिव, श्री नेति, श्रीसिंह, सर्व, सुरेश, सुर्जन, हनुमान, हरि।

इ—व्यक्ति सम्बन्धी—कौशिक, तुर्सी, तुलसी, रिच्छपाल, सुग्रीव, सुमंत।

ई—स्थान सम्बन्धी—अक्षयवट, अक्षयवर, अयोध्या, अवध, कामता, केदार, कैलाश, कौशल, चित्रकूट, त्रिवेणी, सरयू, सेतु, हरिहर, हिमांचल।

ङ—गौण शब्दों की विवृत्ति

गौण प्रवृत्ति के अङ्कांकित शब्दों के अर्थ :—१ प्रकाश, २ अवयव रहित, अखण्ड, ३ सम्पूर्ण, ४ पहुँच से परे, ५ अजय का विकृत रूप, ६ अटल, हठी, ७ (आधार से बना है) सहारा, ८ स्वामी, ९ कृपा, १० अकेला, (अयुग्म) ११ (अर्ज) यह उर्दू का शब्द है, विनय, १२ अप्रत्यक्ष, १३ राम विष्णु के सातवें अवतार हैं। १४ आशीर्वाद, १५ अनुकरण करने योग्य पदार्थ, १६ प्रथम, मूल कारण, १७ सहारा देने वाला, वह लकड़ी जिसको टेक कर साधु लोग सहारा लेते हैं। १८ प्रतिज्ञा, शपथ, १९ दुखित, २० आश्रित, २१ श्रेष्ठ, २२ यह अरबी शब्द है, भाग्य, प्रताप, २३ ग्रहण से मोक्ष, २४ उत्सव का विकृत रूप है। २५ उत्साह का विकृत रूप है। २६ प्रकाशित, २७ वसंत, (यह शब्द जन्म काल की ओर संकेत करता है। २८ अवतार का अशुद्ध रूप है। २९ प्यारा, स्वामी, ३० चरण, ३१ आभूषण, ३२ कल्प वृक्ष, एकपर्व, ३३ स्वामी, ३४ दास, ३५ (इस का शुद्ध रूप किंकिणी है) घुंघरू, ३६ कर्णाभूषण, ३७ कुमार का अशुद्ध रूप है। ३८ रचित, सम्पादित, ३९ संतुष्ट, मुक्त, ४० यह अस्पष्ट शब्द कई अर्थों की ओर संकेत करता है क—सम्बन्ध सूचक विभक्ति का प्रत्यय "का", ख—केलि, ग—कीर का विकृत रूप मानने से इसका अर्थ तोता होता है। घ—यदि इसे किरि माना जाय तो राम किरि एक रागिनी का नाम है। ङ—केर का अर्थ केला भी होता है। ४१ शुद्ध, अकेला, ४२ कुलीन, प्रतिज्ञा, ४३ मनुष्य ईश्वर का एक खिलौना है, तुलसीदास जी, ने कहा है-उमा दारुयोषित की नाईं, सबहि नचावत राम गोसाईं। ४४ ज्ञान, पहुँच, सहारा, मुक्ति, ४५ गम्भीर, आभूषण, ग्रहण काल, ४६ गृहस्थ, घर में उत्पन्न, ४७ वाटिका, ४८ जीवन की विशेष घटनाओं का वर्णन, ४९ प्रिय, ५० दीर्घ आयु, ५१ कोई अद्भुत या महत्व की वस्तु "आभूषण"। गणना करने योग्य पदार्थ, ५२ वस्त्र, ५३ तृप्ति, सुध बुध, छः का समूह, ५४ राज्य छत्र, ५५ सुन्दर, ५६ जगट, ५७ जटा, ५८ यत्न का विकृत रूप है। रूप आदि चौबीस गुणों के अन्तर्गत एक गुण, उद्योग, उपाय, ५९ यति का विकृत रूप है, "संन्यासी" ६० उत्पति, चैत शुक्ला नवमी को राम का जन्म हुआ था। ६१ विजय लक्ष्मी, ६२ जीत, ६३ प्राण रक्षा, ६४ (जैत्र) विजयी, ६५ तौल, ६६ लोक, ६७ भरोसा, ६८ तारने वाला। (देखिये रामायण का कथा खण्ड)। ६९ राम की अनन्यता की ओर संकेत करता है। ७० प्रचंड, ७१ संतोष, ७२

दर्शन, ७३ भय से काँपना, ७४ अनुकूल, ७५ आश्वासन (दिलासा) का विकृत रूप है। ७६ प्यारा, ७७ पहुँच, ७८ प्रवेश, साधन, ७६ साहस, ८० धनुषधारी, ८१ (धारीक्षण) तीव्र दृष्टि वाले, ८२ धारण करने वाला, ८३ लगन, ८४ प्रवंचना, ८५ पताका, ८६ तारे, ८७ आभूषण, ८८ उपहार, दृष्टि, ८६ नया, ६० भाग्य, ६१ चतुर, ६२ तत्व, ६३ अविनाशी, ६४ चिह्न, ६५ अनुग्रह करने वाला, ६६ आश्रय, ६२, ६७ स्मृति चिह्न, ६८ पूर्णकाम, ६६ विनती, मनौती, उपकार, १०० (नीक) अच्छा, १०१ (न + इति) अनन्त, १०२ (चतुर्वर्ग) वस्तु, १०३ (प्रण) प्रतिज्ञा, १०४ (प्रसादी) नैवेद्य, १०५ लौटाना (देखिए रामपलट की व्याख्या), १०६ चरण, १०७ पाला हुआ, १०८ (पुण्येश), १०६ पालन, ११० सन्तोष, १११ दीपक, ११२ शरणागत, ११३ गति, पहुँच, ज्ञान, ११४ साधु, ११५ प्रसाद, लाभ, दान, सिद्धि, ११६ हर्ष, ११७ सुगंधित तेल, ११८ विष्णु, ११६ लौटाना, १२० बंग देश में उत्पन्न, १२१ प्रेम पाश १२२ यात्री, १२३ शरीर, १२४ लौटाना १२५ राम के शीतल स्वभाव की ओर संकेत करता है, १२६ विष्णु, १२७ प्रसन्न १२८ लौटाना, १२६ (फारसी प्रत्यय) प्रेमी १३० बुद्धि, समझ, ज्ञान, १३१ अत्यन्त प्रिय, १३२ ज्ञानी, १३३ ज्ञान, १३४ जय, १३५ अच्छा, १३६ घर, १३७ भाई, प्रेम, १३८ ललाट, १३६ प्रिय, १४० दान, १४१ भोला, १४२ संसार, १४३ प्रसाद, १४४ सुन्दर, १४५ देवालय, १४६ (मख उद्धार) यज्ञ रक्षक, १४७ कामदेव सा सुन्दर, १४८ मिष्ठभाषी, १४६ प्रसन्न करना, १५० मनुष्य. १५१ सुन्दर, १५२ (माहात्म्य) महिमा, १५३ संसार, १५४ कठिन १५५ प्रसन्न करना, १५६ (रक्षा), १५७ धूल, १५८ प्रेम, १५६ रमता, १६० सुन्दर, व्यापक, १६१ शोभित, १६२ प्रसन्न, १६३ भयंकर, १६४ सुन्दर, १६५ कला, १६६ भरा हुआ, १६७ प्यारा, १६८ इच्छा, १६६ प्रिय, १७० सुन्दर, १७१ कला, देव, १७२ लौटाना, १७३ तल्लीन, १७४ प्रतिज्ञा १७५ प्रिय, स्वामी, १७६ ऋतु, १७७ तीर, १७८ निवासी, १७६ ऐश्वर्य, १८० क्रीड़ा, १८१ बड़ा, १८२ फलदाता, मूलाधार, १८३ कथा-वाचक, १८४ ज्ञान, १८५ रूप, १८६ वाणी, १८७ सहायक, साथी, १८८ यश, १८६ सजावट, १६० रूप, १६१ उच्च वंश, श्वेत, १६२ सहेली (सखी भाव), दानी (सखी अरबी शब्द) १६३ सच्चा, १६४ जीवन दाता, १६५ नित्य, अविनाशी, १६६ (स्मर) कामदेव से सुन्दर, १६७ सम्मुख, १६८ वलिष्ट १६६ श्याम, २०० श्याम, २०१ प्रभाव, कृपाहस्त २०२ सजावट, २०३ सचेत, २०४ बुद्धिमान, २०५ सुन्दर, प्रिय, भाग्यशाली, २०६ सुमेरु पर्वत, २०७ मनोरंजन, १०८ ध्यान, २०६ सौभाग्य, २१० रूप, २११ यह राम के विवाह का सूचक है। २१२ सफल, लाभ २१३ परब्रह्म, विशुद्ध, अजपामंत्र, २१४ सरदार, २१५ ललकार, २१६ प्रेम, २१७ नवजात शिशु।

टिप्पणी—गौण शब्दों में बिजातीय प्रभाव।

अरबी शब्द—अरज, इकबाल, कदम, कौली, खासा, खातिर, ख्याली, गरीब, गुलाम, तबक तूफानी, तेग, नजर, नसीब, नूरा, फकीर, मातवर, मुल्की, मुहाल, राजी, लायक, शकल, शरीक शुहरत, सखी, हजूर, हुजूर, हुब्ब।

फारसी शब्द—चम्मन (चमन), दिलवर, नगीना, नामी, निवाज, निशानी, निहाल, नेक, नेक नाम, नेकी, बख्स, बदन, बहादुर, बहाल, मौज, महर, मोहर, याद, शाह, साया, सूरत, हजारी।

३—विशेष नामों की व्याख्या—

अकलूराम—अकलू (अकल) शब्द से राम की सर्व व्यापकता, एकरूपता तथा अनन्तता प्रकट होती है।

आदि राम—राम नित्य होने के कारण सृष्टि के आरम्भ में भी रहते हैं। इसी धारणा से यह नाम पड़ा।

इक्ष्वाकु नारायण— इक्ष्वाकु सूर्यवंश के प्रथम राजा थे जो अयोध्या में शासन करते थे। ये वैवस्वत मनु के पुत्र थे। रामचंद्र इन्हीं के वंश में उत्पन्न हुए थे।

चित्रकूट राम—चित्रकूट में कामदगिरि एक पवित्र स्थान है। वनवास के समय राम ने यहाँ पर चिरकाल तक निवास किया था।

जटाधारीराम, जट्टनराम, जतीराम—वनवास जाते समय राम ने जटा बाँधकर यति का रूप धारण किया था।

जैतराम सिंह—जैत शब्द जैत्र का विकृत रूप है जिसका अर्थ विजयी है। यह उस घटना की सूचना देता है जब राम ने रावण पर विजय प्राप्त की थी। जैतवन में उत्पन्न।

तुलसी वल्लभ—गोस्वामी तुलसीदास को राम प्राणों से भी अधिक प्रिय थे। तुलसी वल्लभ विष्णु के अर्थ में भी आता है, जिनके अवतार राम थे। देखिए विष्णु।

तुहीराम—तुही शब्द से उपासक की अपने उपास्य देव राम के प्रति अनन्य भक्ति प्रकट होती है।

दलराम—दल का अर्थ सेना। यह उस समय का संकेत देता है, जब राम सेना सहित समुद्र के तट पर पहुँचे थे।

निठुर राम—अवसर आने पर कोमल राम को भी निठुर बनना पड़ा। सीता को बनवास देते समय उनकी कठोर प्रवृत्ति हो गई थी।

बानू राम—यह शब्द बाणधारी रामचंद्र की ओर संकेत करता है।

बालक राम, रामबालक—भक्त को राम का बालरूप अत्यन्त प्रिय है।[1]

ब्रह्म राम—इसमें राम को अमूर्त, निर्गुण ब्रह्म माना गया है। जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक तथा सर्व शक्तिमान् है।

भूमिजा नाथ—पृथ्वी से उत्पन्न होने के कारण सीता को भूमिजा कहते हैं। एक बार मिथिला के राजा जनक के राज्य में घोर दुर्भिक्ष पड़ा? उसे दूर करने को मंत्रियों के परामर्श से राजा हल लेकर जोतने चले। खेत जोतते समय जनक को एक बालिका मिली। यह कथा इस प्रकार भी बतलाई जाती है कि जनक के कोई सन्तान न थी अतः पुत्रेष्ठि यज्ञ करने के लिए पृथ्वी का परिशोधन करते समय सीता राजा जनक को प्राप्त हुई।

मखोधर राम—विश्वामित्र के साथ वन में जाकर राम ने राक्षसों से तपस्वियों के यज्ञ की रक्षा की थी।

मर्यादा पुरुषोत्तम—यह राम की यथार्थ उपाधि है क्योंकि उन्होंने अनिष्ट में अथवा कष्ट में कभी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया। अनन्त शील, सौंदर्य तथा शक्ति के स्वामी होते हुए भी प्रत्येक परिस्थिति में मर्यादोचित कार्य कर हमारे समक्ष अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया। रामायण में अनेक घटनास्थल हैं जिनसे उनकी मर्यादा का परिचय मिलता है। परशुराम को मान देकर उन्होंने विप्र वंश की मर्यादा रखी। सत्य की रक्षा के लिए राज त्याग दिया। सूर्पणखा के नाक कान कटवा स्त्री बध न करने की मर्यादा रक्खी। विभीषण को राज देकर शरणागत की रक्षा की। अन्त में सीता त्याग कर लोकाचार की मर्यादा रखी। और भी अनेक उदाहरण उनके उदात्त चरित्र से प्राप्त होते हैं।

माधवेश्वर पति राम—माधव विष्णु, उनके ईश्वर शिव, उनके स्वामी अर्थात् राम। इसमें कई देवों की एकता की भावना है। राम का उपासक विष्णु तथा शंकर में भी पूजनीय श्रद्धा भक्ति रखता है।

मानस राम—जग राम तथा जगत राम से राम का विराट् रूप विदित होता है। किन्तु

[1] बालक रूप राम कर ध्याना, कहेउ मोहि मुनि कृपा निधाना।
(काकोक्ति-रामं० उ० कां० पृ० ६६४-गुटका-गीता प्रेस)

यह नाम उनके विभुत्व का बोधक है। राम घट-घट व्यापी हैं। दूसरा आशय यह प्रकट होता है कि वे रामचरितमानस के नायक हैं।

माया राम—माया राम की शक्ति अथवा सीता जी के लिए प्रयुक्त हुआ है।

मेघू राम—मेघ के सदृश श्याम वर्ण वाले रामचद्र।

मैथिली मोहन—मिथिला में उत्पन्न होने के कारण सीता का नाम मैथिली हुआ।

याद राम—यहाँ पर उर्दू की शैली से समास किया गया है। जिसका अर्थ राम की स्मृति।

रघुकुल तिलक[1]—रामचंद्र रघुवंश में उत्पन्न हुए। रघु दिलीप के पुत्र अज के पिता तथा दशरथ के पितामह थे।

राघव दास—रघु का अपत्य राघव अर्थात् राम।

राम अयुग—इस नाम से दो भावनाएँ प्रकट होती हैं। राम कालातीत तथा अद्वैत हैं।

राम उग्रह लाल—ग्रहण से मुक्त होने को उग्रह कहते हैं। राम संसार के सब बधनो से मुक्त कर देते हैं।

राम उजाड़—यहाँ पर राम की संहार करने वाली शक्ति की ओर संकेत है उजड़े स्थान में जन्म।

राम रिच्छपाल—ऋक्ष जामवंत के लिए प्रयुक्त हुआ है जो राम के मुख्य सहायको में से थे।

रामऋतुराज कुमार—राम धार्मिक प्रवृत्ति के अतिरिक्त समय सूचक भी है।

राम कला नाथ—चंद्रमा के समान आह्लादित करने वाले राम अन्य भावना यह प्रतीत होती है कि नाम धारी का जन्म रात के समय चाँदनी में हुआ है। यह सौंदर्य का भी सूचक है। रामकला राम की माया उसके नाथ अर्थात् राम।

राम कुबेर—भक्त राम को नव निधि के स्वामी कुबेर के रूप में मानता है।

राम केदार – केदार केदारनाथ का सूक्ष्म रूप प्रतीत होता है। दो देवों में एकता की भावना। केदारनाथ तीर्थ की कोई राममूर्ति।

राम केर सिंह—केर सम्बन्धसूचक विभक्ति के प्रत्यय "का' का अवधी रूप प्रतीत होता है।[2] अथवा यह केलि (क्रीड़ा) का विकृत रूप है। राम केला एक प्रकार के केले और आम को भी कहते हैं। राम किरि एक रागिणी का भी नाम है। सम्भव है केरि कीर का अपभ्रंश हो जो तोते के अर्थ में आता है।

राम कौशल—राम की चतुरता अथवा कौशल प्रदेशीय राम।

राम खेलौना—खिलौना जिस प्रकार बच्चे को प्यारा होता है उसी तरह भक्त भगवान् का प्यारा होना चाहता है।

राम गरीब— यहाँ पर राम के दीनबंधुत्व की ओर संकेत करता है। दैन्य भाव का सूचक है।

राम चम्मन लाल—यहाँ पर दूसरी भावना यह है कि नामी का जन्म किसी बाग में हुआ है।

राम चीज सिंह—यहाँ पर चीज का अभिप्राय आभूषण के सदृश अत्यंत प्यारी वस्तु से है।

राम जोखन—यहाँ पर धार्मिक प्रवृत्ति में अंधविश्वास का सम्मिश्रण है। बच्चे को चिरंजीव बनाने के लिए प्रायः स्त्रियाँ उसे अन्न आदि से तौलती हैं।

---

[1] गीधराज सुनि आरतबानी, रघुकुलतिलक नारि पहिचानी।
(रामच० मा० अरण्य कांड)

[2] हिंदी भाषा का इतिहास पृ० १६३ (डा० धीरेंद्र वर्मा)

राम तारक—"ॐ रामायनमः" यह षडक्षर राम तारक मंत्र है जिसका जप राम के भक्त किया करते हैं। तारने वाले राम से अभिप्राय हैं।

रामपदारथ[1]—चार पदार्थ (चतुर्वर्ग)।

राम पलट—इस नाम से राम भक्ति के साथ-साथ कुछ अन्ध विश्वास का पुट भी लगा हुआ है। पहले पुत्र राम को समर्पण कर दिया और फिर पालने के लिए लौटा लिया। इसी प्रकार के राम बदल तथा राम बहोर नाम है। (दे० पार्वती प्रवृत्ति में माता बदल नाम)

राम पुरी—पुरी यहाँ दसनामी संन्यासियों के एक भेद के लिए प्रयोग किया गया है, अन्यथा राम पुरी का अर्थ अयोध्या हो जायगा।

रामबटोही—यह उस परिस्थिति की ओर ध्यान आकर्षित करता है जब रामचन्द्र ने राज्य त्याग कर वन की ओर प्रस्थान किया था।[2] नामी मार्ग में उत्पन्न हुआ है।

रामबरफसिंह—यह राम की शान्ति प्रकृति की ओर इंगित करता है। (जन्म काहिम से सम्बन्ध है।)

रामबलिहारी—राम विष्णु के अवतार हैं। इसलिए बलि को छलनेवाले मूल विष्णु के स्थान पर राम अवतार प्रयुक्त हुआ।

रामबेटी—पुत्र से पुत्री अधिक प्यारी होती है[3]। इसलिए भक्त अपने को बेटे के स्थान पर बेटी कहता है अथवा बेटा का विकृत रूप बेटी है।

रामरक्षा—राम रक्षा स्तोत्र है जिसके प्रणेता बुद्ध कौशिक ऋषि हैं। इसके पाठ से सब मनोकामना पूर्ण होती है तथा सब संकट और पाप दूर हो जाते हैं।[4]

रामराज—राम राज प्रजा के सुख तथा शान्ति के लिए प्रसिद्ध है। यह स्वर्णयुग कहलाता है। वाल्मीकि, व्यास तथा तुलसीदास ने रामराज्य[5] का बहुत सुन्दर चित्रण किया है—

---

[1] दादू सब जग नीधना धनवंता नहिं कोइ।
सो धनवंता जाणिये जाके रामपदारथ होइ॥

[2] "राजिवलोचन राम चले तजि बाप को राज बटाऊ की नाईं।"

[3] पुत्रीव हृदये हर्षं करोति। (प्रसन्न राघव।नाटक)

[4] भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम्।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेतिगर्जनम्॥

[5] बरनाश्रम निज निज धरम, निरत वेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं, नहिं भय शोक न रोग॥२०॥
दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज नहिं काहुहि व्यापा॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥
चारिउ चरन धर्म जग माहीं, पूरि रहा सपनेहु अघ नाहीं॥
रामभगति रत नर अरु नारी, सकल परम गति के अधिकारी॥
अल्प मृत्यु नहिं कवनिउ पीरा, सब सुन्दर सब विरुज शरीरा॥
नहि दरिद्र कोउ दुखी न दीना, नहि कोउ अबुध न लच्छन हीना॥
सब निर्दंभ धर्म रत पुनी, नर अरु नारि चतुर सब गुनी॥
सब गुनग्य पंडित सब ज्ञानी, सब कृतग्य नहिं कपट सयानी।
(रामचरित मानस उत्तर काण्ड)

[४] काले वर्षति पर्जन्यः सुभिक्षं विमला दिशः।
हृष्ट पुष्ट जनाकीर्णं पुरं जनपदास्तथा॥
नाकाले म्रियते कश्चिन्न व्याधिः प्राणिनां तथा॥
नानर्थो विद्यते कश्चिद्ग्रामे राज्यं प्रशासति॥
(वाल्मीकीय रामायण उत्तर काण्ड ४१ सर्ग श्लोक १२,१३)
(देखिए महाभारत शान्ति पर्व अध्याय २९ श्लोक ५२-५८)

रामवृक्ष—राम का लगाया हुआ पौधा। वृक्ष आधार को कहते हैं। इसलिए उसका अर्थ हुआ राम ही है आधार जिसका। राम वृक्ष अशोक को भी कहते हैं। तमाल वृक्ष के सदृश श्याम वर्णवाले राम। (वृक्ष-कल्पवृक्ष)

रामस्वारथ—अपना स्वार्थ संसार में सबसे अधिक प्रिय होता है। इसलिए भक्त अपने स्वार्थ की तरह प्रिय राम को समझते हैं।

रामहंस—भक्त राम को निर्गुण ब्रह्म मानता है। (देखिए हंस निर्गुण ब्रह्म में) हंस के सदृश विवेकी राम, अथवा राम का हंस (जीव)।

रामहजारी—भक्त अपने को राम के दरबार का हजारी (सहस्र सैनिकों का सरदार) समझता है।

रामहजूर—भक्त राम को हाकिम तथा अपने को सेवक मानता है।

रामहिमाचल सिंह—हिमाचल सिंह शिव का सूचक है अथवा राम हिमाचल की तरह अचल तथा अटल हैं। (हिंमाचल<हिमाचल=हिमालय)

रामोश्याम—यह उर्दू के ढंग का द्वंद्व समास है राम और श्याम।

रीमलराम—रीमल शब्द रै (धन)+मल का मिश्रित तथा विकृत रूप प्रतीत होता है।

लवकुशराम—राम के लव तथा कुश दो पुत्र थे जो बाल्मीकि ऋषि के आश्रम में पैदा हुए थे।

शिलानाथप्रसाद—यहाँ पर शिला का अर्थ पत्थर की अहिल्या से प्रतीत होता है जिसको राम ने अपने चरण-स्पर्श से पुनः स्त्री रूप दे दिया था। (शिव की प्रस्तर मूर्ति)

सुग्रीवपति—बन्दरों के राजा बालि का अनुज जिसे राम ने बालि को मारकर किष्किंधा का राजा बनाया। इसलिए यह नाम राम का वाचक है।

सेतुराम—लङ्का जाते समय राम ने नल-नील आदि बानरों की सहायता से समुद्र पर एक पुल निर्माण किया था जो सेतु-बंध रामेश्वरम् के नाम से विख्यात है। (भवसागर के सेतु—राम)

हरिनाथ राम—विष्णु का अवतार होने से राम को हरि भी कहते हैं अथवा हरि का अर्थ बंदर जो राम के आश्रित थे। सुग्रीव या हनुमान की ओर संकेत है।

हरेराम, होराम—हरे तथा हो विस्मयादि बोधक अव्यय हैं जो किसी व्यक्ति को सम्बोधित करने के लिए व्यवहृत किये जाते हैं। राम संकीर्तन की सूचना देता है।

होरिलराम—होरिल का अर्थ नवजात शिशु है। राम का बालरूप भक्त को अधिक प्रिय है।

४—"समीक्षण"

राम-कथा का अत्यन्त सुन्दर स्वरूप इस संकलन में प्रतिबिम्बित हो रहा है। रामायण की कोई घटना, कोई प्रसङ्ग छूटने नहीं पाया है। ऐसा प्रतीत होता है कि मर्यादापुरुषोत्तम राम के अलौकिक चरित्र पुस्तक के पृष्ठों से उछट-उछटकर नामरूप से भारत के कोने-कोने में व्याप्त हो गये हैं। पूर्वकाल में अनेक रामायणों की रचना हुई, साम्प्रत् भी अनेक रामचरित निर्मित हो रहे हैं। विजया-दशमी की रामलीला का अवलोकन प्रतिवर्ष करते हैं। यह हमारे क्षणिक मनोरंजन का साधन है, पर्व के समाप्त होने पर घटना एवं प्रभाव भी आँखों से ओझल होने लगता है। परन्तु यह जंगम सजीव रामायण अत्यन्त विलक्षण है—अमर है। चिरकाल से इसकी अविरल धारा बहती आई है तथा चिरकाल तक इसी अविच्छिन्न रूप से बहती रहेगी। प्रतिक्षण नेत्रों के सम्मुख उदधि-ऊर्मियों के सदृश कथा का कोई न कोई पात्र आता जाता रहता है। कोई न कोई घटना घटित होती रहती है। कोई न कोई चरित्र चित्रित होता रहता है, किसी न किसी लीला का अभि-

नय होता ही रहता है। किसी न किसी प्रसंग के कथोपकथन एवं उपदेश का तारतम्य चलता ही रहता है। रामदास (हनुमान) गये, बालजीत (राम) आये, रामचरित्र कथा-पाठ करते हैं, रामविजय के घर आनंदोत्सव मनाया जा रहा है। यही चर्चा नित्य प्रति होती रहत है। राम बालक उच्चारण करते ही राम का सरल सलोना शिशुपन हँसता हुआ सम्मुख आ जाता है, सम्पूर्ण बाल लीलाएँ क्रीड़ा करने लगती हैं। राम सार्थक शब्द है, सबका प्रिय है एव सर्वत्र व्याप्त है। नामों में भी वह उसी प्रकार रम रहा है, रामलगनराम की लगन को देखिए, आदि में भी राम, अंत में भी राम। 'राममगनराम' भी इसी में मग्न हैं। इससे स्पष्ट है कि भारतीय जीवन राममय हो गया है।

हिन्दू धर्म राम को तीन रूपों में देखता है, अमूर्त, निगुंण भावना से वह ब्रह्म है, देवरूप से से वह त्रिदेव के विष्णु हैं, तथा नररूप में वह नारायण के अवतार हैं जो इस मेदिनी पर मानव लीलाएँ करते हैं। अवतारी राम का कैसा सुन्दर स्वरूप इन नामों में जगमगा रहा है।

राम कौशलाधीश राजा दशरथ के पुत्र हैं। सरयू के तट पर अयोध्या उनकी राजधानी है, उनकी माता का नाम कौशल्या है। लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, उनके अनुज हैं। वशिष्ठ कुलगुरु तथा सुमंत वृद्ध सचिव हैं। विश्वामित्र से अस्त्र शस्त्र की दीक्षा ली, मिथिला के राजा जनक की पुत्री सीता के साथ उनका पाणिग्रहण हुआ। अपने प्रवास-काल में बहुत दिन चित्रकूट में व्यतीत किये, मार्ग में अनेक ऋषि-मुनियो से भेट की। "पंचवटी सिंह" ने शूर्पणखा की समस्त कथा कह सुनाई। हनुमान से उनका प्रथम परिचय वन में हुआ। तदनन्तर वानर राज बालि को मारकर सुग्रीव से मित्रता की। रामेश्वर के समीप समुद्र पर सेतु बनाकर लंकेश रावण पर विजय प्राप्त की। राम अवध को लौट आये और समस्त प्रजा ने बड़े समारोह के साथ विजयोत्सव मनाया। राम सिंहासनस्थ हुए तथा जनता "रामराज्य" का आनन्द लूटने लगी।

इस संकलन की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं—प्रथम यह है कि राम के सदृश व्यापक शब्द किसी अन्य देव प्रवृत्ति में दृष्टिगोचर नहीं होता है। १०५४ नामों में से ८४८ नाम केवल राम के योग से ही रचे गये हैं। शिव तथा कृष्ण सम्बंधी बृहत् अभिधान संग्रहों में भी यह गौरव किसी नाम को प्राप्त नहीं हुआ। यह तो हुई मूल प्रवृत्ति के राम की बात। गौण प्रवृत्ति द्योतक शब्द-सूची पर दृष्टि डाली जाय तो वहाँ भी राम का राज्य दिखलाई देता है। कोई प्रवृत्ति राम से रिक्त नहीं। निकृष्ट से निकृष्ट नाम के साथ भी राम लगा हुआ है। उसे किसी से घृणा नहीं, समदर्शी के सदृश ऊँच-नीच की कोई भेद-भावना नहीं। घूरेराम, घसीटेराम, घिनऊराम के साथ भी और शिवराम, आदित्यराम, गोविंदराम के साथ भी।

ये नाम राम के गुणों के आगार हैं। वे स्वभाव से सौम्य तथा शांत हैं। घटना-विशेष पर वही कोमल वृत्तिवाले राम सीता जी को परित्याग करते समय निठुर राम बन गये। समुद्र की अवज्ञा पर उन्होंने उग्र रुद्ररूप धारण कर लिया। मदन से सुंदर एवं कुवेर के सदृश धनी हैं। बल-वैभव-सम्पन्न एवं सत्यसन्ध हैं, शील के सागर है, सुख में अथवा दुख में, कष्ट में अथवा अनिष्ट में, किसी दशा में वह सन्मार्ग अथवा न्याय-पथ से विचलित नहीं होते। उनका चरित्र लोक-कल्याण की भावना से ओतप्रोत है। लोक रीति का कभी व्यतिक्रमण नहीं करते तथा वेद-मर्यादा का पालन कर हमारे सम्मुख मानव-धर्म का एक उच्च आदर्श रखते हैं, इसीलिए उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। यही कारण है कि "रामराज्य" स्वर्णयुग का प्रतीक समझा जाता है जिसे महात्मा गांधी भारत बर्ष में पुनः स्थापित करना चाहते थे। संक्षेप में, राम का उदात्त चरित सर्वथा, सर्वदा तथा सर्वत्र 'सत्यं शिवं सुन्दरं' है।

भगवान तथा भोलानाथ के सदृश राम के भी अनेक विकृत रूप पाये जाते हैं। राम जैसा छोटा शब्द होते हुए भी जनता ने स्नेह के वशीभूत, मुख सुख के लिए, सरल स्वभाव के कारण या अन्य सुविधा के विचार से उसके अनेक रूपांतर कर लिये हैं। राम के पर्याय वाचक शब्दों की सीमित संख्या होने से गौण प्रवृत्ति में पूरक शब्दों का बाहुल्य हो गया है। यह इसकी विशेषता है जो शिव-कृष्णादि अन्य देवों में नहीं पाई जाती। राम के योग से निर्मित बहुसंख्यक नामों की एक ऐसी बृहत् दिव्य माला, अभि-ग्रथित है जो राम नाम की महिमा सूचित करती है। राम के अतिरिक्त अधिकांश नाम उनके पूर्वज रघु, धर्मपत्नी सीता तथा जन्मभूमि अवध से सम्बन्ध रखते हैं। कुछ नाम उनके सात्विक गुणों से भी बने हैं। अवध के समीपवर्ती प्रांतों में कुछ ऐसे नाम भी पाये जाते हैं जिनके आदि तथा अंत में राम शब्द व्यवहृत हुआ है। पश्चिम में इस शैली का अभाव है। व्रज के आस-पास कभी-कभी कृष्ण के दो नामों को संयुक्त कर देते हैं। यथा कृष्ण गोपाल, गोपाल कृष्ण, श्याम कृष्ण। परन्तु राम छबीले राम के सदृश नाम नहीं मिलते। सामान्य जनता राम में लाल, प्रसाद, दास आदि साधारण शब्द लगाकर ही संतुष्ट हो जाती है। एकाकी शब्द केवल ११ हैं जिनमें राम तथा उसके विकृत रूपों की संख्या भी सम्मिलित है, शेष दो नाम रघु से सम्बंध रखते हैं। मूल प्रवृत्ति की अपेक्षा गौण प्रवृत्ति में, अरबी, फारसी भाषा के पर्याप्त शब्द हैं, इससे यह रोचक निष्कर्ष निकलता है कि ये नाम उन राम भक्तों के हैं जिनके परिवार में उर्दू, फारसी, का पठन पाठन प्रचलित है। इससे राम की लोकप्रियता का रूप और भी उज्ज्वल हो जाता है। वस्तुतः राम सा सर्वप्रिय अन्य नाम संपूर्ण अभिधान संग्रह में भी नहीं दिखलाई देता।

कृष्ण

१—गणना

(क) क्रमिक गणना—

(१) नामों की संख्या—१६४२
(२) मूल शब्दों की संख्या—५१०
(३) गौण शब्दों की संख्या—४०८

(ख) रचनात्मक गणना—

एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम,	चतुष्पदी नाम,	पंचपदी, नाम	योग
५४	८९३	६१६	७०	६	१६४२

कृष्ण के प्राप्त प्रमुख नामों में न्यूनाधिक संख्या की दृष्टि से यह क्रम पाया जाता है—लाल ३१८ कृष्ण २४०, विहारी १३४, श्याम ११३, मोहन १०३, किशोर ६६, गोपाल ५६, कुमार ४३, गोविंद ४१।

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द :—

(१) एकाकी—कँधई, कँधैया, कन्हई, कन्हैया, कहान, कां, कांत, काना कान्ह, कान्हा काहन, किशन, किशुन, किशुनाई, किशोर, किस्सू, कुंजी, कुँवर, कुमार, कृष्ण, केश, केशव, केशी, केशो, कोलाहल, खान, गिरधर, गिरधारी, गिरिधारी, गिल्लू, गोपाल, गोपालक, गोली, गोलैया, गोविंद, जनार्दन, जादव, जादों, ठाकुर, दुखछोर, दुख भंजन, दुख हरण, नन्दन, नागर, नारायण,

बंदी, बंदू, बंसिया, बंसू, विट्ठल, बिहरिया, बिहारी, भगदू, भगन, भगन्ना, भगवान, भगोला, भगोले, भगौने, भग्गन, भग्गल, भग्गा, भग्गू, मकुंद, मट्ठकधारी, मधई, मधवा, मधुवनधर, मधुसूदन, मनोहर, माथुर, मुकुंद, मुकुंदी, मुकुट धर, मुकुटधारी, मुरलीधर, मुरहू, मुराहू, मोहन, यमुनाधर, यादव, रंग, रंगी, रंगू, रणछोर, रनछोर, लाल, लालधर, लीलाधर वंशीधर, वल्लभ, विहारी, श्याम, श्यामल, सांवरिया, सांवर, सांवल, सांवलिया, सांवली, सांवले, सुन्दर, सुनील, हरि।

(२) समस्तपदी—अति सुन्दर स्वरूप, अनंग मोहन, अनूप देव, अनूप शाह, अभिराज राय, अहिवरण, आनन्द कंद, आनंद घन, आनंद चंद, आनंद नारायण, उग्र-मोहन, उत्तम स्वरूप, उद्धव राम, कामिनी मोहन, काली मर्दन, किशोरी चंद्र, किशोरीचंद, किशोरीनंदन, किशोरी पति, किशोरी मोहन, किशोरी रमण, किशोरी वल्लभ, कुंज किशोर, कुंज नारायण, कुंज रमण, कुंज लाल, कुंज विहारी, कुंजनसिंह, कुंजीलाल, कोबरनशाह, गिरिराजविहारी, गिरिराज स्वामी, गिरिवरधारी, गीताराम, गूजरमल, गोकुलचंद, गोकुल नारायण, गोकुलराम, गोकुलराय, गोकुलसिंह गोकुलानंद, गोकुलेश, गोधनसिंह, गोपचंद, गोपानंद, गोपीकांत, गोपीनंदन, गोपीनाथ, गोपीनारायण गोपीमोहन, गोपीरमण, गोपीराम, गोपीवल्लभ, गोपीशरण, गोपेंद्र, गोपेश, गोपेश्वर, गोरधनसिंह, ग्वालमोहन, ग्वालशरण, घनदयाल, घनराम, घनश्याम, घनसिंह, घनानंद, छविनाथ, छविप्रकाश, छविराज, छविसागर, जगतनंदन, जगतमोहन, जगतविहारी, जगदर्शन, जगदानंद, जगदीप, जगदीश, जगदेव, जगनंदन, जगन लाल, जगन्नाथ, जगपाल, जगमल, जगमूरत, जगमेर, जगमोहन, जगरदेव, जगरनाथ, जगराज, जगवल्लभ, जगवीर, जगारदेव, जदुनंदन, जदुनाथ, जदु प्रसाद, जदुराज, जदुवंशसहाय, जदुवीर, जनानंद, जमुनानाथ, जमुनानारायण, जमुनालाल, जसोदानंद, जसोदानंदन, जुगलकिशोर, जुगलविहारी, जुगललाल, जुगुलकिशोर, जुगुलचंद, जोगराज, जोगेंद्र त्रिभुवननाथ, त्रिभुवनप्रकाश, त्रिभुवनप्रताप, त्रिभुवनप्रसाद, त्रिभुवनबहादुर, त्रिभुवनराय, त्रिभुवनविहारी, त्रिभुवनशरण, त्रिभुवनसिंह, त्रिभुवनसुख, त्रिभुवनानंद, त्रिमाल त्रिलोकचंद्र, त्रिलोकभास्कर, त्रिलोकराय, त्रिलोकसिंह, त्रिलोकीसिंह, दधिराम, दानविहारी, दामवर, दामोदर दुनियालाल, देवकीनन्दन, देवकीलाल, द्वंदविहारी, द्वारकेश, द्वारिकाधीश, द्वारिकानाथ, द्वारिकाबहादुर, द्वारिकाराम, द्वारिकासिंह, द्वारिकेश, नंदकिशोर, नन्दजीराम, नन्दजीराय, नन्दजीलाल नंद रूप, नन्दलाल, नन्द वल्लभ, नटवर, नवनीत नारायण, नवनीतराय, नवलबहादुर, नारायण, नितवरणसिंह, नीरदवरण, नृतविहारीलाल, पटवर्धन, परमाराय, पार्थेश्वर, पीतांबर, पुरुषोत्तम, पुलिनविहारीलाल, प्रपन्ननाथ, प्रसन्ननाथ, प्रियाकांत, प्रियानन्द, प्रियासहाय प्रियेंद्र, बंदीछोर, बंसूसिंह, बनवारी, बलकांत, बलवीर, बसदेवकीनन्दन, बसवानन्द, बासदेव, बिंदाराम, बिंदेविहारी, बिजनू, बृजराज, ब्रिजभूषण, भक्तीश, भुवनमोहन, भूकरन, मक्खनसिंह, मणींद्र, मथुरानन्द, मथुरानन्दन, मथुरामणि, मथुराराम, मथुरासिंह, मथुरेश, मधुबनधर, मनमोद नारायण, मनमोहन, मनरूप, मनहरण, मनोरंजन, माठूराम, माधव, माधुरीमोहन, माधुरी-रमण, मीराराम, मुकुटबल्लभ, मुकुटेश्वरीमोहन, मुरलीसिंह, मुरारी, मेघवरण, मेघश्याम, मेघसिंह, मोरमुकुट, मोहनीमोहन, यदुचरित्रसिंह, यदुनन्दन, यदुनाथ, यदुप्रसाद, यदुराज, यदुलाल, यदुवंशभूषण, यदुवंशराय, यदुवंशलाल, यदुवंशशरण, यदुवंशसहाय, यदुवीर, यमलार्जुनसिंह, यशोदानन्द, यशोदानन्दन, यादवेंद्र, युगलकिशोर, युगलनाथ, युगलनारायण, युगलसिंह, योगेंद्र, योगेश्वर, रंगदास, रंगनाथ, रंगनारायण, रंगप्यारे, रंगबहादुर, रंगलाल रंगविहारी, रंगसिंह, रंगेश, रंगेश्वर, रमणीमोहन, रहसविहारी, रहस्यविहारी, राधामणि, राधारंजन, राधारमण, राधाराम, रारावल्लभ, राधाविनोद, राधासहाय, राधिकानन्दन, राधिका

नारायण, राधिकारमण, राधेनाथ, राधेमोहन, राधेरमण, राधेराम, राधेलाल, राधेश्वर, रासविहारी, रुकमिनराय, रूपकांत, रूपचंद्र, रूपनसिंह, रूपनाथ, रूपनारायण, रूपबहादुर, रूपरत्न, रूपराज, रूपसिंह, रूपेंद्र, ललितचंद्र, ललितमोहन, ललितविहारी, ललितसिंह, ललितारमण, ललिताराय, ललीराम, लाड़िलीमोहन, लालमणि, लालमन, लालमुनि, लीलपट (ड़), लीलांवर, लीलाधर, लीलानन्द, लीलानिधि, लीलापति, लीलाराम, लीलावर, लोकानन्द, वनमाली, वनविहारी, वल्लभरसिक, वल्लभराम, वासुदेव, विदुरनाथ, विपिनचंद्र, विपिनविहारी, विश्वप्रिय, विश्वमोहन, विश्वरंजन, विश्वरूप, वृंदवहादुर, वृंदानारायण, वृंदावनविहारी, वृंदावनसिंह, व्रजइकवालसिंह, व्रजकात, व्रजचंद्र, व्रजनन्द, व्रजनन्दन, व्रज नागर, व्रजनाथ, व्रजनायक, व्रजनारायण, व्रजपति, व्रजपाल, व्रजबहादुर, व्रजभान, व्रजभुवनसिंह, व्रजभूषण, व्रजमंगल, व्रजमुकुट, व्रजमोहन, व्रजरत्न, व्रजराज, व्रजराम, व्रजलाल, व्रजवंश, व्रजवल्लभ, व्रजवासी, व्रजविलास, व्रजवीर, व्रजस्वामी, व्रजानन्द, व्रजेंद्र, व्रजेश, व्रजेश्वर, शोभानाथ, शोभापति, श्यामवरण, श्यामाकात, श्यामादेव, श्यामान द, श्यामापति, श्यामारमण, श्यामाराम, श्यामासिंह, श्यामेंद्र, श्यामेश्वरी, श्यामोराम, श्री रंग, श्रुतिवंधु, सकल देव, सकल-नारायण, सखीचंद, सखीराम, सखेश, सर्वेश, सदारंग, सदाविहारी, सव लायक राय, सर्व जीत, सुदामा राम, सुदामा राय, सुफलक सिंह, सुमनविहारी, स्वरूपचंद, हरिकेश, हरिवंशवर, हरि वंशभूषण, हरिवशराय, हरिवंशलाल, हरिवंशसहाय, हरिवंश सिंह, हृषीकेश।

ख—मूल शब्द :—

(१) रचनात्मक—इस प्रवृत्ति में कृष्ण के (अ) गुण (आ) रूप, (इ) लीला अथवा चरित, (ई) धाम, (उ) उपपद तथा (ऊ) सम्बन्ध बोधक नाम मिलते हैं। व्रज के योग से १११ नामो की रचना हुई है। इससे उनका मातृभूमि के प्रति अलौकिक अनुराग प्रदर्शित होता है यही कारण है कि भक्तजन व्रज का बड़ा माहात्म्य वर्णन करते हैं। इतने नाम किसी अन्य तीर्थ के नही आये हैं।

(२) पर्यायवाचक शब्द :—

(१) राधा—कामिनी, किशोरी, गोपी, प्रिया, माधुरी, मोहनी, रमणी, राधा, राधिका, लली, लाड़िली वृन्दा, श्यामा, सखी।

(३) विकृत शब्दों के शुद्ध रूपः—

(१) कृष्ण के रूपांतर—कंधई, कंधैया, कन्हई, कन्हैया, कहान, का, काना, कान्ह, कान्हा, काहन, किशन, किशुन, किशुनाई, किस्सू, खान।

(२) भगवान के रूपांतर—भगदू भगन, भगोला, भगोले, भगौने, भग्गन, भग्गल, भग्गा, भग्गु।

(३) मुरहा के रूपांतर—मुरहू, मुराहू।

(४) श्याम के रूपांतर—शामल, श्यामल, श्यामो, सांवरे, सांवल, सांवलिया, सांवली, सावले।

विकृत या विकसित रूप	तत्सम रूप
कांजी	कान्ह (कृष्ण) जी
कुँअर, कुँवर, कुमर	कुमार
केशों	केशव
कोबरन	कुवर्ण
गिरधारी	गिरिधारी
गिर्राज	गिरिराज
गिल्लू, गोलैया	गोली
जादो	यादव
जुगींद्र	योगींद्र
जोग	योग
जोगेंद्र	योगेंद्र
ठकुरी	ठक्कुर
नौनी, नौनीत	नवनीत
बंदू	बंदी
बंधन	बंधु
बंसिया, बंसू	वंसी
बनवारी	वनमाली
बसुदेव	वसुदेव
बिंदा, बिंदे	वृन्दा
बिजनू	ब्रजनाथ या ब्रज नारायण
बिहरिया, बिहारी	विहारी
बृज, ब्रिज	ब्रज
भूकरन	भूकरण
मंजू	मंजु
मट्ठकधारी	मुकुटधारी
मधई, मघवा	माधव
माठू	माठ
रंतू	रति या रमण
राधे	राधा
रुकमिन	रुक्मिणि
ब्रजपतेश	ब्रजपतीश
श्याम बरन	श्याम वर्ण

(४) विजातीय प्रभाव :—निम्न-लिखित शब्द मुसलिम संस्कृति के संसर्ग से प्राप्त हुए हैं:—इकबाल (अ०); नेवाज (फा०); बक्स (फा०); बहादुर (फा०)। इतने बृहत् संग्रह में केवल चार शब्द ही विजातीय हैं इससे नगण्य प्रभाव ही व्यंजित होता है।

(५) बीज कथा :—

पिता	वसुदेव
माता	देवकी
भ्राता	बलराम
पालक	नंद-यशोदा
सहपाठी	सुदामा
सखा	उद्धव ग्वाल
स्त्री	रुक्मिणि, सत्यभामा
प्रेयसी	राधा
जन्मस्थान	मथुरा
विहारस्थल	ब्रजभूमि
वाद्य	मुरली
आभूषण	माला, मुकुटादि
ग्रंथ	गीता
मित्र	अर्जुन
राजधानी	द्वारका
रूप	मेघवरण, श्याम सुन्दर
लीला	काली मर्दन, गिरि-धारण, कंस निकंदन, मधुपुर-विध्वंसन आदि
भक्त	मीरा, वल्लभ, विदुरादि

ग—मूल शब्दों की निरुक्ति :—

अति सुंदर स्वरूप—यह श्रीकृष्ण के शारीरिक सौंदर्य की ओर संकेत करता है। वे इतने रूपवान हैं कि कामदेव भी उनकी सुन्दरता पर मुग्ध हो जाता है।

अभिराज राज—अभिराज सुन्दर के अर्थ में आता है। सबसे अधिक सुन्दर से तात्पर्य है

अहिबरण—अहि का अर्थ मेघ, सर्प तथा राहु है जिनके वर्ण कृष्ण हैं।

आनन्द कंद—आनन्द घन—कंद तथा घन का अर्थ बादल है। कृष्ण भगवान मेघ के सदृश आनन्द की वर्षा करते हैं।

उद्धव राम—उद्धव कृष्ण के सम्बन्धी थे। यह कृष्ण का संदेश लेकर गोपियो को निर्गुण ब्रह्म का ज्ञान समझाने गये थे। किन्तु गोपियों की अत्यंत विरहासक्ति के कारण वे अपना सारा ज्ञान भूल गये।

कांत—इसका अर्थ सुन्दर, स्वामी तथा कृष्ण होता है। यह नाम उनकी सुन्दर आकृति एवं प्रकृति का द्योतक है।

काली मर्दन—कालिय नाग अपनी नागिनियों के साथ जमुना में रहता था। वह नगर-निवासियों को अत्यंत कष्ट देता था। एक दिन गेंद निकालने के लिए श्री कृष्ण जमुना जी में कूद पड़े। ग्वालों ने देखा कि वे उसके फन पर नाच रहें हैं। कृष्ण के आदेशानुसार वह नाग वहाँ से अन्यत्र चला गया।

कुंजी—यह नाम कुंजविहारी अथवा कुंजलाल का संक्षिप्त रूप है।

कृष्ण—श्यामल वर्ण होने के कारण यह नाम पड़ा।

केशी—यह कृष्ण का एक नाम है। इस नाम का एक राक्षस भी था जिसको श्री कृष्ण ने मारा था। इस अवस्था में यह शब्द केशी-मर्दन या केशी सिंह का संक्षिप्त रूप होसकता है।

कोलाहल[1]—यह व्यंग्यात्मक नाम प्रतीत होता है।

खान—यह शब्द कान्ह से विकृत होता हुआ क्रमशः पश्चिम में काहन—कहान—खान हो गया।

गिरधर—गिरिराजस्वामी—एक बार इंद्र ने अपनी पूजा बंद होने पर कुपित हो मेघों को आज्ञा दी कि मूसलाधार जल बरसाकर ब्रज को डुबा दो। उस समय कृष्ण ने गोवर्धन (गिरिराज) पर्वत को उँगली पर उठा लिया और उसके नीचे समस्त ब्रजवासी तथा गोवृंदों ने आश्रय लिया।

गूजरमल—गूजर (ग्वाला) + मल (श्रेष्ठ) = कृष्ण।

गोविंद—गो का अर्थ इंद्रिय तथा विद का अर्थ दमन अथवा जीतना अर्थात् इंद्रिय-जित कृष्ण

गोली[2]

ग्वाल शरण—ग्वालों के आश्रय अर्थात् कृष्ण अथवा ग्वाल गोपाल के सदृश कृष्ण के लिये प्रयुक्त हुआ हो।

घनदयाल—घनानन्द—इन नामों में घन अतिशय के अर्थ में है।

घनश्याम—मेघ के समान श्याम वर्ण वाले कृष्ण।

जर्नादन—लोक को विनष्ट करने वाले कृष्ण।

जसोदानंद—गोकुल के नन्द की पत्नी का नाम जसोदा (यशोदा) था जिनके यहाँ कृष्ण बलराम पले थे।

जादव—यदुवंशी होने के कारण श्री कृष्ण जादव (यादव) कहलाये।

जुगलकिशोर—दोनों भाइयों में आयु में कृष्ण बलराम से छोटे थे।

---

[1] कोलाहलो हली हाली हेली हलधर प्रियः।

(गोपालसहस्र नाम पृ० ४४)

[2] मिली हिली गिली गोली गोलो गोलालयो गुली (वही पृ० ६७-६८)

ठकुरी—यह शब्द ठक्कुर अर्थात् देव या स्वामी के अर्थ में आता है। ठाकुर भी इसी का रूपांतर है।

दामवर—दामलाल—दाम माला के अर्थ में आता है कृष्ण की वैजयंती माला गले से पैरों तक लटकती थी।

दामोदर—"दाम उदर में बंधा इसी से दामोदर प्रभु कहलाए (हरिऔध)। एक बार यशोदा ने रिस होकर रस्सी से बाँधकर दूध चलाने की थूनी से कृष्ण को जकड़ दिया। उन्होंने एक ही झटका में उसको उखाड दिया। यशोदा रई लेकर पीछे दौड़ी तब वे बाहर निकल भागे। वह थूनी दो पेड़ों में उलझ गई जिससे वे दोनों उखड़ गये। वास्तव में ये यमलार्जुन वृक्ष कुबेर-पुत्र नलकूबर तथा मणिग्रीव थे जो नारद के अभिशाप से उद्भिज्ज योनि को प्राप्त हुए और कृष्ण के स्पर्श से शापमुक्त हुए।

देवकीनंदन—श्री कृष्ण की माता का नाम देवकी है।

द्वारिकेश—मथुरा को त्याग कर कृष्ण ने द्वारका को अपनी राजधानी बनाया।

नंदकिशोर—ग्वालों के नायक नन्दजी गोकुल में रहते थे। इनके वहाँ कृष्ण का लालन-पालन हुआ था।

नंदन इसका अर्थ आनन्द देनेवाला है, यह पुत्र के लिए भी प्रयोग किया जाता है। कृष्ण का एक नाम है।

नटवर, नृत्यबिहारी लाल, रंगी—नटवर का अर्थ नृत्य तथा नाट्य कला में अत्यन्त प्रवीण मनुष्य, रंगी का अभिप्रायः भी यहीं हैं।

नवनीत नारायण—नवनीत मक्खन को कहते हैं जो कृष्ण को बहुत प्यारा था और जिसके कारण बचपन में गोपियो के उलाहने तथा यशोदा की भर्त्सना सहनी पड़ी। यहाँ तक कि व्यंग्य से मनुष्य उन्हें माखन चोर भी कहने लगे।

नितवरण सिंह—काला रंग पक्का होता है इसलिए उसको नितवरण कहा है। कृष्ण का रंग श्याम मेघ के सदृश था।

पटवर्धन[१]—यह शब्द वस्त्र को बढ़ानेवाले कृष्ण के अर्थ में आता है। कौरवों की सभा में दुर्योधन के आदेशानुसार दुश्शासन द्रोपदी की साड़ी उतार कर उसे नग्न करने का प्रयत्न करने लगा उस समय द्रोपदी ने भगवान से प्रार्थना की तो वह वस्त्र बढ़ता ही गया और दुश्शासन खींचते-खींचते थक गया।

---

[१] एक कवि ने इस घटना का बड़ा सुंदर चित्रण किया है।
पाइ अनुशासन दुशासन कै कोपि धाये
द्रुपद सुता के गहे चीर भीर भारी है।
भीषम करण द्रोण बैठे तहँ धनुधारी
कामिनी की ओर काहू नेक न निहारी है।
सुनत पुकार धाये द्वारिका ते जदुराई
बाढ़त दुकूल खैंचे भुजबल हारी है।
नारी बीच सारी है कि सारी बीच नारी है
कि नारी ही की सारी है कि सारी ही की नारी है॥

पार्थेश्वर—पृथा के पुत्र पार्थ अर्थात् अर्जुन उनके ईश्वर कृष्ण। अर्जुन कृष्ण के भक्त तथा मित्र थे।

बनवारी—वनमाली—वनमाला का धारण करनेवाला वनमाली अर्थात् कृष्ण।

बसदेवकी नन्दन—देव देहरी दीपक न्याय से वसुदेव तथा देवकी दोनों से सम्बन्ध रखता है। वसुदेव और देवकी के पुत्र अर्थात् कृष्ण।

मधुसूदन—मधु दानव को मारने के कारण विष्णु को मधुसूदन कहते हैं। विष्णु के अवतार होने से कृष्ण को भी लोग इसी नाम से पुकारने लगे। मधु की चरबी (मेद) से यह पृथ्वी बनी इसलिए इसको मेदिनी कहते हैं। कृष्ण विष्णु के पूर्णांश अवतार माने जाते हैं इसलिए दोनों में कोई अंतर न मानकर अनेक नाम दोनो के लिए प्रयुक्त होते हैं।

मधुवनधर—यमुना नदी के तट पर मथुरा के पास मधुवन नाम का एक वन था जिसमें कृष्ण विहार किया करते थे। मथुरा का नाम भी मधुवन है।

माधुरी मोहन—अत्यंत सुन्दर होने के कारण राधा को माधुरी कहा गया है, उनके मोहने वाले कृष्ण हैं।

मीराराम—भक्त मीराबाई मेवाड़ के महाराणा भोज की स्त्री थीं जो कृष्ण की अनन्य उपासिका थीं। उनका यह भजन बहुत प्रसिद्ध है। "मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई।"

मुरहू, मुराहू—मुर दैत्य को मारने वाले कृष्ण।

रंगनाथ, रंगी—देखिये नटवर।

रणछोर—मगध के राजा जरासंध से युद्ध करते हुए नीतिनिपुण कृष्ण रण छोड़कर भाग गये थे। इसीलिए उनका यह व्यंग्यात्मक नाम पड़ा।

रहस्यविहारी, रास बिहारी—रहस्य या रहस, निर्जन स्थान, गुप्त भेद या हंसी ठट्ठा के अर्थ में आता है। यह नाम कृष्ण का इसलिए पड़ा कि वे गोपियों के साथ रास (क्रीडा या नृत्य) लीला किया करते थे।

लाल—पुत्र अथवा छोटे प्रिय बालक के अर्थ में आता है। यह कृष्ण के प्यार का नाम है।

लाल मणि—यह एक प्रकार का तोता है जिसका शरीर लाल, डैने हरे, चोंच गुलाबी और पूँछ काली होती है। कृष्ण का यह प्यार का नाम है।

लीलाधर—विविध लीलाओं के करने के कारण कृष्ण को लीलाधर कहते हैं।

विपिन विहारी[1]—वन में विहार करने वाले कृष्ण।

वृन्दबहादुर—वृन्दा राधिका जी का नाम है यह वृन्दावन का संक्षिप्त रूप भी है। यह नाम कृष्ण का द्योतक है।

सखीचंद—(१) सखी संप्रदाय वाले कृष्ण को अपना प्रेमी मानकर उपासना करते हैं (२) गोपियाँ जो कृष्ण तथा राधिका की सखियाँ[2] थीं।

साँवलिया—श्याम वर्ण कृष्ण के लिए आया है।

सुदामाराम—सुदामा कृष्ण के बालसखा थे जो सांदीपनि के गुरुकुल में उनके सहपाठी थे।

सुनील—श्याम वर्ण

---

[1] मेरा जन्म राबर्टगंज (मिर्जापुर) के जंगल में हुआ। बचपन में मुझे लोग जंगलिया कहते थे, बड़े होने पर मैंने जंगलिया के स्थान पर बिपिनविहारी नाम रख लिया। (विपिन विहारी)

[2] राधा की आठ सखियाँ—ललिता; विशाखा, चम्पकलता, रंग देवी; चित्रलेखा, इन्दुलेखा, सुदेवी और तुङ्गविद्या।

हरवंश—हरिवंश पुराण महाभारत का परिशिष्ट है जिसमें कृष्णचरित का वर्णन है। कृष्ण का वंश।

हृषीकेश—यह नाम हृषीक (इंद्रियाँ) + ईश से बना है। कृष्ण को इसलिए कहते थे क्योंकि वे जितेंद्रिय योगेश्वर थे।

(घ) गौण शब्द

वर्गात्मक—(अ) जातीय—राय, शाह, साहु, सिंह, सिनहा।

(आ) साम्प्रदायिक—गिरि।

सम्मानार्थक :—

(अ) आदर-सूचक—जी, जू, बाबू, श्री, श्रीमन्, साहब।

(आ) उपाधिसूचक—आचार्य, लाल।

(३) भक्तिपरक—अखिल, अचल, अजय, अटल, अतींद्र १, अतुल, अधीन, अनन्त, अनादि, अनुज, अनूप, अनूपी, अनोखे, अपूर्व, अभय, अमृत. अमरेंद्र, अलख, अवतार, अविनाश, असित २, आदित्य, आधार, आनन्द, आमोद, इंद्र, इकबाल, उत्तम, औतार, कन्त, कमल, कर्ता, कात, काति ३, कामिनी, किंकर, किरण ४, किशोर, कोर्ति, कुँवर ५, कुमार, कृपाल, कृष्ण, केवल, खेलावन, गताश्रम ६, गति, गिरिराज, गीत, गीतम ७, गीता, गुणी, गुलाल ८, गो, गोधन, घन, चंद, चंदन, चंद्र, चक्रधारी ६, चतुर, चतुर्भुज १०, चरण, चरित, चरित्र, चित्र, चितरंजन ११, चूड़ामन १२, चैन, चोखे १३, छगन १४, छैल १५, जगत् विहारी, जगदीप, जगदीश, जगदेव, जगनन्दन, जगतपाल, जगरोशन १६, जगवश जगवंत, जदु (जदुनन्द), जयकरण, जितेंद्र १७, जीत, जीवन, ताज, तृप्ति १८, तेज, त्रिभुवन, त्रिमोहन १६, दत्त, दया, दयाल, दयावंत, दान, दाम २०, दास, दीन, दुलार, दुलारे, द्वंद २१, देव, धर २२, धीरेंद्र २३, धूमविहारी २४, धेनु, ध्यान, ध्रुव २५, नन्दन, नटवर, नरेश, नवजादिक २६, नवनीत २७, नवल २८, नवीन, नाथ, नारायण, निठुर, नितई २६, नित्य, निवाज (पालक), निर्भय, नीत, नील, नैनी ३०, नौनी, नौनीत, नृत, नृत्य, नौरंग ३१, नौरंगी, ३२, पति राखन ३३, पदारथ, परमा ३४, पाल, पावन, पीतम, पुनीत ३५, प्यारे, प्रकाश, प्रताप, प्रफुल्ल, प्रफुल्लित ३६, प्रभु, प्रमादकर, प्रमोद, प्रसाद, प्रिय, प्रेम, फूल, बंकट ३७, बंधन, बंध, बक्स, बचन, बदन, बल, बली, बहादुर ३८, बाँके, बाल, भगवंत, भगवान्, भरोसे, भागवत ३६, भारत, भूषण, भूपाल, मंजू, मक्खन, मगन, मणि, मधुर, मन प्यारे, मनभावन, मनमोद, मनमोहन, मनराखन, मनहरण, मनहरि, मनहारी, मनहर्ष, मनोहर, मनोहारी, मल, महाराज, माखन, मानिक, मुकुट, मुदित, मुरली, मुरलीधर, मूर्ति, मूल, यतींद्र ४०, यशवंत, योगी, योगेंद्र, रंग ४१, रंग बहादुर, रंगी, रंगीले, रतू, रतन, रति (प्रिय), रत्न, रत्नी ४२, रमण, रमणेत ४३, रसिक, रहस्य, राज, राजेंद्र, राजेश्वर, राधा मनहरण, राम, रूप, ललित, लल्लन, लाड़िली, लाल, लीला, वंश, वचन, वल्लभ, विजय, विनय, विनीत, विनोद, विपिन ४४, विमल, विहारी, वीर, वीरेंद्र, वेद, व्यथित, व्रजवंश, श्याम, शरण, शरवती, शांति, शुभ, शेखर ४५ श्यामल, संसारी, सगुन, सत् (सद्), सत्य, सनेही, सबल, सबसुखी, सरुपी, सलोने, सर्वजीत ४६, सर्वसुख, सहाय, साँवरे, साँवल, साँवले ४७, साँवलिया, साँवली, सावले, साखी, सिद्ध, सुन्दर, सुख, सुघड़, सुदर्शन, सुदृष्ट ४८, सुनील ४६, सुमन, सुशील, सूरत, सेन, सेवक, स्वरूप, स्वामी, हरिवंश ५०, हित, हरे।

(४) सम्मिश्रण :—

(अ) मूर्तामूर्त—ओ३म् ब्रह्म

मूर्त + मूर्त :—

(आ) स्व पर्य्यायवाची शब्दों के साथ— कन्हैया, किशन, कृष्ण, केशव, गोपाल, गोविंद, नटवर, माधव, मुरारी, मोहन, यादवेंद्र, राधेश, राधेश्वर, हरि।

स्व-सम्बन्धियों के साथ—अनिरुद्ध, किशोरी, वल, वलदेव, वलराम, वलवंत, विंदा, माधुरी, राधा, राधिका, राधे, ललिता, लाड़िली, लीला, श्यामा।

अन्य देवों के साथ—अनङ्ग, उग्र, उपेंद्र, कामेश्वर, गंगा, गौरी, जालपा, तारा, दिनकर, दिनेश, देवी, नागेंद्र, नैनी, भान, मदन, महेंद्र, यागेंद्र, रतीश, राम, रामेश्वर, रुद्र, लक्ष्मी, शङ्कर, शचींद्र, शिव, शिवेंद्र, सतीश, सूरज, सूर्य, हर, हरि, हरेश।

(इ) व्यक्ति सम्बन्धी—उद्धव, ऋषि, कश्यप, काश्यप, गोपी, चैतन्य, ध्रुव, नन्द, मुनि, सुदामा।

(ई) स्थान सम्बन्धी—गिरवर, गिरिराज, गोकुल, गोधन, गोवर्धन, त्रिवेणी, दुनिया, द्वारका, वरसाने, भारत, मथुरा, मधुवन, माठू, रामेश्वर, वृंदावन, व्रज, शैलेंद्र, संसारी, हरिहर।

ङ—गौण शब्दों की विवृत्ति—

अंकांकित शब्दों के अर्थ—

१—इंद्रियो से परे, अगोचर, इन्द्र का उल्लंघन करने वाला, २—काला, ३—शोभा, ४—प्रकाश, (कुमार), ६—कंस को मारकर कृष्ण ने जमुना के तट पर थोड़ी देर विश्राम लिया था इसी घटना की ओर संकेत है, ७—गीता, ८—अवीर, ९—सुदर्शन चक्र को धारण करने वाले, १०—चार बाँह वाले, ११—चित को प्रसन्न करने वाले, १२—किरीट, १३—उत्तम, शुद्ध, १४—छोटा प्यारा बच्चा, (कृष्ण के लिए प्यार का शब्द) १५—(छैला) बाँका, १६—जग प्रसिद्ध, १७—इन्द्रियों की जीतने वाला, १८—संतुष्टि, १९—तीनो लोकों को मोहने वाला, २०—माला, दाता, २१—जोड़ा, रहस्य, झगड़ा, २२—धारण करने वाला, २३—धीर पुरुषों में श्रेष्ठ, २४—अटल, निश्चय, २५—ठाट बाट, २६—नया उत्पन्न बच्चा, २७—मक्खन, २८—नया, सुन्दर, २९—(नित्य) अविनाशी, ३०—(नैनू—नवनीत) मक्खन, ३१—नव रंग, विचित्र, सुन्दर ३२—स्वामी, पालक, ३३—लज्जा या प्रतिज्ञा की रक्षा करने वाले, ३४—शोभा, ३५—पवित्र, ३६—प्रसन्न, ३७—(वंकट) छैला, ३८—छैला, सुन्दर, वीर, ३९—अठारह पुराणों के अन्तर्गत एक महा पुराण, भगवत भक्त, ४०—श्रेष्ठ संन्यासी, ४१—नृत, रणक्षेत्र प्रेम, सौंदर्य, आनन्द, उमङ्ग ४२—योद्धा, ४३—सुन्दर, विलासी, ४४—वन, ४५—शिरोभूषण, श्रेष्ठ; ४६—सब को जीतने वाले, ४७—श्याम वर्ण, ४८—अच्छी तरह देखा हुआ, ४९—फूल, ५०—एक पुराण जिसमें कृष्ण का वर्णन है। यह महाभारत का परिशिष्ट अंश समझा जाता है।

३—विशेष नामों की व्याख्या

आदित्य गोपाल—इससे अभिप्राय: द्वादश गोपाल से है। आदित्य बारह का सूचक है। यह कृष्ण की द्वादश मूर्ति की ओर सकेत करता है।

उग्र मोहन—उग्र से तीन अभिप्राय हैं (१) भयंकर (२) उग्रसेन (३) शिव।

उपेंद्र गोपाल—उपेंद्र = विष्णु। अंशांशी सम्बन्धी।

कश्यप कृष्ण—यह नाम अनेक अर्थों में लिया जा सकता है।

(१) कश्यप गोत्रीय कश्चित् कृष्ण नामक व्यक्ति।

(२) श्याम वर्ण कश्यप ऋषि अथवा प्रजापति।

(३) कणाद ऋषि

(४) कशिपु शिव के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसमें दो देव शिव और कृष्ण के प्रति सम भावना प्रगट होती है।

(५) काश्यपि गरुड़ का सूचक है जब कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत धारण किया था तब गरुड़ सेवा के लिए आये थे द्वादश भुजावाले गोविद गरुड़ पर आसीन हैं। गरुड़ गोविद मंदिर के विषय में व्रज में एक पहेली प्रसिद्ध है।

"पाँच हाथ के मन्दिर में बारह हाथ के ठाकुर जी"

(६) काश्यपि कृष्ण अर्थात् श्याम वर्ण गरुड़। गया में विष्णुपद के समीप गरुड़ की काली पत्थर की एक मूर्ति है।

कृष्ण मूर्तियाँ—वल्लभ कुल के अनुसार कृष्ण की आठ मूर्तियाँ :—

श्रीनाथ, नवनीत प्रिय, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुल चंद्रमा और मदनमोहन।

कृष्णराम—यह नाम अनेकार्थ वाचक है :—

(१) प्रिय अथवा सर्वव्यापी कृष्ण।

(२) कृष्ण तथा बलराम की युगल मूर्तियाँ। यहाँ पर राम शब्द बलराम का उत्तरार्द्ध है।

(३) कृष्ण तथा राम दो देवों में समभाव भक्ति।

(४) श्याम वर्ण राजा राम।

(५) श्याम वर्ण बलराम। व्रज के बलदेव गाँव में बलदाऊ जी की एक काली प्रतिमा है। इसकी श्यामता का समाधान दो प्रकार से किया जाता है। १—काली मूर्ति में सौंदर्य सम्यक् रूप से झलकता है। २—एकदा कृष्ण ने अपना तेज बलराम में आरोपण किया था। जिससे वे (बलदेव) धेनुकासुर, प्रलम्बासुर आदि राक्षसों का वध करने में समर्थ हुए थे, गोरे दाऊ जी इसलिए काले हो गये।

कोबरन शाह्—को बरन कुवर्ण का रूपांतर प्रतीत होता है जो श्याम वर्ण के अर्थ में आता है यह श्रीकृष्ण के रूप रंग का परिचायक है।

खानचन्द का दूसरा अर्थ होगा श्रेष्ठ खान (खान पठानों की एक उपाधि)

गंगा व्रज भूषण—व्रज में ये तीन गंगा बहती हैं। (१) कृष्ण गंगा (२) मानसी गङ्गा (३) चरण गङ्गा।

गिल्लू मल—गिली (कृष्ण) का विकृत रूप है। देखिए गोली।

गीताराम—कृष्ण ने भगवत्गीता में अर्जुन को कर्म-योग का उपदेश दिया है।

गूजर मल—गूजरों में श्रेष्ट अर्थात् श्री कृष्ण, मल (मल्ल) = श्रेष्ठ।

गोकृष्णमूर्ति—कृष्ण को गायें अत्यन्त प्यारी थीं और वे सर्वदा दत्तचित्त हो उनका पालन-पोषण करते थे इसलिए उन्हें गोपाल कहते थे। यहाँ पर कृष्ण की मूर्ति गाय के साथ बनाई गई है। अथवा गाय की काली मूर्ति।

गोपीशरण—गोपियों के आश्रय अर्थात् श्री कृष्ण।

गोपेश्वर—देखिए शिव प्रवृत्ति में।

घन सिंह—मेघ तथा कृष्ण में वर्ण साम्य होने से यह नाम पड़ा।

घन सुन्दरलाल—घन का अर्थ मेघ, देह तथा सघन होता है। अतिसुन्दर कृष्ण।

चंदनगोपाल—यह कृष्ण की चंदन की मूर्ति की ओर संकेत करता है।

चंद गोकुल राय—(१) चन्द्र का अर्थ प्रभा मय, सुंदर तथा आनन्द प्रद होता है। गोकुल राय कृष्ण के लिए आया है।

(२) चन्द्र का अर्थ स्वर्ण भी होता है। अतः यह कृष्ण की स्वर्णमयी मूर्ति का बोधक है।

(३) ब्रज के चंद्रसरोवर की ओर संकेत करता है। यहाँ पर अष्टछाप के प्रसिद्ध कवि सूरदास ने अंतिम पद गाया था[1] :—

चित्र कृष्ण—यह कृष्ण की चित्रमयी मूर्ति का परिचायक है।

छबिनाथ, छबिसागर—ये कृष्ण के अतिशय सौंदर्य की सूचना देते हैं।

जगतनन्दन, जगदानन्द, जगनन्दन,—संसार को आह्लादित करने वाले कृष्ण। ये कृष्ण की उपाधियाँ हैं।

जगमूरत—यह नाम कृष्ण के विराट रूप का परिचय देता है। यह विराट रूप बचपन में यशोदा रानी को दिखाया था। जब उन्होंने बालक कृष्ण को मिट्टी खाने का दोषी ठहराया था। जब कृष्ण ने मुख खोला तो उसके अंदर नन्दरानी को तीनो लोक और सब देवता दिखलाई देने लगे। द्वितीय बार अर्जुन को युद्धस्थल में यह रूप प्रदर्शित किया था।

जगरदेव, जगरनाथ, जगारदेव—यह नाम जगन्नाथ के रूपातर हैं। कृष्ण की यह मूर्ति जगन्नाथ पुरी में है।

जदुनन्द, जदुनाथ, जदुराज, जदुलाल, जदुवीर—यह कृष्ण के नाम हैं जो उनके यदुवंश के कारण रखे गये हैं।

जनानन्द – जन का अर्थ भक्त अथवा मनुष्य होता है। भक्तों को आनन्द देने वाले कृष्ण की यह उपाधि है।

तृप्तनारायण—पियासों गाँव के तृषा कुण्ड और विसाखा कुंड से राधा और सखियाँ जल लाईं और कृष्ण की प्यास बुझाई। इस घटना की ओर संकेत है।

त्रिमोहन लाल—अपने सुन्दर रूप तथा मुरली से तीनों लोक को मोहने वाले कृष्ण।

दधिराम—श्रीकृष्ण को दही मक्खन अत्यंत प्यारा था। उन्होंने दधि गाँव (दहगाव) में दधि लीला की। इस गाँव में दधि कुंड, दधियारी देवी आदि पवित्र स्थान है और भादों सुदी षष्ठी को मेला लगता है। (दधिकादो उत्सव, उदधि या दधिबल बंदर के राम)

दानबिहारीलाल—मथुरा से डीह को जाने वाली सड़क गोवर्धन पर्वत के ऊपर होकर जहाँ पर निकलती है उसे दान घाटी कहते हैं। यहाँ कृष्ण गोपियों से दान (कर) लिया करते थे। इस घाटी पर दानराय का मंदिर भी है। काम वन में भी कृष्ण ने गोपियो से दान लिया था।[2]

---

[1] खंजन-नैन रूप रस माते।
अतिसै चारु चपल अनियारे, पल पिंजरा न समाते॥
चलि-चलि जात निकट स्रवननि के उलट पुलट ताटंक फसाते।
सूरदास अंजन गुन अटके नतरु अबहिं उड़ि जाते॥

[2] इस दान लीला का उपालंभ रसखान ने बड़े सुन्दर शब्दों में वर्णन किया है।
दानी भये नये माँगत दान, सुनै जुपै कंस तो बाँधिके जैहौ।
रोकत हौ वन में 'रसखानि' पसारत हाथ घनौ दुख पैहौ॥
टूटै छरा बछरा अरु गोधन, जो धन है सु सबै धरि दैहौ।
जैहैं अभूषन काहू सखी को, तो मोल छला के लला न बिकैहौ॥

दिनकरगोपाल, दिनेशबिहारी, दिनेशमोहन—दिनकर, दिनेश आदित्य के पर्य्याय-वाची हैं जो बारह संख्या के सूचक हैं। देखिए आदित्यगोपाल।

द्वंदविहारीलाल—द्वंद युगल और झगडा के अर्थ में आता है।

धूमविहारीलाल—यह नाम परिस्थिति का सूचक भी है। जन्मोत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया गया प्रतीत होता है।

धेनुकृष्ण—यह कृष्ण की गोप्रियता का सूचक है।

ध्यानकृष्ण—(१) कृष्ण का ध्यान (२) ध्यानी कृष्ण।

ध्रुवकृष्ण—(२) अपने निश्चय पर अटल रहने वाले कृष्ण (२) भक्त ध्रुव तथा भगवान् कृष्ण की ओर संकेत करता है।

नित्यगोपाल—नित्य का अर्थ सदा रहने वाला, यह कृष्ण के अविनाशी स्वरूप को प्रकट करता है।

नैनीगोपाल—नैनी एक देवी है।

नौरंगीलाल—नाच रंग या रसमय प्रकृति एवं प्रवृत्ति वाले कृष्ण।

पीतांवर—पीला वस्त्र धारण करने वाले कृष्ण।

पुलिनविहारीलाल—पुलिन का अर्थ तट होता है। श्रीकृष्ण जमुना के तट पर विहार किया करते थे।

प्रियेंद्रपाल सिंह, प्रियाकांत—प्रिया शब्द कृष्ण की प्रेयसी राधिका के लिए प्रयुक्त हुआ है।

फूलकृष्ण—(१) फूल आनन्द तथा हर्ष के अर्थ में आता है यह कृष्ण के आनन्दमय स्वरूप का परिचय देता है।

(२) फूल के सदृश कोमल कांत प्रकृति वाले कृष्ण।

(३) कमल का फूल विष्णु का (कृष्ण) अभिज्ञान चिह्न है जो सदा उनके पाणि पल्लव में रहता है।

(४) वाह्य पूजा में सुंदर सुगंधित सरस तथा कोमल फूल भगवान् के चरणों में अर्पण किये जाते हैं किंतु अंतरंग आराधना के अष्ट पुष्प[1] और हैं जो भक्त भगवान् की प्रसन्नता के लिए अर्पण करता है।

(५) कृष्ण की पुष्पमयी मूर्ति।

बंकटलाल—वंकट से तात्पर्य रसिक अथवा छैला होता है। श्रीकृष्ण बड़े रसिक थे इसीलिए उनके नाम रसिकविहारीलाल, रसिकमोहन आदि हुए।

बंदी छोर—(१) यह उस घटना की सूचना देता है जब कंस ने वसुदेव तथा देवकी को बंदीगृह में डाल दिया था। कृष्ण के जन्म लेते ही उन दोनों की हथकड़ी-बेड़ी खुल गई और वसु-देव कृष्ण को लेकर नन्द के यहाँ पहुँचा आये।

(२) संसाररूपी कारावास से मुक्त करने वाले कृष्ण।

---

[1] अहिंसा प्रथमं पुष्पं पुष्पमिन्द्रियनिग्रहः।
सर्वभूत दया पुष्पं क्षमा पुष्पं विशेषतः॥
ज्ञानं पुष्पं तपः पुष्पं ध्यानं पुष्पं तथैव च।
सत्यमष्टविधं पुष्पं विष्णोः प्रीतिकरं भवेत॥

बन्दीरत्न— आनन्दी-बंदी यह दो देवियाँ थीं जो नन्द के यहाँ गोबर पाथा करती थीं और इसी बहाने रामकृष्ण के नित्य दर्शन करती थीं। व्रज में बन्दी-आनन्दी कुंड है।

बरसाने लाल—बरसाने को बरसानु, ब्रह्मसानु और वृषभानुपुर भी कहते हैं। यह राधिका के माता-पिता वृषभानु और कीर्ति रानी की राजधानी था। यहाँ की छोटी पहाड़ी ब्रह्मा जी का रूप है। इसके चार शिखर ब्रह्मा के चार मुख हैं। नन्द गाँव की पहाड़ी शिव का तथा गोवर्धन विष्णु का रूप है भादो सुदी अष्टमी से चतुर्दशी तक यहाँ मेला लगता है। फाल्गुन सुदी अष्टमी, नवमी और दशमी को होली की दर्शनीय लीला होती है। यहाँ पर कृष्ण राधा तथा गोपियों के साथ होली खेला करते थे।

बलकांतचंद्र—बल (बलराम) के स्वामी अर्थात् कृष्ण।

बलबीर—बलीभद्र के भाई अर्थात् कृष्ण।

बाँके बिहारी—यह प्रसिद्ध स्वामी हरिदास के पूज्य देव हैं, इनकी सब बाते विलक्षण हैं। यह दस बजे के पहले नहीं उठते। वर्ष में एक ही दिन अक्षय तृतीया को चरणों के दर्शन होते हैं। आश्विन शुक्ला पूर्णमासी को मुकुट और वंशी धारण करते हैं। एक ही दिन श्रावण शुक्ला तृतीया को हिंडोले मे झूलते है। मन्दिर में किसी प्रकार का बाजा नहीं बजता। हरिदास स्वामी ने इन्हें पृथ्वी के नीचे से निकाल कर मन्दिर में स्थापित किया। इनका पर्दा क्षण-क्षण बदलता रहता है। इसका कारण यह है कि श्री बाँकेबिहारी जी की परम मनोहर मूर्ति को एक भक्त बहुत देर तक देखता रहा। उसके प्रेम के वशीभूत होकर वह उसके साथ चल दिये। पीछे पुजारियो की बड़ी विनती करने पर लौटे। इसीलिए पर्दा शीघ्र शीघ्र गिरता रहता है।

बाल केश नारायण—केश विष्णु का नाम है उनके अवतार कृष्ण है। (केश-वरुण)

बिंदेबिहारी लाल—विंदे वृंदा (राधा) का विकृत रूप है अथवा वृंदावन का संक्षित रूप है।

भूकरणलाल—भूकरण का अर्थ पृथ्वी का भूषण (साधन)। इससे उनका विश्व प्रेम प्रकट होता है।

भागवतलाल—भागवत में कृष्ण चरित वर्णित है। इसके अतिरिक्त महाभारत, हरिवंश पुराण तथा विष्णु पुराण में भी इनका वर्णन है। इसका अन्यार्थ भागवत भक्त भी होता है।

भानुकृष्ण— भानु सत्यभामा तथा कृष्ण के एक पुत्र का नाम है। अथवा द्वादश संख्या का द्योतक है।

भारतकृष्ण—(१) इसका तात्पर्य महाभारत में वर्णित कृष्ण से है।
(२) इससे देश भक्ति प्रकट होती है।

भटुकधारी—मटुक मुकुट का वर्ण-विपर्यय तथा विकृत रूप है। यहाँ पर क और र का स्थान एक दूसरे ने ले लिया है। इस प्रकार का शब्द विपर्यय प्राचीन काल के नामों में भी पाया जाता है। जैसे पश्यक का कश्यप, तपंजलि का पतजलि हो गया है। इसी प्रकार अक्षरों का स्थान परिवर्तन आजकल भी प्रचलित है। जैसे अमरूद से अरमूद और मतबल से मतलब हो गये।

मनरूप— मन को मोहने वाला सौंदर्य।

माटू राम—माठ गाँव में कृष्ण ने दही मक्खन लूटकर माठ (मिट्टी के बर्तन) फोड़ डाले और फिर यशोदा माँ के डर से भागकर कुंज में जा छिपे। यशोदा उन्हें ढूँढ़ते-ढूँढ़ते चिल्लाती हैं। माँ का हृदय गर्मी से झुलसती हुई धूल को स्मरण कर उनको ढूँढ़ता फिरता है।[1]

मुकुटेश्वरीमोहनसिंह—मुकुटेश्वरी राधिका या पार्वती। शिव तथा पार्वती कृष्ण की आराधना करते हैं।

---

[1] नीतं यदि नवनीतं नीतं नीतं किमेतेन
आतपतापित भूमौ माधव माधाव माधाव।

मुरलीधर[1]—बंशीधर।

मोरमुकुट—कृष्ण को मोरों के पंखों का मुकुट बहुत प्रिय था।

मोहन—कृष्ण के रूप माधुर्य को देखकर ब्रजवासी ऐसे मोहित हो गये कि उनको अपने तन की कुछ सुध बुध न रही। तब उन्होंने बंशी बजाकर सब को सचेत किया। उस दिन से उनका नाम मोहन हो गया। यह घटना ब्रज में मोहनकुण्ड पर हुई।

मोहनी मोहनलाल—मोहनी राधिकाजी के लिए प्रयुक्त हुआ है।

यमलार्जुन सिंह—ब्रज में कोविदार तथा अश्मंतक यह दो वृक्ष यमलार्जुन के नाम से प्रसिद्ध थे। ये पहले गन्धर्व थे जो अनाचार के कारण अभिशप्त हो वृक्ष योनि को प्राप्त हो गये। कृष्ण की लकड़ी से उलझकर वे दोनों पेड़ उखड़ गये। (देखिए दामोदर)

यशोदानन्द—नन्द की स्त्री यशोदा ने कृष्ण का बचपन में पालन पोषण किया था।

योगेंद्र बिहारीलाल—विष्णु यज्ञ के स्वामी हैं और कृष्ण उनके अवतार हैं।

रतूलाल—(१) रंतू रमण से बना है जिसका अर्थ विहार करने वाला (२) रति का विकृत रूप जिसका अर्थ प्रेम होता है। (३) रंतु का विकृत रूप जो नदी के अर्थ में आता है। नदी के तट पर बिहार करने वाले कृष्ण। (४) रंतिदेव = विष्णु, एक राजा का नाम (५) रंति = केलि, क्रीडा।

रतीश मोहन—रति कामदेव की स्त्री, रतीश कामदेव, उनके मोहने वाले कृष्ण।

रत्न गोपाल—यह कृष्ण की रत्न-मूर्ति का सूचक है।

राधा कमल—कमल का अर्थ कामुक होता है। राधा को चाहने वाले कृष्ण।

राधा कुमुद, राधा गोविंद—कुमुद का अर्थ विष्णु अर्थात् कृष्ण भी हुआ। वृन्द्रावन का एक प्रसिद्ध मन्दिर।[2]

राधारमण—गोपाल भट्ट गंडकी से १२ शालग्राम लाकर सेवा करने लगे। एक दिन किसी सेठ ने सभी मन्दिरो की मूर्तियो को वस्त्राभूषण भेट किये। भट्ट जी की बड़ी प्रबल इच्छा हुई कि हमारे उपास्य देव के अंग प्रत्यंग होते तो हम भी उनका शृंगार करते। यह चिंता करते-करते उन्हें झपकी आ गई। तब भगवान् ने जगाकर कहा "गोपाल उठ मेरे दर्शन कर।" उन्होंने पिटारी खोलकर देखा तो १२ शालग्रामों में से ११ ज्यों के त्यो रखे थे। एक शालग्राम में से एक बड़ी सुन्दर भुवनमोहनी प्रतिमा प्रकट हो गई।

राधावल्लभ—गोस्वामी श्री हितहरिवंश जी देवबन्द से वृन्दावन आ रहे थे, रास्ते में वह एक गाँव में ठहरे वहाँ आत्मदेव नामक ब्राह्मण ने श्री राधावल्लभ की मूर्ति गोस्वामी जी को भेट की, उन्होंने वृन्दावन में लाकर उसकी स्थापना की।

ललितकिशोर—(१) ललिता राधा की आठ सखियों में से एक है। ललिता पार्वती को भी कहते हैं। ललित का अर्थ सुन्दर भी होता है।

लाड़िलीमोहन—लाड़िली राधिका जी का दुलार का नाम है।

---

[1] मैं मुरली मुरलीधर की लई मेरी लई मुरलीधर माला,
मैं मुरली अधरान धरी मुरलीधर कंठ धरी मेरी माला,
मैं मुरलीधर की मुरली दई मेरी दई मुरलीधर माला,
मैं मुरलीधर की मुरली भई मेरे भये मुरलीधर माला।

[2] उत आवत है नन्दलाल इते अलि जात रही वृषभानु कुमारी।
बिच प्रेम सरोवर भेट भई यह प्रेम निकुंज नवीन निहारी॥
चित चाहत है इत ही रहिए यह कीन्ह विनय प्रियसों जब प्यारी।
तब नित्य निवास कियो इत ही मिलि राधे गुविंद निकुंजविहारी॥

लालधर—कौस्तुभ मणि को धारण करनेवाले कृष्ण।

लीलपट—नीलांबरधारी कृष्ण (नीलपट बलदेव के लिए योग रूढ़ है।)लीला में पटु (चतुर)।

लीलापुरुषोत्तम—विष्णु को पुरुषोत्तम, राम को मर्यादा पुरुषोत्तम एवं कृष्ण को लीला पुरुषोत्तम कहते हैं। इनकी अनेक लीलाएँ भक्तों के हितार्थ संसार में प्रसिद्ध हैं।

वनमाली[1]—वनमाला को धारण करनेवाले कृष्ण।

वल्लभ रसिक—(१) वल्लभ = प्रिय।
(२) वल्लभाचार्य।

विदुरनाथ—विदुर कृष्ण भक्त थे। इनकी विदुरनीति प्रसिद्ध है।

विश्वरूप—यह कृष्ण के विराट् रूप का परिचय देता है।[2]

शरवतीलाल—शरवती रंगवाले कृष्ण। संज्ञी के रंग का सूचक है।

श्यामाकांत—श्यामा = राधिका।

श्रीरंगाचार्य—श्रीरंग = विष्णु या कृष्ण।

साखीगोपाल—कृष्ण की एक प्रसिद्ध मूर्ति।[3] साखी ब्रज का एक पवित्र स्थान है इसका तत्सम रूप साक्षी है। यहाँ पर शंखासुर का वध हुआ है। साक्षीगोपाल त्रिपुरी (उड़ीसा) से थोड़ी दूरी पर कृष्ण की एक विशाल सुन्दर मूर्ति है।

हरिगेंद—इससे दो घटना सूचित होती हैं। (१) कृष्ण की गेंद जमुना में गिर पड़ी उस समय जब निकालने के लिए जमुना में कूदे तो काली नाग को नाथा। (२) गेंद से आशय गयंद (गजेंद्र) से है। यहाँ गज और ग्राह की कथा की ओर संकेत है। भक्तजन प्रायः गुनगुनाया करते हैं— नाथ तुम गज को फँद छुड़ायौ।

हुण्डीलाल—गुजरात के प्रसिद्ध भक्त नरसी मेहता के यहाँ कुछ साधु पहुँचे और उनसे हुण्डी लिखने के लिए बड़ा आग्रह किया। उन्होंने बहुत कुछ अपनी असमर्थता प्रगट की, किन्तु साधुओं ने न माना। विवश हो उन्होंने सेठ साँवलशाह के नाम हुण्डी काट दी। कृष्ण ने अपने भक्त की लाज रखने के लिए सेठ का रूप धारण कर उस हुण्डी को चुकता कर दिया।

४—समीक्षण

श्री कृष्ण लीलाधर कहलाते हैं, उनका जीवन भी लीलामय है। जैसी अनेकरूपता उनके चरित्र में या गुण में या कार्य में पाई जाती है वैसी ही विभिन्नता उनके नामों में भी झलकती है। ऐसे विचित्र नाम शिव के अतिरिक्त किसी अन्य देव के नहीं पाये जाते। राम प्रवृत्ति की यह विशेषता

---

[1] "धीर समीरे यमुना तीरे वसति वने वनमाली"—गीत गोविंद ५।
बनमाला का वर्णन इस प्रकार है।
आजानुलंबिनी माला सर्वर्तुकुसुमोज्ज्वला।
मध्ये स्थूल कदंबाढ्या वनमालेति कीर्तिता॥

[2] अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं
पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरुपम्
नान्तिं न मध्यं न पुनस्तवादिं
पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप। (गीता अ० ११ श्लो० १६)

[3] कृष्ण की अन्य मूर्तियाँ, (१) गोकुल में गोकुलनाथ, (२) कोटा में मथुरेश, (३) नाथद्वारा में विट्ठलनाथ, (४) कांकरौली में द्वारकाधीश, (५) कामवन में गोकुल चंद्रमा तथा (६) मदनमोहन और सूरत में (७) बालकृष्ण। अंतिम ६ मूर्तियाँ, मुसलिम काल में ब्रज से स्थानांतरित हुईं।

है कि उसके बहुसंख्यक नाम केवल राम शब्द ही से बनाये गये हैं। किन्तु कृष्ण प्रवृत्ति के अधिकाश नाम अनेक शब्दों के योग से बने हैं। विश्लेषण करते हुए बतलाया था कि इस प्रवृत्ति के नाम गुण, रूप, लीला, धाम, उपाधि तथा सम्बन्धपरक हैं। उपाधि के कुछ अद्भुत् नाम व्यंग्यात्मक भी कहे जा सकते हैं।

इस संग्रह में कृष्ण के अनेक रूपों का आभास मिलता है। नवजादिक लाल कहते ही वह दृश्य सम्मुख आ जाता है जब उनके माता-पिता मथुरा के बंदीगृह में अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे, उसी कारागार में कृष्ण का जन्म हुआ। वसुदेव रात्रि में ही उनको लेकर जमुना पार कर गोकुल में नन्द के यहाँ आये और कृष्ण परिवर्तन में यशोदा की नवजात बालिका लेकर लौट गये। छगनलाल, बालकृष्ण, बाल गोविंद, बाल गोपाल, माखनलाल, मुरलीधर के नाम से उनके बचपन का चित्र नेत्रों के सम्मुख नृत्य करने लगता है, बाल लीलाओं का अभिनय आरम्भ हो जाता है। कदम्ब के नीचे वंशीधर की मुरली बजते ही ग्वाल बाल एकत्रित हो गये, मधुर रव से आकृष्ट वन से गौएँ भी वहीं आ गईं। घरों से निकल-निकल ब्रज बालाएँ भी उसी आनन्दोत्सव में सम्मिलित हो गईं। रासलीला में सब तन्मय हो गये। इसी प्रकार किशोर, कुमार आदि अवस्थाओं के चित्रण भी मिलते हैं।

रासलीला से रहसबिहारीलाल के यौवन की रहस्य लीला प्रारम्भ होती है। वीरत्व, साहस, विक्रम के लक्षण कृष्ण चरित में बचपन से ही प्रस्फुटित होने लगे। कंस के अतिरिक्त उन्होंने अनेक दुष्टों का दलन किया। इसके अनन्तर वे समृद्धिशाली तथा शक्तिशाली द्वारिकेश के रूप में आते हैं। इनकी 'कलधौत के धाम' वाली नगरी को देखकर बिचारा सुदामा चकित हो गया था। ये सब तो भोगी कृष्ण के रूप हुए, इनका एक अत्यंत विशुद्ध योगी रूप भी है। योगेश्वर कृष्ण ने इसके लिए कोई वन में जाकर साधना नहीं की। रणक्षेत्र में "अर्जुन की उदासीनता दूर करने के लिए गीता में वर्णित कर्मयोग ही इनका मूल मन्त्र है। नामों से कृष्ण के निर्मल चरित का ही निदर्शन निकलता है। मनिहारिन लीला, लिलहारी लीला, चीरहरण लीला आदि कलुषित प्रसङ्गों का कहीं पता नहीं। रणछोर नाम उनकी नीति निपुणता तथा कार्यकुशलता का परिचय देता है न कि उनकी कायरता का। प्रबल शत्रु से जब विजय पाना दुष्कर हो तो उस समय तरह देना ही श्रेयस्कर है। व्यर्थ में जान खोना उचित नहीं। ऐसा रणविशारदों का आदेश है। कृष्ण कथा का सारांश नामों के आधार पर इस प्रकार है :—

वसुदेव-देवकी के पुत्र कृष्ण का जन्म मथुरा के कारावास में हुआ। गोकुल के यशोदा नन्द के यहाँ इनका पालन-पोषण हुआ। श्याम वर्ण होने पर भी अत्यंत सुन्दर थे। इनके बड़े भाई का नाम बलराम था। दोनों भाइयों ने ब्रज के ग्वाल बालों के संग खेलकर अपना बचपन बिताया। लघुवयस्क होते हुए भी अत्यंत वीर तथा पराक्रमी थे। कालीनाग-मर्दन तथा अनेक दुर्दांत दैत्यों का दलन किया। गुरु सांदीपनि की शाला में इनकी शिक्षादीक्षा हुई। इनके सहपाठी विप्र सुदामा थे। कंस को मारकर मथुरा का राज अपने नाना उग्रसेन को लौटा दिया। वृन्दावन की प्रसिद्ध गोपी राधा पर विशेष स्नेह रखते थे। सिर पर मोरमुकुट, शरीर पर पीतांबर, गले में वनमाला तथा अधरों पर मुरली से इनका सुन्दर स्वरूप 'कोटि मनोज लजावन हारे' को चरितार्थ करता है। मगध के जरासंध आदि अनेक राजाओं से युद्ध किये। तदनन्तर अपने को सुरक्षित रखने के लिए समुद्र के निकट द्वारिका को अपनी राजधानी बनाकर रुक्मिणी के साथ राज करने लगे। इनके पुत्र प्रद्युम्न और पौत्र अनिरुद्ध थे। उद्धव इनके प्रिय मित्र थे। महाभारत-युद्ध में अर्जुन के सारथि का पद ग्रहण किया तथा गीता का उपदेश देकर पुनः उसको समर के लिए उत्तेजित किया। राज-ऐश्वर्य में रहते हुए भी वे जितेंद्रिय थे। भोग में भी वे योग की साधना करते थे। वे पूर्ण कर्मयोगी थे।

राम के सदृश इनके भी निराकार, सुराकार तथा नराकार तीन रूप हैं। निराकार रूप में वे सर्वव्यापक, सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान् ब्रह्म हैं, सुराकार रूप में साक्षात् विष्णु और नराकार रूप में विष्णु के अवतार हैं।

कृष्ण के नामों की प्रचुरता के निम्नलिखित मुख्य कारण हो सकते हैं।

१—शिव के सदृश कृष्ण के पर्यायों में भी बहुरूपता पाई जाती है। यह विशेषता राम के प्रचलित नामों में नहीं दिखलाई देती।

२—विष्णु के नवीनतम अवतार होने के कारण कृष्ण जनता के अधिक निकटतम हैं। हरि, माधवादि विष्णु के अनेक प्रसिद्ध नाम सर्वसाधारण में कृष्ण के लिए रूढ़ से हो रहे हैं।

३—लीलामय कृष्ण का स्वच्छंद जीवन मनुष्य की मनोवृत्ति के अधिक अनुकूल पड़ता है। अति मानवता के विक्रम-पराक्रम पृथक् कर देने पर उनके बचपन की शिशुक्रीड़ाएँ, यौवन की विलास-लीलाएँ एवं वार्धक्य के अनुभव तथा कार्य कौशल सामान्य मनुष्यों के जीवन से अधिक साम्य रखते हैं। इसके विपरीत राम का मर्यादा पूर्ण जीवन एक रस होने से सबके लिए उतना आकर्षक नहीं है। "करत चरित नर, अनुहरत" के सार्थक होते हुए भी उनका जीवन अपेक्षाकृत अधिक संयत दिखलाई देता है।

४—कृष्ण के चार पर्याय—लाल, किशोर, कुमार तथा नन्दन वात्सल्य रस के भी व्यंजक होते हैं। अतः वे मूल तथा गौण दोनों प्रवृतियों में प्रयुक्त हो सकते हैं। इस विकल्प से भी कृष्ण के नामों में संख्या लाभ होता है। राम अकेला हीं काम करता है।

लाल की संख्या अधिक होने का कारण यह प्रतीत होता है कि उसमें गौण प्रवृत्तियाँ भी मिश्रित हैं। अतः इनका सबसे अधिक प्रचलित नाम कृष्ण ही है। इस प्रवृत्ति में मूल तथा पूरक शब्दों की संख्या में अधिक अंतर नहीं है।*

---

* कृष्ण के नामों की पौराणिक व्याख्या के कुछ नमूने—

वासुदेव

भूतेषु वसते सोऽन्तर्वसन्त्यत्र च तानि यत्।
धाता विधाता जगतां वासुदेवस्ततः प्रभुः॥ (विष्णु पुराण पृष्ठ २२७ श्लोक ८२)

केशव

यस्मात्त्वयैष दुष्टात्मा हतः केशी जनार्दन।
तस्मात्केशवनाम्ना त्वं लोके ख्यातो भविष्यसि॥२३॥ (वही पृष्ठ ४२१)

गोविन्द

स त्वां कृष्णाभिषेक्ष्यामि गवां वाक्यप्रचोदितः
उपेन्द्रत्वे गवामिन्द्रो गोविन्दस्त्वं भविष्यसि॥११॥ (वही ४०१ पृष्ठ)

दामोदर

ततश्च दामोदरतां स ययो दामबन्धनात्॥२०॥ (वही ३८८ पृष्ठ)

——

छठा प्रकरण

अन्य देव-देवियाँ

इस प्रकरण में इतर देव-देवियों, राम कृष्ण सम्बन्धी अन्यावतारों तथा पुण्य सलिला नदियों से सम्बन्ध रखने वाले नामों का अध्ययन किया गया है।

इतर देव

१ - गणना —क—क्रमिक गणना

(१) नामों की संख्या—१४७

(२) मूल शब्दों की संख्या—६९

(३) गौण शब्दों की संख्या—२६

ख रचनात्मक गणना

प्रवृत्तियाँ	एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	पंचपदी नाम	योग
आश्विनी		२				२
आकाश	१	६	१		१	९
ऊर्वा		१				१
ऋभु		२				२
कलि		१				१
कल्पद्रुम		१				१
किन्नर	१	३				४
गंधर्व	२	३				५
गरुड़	२	८	१			११
चक्रसुदर्शन	२	११				१३
चित्रगुप्त		७	१			८
जयंत	१	१				२
यक्ष	१	२				३
दिक्पाल	१	३	१			५
दिग्गज	१	३				४
नांदी		३				३
पृथ्वी	१	९	३			१३
बृहस्पति	१	६	२			९
मंगल			१			१
मेघ		१				१
पक्ष		१				१
राहु		२	१			३
वसु		३				३
विश्वकर्मा	१		१			२
शुक्र		३				३
शेष	७	९	१७	२	१	३६
संपाति		१				१
	२१	९३	२९	२	२	१४७

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द :—

(१) अश्विनीकुमार—अश्विनीकुमार. अश्विनीप्रसाद।
(२) आकाश—आकाश, आसमान, गगन।
(३) ऊर्वा—ऊर्वा।
(४) ऋभु—ऋभु।
(५) कलि—कलि।
(६) कल्पद्रुम—कल्पद्रुम।
(७) किन्नर—किंदर (किन्नर), किन्नर।
(८) गंधर्व—गंधर्व, चित्रसेन, विद्याधर।
(९) गरुड़ - खगेश, खगेश्वर, गरुड, द्विजराज, पन्नगेश, वाजपति, वाजसिंह।
(१०) चक्र सुदर्शन—चक्कर (चक्र), चक्र, सुदर्शन।
(११) चित्रगुप्त—चित्रगुप्त, चित्र, चित्रू (चित्र)।
(१२) जयंत—जयंत।
(१३) दक्ष—दक्ष।
(१४) दिक्पाल—दिक्पाल, लोकपाल।
(१५) दिग्गज —दिग्गज, दिग्गे।
(१६) नांदी—नन्दी।
(१७) पृथ्वी—उर्वी, खौनी, भू, भूमिका, मही, मेदिनी, वसुधा।
(१८) बृहस्पति—देवपूजन, देवाचार्य, बृहस्पति, वागीश, वागीश्वर, वाचस्पति।
(१९) मंगल—कुज।
(२०) मेघ—जलधर।
(२१) राहु—राहु।
(२२) वसु—वसु।
(२३) विश्वकर्मा—सुकर्म पाल, विश्व रूप।
(२४) शुक्र—शुक्र।
(२५) शेष—उर्वीधर, क्षमाधर, धरणीधर, धराधर, नागनाथ, नागेंद्र, नागेश, नागेश्वर, पृथ्वीधर, फणींद्र, फणीश, भूधर, भूमिधर, भोगमणि, मेदिनीधर।

टिप्पणी—पृथ्वी के पर्यायवाची शब्द—उर्वी, क्षमा, धरणी, धरा, पृथ्वी, भू, भूमि, मही, मेदिनी, वसुधा।

(२६) संपाती—संपाती।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति

अश्विनीकुमार—स्वर्ग के वैद्य युग्म अश्विनीकुमार सूर्य तथा उनकी पत्नी संज्ञा के पुत्र माने जाते हैं। इन्होंने च्यवन ऋषि के बुढ़ापे को दूरकर उन्हें युवा बना दिया। इनसे नकुल और सहदेव की उत्पत्ति मानी जाती है।

ऊर्वा—पितरों का एक गण।

ऋभु—(१) ब्रह्मलोक में ऋभुदेव गण रहते हैं जो देवताओं के भी पूज्य माने जाते हैं। वृद्धत्व, मृत्यु, सुख-दुख, रागद्वेष से रहित होते हैं। बिना ग्यश तथा अमृत के जीवन व्यतीत करते

हैं। देवता भी उनके पद को प्राप्त करने की कामना करते हैं। (२) अंगिरस के वंशज सुधन्वन के पुत्र ऋभु, विम्बन और वाज तीनों पुत्र बड़े भाई ऋभु के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन्होंने पुण्य कर्म करके देवत्व पद प्राप्त किया और अतिमानव शक्तियों के द्वारा पूज्य बन गये। ये सूर्यलोक के निवासी माने जाते हैं। इन्हीं शिल्पियों ने इंद्र के घोड़े, अश्विनीकुमार का रथ और बृहस्पति की कामधेनु का निर्माण किया। इन्होंने अपने वृद्ध माता-पिता को युवा बना दिया और त्वष्ट्र के एक प्याले से इन्होंने यज्ञ के चार पात्र बना दिये। ये प्रायः सन्ध्याकालीन यज्ञ में इन्द्र के साथ आते हैं।

कलि—कलियुग के देवता।

कल्पद्रुम—स्वर्ग का एक वृक्ष जो सर्वकामना पूर्ण करता है।

किन्नर—देवताओं का एक निम्नवर्ग, इनका शरीर मनुष्य के समान और मुख घोड़े के समान होता है। स्वर्ग के नर्तक।

गंधर्व—स्वर्ग के गायक।

गरुड़—विनता तथा कश्यप के पुत्र और अरुण के भाई और सर्पों के बैरी थे। अपनी मा को मुक्त करने के लिए इन्द्र से अमृत हरण कर लिया। यह विष्णु के वाहन माने जाते हैं। इनका मुख श्वेत, नाक नुकीली, लाल पंख, सुनहरा शरीर बतलाया जाता है।

चक्र सुदर्शन—विष्णु भगवान् का सुदर्शन चक्र नामक अस्त्र जिससे वे दुष्टों का दलन करते हैं।

चित्रगुप्त—यमराज के लेखक जो मनुष्यों के शुभाशुभ कर्म का लेखा रखते हैं। गुप्त सार्थक है, ब्रह्मा की काया में गुप्त होने से प्रकट हुए।

जयंत—इन्द्र का पुत्र।

जलधर—मेघ इन्द्र के अनुचर हैं।

दक्ष—ब्रह्मा के दस पुत्रों में से एक जो उनकी दाहिनी जंघा से उत्पन्न हुआ। इनकी गिनती प्रजापतियों में मानी जाती है। इनका बकरी का सिर है। इनकी ६० कन्याओं में से १३ कश्यप को, २७ चन्द्रमा को और एक शिव को ब्याही गई। एक बार इन्होंने यज्ञ में अपनी पुत्री सती को निमंत्रण नहीं दिया। वह बिना बुलाए अपने पिता के यहाँ पहुँच गई। अपमानित होने पर अग्निकुंड में कूदकर सती ने अपने प्राण विसर्जन कर दिये। शिव ने सूचना पाते ही यज्ञ तथा दक्ष का विध्वंस कर दिया।

दिग्पाल—दस दिशाओं के दस स्वामी इस प्रकार हैं :—

(१) इंद्र, (२) अग्नि, (३) यम, (४) नैऋत (या सूर्य), (५) वरुण, (६) वायु, (७) कुबेर (८) ईशान या (चन्द्र), (६) ब्रह्मा, (१०) अनन्त।

दिग्गज—ऐरावत, पुंडरीक, वामन, कुमुद, अंजनः, पुष्पदंत, सार्वभौम, सुप्रतीक, ये आठ हाथी आठ दिशाओं की रक्षा करते हैं।

नांदी—शिवजी का वाहन नांदी नामक वृषभ है।

बृहस्पति—देवताओं के गुरु का नाम।

यक्ष—कुबेर के अनुचर हैं जो उसके कोष की रक्षा करते हैं।

राहु—एक ग्रह का नाम यह विप्रचित्ति और सिंहिका का पुत्र माना गया है। अमृत बटते समय यह भी देवतों की पंक्ति में बैठ गया। सूर्य चन्द्र ने विष्णु से इसका संकेत कर दिया। विष्णु ने इसका सिर काट लिया किन्तु अमृत का कुछ अंश चखने के कारण उसका सिर अमर हो गया। राहु इसका बदला ग्रहण के दिन सूर्य-चन्द्र से लेता है।

वसु—आठ देवताओं का एक समुदाय, उनके नाम ये हैं :—

(१) आप या अह, (२) ध्रुव, (३) सोम, (४) धर या धव, (५) अनिल, (६) अनल, (७) प्रत्यूष, (८) प्रभास।

विश्वकर्मा—देवताओं के गृह-निर्माता।

विश्वरूप—यह विश्वकर्मा का पुत्र था जिसके तीन सिर थे। एक से सोमरस, दूसरे से मदिरा और तीसरे से भोजन करता था। प्रकट रूप से वह देवताओं का मित्र बनता था किन्तु छिपे-छिपे असुरों की सहायता करता था। इंद्र ने इस द्वैधी भाव को जानकर उसके सिर विच्छेद कर दिये। सोमरस पीनेवाला मुख कपिजल, मदिरावाला मुख कलविक (गौरैया) और भोजन करनेवाला मुख तीतर हो गया। इंद्र के हाथ से अपने पुत्र की मृत्यु जानकर उसका पिता उससे अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और इंद्र को यज्ञ में निमंत्रण नहीं दिया। इंद्र ने सोमरस का प्याला बलपूर्वक छीनकर पी लिया। विश्वकर्मा ने क्रोध में आकर यज्ञ को विनष्ट कर दिया और इंद्र को अभिशाप दिया किन्तु मंत्र उच्चारण के समय दुर्भाग्यवश स्वराघात अन्य शब्द पर दे दिया जिससे इन्द्र के स्थान में उसी की मृत्यु हो गई।

शुक्र—दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य, बच्चे का जन्म दिन शुक्रवार प्रतीत होता है।

शिवगरुड़—इनके सम्बन्ध में यह कथा प्रसिद्ध है :—

चंद्रलोक को अमृत के लिए जाते समय मार्ग में गरुड़ को भूख लगी तो ध्रुव पर ठहर-कर इन्होंने अपने पिता कश्यप से कुछ खाने को माँगा। कश्यप ने अपने पुत्र को एक झील दिखला दी जिसमें एक कछुआ और एक हाथी लड़ रहे थे। कछुआ ८० मील लम्बा था और हाथी १६० मील। गरुड़ एक पंजे से हाथी और दूसरे से कछुआ पकड़कर एक पेड़ के ऊपर जा बैठे जो ८०० मील ऊँचा था। वह पेड़ इस भार को सहने में असमर्थ रहा। उसकी एक शाखा पर हजारों बौने पूजा कर रहे थे। इस भय से कि कोई मर न जाय वे डाली को चोंच में दबाकर हाथी तथा कछुए को लिए एक निर्जन पर्वत पर उड़ गये जहाँ उन्होंने हाथी तथा कछुए से अपनी भूख मिटाई। इस प्रकार अनेक पराक्रम करते हुए गरुड़ चंद्रलोक में पहुँचे और उसको पकड़कर पंख के नीचे छिपा लिया और लौटने को उद्यत हुए। देवता चंद्रमा को छुड़ाने के लिए गरुड़ से युद्ध करने लगे। अन्ततोगत्वा उन सब में सन्धि हो गई। विष्णु ने गरुड़ को अमर बना दिया। गरुड़ ने विष्णु के वाहन होने की स्वीकृति दे दी। उस समय से विष्णु गरुड़ पर सवारी करते हैं और उनके रथ के ऊपर ध्वजा पर गरुड़ का चित्र रहता है। मेघनाद से युद्ध करते समय गरुड़ ने राम-लक्ष्मण को नाग फाँस से मुक्त किया था। गरुड़ पक्षियों के राजा हैं। इनके नाम से एक गरुड़ पुराण भी है। शिव कदाचित् कल्याणकारी के अर्थ में उसका विशेषण हो।

संपाती—जटायु के भाई का नाम।

ग—गौण शब्द :—

(१) **वर्गात्मक**—राय; सिंह

(२) **सम्मानार्थक**—(अ) उपाधिसूचक—आचार्य

(३) **भक्ति परक**—कुमार, चंद्र, दत्त, दयाल, दास, दीन, देव, नाथ, नारायण, पति, पाल, प्रसाद, मणि, मल, मित्र, राज, राम, लाल, विहारी, वीर, शरण, शिव, सेन।

३—विशेष नामों की व्याख्या :—

आकाशमित्र—आकाश पंच तत्वों में से एक है जिसका गुण शब्द है। दिन में सूर्य के प्रकाश से और रात्रि को चंद्र तथा नक्षत्रों के प्रकाश से चमकता रहता है। इसे विष्णुपद भी कहते हैं। व्यापकत्व तथा प्रकाश के कारण देवत्व को प्राप्त हो गया है।

कुजेंद्रदत्त—कु = पृथ्वी से उत्पन्न मंगल, मंगलवार की ओर संकेत है (बच्चा मंगल को उत्पन्न हुआ होगा)

चित्रसेन—गंधर्वों के राजा।

जलधरसिंह—(१) जलधर अर्थात् मेघ इंद्र के सेवक समझे जाते हैं।
(२) मेघ के सदृश श्याम वर्ण कृष्ण।

देवपूजन राय – देवताओं के पूज्य गुरु बृहस्पति (जन्म दिन बृहस्पति हो सकता है)।

द्विजराज, पन्नगेश, बाजपति—यह तीनों पक्षियों के राजा गरुड़ के नाम हैं। द्विज, पन्नग, बाज पक्षी के पर्यायवाचक हैं।

भोगमणि—भोग का अर्थ सर्प और मणि श्रेष्ठ, सर्पों में श्रेष्ठ अर्थात् शेष भगवान्।

४—समीक्षण

इस स्फुट संग्रह में उन छोटे-छोटे देवों के नाम उल्लिखित हैं जो किसी कारण जन-विशेष के प्रिय हो गये हैं। इसमें कुछ एकाकी तथा कुछ गणदेवता एवं देवयोनियाँ सम्मिलित हैं। धरती माता तथा आकाश को हम तात्विक देवता कह सकते हैं। देवगुरु बृहस्पति एवं दैत्यगुरु शुक्राचार्य अपने प्रकांड पाडित्य तथा अगाध ज्ञान के लिए प्रसिद्ध हैं। सप्ताह के दो दिन गुरुवार तथा शुक्रवार इन्हीं दोनों के नाम से अभिहित हैं। दक्ष प्रजापति, यम के मन्त्री चित्रगुप्त, सृष्टिकर्ता विश्वकर्मा, स्वर्ग वैद्य अश्विनी कुमार, गन्धर्वराज चित्रसेन, इंद्रात्मज जयंत, चतुर्थ युग का राजा कलिदेव तथा राहु एक श्रेणी में विराजमान हैं। विष्णु तथा शिव के वाहन गरुड़ एवं नन्दिदेव देवसंसर्ग से सुर कोटि में ही गिने जाते हैं। दुष्टों का दलन करने वाला विष्णु का आयुध चक्र सुदर्शन भी वांछनीय है। स्वर्ग का कल्पवृक्ष सब कामनाओं को पूर्ण करता है। गण देवता तथा अन्य देव योनियों में ऊर्वा, ऋभु, किन्नर, गंधर्व, दिग्गज, दिग्पाल, यक्ष, लोकपाल, वसु, विद्याधर का उल्लेख यहाँ मिलता है। इनके नाम केवल निदर्शन के रूप में ही प्रयुक्त हुए प्रतीत होते हैं। ऊर्वा तथा ऋभु से जनता नितांत अनभिज्ञ है। शेष भौतिक देव पृथ्वी तथा आकाश एवं गुरुद्वय इस संकलन के लोकप्रिय देव दिखलाई देते हैं। विष्णु के अवतार शेष भगवान् के अधिकाश नाम पृथ्वी के पर्याय से बने हैं। कभी-कभी अप्रसिद्ध तथा अशुभ देवताओ के अभिधानों पर भी नाम रख लिये जाते हैं। इसका मूल हेतु यह हो सकता है कि उन देवों का सम्बंध किसी तिथि, वार, नक्षत्रादि से रहता है। जिससे बच्चे का नाम तिथि नक्षत्रादि पर न रखकर उससे सम्बंधित देवता के नाम पर रख लिया जाता है। भरणी नक्षत्र में उत्पन्न बालक का नाम यम के योग से बनाया जा सकता है। क्योंकि उस नक्षत्र का देवता यम है। इसी प्रकार राहु, शनि, कलि आदि अन्य अप्रिय एवं अशुभ देवों के नाम भी हो सकते हैं। इस प्रकरण में सबसे अधिक नाम शेष पर हैं। इसका कारण यह है कि उसका सम्बंध शिव, विष्णु तथा नागपंचमी पर्व से है।

इतर देवियाँ

१—गणना

क—क्रमिक गणना—इस प्रवृत्ति के अंतर्गत नामों की संख्या ४० है।

(२) मूल शब्दों की संख्या—२२

(३) गौण शब्दों की संख्या—१३

ख—रचनात्मक गणना :—

एक पदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	योग
६	२८	६	=४०

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द—अजनी, उसई, कनकलता, गो, तुलसी, नन्दिनी, परी, बेलन, बेला. बेली, भालदा, मालती, मीना, मैना, रतलू, रति, रत्ती, लीला, शचि, सिद्धि, सिमई।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति :—

अंजनी—यह हनुमान की माँ अजना है। यह कुंजर कपि की कन्या और केशरी कपि की स्त्री थी। पूर्व जन्म में यह पुंजिकास्थी नामक अप्सरा थी जो एक अभिशाप के कारण वानरी के रूप में इस पृथ्वी पर अवतरित हुई। एक दिन जब कि वह गिरि शृंग पर बैठी थी, पवनदेव उसके रूप पर मुग्ध हो गये। उनसे हनुमान की उत्पति हुई जो शक्ति, एवं तेज में मरुत् के सदृश हैं।

उसई—ऊषा का विकृत रूप है। यह बलि के पुत्र दैत्यराज वाणासुर की कन्या थी। जो अनिरुद्ध को ब्याही गई थी। ऊषा ने एक दिन स्वप्न में अनिरुद्ध को देखा और वह उन पर मुग्ध हो गई उसकी सखी चित्रलेखा ने सब राजकुमारो के चित्र उससे मँगवाने को कहा इस उपाय से उसने अनिरुद्ध को पहचान लिया। सखी अनिरुद्ध को द्वारका से उठाकर ले गई और ऊषा के साथ ब्याह करा दिया।

कनकलता—एक देवी।

गो—गाय भारतवर्ष का आदरणीय पशु है। हिन्दू लोग इसको गो माता कहते हैं क्योंकि खेती के लिए बैल तथा भोजन के लिए अमृत के समान दूध देती है और उनके विश्वास के अनुसार मृत्यु के पश्चात् वैतरणी पार कराती है। इसी लिए वे मृत्यु के पहले गोदान करते हैं।

तुलसी—जलंधर दैत्य की स्त्री वृंदा विष्णु के शाप से तुलसी का पौधा बन गई। प्रतिवर्ष हिन्दू इसका ब्याह शालग्राम से करते हैं। यह पौधा हिन्दुओं मे बहुत पवित्र माना जाता है। वे इसको नित्य पूजा करते हैं।

नंदिनी—कामधेनु की कन्या नन्दिनी महर्षि वशिष्ठ की गाय थी जिसकी सेवा से महाराज दिलीप ने महा प्रतापी रघु को प्राप्त किया।

परी—अप्सरा को उर्दू में परी कहते हैं। ईरान की प्राचीन कथा के अनुसार कोह काफ पर्वत पर रहनेवाली कल्पित परम सुन्दरी स्त्रियाँ जिनके कंधों पर उड़ने के लिए पंख होते हैं। राजा इंद्र के अखाड़े की परियाँ प्रसिद्ध हैं।

बेला—पृथ्वीराज की कन्या बेला जो आल्हा-ऊदल के चचेरे भाई ब्रह्मानन्द की स्त्री थी और जो उसके साथ सती हो गई थी। बेलोन गाँव में इनका एक मन्दिर है जहाँ पर भक्त लोग पूजा करने जाते हैं।

भालदा—यह भाग्य की अधिष्ठातृ देवी है।

मालती—वृंदा की भस्म से तीन पोधों का प्रादुर्भाव हुआ (१) तुलसी, (२) मालती और (३) आँवला। कदाचित् इसी कारण प्रसिद्ध मालती पवित्र तथा पूज्य मानी जाती है। पार्वती का भी नाम है।

मीना—ऊषा की कन्या जिसका ब्याह कश्यप से हुआ था अथवा मैना पार्वती की माँ।

मैना—मेनका—यह हिमालय की स्त्री, पार्वती की माता का भी नाम था।

रतलू—यह रति लाल या रतन लाल का विकृत एवं ऊनवाचक रूप प्रतीत होता है। रति कामदेव की स्त्री का नाम है।

लीला—भगवान् की माया को लीला कहते हैं जो विविध रूपों में अभिनय करती है।

शचि—इंद्र की स्त्री का नाम।

सिद्धि—(१) दुर्गा—देखिए पार्वती में (२) दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम (३) गणेश की दो स्त्रियों में से एक (४) राजा जनक की पुत्रवधू (५) योग की आठ सिद्धियाँ—अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व और कामवसायिता।

ग—गौण शब्द

(१) वर्गात्मक—सिंह।

(२) सम्मानार्थक (अ)—आदरसूचक—जी।

(३) भक्तिपरक—कुमार, चंद, चरण, दत्त, दानी, दास, प्रसाद, मा, लाल, राम, सहाय।

३—विशेष नामों की व्याख्या

मुखराम—व्रज में मुखरा देवी का मन्दिर मुखराम (मोक्षराज तीर्थ) में है।

सिमईराम—(१) सेमई सिमरी का विकृत रूप प्रतीत होता है जो श्यामला सखी का अपभ्रंश है। नरी—सेमरी यह दोनों श्री राधिकाजी की सेवक सखियाँ हैं और व्रज की देवी हैं जिन्हें नवदुर्गा में भक्त बड़ी दूर-दूर से पूजने के लिए आते हैं। (२) समया देवी का विकृत रूप प्रतीत होता है जो भगवती पार्वती का ही रूपांतर माना जाता है। (३) सावन का सिमई पकवान।

४—समीक्षण

इस समुच्चय में १८ देवियों के नाम निर्देश किये गये हैं। आराधना की दृष्टि से इनका कोई विशेष स्थान नहीं है। इनमें शचि, मीना, मैना, रति तथा सिद्धि देवांगना हैं। भालदा भाग्य की अधिष्ठातृ देवी प्रतीत होती है। अंजनी, नंदिनी, ऊषा और परी देव-योनि विशेष हैं। लीला भगवान् की माया प्रतीत होती है, वृन्दा की भस्म से उत्पन्न तुलसी तथा मालती विष्णु के प्रताप से देवत्व को प्राप्त हो गई हैं। बेला को अपने सतीत्व के हेतु सुरसंज्ञा मिली प्रतीत होती है। पश्चिमी जनपदों के नर-नारी उसे पूजने बेलोन ग्राम में जाया करते हैं। कनकलता का कुछ परिचय नहीं मिलता। कृषिप्रधान देश के लिए आर्थिक दृष्टि से गाय की देव प्रतिष्ठा अत्यंत महत्त्वशाली एवं कल्याणकारी है। वह अमृत सा दूध देकर हमारा पालन-पोषण करती है तथा वृषभ देकर हमारे धामों को धन-धान्य से परिपूर्ण करती है।

इस अत्यंत अल्पतम राशि से विदित होता है कि सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती, राधा तथा सीता इन पाँच प्रमुख देवियों के समक्ष अन्य देवियों का कार्यक्षेत्र नगण्य सा ही है।

राम सम्बन्धी अवतार

१—गणनात्मक

(क) क्रमिक गणना

१—नामों की संख्या—२१०

२—मूल शब्दों की संख्या—६१

३—गौण शब्दों की संख्या—३५

(ख) रचनात्मक

नाम	एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	योग
सीता	४	२२	९	३	३८
लक्ष्मण	६	२४	६	०	३६
भरत	३	११	४		१८
शत्रुघ्न	२	८	१०	०	२०
हनुमान	४	५२	३२	१०	९८
	१९	११७	६१	१३	=२१०

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द

१—सीता—अवधेश्वरी, जनकसुता, जानकी, मिथिलेश्वरी, मैथिली, रमा, रामती, (राम स्त्री) रामदेवी, रामप्रिया, रामवल्लभा, रामा, वैदेही, सितई (सीता), सिया (सीता), सीता।

२—लक्ष्मण—उर्मिलानन्दन, उर्मिलाप्रसाद, उर्मिलामोहन, रामसहोदर, रामानुज, लक्ष्ण, लक्ष्मण, लखन (लक्ष्मण), लखनियाँ (लक्ष्मण), लछमन, (लक्ष्मण), लछिमना (लक्ष्मण), लषण (लक्ष्मण), लषन (लक्ष्मण), सुमित्रा नन्दन, सुमित्राप्रसाद।

३—भरत—केकईनन्दन, भरत, भरतू, भरतो, भरथ, भर्त (भरत)।

४—शत्रुघ्न—अरिदमन, अरिमर्दन, भरतानुज, रिपुंजय, रिपुखंडन, रिपुदमन, रिपुसूदन, शत्रुघन (शत्रुघ्न), शत्रुघ्न, शत्रुजीत, शत्रुदमन, शत्रुसूदन, शत्रुहन (शत्रुघ्न)।

५—हनुमान—अंजनीकिशोर, अंजनीकुमार, अंजनीनन्दन, अंजनीवीर, अनिलकुमार, अनिलमोहन, केशरीकिशोर, केशरीचंद्र, केशरीनन्दन, केशरीनारायण, केशरीप्रसाद, केशरीमल, केशरीलाल, केशरीशरण, केशरीसिंह, केसरीकुमार, केसरीमोहन, दुखमोचन, पवनकुमार, प्रभंजनकिशोर, वजरंग, बजरंगी, वालकेशरी, महावल, महावली, महावीर, मारुति, रामसेवक, वायुनन्दन, वीरहरि, संकटमोचन, संकटहरण, समीरकुमार, हनु, हनुमंत, हनुमत हनुमान, हनूमान, हनू (हनुमान), हरिनाथ, हरीश।

टिप्पणी—वायु के पर्यायवाचक शब्द अनिल, पवन, प्रभंजन, मरुत, वायु, समीर।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति

सीता—मिथिला के राजा जनक की कन्या थीं इनकी उत्पत्ति पृथ्वी से हुई मानी जाती है। इनका ब्याह रामचन्द्र के साथ हुआ था। वन जाते समय यह भी रामचन्द्र के साथ गई थीं। वन से रावण इनको हर ले गया और अशोक वाटिका में रखा। रावण की मृत्यु के बाद यह फिर रामचन्द्र के पास आ गईं। यह अत्यंत सती, साध्वी तथा पतिव्रता थी। लवकुश नामक दो पुत्र इनसे उत्पन्न हुए।

लक्ष्मण—राम के छोटे भाई थे। १४ वर्ष राम के साथ वन में रहे और दत्तचित्त होकर अपने बड़े भाई की सेवा की। मेघनाद-वध इनके हाथ से हुआ।

भरत—यह रामचन्द्र के छोटे भाई थे। राज मिलने पर भी इन्होंने स्वीकार न किया। सब प्रकार से रामायण के पात्रों में इनका आदर्श चरित्र[1] है।

शत्रुघ्न—यह लक्ष्मण के छोटे भाई उग्र स्वभाव के थे।

हनुमान—देखिए आगे समीक्षण।

ग—गौण शब्द

१—वर्गात्मक—राय, वर्मा, सिंह!

२—सम्मानार्थक (अ) आदरसूचक—जी

---

[1] सिय-राम प्रेम पियूष पूरण होत जन्म न भरत को।
मुनि मन अगम यम नियम शम दम विषमव्रत आचरत को।
दुख दाह दारिद दम्भ दूषण सुयश मिसु अपहरत को।
कलिकाल तुलसी से शठहि हठि राम सम्मुख करत को॥
रामायण-अयोध्याकांड

३—भक्तिपरक— अवतार, किशोर, कुमार, चन्द्र, चरण, दत्त, दयाल, दास, दीन, देव, नन्द, नन्दन, नारायण, पाल, प्रकाश, प्रताप, प्रसाद, प्यारे, वक्स, बली, बहादुर, मल, राम, लाल, विहारी, शरण, सहाय, स्वरूप ।

४—सम्मिश्रण—राम, शंकर, सिया ।

३— विशेष नामों की व्याख्या

सीता :—

रामाद्या—सीता को आदि शक्ति भगवती माना गया है ।

लक्ष्मण :—

उर्मिलानन्दन—उर्मिला लक्ष्मण की स्त्री का नाम है । यह नाम लक्ष्मण के पुत्र चित्रकेतु तथा अंगद की ओर भी संकेत करता है ।

शत्रुघ्न :—

अरिदमन, अरिमर्दन, रिपुदमन, रिपुसूदन, शत्रुघ्न, शत्रुघ्न—यह शत्रुघ्न के पर्यायवाची नाम हैं जो शत्रु तथा दमन आदि के पर्यायवाचक शब्दों से बने हैं, जिनका अर्थ शत्रु का जीतना, दमन करना, मारना आदि होता है । ये नाम प्रायः उपाधिसूचक हैं ।

हनुमान :—

अंजनी किशोर, अंजनी वीर—अंजनी हनुमान की मा का नाम है । अंजनी वीर में वीर पुत्र का वाचक है ।

अनिल कुमार[1]—अनिल वायु के अर्थ में आता है । हनुमान वायु के अवतार समझे जाते हैं ।

केशरी किशोर—केशरी हनुमान के पिता का नाम है ।

दुख मोचन—यह दुख से छुड़ानेवाले हनुमान की उपाधि है "को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो" ।

प्रभंजन किशोर - प्रभंजन नाम वायु का है जिसके हनुमान अवतार बतलाये जाते हैं ।

बजरंग—यह बज्रांग का विकृत रूप है, वज्र है अंग जिसका अर्थात् हनुमान ।

मारुति— देखिए अनिलकुमार ।

राम हरीश सिंह—हरीश का अर्थ कपियों का स्वामी अर्थात् हनुमान ।

वीर हरि—हरि का अर्थ कपि होता है । यह नाम हनुमान का द्योतक है ।

संकट मोचन—देखिए दुख मोचन ।

हरि नाथ—बन्दरों के स्वामी अर्थात् हनुमान ।

४—समीक्षण

सीता—यह आदि शक्ति अवध के महाराज रामचन्द्र की स्त्री तथा मिथिला के विदेहराज जनक की पुत्री हैं । खेत के कूर (सीता) में प्राप्त होने से यह नाम पड़ा । जानकी तथा वैदेही अपत्य वाचक हैं । सितई और सिया सीता के दो विकृत रूप हैं । यह राम को अत्यंत प्रिय हैं । इतना ही परिचय इस संग्रह से प्राप्त होता है ।

लक्ष्मण—ये दशरथ की तीसरी रानी सुमित्रा से उत्पन्न हुए । राम के अनुज तथा उर्मिला के पति हैं । अधिकांश नाम लक्ष्मण शब्द के विकृत रूप से बने हैं ।

१—अनिल कुमार के पिता ने बतलाया कि मेरे सब बच्चों के नाम 'अ' से आरम्भ होते हैं । इसलिए मैंने अनुप्रास के कारण ही यह नाम रख लिया । हनुमान से इस नाम का कोई सम्बन्ध नहीं है ।

भरत—केकई के पुत्र भरत राम के प्रिय अनुज हैं। प्रथम नाम के अतिरिक्त सम्पूर्ण नाम भरत शब्द के योग से बने हैं। भरत के कुछ विकृत रूप भी पाये जाते हैं।

शत्रुघ्न—ये भरत के भाई हैं। भरतानुज दास के अतिरिक्त सम्पूर्ण नाम शत्रु के पर्यायवाची शब्दों में मर्दन शब्द के पर्यायवाचक शब्द जोड़कर बनाये गये हैं। इन नामों से इनके स्वभाव की उद्धता तथा उग्रता प्रकट होती हैं जो रामायण में वर्णित चरित्र को चरितार्थ करती है।

हनुमान—पंच देवों के पश्चात् हनुमान ही एक ऐसे देवता हैं जो भारत में सर्वत्र बड़ी श्रद्धा-भक्ति से पूजे जाते हैं। जिसप्रकार वे अपने स्वामी के कार्य को अत्यंत संलग्नता से करते हैं उसी प्रकार वे अपने भक्तों की रक्षा में भी तत्पर रहते हैं। भक्त पर कोई कैसी ही आपत्ति हो—ये सर्वदा उसको दूर कर देते हैं। शिक्षित हो या अशिक्षित संकट के समय इनको सभी स्मरण करते हैं। दूसरा गुण इनमें यह है आजन्म ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत करने के कारण इनका अंग वज्र के सदृश सुदृढ़ हो गया है। बल के प्रतीक माने जाते हैं, लाखों मनुष्य 'बजरंग बली की जय' बोलते सुनाई देते हैं। महावीर की उपाधि से विभूषित किये जाते हैं। देश में इनके नाम पर सैकड़ो अखाडे चल रहे हैं। वीरता इनका भूषण है। इनके विषय में समुद्र पार करना, सजीवन पर्वत लाना आदि इनके वीरत्व की अनेक कहानियाँ रामायण में वर्णन की गई हैं। महाबली हनुमान पवन के अवतार हैं। मरुत के सदृश ही इनका अनिरुद्ध वेग तथा बल अनन्त है। इनकी माता का नाम अंजना है, केशरी पिता हैं। कपियों के नायक हैं तथा राम के अनन्य भक्त हैं। दास्यासक्ति का ऐसा उत्तम दृष्टान्त अन्यत्र नहीं मिल सकता। सेवक में जो गुण होने चाहिए वे सब इनके चरित्र में पुंजीभूत हैं, सेवा धर्म के प्रतीक हैं। सच्चे सेवक की भाँति, "रामकाज करिवे को आतुर" रहते हैं। दया, क्षमा, अनसूया, शौच, अनायास—मंगल, अकार्पण्य एवं अस्पृहा समवेत होकर इनमें मूर्तिमंत हो जाते हैं। जिसमें प्रेम, सहानुभूति तथा दयालुता है, जो दूसरों के दुख से द्रवित हो सहाय के लिए सद्य सन्नद्ध रहता है वही संकट-मोचन पद का अधिकारी है।

एक बार बचपन में गिरने के कारण इनकी ठोडी (हनु) में चोट आ गई। इसलिए हनुमान कहलाने लगे। सम्भव है शत्रुओं का मान मर्दन करने से यह नाम पड़ा हो। इस नाम के हनुमंत, हनुमत, हनुमान, हनूमान रूप प्रयुक्त हुए हैं। हनू विकृत रूप है। यह समुच्चय अत्यन्त अल्प होते हुए भी हनुमान के वंश, उज्ज्वल चरित्र तथा सद्गुणो का सम्यक परिचय देता है।

हरि के अतिरिक्त कोई शब्द नहीं जिससे इनके बानरत्व का बोध हो। यह शब्द अनेकार्थी होने से राम का द्योतक है। हरिनाथ या हरीश को बहुव्रीहि समास मानकर विग्रह करने से यह सुन्दर अर्थ निकलता है, हरि हैं नाथ (ईश) जिसके अर्थात् हनुमान।

कृष्ण सम्बन्धी अवतार

१—गणना

क—क्रमिक गणना—(१) कृष्ण सम्बन्धी अवतार प्रवृत्तियों के अन्तर्गत नामों की संख्या २०६ है :—

२—मूल शब्दों की संख्या—६२

३—गौण शब्दों की संख्या—३२

ख—रचनात्मक गणना—

नाम	एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	पंचपदी नाम	योग
राधा	६	३९	३	१		४९
बलदेव	१०	५०	४४	३	१	१०८
प्रद्युम्न	१	८	१			१०
अनिरुद्ध	१	८	१	१		११
वसुदेव	२	४	१			७
देवकी	१	३	१			५
रोहिणी		१				१
रेवती	१	५				६
यशोदा	१	२				३
नन्द	२	७				९
	२५	१२७	५१	५	१	२०९

२—विश्लेषण

क मूल शब्द :—

(१) राधा—किशोरी, नागरी, बिंदा (वृन्दा), विंदोली (वृन्दा), बिन्द्रा, माधुरी, राधा, राधिका, राधे (राधा), लल्ली, लाड़िली, वृन्दा, व्रज नागरी, व्रजबाला, व्रजेश्वरी, श्यामा।

(२) बलदेव—कृष्णवीर, केशवीर, गौरकिशोर, गौर गोपाल, दाऊ, धेनुकराम, नीलपट, नीलाबर, बलई, बलकरण, बलकांत, बलकेश, बलकेश्वर, बलजीत, बलदाऊ, बलदी, बलदुआ, बलदेव, बलधारी, बलबहादुर, बलभद्र, बलराज, बलराम, बलवंत, बलविहारी, बलसहाय, बलसिंह, बलस्वरूप, बलुआ, बलेश, बलेश्वर, बलैया, बलोत्तम, बल्ला, बल्लो, बल्लू, बल्ले, योगेशवीर, राम रेवतीकांत, रेवतीरंजन, रेवतीरमण, रेवतीराम, रेवतीवल्लभ, रेवतीसिंह, रोहिणीकुमार, रोहिणीनन्दन, संकर्षण, सारभद्र, हलई, हलधर, हलवल, हलिवंत, हलीना, हल्ली।

टि०—बलदेव के विकृत रूप —बलई, बलदाऊ, बल्दी, बलदुआ, बलुआ, बलैया, बल्ला, बल्ली, बल्लू, बल्ले।

(३) प्रद्युम्न—प्रद्युम्न, रुक्मिणी नंदन

(४) अनिरुद्ध—अनिरुद्ध, अनुरिद्ध (अनिरुद्ध), उषाकांत उषापति, उषेंद्र, ऊसाराम

(५) रेवती रेवती

(६) वसुदेव—देवकीराम, बसुआ, बसुदेवा, बस्सू, रोहिणीरमण, वसुदेव।

टि०—वसुदेव के विकृत रूप—बसुआ, बसुदेवा, बस्सू

(७) देवकी —देवकी।

(८) रोहिणी—रोहिणी।

(९) यशोदा—जशोदा (यशोदा), जसौधी (यशोदा)

(१०) नंद—नन्द, नन्दू (नन्द)

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति :—

राधा—गोकुल की एक गोपी जो कृष्ण को अत्यंत प्यारी थी।

विशेष समीक्षण में देखिए।

बलदेव या बलराम—कृष्ण के बड़े भाई थे जो रोहिणी से उत्पन्न हुए थे जिनका पालन-पोषण भी कृष्ण के साथ गोकुल में नन्द के घर हुआ था। शैशवावस्था में ही इन्होंने धेनुक, प्रलंब आदि राक्षसों का वध किया। यह नीलाम्बर धारण करते थे। हल इनका आयुध था। इनकी स्त्री का नाम रेवती था। यह शेष के अवतार माने जाते हैं। प्यार मे इनको दाऊजी कहते थे।

प्रद्युम्न—कृष्ण और रुक्मिणी के पुत्र थे। यह कामदेव के अवतार माने जाते हैं। जब यह ६ वर्ष के थे तो संवर दैत्य इनको चुराकर ले गया और समुद्र में फेंक दिया। एक मछली ने इनको निगल लिया। उस मछली को एक कैवर्त ने पकड कर उसी दैत्य के घर भेज दिया। मछली का उदर चीरने पर एक सुन्दर बालक मिला जिसे रानी मायावती ने बड़े यत्न मे पाला। संवर को मारकर प्रद्युम्न अपनी स्त्री मायावती के साथ अपने घर आये।

अनिरुद्ध—प्रद्युम्न के पुत्र तथा कृष्ण के पौत्र थे। वाणासुर की कन्या ऊषा से इनका ब्याह हुआ था।

वसुदेव—कृष्ण के पिता का नाम।

देवकी—कृष्ण की माता का नाम।

रोहिणी—बलराम की माँ वसुदेव की दूसरी स्त्री का नाम।

यशोदा—गोकुल के प्रधान गोपनन्द की स्त्री का नाम था। इन्होंने कृष्ण का लालन-पालन किया था।

नंद—देखिए यशोदा।

ग—**गौण शब्द**

(१) **वर्गात्मक**—राय, सिंह, सिनहा।

(२) **सम्मानार्थ**—(अ) आदरसूचक—जी।

(३) **भक्ति परक**—अधीन आनन्द, किशोर, कुमार, चंद्र, चरण, दत्त, दयाल, दास, दीन, नारायण, प्रताप, प्रसाद, बक्स, बहादुर, भवानी, मल, मूर्ति, राज, रूप, लाल, विहारी, शरण, सहाय, स्वरूप।

(४) **सम्मिश्रण**—कृष्ण, राम।

३—विशेष नामों की व्याख्या

राधा :—

किशोरी—यह राधा का नाम है जो किशोरावस्था के कारण पड़ा है।

नागरीप्रसाद, व्रजनागरीप्रसाद—नागरी शब्द राधा के चातुर्य गुण की ओर इंगित करता है।

प्रियादास—कृष्ण की अत्यंत प्यारी होने के कारण राधिका को प्रिया कहा गया है।

बिंदा—यह बृन्दा का विकृत रूप है जो राधा के लिए व्यवहृत होता है।

लल्ली, लाड़िलीप्रसाद—लल्ली, लाड़िली राधा के दुलार के नाम हैं।

व्रजबाला प्रसाद—राधा व्रज की स्त्रियों में कृष्ण की प्रिया होने के कारण सर्वोत्तम समझी जाती हैं।

श्यामा—यथार्थ में राधिका जी गौर वर्ण की थीं किन्तु श्याम वर्ण कृष्ण की प्रिया होने के कारण उनको श्यामा कहते हैं।

बलराम :

कृष्णराम—यहाँ राम शब्द कृष्ण के साहचर्य से बलराम का द्योतक है।

केशवीर—केशी दैत्य को मारने के कारण कृष्ण के लिए केश नाम प्रयुक्त हुआ प्रतीत होता है। उनके भाई बलराम अथवा केश विष्णु (कृष्ण) को भी कहते हैं।

गौरकिशोर, गौर गोपाल—ये दोनों नाम बलराम के लिए प्रयुक्त हुए प्रतीत होते हैं। क्योंकि वही गौर वर्ण थे। संभव है ये दोनों कृष्ण मूर्तियाँ हों।

दाऊजी—दाऊ बलदेव के लिए प्यार का शब्द है जो बलदेव के अपभ्रंश बलदाऊ का सूक्ष्म रूप है। अथवा कृष्ण के दादा (बड़े भाई) होने से दाऊ कहलाये।

धेनुकराम—धेनुकासुर को मारने के कारण बलराम का यह नाम पड़ा।

नीलपट, नीलांबर—नीला वस्त्र धारण करने के कारण बलदेव के ये दोनों नाम हुए।

बलकरण—बल है आभूषण जिसका अर्थात् बलराम।

बलकेश—यह नाम राम कृष्ण दोनों भाइयों की ओर सङ्केत करता है। बल-बलदेव + केश-कृष्ण।

बलकेश्वर प्रसाद—यह नाम स्पष्ट नहीं है।

कदाचित् बलकेश का अपभ्रंश हो अथवा बलकना (उत्तेजित होना) से बलक हो गया हो। बलराम शीघ्र ही उत्तेजित हो जाते थे अथवा बलीक ('ओलती' ओरी) से इसका सम्बन्ध हो। इस अवस्था में यह अंधविश्वास के अंतर्गत होना चाहिए। (बालकेश्वर महादेव)।

रेवतीकांत—रेवती बलभद्र की स्त्री का नाम है।

रोहिणीकुमार—रोहिणी उनकी माता का नाम है।

संकर्षण—यह शब्द खींचने के अर्थ में आता है। एक बार बलराम ने क्रोध में आकर जमुना जी का हल के द्वारा संकर्षण किया था अथवा 'संकर्षणातु गर्भस्य स हि सकर्षण युवा।" (हरिवंश)। बलदेव को देवकी की कुक्षि से निकाल कर रोहिणी के उदर में स्थापित किया गया इसी से उनको संकर्षण कहते हैं।[1]

सखाचंद्र राम—राधिका जी की आठ सखियों के चद्रमा अथवा सखी (राधिका) के चद्रमा अर्थात् श्री कृष्ण, राम बलराम का उत्तरांश है।

सारभद्रसिंह—सार बल के अर्थ में आता है। सारभद्र का अर्थ बलभद्र हुआ।

हलई, हलोनालाल, हल्लो—यह हली के विकृत रूप हैं जो बलराम के लिए प्रयुक्त होते हैं क्योंकि उनका आयुध हल ही है।

प्रद्युम्न :—

प्रद्युम्न कृष्ण—पिता पुत्र का सम्बंध है।

रुक्मिणी नंदन—रुक्मिणी के पुत्र।

अनिरुद्ध :—

उषाकांत—उषा अनिरुद्ध की स्त्री का नाम है।

ऊसाराम—यह ऊषा का विकृत रूप है।

४—समीक्षण

राधा—वृषभानु गोप की पुत्री राधा किशोरावस्था में है। अपने रूप माधुर्य के कारण वह

---

[1] गर्भसङ्कर्षणात्सोऽथ लोके सङ्कर्षणेतिवै।
संज्ञामवाप्स्यते वीरश्श्वेताद्रिशिखरोपमः। ७९।
श्रीविष्णु पु० पंचम अंश ३७७ पृ०

कृष्ण की अत्यंत दुलारी है। गौर वर्ण होते हुए भी श्याम (कृष्ण) के कारण वह श्यामा कहलाती है। कृष्ण प्रवृत्ति में मीमांसा करते हुए यह उल्लेख किया गया था कि कृष्ण के कतिपय नाम राधा से सम्बन्ध रखते हैं। इस समुच्चय में भी राधा के कुछ नाम कृष्ण से सम्बन्धित हैं। नागरी, व्रज नागरी, व्रजेश्वरी, किशोरी, श्यामा ऐसे ही नाम हैं। यह बात उनके अन्योन्य प्रेम के पक्ष में सिद्ध होती है। मधुरभाषिणी राधा सबकी प्यारी है तथा कृष्ण के सदृश चतुर भी है।

बलदेव—वसुदेव तथा रोहिणी के पुत्र हैं, इनकी स्त्री का नाम रेवती है। बल के देवता हैं और हल इनका आयुध है। कृष्ण के बड़े भाई होने के कारण दाऊ जी या बलदाऊ कहलाते हैं। कंस के भय से इनको देवकी के गर्भ से रोहिणी के उदर में पहुँचा दिया। इसलिये इनका संकर्षण नाम पड़ा जिसका अर्थ आकर्षण करना या हल जोतना है। इस नाम के सम्बन्ध में दूसरी घटना यह है कि स्नान के लिए जमुना से कई बार जल माँगा तो उसने इनकी बात पर कुछ ध्यान न दिया। इससे क्रुद्ध होकर वह उसे अपने हल से खींचकर शीघ्र घसीटने लगे। यमुना ने मानव रूप धारण कर बहुत प्रार्थना की तब इस घोर संकट से मुक्ति मिली। इसी प्रसंग से इनको यमुनाधर भी कहते हैं। ये अपने गौर शरीर पर नीलांबर धारण करते हैं। कृष्ण के सदृश इन्होंने भी धेनुक आदि कई राक्षसों का विध्वंस किया। इस अल्प संग्रह के नाम बल, हल, आदि शब्दों के योग से अथवा सम्बन्धियों के नामों के योग से बने हैं। बलदेव के अनेक विकृत रूप व्यवहृत हुए हैं। कृष्ण के सम्पर्क में राम शब्द बलराम का वाचक है।

प्रद्युम्न—प्रद्युम्न की पूरी कथा इन नामों से नहीं निकलती। उनके विषय में हम केवल इतना ही जान सकते हैं कि वे कृष्ण तथा रुक्मिणी के पुत्र थे। रुक्मिणी नन्दन के अतिरिक्त शेष नाम प्रद्युम्नशब्द से ही बने हैं। अशिक्षित तथा उर्दू पढ़ी जनता में इसका विकृत रूप परदुमन प्रचलित है।

अनिरुद्ध—यह कृष्ण के पौत्र थे। इनकी स्त्री का नाम उषा था। इसके अतिरिक्त इन नामों से अन्य कुछ पता नहीं चलता।

वसुदेव—कृष्ण के पिता वसुदेव के दो स्त्रियाँ थीं। एक का नाम देवकी जो मोहन की माँ थीं दूसरी रोहिणी जिनसे बलराम का जन्म हुआ। वसुआ और बस्सू दो विकृत रूप हैं जो पिता पुत्र दोनों के लिए प्रयुक्त हो सकते हैं।

देवकी—यह कृष्ण की जननी का नाम है। भवानी शब्द इनकी महत्ता का सूचक है।

रोहिणी—अकेला नाम केवल इनके नाम का निर्देश करता है (देखिए वसुदेव)।

यशोदा नंद—इनके यहाँ राम, कृष्ण का बचपन में पालन पोषण हुआ। कृष्ण के नाम से इनके विषय में कुछ परिचय मिलता है।

नदियाँ

१—गणना

क—क्रमिक गणना

(१) नामों की संख्या—१०३

(२) मूल शब्दों की संख्या—३२

(३) गौण शब्दों की संख्या—३३

ख—रचनात्मक गणना

नाम	एक पदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	योग
गंगा	५	३७	११	१	५४
यमुना	१	१४	१		१६
नर्वदा	१	७			८
सरयू	१	८	१		१०
अन्य नदियाँ	४	११			१५
	१२	७७	१३	१	१०३

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द

गंगा—अलकनन्दा, गंग, गंगवा, गंगा, गंगू, गंगोली, जाह्नवी, ब्रह्मद्रव, भागीरथी, मंदाकिनी, सुरसरि।

यमुना—कालिंदी, कृष्णा, जमुना, यमुना।

नर्वदा—नर्बदा, नर्मदा, रेवा।

सरयू—सरजू, सरयू।

अन्य नदियाँ—कृष्णा, गोदावरी गोमती, झेलम, ताप्ती, पुनपुन, फलगो, फल्गू, बन्ना, वितस्ता, सिंधु, सिप्रा।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति—

अलकनंदा—बद्रीनाथ की ओर से विष्णु गंगा (सरस्वती) और द्रौण गिरि के पश्चिम से धौली गंगा की धारायें जोशीमठ के पास मिलती हैं। उस संगम का नाम विष्णु प्रयाग है। इससे कुछ ही पहले नन्दादेवी से आनेवाली ऋषि गंगा धौली गंगा से मिलती हैं। विष्णु प्रयाग के बाद संयुक्त धार अलकनन्दा कहलाती है।

गंगा—गंगा हिमवत की ज्येष्ठा कन्या का नाम है। ब्रह्मा के अभिशाप के कारण पृथ्वी पर आना पड़ा, जहाँ पर राजा शान्तनु के साथ ब्याह हुआ। इनके आठ पुत्रों मे भीष्म सबसे छोटे थे। दूसरी कथा के अनुसार भगीरथ अपने पूर्वजों के तारने के लिए घोर तपस्या के बाद गगा को भूतल पर लाये। गंगा की उत्पत्ति की विचित्र कथाएँ प्रसिद्ध हैं। वामनावतार में त्रिविक्रम के चरणोदक को ब्रह्मा ने अपने कमंडल में भर लिया उसी से गंगा की उत्पत्ति बतलाई जाती है। दूसरी कथा यह है कि जब शिव नृत्य कर रहे थे तो विष्णु भगवान् प्रसन्न होकर पानी-पानी हो गये। ब्रह्मा ने तुरन्त झपटकर उस पानी को अपने कमंडल में भर लिया। तीसरी कथा यह है कि पार्वती की बहिन कुटिला अभिशाप के कारण जलरूप हो गई। उसको ब्रह्मा ने अपने कमंडल में भर लिया। अनेक लहरियों में गंगा वर्णन किया गया है।[1]

---

[1] निधानं धर्माणां किमपि च विधानं नव मुदां।
प्रधानं तीर्थानाममल परिधामं त्रिजगतः॥
समाधानं बुद्धेरथ खलु तिरोधानमधियां।
श्रियामाधानं नः परिहरतु तापं तव वपुः॥ जगन्नाथकृत गंगालहरी १८

विधि के कमंडल की सिद्ध है प्रसिद्ध यही,
हरिपद-पंकज-प्रताप की ठहर है।
कहैं पदमाकर गिरीश शीश मण्डल के,
मुंडन की माल ततकाल अघहर है।
भूपति भगीरथ के रथ की सुपुण्य पथ,
जह्नु-जप-जोग-फल फैल की फहर है।
छेम की छहर गंगा रावरी लहर,
कलिकाल को कहर यम जाल को जहर है॥

(पद्माकरकृत गंगालहरी)

जाह्नवी—गंगाजी भगीरथ का अनुसरण करती हुई जब जह्नु ऋषि के आश्रम पर पहुँचीं तो ऋषि ने उसे पी लिया। राजा भगीरथ की प्रार्थना पर उन्होंने अपने कान से गंगा जी को बाहर कर दिया तभी से इनका नाम जाह्नवी हुआ।

ब्रह्मद्रव—ब्रह्मा के कमण्डल में तीन प्रकार का जल था जिससे उन्होंने विष्णु के चरण प्रक्षालन किये। (१) कुटिला का जल रूप (२) विष्णु का जल रूप (३) केलि करते समय पार्वती ने शिव के तृतीय नेत्र को अपने हाथों से ढक लिया। उससे पसीना बहने लगा इस जल को भी ब्रह्मा ने कमण्डल में ले लिया—देखिए गंगा।

भागीरथी—राजा भगीरथ अपने पूर्वजों को तारने के लिए गंगा को स्वर्ग से भूतल पर लाये। इसलिए गंगा का नाम भागीरथी पड़ा।

मंदाकिनी, सुरसरि—यह दोनों नाम गंगा के हैं। (दे० समीक्षण)

जमुना :—

कालिंदी—कलिंद पर्वत से निकलने के कारण जमुना का नाम कालिंदी है।

जमुना—पौराणिक कथा के अनुसार जमुना सूर्य की कन्या तथा यम की बहिन हैं। अविवाहिता रहीं इसीलिए इनका पानी भारी है। कृष्ण वर्ण होने से कृष्णा भी कहलाती हैं।

गोदावरी :—

गोदावरी—गौतम ऋषि ने दण्डकारण्य मे घोर तपस्या कर ब्रह्मा से वरदान प्राप्त किया कि उन्हें किसी वस्तु की कमी न होगी। इसलिए दुर्भिक्षपीड़ित कुछ ऋषि-वृन्द गौतम के आश्रम मे आकर रहने लगे। दुर्भिक्ष के अंत में ऋषिगण अपने-अपने आश्रम जाना चाहते थे। इसलिए वे कोई बहाना सोचने लगे। उन्होंने अपने योग बल से एक गाय उद्भूत की और उसे गौतम के आश्रम में बाँध दिया। गौतम यह बात अपने दिव्य ज्ञान से जान गये। उसके ऊपर मन्त्र पढ़ते हुए जल छिड़का। "जहि" कहते ही गाय गिरकर मर गई। ऋषि गौतम को हत्या का दोष लगाकर अपने आश्रम चले गये। तदनन्तर गौतम ने घोर तपस्या आरम्भ की जिसके फलस्वरूप रुद्र भगवान् प्रसन्न हुए और अपनी जटाओं से कुछ बाल तोड़कर उन्हें दे दिये। एक बाल के प्रभाव से गंगा उस स्थान से प्रवाहित होने लगी जहाँ पर कि मृत गाय पड़ी हुई थी। गंगाजल के स्पर्श से गाय पुनर्जीवित हो गई। इसी कारण उस सरिता का नाम गोदावरी पड़ा।

नर्वदा—गंगा के सदृश नर्वदा का भी बड़ा माहात्म्य है। इसके दोनों तट पवित्र माने जाते हैं, सैकड़ों साधु इसकी परिक्रमा करते हैं। महादेव की नर्वदेश्वर मूर्ति इसमें पाई जाती है। यह अमर-कंटक से निकल कर खंभात की खाड़ी में गिरती है। मत्स्य पुराण में लिखा है कि नर्वदा मानस लोक निवासी सोमपा पितरों की मानस कन्या है।

सरयू—एक पवित्र नदी जिसके किनारे अयोध्या नगरी स्थित है।

अन्य नदियाँ—

कृष्णा—दक्षिण की प्रसिद्ध नदी का नाम।

गोमती—इसके तट पर लखनऊ स्थित है।

झेलम—वितस्ता का नाम झेलम है जो पंजाब की प्रसिद्ध नदी है।

ताप्ती—नर्वदा के दक्षिण में उसी के समानान्तर बहती है।

पुनपुन—गया पहुँचने से पहले यात्रियों को पुनपुन नदी पर श्राद्ध तर्पण करना पड़ता है। इस नदी का यहाँ पर बड़ा माहात्म्य है। पुनः पुनः मुड़ने से यह नाम पड़ा।

फलगो—फलगो नदी गया के पूर्व बहती हुई दक्षिण-उत्तर को गई है। इस नदी में स्नान, तर्पण श्राद्ध तथा पिंडदान का विशेष महत्त्व है।

बन्ना—वरुणा का अपभ्रंश है। यह नदी बनारस के पास बहती है।

सिंधु—पश्चिमी भारत की प्रसिद्ध नदी। यमुना की एक सहायक नदी।

सिप्रा—इस नदी के तट पर उज्जैन नगरी बसी हुई है। इस नदी से महाराज विक्रमादित्य अपने लिए जल भरकर लाते थे। (शिप्रा<शिप्रा-शीघ्र<शि)

ग—गौण शब्द

(१) वर्गात्मक-राय, सिंह

(२) भक्तिपरक—किशोर, कुमार, गुलाम, चद्र, चरण, दत्त, दयाल, दास, दीन, दुलारे, नन्द, प्रताप, प्रसाद, बक्स, बहादुर, मल, मोहन, रत्न, लहरी, लाल, वत्स, वासी, विहारी, शरण, सहाय, सेवक, स्वरूप।

(३) सम्मिश्रण—गनपति, राम, विष्णु, हरि।

३—विशेष नामों की व्याख्या

व्याख्या के लिए समीक्षण देखिए।

४—समीक्षण

स्कन्द पुराण में पांच सौ से अधिक सरिताओं का वर्णन मिलता है नदियों का सम्बन्ध नामों से दो प्रकार का दिखलाई देता है जब जातक नदी के तट पर जन्म लेता है तो उसका नाम उस नदी के नाम पर ही रख लिया जाता है यह भौगोलिक सम्बन्ध है। परन्तु जब बालक का नाम मनौती के कारण धर्म भावना से अपनाया जाता है तो वह धार्मिक सम्बन्ध होता है।

इस संकलन से श्रीगंगा जी की यह पौराणिक कथा प्राप्त होती है। गंगा जी का सम्पर्क तीनों देवों से है। त्रिविक्रम के नखों से प्रवाहित तथा ब्रह्मा के कमंडल से उत्प्लावित हो वह शिव के जटाजूट में विचरण करने लगीं। राजा भगीरथ की कठिन तपस्या के पश्चात् वह भूतल पर राजा के रथ का अनुसरण करने लगीं। मार्ग में जह्नु ऋषि तपस्या कर रहे थे। उन्होंने क्रोध में आ गंगा जी को पी लिया। राजा की बहुत प्रार्थना पर ऋषि ने अपने कान द्वारा पुनः प्रवाहित कर दिया। भगीरथ ने इन्हें सागर में मिला दिया और इनके स्पर्श से उनके साठ सहस्र पूर्वज तर गये।

इस प्रवृत्ति के अधिकांश नाम गंगा शब्द से बने हैं, कुछ नाम भगीरथ तथा जह्नु से सम्बन्ध रखते हैं। उद्गम से निकलते समय पर्वतों में होकर अलकनन्दा के नाम से बहती हैं। समतल भू-भाग में गंगा का प्रवाह गति वेग, कलकल ध्वनि सब मंद पड़ जाते हैं। इसलिए मंदाकिनी नाम पड़ा। स्वर्ग से आने के कारण यह सुरसरि कहलाई।

यमुना - कृष्ण के संसर्ग से इस सरिता का महत्त्व भी अत्यधिक हो गया है। पुराणों में इसे सूर्य की कन्या तथा यम की भगिनी माना है। इन नामों से केवल यही पता चलता है कि वह कलिंद पर्वत से निकली है और जल श्याम वर्ण है।

नर्मदा—इसका मान मध्य भारत में उतना ही है जितना उत्तर में गंगा का। यह रेवा पर्वत से निकली है। आजकल नर्वदा का तत्सम रूप नर्मदा अधिक प्रचलित हो रहा है। इस शब्द का अर्थ है सुख शांति देनेवाली।

सरयू—जिस प्रकार कृष्ण का यमुना से सम्बन्ध है उसी प्रकार सरयू का राम से। नामों से कोई परिचय नहीं मिलता।

सिंधु-झेलम के अतिरिक्त पंचनदों में सतजल (गौरी), रावी (इरावती), चंद्रभागा (चिनाव) और व्यास (विपाशा) का उल्लेख भी मिलता है। सतजल और व्यास का सम्बन्ध वसिष्ठ से बतलाया जाता है।[1]

देश की अनेक छोटी-छोटी नदियों के नाम भी पाये जाते हैं जो अधिक प्रसिद्ध न होने से अन्य प्रवृतियों में चले गये हैं। पार्वती (ग्वालियर), उमा (देविका), गौरी, क्वारी, काली पार्वती प्रवृति में; नारायणी. कमला (दरभगा) लक्ष्मी प्रवृत्ति में; सरस्वती, शारदा (उ० प्र०) सरस्वती प्रवृत्ति में; दामोदर (बिहार), रूप नारायण बंगाल) कृष्ण प्रवृत्ति मे, ईशन शिव प्रवृत्ति में; पुरंदर इद्र प्रवृत्ति में और व्यास सुदामा महात्मा प्रवृत्ति में सम्मिलित हैं। सोन, केन, पाडु, राप्ती गोरखपुर), पूर्णा, सहजाद (ललितपुर), कौशिकी (कोशी) चन्नन, बिहार), वैतरणी (उडीसा), सई, रिंद (अरिंद), वेलन, रोहन, झुरिया (उ० प्र०) आदि अनेक नदियों का प्रभाव नामों पर दिखलाई दे रहा है। खदेरू नाम ससुर खदेरी (प्रयाग) नदी की ओर संकेत कर रहा है।

प्रत्येक नदी के स्नान का फल पृथक्-पृथक् बतलाया गया है। सामान्यतः सब नदियाँ पाप-मोचनी, तापहारिणी, मंगलकारिणी एवं स्वर्गदायिनी मानी गई हैं। इनके तटों पर अनेक तीर्थ होते हैं जिनके दर्शनों से भी प्रचुर पुण्य लाभ कहा गया है। इन नामो से इतना ही जान सकते हैं कि मनुष्यों की इन नदियों के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा-भक्ति है।

---

[1] जब वसिष्ट के १०० पुत्र विश्वामित्र द्वारा मारे गये तो वह सतजल (गौरी) में डूबने चले। गौरी दूर भाग कर सैकड़ों धारा वाली हो गई। इससे उस नदी, का नाम शतद्रु (सतजल) हो गया। यहाँ से बचकर वसिष्ठ अपने को रस्सियों में कसकर अंत्या नदी में कूद पड़े। परन्तु सरिता देवी ने बंधनों को काटकर वसिष्ठ को तट पर फेंक दिया। इससे अंत्या का नाम विपाशा (व्यास) पड़ा। अपने पौत्र पराशर को जीवित देखकर वसिष्ठ ने आत्महत्या का विचार त्याग दिया।

सातवाँ प्रकरण

तीर्थंकर

१—गणना

क—क्रमिक गणना—(१) इसके अंतर्गत नामों की संख्या—१७१

(२) मूल शब्दों की संख्या—४१

(३) गौण शब्दों की संख्या—४०

ख—रचनात्मक गणना

प्रवृत्तियाँ	एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	योग
केवल ज्ञानी	१	३			४
निर्वाणी		३	२		५
सागर	१	६			७
महाशय		१			१
विमल	१	७			८
श्रीधर	१	४			५
दत्त	२	६			८
दामोदर		१	७	१	६
स्वामी		८	३		११
सुमति		५			५
यशोधर	१	१			२
कृतार्थ		२	१		३
जिनेश्वर		१	५		६
ऋषभदेव	१	५	१		७
अजितनाथ	१	३	१	१	६
अभिनन्दन	१	३			४
शीतलनाथ	१	३			४
श्रेयाशनाथ		१			१
अनन्तनाथ	१	६	१		८
धर्मनाथ		१६	१		१७
शांतिनाथ		१५	३		१८
अमरनाथ		४	२		६
नेमिनाथ		४	१		५
सुपार्श्वनाथ		१			१
पार्श्वनाथ	१	७	२		१०
महावीर स्वामी	१	२	४	३	१०
	१४	११८	३४	५	१७१

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द :—

(त) गत उत्सर्पिणी के तीर्थंकर।	(थ) वर्तमान—अवसर्पिणी के तीर्थंकर।
केवल ज्ञानी—केवल।	ऋषभदेव—आदिनाथ, ऋषभ, रिखब।
निर्वाणी—निर्वाण।	अजितनाथ—अजित, अजीत, अजीते।
सागर—सागर।	अभिनंदन—अभिनन्दन।
महाशय—महाशय।	सुपार्श्वनाथ—सुपार्श्व।
विमल—विमल।	शीतलनाथ—शीतल।
श्रीधर—श्रीधर	श्रेयांशनाथ—श्रेयाश।
दत्त—दत्त, दत्ता, दत्ती, दत्तू।	अनतनाथ—अनन्त।
दामोदर—दामोदर।	धर्मनाथ—धर्म।
स्वामी—स्वामी।	शांतिनाथ—शाति।
सुमति—सुमति।	अमरनाथ—अमर।
यशोधर—यशोधर, यशोराज।	नेमिनाथ—नेम, नेमि, नेमी।
कृतार्थ—कृत, कृतार्थ।	पार्श्वनाथ—पारस, पार्श्वनाथ।
जिनेश्वर—जिनवर, जिनेन्द्र, जिनेश्वर।	महावीर स्वामी—महावीर, वर्द्धमान।

ग—गौण शब्द

वर्गात्मक—सिंह

भक्तिपरक—आनन्द, कात, किशोर, कीर्ति, कुमार, चंद्र, चरण, जीत, दत्त, दयाल, दास, दीन, देव, नन्दन, नाथ, नारायण, पाल, प्रकाश, प्रताप, प्रपन्न, प्रसाद, प्रिय, बहादुर, भिक्षु, भूषण, मल, मित्र, मुनि, मोहन, राज, राम, लाल, विहारी, शरण, शील, शेखर, सहाय, सेवक, स्वरूप

३—विशेष नामों की व्याख्या

देखिए मूल प्रवृत्ति (प्रथम भाग) में तीर्थंकर परिचायक सारिणी

४—समीक्षण

जैनियों के ४८ आराध्य देवों में से २८ तीर्थंकरों के नाम इस संकलन मे पाये जाते हैं। १३ नाम गत उत्सर्पिणी के और १५ नाम वर्तमान अवसर्पिणी के सम्मिलित हैं। विमलनाथ तथा सुमतिनाथ, उभय सर्पिणियों में सामान्य नाम हैं। ये नाम उनके जीवन पर कुछ प्रकाश नहीं डालते हैं। कहीं-कहीं व्यक्तिगत नामों से उनकी प्रकृति का आभास मिलता है। किसी-किसी नाम की संख्या अधिक होने का हेतु यह है कि वे नाम अन्य हिन्दू देवो के भी हैं। कृष्ण के दामोदर नाम को तीर्थंकर दामोदर के नाम से पृथक् करने का कोई साधन नहीं है। इसी प्रकार अमरनाथ, श्रीधर, दत्तादि नाम हैं जो हिन्दू देवों एवं जैन तीर्थंकरो—दोनो के लिए व्यवहृत होते हैं। ऐसे सामान्य नाम कोई विभाजक रेखा न होने से अनेक प्रवृत्तियों में आ सकते हैं।

बुद्ध की अपेक्षा तीर्थंकरों ने नामो में अधिक श्रीवृद्धि की है। पूर्व पक्ष के केवल १७ नाम हिन्दी में अपनाये गये हैं किन्तु उत्तर पक्ष की नाम संख्या १७१ है। (इसका कारण स्पष्ट है। दोनों में १:२८ का अनुपात है।) जैनियों तथा हिन्दुओं में व्यावहारिक दृष्टि से बहुत कम अंतर है। दोनों धर्म आपस में बहुत घुलमिल गये हैं, दोनों ने एक दूसरे के नामों को अपनाया है। दोनों में कुछ देवों के नाम सामान्य हैं। इन बातों से इन नामो के प्रचार तथा प्रसार में कुछ सहायता मिली है। इन नामों से ऐसा प्रतीत होता है कि भारत मे बौद्ध धर्म के लोपप्राय: हो जाने से अन्य क्षेत्रों में भी उसके प्रभाव का ह्रास हो गया है। विकृत शब्दों के अभाव से यह प्रतीत होता है कि जैन सम्प्रदाय के अनुयायी प्राय: शिक्षित, शिष्ट एवं समृद्धशाली हैं। केवल उच्चारण की सरलता के लिए पार्श्व का पारस रूप पाया जाता है। विजातीय प्रभाव भी केवल दो नामो में दृष्टिगोचर हो रहा है। इससे उनकी कट्टर साम्प्रदायिकता का पता चलता है।

आठवाँ प्रकरण

महात्माप्रवृत्ति

(अ) ऋषि-मुनि आदि

१—गणना—

क—क्रमिक गणना—(१) इस प्रवृत्ति में नामों की संख्या २३१ है।

(२) मूल शब्द १०६ (३) गौण शब्द ४२

रचनात्मक गणना—

एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	पंचपदी नाम	योग
५०	१४४	२६	६	२	२३१

२—विश्लेषण :—

क—मूल शब्द—अंगिरा, अंबरीष, अकलंक, अगस्त्य, अतर (अत्रि), अत्ति (अत्रि). अत्तू (अत्रि), अत्रेय. अनसूया, अनुसूया, अमरिका, अमरीक, अश्वत्थामा, उद्धव, उद्यालक, उधई (उद्धव), ऊधम (उद्धव), ऊधव, ऊधो (उद्धव), कपिल, कश्यप, कात्यायन, कृपाचार्य, कौशिक, गर्ग, गार्गी, गाल, गालव, गौतम, च्यवन, जंबू, जनु (जह्नु), जमदग्नि (यमदग्नि), जलभरत (जड़भरत), जाबाली, जैमिनी, तोखी, त्रिपान, दत्त, दत्तात्रेय, दधीच, दुर्वासा, दूना (द्रोण), देवव्रत, द्रौण, धन्वंतरि, धू (ध्रुव), धूम (धौम्य), ध्रुव, नरनारायण, पतंजलि, पहलाद (प्रह्लाद), पातंजलि, पाराशर, पुलस्त्य, प्रहलाद (प्रह्लाद), प्रह्लाद, बलि, विखम (भीष्म), भरत, भरद्वाज, भीकम (भीष्म), भीखम (भीष्म), भीषम (भीष्म), भीष्म, भृगु, मनुआ (मनु), मनु, मानव, मारकंडे, मारकंडेय, मीना, मेधातिथि, यमदग्नि, याज्ञवल्क्य, रत्नाकर, लोमश, वशिष्ठ, वामदेव, वाल्मीक वाल्मीकि, विश्वामित्र, विदुर, वैशंपायन, व्यास, शिलंकु, शिवि, दधीच, शुक, शुकदेव, शुकन (शुक), शौनक, श्रवण, श्वेतकेतु, संजय, सतानन्द, सत्यकाम, सत्यकेतु, सत्यवान, सरमन (श्रवण), सावित्री, सुकई, सुखदेव (शुकदेव), सुदामा, सुनीतिकुमार, सुश्रुत।

ख—व्यक्ति परिचय

अंगिरा—एक सप्त ऋषि का नाम है। ब्रह्मा के द्वितीय पुत्र तथा दस प्रजापतियों में से, एक थे। इनके पुत्र बृहस्पति थे।

अंबरीष—सूर्यवंशी एक भक्त राजा। अमरिका और अमरीक विकृत रूप हैं।

अकलंक—अकलंक देव एक बड़े भारी नैयायिक और दार्शनिक जैन विद्वान् हो गये हैं। विद्या और बुद्धि में अद्वितीय थे और शीघ्र ही जैन संघ के आचार्य हो गये। एक बड़े शास्त्रार्थ में बौद्धों को हराया। इनके कई ग्रंथ प्रसिद्ध हैं।

अगस्त्य—एक महर्षि जो मित्रावरुण के पुत्र थे। इनके विषय में अनेक कहानी प्रसिद्ध हैं। घड़े से उत्पन्न होने के कारण यह कुंभज कहलाते हैं। एक बार इन्होंने समुद्र पी लिया था।

अत्रि—एक सप्तर्षि जो ब्रह्मा के नेत्र से उत्पन्न हुए थे। चित्रकूट के पास इनका आश्रम है।

अनुसूया—अत्रि मुनि की स्त्री थीं जिन्होंने सीता जी को पात्यव्रत का उपदेश दिया था। दत्तात्रेय अवतार इन्हीं के यहाँ हुआ था।

अश्वत्थामा—द्रोणाचार्य के पुत्र। यह चिरंजीवी माने जाते हैं।

उद्धव—श्री कृष्ण के बालसखा थे। यह गोपियों को निर्गुण ब्रह्म का उपदेश देने के लिए गये थे परन्तु हार कर लौट आये।

उद्यालक—श्वेतकेतु ऋषि के पिता।

कपिल—साख्य दर्शन के रचयिता एक ऋषि।

कश्यप—(पश्यक का शब्द विपर्यय) एक प्रजापति जो ब्रह्मा के मानस पुत्र थे। देव तथा दानव इनकी संतान मानी जाती है।

कात्यायन—एक ऋषि जिन्होंने पाणिनि अष्टाध्यायी पर वार्तिक लिखे हैं।

कृपाचार्य[1]—एक ऋषि के पुत्र जिनकी बहन कृपी द्रोणाचार्य को ब्याही थी।

कौशिक—देखिए विश्वामित्र।

गर्ग—बृहस्पति के वंश में उत्पन्न एक ऋषि।

गार्गी—(१) गर्ग गोत्र में उत्पन्न एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी स्त्री (२) याज्ञवल्क्य की स्त्री का नाम।

गालव[2]—एक ऋषि का नाम जो विश्वामित्र के शिष्य थे।

गौतम—न्यायदर्शनकार ऋषि।

च्यवन—एक ऋषि जिनके नाम से च्यवनप्राश औषधि प्रसिद्ध है।

जम्बू—जैनियों के अंतिम केवली जम्बू स्वामी राजगृह में उत्पन्न हुए। बचपन का नाम जम्बू कुमार था। स्वामी सुधर्माचार्य के उपदेश से इन्हें वैराग्य हो गया। इन्होंने ४० वर्ष तक धर्मोपदेश किया और वीर संवत् ६२ में मथुरा के चौसी नामक स्थान से मोक्ष पद प्राप्त किया। वहाँ पर इनकी समाधि है।

जनु—(जह्नु) एक ऋषि जिन्होंने गंगा जी को पी लिया था। किंतु भगीरथ की प्रार्थना करने पर कान से निकाल दिया था। इसी से गंगा जी को जाह्नवी कहते हैं।

जमदग्नि—(यमदग्नि) परशुराम के पिता।

जलभरत—(जड़ भरत) अंगिरस गोत्र के एक ब्राह्मण जो जड़वत थे। एक दिन एक मृग अपने बच्चे को छोड़कर इनकी कुटी के पास मर गया। यह दिन रात उसी मृग के बच्चे के ध्यान में लगे रहते थे। दूसरे जन्म में इन्हें भी मृग योनि मिली। फिर अपने तप के कारण एक तपस्वी ब्राह्मण के घर उत्पन्न हुए। यद्यपि वह तत्त्वज्ञानी थे तो भी सांसारिक वस्तुओं से असावधान रहते थे और अस्पष्ट शब्द उच्चारण करते थे, न कोई यज्ञादि करते थे। मैले कुचैले चिथड़े पहन इधर-उधर घूमा करते थे और इस तरह का व्यवहार करते थे कि मनुष्य उनको जड़भरत कहने लगे।

जावाली—कश्यप वंश के एक मुनि जो राजा दशरथ के गुरु थे।

जैमिनि—पूर्व मीमांसा दर्शन के रचयिता।

तोखी—तोष का विकृत रूप है यह कृष्ण के सखा थे। उनके नाम पर तोष गाँव और तोष कुंड हैं।

त्रिपान—तृणपाणि-एक ऋषि का नाम।

दत्तात्रेय—अत्रि और अनसूया के पुत्र जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश, तीनों देवताओं के अवतार समझे जाते हैं।

---

[1] राजा शांतनु को मृगया से लौटते हुए मार्ग में परित्यक्त २ सद्योजात शिशु दिखलाई पड़े। राजा कृपावश उनको पालनार्थ उठा लाये। कृपापूर्वक लाने के कारण बालक कृप और बालिका कृपी कहलाये।

[2] हठ बस सब संकट सहे गालव नहुष नरेश ॥६१॥ (अ० का०)

दधीच—शुक्राचार्य के पुत्र जिन्होने वृत्रासुर को मारने के लिए इंद्र को अपनी हड्डी दे दी थी। इनकी गणना बड़े दानियों में की जाती है।

दुर्वासा—अत्रि मुनि के पुत्र जो स्वभाव के बड़े क्रोधी थे।

दूना—(द्रोण) कौरव पांडव के गुरु, इनका पुत्र अश्वत्थामा था। द्रोण (दौना) से उत्पन्न होने से द्रोण कहलाये।

देवव्रत—भीष्म पितामह का नाम।

धन्वंतरि—एक वैद्य जो समुद्र मंथन के समय समुद्र से अमृत-घट लेकर प्रकट हुए।

ध्रुव—राजा उत्तानपाद के एक पुत्र का नाम जिसने अधिक तपस्या कर देवत्व प्राप्त किया।

धूम—युधिष्ठिर के पुरोहित धौम्य के पिता।

नर नारायण—ये ऋषि विष्णु के अवतार माने जाते हैं। इनकी घोर तपस्या को भंग करने के लिए इंद्र ने अप्सराएँ भेजीं। नारायण ने अपनी जघा पर रखे हुए फूल से अनुपम सुन्दरी उर्वशी को उत्पन्न कर दिया जिसके सौंदर्य को देखकर अन्य अप्सराएँ लज्जित होकर लौट गईं।

पतंजलि—योग दर्शन तथा महाभाष्य के रचयिता एक ऋषि, यह तप करते हुए ऋषि की अंजलि में गिरने से तपंजलि तथा शब्द विपर्यय से पतंजलि हो गये।

प्रह्लाद—हिरण्यकश्यपु के पुत्र जो ईश्वर के भक्त थे। इनकी कथाएँ प्रसिद्ध हैं।

बलि—एक दानी, भक्त दानवराज जो प्रह्लाद के पौत्र थे जिन्हें विष्णु ने वामनावतार लेकर छला था, अंत में उनको पाताल का राजा बना दिया।

भरत—(१) इस नाम के तीन व्यक्ति हैं (१) नाट्य तथा सङ्गीत शास्त्र के कर्ता एक मुनि (२) रामानुज (३) दुष्यंत के पुत्र सर्वदमन जिनके नाम से यह देश भारतवर्ष कहलाया।

भरद्वाज[1]—एक ऋषि जिनका आश्रम प्रयाग में गंगाजी के किनारे था। यहाँ श्री रामचंद्र जी बनवास जाते समय ठहरे थे।

भृगु[2]—एक ऋषि जो अग्नि ज्वाला के साथ उत्पन्न हुए थे।

मनुआ (मनु)—ब्रह्मा के पुत्र तथा मानव जाति के आदि पुरुष। चौदह मन्वंतरों के १४ मनु होते हैं।

---

[1] पुत्र का परित्याग करके जाने के लिए उद्यत ममता तथा बृहस्पति से मरुत देवताओं ने कहा कि "तुम दोनों ने आपस में एक दूसरे से द्वाज (हम दोनों से उत्पन्न शिशु) को 'भर' (पालन पोषण करो) कहा है, इसी से इसका नाम भरद्वाज हुआ।

मूढे भर द्वाजमिमं भरद्वाजं बृहस्पते।
यातौ यदुक्त्वा पितरौ भरद्वाजस्ततस्त्वयम् ॥ १८ ॥

(श्री विष्णु पुराण, चतुर्थ अंश, अध्याय १९)

[2] तीनों देवों में कौन बड़ा है यह निर्णय करने के लिए यह पहले ब्रह्मा के यहाँ गये और बिना प्रणाम किये ही बैठ गये। इस पर ब्रह्मा अत्यन्त क्रुद्ध हुए। तत्पश्चात् कैलास पर शिव के यहाँ पहुँचे। वहाँ भी यही व्यवहार किया। इस पर रुद्र ने उग्र रूप धारण कर लिया। उनको अनुनय विनय से शांतकर वैकुण्ठ में पहुँचे और सोते हुए विष्णु के वक्षस्थल पर एक लात मारी। भगवान् ने उठकर भृगु के चरणों को दबाते हुए पूछा आपके चोट तो नहीं लगी। यह वृत्तांत भृगु जी ने देवताओं के सम्मुख कहा, तब यह निर्णय हुआ कि विष्णु भगवान् तीनों देवताओं में बड़े हैं क्योंकि वे दयामूर्ति हैं। कहीं-कहीं पर ऐसा भी लिखा हुआ पाया जाता है कि ब्रह्मा के सम्यक् स्वागत न करने से उसे अभिशाप दिया कि लोक में तुम्हारी पूजा नहीं होगी और शिवजी उस समय पार्वती के साथ एकांत वास कर रहे थे अतः उनको अभिशाप दिया कि तुम लिंग रूप हो जाओ।

मारकंडेय—मृकंडु ऋषि के पुत्र जो अपने तपोबल से मृत्यु को जीत कर चिरंजीवी हो गये हैं। जन्म तिथि तथा संस्कार आदि कार्य में इनका पूजन किया जाता है।

मीना—ऊषा की कन्या का नाम जिसका विवाह कश्यप से हुआ था।

मेधातिथि—कण्व मुनि के पिता।

यमदग्नि—देखिए जमदग्नि।

याज्ञवल्क्य—वैशम्पायन के शिष्य थे इन्होंने याज्ञवल्क्य स्मृति रची है।

रत्नाकर—वाल्मीकि मुनि का पहला नाम। यह पहले जंगल में लूट मार से अपना जीवन निर्वाह करते थे। एक साधु के उपदेश से इनके जीवन में परिवर्तन हो गया और यह बहुत दिनों तक राम का उलटा जाप मरा मरा करते रहे।

उलटा नाम जपत जग जाना। वाल्मीकि भये ब्रह्म समाना॥

ज्ञान होने पर इन्होंने रामायण की रचना की और वाल्मीकि नाम से प्रसिद्ध हुए, यह संस्कृत के आदि कवि कहलाते हैं।

लोमश—एक ब्रह्मर्षि जो अमर माने गये हैं।

वशिष्ठ एक सप्तर्षि, यह सूर्य वंश के कुलगुरु माने जाते हैं। इनके तथा विश्वामित्र के चिरविद्रोह की अनेक कथाएँ प्रसिद्ध हैं। इनकी नंदिनी गाय को लेने के लिए सहस्रों वर्ष युद्ध होता रहा।

वात्स्यायन—(१) काम सूत्र के रचयिता (२) न्याय सूत्र के एक टीकाकार।

वामदेव—राजा दशरथ के एक मंत्री का नाम।

वाल्मीकि—देखिए रत्नाकर।

विदुर[1]—यह दासी-पुत्र व्यास के आशीर्वाद से उत्पन्न हुए। यह बड़े विद्वान्, धार्मिक तथा नीति-निपुण थे। इनकी विदुर नीति पुस्तक प्रसिद्ध है।

विश्वामित्र—गाधि के पुत्र तथा कान्यकुब्ज के क्षत्रिय राजा। मृगया खेलते समय वशिष्ठ के तपोवन में पहुँचे और उनकी कामधेनु नंदिनी को लेने का प्रयत्न किया। युद्ध में परास्त होकर उन्होंने घोर तपस्या की तथा राजर्षि, ऋषि एवं महर्षि की उपाधि प्राप्त की। कई सहस्रवर्ष तप करने के पश्चात् वशिष्ठ के मुख से अपने लिए ब्रह्मर्षि कहते हुए सुनकर इनको शांति मिली। इन्होंने राजा त्रिशंकु को सदेह स्वर्ग भेज दिया, इंद्र से उसकी रक्षा की तथा एक नई सृष्टि रचने की योजना की। रामचंद्र को अनेक दिव्यास्त्र की दीक्षा की।

वैशंपायन—व्यास के शिष्य, इन्होने याज्ञवल्क्य से सम्पूर्ण यजुर्वेद उगलवा लिया, जिसको इनके अन्य शिष्यों ने तीतर बनकर चुग लिया। यह पुराणों की कथा कहने में बड़े प्रवीण थे। इन्होंने सम्पूर्ण महाभारत की कथा जनमेजय को सुनाई थी।

व्यास—पराशर ऋषि और सत्यवती के पुत्र हैं। इन्होने महाभारत, १८ पुराण, ब्रह्म सूत्र आदि अनेक ग्रंथो की रचना की। ये सप्त चिरंजीवी में से एक हैं। वेदों को क्रमबद्ध करने से व्यास (विव्यास वेदान् यस्मात्स तस्माद् व्यास इति स्मृतः। अतोवेदव्यास इत्यादि तस्य नाम।) कहलाये। असितवर्ण और द्वीप पर पैदा होने से कृष्ण द्वैपायन नाम पड़ा।

शिलंकु—एक राजा।

शिवि[2]—शिवि राजा उशीनर के धर्मात्मा तथा दानी पुत्र थे। एक बार इनकी परीक्षा के

टिप्पणी १ – विदुर—माण्डव्य ऋषि के शाप से यमराज को सौ वर्ष तक विदुर जी के रूप में शूद्र की देह धारण करनी पड़ी।

२ एक धरम परमिति पहिचाने। नृपहि दोसु नहिं देहिं सयाने॥
सिवि दधीचि हरिचंद कहानी। एक-एक सन कहहिं बखानी॥

लिए इन्द्र श्येन बनकर कपोत रूपी अग्नि का पीछा करता हुआ इनके सम्मुख आया। इन्होंने कबूतर के बराबर अपनी देह का मांस देकर उसे श्येन से बचाया।

शुकदेव—व्यास के पुत्र। ये घृताची अप्सरा से जो पृथ्वी पर भ्रमण कर रही थी उत्पन्न हुए। जन्म से तत्वदर्शी तपोनिष्ट थे। इनको अनुरक्त करने के लिए रंभा के सब प्रयत्न विफल हुए। इन्होंने राजा परीक्षित को श्रीमद्भागवत की कथा सुनाई।

शौनक—ऋग्वेद के प्रातिशाख्यादि के रचयिता एक ऋषि, शौनक-गृह्मसूत्र के रचयिता।

श्रवण[1]—एक बौद्ध भिक्षु।

श्वेतकेतु—उद्यालक ऋषि के पुत्र का नाम।

संजय—धृतराष्ट्र के सारथि जिन्होंने महाभारत के युद्ध का वर्णन अंधे राजा को सुनाया था।

सतानंद—(शतानन्द) गौतम ऋषि के पुत्र जो राजा जनक के पुरोहित थे।

सत्यकाम—एक ऋषि।

सत्यकेतु—एक ऋषि।

सत्यवान, सावित्री—मद्र देश के धर्मात्मा राजा अश्वपति की पुत्री सावित्री सरस्वती के वरदान से उत्पन्न हुई थी जिसका विवाह द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान से हुआ। नारद से यह जानकर कि सत्यवान की आयु एक वर्ष और है उनके साथ वन में रहने लगे। एक दिन लकड़ी काटते समय सत्यवान की मृत्यु हो गई। जब यमराज उनके जीव को लेकर चले तो सावित्री ने भी उनका अनुसरण किया। धर्मराज के समझाने पर भी वह नहीं लौटी। यमराज ने उनकी पति-भक्ति से प्रसन्न हो अन्त में सत्यवान की आत्मा को भी लौटा दिया। सत्यवान जीवित हो गये। वे दोनों आनन्दपूर्वक रहने लगे।

सुदामा—विप्र सुदामा कृष्ण के बाल मित्र थे। अपनी निर्धनता को देखकर उनकी स्त्री ने उनको कृष्ण के पास द्वारका भेजा। श्रीकृष्ण के द्वारपाल ने अंतःपुर में जाकर सुदामा का नाम लिया।[2]

श्री कृष्ण अपने बचपन के सहपाठी का नाम सुनते ही दौड़कर द्वार पर आये और सुदामा का बड़ा स्वागत किया :[3]

---

[1] श्रवणकुमार की दुष्टा भार्या उसके माता-पिता को बहुत दुख दिया करती थी। इस दुर्व्यवहार से अपने वृद्ध माता-पिता को बहँगी में बिठाकर वे तीर्थ-यात्रा को चल दिये। अयोध्या के पास अपने पिता के लिए नदी से लोटा भर रहे थे कि इतने में राजा दशरथ के शब्दवेधी बाण से आहत हो गये। मरने के पहले उन्होंने राजा को सब कथा बतलाकर अपने माता-पिता के पास उनके द्वारा जल पीने को भेजा। उन दोनों ने अपने पुत्र-शोक में बिना जल पिये ही प्राण त्याग दिये। यह करुण कथा आजकल भी उषाकाल में श्रवण भिक्षु गा-गाकर भीख माँगते हैं।

सुन मेरे कुम्हरा के भाइ। इक हंडिया दुइ पेट बनाइ॥

[2] सीस पगा न झगा तन में, नहिं जानै को आहि बसै केहि ग्रामा।
धोती फटी सी लटी दुपटी अरु पायँ उपानह को नहिं सामा
द्वार खड़ौ द्विज दुर्बल, देखि रह्यो चकि सो बसुधा अभिरामा।
पूछत दीन-दयाल को धाम बतावत आपनो नाम सुदामा।

[3] ऐसे बेहाल बेवाइन ते, मग कंटक जाल लगे पुनि जोये।
हाय महा दुख पायो सखा, तुम आये इतै न कितै दिन खोये।
देखि सुदामा की दीन दसा करुणा करिके करुणानिधि रोये।
पानी परात को हाथ छुओ नहिं नैनन के जल सों पग धोये।

संकोर्च' सुदामा की काँख से चावल की पोटरी छीनते हुए पूछा कि भाभी ने हमारे लिए क्या भेजा है। औरतुरंत उसमें से दो मुट्ठी चावल फाँक लिए, इतने मे रुक्मिणी ने हाथ पकड़कर कहा "महाराज दो लोक तो दीन ब्राह्मणको दे दिये कुछ अपने लिए भी रखिए।" बहुत आदर-सत्कार के बाद सुदामा अपने देश को लौट आये और श्री कृष्ण प्राप्त सम्पत्ति से सुखपूर्वक रहने लगे।

सुनीतिकुमार—सुनीति ध्रुव की माता तथा राजा उत्तानपाद की रानी थी। अतः यह नाम ध्रुव का वाचक है।

सुश्रुत—आयुर्वेद शास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य जिन्होंने सुश्रुत संहिता की रचना की।

ग—गौण शब्द—

१ - वर्गात्मक—(अ) जातीय—राय, सिंह, सिनहा। (आ) साम्प्रदायिक—पुरी।

२—सम्मानार्थक—

(अ) उपाधिसूचक—लाल।

(आ) आदरसूचक—जी।

३—भक्तिपरक—आचार्य, कांत, किशोर, कुमार, कृष्ण, चंद्र, जीत, दास, दीन, देव, नन्द, नन्दन, नाथ, नारायण. पाल, प्रकाश, प्रसाद, बल, भज, भरण, मणि, महा, माधव, मुनि, राज, राम, राय लाल, विहारी, वीर, वेद, शरण, सत्य, सुन्दर, सेन, स्वरूप।

३—विशेष नामों की व्याख्या

मूल प्रवृत्ति में प्रायः समस्त नामो पर प्रकाश डाला गया है।

४—समीक्षण—

युग युग के महात्मागण इस सत्संग में दर्शन दे रहे हैं।

यथेष्ट सामग्री के न होने से इन महात्माओं का कोई इतिवृत्त नहीं दे सकते। अत्रि तथा कपिल के नाम की संख्या अधिक हो गई है। अत्रि का नाम शुद्ध तथा विकृत दोनों रूपों में मिलता है। कृष्ण सखा उद्धव भी कई रूपों में मिलते हैं। प्रह्लाद तथा ध्रुव जनार्दन तथा जनता दोनों के प्रिय भक्त हैं। कई प्रकार के इनके अपभ्रंश रूप प्रचलित हैं। देवव्रत अपनी भीष्म प्रतिज्ञा तथा महाभारत के भयंकर संग्राम के कारण प्रसिद्ध हैं।

प्रह्लाद, श्रवण, भीष्म, शुक देवादि के अतिरिक्त अन्य नाम अधिकाश में शुद्ध तत्सम हैं क्योकि शिक्षित जनता ही इनसे आकृष्ट हो सकती है। कुछ नामो के रूपातर,—अत्रि, अतर, अत्तू, इत्र। उद्धव, ऊधो, उधम। ध्रुव. ध्रू, धुरुआ, धौं (धौंकल)। प्रह्लाद, प्रह्लाद, प्रहलाद। भीष्म, भीषम, भीखम, भीकम, भीखा। श्रमण, श्रवण, सरमन, शरवन।। शुक, सुख, सुक्खा, सुखना।

(आ) मत-प्रवर्तक

१—गणना—

क—क्रमिक गणना—

(१) नामों की संख्या—२०२

(२) मूल शब्द - ५५

(३) गौण शब्द—४५

ख—रचनात्मक गणना—

एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम		योग
कबीर	१	५			६
गरीबदास	२	३			५
गोरखनाथ	१	७			८
चरणदास		१२	३		१५
चैतन्य		१५	४		१६
जगजीवन	२	८	७		१७
दयानंद		१	४		५
दरिया	१	५			६
दादूदयाल	१	३			४
नानक	१	६	२		१२
पलटूदास	२	३			५
प्राणनाथ	२	८	१		११
बाबालाल	१	४	१		६
भीखा	४	६			१०
मलूकदास	१	३			४
माधवाचार्य		२			२
रत्ता	१	१			२
रविदास		१			१
रामचरण	२	५			७
राम मोहनराय		१	३		४
रामानंद		१	५		६
रामानुज		१	७		८
लालदास	१	३			४
वल्लभ	१	७			८
वीरभान		३			३
शंकर	१	१४			१५
शिवदयाल तथा शिव नारायण		३	२	१	६
सहज		३			३
	२५	१३७	३६	१	=२०१

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द—कबीर, गरीब, गरीबा, गोरख, चरण, चेतन, चैतन्य, जगजीवन, जीवन, जग्गा, जग्गू, दयानंद, दरिया, दरियाई, दरियाव, दादू, नानक, नानिक, पलट, पलट्ट, पल्टन, पल्टा, पिरानू, पिरोनी, प्राण, बाबा, भिक्कू, भिक्खन, भिक्खी, भिक्खू, भिखई, भिखारी, भीक, भीका, भीके, भीखम, भीख, मलूक, मलूके, माधव, रत्ता, रत्ती, रविदास, रामचरण, राममोहन, रामानंद, रामानुज, लाल, वल्लभ, वीरभान, शंकर, शिवदयाल, शिवनारायण, शिव, सहज।

ख—व्यक्ति परिचय—

कबीर—१४५६ विक्रमी में पैदा हुए। इस परित्यक्त हिन्दू बालक का नीरू और नीमा जुलाहे के घर पालन-पोषण हुआ। यह अधिक पढ़े-लिखे न थे किन्तु सत्संग और अपनी प्रतिभा के कारण इन्होंने ज्ञान उपलब्ध किया। यह रामानंद के शिष्य थे। इनकी स्त्री का नाम लोई और पुत्र का नाम कमाल बताया जाता है। यह कबीरपंथी मत के प्रवर्त्तक हुए, सम्वत् १५५८ में मगहर में इनकी मृत्यु हुई। इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की है। कहते हैं कि इनके शव पर हिन्दू मुसलमानों में झगड़ा होने लगा तो शव के स्थान पर केवल कुछ फूल रह गये जो बाँटकर यवनों ने दफन कर दिये और हिन्दुओं ने जला दिये।

गरीब—गरीब दासी पंथ के प्रवर्तक गरीबदास (१७१७-१७७८ ई०) सन् १७१० में रोहतक जिले में उत्पन्न हुए। यह जाट गृहस्थी थे। इनकी कविता में फारसी शब्द तथा सूफी कथाएँ अधिक पाई जाती हैं।

गोरख—गोरखनाथ नव नाथों में एक प्रसिद्ध योगी हुए हैं। इनके गुरु का नाम मत्स्येंद्र नाथ था। इन्होंने अपने गोरखपंथी मत का प्रचार राजपूताना और पंजाब में किया।

चरण (चरणदास)—मेवाड़ के अन्तर्गत देहरा मे सन् १७०३ ई० चरणदास का जन्म हुआ यह धूसर बनिया थे। इन्होंने अपना पंथ चरणदासी सन् १७३० के लगभग देहली के आस-पास चलाया। इनकी दो शिष्याएँ सहजो बाई तथा दया बाई थीं। इनकी शिक्षा कबीरदास से मिलती-जुलती है। इनकी मृत्यु सन् १७८० में हुई।

चैतन्य—चैतन्य महाप्रभु नदिया में सन् १४८५ में उत्पन्न हुए। २५ वर्ष की आयु में संन्यासी हो गये। यह कृष्ण के भक्त थे। प्रेम, भ्रातृत्व के प्रचारक थे, जाति-पाँति को नहीं मानते थे। दीन दुखियों पर दया करते थे। कृष्ण-भक्त होने के कारण इनको कृष्ण चैतन्य तथा श्याम चैतन्य भी कहते हैं।

जगजीवन—जगजीवन दास बाराबंकी जिले में सन् १६८२ ई० में पैदा हुए। यह चंदेल ठाकुर थे। इन्होंने सत्यनामी सम्प्रदाय चलाया। यह प्रायः कोटवा में रहते थे। ज्ञान प्रकाश, महा प्रलय और प्रथम ग्रन्थ में इनके उपदेश लिखे हुए हैं। इनके शिष्य ब्राह्मण, ठाकुर, चमार और मुसलमान सभी प्रकार के मनुष्य थे।

जीवनदास—यही कदाचित् सतनामी सम्प्रदाय के मूल प्रवर्तक थे जिसे जगजीवनदास ने पुनःसंगठित किया।

दयानंद—स्वामी दयानन्द काठियावाड़ के टंकारा नामक स्थान में उत्पन्न हुए, इनके बचपन का नाम मूलशंकर था। छोटी आयु में इन्होंने संन्यास ग्रहण किया और मथुरा में स्वामी विरजानन्द के यहाँ शिक्षा प्राप्त की। यह प्राचीन आदर्श के पोषक, एक ईश्वर को माननेवाले तथा वेदों के प्रचारक थे। इन्होंने समस्त देश में भ्रमण कर वैदिक धर्म का प्रचार किया और सम्वत् १६३२ आर्यसमाज की स्थापना की और हिन्दी में सत्यार्थ प्रकाश लिखा। हिन्दूधर्म में अनेक सुधार किये।

दरिया—दरिया साहब का दरियादासी नामक निर्गुण सम्प्रदाय प्रसिद्ध है।

दया बाई—यह चरणदास की शिष्या थी इन्होंने भी अपना एक पथ चलाया।

दादू (दादू दयाल)—यह दादू पंथ के प्रवर्तक हुए। इनका जन्म सम्वत् १६०१ में अहमदाबाद (गुजरात) में बतलाया जाता है। यह १४ वर्ष तक आमेर में रहे वहाँ से भ्रमण करते हुए नराना (जयपुर) में रहे। वहीं उनकी मृत्यु १६६० में हुई। निर्गुण पथियों के सदृश दादू अपने

को निरंजन निराकार का उपासक बताते हैं और सत्तनाम कहकर अभिवादन करते हैं।[1]

इनका पहले का नाम महाबली था।

नानक—नानक का जन्म १४६९ ई० में लाहौर जिले के तालबंदी गाँव में हुआ। बचपन से ही इनमें बड़ी भक्ति-भावना थी। इन्होंने देश भ्रमण किया और भिन्न-भिन्न मतावलंबियों से वार्तालाप किया। इन्होंने सिक्ख सम्प्रदाय चलाया। इनका सिद्धात ॐ सति नामु करता पुरुख निरभौ निरवैर अकाल मूरति अजूनि सैभं गुरु प्रसादि (ना० सा० पं० १८)। इनका देहांत सम्वत् १५९६ में हुआ।

पलटू (दास)—नागपुर जलालपुर (जिला फैजाबाद) के कंदू बनिया थे। कबीर की तरह इनके विचार सूफियों से मिलते-जुलते हैं। इन्होंने हिन्दू मुसलमानों को मिलाने का प्रयत्न किया।

प्राणनाथ—धामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक प्राणनाथ क्षत्रिय थे। हीरे की खान का पता लगाने के कारण पन्ना के राजा छत्रसाल पर इनका बड़ा प्रभुत्व जम गया। इन्होंने भी हिन्दू मुसलमान को मिलाने का प्रयत्न किया। मूर्ति पूजा, जाति भेद तथा ब्राह्मणों के विरोधी थे।

बाबा (बाबालाल)—जहाँगीर के शासन काल में बाबालाल मालवा के एक क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए। सरहिन्द के पास एक मंदिर और मठ बनाकर वहीं रहने लगे। इनके शिष्यों में दारा शिकोह का भी नाम है।

भीखा—यह गुलाल के शिष्य थे। अपने गुरु की मृत्यु के बाद इन्होंने गाजीपुर में अपने उपदेश दिये।

मलूकदास—सम्वत् १६३१ में कड़ा जिला इलाहाबाद में उत्पन्न हुए। इनकी मृत्यु १०८ वर्ष की आयु में सम्वत् १७३९ में हुई। यह निर्गुण मत के नामी सन्तों में गिने जाते हैं इनकी गद्दियाँ कड़ा, जयपुर, गुजरात, मुल्तान, पटना और काबुल में पाई जाती हैं। इनके कई चमत्कार प्रसिद्ध हैं। ऐसी किंवदंती है कि एक बार इन्होंने डूबते हुए शाही जहाज को पानी के ऊपर उठाकर बचा लिया और रुपयों का तोड़ा गंगाजी में तैराकर कड़े से इलाहाबाद भेज दिया।[2]

माधवाचार्य (मध्वाचार्य)—(सम्वत् १२५४-१३३३) इन्होंने गुजरात में अपना द्वैतवादी वैष्णव सम्प्रदाय चलाया।

रत्ता—रावलपिंडी जिले के सिक्ख सन्त बाबा रत्ता ने निरंकारी पंथ चलाया। रत्ता<√रम्।

रविदास—इनकी गणना रामानन्द के बारह शिष्यों में की जाती है। इनके अनुयायी रैदासी कहलाते हैं। यह जाति के चमार थे। यह अपने निर्गुण ईश्वर को सर्वत्र व्यापक मानते हैं।

रामचरण—जयपुर राज्य में सन् १७१८ ई० में रामसनेही मत के प्रवर्तक रामचरण हुए। इस मत में केवल साधु ही प्रविष्ट हो सकते हैं। इनका मुख्य केंद्र शाहपुर (राजस्थान) है।

राममोहन—राजा राममोहन राय ने ब्रह्मसमाज खोला। जिसके अनुयायी एक ईश्वर को मानते हैं और प्रत्येक धर्म की पुस्तक को आदर की दृष्टि से देखते हैं। सबको भाई के समान मानते हैं। यह जात-पाँत, छुवाछूत को नहीं मानते हैं और ईश्वर की पूजा अपनी भाषा में करते हैं। ब्रह्म-

---

[1] दादू दुनिया बावरी, फिर-फिर माँगै सोन।
लिखनेवाला लिख गया, मेटन वाला कौन॥

[2] अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।
दास मलूका कह गये, सब के दाता राम॥

मंदिर में सब जाति, सब धर्मों के मनुष्य जा सकते हैं। मूर्तिपूजा के स्थान में केवल निराकार ईश्वर का चिंतन और प्रार्थना करते हैं।

रामानंद—रामानुजाचार्य के अनुयायी होते हुए भी रामानंद ने राम का आश्रय लिया। स्वामी रामानंद ने राम भक्ति का द्वार सब जातियों के लिए खोल दिया।

रामानुज—रामानुजाचार्य विशिष्टाद्वैत के प्रवर्तक माने जाते हैं।

लालदास—सन् १६०० के लगभग अलवर में हुए। इनके उपदेश भी कबीर के समान हैं।

वल्लभाचार्य—यह दक्षिणी तैलंग ब्राह्मण थे। सन् १४७६ ई० मे पैदा हुए। इन्होंने कृष्ण भक्ति का प्रचार किया।

वीरभान—यह सन् १५४३ ई० में नारनूल के पास बिजेसर में पैदा हुए। यह ईश्वर को सतनाम से पुकारते हैं। इनके अनुयायी साधु या सतनामी कहलाते हैं। वीरभान अपने को ऊधो का दास और अपने गुरु ऊधो को मालिक का हुकुम कहते थे।

शंकर, (शंकराचार्य)—७८६ ई० में पैदा हुए उन्होंने उपनिषद्, भगवत गीता, तथा वेदात पर भाष्य लिखे और भारत में भ्रमण करके बड़े-बड़े विद्वान् पंडितों को शास्त्रार्थ मे परास्त किया। जगत्गुरु के नाम से प्रसिद्ध हुए। इन्होंने चार मठ स्थापित किये और अद्वैत मत का प्रचार किया।

शिवदयाल—शिवदयाल राधा स्वामी मत के प्रवर्तक हुए। इनको स्वामी जी महाराज या राधास्वामी भी कहते हैं। इन्हीं को भगवान् का अवतार मानकर राधा स्वामी नाम का स्मरण करते हैं सत्सगी लय योग का साधन करते हैं। अनहद शब्द को सुनते हैं और राधा स्वामी को भगवान् का नाम समझते हैं।

शिवनारायण—गाजीपुर के पास सन् १७३४ ई० में स्वामी शिवनारायण सिंह ने अपना शिवनारायणी पंथ चलाया। यह बलिया जिले में रनरा के पास चंद्रावर के क्षत्रिय थे। शिव नारायणी परब्रह्म की पूजा करते हैं और अपनी धर्म पुस्तक का बड़ा सम्मान करते हैं। इसमें प्रत्येक जाति के मनुष्य सम्मिलित हो सकते हैं। मुगल सम्राट् मुहम्मद शाह भी उनके शिष्य थे।

सहज—(सहजो बाई) चरणदास की शिष्या थीं इन्होंने सहज पंथ चलाया।

ग—गौण शब्द

(१) वर्गात्मक—राय, सिंह, सिनहा।

(२) भक्तिपरक—आचार्य, आधार, आनंद, किशोर, कुमार, कृष्ण, चंद्र, चेला, जीत, जीवन, दत्त, दयाल, दास, दीन, देव, धर, नारायण, पति, पाल, प्रकाश, प्रसाद, बक्स, ब्रह्मचारी, बहादुर, मल, मुनि, रसिक, राम, लाल, वल्लभ, बिहारी, शंकर, शरण, शुभ, सत, सरूप, सहाय, साहिब, सुख, सेवक, स्वरूप, स्वामी।

३—विशेषनामों की व्याख्या

मूल प्रवृत्ति के अंतर्गत व्याख्या हो चुकी है।

४—समीक्षण

१—वैदिक वर्ग—

कालान्तर के दूषित प्रभाव को हटाकर सनातन धर्म के शुद्ध रूप को प्रदर्शित करना ही आर्यसमाज तथा ब्रह्मसमाज का ध्येय रहा है। आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय एवं उनमें प्रतिपादित धर्म का प्रचार इन दो साधनों पर ये विशेष बल देते हैं।

२—पौराणिक अथवा सनातनी वर्ग—

शंकर का अद्वैतवाद, रामानुज का विशिष्टाद्वैत वाद, मध्वा (माधवा) चार्य का द्वैतवाद, वल्लभ का पुष्टि मार्ग तथा रामानंद का रामानंदी सम्प्रदाय इस वर्ग में प्रसिद्ध हैं। ये सम्प्रदाय वैष्णव धर्म के ही रूपांतर हैं।

३—**संत या साधक समाज**—इस वर्ग के मुख्य प्रवर्तक नानक, कबीर, गोरखनाथ, गरीबदास, चरणदास, जगजीवन, दादू, पलटूदास, प्राणनाथ, बाबालाल, भीखा, मलूकदास, रैदास, लालदास, शिवदयाल, शिवनारायण आदि हैं। निर्गुण ईश्वर के उपासक होते हुए भी इनके अनुयायी अपने गुरु को ईश्वर का प्रतिनिधि तथा उसकी पुस्तक को अपना धर्म ग्रंथ मानते हैं।

यहाँ पर ३० प्रवर्तकों के नाम संकलित हैं।

इन प्रवर्तकों का प्रभाव क्षेत्र जानने के लिए दो बातें आवश्यक हैं (१) प्रत्येक के मतावलम्बियों की जनसंख्या (२) इनसे प्रभावित हो कितने अन्य मनुष्यों ने इन नामों को अपनाया है।

प्रथम तथा द्वितीय वर्ग में संस्कृत के तत्सम शब्द व्यवहृत हुए हैं, किन्तु तृतीय वर्ग में विकृत रूपों का बाहुल्य है। इससे जान पडता है कि इन पंथों के अनुयायी अशिक्षित तथा निम्न स्तर के मनुष्य हैं जो अधिक श्रद्धालु होते हैं। भीखा शब्द के दो उद्गम हो सकते हैं —
भिक्षा>भीखा<भोग्य।

इ—साधु-संत-गुरु भक्तादि

१—गणना—

क—क्रमिक गणना—इस प्रवृत्ति के अंतर्गत आये हुए नामों की संख्या २४० है।

(२) मूलशब्द—८६

(३) गौणशब्द—४८

ख—रचनात्मक गणना—

एकपदी नाम,	द्विपदी नाम,	त्रिपदी नाम,	चतुष्पदी नाम,	पंचपदी नाम,	षट्पदी नाम	योग
२०	१३५	७१	१२	१	१	=२४०

२—विश्लेषण

क—मूलशब्द—अंगद, अक्रूर, अग्रसेन, अग्रेनाथ, अजब, अमरदास, अर्जुन, अहिल्या, आनन्द, एक, एकनाथ, कोक, कोका, गहरी, गुलाल, गोपीचंद, गोविंदसिंह, चाणक्य, छीत, ज्ञानदेव ज्ञानेश्वर, तुकाराम, तुलसी, तुस्सी, तेग, तेगबहादुर, त्यागराम, दीनदयाल, दूलम, दूल्हे, देवेंद्र, धन्नन, धन्ना, धन्नू, नरसी, नरहरि, नवनाथ, नागार्जुन, नाम, नामदेव, निश्चलदास, निहाल, निहालचंद्र, पवनहारी, पीपा, पूरण, पूरणमल, पूरन, पूर्ण, पौहारी, बंदा, बैज, बैजू, भरथरी, भरदली, भर्तृहरि, भिरतारी, मत्स्येंद्रनाथ, महींद्र, महीधर, महेंद्र, मीरा, मीरू, मोरे, रंगाचारी, रंगाचार्य, रविदास, रामकिसन, रामकृष्ण, रामतीर्थ, रामदास, रूप, लहनी, लहनासिंह, विवेकानन्द, विष्णगुप्त, विष्णुदिगंबर, शिवव्रतलाल, सदनू, सधना, सुन्दरदास, सूरदास, सेन, सेवरी, हरिकिशन, हरिगोविंद, हरिदास, हरिराम, हेमचंद्र।

ख—व्यक्ति-परिचय

अंगद—सिक्खों के दूसरे गुरु, गुरु नानक के बाद उनकी गद्दी पर बैठे। इनका बचपन का नाम लहनासिंह था।

अक्रूर—ये कृष्ण के पितृव्य तथा भक्त थे। इन्हे कंस ने कृष्ण को मथुरा लाने भेजा था[1]।

अग्रसेन—अग्रवाले वैश्यों के आदि पुरुष।

अग्रेनाथ—यह नाम अग्रदास के आधार पर रखा गया जान पड़ता है जो भक्तमाल के रचयिता नाभा जी के गुरु थे और ललता राजपूताना में रहा करते थे।

अजब—इनका परिचय प्राप्त नहीं।

अमरदास—इन्होंने १२ वर्ष सेवा कर गुरु अंगद को प्रसन्न किया और अंत में सिक्खों के गुरु बन गये। इन्होंने सिक्खो का सगठन किया। बाईस प्रचारकों को सिक्ख धर्म प्रचार करने के लिए भिन्न-भिन्न स्थानो को भेजा। इनको अकबर ने भंडारे के लिए जागीर देना चाहा था किन्तु इन्होने स्वीकार न किया।

अर्जुन—सिक्खो के पाँचवे गुरु।

अहिल्या—इंदौर के महाराजा हुलकर की स्त्री जो बड़ी ईश्वरभक्त थीं। इन्होने अनेक इष्टापूर्त के कार्य किये।

आनंद—गौतम बुद्ध का प्रिय शिष्य।

एकनाथ—एक महाराष्ट्र भक्त, जिनकी मृत्यु १६०८ ई० में हुई।

गहरी—गहरीनाथ बाबा गोरखनाथ का एक शिष्य।

गुलाल—यह बुल्ला साहब के शिष्य तथा भीखा के गुरु थे, अठारवी शताब्दी के उत्तरार्ध मे गाजीपुर जिले में बसागी नामक स्थान में उत्पन्न हुए। यह जाति के क्षत्रिय थे।

गोपीचंद—राजा गोपीचंद भर्तृहरि की करुणाजनक कहानी गाँव-गाँव में प्रचलित है। कहते हैं कि एक बार एक साधु इनके पास एक अमृत फल लाया। राजा ने वह फल अपनी प्राण प्यारी रानी को दे दिया जो नगर के कोतवाल से गुप्त प्रेम करती थी, कोतवाल एक वैश्या से अनुराग रखता था, वह वेश्या राजा पर अनुरक्त थी। इस प्रकार वह फल घूम-घामकर फिर राजा के पास आ गया। इस पर राजा को वैराग्य हुआ और यह कहते हुए सिंहासन त्याग दिया—"धिक्तञ्च ताञ्च मदनञ्च इमाञ्चमाञ्च"। इन्होने दीर्घायु पाई और भारतवर्ष का भ्रमण भली भाँति किया। अजमेर के निकट नाग पहाड़ी पर भर्तृहरि की गद्दी, सिंधु नदी के तट पर सहवान में भर्तृहरि कोट, अलवर में भर्तृहरि गुफा, आबू तथा काशी के भर्तृहरि थान आदि अनेक स्थान इनके नाम से सम्बंधित हैं। भर्तृहरि ने अपने जीवन के अनुभवों को तीन शतको (वैराग्य शतक, नीतिशतक, शृंगार शतक) में संस्कृत में लिखा है। यह जनश्रुति है कि यह महाराज विक्रमादित्य के भाई थे।

गोविंदसिंह—(१७२३-१७६५) यह सिक्खों के अंतिम महा पराक्रमी गुरु थे। हिन्दुत्व और संस्कृति के लिए इन्होंने मुगल सम्राट औरंगजेब से बराबर युद्ध किया। इन्होंने कई पुस्तकें भी बनाईं।

चाणक्य[2]—यह चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरु थे। नीति के प्रकांड पंडित, स्वभाव के क्रोधी।

---

[1] कृष्ण को रोकने के लिए प्रेम विह्वल गोपियाँ रथ के नीचे मरने के लिए लेट गईं तो उन्हें हरि ने समझाया कि मैं शीघ्र परसों (शीघ्रं परश्व) ही लौट आऊँगा। बहुत दिन प्रतीक्षा करने पर भी वह न लौटे तो गोपियाँ कहने लगी—परसों पिया आवन कहजु गये कब आवेगी बैरिन वह परसों। परसोली (परश्व अलि) गाँव का नाम इसी घटना की सूचना देता है।

[2] वात्सायनो मल्ल नागः कुटिल चणकात्मजः।
द्रामिलः पक्षिलस्वामी विष्णुगुप्तोऽङ्गुलश्च सः॥

इन्होंने नन्द वंश को नाश कर चन्द्रगुप्त को राजा बनाया और कौटिल्य शास्त्र की रचना की। यह जनश्रुति है कि जब यह अध्ययन समाप्त कर गुरुकुल से लौट रहे थे मार्ग में इनके पैर में कुश कंटक छिद गया। इन्होने क्रुद्ध होकर यह प्रण किया कि जब तक समस्त कुश घास को समूल नष्ट न कर दूँगा तब तक कोई अन्य कार्य नहीं करूँगा। इस विचार से इन्होंने कुशा को खोद खोदकर जडो मे मट्ठा देना आरम्भ किया ताकि घास की जडे भी जल जायँ। इनको विष्णु गुप्त तथा कौटिल्य भी कहते हैं। अत्यंत चतुर आदमी को भी व्यंग्य से चाणक्य कहते हैं।

छीत स्वामी—अष्टछाप के एक कवि। यह विट्ठलनाथ जी के शिष्य तथा मथुरा के समृद्धि-शाली चौबे पंडा थे। इनके यहाँ राजा बीरबल आदि यजमान आया करते थे। स्वभाव के उद्दंड थे। कृष्ण भक्ति की रचनाएँ कीं। व्रजभूमि से इन्हें अगाध प्रेम था "हे विधना तो सों अंचरा पसारि माँगौं जनम जनम दीजो याहि व्रज बसिवो।"

ज्ञानदेव—एक महाराष्ट्र संत जो संवत् १३५८ में थे। यह अपने को गोरखनाथ की शिष्य परम्परा में बतलाते थे। इन्होने रामायण की एक सुन्दर टीका की है।

ज्ञानेश्वर—गीता के टीकाकार एक प्रसिद्ध महाराष्ट्र सन्त।

तुकाराम—(१६०८-४६) एक महाराष्ट्र सन्त थे जो पूना के पास देही नामक स्थान में उत्पन्न हुए। यह विठोवा के अनन्य भक्त थे[1]। इन्होंने सहस्रों अभगों की रचना की है।

तुलसी—रामायण आदि अनेक ग्रंथों के रचयिता, भक्त प्रवर गो स्वामी तुलसीदास हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। उन्होंने अपना रामचरितमानस अवधी भाषा में लिखा है। यह राम के परम भक्त थे। चित्रकूट, अयोध्या आदि तीर्थस्थानों में बहुत दिनों तक रहे।

तेगबहादुर—सिक्खों के नवे गुरु।

त्यागराज—दक्षिण के एक सन्त कवि।

दीनदयाल—(१८५६-१९१५ संवत्) बाबा दीनदयाल की अन्योक्तियाँ प्रसिद्ध हैं। यह काशी में रहते थे।

दूलम—दूलम दास सतनामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक जगजीवन दास के शिष्य थे। यह रायबरेली के सोमवंशी क्षत्रिय थे।

देवेंद्र—ब्रह्मसमाज के मुख्य संचालक महर्षि देवेंद्रनाथ ठकुर महाकवि रवींद्र नाथ के पिता थे।

धन्नधना— रामानन्द जी के एक शिष्य।

नरसी – नरसी मेहता जूनागढ़ (काठियावाड) के एक निर्धन भक्त ब्राह्मण थे। यह १४५०-८० के मध्य हुए होंगे। एक बार कुछ साधुओं ने एक हुण्डी सेठ सांवलदास के नाम लिखने का विशेष आग्रह किया। लाचार होकर उन्होंने हुण्डी लिख दी। श्री कृष्ण ने अपने भक्त की लाज रखने के लिए सेठ सामलदास के रूप में उस हुण्डी का भुगतान कर दिया।

नरहरि[2]—गोस्वामी तुलसीदास के गुरु।

नवनाथ—८४ सिद्धों के समान नवनाथ भी प्रसिद्ध हैं। इनके नाम हैं—नागार्जुन, जड़ भरत, हरिश्चंद, सत्य नाथ, भीम नाथ, गोरक्ष नाथ, चर्पट, जलंधर और मलयार्जुन।

नागार्जुन—एक सिद्धनाथ जो संवत् ७०२ में थे।

---

[1] तुका म्हणे नेत्रीं केली ओलखण।
तटस्थ तें ध्यान विटेवरी॥
तुकाराम कहते हैं मेरे नेत्रों में ईंट पर खड़ी विट्ठल भगवान् की मूर्ति बस गई है।

[2] बंदउँ गुरु पद कंज कृपासिंधु नररूप हरि।

नामदेव—(सम्वत् ११६८-१२७२) यह सतारा जिला के दर्जी के पुत्र थे। पीछे पंढरपुर के विठोश्रा के मन्दिर में भगवान् की पूजा में अपना दिन बिताने लगे। मराठी में इनके अभंग प्रसिद्ध हैं। हिन्दी में भी कुछ रचना मिलती है। ज्ञानदेव इनके ही समय में थे। एक बार सन्त परीक्षा का निर्णय हुआ। उस गाँव का कुम्हार पिटना लेकर एक-एक सन्त को पीटने लगा। अन्य सन्त चुपचाप आघात सहते रहे किन्तु जब वह नामदेव की ओर बढ़ा तो वह बिगड़कर लड़ने लगे, तब उस कुम्हार ने कहा, नामदेव को छोड़ और सब बड़े पक्के हैं। भक्तमाल में इनके अनेक चमत्कार लिखे हैं विठोबा की मूर्ति का इनके हाथ से दूध पीना, शिव मन्दिर के द्वार का इनकी ओर घूम जाना इत्यादि।

निश्चलदास—सन्त कवि निश्चल दास ने विचार सागर नामक एक पाडित्य पूर्ण वेदांत का ग्रंथ बनाया।

निहालचन्द्र—सिक्खों के नामधारी पंथ के वर्तमान गुरु संत निहालसिंह।

पीपा—रामानंद के एक शिष्य थे जो राजा थे।

पूरणमल—एक भक्त जो गुरु गोरखनाथ के शिष्य थे। इनकी कामांध सौतेली माँ ने आँखे निकलवा कर कुएँ में गिरवा दिया था। गोरखनाथ ने इनको कुएँ से निकालकर फिर आँखों को अच्छा किया।

पौहारी—गाजीपुर के प्रसिद्ध पौहारी बाबा बनारस के एक गाँव में पैदा हुए थे। गाजीपुर में अपने मामा के पास इन्होंने विद्या प्राप्त की। काशी के एक कंदरावासी साधु से इन्होंने गुरु दीक्षा ली। गाजीपुर में धरती में सुरंग बनाकर उसी में तपस्या करने लगे। यह इतने संयमी थे कि थोड़ी सी नीम की पतियाँ या एक दो मिर्चे खाकर ही रह जाते थे। सुरंग में बिना खाये पिये महीनो तप करते रहते थे। इसलिए यह पौहारी (पवन + आहारी) के नाम से प्रसिद्ध हुए। अंतिम समय जानकर अपना शरीर अग्नि पर आहुत कर दिया। प्रसिद्ध स्वामी विवेकानन्द की इनमें बडी श्रद्धा थी।

बंदा—बंदा वैरागी बड़ा बीर पुरुष था। उसका असली नाम माधोदास था। उसने गुरु गोविंद से अमृत छका था तब से वह गुरु का बंदा हो गया और पंजाब भेजा गया, वहाँ पर उसने मनुष्यो के दुख दूर करने और दुर्बलो को निर्दयी मुगल सूबेदारों से रक्षा करने में सहायता की। उसने गुरु तेगबहादुर के हत्यारों पर आक्रमण किया और सरहिन्द के सूबेदार को लड़ाई में मार डाला, बंदा ने बहुत से सूबों को जीत लिया। बादशाह बहादुर शाह स्वयं बड़ी सेना लेकर पंजाब आया। उसने खालसा की सहायता से मुसलमानो को कई स्थानों पर परास्त किया। अंत में वह गुरुदासपुर में घिर गया किन्तु बडी वीरता से छै महीने तक लड़ता रहा। शाही सेना के अफसर ने उसको सुरक्षित निकल जाने का वचन दिया। परन्तु भूखे-प्यासे बंदा के सैनिक पकड़ लिये गये। बंदा उसके बड़े लड़के अजीतसिंह को कैदी बना लिया। ८०० सिक्खों को पकड़कर दिल्ली लाया गया की सेना को वध कर डाला। बंदा और उसके पुत्र की बोटी-बोटी काट डाली गई।

बैजू बावरा—ग्वालियर के एक प्रसिद्ध गवैया। वहाँ इनके नाम एक इमली का वृक्ष प्रसिद्ध है जिसकी पत्तियाँ गवैये लोग अपने स्वर को सुरीला करने के लिए चबाते हैं। इनके विषय में यह कहानी प्रसिद्ध है कि एक बार तानसेन से इनकी प्रतियोगिता हो गई। इन्होने अपनी वीणा के स्वर से बहुत से मृगों को बुला लिया और एक मुग्ध मृग के गले में फूलमाला डाल दी। बाजा बंद होते ही मृग अपने-अपने स्थान को चले गये। इसके पश्चात् तानसेन ने उन मृगो को बुलाने का बहुत प्रयत्न किया किन्तु असफल रहे। बैजू बावरे ने अपनी वीणा के प्रभाव से फिर उसी मालावाले मृग को बुला लिया।

भर्तृहरि—देखिए उल्लिखित गोपीचंद।

मत्स्येंद्र नाथ—गुरु गोरखनाथ के गुरु थे जिनको जनता मछंदर नाथ कहती है।

महीधर—एक वेदभाष्यकार।

महेंद्र—सम्राट् अशोक के पुत्र जो अपनी बहन के साथ बौद्ध-धर्म का प्रचार करने लंका गये थे।

मीरा—मीरा बाई का जन्म संवत् १५७३ में हुआ था और उदयपुर के महाराणा कुमार भोजराज के साथ विवाह हुआ था, थोड़े दिनों के पश्चात् इनके पति का स्वर्गवास हो गया। यह कृष्ण भक्त थीं। "मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई।" आदि अनेक पद इन्होंने कृष्ण-भक्ति के बनाये।

रंगाचार्य—स्वामी रंगाचार्य रामानुज सम्प्रदाय के विद्वान् आचार्य थे। दक्षिण से आकर वृंदावन में प्रसिद्ध रगनाथ का मंदिर बनवाया। सेठ लखमीचन्द्र के छोटे भाई सेठ राधाकृष्ण जैन धर्म छोड़कर इनके हो गये।

रामकृष्ण—स्वामी रामकृष्ण परमहंस, एक उच्च कोटि के संन्यासी, स्वामी विवेकानन्द के गुरु थे।

रामतीर्थ—यह १८७३ ई० में पंजाब के गोस्वामी हीरानन्द के यहाँ उत्पन्न हुए। २१ वर्ष में एम० ए० पास कर प्रोफेसर हो गये। इन पर धन्ना भगत का विशेष प्रभाव पडा। संसार से विरक्त हो १८९९ ई० में संन्यासी हो गये और इनका नाम तीर्थराम से रामतीर्थ पडा। इनके प्रभावशाली व्याख्यानों ने धूम मचा दी। १९०६ में दिवाली के दिन निर्वाण प्राप्त किया।

रामदास—(१) एक महाराष्ट्र महात्मा शिवाजी के गुरु थे। (२) सिक्खो के चौथे गुरु। १५३४ ई० में पैदा हुए। बचपन में इनको जेठा कहते थे। इनके पिता बचपन में ही मर गये थे। गुरु अमरदास इनके श्रम और सच्चाई से इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने अपनी कन्या इनको ब्याह दी। १५७४ में यह गुरु की गद्दी पर बैठे। इन्होंने एक ताल बनवाया जिसका नाम अमृतसर रखा गया और उसी नाम से आजकल वह शहर भी प्रसिद्ध है। अकबर भी इनसे भेंट करने आया था। १६८१ में इनका स्वर्गवास हो गया और इनके छोटे पुत्र अर्जुन गद्दी पर बैठे।

विवेकानन्द—एक प्रसिद्ध संन्यासी जो स्वामी रामकृष्ण के शिष्य थे, यह वक्तृता देने में बड़े कुशल तथा प्रभावशाली व्यक्ति थे, इन्होंने कई बार विदेश-यात्रा की।

विष्णुदिगंबर—महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध गायनाचार्य।

विष्णुगुप्त—देखिए चाणक्य।

विष्णुशर्मा—पंचतंत्र के रचयिता।

शिवव्रतलाल—राधा स्वामी सम्प्रदाय के एक गुरु जो कोपागंज (बनारस) में रहते थे।

सदना—एक कसाई भक्त जो सालिगराम की बटिया से मांस तौलकर बेचता था। एक ब्राह्मण यह घृणित कार्य देखकर उससे सालिग्राम को माँग लाया। उस भक्त से वियोग होने पर भगवान् को बड़ी व्याकुलता रही और रात को उस ब्राह्मण से स्वप्न में कहा, हमको सदना के ही घर पहुँचा दो। सबेरे ही ब्राह्मण सालिग्राम को उसके यहाँ दे आया।

सुंदरदास—दादूदयाल के शिष्य, (जन्म सं० १६५३ में देहांत संवत् १७४६ में हुआ) निर्गुण पंथियों में केवल यही संस्कृत के विद्वान् थे। इनकी कविता साहित्यिक और सरस है।

सेन—एक भक्त नाई जो रामानन्द का शिष्य था।

सेवरी—शवरी भीलनी जिसने प्रेम-भक्ति के कारण राम को जूठे बेर खिलाये थे[1]।

हरिकिशन—सिक्खों के आठवें गुरु यह गुरु हरिराय के पुत्र थे। १६५६ ई० में कीरत-पुर में पैदा हुए, १६६४ ई० में चेचक से मृत्यु हुई।

हरिगोविंद—सिक्खों के छठे गुरु १५९५ में पैदा हुए। यह दोनों तरफ दो कृपाण रखते थे जिनका नाम निरी-पीरी था। हरि मंदिर के सामने एक ऊँचा चबूतरा बनवाया जिसको अकाल तख्त कहते हैं। गुरु का नाम सच्चा बादशाह पड़ा। सिक्खो को हथियार चलाना सिखाया गया। जहाँगीर और सिक्ख गुरु में मित्रता हो गई। किन्तु शाहजहाँ से लड़ाई हो गई और चार युद्धों में शाही सेना को परास्त किया। १६४४ में गुरु का देहात हो गया।

हरिदास—स्वामी हरिदास अकबर के शासन काल में एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ हो गये हैं जिनको तानसेन गुरुवत मानते थे। अकबर जिनका गाना सुनने के लिए बड़ा लालायित था किन्तु इन्होंने उसके सामने गाना स्वीकार न किया। इस पर तानसेन ने जानबूझ कर गाने में एक अशुद्धि कर दी तो इन्होंने उस गाने को शुद्ध करके गाया। इस प्रकार अकबर को उनके मुख से गाना सुनने का अवसर मिला।

हरिराय—सिक्खों के गुरु हरिराय वि० स० १६६३ में कीरतपुर में हुए। यह बचपन से ही इतने दयालु हृदय के थे कि व्यर्थ एक फूल का तोड़ना भी नहीं सह सकते थे। आखेट मे भी पशुओं को मारने की अपेक्षा उनको पाल लिया करते थे। यह स० १७१८ में परलोकवासी हुए।

हेमचंद—एक प्रसिद्ध जैनाचार्य जो गुजरात के महाराज सिद्धराज तथा उनके भतीजे कुमारपाल की सभा में रहते थे। इन्होंने कई ग्रंथों की रचना की।

ग—गौण शब्द

१—**वर्णात्मक**—राय, सिंह

२—**सम्मानार्थक** :—

अ—**आदरसूचक**—बाबू

३—**भक्तिपरक**—आचार्य, किशोर, कुमार, गुरु, चंद्र, चरण, जीत, दत्त, दयाल, दास, दीन, दीप, देव, धर, नाथ, नाम, नारायण, पति, पाल, प्यारा, प्रकाश, प्रताप, प्रसाद, प्रिय, बहादुर, बोध, भगत, भास्कर, भिक्षु, भूषण, मल, मान, मूर्ति, मोहन, राम, लाल, वन, विजय, वीर, शंकर, शरण, सहाय, सागर, सिंह, सेवक, स्वरूप।

४—समीक्षण

कुछ नामों में संश्लिष्ट प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर हो रही हैं जिनका विश्लेषण सम्भव नहीं। अंगद सिक्खों के गुरु लहना तथा बालि के पुत्र का नाम है। अर्जुन पार्थ तथा सिक्खों के पाँचवें गुरु का

---

[1] बेर बेर बेर लै सराहैं बेर बेर बहु,
रसिक बिहारी देत बन्धु कहँ फेर फेर।
चाखि चाखि भाखें यह वाहू तें महान मीठो,
लेहु तो लषन यों बखानत हैं हेर हेर।
बेर बेर देवै बर शवरी सुवेर बेर,
तोऊ रघुबीर बेर बेर तेहिं टेर टेर।
बेर जनि लावो बेर बेर जनि लावो,
बेर जनि लावो बेर लाओ कहें बेर बेर।

नाम है। आनन्द बुद्ध के शिष्य का नाम तथा अंतःकरण की एक वृत्ति है। यह आशीर्वाद देने में भी प्रयुक्त होता है।

देवेंद्र—कवींद्र रवींद्र के पिता महर्षि देवेंद्रनाथ ठाकुर तथा इन्द्र का बोधक है।

धर्म—यह कबीर के शिष्य धर्मदास तथा सात्विक धर्मप्रवृति के लिए प्रयुक्त होता है। नरहरि गोस्वामी तुलसीदास के गुरु का नाम है और नृसिंह अवतार के अर्थ में भी आता है। बैजू (१) प्रसिद्ध संगीतज्ञ बैजू बावरे (२) बैजनाथ तीर्थ। महेंद्र—अशोक का पुत्र, इंद्र तथा शिव के अर्थ में आता है। राम कृष्ण—स्वामी रामकृष्ण, बलदेव और कृष्ण, राम तथा कृष्ण। इस भावना-द्वय के कारण कुछ नामों की संख्या पर्याप्त दिखलाई देती है। भक्त पूरणमल तथा राजा गोपीचंद भर्तृहरि की कहानियाँ गाँव-गाँव बहुत प्रचलित हैं। इसीलिए इनके नामो के कई विकृत रूप मिलते हैं। सिक्ख गुरुओं का प्रभाव भी स्पष्ट है। दस गुरुओं में से प्रायः सब के नाम इस संग्रह में आ गये हैं। भारत में गुरुओं में विशेष आस्था पाई जाती है। इनके लिए काल अथवा स्थान की कोई बाधा नहीं। भक्तों में ऊँच नीच का भेद भी कम माना जाता है। यही कारण है कि दक्षिण के भक्त सन्त एकनाथ, ज्ञानेश्वर, तुकाराम, त्यागराज, नामदेव, समर्थ गुरु रामदास; बंग देश के जयदेव, देवेंद्रनाथ; पंजाब के सन्त निहालसिंह; गुजरात के नरसी; महाराष्ट्र के हरिदास आदि के नाम यहाँ पाये जाते हैं। भारत का प्रत्येक देश इस सत्संग में सहायक हो रहा है। सदना कसाई, सेना नाई, नाभा भंगी, धना जाट, रैदास चमार आदि अन्त्यज एवं अछूत हरिजन[1] इस साधु समाज के अत्यंत आवश्यक अंग हैं। राज-परिवार की दो महिलाएँ मीरा तथा अहिल्या बाई भी अपनी भक्ति का सहयोग दे रही हैं। यह संग्रह हमारे देश के साधु-सन्त गुरु आदि धार्मिक प्रतिनिधियों का सच्चा आदर्श उपस्थित कर रहा है।

---

[1] कोरी कबीर चमार रैदास हौ जाट धना सधना हौ कसाई।
गीधगुनाह भरयौई हुत्यौ, भरि जन्म अजामिल कीन्ही ठगाई॥
'दास' दई इनको गति जैसी, न तैसी जपीन्ह तपीन्ह हु पाई।
साहेब साँचो न दोष गनै, गुन एक लहै जु समेत-सचाई॥
(भिखारी दास)

नवाँ प्रकरण

तीर्थ

क्रमिक गणना—(१) इस प्रवृत्ति में आये हुए नामों की संख्या ३८५ है।

(२) मूल शब्द—१४३

(३) गौण शब्द—३९

ख—रचनात्मक गणना :—

प्रवृत्ति का नाम	एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	योग
चार धाम—जगन्नाथ	१	२			३
द्वारका	१	३			४
बद्रीनाथ	३	१०	२		१५
रामेश्वर	१	३		१	५
सप्तपुरी—अयोध्या	३	११			१४
अवंतिका		१			१
कांची		३			३
काशी	२	११	१		१४
द्वारिका	१	२			३
मथुरादि	९	२१	१२	१	४३
मायापुरी		१	६		७
इतर तीर्थ	३४	१६९	६१	९	२७३
	५५	२३७	८२	११	३८५

२—विश्लेषण :—

क—मूल प्रवृत्ति द्योतक शब्द :—

(१) चार धाम—

क—जगन्नाथ—जगन्नाथ, पुरई

ख—द्वारका—द्वारका, द्वारिका

ग—बद्रीनाथ—बदरी, बद्दू, बद्री

घ—रामेश्वर—रामसेत, रामेश्वर, सेतन, सेतुबंधु, सेतू।

पुरई<पुरी। बद्दू<बद्री<बदरी

(२) सप्तपुरी—

त—अयोध्या—अजुद्धी, अजुध्या, अयोध्या, अवध, औधू, कौशल।

अजुद्धी<अजुध्या<अयोध्या, औधू<अवध।

थ—अवंतिका—अवंती।

द—काँची—कांची, कांछी।

ध—काशी—आनन्दवन, कशिया, काशी, कासी, पंचकोशी।

कशिया<काशी या कुशीनार कोशी<क्रोशी।

न—मथुरा—कोकिला, गिरवर, गिरिराज, गिरिविर, गिर्राज, गोकुल, गोधन, गोधा, गोधू, गोरधन, गोवर्धन, विंदावन, विंद्रावन, मथुरा, मथुरी, मधुवन, महावन, वृन्दावन, ब्रज।

टिप्पणी—गोवर्द्धन के विकसित रूप गोधन, गोधा, गोधू, गोरधन। गिर्राज<गिरिराज।

प—मायापुरी—हरिद्वार, हरिद्वारी।

३—इतर तीर्थ

अक्षतबड़, अक्षयवट, अखैवर, अचल, अचलू, ऋषिकेश, कड़ी, कड़े, कड्डी, कढ़ा, कमतू, कमसान, कामता, कुमारी, कुरु, कुलक्षेत्र, क्षेत्र, खिरोधर, गंगा सागर, गंगोत्री, गया, गयारी, गयालू गिरिनार, गिरिविंध्य, गुप्तार, गोकरण, चित्रकूट, चौहर्जा, चौहरिया, चौहारी, जगमंदर, जगेश्वर, जोगमंदर, झूँसी, तखत, तीरथ, तीर्थ, तुंगल, त्रिवेणी, थरिया, देव प्रयाग, धनुकक्षेत्र, नन्दाचल, नाथ, नाथू, पयाग, परगू, पराग, परागी, परागू, पाटन, पिलखिन, पुष्कर, पुहकर, पोकर, पोखर, पोहकर, प्रतिष्ठान, प्रभास, प्रयाग, प्रयागी, प्राग, विसराम, बेनी, मनिकर्णिका, मनिकरण, मनोकनिक, मिथिला, मैहरू, राजगिरि, राजगृही, रामसरोवर, रामसागर, लोलार्क, वंकट, विंध्य, विंध्याचल, विश्राम, वेंकट, व्यंकट, शत्रुंजय, शिवकोटि, संगत, संगम, सम्भल, साँची, सागर, सारनाथ, सिंहाचल, हरगिर, हरिहर, हिंगलाज, हिंगा, हिंगू, हिमराज, हिमाचल, हिमेंद्र।

विकसित रूपों के तत्सम रूप—

अखैवर<अक्षयवट। कड्डी<कड़ा<कर या कर्णिका। कमतू<कामता<कामदा। कुलक्षेत्र< कुरुक्षेत्र। खिरोधर<क्षीरोदर। गयारी, गयालू<गया। थरिया<स्थली। पयाग, परगू, परागी, प्राग<प्रयाग। पुहकर, पोकर, पोखर, पोहकर<पुष्कर। मनोकनिक<मणि कर्णिका। मैहरू<मिहिर। वंकट व्यंकट<वेंकट।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति

चारधाम :—

क—जगन्नाथ—यह धाम उड़ीसा प्रांत में समुद्र के तट पर स्थित है। इसे पुरुषोत्तमपुरी भी कहते हैं। यहाँ पर निवास करने से सारूप्य मुक्ति मिलती है। ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को पुरी में स्नान करने से बड़ा पुण्य होता है क्योकि पृथ्वी पर जितने तीर्थ, नदी, तालाब, बावली, कुआँ और कुंड हैं वे सब इस मास में यहाँ शयन करते हैं और ज्येष्ठ शुक्ला दशमी को उठते हैं, इसीलिए दशमी को गंगा दशहरा मनाया जाता है, यहाँ पर हिन्दू भगवान् का प्रसाद खाने में छुआछूत का विचार नहीं करते। रथयात्रा यहाँ मुख्य उत्सव है जो आषाढ़ शुक्ल द्वितीया से आरम्भ होता है।

ख—द्वारका, द्वारावती—यह बड़ौदा राज्य में समुद्र के तट पर है। मथुरा से आकर श्रीकृष्ण ने इसे बसाया था; इसका अधिकांश भाग समुद्र में डूब गया है और अब एक टापू पर श्रीकृष्ण के महल दिखलाये जाते हैं।

ग—बद्रीनाथ[१]—हिमालय पहाड़ में गंगोत्री के निकट समुद्र के धरातल से २३२०० फीट ऊँचा है यहाँ पर बर्फ जमी रहती है, केवल गर्मियों के दिनों में ही यात्री विष्णु भगवान् का दर्शन कर सकते हैं। इस बदरिवन की तपोभूमि में नरनारायण, मास, कृष्ण, शङ्करादि, अनेक ऋषि मुनियों ने तप किया था। रुद्र का कपालमोचन यहीं हुआ था।

घ—सेतुबंधु रामेश्वर—यह धाम धुर दक्षिण में है, श्रीरामचंद्र ने लंका जाते समय समुद्र का पुल बनाया था और शिव की एक मूर्ति स्थापित की थी। इसी लिए इस मूर्ति का नाम रामेश्वरम् है, अब भी लंका और भारत के बीच में छोटे-छोटे टापुओं की एक शृंखला है जो पुल के अवशेष बतलाये जाते हैं। इन्हीं द्वीपो में से प्रथम में रामेश्वरम् का मंदिर है।

सप्तपुरी :—

---

[१] बद्-खद्-स्थैर्यम्।

त—अयोध्या, अवध, कौशल—भगवान् श्री रामचद्रजी की जन्मभूमि तथा इक्ष्वाकु वंशी राजाओं की राजधानी अयोध्या सरयू (घाघरा) नदी के दक्षिण तट पर स्थित है। प्राचीन काल में यह एक विशाल नगर था। चैत्र की रामनौमी पर बड़ा भारी मेला लगता है।

थ—अवंती (उज्जैन)—अवंती मालवा प्रदेश में शिप्रा नदी पर स्थित है, यहाँ पर सांदीपनि गुरु का गुरुकुल था। राजा विक्रमादित्य की राजधानी थी। यहाँ महाकालेश्वर शिव की मूर्ति है।[1]

द—कांची—कांजीवरम् दक्षिण का मुख्य तीर्थ है। यह दो भागों में विभाजित है, शिव काची, विष्णु कांची यहाँ पर रामानुजाचार्य सम्प्रदाय का प्रधान मठ है।

ध—काशी—गङ्गाजी के किनारे हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थस्थान तथा संस्कृत का केंद्र है। यहाँ पर विश्वनाथ का प्रसिद्ध मंदिर है। बनारस के योग से बने हुए नाम स्थान प्रवृत्ति में लिखे गये हैं।

न—व्रज के तीर्थ :—

गिरिराज, गिरिवर, गोकुल, गोवर्धन, विंद्रावन :—ये तीर्थ व्रज मंडल के अन्तर्गत भगवान् कृष्ण की लीलाओं के स्थल हैं। श्रीकृष्ण के सम्पर्क से व्रज अत्यंत पुनीत एवं गौरवशाली हो गया है। इसकी व्युत्पत्ति यह है "व्रजन्ति अस्मिन् जना श्रीकृष्णप्राप्त्यर्थमिति व्रजः" अर्थात् श्रीकृष्ण भगवान् से मिलने जीव यहाँ आते हैं। पशु जहाँ अधिक रहते हैं उसे भी व्रज कहते हैं। मथुरा और वृन्दावन के आसपास ८४ कोस तक व्रज का विस्तार है। इसमें बारह महावन, अनेक उपवन, चार नदियाँ, पाँच सरोवर, पाँच पर्वत, अगणित मठ, मंदिर, कुण्ड आदि हैं। यहाँ पर भगवान् कृष्ण ने अलौकिक लीलाएँ की हैं जिससे भक्त उनके दर्शनों को लालायित रहते हैं।[2]

कोकिला—नन्द गाँव के पास कोकिला वन के सघन वृक्षों की कुजों में श्रीकृष्ण कोयल की भाँति बोले थे। इसी से इनको कोकिलास्वरभूषण भी कहते हैं।

वृन्दावन—यह किंवदंती है कि वृन्दावन में मंदिर और बंदर हैं। यहाँ मंदिरों की संख्या ५,००० से ऊपर है और बंदरों की तो कोई गणना ही नहीं। किसी ने कहा है "बिंदरावन में बँदरा-बन। भजन करत हैं साधू जन।" यहाँ के मुख्य मंदिर युगलकिशोर का मंदिर, बाँकेविहारी का मंदिर, राधा वल्लभ का मंदिर, राधारमण का मंदिर, गोपीनाथ का मंदिर, गोकुलानन्द का मंदिर, मदनमोहन का मंदिर, गोपेश्वर महादेव का मंदिर, लालाबाबू का मंदिर, रंगनाथ का मदिर, गोविन्ददेव का मंदिर, किशोरीरमण का मंदिर आदि हैं। वृंदावन में तीन ही श्री विग्रह स्वयं प्रकट तथा प्राचीन माने जाते हैं :—हरिदास स्वामी के बाँकेविहारी, गोपाल भट्ट के राधारमण और हित हरिवंश के राधावल्लभ, इनके अतिरिक्त यहाँ पर अनेक पवित्र स्थान हैं जहाँ पर वृन्दावनविहारी श्रीकृष्णचन्द ने गोप-गोपियों के साथ अनेक अलौकिक लीलाएँ की हैं।[3]

---

[1] उज्जैन के नाम : अमरावती, कुमुद्वती, पद्मावती, कुशस्थली, अवंती, अवंतिका, विशाला कनकश्रृंगा, उज्जयिनी।

[2] मानुष हौं तौ वही 'रसखानि' बसौं व्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पशु हौं तौ कहा बस मेरो चरौं नित नन्द की धेनु मँझारन॥
पाहन हौं तौ वही गिरि को, जो धर्यो कर छत्र पुरंदर धारन।
जो खग हौं तौ बसेरो करौं मिलि, कालिंदी कूल कदंब की डारन॥ (रसखान)

[3] वेदद्रुमे मृगय मा वृन्दाविपिने द्रुमे द्रुमे पश्य।
यत्रव्रजवनिता भूत्वा श्रुतिभिरिहैवावलोकितंब्रह्म॥

मायापुरी (हरिद्वार)—हरिद्वार और कनखल के बीच में स्थित थी। इस पुरी में राजा वेणु का किला था, अब केवल खंडहर रह गये हैं। यहाँ हरि की पौढ़ी प्रसिद्ध स्थान है। प्रति बारह वर्ष में कुम्भ का मेला लगता है।

इतर तीर्थ—अक्षयवट, यह पवित्र अक्षयवट प्रयाग में किले के भीतर है।

अचल—अलीगढ़ का अचल तालाब प्रसिद्ध है वहाँ अचलेश्वर महादेव का मन्दिर है।

ऋषिकेश—हरिद्वार से १४ मील उत्तर की ओर है उसको हृषीकेश भी कहते हैं। भरतजी ने यहाँ पर तपस्या की है और उनका एक मन्दिर भी है।

कड़े—इलाहाबाद जिले में कड़ा में शीतला देवी का मन्दिर है। यहाँ सती का कर-आभूषण (कड़ा) गिरा था जिससे इस स्थान का नाम कड़ा पड़ा।

कमसान--(उ० प्र०) गाँव में देवी का मन्दिर है।

कामता—चित्रकूट का कामदगिरि तीर्थ। कुमारी—भारत के दक्षिण में कन्या कुमारी अन्तरीप, यहाँ पर देवी का एक विशाल मंदिर है।

कुरू—दिल्ली के पास कुरुक्षेत्र में कौरव पांडवों में महाभारत का युद्ध हुआ था। सूर्यग्रहण के समय यहाँ कुण्ड में नहाने का बड़ा माहात्म्य है।

खिरोधर—क्षीर सागर (मथुरा में एक ताल)।

गङ्गासागर—बंगाल की खाड़ी में गंगा के मुहाने पर गंगासागर तीर्थ है।

गंगोत्री—हिमालय पर्वत में गंगा जी का उद्गमस्थान है।

गया, गयारी, गयालू—गया हिन्दुओं और बौद्धों का तीर्थस्थान है। यहाँ पर पितरों को पिंडदान किया जाता है। गय दैत्य की देह पर बसने से गया नाम पड़ा।

गिरिनार—जैनियों का तीर्थ है। काठियावाड़ प्रान्त में एक पर्वत है। यहाँ २२ वें तीर्थंकर नेमिनाथ मोक्षधाम को गये। जूनागढ़ शहर के पूर्व १० मील की दूरी पर है और समुद्र के धरातल से ३६७५ फीट है, इसे हिन्दू, जैन तथा बौद्ध आदर से देखते हैं।

गिरिविंध्य—मिर्जापुर जिले में विंध्याचल पर विंध्यवासिनी देवी का मन्दिर है यहाँ प्रायः सभी अवतारों के मन्दिर हैं।

गुप्तार[1]—काशी से नौ मील गुप्तार घाट पर श्री हरि का मन्दिर है।

गोकरण—खीरी जिले में गोकरणनाथ का मन्दिर है। इस नाम का तीर्थ दक्षिण में भी है।

चित्रकूट—बाँदा जिले में चित्रकूट तीर्थ पयस्विनी के तट पर स्थित है जहाँ पर बनवास के समय सीता, राम, लक्ष्मण ने निवास किया था। गोस्वामी तुलसीदास भी यहाँ बहुत दिनों तक रहे थे।

चौहरजा—प्रतापगढ़ के पास चौहरजा गाँव में चौहरजादेवी का मन्दिर है।

जगमंदर—जोधपुर के महाराज जगतसिंह ने झील में एक सुंदरप्रसाद का निर्माण कराया जिसको जगमन्दर कहते हैं। (ईश्वरवाची भी हो सकता है।)

जागेश्वर—फतहपुर जिले में एक स्थान है जहाँ पर महादेव का मन्दिर है।

जोगमंदर—यह योग माया का मन्दिर प्रतीत होता है।

झूँसी (<√झुलसना)—यह तीर्थ इलाहाबाद के पास गंगा के दूसरे तट पर स्थित है इसका पुराना नाम प्रतिष्ठानपुर था "अंधेर नगरी गबरगंड राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा" यह उक्ति इसी के लिए प्रसिद्ध है। शंकराचार्य के गुरु कुमारिलभट्ट ने तुषानल में जलकर यहीं प्राण विसर्जन किये थे।

---

[1] बक्सर के पास गंगा का रामरेखा घाट है।

तखत—सिक्खों के तीर्थ तखत कहलाते हैं।

तुंगल (तुंग)—हिमालय पर एक तीर्थस्थान जहाँ पर तुंगनाथ महादेव का मन्दिर है।

त्रिवेणी—प्रयाग में वह स्थान जहाँ गंगा, जमुना और सरस्वती नदियों का संगम है।

थरिया—फतेहपुर जिले के थरिया गाँव में शीतला देवी का मन्दिर है।

देवप्रयाग—टेहरी राज्य के अंतर्गत एक तीर्थस्थान।

नंदाचल—दक्षिणी हिमालय की एक चोटी जो २५००० फुट ऊँची है। (कदाचित् व्रज का कोई पहाड़ी टीला।)

नाथ—उदयपुर राज्य के अंतर्गत नाथद्वारा एक तीर्थ जहाँ वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णवों का एक प्रसिद्ध तीर्थ मंदिर है जिसमें श्री नाथजी की मूर्ति स्थापित है।

प्रयाग—गंगा जमुना के संगम पर प्रसिद्ध तीर्थ है। यह तीर्थों का राजा माना जाता है।[1] आजकल इसे इलाहाबाद कहते हैं। एक प्राचीन अक्षयवट प्रयाग के किले के भीतर है, दूसरा गया क्षेत्र में है। पुराण के अनुसार इसका नाश प्रलयकाल में भी नहीं हुआ था इसी से इसका नाम अक्षयवट पड़ा। इसके पूजन करने से अक्षय फल मिलता है। अलोपीदेवी, बासुकीनाग, भरद्वाज आश्रम आदि दर्शनीय पुण्य स्थान हैं। प्रतिवर्ष माघ मास में संगम पर एक मेला लगता है जो एक मास तक रहता है। प्रति बारहवें वर्ष कुम्भ मेला होता है। यहाँ पर ब्रह्मा के अनेक यज्ञ (याग) करने से प्रयाग कहलाया।

पाटन—गोंड़ा जिले में पाटन में देवी का एक मंदिर है।

पिलखिन—यह उत्तर प्रदेश के पच्छिम में एक गाँव है जहाँ पर देवी का मंदिर है।

पुष्कर—अजमेर के पास पुष्कर तीर्थ में ब्रह्मा जी का मंदिर है। यहाँ एक ताल है जहाँ स्नान करने का बड़ा पुण्य है। पुष्कर तीर्थों का गुरु माना जाता है।

प्रभास—प्रभास क्षेत्र में, सोमनाथ महादेव का इतिहास-प्रसिद्ध मन्दिर है। वह काठियावाड़ में है।

विसराम (विश्राम)—मथुरा में जमुना के तट पर विश्राम घाट है, जहाँ पर श्री कृष्ण ने कंस को मारने के बाद विश्राम लिया था अथवा सांसारिक पथिकों को यहाँ पर विश्रांति मिलती है। इस घाट पर दतिया के महाराज ८१ मन सोने से और काशी नरेश तीन मन सोने से तुले थे।

बेनी—देखिए त्रिवेणी।

मनिकर्णिका—काशी का एक तीर्थ जो गंगा के किनारे है।

मिथिला—राजर्षि जनक की नगरी जिसे आजकल तिरहुत कहते हैं।

मैहरू—मैहर राज्य में शारदा (दुर्गा) का मन्दिर है। मैहर की देवी के आल्हा बड़े उपासक थे।

राजगिरि, राजगृही—बिहार प्रांत के एक प्राचीन नगर का नाम। यह बुद्धविहार के लिए प्रसिद्ध है।

रामसरोवर, रामसागर—तीर्थस्थान।

लोलार्क—काशी में एक तीर्थ का नाम।

---

[1] सितासिते यत्र तरंग चामरे नद्यौ विभाते मुनि-भानु कन्यके।
नीलातपत्रं वट एव साक्षात् स तीर्थराजो जयति प्रयागः॥ (रघुवंश)

वेंकट, वेंकट[1]--पचवटी में एक पर्वत।

विंध्य, विंध्याचल—भारत के मध्य में एक पर्वत जिस पर विंध्यवासिनी देवी का मन्दिर है।

शत्रुंजय—शत्रुंजय का मंदिर पालीटाना राज्य में एक पहाड़ पर है। इसमें इतनी सीढ़ियाँ हैं कि यात्री चढ़ते-चढ़ते थक जाता है। यहाँ ६६ बार चढ़ने और मंदिर की परिक्रमा देकर उतरने तथा जिनदेव की पूजा करने का बड़ा माहात्म्य समझा जाता है। यहाँ के मंदिर अत्यंत सुन्दर हैं। कार्तिक पूर्णिमा को शत्रुंजय की यात्रा होती है।

शिवकोटि—इलाहाबाद में शिवकोटि नामक तीर्थ स्थान है। यहाँ पर एक कोटि शंकर बतलाये जाते हैं। सावन में मेला लगता है।

संगत– वह स्थान जहाँ राधा स्वामी मत के मानने वाले अपने गुरु के पास एकत्रित हो सत्सग करते हैं। २--वह मठ जहाँ उदासी या निर्मले साधु रहते हैं।

संगम—गंगा-जमुना जहाँ मिलती हैं उसे संगम कहते हैं।

सम्भल—मुरादाबाद में एक नगर जहाँ पर कल्कि अवतार होने वाला है।

साँची—भूपाल राज्य में साँची का बौद्ध स्तूप प्रसिद्ध है।

सागर—देखिये गंगा सागर।

सारनाथ—बनारस से ४ मील उत्तर-पच्छिम में एक तीर्थ स्थान जहाँ पर शिव का एक मन्दिर तथा एक बड़ा बौद्ध स्तूप है। बुद्ध का धर्म चक्रप्रवर्तन यहीं से आरम्भ हुआ था।

सिंहाचल—इस पर्वत पर नरसिंहजी का मन्दिर है जो ६८८ सीढ़ियों पर चढ़ने के बाद मिलता है। मूर्ति सदा चन्दन से ढकी रहती है। यहाँ कार्तिक में बड़ा भारी मेला लगता है।

हरगिरि—कैलास में शिव निवास करते हैं।

हरिहर—क्षेत्र विहार प्रांत का एक प्रसिद्ध स्थान है जहाँ पर कार्तिक के महीने में एक मेला लगता है।

हिंगलाज—करॉची से ६० मील उत्तर में है। वहाँ पर अँधेरी गुफा में ज्वाला देवी के दर्शन होते हैं।

हिमाचल—भारत के उत्तर में प्रसिद्ध हिमालय पर्वत श्रेणी।

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयोनाम नगाधिराजः। (कालिदास)

ग—गौण शब्द

१—वर्गात्मक—राय, सिंह, सिनहा।

२—भक्तिपरक—कुमार, कृपाल, कृष्ण, गोपाल, चंद्र, चरण, 'जित, जीत, ध्वज, दत्त, दयाल, दास, दीन, नन्द, नाथ, नारायण, निवास, पाल, प्रकाश, प्रताप, प्रसाद, बक्स, बहादुर, मणि, मल, माधव, रमण, राज, राय, लाल, वासी, विशाल, शंकर, शरण, श्याम, सहाय।

टिप्पणी—तीर्थों के साथ देववाची नाम (कृष्ण, गोपाल, शंकरादि) उस स्थान की मूर्ति-विशेष की ओर संकेत करते हैं।

---

[1] पवित्र तथा सुंदर वेंकटाचल की कथा इस प्रकार है। एक बार आदिशेष तथा पवन देव में यह विवाद छिड़ा कि हम दोनों में से कौन अधिक बली है। शेषनाग सुमेरु पर्वत से कसकर लिपट गया। वायु ने उसे अपने प्रबल वेग से उड़ाने का महान् प्रयास किया। इस संघर्ष में सुमेरु का एक छोटा सा टुकड़ा टूटकर दक्षिण में स्वर्णमुखी नदी के तट पर आ गिरा। यही वेंकटाचल के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह त्रिपती गिरिमाला का एक अंश है। इस तीर्थ के आदिवराह के मंदिर में श्री निवास तथा पद्मावती विराजमान हैं।

समीक्षण

हिन्दू धर्म में तीर्थों का महत्व भी अत्यधिक दिखलाई देता है। ये पुण्य क्षेत्र पेशावर से पुरी तक एवं कश्मीर से कन्याकुमारी तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में फैले हुए हैं। प्रधान तीर्थ गंगा जमुना आदि नदियों के तट पर, समुद्र के पास एवं पर्वतो के पार्श्व में अवस्थित हैं। प्रकृति सौंदर्य, साधु महात्माओं का सत्संग तथा धर्मोपदेश, पुण्य सलिला सरिताओ में स्नान, भगवान् के प्रतीक के दर्शन आदि कई कारणो से तीर्थ स्थान मुक्ति के मार्ग समझे जाते हैं। यहाँ पर तन की अपवित्रता तथा मन की दुर्वासना के दूर होने से मनुष्य इन्हें स्वास्थ, सुख, शांति तथा स्वर्ग की प्राप्ति के साधन मानते हैं। इसीलिए यातायात की अनेक असुविधाएँ होते हुए भी लोग चार धाम और सप्तपुरियों की यात्रा करना आवश्यक समझते हैं। अधिकांश तीर्थ शिव के परिवार तथा विष्णु एवं उनके अवतारो से सम्बंध रखते हैं। पूर्व में साकेत-सम्भवा-रामदिनचर्या स्रोतस्विनी उत्तर में मिथिला से परावर्तित हो प्रयाग, चित्रकूट, पंचवटी को स्पर्श करती हुई रामेश्वर तथा धनुषकोटि के सन्निकट समुद्र से मिल जाती है। द्वितीय धारा कृष्णलीला के रूप में व्रज के मथुरा वृंदावन से उद्भूत हो कुरुक्षेत्र आदि स्थलों को पवित्र करती हुई, पश्चिम में समुद्रस्थ द्वारका तक पहुँचती है। इन दो धर्म धाराओं के पावन प्रभाव से अनेक स्थल पुण्य तीर्थ बन गये हैं। विष्णु का सम्बंध चार धाम तथा सप्तपुरियों से माना जाता है। गंगा जी ने भी अपने तटस्थ अनेक नगरों को अपने पुनीत जल से तीर्थ बना दिया है। शिव तथा पार्वती का प्रभाव भी अत्यन्त विस्तृत तथा व्यापक दिखलाई देता है। द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों के अतिरिक्त अनेक अपरिचित बन, पर्वत, टीले आदि इनके प्रभाव से तीर्थ संज्ञक हो पुजने लगे हैं। सती के ५१ सिद्ध पीठ प्रसिद्ध हैं जहाँ पर उनके शव के ५१ खंड होकर गिरे हैं। प्रयाग में कड़ा, प्रतापगढ़ में चौहरजा आदि ऐसे ही पुण्य स्थल हैं। सूर्यादि अन्य देवों के भी कुछ तीर्थ प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त जैनियों के तीर्थंकरों के, सिक्खों के गुरुओं तथा धर्म प्रवर्तकों के जन्म एवं निर्वाण-स्थल भी तीर्थ माने जाते हैं। बौद्धों के भी कुछ प्रसिद्ध तीर्थ हैं।

तीर्थों में बहुधा देवताओं के नाम के कुण्ड, ताल, सागर, घाट, मन्दिर, टीले आदि तीर्थ-तुल्य पवित्र स्थान होते हैं जहाँ पर प्रायः बच्चों का मुडन कराया जाता है। बहुत से नाम उनसे सम्बद्ध देवों के नाम पर ही रख लिये जाते हैं। कभी-कभी स्थान या भक्त विशेष के नाम से भी देव प्रसिद्ध हो जाते हैं।

प्रस्तुत नामों में तत्सम तथा विकसित दोनों प्रकार के शब्द पाये जाते हैं। इससे विदित होता है कि ये नाम शिक्षित तथा अशिक्षित दोनो वर्ग के मनुष्यों में प्रचलित हैं। नदियों के सदृश यहाँ पर भी वही तीन मनोवृत्तियाँ कार्य कर रही हैं। तीर्थ की पुण्य भावना से, उनकी मनौती मनाने से अथवा वहाँ पर उत्पन्न होने से ये नाम रखे गये हैं।

दसवाँ प्रकरण

धर्म-ग्रंथ

१—गणना

क—क्रमिक गणना

१—नामों की संख्या ६५

२—मूल शब्दों की संख्या २२

३—गौण शब्दों की संख्या ३६

ख —रचनात्मक गणना

प्रवृत्ति	एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	योग
वैदिक काल	२	२०	८	३०
दर्शन	१	६	१	८
पौराणिक काल		९	२	११
आधुनिक काल	२	६	८	१६
	५	४१	१९	६५

२—विश्लेषण

क—मूल प्रवृत्ति द्योतक शब्द

वैदिक काल—निगम, बेदा, बेदी, वेद, श्रुति ।

वेद के विकृत रूप—बेदा, बेदी ।

दर्शन—दर्शन, वेदांत ।

पौराणिक काल—गीतम, गीता, भगवत, भागवत, हरिवंश ।

आधुनिक काल—गंगालहरी, पत्रा, पत्रिका, प्रेमसागर, भक्तमाल, रघुवंश, रामायण, रामायन, सुखसागर ।

ख —मूल शब्दों की निरुक्ति

वैदिक काल

निगम—वेद (श्रुति) चार हैं ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, ये अपौरुषेय माने जाते हैं जो सृष्टि के आदि में अग्नि वायु आदित्य अंगिरस इन चार ऋषियों द्वारा आविर्भूत हुए। ज्ञान, कर्म, उपासना का प्रतिपादन करने से इनको वेदत्रयी भी कहा गया है। यह हिंदुओं के अत्यंत पवित्र ग्रंथ हैं।

दर्शन—

दर्शन—वह शास्त्र जिसके द्वारा यथार्थ तत्त्व का ज्ञान होता है। सांख्य न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, योग और वेदांत—षड्दर्शन कहलाते हैं।

वेदांत—उपनिषद् तथा दर्शन इन दोनो को वेदांत कहा गया है क्योंकि उपनिषद् वेद के अंत में ऋषियों द्वारा रची गई थीं। षड्दर्शनों को वेदांत इसलिए कहा गया है कि वे वेद के अंतिम उद्देश्य का निरूपण करते हैं अथवा वेदों के अंत में रचित उपनिषद् उनका आधार है।

पौराणिक काल—

गीतम, गीता—भगवद् गीता महाभारत का एक अंश है जिसमें श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कर्मयोग के महत्त्व पर उपदेश दिया है।[1]

भागवत[2]—श्रीमद् भागवत अठारह पुराणों के अंतर्गत एक महापुराण जिसमें भगवान् कृष्ण की लीलाओं का वर्णन है।

हरिवंश—महाभारत का परिशिष्ट अंग जिसमें कृष्ण और उनके वंश का विस्तृत वर्णन है।

आधुनिक काल—

गंगालहरी—पंडितराज जगन्नाथ ने संस्कृत में और पद्माकर ने हिन्दी में गंगालहरी नामक काव्य की रचना की है।

पत्रा—तिथि पत्र, पंचांग जिसमें पंडित तिथि राशि आदि देखते हैं।

पत्रिका—इससे तुलसीकृत विनयपत्रिका से अभिप्राय प्रतीत होता है जो श्रीराम के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए लिखी गई थी।

प्रेमसागर—लल्लूलालकृत भागवत के दशम स्कंध का ब्रजभाषा में अनुवाद।

भक्तमाल—नाभा जी रचित एक ग्रंथ जिसमें वैष्णव भक्तों के चरित्र वर्णित हैं।

रघुवंश—कालिदास कृत संस्कृत का एक महाकाव्य जिसमें राम के पूर्वजों के चरित वर्णन किये गये हैं।

रामायण[3], रामायन—राम का चरित्र वर्णन करनेवाले अनेक ग्रंथ संस्कृत तथा हिंदी में रचे गये हैं जिनमें बाल्मीकि रामायण, तथा तुलसीदास का रामचरित मानस अधिक प्रसिद्ध हैं। अंतिम ग्रंथ भी रामायण के नाम से ही जनता में विख्यात है।

सुखसागर - यह ग्रंथ सदासुख राय का बनाया हुआ बतलाया जाता है।

ग—गौण शब्द

१—वर्गात्मक—सिंह

२—सम्मानार्थक—जी

३—भक्तिपरक—आनन्द, इद्र, कात, किशोर, कुमार, चंद, चंद्र, चरण, दत्त, दयाल, दास, दीन, देव, धर, नाथ, नारायण, निधि, पाल, प्रकाश, प्रताप, प्रसाद, प्रिय, भूषण, मणि, मित्र, राज, राम, लाल, व्रत, शरण, श्री, सहाय, सेन, स्वरूप,।

३ – विशेष नामों की व्याख्या

व्याख्या के लिए कोई विशेष नाम नहीं है।

---

[1] सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनंदनः।
पार्थोवत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतंमहत्॥

[2] आदौ - देवकी - देवगर्भ जननं गोपीगृहे वर्धनं,
मायापूतनजीवताप - हरणं श्रीगोवर्धनोद्धारणम्॥
कंसोच्छेदन कौरवादि हननं कुंतीसुतापालनम्,
एतद् श्रीमद्भागवतपुराणकथितं श्रीकृष्णलीलामृतम्।

[3] आदौरामतपोवनादि गमनम् हत्वामृगं कांचनम्,
वैदेही हरणं जटायु-मरणं सुग्रीव सम्भाषणं॥
बाली निर्दलनं समुद्र तरणं लंकापुरी - दाहनं,
पश्चाद्रावण कुम्भकरण हननं एतद्धि रामायणम्।

४—समीक्षण

वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से देवत्व की भावना से समादृत होते हैं तथा वे निगम एवं श्रुति के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। वेदपरक अधिकांश नाम आर्यसमाज के प्रभाव के फल-स्वरूप हैं, क्योंकि उसके प्रवर्तक स्वामी दयानन्द ने ही वेदों की अपौरुषेयता, महत्ता आदि का प्रचार जनता में किया। इससे पहले वे गोपनीय समझे जाते थे। वेद के पश्चात् उपनिषद् तथा दर्शन मान्य ग्रंथ हैं। इन दोनों को ही वेदांत कहा गया है। दर्शन शास्त्रों में आत्मा, परमात्मा, संसारादि गहन विषयों का विवेचन किया गया है। श्रुति सम्बन्धी कुछ नाम अन्य प्रवृत्तियों में सम्मिलित किये गये हैं। पौराणिक काल के तीन धर्म ग्रंथों का इस संग्रह में उल्लेख है। नामों की दृष्टि से श्री भगवत गीता अधिक प्रसिद्ध तथा प्रिय प्रतीत होती है, तदनन्तर श्रीमद्भागवत और अंत में हरिवंश पुराण की गणना है।

आधुनिक काल की पुस्तको में रामायण सबसे अधिक प्रसिद्ध है। हिन्दी प्रेमसागर तथा सुखसागर भागवत पुराण ही के अंश हैं। गंगा लहरी में गंगा माहात्म्य कहा गया है। कालिदास का रघुवंश एक काव्य पुस्तक है उसमें श्री राम के वंशजों का चरित-चित्रण किया है। नाभा जी के भक्तमाल में कुछ भक्तों के चरित दिये गये हैं। भक्त तथा भगवान् के चरित्रों के कारण ये ग्रंथ पवित्र समझे जाते हैं। नित्य प्रति अनेक श्रद्धालु इनका पारायण करते हैं।

इन संग्रहीत नामों में वेदों का स्थान सर्वोपरि है। इसके पश्चात् गीता तथा रामायण हैं। इस प्रकार तीनों काल के तीन धर्म-ग्रंथ प्रतिनिधि के रूप में दिखलाई दे रहे हैं।

———

ग्यारहवाँ प्रकरण

मंगल-अनुष्ठान

धार्मिक कृत्य

१—गणना

क—क्रमिक गणना

१—नामों की संख्या ५३

२—मूल शब्दों की संख्या २६

३—गौण शब्दों की संख्या २२

ख—रचनात्मक गणना

एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	योग
६	३८	८	१	५३

२—विश्लेषण

क—मूल प्रवृत्ति द्योतक शब्द—ग्यारी, जगमेध, दरस, दर्शन, देवपूजन, पूजा, भज, भजन, भजामि, भजु, भजोरी, भजौ, भज्जा, भज्जू, मखवा, मखोले, मनसुमिरन, मुखराम, यज्ञ, याग, लीला, विश्वजीत, सर्वजीत, सुमिरन, होम, होमा।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति।

ग्यारी – अग्यारी शब्द का संक्षिप्त रूप। देवता के निमित्त अग्नि पर लौंग आदि चढ़ाने को अग्यारी कहते हैं। ग्यारी<अग्यारी<अग्नि, यज्ञ, आज्य।

जगमेध—मेध = यज्ञ।

दरस, दर्शन—देव दर्शन जो नवधा भक्ति का एक अंग है।

भज, भजन, भजामि, भजु, भजोरी, भजौ, भज्जा, भज्जू—देवता का गुण कीर्तन, जो नवधा भक्ति का एक अंग है। स्मरणासक्ति। भज्जू<भज।

मखवा—मख (यज्ञ) का विकृत रूप।

मन सुमिरन—देवता का मन से स्मरण करना।

मुखराम राम—राम नाम जपना (मुखरा देवी)।

यज्ञ, याग—वह वैदिक कार्य जिसमें सभी देवताओं का पूजन तथा घृतादि द्वारा हवन होता है।

लीला—अवतारों का अभिनय।

विश्वजीत—एक यज्ञ का नाम।

सुमिरन—देवता के नाम का स्मरण करना जो तीन प्रकार से होता है (१) जप, (२) अजपाजाप, (३) अनहद शब्द।

होम, होमा—किसी देवता के उद्देश्य से अग्नि में घी, तिल, जौ आदि डालने की क्रिया। होमा<होम।

ग—गौण शब्द

१—वर्गात्मक—राय, सिंह।

२—भक्तिपरक—आनन्द, कुमार, चंद्र, दत्त, दयाल, दास, दीन, नन्दन, नारायण, निधि, प्रसाद, बहादुर, मोहन, राम, लाल, विहारी, शंकर, शरण, सहाय, स्वरूप।

३—विशेष नामों की व्याख्या

ग्यारीलाल—इस नाम से दो भावनाएँ प्रतीत होती हैं :—

१—शिशु का जन्म ग्यारस (एकादशी) को हुआ।

२—किसी देव विशेष की अर्चना से पुत्रोत्पत्ति (अन्धविश्वास)

जगमेधसिंह—इस नाम में संसार को एक यज्ञशाला माना है जहाँ पर प्रकृति का निरंतर यज्ञ होता है।

दरश बहादुर—दरस शब्द दर्श का विकृत रूप है जो निम्नलिखित अर्थ में प्रयुक्त होता है:—

(१) सूर्य और चंद्रमा का संगम काल (अमावस्या तिथि)

(२) अमावस्या के दिन किया जानेवाला यज्ञ।

(३) देव दर्शन।

(४) सुन्दरता।

दर्शन—(१) एक प्रकार की भक्ति जिसमें देव दर्शन किया जाता है।

(२) सुन्दरता

(३) दर्शन शास्त्र

देव पूजनराय, पूजाप्रसाद—पूजन से दो आशय प्रकट होते हैं :—(१) निराकार ईश्वर की पूजा ध्यान धारणा समाधि अथवा स्तुति प्रार्थना उपासना द्वारा की जाती है। इसे परा पूजा कहते हैं। (२) साकार देव की पूजा षोडशोपचार द्वारा की जाती है।

भज दत्त—भज सेवा अथवा पूजा करने के अर्थ में आता है।

भजामि शंकर—भजामि शब्द संस्कृत की भज् धातु से बना है जो सेवा या भजन करने के अर्थ में आता है। यह रूप उत्तम पुरुष के एक वचन में है जिसका अर्थ होता है "मैं भजता (स्मरण करता) हूँ।

भजुराम राम—भजु भज का विकृत रूप है जो मध्यम पुरुष के एक वचन का रूप होता है। यह उपदेशात्मक वाक्य राम राम जपने का आदेश करता है।

भजोरीलाल—इससे गोपियों के प्रति उपदेश प्रतीत होता है जिसमें कृष्ण का जप करने के लिए कहा गया है।

भजौ राम राम—कोई भक्त राम का जप करने का उपदेश दे रहा है।

विश्वजीत—विश्वजित् एक यज्ञ है जिसमें यज्ञकर्ता अपनी सर्व सम्पत्ति दूसरों के लिए त्याग देता है, यह कहा है कि "विश्वजित्सर्वस्वदक्षिणा:"। राजा रघु ने दिग्विजय के उपरान्त विश्वजित् यज्ञ किया था जिसमें उन्होंने अपना सर्वस्व राज कोष दान-दक्षिणा में अर्पण कर दिया था[1] :—

४—समीक्षण

इस संकलन में ३ प्रकार के धार्मिक कृत्य दृष्टिगोचर हो रहे हैं (१) भक्ति के कुछ अंग (२) नित्य-नैमित्तिक कर्म (३) भगवान् के चरित्र (लीला) का अभिनय। प्रथम शीर्षक में दर्शन,

---

[1] स विश्वजितमाजह्रे यज्ञं सर्वस्व दक्षिणम्।
आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव॥ रघु० ४—८६

अर्चन एवं भजन-स्मरण मुख्य हैं जो भगवान् के प्रति अनुराग उत्पन्न करते हैं। द्वितीय में होम (अग्नि होत्र) नित्य कर्म तथा यज्ञ-यागादि नैमित्तिक कर्म हैं जो विशेष मंगलोत्सवों पर किये जाते हैं। होम यज्ञादि का उद्देश्य बाह्य शुद्धि स्वास्थ्यवर्द्धन एवं अनुकूल वातावरण उत्पन्न करना होता है। तृतीय में अवतारों की लीलाओं का अनुकरण द्वारा अभिनय कर उनके प्रति प्रीति सम्पादन करना होता है। इनमें दर्शन तथा भजन सरल तथा सुगम है। पूजा तथा यज्ञ में कई पदार्थ अपेक्षित रहते हैं, अतः दर्शन भजन पर अधिक नाम मिलते हैं। यज्ञ से मनुष्य इसलिए विशेष परिचित है क्योंकि प्रत्येक शुभ कर्म यज्ञ से ही प्रारम्भ होता है। लीलाओं में अवतारों के चरित्र का प्रत्यक्षीकरण करने के लिए अनेक पुरुषों का सहयोग आवश्यक होता है। ये हृदय को विशेष प्रभावित करती हैं। राम-कृष्ण की लीलाएँ अधिक प्रचलित हैं। भजन शब्द के कई विकृत रूप व्यवहार में आये हैं। भजामि शंकर तथा भजु राम राम नाम सुन्दर सूक्तियो के सदृश हैं। हरे कृष्ण. हरे राम नामों ने कृष्ण तथा राम प्रवृत्ति में स्थान पाया है वस्तुतः ये नाम भी संकीर्तन भक्ति के स्मारक स्वरूप हैं।[1]

व्रत, पर्व तथा उत्सव

१—गणना

क—क्रमिक गणना

१—नामों की संख्या ५२४

२—मूल शब्दों की संख्या २०७

३—गौण शब्दो की संख्या ७५

ख—रचनात्मक गणना

एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	पंचपदी नाम	योग
११०	३०८	९६	८	२	=५२४

२—विश्लेषणात्मक विवरण

क—मूल प्रवृत्ति द्योतक शब्द—अंत, अंता, अंती, अंतू, अक्षय, अचल, अचलू, अधिक, अनन्त, अनन्ती, अवतार, अहोई, इंद्रदमन, ऋतुपाल, ऋतुराज, ऋतुराम, ऋषि, औतार, कल्प, कल्पू, कोकिला, क्राति, खिचड़ी, गहन, गहनी, गिरवान, गीर्वाण, गुरु, ग्यारसी, ग्यासिया, ग्यासी, घुंघन, चतुर्थी, चौथ, चौथी, छटे, छट्टन, छठ, छठी, जिउत, जिउतिया, जिउघन, जिउघारी, जिउ-राखन, जितई, जित, जितर, जितारू, जितुआ, जित्ता, जित्तू, जीत, जीतन, जीतू, जीवराखन, झुलई, झुल्लर, झुल्ली, झूलन, झूला, डाल, ढिलई, तिजई, तिजू, तिजोली, तिज्जा, तेजई, तेजा, तेरस, तौहारी, दशा, दसई, दसवंत, दसे, दसैया, दस्सू, दिवारी, दिव्वू, दियाली, दुजई, दुजवा, दुजे, दुज्जी, दुज्जू, दूज, दूजी, देवई, देव, देवता, देवदमन, दौजी, धुरई, धुरी, धूरी, धूरू, धूरे, धूल, धूली, नव, नवमी, नाग, नागू, निरौती, नौमी, नौरता, नौरतू, पंच, पचम, पंचा, पंचू, पचई, पचऊ, पचवा, पचोली, पच्चा, पच्चू, पर्व, पांचा, पांची, पाचू, पांचे, पितृ, पुनई, पुनवासी, पुनः, पुन्ना, पुन्नू, पुन्ही, पुरुषोत्तम, पूनम, पूना, पूरनमासी, पूर्णमासी, पूर्णिमा, फगना, फगवा, फगुआ, फगुना, फगुनी, फगुरिया, फगुहार, फग्गन, फग्गू, फन, फागू, फाल्गुन, बसूँ, बसावन, बसोरा, बास, बासा, बासी, बासू, बासौरे, भुजंग, धर, भूमिधर, मकर, मदन, मनधारी, मनिराज, मनोरथ, महामंगल, रक्खा, रक्षा, रामनौमी, रिक्खा, रिक्खू, रिखई, रिख, ललई, ललक, ललका, ललकू, ललन, ललैथन,

---

[1] हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे,
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। (कलिसंतरणोपनिषद्)

लल्लन, लल्ला, लल्ली, ललतू, लिक्खा, लिक्ख, लिक्खे, लिखई, लिख्या, लेख, लेखा, बसंत, बसंता, बसंती, विजय, विज्जी, शिवबोधन शीतला, सकट, सकटा, सकट्टू, सकटे, सरूप, सरूपा, सुकृत, सोमवती, स्वरुपा, हलछठी, होरा, होरी, होली।

ख - मूल शब्दों की निरुक्ति—

चैत्र—

नव—(नव वर्ष दिवस)—यह पवित्र दिन चैत्र शुल्क पक्ष की प्रतिपदा को सृष्टि का आरम्भ दिन है। वर्ष, संवत्, ऋतु, महीना, पक्ष इसी दिन से प्रारम्भ होते हैं। इस नये संवत्सर के दिन ब्रह्मा तथा काल भगवान् की पूजा होती है जिससे दोनों लोकों में सुख प्राप्त हो।

मनोरथ—चैत्र शुक्ला तृतीया को मनोरथ व्रत किया जाता है। इस व्रत के करने से स्त्री पुरुषों के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं। इसमें पहले गणेश (आशाविनायक) और गौरी की पूजा की जाती है।

राम नवमी—चैत्र शुक्ला ९ को श्री रामचंद्र जी का प्रादुर्भाव हुआ था।[1]

मदन (अनंग व्रत)—चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को मदन त्रयोदशी कहते हैं। यह व्रत बंगाल तथा महाराष्ट्र में विशेष मनाया जाता है। इसमें ब्रह्मा के मानस पुत्र कामदेव की पूजा की जाती है।

वैशाख—

अक्षय (तृतीया)—यह पर्व वैशाख शुक्ला तृतीया को मनाया जाता है। इस दिन से सतयुग प्रारम्भ होता है। इस व्रत से अक्षय पुण्य मिलता है। सोमवती अमावस, रविवार की सप्तमी, मंगलवार की चतुर्थी, और अक्षय तृतीया यह अक्षय तिथि कहलाती हैं।

परशुराम जयंती—अक्षय तृतीया परशुराम का जन्मदिवस है। यह जयंती उत्तर भारत में मथुरा काशी के बीच और दक्षिण में परशुराम क्षेत्र में विशेष रूप से मनाई जाती है। परशुराम क्षेत्र में इनका एक मंदिर भी है।

नृसिंह चतुर्दशी—नृसिंह भगवान् का अवतार वैशाख शुक्ला चतुर्दशी को हुआ था।

आषाढ़—

कोकिला—यह व्रत सुख, संपत्ति, सौभाग्य तथा संतान के लिए किया जाता है। अधिक आषाढ़ मास में पूर्णिमा को इस व्रत का विधान है। इसमें कोकिला रूप गौरी का पूजन होता है।[2]

गुरुपूजा—इसे व्यास पूजा भी कहते हैं। यहाँ व्यास का अर्थ मंत्र दीक्षा देनेवाला गुरु है। आषाढ़ पूर्णिमा को घर-घर पूजा होती है। भारतवर्ष में गुरु का महत्त्व विशेष माना जाता है।

श्रावण—

---

[1] श्रीरामश्चैत्रमासे दिनदलसमये पुष्यभे कर्कलग्ने
जीवेन्दोः कीट राशौ मृगभगत कुजे ज्ञे झषे मेषगेऽर्कें
मंदे जूकेऽङ्गनायां तमसि शफरिगे भार्गवेये नवम्यां
पंचोच्चे चावतीर्णो दशरथतनयः प्रादुरासीत् स्वयंभूः।

(रामचन्द्रजन्मपत्री)

कोकिला (गौरी)

[2] तिल स्नेहे तिलसौख्ये तिलवर्णे तिलामये
सौभाग्यधनपुत्राश्च देहि मे कोकिले नमः। (भविष्योत्तर पु०)

संकट (संकष्टहर चतुर्थी)—यह व्रत श्रावण कृष्णा चतुर्थी को संकट दूर करने के लिए मनाया जाता है। इसमें गणेशपूजा होती है।[1]

दशा (दशाफल व्रत)—इसे दशा रानी का व्रत भी कहते हैं। यह श्रावण कृष्णा अष्टमी से आरम्भ होता है। इसमें श्री नारायण का पूजन होता है। बाद में भ्रम के कारण मनुष्य दशा को एक देवी या रानी मानकर उसी का पूजन करने लगे।

सुकृततृतीया व्रत—यह व्रत मुक्ति, सौभाग्य तथा सर्वपापनाश के लिए स्त्रियाँ श्रावण शुक्ला तीज को रखती हैं। वर्ष को एक वृक्ष, बारह महीनों को शाखाएँ, दिनों को फल और घड़ियों को पत्ते मानकर इसे काल का रूप समझा जाता है।

नाग-पंचमी—श्रावण शुक्ला पंचमी को यह व्रत मनाया जाता है। इसमें सर्पों की पूजा होती है।

शीतला—सौभाग्यवती स्त्रियाँ धन तथा संतान के लिए श्रावण शुक्ला सप्तमी को शीतला व्रत रखती हैं। इसमें बासी भोजन किया जाता है। इसीलिए इसको बसौरा या बसावन भी कहते हैं।[2]

रक्षा बंधन—रक्षा बंधन, श्रावणी, राखी या सलूना हिन्दुओं के चार मुख्य त्योहारों में से एक है। यह श्रावण की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इसी दिन बहन भाई के हाथ में राखी बाँधती है। किन्तु आजकल अधिकतर ब्राह्मण ही श्लोक को पढ़ते हुए रक्षा बाँधते हैं।[3]

भाद्रपद—

हल छठी—यह व्रत पुत्रवती स्त्रिया भाद्रपद कृष्णा षष्ठी को संतान के हेतु रखती हैं। इसी दिन बलराम जी का जन्म हुआ था। उनका आयुध हल होने से इसका नाम हलषष्ठी पड़ा जिसको अब हरछठ या ललही छठ कहते हैं। इसका विधान इस प्रकार है। पृथ्वी को लीप और चौक पूरकर छोटा सा तालाब बना उसी में हरछठ (जिसमें झरबेरी, कास, ढाक का एक-एक डंठल बँधा रहता है) किसी वस्तु में गाड़कर उसी का पूजन किया जाता है। छै प्रकार के अन्न और मेवे का नैवेद्य कुल्हड़ या दोनों में रखा जाता है और बिना बोये हुए तिन्नी का चावल आदि, भैंस का दूध दही, पोई का साग और परवर खाया जाता है गाय के दूध का निषेध है। चौबीस घंटे में एक बार खाना चाहिए। पुत्र उत्पन्न होने के पश्चात् पहली हल छठी को यह व्रत किया जाता है।[4]

सकट-स्तोत्र

[1] संसारपीडा व्यथितं हि मां सदा
संकष्ट भूतं सुमुख प्रसीद!
त्वं त्राहि मां नाशय कष्टसंघान्
नमो नमः कष्ट विनाशनाय। (संकष्टचतुर्थी व्रत कथा)

[2] वंदेऽहं शीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बराम्
मार्जनी कलशोपेतां शूर्पालंकृतमस्तकाम्।

[3] येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे माचल माचल। (रक्षा बंधन मंत्र)

[4] कथा—हलछठी के दिन एक गर्भवती ग्वालिन गाय भैंस का दूध दही मिलाकर बेचने चली। मार्ग में उसके पीड़ा उठी, खेत के पास झरबेरी की झाड़ी में उसने अपने नवजात शिशु को कपड़े में लपेट कर रख दिया। गाँव में अपने दूध दही को भैंस का कहकर बेचा। जब वह बेचकर लौटी तो देखा कि उसका बच्चा मरा पड़ा है। खेत जोतते समय बैल के बिगड़ जाने से हल की नोक से बच्चे का पेट फट गया। किसान ने उसका पेट झरबेरी के काँटों से सीकर उसी झाड़ी में रख दिया। जब ग्वालिन ने जाना कि मैंने झूठ बोलकर व्रत रखनेवाली स्त्रियों का व्रत खंडित कर दिया है तो वह तुरन्त उसी गाँव में पहुँची और सब को सच सच बता दिया कि उसमें गाय भैंस का दूध दही मिला हुआ है। तब प्रसन्न होकर सब स्त्रियों ने उसे आशीर्वाद दिया कि तेरा बच्चा सुख से रहे। अपना झूठ का प्रायश्चित्त करके वह लौटी तो बच्चा उसे जीता मिला। तब से उसने यह संकल्प कर लिया कि अब कभी झूठ न बोलूंगी।

गणेश चतुर्थी—भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को सन्तान धन आदि के लिए गणेश चतुर्थी व्रत मनाया जाता है। इसमें विघ्नहर गणेश की पूजा होती है। चंद्र दर्शन का मिथ्या कलंक भी इससे दूर हो जाता है।

ऋषि पंचमी—ऋषि पंचमी भाद्रपद शुक्ला पंचमी को मनाई जाती है। इसके प्रभाव से संपूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। इस व्रत को स्त्री पुरुष दोनों ही कर सकते हैं। स्त्रियाँ विशेष रखती हैं।[1]

अवतार—भाद्रपद शुक्ला दशमी को दशावतार व्रत मनाया जाता है। मत्स्य, कूर्म, वराह बुद्ध, परशुराम आदि की जयंतियाँ मनाई जाती हैं। कृष्णाष्टमी को कृष्ण की जयंती मनाई जाती है।

वामन द्वादशी—भाद्रपद शुक्ला द्वादशी को वामन भगवान के अवतार की जयंती मनाई जाती है।

अक्षय ललिता—भाद्रपद मास की सप्तमी को स्त्रियाँ शिव दुर्गा का पूजन करती हैं।

अनत चतुर्दशी—भाद्रपद शुक्ल १४ को मनाई जाती है। इसमें १४ ग्रंथियो के अनन्त की पूजा होती है और अनन्त भगवान् का ध्यान किया जाता है। अनन्त को पुरुष दाहिनी भुजा में और स्त्रियाँ बाई भुजा में बाँधते हैं।[२]

तीज या हरतालिका[३] व्रत—यह व्रत सधवा स्त्रियाँ अपने सौभाग्य के लिए भाद्रपद शुक्ल तृतीया को मनाती हैं इसमें शिव पार्वती का पूजन होता है।

झूला—(हिंडोला) यह उत्सव वर्षा ऋतु में श्रावण शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक मनाया-जाता है। इसमें देव मूर्तियाँ झूले पर झुलाई जाती हैं।

आश्विन—क्वार—

जिउतिया—(जीवित्पुत्रिका व्रत)—यह व्रत आश्विन कृष्णा अष्टमी को पुत्ररक्षा के लिए स्त्रियां मनाती हैं। पूजा का डोरा बच्चों के गले में बाँधा जाता है।[४]

नवरात्र—यह व्रत चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से नवमी और आश्विन प्रतिपदा से नवमी तक वर्ष में दो बार मनाया जाता है। इसमें नव दुर्गा का पूजन होता है। बंगाल में आश्विन के नव-

---

[१] कश्यपोऽत्रिभरद्वाजो विश्वामित्रोऽथ गौतमः
जमदग्निर्वसिष्ठश्चसप्तैतेऋषयः स्मृताः
दहंतु पापं मे सर्वं गृह्णन्त्वर्घ्यं नमो नमः।

[२] अनंत संसार महासमुद्रमग्नं समभ्युद्धर वासुदेवः
अनंतरूपे विनियोजयस्व अनंतरूपाय नमो नमस्ते। (अनंत मंत्र)

[३] आलिभिर्हरिता यस्मात् तस्मात् सा हरितालिका।

सखी से हरी जाने के कारण पार्वती का नाम हरितालिक हुआ (नारद के कहने से हिमवान् ने अपनी कन्या पार्वती का ब्याह विष्णु के साथ करने का निश्चय किया। परन्तु पार्वती ने शिव के साथ ब्याह करने का संकल्प कर लिया था। इस संकट से बचने के लिये एक सखी ने गिरिजा को किसी एकान्त वन में जाकर तप करने के लिए अनुमति दी। हिमवान् को बहुत खोज करने पर अपनी कन्या का पता लगा। पार्वती की घोर तपस्या देखकर पिता शिव के साथ ब्याह करने को सहमत हो गये)।

[४] दुर्गा या मूर्तिभेदेन ख्याता त्रैलोक्य पूजिता
अमृताहरणे वत्स स्मृता सा जीवत्पुत्रिका
जीवत्पुत्रि महाभागे जीवन्तु मम पुत्रकाः
आयुर्वृद्ध्य पुत्राणां पत्युश्च मम सर्वदा। (मंत्र)

रात्र का उत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया जाता है। इसमें भगवती दुर्गा का माहात्म्य वर्णन किया जाता है।

आश्विन की अमावास्या—पितृपक्ष का अंतिम दिन है। इसमें सब पितरों को एक साथ जल दिया जाता है। पितृश्राद्ध के लिए गया और मातृ श्राद्ध के लिए काठियावाड़ का सिद्धपुर प्रसिद्ध स्थान हैं।

विजयादशमी (दशहरा)—हिन्दुओं के चार मुख्य त्योहारों में से एक है। क्षत्रियों में यह विशेष समारोह के साथ मनाया जाता है। इसमें राम लीला का अभिनय किया जाता है।

कार्तिक—

अहोई—इसको अशोकाष्टमी भी कहते हैं। पुत्रवती स्त्रियाँ कार्तिक कृष्णाष्टमी को यह व्रत मनाती हैं।

धनतेरस—यह उत्सव कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को मनाया जाता है। इसमें यमराज के नाम पर एक दीपक जलाकर घर-द्वार पर रख दिया जाता है। इस दिन धन्वतरि-जयंती भी मनाई जाती है।

दिवाली या दीपावली का उत्सव बड़े समारोह के साथ कार्तिकी अमावस्या को मनाया जाता है। यह हिन्दुओं का तीसरा मुख्य त्योहार है इसमें लक्ष्मीपूजन होता है और दिये जलाये जाते हैं।

गोवर्धन—कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा को गोवर्धन पूजा की जाती है। इसे अन्नकूट भी कहते हैं।

दौज—भैया दुइज या यम द्वितीया कार्तिक शुक्ला द्वितीया को मनाई जाती है। इसमें बहन भाई का टीका करती है।

डला छट्ट या सूर्य षष्ठी—कार्तिक शुक्ला षष्ठी को मनाई जाती है। इसमें सूर्यदेव का पूजन किया जाता है।स्त्रियाँ इस व्रत को पति-पुत्र तथा सुख-ऐश्वर्य की इच्छा से रखती हैं।

अक्षय नौमी—यह कार्तिक शुक्ला नवमी को मनाई जाती है। इस दिन त्रेता युग का आरम्भ होता है।

वैकुंठ चतुर्दशी—यह व्रत कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी को किया जाता है। हरि-हर पूजन का साथ-साथ विधान है।

ग्यारसी एकादशी—वर्ष में २४ एकादशी होती हैं और मलमास में दो और बढ़ जाती हैं। एकादशी का व्रत बहुत प्रचलित है। भिन्न-भिन्न एकादशियों के नाम भिन्न-भिन्न होते हैं। कार्तिक शुक्ला एकादशी को प्रबोधनी या देव उठान एकादशी कहते हैं। क्योंकि विष्णु भगवान् इसी दिन जागे थे।

पूर्णिमा—पूर्णमासी मास की अंतिम तिथि है। इस दिन आकाश में पूर्ण चंद्र अत्यंत सुन्दर मालूम पड़ता है। वर्ष में १२ पूर्णिमा आती हैं किन्तु शरद की पूर्णिमा अत्यंत सुहावनी तथा पुनीत मानी गई है। यही कौमुदी महोत्सव का दिन है। यह पहले आश्विन में माना जाता था। अब कार्तिक में माना जाता है। पूर्णमासी नन्द की पुरोहितानी का नाम भी है।

अगहन—

दत्तात्रेय जयंती—यह जयंती अगहन कृष्ण दशमी को भगवान् के अवतार दत्तात्रेय की स्मृति में मनाई जाती है।

पौष—

सुरूपा व्रत—पौष कृष्णा द्वादशी को सौंदर्य, सुख, सौभाग्य के लिए गुजरात में यह व्रत विशेष रूप से मनाया जाता है।

माघ—

माघ कृष्ण चतुर्थी को संकट हरण गणेश की पूजा की जाती है।

वसंत—माघ शुक्ल पंचमी को बसंत का उत्सव मनाया जाता है, क्योंकि यही तिथि बसंत के आरम्भ की सूचना देती है। इसी को श्री पंचमी भी कहते हैं। इसी दिन नवशस्येष्टि या नवान्नेष्टि भी होती है। वसन्त को ऋतुराज माना गया है। यह कामदेव का सखा है। वंग देश में सरस्वती पूजन का विशेष महत्त्व है।

अचल—माघ शुक्ल सप्तमी या अचला सप्तमी (भानु सप्तमी) को सूर्य का पूजन किया जाता है।

मकर संक्रांति या खिचड़ी के दिन सूर्य दक्षिणी सीमा को पहुँचकर उत्तर की ओर घूम जाता है और इसी दिन मकर राशि में प्रवेश करता है। यह संक्रांति प्रायः माघ मास में पड़ती है। किंतु मलमास के वर्ष में यह पौष के अंत में पड़ती है। इसमें खिचड़ी, तिल का लड्डू आदि का विधान है। गंगा स्नान का बड़ा माहात्म्य है।

फाल्गुन—

शिवरात्रि—फाल्गुन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शिवरात्रि मनाई जाती है। इसमें शिवजी का पूजन रात भर जागकर होता है। यह व्रत पापों के नाश के लिए तथा मुक्ति कामना से किया जाता है।

होली—फाल्गुन पूर्णमासी को होली जलाई जाती है। रंग के स्थान में कुछ लोग धूल फेकते हैं, इससे इसका नाम धुरेटी हो गया।

अधिक, पुरुषोत्तम— प्रति तीसरे वर्ष एक मास अधिक होता है। इसे अधिक मास, मलमास मलिम्लुच या पुरुषोत्तम मास कहते हैं। राधा कृष्ण की पूजा और श्रीमद्भागवत की कथा होती है।

इंद्र दमन—वर्षा ऋतु में जल किसी नियत सीमा के आगे बढ़ जाता है उस दिन इंद्र दमन का पर्व मनाया जाता है। प्रयाग में सङ्गम पर वर्षा जल जब पीपल की डाली से छू जाता है तब इंद्र दमन या देव दमन का पर्व मनाया जाता है।

कल्प, कल्पू—माघ के महीने में कुछ लोग कुटी बनाकर त्रिवेणी के तट पर निवास करते हैं। उसे कल्पवास कहते हैं।

गहन, गहनी—चंद्र या सूर्य ग्रहण का पर्व माना जाता है। उस दिन नदी स्नान का महत्त्व है।

सोमवती—जब सोमवार को अमावस्या होती है तो सोमवती अमावस्या कहलाती है। इसके व्रत से पापों का नाश, सन्तान-सम्पत्ति-सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

ग—गौण शब्द

(१) **वर्गात्मक**—राय, सिंह, सिनहा।

(२) **सम्मानार्थक (अ) आदरसूचक**—जी, बाबू।

(आ) उपाधिसूचक—सरदार।

(३) **भक्तिपरक**—आनंद, इंद्र, करण, किशोर, कुमार, कृष्ण, कृपाल, चंद, चरण, जस, जीत, दत, दयाल, दर्शन, दास, दीन, दीप, धन, धारी, नंद, नंदन, नाथ, नाम, नारायण, निवास,

पति, पाल, पूजन, प्रकाश, प्रताप, प्रसाद, प्यारे, बंधन, बक्स, बचन, बच्चन, बसी, बहादुर, बालक, भक्त, भगवान्, मंगल, मणि, मन, मल, मित्र, मुख, मुनि, मूर्ति, मौज, रत्न, राज, राम, लाल, लिंग, वंश, वल्लभ, विनोद, विहारी, शंकर, शरण, सहाय, सुख, सुचित, सुमिरन, सेव, सेवक, सृष्टि, स्वरूप।

३—विशेष नामों की व्याख्या

ऋषिकुमार—सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार को ऋषिकुमार कहते हैं।

गुरुलिंग देव—लिंग का अर्थ है चिह्न, प्रतिमा, सामर्थ्य तथा साधक। गुरु प्रतिमा ही जिसके लिए देव तुल्य है (शिव)।

४—समीक्षण

व्रतपर्वोत्सव—ये शब्द विभिन्न अर्थी होते हुए भी प्रायः समानार्थक ही समझे जाते हैं। पुण्य तिथियाँ पर्व कहलाती हैं जिनमें मनुष्य प्रायः सरितास्नान, व्रत पूजा, पाठ, दान आदि अनेक विधान करते हैं। चंद्रकला के विचार से अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या तथा पूर्णिमा पर्व तिथियाँ समझी जाती हैं। सूर्य तथा चद्रग्रहण भी पर्व माने जाते हैं। महापुरुषों की जयंतियाँ उनके जन्मदिवस पर मनाई जाती हैं। अवतारों की भी जयंतियाँ उनके जन्मदिवस पर मनाई जाती हैं। "मैं चरखा कैसे कातूँ"—यह गीत बहुधा ग्रामीण स्त्रियों के मुख से सुनाई देता है। इसमें एक काम चोर, आलसी स्त्री अपने पति को प्रति दिन के व्रत-पर्वों के नाम गिना देती है। आज यह पर्व है, कल अमुक व्रत होगा, परसों वह त्योहार मनाया जायगा। इन पुण्य तिथियों में मैं यह काम कैसे कर सकती हूँ।" इस दृष्टान्त से यह परिणाम निकलता है कि हिन्दू धर्म में प्रत्येक दिन कोई न कोई पुण्य तिथि मानी जाती है।

इस अभिधान संग्रह में १२ महीने के मुख्य-मुख्य सभी व्रत पर्वों का उल्लेख मिलता है। ये निश्चित तिथि को ही मनाये जाते हैं। इन्द्र दमन, ग्रहण आदि कुछ ऐसे पर्व हैं जिनकी कोई एक तिथि निश्चित नहीं। कुम्भ मेला स्थान परिवर्तन करता रहता है वह बारह वर्ष उपरांत फिर उसी स्थान पर मनाया जाता है। इसके लिए प्रयाग, हरिद्वार, नासिक तथा उज्जैन मुख्य केन्द्र हैं। कुछ त्योहार स्थानिक भी होते हैं।

इन नामों में तीन प्रकार के पर्व दृष्टिगोचर होते हैं (१) वैयक्तिक (२) सामाजिक (३) नैमित्तिक।

(१) शिवरात्रि, अनन्त चतुर्दशी, एकादशी आदि प्रथम श्रेणी के व्रत हैं। ये व्यक्तिगत आध्यात्मिक उन्नति के लिए किये जाते हैं। व्रत सामान्य रूप से किसी शुभ कार्य के करने या अशुभ कार्य के न करने का दृढ़ संकल्प करने के अर्थ में आता है।[1] सुख संतति, सौभाग्य, सम्पत्ति, सुयश, सुकृत तथा स्वर्ग की सिद्धि के उद्देश्य से व्रत का अनुष्ठान किया जाता है। व्रतो में ब्रह्मचर्य, सत्य-वादिता, अहिंसा एवं आमिष का त्याग, ये चार बातें अवश्य होना चाहिए। उपवास करने से स्वास्थ्य तथा आयुष्य में वृद्धि होती है।

(२) मुख्य सामाजिक पर्व रक्षाबंधन, दिवाली, विजया दशमी और होली हैं। इनमें भी धार्मिक पुट रहता है।

(३) नैमित्तिक पर्व इनका किसी तिथि विशेष से सम्बन्ध नहीं। जिस दिन वर्षा का जल सीमा विशेष से बढ़ जायगा उस दिन इन्द्र दमन लग जायगा।

---

[1] व्रियते स्वर्गं व्रजंति स्वर्गमनेन वा।

अधिकांश पर्व विष्णु तथा उनके मुख्य अवतार राम कृष्ण अथवा शिव एवं उनके परिवार से ही सम्बंध रखते हैं। इसका कारण यह है कि भारतवर्ष में वैष्णव, शैव तथा शाक्त धर्मों का ही प्राबल्य रहा है। अन्य देवों के पर्व बहुत कम हैं।

पर्व-सम्बन्धी नामों से दो परिणाम निकाले जा सकते हैं। प्रथम यह है कि संज्ञी उस पुण्य पर्व में उत्पन्न हुआ है और दूसरा यह है कि उस व्रत अनुष्ठान के प्रभाव से वह इस संसार में आया है। हलछठ, जीवित्पुत्रिका, सूर्य षष्ठी, पुत्रदा एकादशी आदि अनेक व्रत संतान के जन्म तथा जीवन के उद्देश्य से ही स्त्रियाँ रखती हैं। जिउत, जित्ता, जितारू, आदि जीवत्पुत्रिका के स्मारक स्वरूप हैं। विकृत रूपों का बाहुल्य प्रकट करता है कि अशिक्षित स्त्री पुरुषों में इनका अधिक प्रचार है।

ये संग्रहीत अभिधान पर्वों का केवल नाम निर्देश ही करते हैं। उनके विचित्र विधि-विधान तथा तत्सम्बंधी अद्भुद आख्यायिका पर कुछ प्रकाश नहीं डालते। हाँ साधक की साधना का उद्देश्य उनके कथानक से अवश्य स्पष्ट हो जाता है। पौष में गुजरात में सुरूपा व्रत मनाया जाता है। अधिकांश पर्व इस संग्रह में नामों में आ गये हैं। इससे उनकी लोकप्रियता तथा महत्ता का परिचय मिलता है। काल भैरव अष्टमी, ज्येष्ठाष्टमी, मुक्ताभरण व्रत (सन्तान सप्तमी व्रत) आदि कई व्रत-पर्वों से सम्बन्ध रखनेवाले नाम यहाँ स्थान नहीं पा सके। डोरीलाल, मुक्ताप्रसाद, जेठामल, भैरोंप्रसाद सदृश नामों में भी यही व्रत भावना काम कर रही है। हिन्दुओं के चार प्रमुख त्योहारों के आनन्दोत्सव चारों वर्णों के अभिधान अत्यंत समारोह से मना रहे हैं, अधिकांश व्रत संतान से ही सम्बन्ध रखते हैं।

षोडशोपचार

१—गणना

क—क्रमिक गणना—(१) इस प्रवृत्ति के अंतर्गत नामों की संख्या १६३ है। (२) मूल शब्द ६१ (३) गौण शब्द ३३

ख—रचनात्मक

प्रवृत्ति	एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	योग
आसन	१	३	१		५
जल	२	२			४
आभूषण	१	५			६
शृंगार	१	३			४
सुगंध	५	७			१२
पुष्प	११	२१	९		४१
दीप	१	१२	४	४	२१
नैवेद्य	३	७			१०
तांबूल	२	३			५
कलश	१	१	१		३
पंखा	१				१
माला	१	३			४
वाद्य	४	५			९
शंख		३			३
तिल	२	२			४
अक्षत	१				१

कपूर		४			४
चंदन	१	८	१		१०
रोरी	१	२			३
सुपारी	१				१
नारियल	१	१			२
दूब		१			१
मंगलसूत्र		२			२
शमी	१	१			२
चमर	३	२			५
	४५	६८	१६	४	=१६३

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द :—

आसन—आसन, आसनी, तखत, सिंहासन ।

अर्घ्य—जलई, (जल), जलुआ (जल), जल्लू (जल), नीर ।

शृङ्गार—भूषण, शृंगार, सांझी, सिंगार, सिंगारू (शृंगार) ।

सुगंध—अगर, चोई, चोया, धुपई, धूप, धूपी, वास, वासी, सुगंध ।

वास =सुगंध । चोई, चोया<रच्यु ।

पुष्प—कुसुम, गुल, गुलई (गुल), पहुप, पहुपी, पुष्प, पुष्पी, पोप, पोपी । फुलई, फुलावन फुलेना, फुल्लर, फुल्ली, फुल्लू, फूल, फूला, फूलू, सुमन ।

टिप्पणी-- (१) पुष्प के विकृत रूप—पहुप, पहुपी, पुष्पी, पोप, पोपी ।

फूल के विकृत रूप—फुलई, फुलावन, फुलेना, फुल्लर, फुल्ली, फुल्लू, फूला, फूलू ।

(२) फूल के पर्यायवाची—कुसम, गुल, पुष्प, सुमन । (गुल फारसी शब्द है) ।

दीप—दिपई (दीप), दियाली (दीपाली), दीप, दीपक, दीपन, प्रदीप ।

नैवेद्य—परसादी, प्रसाद, प्रसादी, भोग, भोगी, महाप्रसाद ।

तांबूल—गिलोरी, पनालू, पनुआ, पान ,

टि०—गिलोरी=पान का बीड़ा ।

कलश—कलश, घल्ला, सैकू ।

टि०—घल्ला<घड़ा<घट ।

पंखा—बिजनू । बिजनू<व्यजन-पंखा ।

माला--मनकी, माल, माला, मालू ।

वाद्य—घंटा, घंटोली, नौबत । घंटर, घंटोली<घंटा<घटिका ।

शंख—शंख, संखू (शंख) ।

तिल—तिल, तिलई, तिलो, तिल्ला (तिल)।

अक्षत—अक्षत=चावल ।

कपूर—कपूर, कपूरी, कर्पूर ।

चंदन—चंदन, संदल, हरिचंदन।

संदल (फ़ारसी)=चंदन, हरिचंदन=एक प्रकार का चंदन।

रोरी—ईंगुर, रोरी।

ईंगुर—सिंदूर।

सुपारी—सुपारी।

नारियल—नरियल, सदाफल।

सदाफल—नारियल।

दूब—दूर्वा।

दूबको—यज्ञभूषण कहा गया है।

मंगल सूत्र—नारा

नारा—कलाबत्तू।

शमी—छोंकर, शमी वृक्ष।

चमर—चँवर, चमरी, चमरू, चौरी।

चमर—सुरागाय की पूँछ का बना हुआ चँवर।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति—

आसन, आसनी, तखत, सिंहासन—इन शब्दों का अर्थ यहाँ पर देव अथवा पूज्य व्यक्ति के बैठने के लिए सिंहासन से है। तख्त उर्दू शब्द है जो सिक्खों में तीर्थ के लिए प्रचलित है।

सांझी—देव मंदिरों में देवता के आगे भूमि पर फूल पत्तियों की सजावट। सांझी<सज्जा।

अगर—अगर वृक्ष की सुगंधित लकड़ी।

चोई, चोया—एक सुगंधित द्रव पदार्थ जो चंदन और देवदार के बुरादे तथा मरसे के फूलों को मिलाकर और गरम करके टपकाने से बनता है।

महाप्रसाद—फल मिष्ठान्न आदि मीठे पदार्थ जो देवता पर चढ़ाये जाते हैं नैवेद्य कहलाते हैं।

घल्ला, सैकू—घड़ा जो अष्ट मंगल द्रव्यों में गिना जाता है।

अक्षत—विष्णु पूजा में अक्षत निषिद्ध हैं। उनके स्थान में सफेद तिल और जौ या केवल फूल चढ़ाये जाते हैं।

नारियल[1]—

ग—गौण शब्द

(१) वर्गात्मक—गिरि, राय, शाह, सिंह, सिनहा।

(२) भक्तिपरक—आनन्द, ईश्वर, कांत, कुमार, गोपाल, चंद, कंद, दत्त, दयाल, दास देव, नन्दन, नाथ, नारायण, पाल, प्रसाद, बक्स, मणि, मनि, मल, महा, राज, राम, लाल, शंकर, शरण, सकल, सहाय।

३—विशेष नामों की व्याख्या

कलश नारायण घल्ला, सैकू लाल—प्रकृति के पंच भूतों में से जल भी एक तत्त्व माना गया है। इसका सम्बंध वरुण देव से रहता है। जल पूर्ण घट इसी देव का प्रतीक है, जिस प्रकार दीपक सूर्य नारायण का। कलश में सब देवों का वास[2] होने से वह अत्यंत पवित्र तथा पूजनीय होगया है।

---

[1] पुत्र हीनस्तु या नारी नारिकेलं प्रयच्छति।
पुत्रं सा लभते शीघ्रं सबलं लवणान्वितम् ॥२४॥
(स्कंद पु० प्रभास, अ० ६६ पृ० ३४९)

[2] कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥

चंदन गोपाल—चंदन की कृष्ण मूर्ति ।

दीप नारायण—हिन्दुओं के पूजा विधान में दीप के द्वारा अनेक देवों का आवाहन किया जाता है। इस दृष्टि से यह सूर्य देव का प्रतीक तथा यज्ञ का सूक्ष्म रूप समझा जाता है, वायु शोधन करने के अतिरिक्त यह अपने आलोक से इष्टदेव के सौंदर्य का प्रकाशन करता है। नीराजना दीपाराधना ही है। क्वार मास में धनिकों के यहाँ आकाश द्वीप प्रज्वलित किया जाता है। महात्माओं तथा महापुरुषों के स्वर्गारोहण पर मोक्ष-दीप भी प्रदीप्त किये जाते हैं। मदुरा की मीनाक्षी देवी के मंदिर में ७ फरवरी १९४८ ई० को महात्मा गांधी के लिए मोक्ष-दीप रखे गये थे और १२ जनवरी सन् १९४९ को उनके श्राद्ध के दिवस लक्ष दीप प्रकाशित करने की आयोजना की गई थी। मार्ग प्रदर्शन तथा वैतरणी-संतरण के लिए दीपक जलाकर नदियों और अन्य जलाशयों में तैराये जाते हैं। पाप नाश तथा मुक्ति के लिए घरों और मंदिरों में लोग दिन-रात संध्या को दीपक जलाते हैं।[1]

फूलदेव—सपर्या की समग्र सामग्री देवमयी मानी जाती है। इस भावना से दो बातें प्रकट होती हैं (१) भगवान् का व्यापकत्व तथा (२) देवांश होने से द्रव्य की पवित्रता। पूजा में फूलों का भी विशेष स्थान है, इनसे देवता का शृङ्गार किया जाता है। मन्दिरों को अलंकृत किया जाता है। उन्हें भगवान् के श्री चरणों में समर्पण करते हैं। आनन्दोत्सवों में भी पुष्पों का प्रयोग किया जाता है। किसी हर्ष विशेष पर देवता भी पुष्प वर्षा करते हैं। इसके अतिरिक्त कुसुमों का प्रायः सब देवों से सम्बन्ध है। चतुर्भुजी विष्णु पद्मपाणि हैं, । ब्रह्मा कमल किशोर हैं, लक्ष्मी का कमल निवास है, कामदेव का पुष्प धन्वा प्रसिद्ध ही है। शिव, दुर्गा इन्द्रादि देवों को भी पुष्प प्रिय हैं। विष्णु पर आकधतूरा के गंधहीन पुष्प, शिव पर कुंद, देवी पर मदार पुष्प और सूर्य पर तगर पुष्प न चढ़ाने का आदेश है।

शमीचंद—शमी वृक्ष पवित्र माना गया है। इसके अन्दर अग्नि वास करती है। यज्ञ के लिए इसकी समिधा काम में आती है। अज्ञात वास में राजा विराट के यहाँ नौकरी करने से पहले अर्जुन ने अपने अस्त्र-शस्त्र शमी को ही सौंपे थे।[2]

४—समीक्षण

हिन्दुओं में अतिथि सत्कार एक विशेष स्थान रखता है। अतएव जब किसी देवता का आवाहन किया जाता है तो अतिथि के सदृश ही सम्पूर्ण आतिथ्य सामग्री उसके अर्चन में प्रयुक्त की जाती है। निमंत्रित देव को सर्वप्रथम आसन देकर पाद प्रक्षालन, आचमन तथा स्नान के लिए जल दिया जाता है। इससे मार्ग का श्रम दूर हो जाता है तथा शारीरिक शुद्धि हो जाती है। इसके पश्चात् वस्त्राभूषण से अलंकृत कर मंगल सूत्रादि धारण कराया जाता है तथा इत्रादि सुगंधित वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है। इसके अनंतर पुष्पों की सुंदर माला धारण की जाती है। दूषित वायु को पवित्र करने के लिए अगर अथवा धूप बत्ती जलाई जाती है। नौबत, घंटा, शंखादि वाद्य बजाकर दीपक से आरती उतारते हैं। नीराजना के पश्चात् फल, मेवे तथा मिष्ठान्न का भोग लगाया जाता है, प्रसाद के पश्चात् ताम्बूल देकर प्रदक्षिणा करते हुए वंदना के साथ अतिथि विदा

---

[1] मंत्र—

घृतेन दीपं कर्तव्यं पापनाशन हेतवे। यतो दीपस्य माहात्म्यं विज्ञेयं मुक्तिदायकम् स्कंद पुराण ॥
प्रभास अ० ३२ फ० १०४२।

[2] शमी शमयते पापं शमी शत्रु विनाशिनी ।
अर्जुनस्य धनुर्धारी रामस्य प्रियवादिनी ॥

किया जाता है। स्वागत शिष्टाचार की सब सामग्री चंदन, कपूर, रोरी, दूब, शमी, तिल, अक्षत, फूल, सुपारी, नारियल, कलश, पंखा, चमर यहाँ संचित हैं।[1]

अतिथि-अभिनंदन के आदि से अंत तक प्रायः समस्त साधन इन नामों में पाये जाते हैं। इस संग्रह में पुष्प, नैवेद्य तथा दीपक के अंतर्गत नामों की संख्या अधिक है।

---

[1] लवंग कर्पूर समाकुलानि ताम्बूल पर्णानि फलानि दत्वा।

पुष्पाणि वस्त्राणि सुखेन याति। साकं शशांकं दिविदेववृन्दै : ॥६८॥

स्कंद पु० प्रभास अ० ३२५ पृ० १००८

बारहवाँ प्रकरण

ज्योतिष

राशि-नक्षत्रादि

१—गणना

क—क्रमिक गणना

(१) नामों की संख्या—६१

(२) मूल शब्दों की संख्या—३६

(३) गौण शब्दों की संख्या—१६

ख—रचनात्मक गणना

एक पदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	योग
१७	३६	५	६१

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द—अश्विनी, आर्द्रा, कुंभ, क्षितिज, चित्तर, तुला, तुल्ला, धनुआ, धनुक, पुक्ख, पुक्खन, पुक्खू, पुख, पुष्य, पोख, मघराज, मिथुन, मीना, मुरहू, मुलई, मुलहू, मुलुआ, मुल्ला, मुल्लू, मूल, मूला, मूली, मूलू, मूले, मेख, मौला, राहु, रेवती, रोहिणी, श्रवण, सिंह, हत्ती, हत्थी, हस्ती।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति :—

आर्द्रा—सताइस नक्षत्रों में छठा नक्षत्र जिसमें सूर्य के आने से वर्षा का आरम्भ होता है।

कुंभ—ग्यारहवीं राशि।

तुला—सातवीं राशि का नाम जिसकी आकृति तराजू के सदृश होती है।

पुक्ख, पुक्खन, पुक्खू, पुख - यह पुष्य के विकृत रूप हैं। यह आठवाँ नक्षत्र है जिसकी आकृति बाण के सदृश होती है।

मिथुन—(१) तीसरी राशि (२) दो बच्चों के एक साथ उत्पन्न होने की ओर भी संकेत है।

मीना—(मीन) बारहवीं राशि।

मुरहू—मुराहू, मुलई, मुलहू, मुलुआ, मुल्ला, मुल्लू, मूल, मूला, मूलू, मूले, मौला—यह सब मूल के विकृत रूप हैं जो उन्नीसवें नक्षत्र का नाम है। इसमें बालक का जन्म अशुभ समझा जाता है और माता-पिता की मृत्यु की आशंका तक रहती है। इसी कारण प्राय: उसे त्याग भी दिया जाथा है। मूल शांति भी की जाती है।

मेख (मेष)—प्रथम राशि का नाम, सूर्य वैशाख में इस राशि पर आता है।

राहु—नव ग्रहों में से एक क्रूर ग्रह।

रेवती—३२ तारों का सताईसवाँ नक्षत्र।

रोहिणी—चतुर्थ नक्षत्र।

श्रवण—२२वाँ नक्षत्र।

हत्ती, हत्थी, हस्ती—हस्ति नक्षत्र जिसमें पाँच तारे होते हैं।

---

[१] अधिकांश नाम अन्य प्रवृत्तियों में संगृहीत हैं जहाँ इनकी विशेष व्याख्या की गई है।

ग—गौण प्रवृत्ति द्योतक शब्द—

(१) वर्गात्मक—राय, सिंह।

(२) भक्तिपरक—कृष्ण, चंद, चद्र, दत्त, नाथ, नारायण, प्रकाश, प्रसाद, बली, बहादुर, भूषण, मल, राज, राम, लाल, शङ्कर, शरण।

३—विशेष नामों की व्याख्या[1]—

मूल नारायण—अश्विनी आदि नक्षत्रों में से उन्नीसवाँ नक्षत्र मूल कहलाता है। इसमें उत्पन्न बालक माता-पिता तथा अन्य सम्बन्धियों के लिए अशुभ तथा कष्टदायक समझा जाता है। इस भय से माता-पिता बहुधा ऐसे बालकों को परित्याग कर देते हैं। तुलसीदास इसके उदाहरण हैं, टिप्पणी की तालिका से इसका फल स्पष्ट हो जाता है।

४—समीक्षण

इस ज्योतिष सम्बन्धी लघु संग्रह में २ ग्रह, ८ राशि तथा ११ नक्षत्र सम्मिलित हैं, अधिकतर शुभ ग्रह देव श्रेणि में स्थान पा चुके हैं। राहु क्रूर ग्रह है। मंगल के नाम आशीर्वाद प्रवृत्ति में लिखे गये हैं। यद्यपि १२ राशियाँ नाम रखने में सबसे अधिक साधक तथा सहायक होती हैं क्योंकि बच्चे का इष्ट नाम उनके ही अनुसार रखा जाता है परन्तु उनके नाम पर रखे हुए नाम बहुत ही कम दृष्टिगोचर होते हैं। सर्व साधारण २७ नक्षत्रों के क्लिष्ट तथा अरोचक नामों से विशेष परिचित नहीं हैं। पौराणिक आख्यानों में इन नक्षत्रों को दक्ष प्रजापति की कन्या एवं चंद्रमा की पत्नियाँ माना गया है। शुद्ध तथा विकृत दोनों रूपों में मूल का प्रयोग हुआ है। तान्त्रिक उपचारों में प्रयुक्त होने के कारण पुष्य (विकृत रूप पुख्य या पुख) पर भी कुछ नाम पाये जाते हैं। कृषिप्रधान देश होने से बरसने वाले आर्द्रा तथा हस्ति नक्षत्र भी कृषकों को स्मरण रहते हैं। रोहिणी तथा रेवती बलराम की माता तथा पत्नी के नाम भी हैं अतएव उनके नाम देव देवियों में उल्लिखित हैं। ज्योतिष का विषय केवल पंडितों के लिए ही गम्य है अतः नामो की संख्या बहुत ही अल्प है। मूल एवं गौण प्रवृत्तियों में भी कोई विशेषता नहीं है। ये नाम सीधे-सादे साधारण श्रेणी के मनुष्यों के प्रतीत होते हैं।

---

[1] अन्य ज्ञातव्य बातों के लिए समीक्षण देखिए।

मूल वृक्ष फल

२

शिखा	फल	फूल	पत्र	शाखा	त्वचा	स्तम्भ	मूल
३	४	५	१४	६	११	६	८
अल्पायु	राजा	राज मंत्री	कुलक्षय	माता कष्ट	भ्रा० ना०	धनहानि	मू० नाश

ज्योतिष सर्व संग्रह जातक प्रकरण पृष्ठ १७

सिद्ध योग

१—गणना

क—क्रमिक गणना

(१) इस प्रवृत्ति के अंतर्गत नामों की संख्या २७१ (२) मूल शब्दों की संख्या १०० (३) गौण शब्दों की संख्या ५३

ख—रचनात्मक गणना

प्रवृत्ति	एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	योग
धर्म	१	१	३		५
अर्थ	१०	३५	६	१	५२
काम	१४	७२	३६	५	१२७
लोकैषणा	५	६०	१६	२	८६
चार पदार्थ		१			१
	३०	१६६	६४	८	२७१

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द :—

च—धर्म—धर्मात्मा, धर्मी, धर्मू, धर्मेष्टि।

छ—अर्थ—दौलत, दौली, दौलू, द्रव्य, धन, धनई, धनक, धनकू, धनिया, धनी, नवनिधि, निद्धा, निद्धी, निद्धू, निधि, निधी, पूँजी, मिलखी, विभव, विभूति, सम्पत्ति।

ज—काम—आराम, आरामी, इकबाल, इकबाली, ऐश्वर्य, खुशबख्त, खुशहाल, खुशहाली, खुशाल, खुशाली, नसीबधारी, नसीबसिंह, भाग, भागवंत, भागी, भागू, भोगी, विकास, विलास, सुक्खन, सुक्खा, सुक्खी, सुक्खू, सुख, सुखई, सुखन, सुखना, सुखमंगल, सुखमय, सुखवंत, सुखसम्पति, सुखारी, सुखी, सुखुआ, सुखू, सुखेंद्र, सुभाग, सूखा, सेहत, सौभाग।

झ—लोकैषणा—अजमत, आशा, इसम, उदित, कीरत, कीर्ति, कृतराज, कृतराम, ख्यात, जगरोशन, जयवंत, जस, जसई, तारीफ, नामवर, परमकीर्ति, प्रसिद्ध, महिमा, यश, यशोधर, यशो, विमलानन्द, रोशन, वरनाम, शोहरत, श्लोक, सन्ना, सन्नू, सरनाम सुकीर्ति, सुनाम, हसमत, हुकुम।

अ—चार पदार्थ—पदारथ (पदार्थ)।

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ—

१—शब्दों के विकृत रूप :—धर्म—धर्मी, धर्मू।

दौलत—दौली, दौलू। धन—धनई, धनक, धनकू, धनिया, धनी।

निधि—निद्धा, निद्धी, निद्धू, निधी। खुशहाल, खुशाल, खुशाली।

भाग—भागी, भागू। सुख-सुक्खन, सुक्खा, सुक्खी, सुक्खू, सुखई, सुखन, सुखना, सुखारी, सुखुआ, सूखू, सूखा। सरनाम—सन्ना, सन्नू।

२—विजातीय प्रभाव—

शब्द	भाषा	शब्द	भाषा
आराम, खुशबख्त,	फारसी		
खुशहाल, रोशन,	"	हसमत (हशमत)	अरबी
नामवर, सरनाम,	"	हुकुम (हुक्म)	"

दौलत, मिलखी, अरबी
इकबाल, नसीब ''
अजमत, हसमत, ''
तारीफ, शोहरत, सेहत ''

ग—मूल शब्दों की निरुक्ति—

धर्म—धर्मेष्ठी ।

नवनिधि[1]—वह कुबेर की ६ निधि हैं ।

मिलखी—अमीर ।

काम—इकबाल—भाग्य—प्रताप । खुशवख्त—भाग्यशाली ।
खुशहाल—सुखी । नसीबधारी—भाग्यवान् । भोगी—सुखी ।
विकाश—वृद्धि, उन्नति । विलास—भोग ।
सुभाग—अच्छा भाग्य ।
सेहत—स्वास्थ्य, सुख ।

लोकैषणा—अजमत—प्रताप । इसम—नाम । उदित—प्रसिद्ध ।
ख्यात—प्रसिद्ध ।
जगरोशन—जगविख्यात । नामवर—प्रसिद्ध ।
परमकीर्ति—अत्यन्त प्रसिद्ध ।
यशोविमलानन्द—विमल यश में आनन्द लेनेवाला । रोशन—प्रसिद्ध ।
वरनाम—प्रसिद्ध । शोहरत—प्रसिद्धि ।
श्लोक—यश ।
सरनाम—विख्यात । हसमत—ऐश्वर्य । हुकुम—आज्ञा, आदेश, उपदेश ।
पदारथ (पदार्थ)—चार पदार्थ हैं—धर्म, अर्थ काम, मोक्ष ।

घ—गौण शब्द

(१) वर्गात्मक—राय, सिंह ।

(२) सम्मानार्थक—(अ) आदरसूचक—जी ।

(३) भक्तिपरक—आनंद, करण, किशोर, कुमार, कृष्ण, गोपाल, चद, चंद्र, चरण, जीत, दयाल, दर्शन, दास, दीन, देव, ध्यान, नंदन, नाथ, नारायण, निधान, पाल, प्रकाश, प्रसाद, फल, बक्स, बहादुर, भान, भावन, भूषण, मंगल, मणि, मन, मल, राज, राजध्वज, राम, रूप, ललित, लाल, वल्लभ विमल, विलास, विहारी, वीर, शंकर, शरण, शुभ, सहाय, सुख, स्वरूप

३—विशेष नामों की व्याख्या

यशोविमलानंद—देहरीदीपक न्याय से विमल शब्द दोनो ओर सार्थक है । पवित्र यश ही जिसका विशुद्ध आनंद है ।

४—समीक्षण

प्रत्येक प्राणी सुख, सुयश, सम्पति, संतति, सौभाग्य स्वास्थ्य आदि का अभिलाषी है तथा अंत में स्वर्ग का आनंद अनुभव करना चाहता है। दो शब्दो में इन्हें अभ्युदय तथा निःश्रेयस अथवा प्रेय तथा श्रेय कह सकते हैं। अभ्युदय में सब पूर्वोक्त गुण सम्मिलित हैं और निश्रेयस मुक्ति के आनंद को कहते हैं। इनका एक अन्य वर्गीकरण भी चार पदार्थ या चतुष्फल नाम से किया गया

---

[1] **महापद्मश्च, पद्मश्च, शंखो मकरकच्छपौ ।
मुकुंद कुन्दनीलाश्च खर्वश्च निधयो नव ॥**

है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष यही जीवन के चार फल हैं जिनकी प्राप्ति के लिए प्रत्येक मनुष्य प्रयत्न-शील रहता है। धर्म सदाचार मूलकसात्विक मनोवृत्तियों का आधार है। धर्म की सहायता से अर्जित अर्थ सांसारिक कामनाओं की सिद्धि का साधक बन जाता है। एवं धर्मार्थ काम के सोपान द्वारा साधक को मोक्ष का परम पद प्राप्त हो जाता है—मनुष्य संसार के बंधनों से मुक्त हो जाता है। सांसारिक सुखसमृद्धि का नाम ही अभ्युदय बतलाया गया है। किसी-किसी ने इनके एषणा के अनुसार वित्तैषणा, पुत्रैषणा, लोकैषणा नामक तीन विभाजन किये हैं। लोकैषणा में दो भावनाएँ सन्निहित हैं। इस लोक में यश एवं परलोक में परमानंद।

इस सिद्ध योग प्रवृत्ति में नामों को धर्म अर्थ, काम, (भोग विलासादि सुख) तथा लोकैषणा के अंतर्गत (अ) इह लोकैषणा—यश (आ) परलोकैषणा—मुक्ति इन चार भागों में विभक्त किया है। जन्म पत्रिका बनाते समय इस बात का विचार रखा जाता है कि बालक की कुंडली में शशि के अनुसार किन शुभ नक्षत्रों का योग हुआ है तथा उनका क्या फल होगा। किसी के भाग्य में एक, किसी के दो, किसी के तीन एवं किसी-किसी भाग्यशाली का ऐसा फल योग होता है कि "चार पदारथ करतल ताके" हो जाते हैं।

इस प्रवृत्ति में विकृत रूपो का पर्याप्त समावेश है। इससे यह जान पड़ता है कि शिक्षित तथा अशिक्षित दोनो हो प्रकार के मनुष्यों में यह एषणा पाई जाती है। इनमें से अनेक नाम आशीर्वाद के समूह में भी जा सकते हैं। क्योंकि फल योग मे होने पर भी इन चार पदार्थों के लिए वयोवृद्ध अपनी शुभेच्छा प्रकट किया ही करते हैं। पुरुषार्थ-चतुष्टय का अधिकारी केवल एक हि मुमुक्षु प्रतीत होता है।

काम के अंतर्गत अधिक नाम संचित है। काम में भी सुखमूलक नामों का बाहुल्य यह सिद्ध करता है कि प्राणी मात्र उसका आकाङ्क्षी है। सुख एक ऐसा व्यापक गुण है जिसमें सर्व सिद्धियाँ पुंजीभूत समझी जाती हैं। आनन्द का अनुभव अथवा स्थिति ही सुख है। लोकैषणा भी वस्तुतः काम का ही एक अंग है। अनेक कामनाओं में यह भी एक महत्त्वाकांक्षा है। अतएव इस शीर्षक में भी पर्याप्त नाम हैं। आर्थिक तथा अन्य दृष्टियों से अर्थ भी अत्यंत वांछनीय तथा आवश्यक होता है। इससे एक अन्य विलक्षण निष्कर्ष यह भी निकलता है कि मानव जीवन भौतिकता की ओर झुका हुआ है। इसमें विजातीय प्रभाव बहु मात्रा में परिलक्षित होता है। सम्भव है इसमें अधिकतर नाम उर्दू फारसी पठित कायस्थादि किसी वर्ग विशेष से सम्बन्ध रखते हो। नामों की संख्या से इनका क्रम है (१) काम (२) लोकैषणा (३) अर्थ (४) धर्म (५) पदार्थ।

तेरहवाँ प्रकरण

सम्प्रदाय

१—गणना: —

इस प्रवृत्ति के अंतर्गत आये हुए नामों की संख्या २४५ है :—

(१) मूल शब्द ८४ (२) गौण शब्द ५२

ख—रचनात्मक गणना—

एकपदी नाम,	द्विपदी नाम,	त्रिपदी नाम,	चतुष्पदी नाम,	योग
१६	१६१	५६	६	२४५

२—विश्लेषण

क—मूल प्रवृत्ति द्योतक शब्द :—अदंडी, अनहद शब्द, अमृत, अलखधारी, अर्हं, अवधू, अवधूत, आर्य, उदासी, ओंकार, केवल, कौलधारी, कौली, गिरि, गुरु, गुरुकुल, गुरुमुख, गुसाईं, चरण, छुप्पन, जैन, जैनू, तपसी, तपस्वी, तपोनिधि, तपोराज, तिलक, थावर, दयाल, दयालु, दिगंबर, देव, देवलधारी, नाथ, नाथू, नाम, नेति, परमहंस, पुष्टि, प्यारे, प्रपन्न, ब्रह्ममुनि, भक्त, भिक्षु, महं, महाप्रसाद, महात्मा, मुनि, मुनई, मूरत, मूर्ति, रहतू, रामसनेही, रेख, वैष्णव, विष्णुधारी, शब्द, शब्दल, शरण, संघी, संत, संता, संतान, संतू, सकल, सतगुरु, सधवा, साधव, साधू, साधो, सिद्ध, सुरति, सेचन, सोहम्, स्वामी, हंस, हजूर, हजूरी, हाकिम, हुकुम, हुक्मी, होतम, होती, होतृ।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति—

अदंडी—एक प्रकार के संन्यासी जो दंड नहीं धारण करते।

अनहद शब्द—योगी जब समाधिस्थ होता है तो उसके शून्य अथवा आकाश (ब्रह्मरंध्र के समीप के वातावरण) में एक प्रकार का संगीत होता है जिससे वह मस्त होकर ईश्वर की ओर ध्यान लगाये रहता है। इस शब्द का शुद्ध रूप अनाहत है। यह ब्रह्मरंध्र में निरंतर होता रहता है।

अमृत—अमृत छकना अर्थात् पाहुल—यह सिक्ख धर्म की अत्यंत आवश्यक प्रथा है। गुरुद्वारा या किसी अन्य शुद्ध निभृत स्थान में साधु संगति के सम्मुख ग्रंथ साहब का प्रकाश किया जाता है। तत्पश्चात् पंच प्यारे या सिंह अमृत छकने वाले के साथ केशों सहित नहाकर शुद्ध वस्त्र पहन पांचों ककारों को धारण किये हुए आते हैं। प्रार्थी को सिक्ख धर्म के मुख्य सिद्धांत बताकर अरदास की जाती है। एक लोहे के कटोरे में खांडे (तलवार) की नोंक से बतासे पानी में घोलते हैं। उस समय जपजी, जापजी, दस सवैया, चौपाई, आनन्द साहब का पाठ करते जाते हैं। एक-एक प्यारा एक एक वाणी का पाठ करता है। इस प्रकार अमृत तैयार हो जाता है। तब अमृत छकने वाला चारों नियमों को पालन करने और पंच ककारों को धारण करके धर्म पर चलने का रहत अर्थात् प्रतिज्ञा करता है। उस समय वाह गुरु का खालसा, वाह गुरु की फतह बोलकर पांच बार उसे वह अमृत पिलाया जाता है और फिर केशों और आँखों में पाँच बार छिड़का जाता है। हर बार वही शब्द दोहराये जाते हैं, तत्पश्चात् उसको सिक्ख धर्म का उपदेश दिया जाता है। आज से वह अमर हो गया और पंथ का सदस्य होकर सिंह कहलाने का अधिकारी हो जाता है। इसके बाद गुरु ग्रंथ

[1] कबीर का रहस्यवाद, पृ० १७४।

साहब की हजूरी में अरदास करके कड़ा प्रसाद साधु सङ्गत में बाँटा जाता है और तब प्रथा समाप्त हो जाती है।

अलखधारी—अलखिया सम्प्रदाय का अनुयायी। देखिए अलख ईश्वर प्रवृत्ति में।

अर्हन्—यह शब्द पूजनीय के अर्थ में आता है। अर्हत जैनियों के देवता हैं।

जिन्होंने केवल ज्ञान प्राप्त कर लिया हो परंतु अभी शरीर छोड़कर मुक्त न हुए हो उनको अर्हन् कहते हैं।[1]

अवधू<अवधूत—वे संन्यासी जो संसार से विरक्त हो गये हों।[2]

आर्य—आर्याः श्रेष्ठगुणकर्मस्वभावयुक्ता मनुष्याः अर्थात् जो श्रेष्ठ गुण, कर्म स्वभाव वाले मनुष्य हैं वे ही आर्य संज्ञा के संज्ञी हैं (स्वामी दयानंद)। मान्य', उदारचरितः, शान्तः चित्तः, न्यायपथावलम्बी, प्रकृताचारशील, सतत् कर्त्तव्यकर्मानुष्ठातायदुक्तम् कर्त्तव्यमाचरन् कार्यम् अकर्त्तव्यमनाचरन् तिष्ठति प्रकृताचारे सतु आर्य इति स्मृतः। धार्मिकः धर्मशीलः। यथाह मनुः, आर्यरूपमिवानार्यकर्मभिः स्वैर्विवयेत। १०।५७ शब्द कल्पद्रुम।

माहाकुल कुलीनार्य सभ्य सज्जन साधवः (अमर कोश)। जो आकृति प्रकृति, सभ्यता, शिष्टता, धर्म कर्म, ज्ञान, विज्ञान, आचार विचार तथा शील स्वभाव में सर्वश्रेष्ठ हो उसे आर्य कहते हैं।

उदासी—गुरु नानक के पुत्र श्रीचंद के शिष्य उदासी कहलाते हैं। यह साधु होते हैं किन्तु सिक्ख धर्म के अन्य सब सिद्धांतों को मानते हैं।

ओंकार—देखिए ओम् ईश्वर प्रवृत्ति में।

केवल का अर्थ शुद्ध अथवा भ्रांतिशून्य ज्ञान है। इंद्रियों की सहायता के बिना केवल आत्मा से तीनों काल तथा तीनों लोक के पदार्थों का प्रत्यक्ष होनेवाला ज्ञान केवल ज्ञान कहा जाता है।

कौलधारी—शक्ति के उपासक वाममार्गी सम्प्रदाय के अनुयायी।

गिरि—शंकराचार्य के दश नामी साधुओं का एक वर्ग।

गुरु—हिन्दुओं में गुरु को अत्यंत उच्च माना गया है।[3] संत सम्प्रदाय ने भी गुरु की बड़ी महिमा गाई है। न केवल मनुष्यों में अपितु देव, दैत्यों में भी उनका बड़ा मान होता है। अशिक्षितों के भी कनफुकवे गुरु होते हैं जो उनको कान में गुरुमंत्र की दीक्षा देते हैं। अनेक मतों के प्रवर्त्तक तथा उनके विशेष शिष्य गुरु कहलाते हैं। अगाध पांडित्य, उदात्त चरित्र एवं गौरवशाली गुणों के कारण हिन्दुओं में गुरुपूजा आरम्भ हुई।

गुरुकुल—प्राचीन काल में विश्वविद्यायल गुरुकुल कहलाते थे जहाँ पर सहस्रों विद्यार्थी

---

[1] सर्वज्ञोजितरागादिदोषस्त्रैलोक्य पूजितः।
यथास्थितार्थवादी च देवोर्हन् परमेश्वरः॥

[2] यो विलंघ्याश्रमान्वर्णानाहमन्येव स्थितःपुमान्।
अतिवर्णाश्रमी योगी अवधूतः स उच्यते॥

अथवा—अक्षरत्वात् वरेण्यत्वात् धूत संसार बंधनात्।
तत्त्वमस्यार्थसिद्धत्वादवधूतोऽभिधीयते॥

[3] गुरु हैं बड़े गोविंद से मन में देखु विचार।
हरि सुमिरै सो बार है गुरु सुमिरै सो पार॥ (कबीर)

एक कुलपति के संरक्षण में विद्याध्ययन करते थे। सम्प्रति स्वामी दयानंद ने गुरुकुल खोलकर प्राचीन प्रथा को प्रचलित किया है।

गुरुमुख—यह दीक्षित के अर्थ में आता है जिसने गुरु से नियम पूर्वक मंत्र की शिक्षा दीक्षा ली हो।

गुसाईं—पूर्वकाल के यति जो अपनी इंद्रियों को वश में कर लेते थे गोस्वामी कहलाते थे। वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य को भी गोस्वामी कहते हैं।

चरण—गया, लंका आदि तीर्थस्थानों में देवचरण चिह्न मिलते हैं जिनकी भक्तगण बड़ी श्रद्धा से पूजा करते हैं। गया में चरणचिह्नों को हिन्दू हरिपद और बौद्ध बुद्ध पद मानते है। लंका में हिन्दू उन चरणचिह्नों को रामपद, बौद्ध लोग बुद्ध पद और मुसलमान-ईसाई आदम के पैर का चिह्न कहते हैं।

जैन—स्याद्वाद (जैन दर्शन) और अहिंसा इस धर्म की दो मुख्य बातें हैं।[1] जैन धर्म की नींव पार्श्व नाथ तीर्थ कर ने आठवीं शताब्दी में डाली थी, किन्तु महावीर वर्धमान ने उसको दृढ़ तथा सुसंगठित किया। महावीर अन्तिम तीर्थंकर थे जो अंतिम दिनों में जिनपद को प्राप्त हुए। इस धर्म का जैन धर्म कहते हैं। अहिंसा, सूनृत, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह यह जैनियों के पंच महाव्रत हैं। इनके दो भेद दिगंबर तथा श्वेतांबर प्रसिद्ध हैं।

छप्पन—यह छाप का विकृत रूप हैं, जो मुद्रा के अर्थ में आता है। मुद्राएँ वे चित्र हैं जिनको वैष्णव अपने शरीर पर अंकित करते हैं (५६ सम्वत्)।

तपसी, तपस्वी—शरीर को कष्ट देकर मन को एकाग्र करनेवाला व्यक्ति।

तिलक—नाना प्रकार के साम्प्रदायिक चिह्न जो मस्तक पर चंदन से बनाये जाते हैं।

थावर—स्थावर का विकृत रूप है। साधु दो प्रकार होते हैं एक जंगम दूसरे स्थावर। एक ही स्थान पर रहने के कारण इनका यह नाम पड़ा है।

दयाल—राधा स्वामी मत के प्रवर्तक शिव दयाल को दयाल भी कहते हैं।

देव—यह शब्द दिव् धातु से बना है जिसका अर्थ प्रकाशित होना है। आरम्भ में यह ईश्वर तथा प्राकृतिक वस्तुओं के लिए प्रयुक्त होता था। शनैः शनैः यह स्वर्ग क योनि-विशेष के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। त्रिदेव, पंचदेव, तथा आजकल यह संख्या ३३ करोड़ से भी ऊपर पहुँच गई है।

देवलधारी—पुजारी।

नाथ, नाथू—गुरु गोरखनाथ ने अपना एक नया मत चलाया जिसको नाथ पंथ कहते हैं। यह बौद्धों की वज्रयान शाखा पर अवलंबित है। इसमें हठ योग का अधिक महत्व है। इस मत का प्रचार राजपुताना और पंजाब में अधिक हुआ। इस सम्प्रदाय में ईश्वरोपासना के बाह्य विधानों की ओर उपेक्षा दिखलाकर ईश्वर को हृदय में प्राप्त करने का उपदेश दिया है।

नाम—कुछ सन्तों ने भगवान् के नाम की महिमा भगवान से भी बढ़कर बतलाई है।[2]

नेति—(न + इति) इतना ही नहीं है—ईश्वर के गुणों का वर्णन करते-करते जब पार नहीं पाते तो अंत में नेति-नेति कहकर समाप्त कर देते हैं। बृहदारण्यक उपनिषद् में लिखा है कि "नेहना-नास्तिकिञ्चनः।"

---

[1] स्याद्वादो वर्तते यस्मिन् पक्षपातो न विद्यते।
नास्त्यन्यपीडनं किञ्चित् जैन धर्मः स उच्यते॥

[2] ब्रह्म राम ते नाम बड़ बरदायक बरदानि।

परमहंस—ज्ञान की परमावस्था को पहुँचा हुआ साधु जिसको यह पूर्ण ज्ञान हो जाता है कि मैं ही ब्रह्म हूँ।

पुष्टि—वल्लभाचार्य के मत के अनुसार वैष्णवों का भक्तिमार्ग पुष्टिमार्ग कहलाता है। चार प्रकार की पुष्टि है—प्रवाह पुष्टि, मर्यादा पुष्टि, पुष्टि पुष्टि, और शुद्ध पुष्टि।

प्रपन्न—(शरणागत) एक प्रकार की नवधा भक्ति।

प्यारे—गुरु गोबिन्दसिंह के पाँच प्यारे भक्त जो गुरु के आदेशानुसार सबसे पहले अपने प्राण देने को उद्यत हो गये थे। (१) लाहौर का दयाराम खत्री (२) धरमा जाट (३) साहिब नाई (४) मोहकम धोबी (५) हिम्मत सक्का।

ब्रह्ममुनि—ब्रह्म (ईश्वर) का मनन करने वाले जो दुःख में नहीं घबड़ाते, सुख में जिनको स्पृहा नहीं रहती तथा जिनको अनुराग, भय अथवा क्रोध का लेशमात्र नहीं रहता।[1]

भक्त—(भक्त) भक्त चार प्रकार के होते हैं—आर्त्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी, मुमुक्षु।

भिक्षु—बौद्ध संन्यासी।

महंत—किसी मठ का अधिष्ठाता।

महा प्रसाद—(१) नैवेद्य (२) पुरी में जगन्नाथ जी का भात (३) सिक्खों का कड़ाह प्रसाद (हलुआ)।

महात्मा[2]—बहुत बड़ा साधु संन्यासी या विरक्त।

मुनि—देखिए ब्रह्म मुनि। जैनियों में धर्मात्मा श्रावक से अधिक उन्नत दशा को प्राप्त सर्वस्व त्यागी जैन मुनि माना जाता है।

मूर्ति—किसी देवी-देवता के रूप या आकृति के समान पत्थर, धातु आदि की बनाई हुई प्रतिमा जिसका भक्त पूजन करते हैं। भागवत में आठ प्रकार की मूर्तियाँ बतलाई गई हैं।[3]

इन सब में पत्थर की मूर्ति सर्व साधारण के लिए अधिक उपयोगी है, विष्णु की शैली मूर्ति शाल ग्राम और शिव की नर्मदेश्वर कहलाती है। शिव की पार्थिव मूर्ति भी अपना विशेष स्थान रखती है।

रहतू—सिक्ख सम्प्रदाय में अमृत छकने वाला चारों नियमों को पालन करने और पंच ककारों को धारण करके धर्म पर चलने की प्रतिज्ञा करता है। इस प्रतिज्ञा को "रहत" अर्थात् रहन-सहन के नियम कहते हैं। इसी रहत से रहतू हुआ। (व्यंग्यात्मक नामों में रहतू देखिए) पाली की भाँति रहतू है। अंधविश्वास में देखिए।

राम सनेही—एक वैष्णव सम्प्रदाय जो रामचरण द्वारा १७५० के लगभग शाहपुरा (राजपुताना) में प्रचलित हुआ।

---

[1] दुःखेष्वनुद्विग्नमनाःसुखेषु विगत स्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थिरधीर्मुनिरुच्यते॥ भगवद्गीता २,५६

[2] कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुंधरा पुण्यवती च तेन
अपार संवित्सुखसागरेऽस्मिंल्लीनं परे ब्रह्मणि यस्यचेतः।
(स्कंद पु० माहे० खं० कौ० ५१/१४०)

[3] शैली दारुमयी लौही लेप्या लेख्या च सैकती।
मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टविधा स्मृता॥ भागवत ११। २७। १२

रेख—भाग्य के चिह्न जो ब्रह्मा मनुष्य के मस्तिष्क पर अंकित करते हैं। बक्सर के पास गंगा का राम रेखा घाट है।

वैष्णव[1]—एक प्रसिद्ध धार्मिक सम्प्रदाय जिसमें विष्णु-पूजा की जाती है।

विष्णुधारी—(वैष्णव) विष्णु भक्त।

शब्द, शब्दल—(१) गुरु की शिक्षा (२) ईश्वर (३) आकाश का गुण (४) वाणी, वचन (५) धर्म ग्रंथ।

शरण—भक्ति की आत्म निवेदनासक्ति। बौद्ध धर्म के तीन शरण (बुद्धं शरणं गच्छामि, धर्मं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि)।

संघी—बौद्ध संघ (सभा)।

संत[2]—साधु संन्यासी, कबीर आदि निर्गुणी और गोस्वामी तुलसीदास आदि सगुण सन्त कहलाते हैं। हिन्दू धर्म में सन्तों की बड़ी महिमा गाई गई है।

सकल—(१) कलाधारी (२) केवल ज्ञान को सकल कहते हैं, देखिए ऊपर केवल।

सतगुरु[3], सद्गुरु—यह शब्द अच्छा गुरु तथा ईश्वर के अर्थ में आता है। गुरु के सदृश सतगुरु की महिमा कबीरादि ने वर्णन की है। संत मत के तीन प्रतीक—सतनाम, सतगुरु, सत्संग।

सिद्ध—जिनको आठ सिद्धियाँ प्राप्त हैं उन्हें सिद्ध कहते हैं। बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा के अन्तर्गत तांत्रिक योगी सिद्ध कहलाते थे। यह बिहार से आसाम तक फैले थे। नालंदा और विक्रम शिला की विद्यापीठ इनके मुख्य स्थान थे। इनमें चौरासी सिद्ध प्रसिद्ध हैं।

सेंचन—देवता को जल से स्नान कराना।

सोहम—वेदांतियों का संस्कृत वाक्य "सोऽहमस्मि" जिसका अर्थ मैं हूँ। इनके सिद्धांत के अनुसार जीव और ब्रह्म में कोई अंतर नहीं है।

स्वामी—राधा स्वामी पंथ में ईश्वर के लिए स्वामी अथवा राधा स्वामी प्रयुक्त होता है।

हंस—अजपा मंत्र—स्वाभाविक श्वासोच्छ्वास को अजपाजप अथवा हंस मंत्र कहते हैं (हं—श्वास खींचना, स—श्वास छोड़ना)।

हजूर, हजूरी[4]—सन्त सम्प्रदाय वाले ईश्वर के अर्थ में हजूर का प्रयोग करते हैं और अपने को हुजूर के सदा पास रहनेवाला सेवक (हजूरी) समझते हैं।

---

[1] काम कुरंग औ क्रोध कबूतर ज्ञान के बानसों मारि गिराये।
नेह को नोन लगाइ भली विधि सत्य की सींक में आनि पुवाये॥
पंचक मारि करे कोइला फिर योग की आंचसों आनि तपाये।
या विधि खाइ बनाइ के खाइ तो वैष्णव होत कबाब के खाये॥

[2] अहंवाद 'मैं' 'तैं' नहीं, दुष्ट संग नहिं कोइ।
दुखते दुख नहिं ऊपजै, सुख तैं सुख नहिं होइ॥३०॥
सम कंचन काँचै गिनत, सत्रुमित्र सम दोइ।
तुलसी या संसार में, कहत संत जन सोइ॥३१॥
(वैराग्य संदीपनी)

[3] सतगुरु सत्य पुरुष है अकेला, पिंड ब्रह्मंड ते बाहर मेला,
दूरिते दूरि, ऊँच से ऊँचा, बाट न घाट गली नहिं कूचा।

[4] छुटी मजूरी, भये हजूरी, साहब के मन माना।
(बानी पृ० १४)

हाकिम—हजूर की तरह यह भी ईश्वर के लिए प्रयोग किया जाता है। उच्चपदाधिकारी।

हुकुम—इसका अर्थ शब्द, वचन, शिक्षा, आदेश या उपदेश है हाकिम (ईश्वर) के अर्थ में भी आता है।

होतम—यह शब्द होतृ से बना हुआ प्रतीत होता है जिसका अर्थ यज्ञकर्ता।

होती<होतृ—यज्ञकर्ता।

ग—गौण प्रवृत्ति द्योतक शब्द—

(१) **वर्गात्मक**—दीक्षित, राय, सागर, सिंह, सिनहा।

(२) **भक्तिपरक**—अमूल्य, आचार्य, आनन्द, इंद्र, कांत, किशोर, कुमार, गोपाल, चंद, चरण, दत्त, दयाल, दर्शन, दास, दीन, देव, नन्द, नन्दन, नाथ, नारायण, पति, प्यारा, प्रकाश, प्रसाद, प्रिय, बक्स, बहादुर, भूषण, मल, महा, मिलन, मोहन, रत्न, राज, राम, लाल, वत्सल, वल्लभ, विलास, विहारी, शरण, शिरोमणि, सज्जन, सहाय, सेवक, स्वरूप।

दीक्षित—(१) ब्राह्मणों की एक उपाधि। (२) विधिवत् आचार्य से दीक्षा लेनेवाला, (३) सोम यज्ञादि का संकल्प पूर्वक अनुष्ठान करनेवाला।

३—विशेष नामों की व्याख्या—

संतलाल—सन्त शब्द के दो उद्गम हो सकते हैं (१) शांत जो सन्त के शांत चित्त की ओर संकेत करता है। (२) सत् का बहुवचन सन्त एक वचन के अर्थ में जो सत् अर्थात् साधुत्व लिये हो अथवा जिसने सत् (ब्रह्म के अस्तित्व) की अनुभूति प्राप्त कर ली हो।

सुरतिकुमार—सुरति की व्युत्पत्ति स्रोत (सम्पूर्णानन्द) स्मृति (बड्थ्वाल), स्वरत—(माधवप्रसाद) अथवा सु + रति से मानते हैं। यह चितवृत्ति-प्रवाह अनुभूति की चेतनता, तन्मयता, आदि-ध्वनि, प्रेम, मन, आत्मादि अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है। कुछ इसे सूरत-इ इलमिया का रूपांतर समझते हैं।

४—समीक्षण

कतिपय साम्प्रदायिक परिभाषा के शब्द जिनका किसी अन्य प्रवृत्ति में समावेश नहीं हो पाया, यहाँ सगृहीत किये गये हैं। इस समुच्चय के शब्द तीन विभागों में विभाजित किये जा सकते हैं—(१) साधक (२) साधन और (३) साध्य! यहाँ सन्त साधक है, अनहद शब्द साधन है और ओंकार साध्य है। अन्य प्रकार से भी इन शब्दों का विभाजन हो सकता है। (१) वैदिक तथा पौराणिक शब्द—अदंडी अवधूत, आर्य, ओंकार, कौल, गिरि, गुसाईं, चरण, तपस्वी, देवनाम, परमहंस, पुष्टि, भक्त, महंत, मुनि, मूर्ति, वैष्णव, सोहम्, हंस, होतृ।

(२) **जैन तथा बौद्ध शब्द**—अर्ह, केवल, जैन, थावर, भिक्षु, मुनि, शरण, संघ, सकल।

(३) संत सम्प्रदाय[1] के शब्द—अनहद, शब्द, अलखधारी, उदासी, दयालु, नाथ, नाम,

---

[1] **संतमत का आध्यात्मिक दृष्टि-कोण—**

प्रीति सी न पाती कोऊ, प्रेम से न फूल और
चित्त सों न चन्दन, सनेह सों न सेहरा।
हृदय सों न आसन, सहज सों न सिंहासन,
भाव सों न सेज और सून्य सों न गेहरा।
सील सों न न्हान अरु ध्यान सों न धूप और
ज्ञान सों न दीपक, अज्ञान तम के हरा।
मन सी न माला कोऊ सोंह सो न जाप और
आतम सो देव नहीं, देह सो न देहरा॥ (सुंदरदास)

पंथ, महाप्रसाद, रामसनेही, शब्द, सन्त, सतगुरु, साधु, सुरति, सोहम्, स्वामी, हंस, हजूर, हाकिम, हुकुम।

इन शब्दों की विशद विवृत्ति यथास्थान कर दी गई है। पारिभाषिक शब्द होने के कारण नामों में इनका प्रयोग कम है, इसलिए विकृत रूप भी अल्प हैं। इनमें गुरुदेव, सन्त तथा साधु शब्द जन साधारण में भी प्रचलित हैं।

ये नाम अधिकांश उन्हीं मनुष्यो के हैं जिनकी अभिरुचि साम्प्रदायिकता की ओर अत्यधिक है।

चौदहवाँ प्रकरण

अन्य विश्वास

गणना—

क्रमिक गणना—

(१) नामों की संख्या—६५१

(२) मूल शब्दों की संख्या—५७६

(३) गौण शब्दों की संख्या—३६

प्रवृत्ति		एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	योग
अशुभ नाम		२५	३५	१	६१
निकृष्ट तथा नगण्य नाम		६८	८९	१	१५८
विनिमय साधन (अ)		१४	४८		६२
(आ)	अन्न मुद्रा	२८	६१	५	९४
अन्ध रूढ़ियाँ	अलग करना	२१	३७		५८
	खींचना	११	२६	१	३८
(कान या नाक)	छेदना	११	३९	२	५२
	तौलना	११	१४		२५
	फेरना	७	१७	१	२५
	बदलना	४	७		११
	बेचना	४	१७	१	२२
	मनौती मानना	७	१७		२४
	माँगना	२	१९	२	२३
	मोल लेना	६	१८		८४
भ्रममूलक	उपपत्तियाँ	५६	२०४	१४	२७४
		२७५	६४८	२७	९५१

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द—

(१) अशुभ नाम[1]—अजामिल, अनरूप, अनेक, अपरूप, इंद्रजीत, ओछे, करलू, करिया, कलंक, कलूटी, कसूर, कुंभकरण, कुमनी, कुशंक, कोबरन, खरदूषण, खोट्टू, खोटे, गुलामी, गैरी,

[1] राज्यपाल श्री के० एम० मुंशी ने गुजरात की एक ऐसी उपजाति की ओर संकेत किया जिसमें केवल अशुभ या कुत्सित नाम ही रखे जाते हैं। इसका सम्बन्ध किसी घटना-विशेष से प्रतीत होता है जो उस जाति में घटित हुई होगी, जिससे मिथ्या प्रतीति तथा अज्ञान के कारण अब भी लोग अच्छा नाम रखने में भय खाते हैं। उनकी यह प्रबल धारणा है कि शुभ नाम उनके कुल में छजता (फलता) नहीं है।

घरभारी, घिनई, चूहड, चूहर, चूहरा, चूहरी, जालिम, दसैया, दस्सू, दास, दुर्जन, दुर्जों, दुर्वचन, घिक्की, नंगा, नंगू, नंगे, निखिद्दी, पनारू, मकतूल, लुचई, लौधर, सिरिया।

(२) **निकृष्ट तथा नगण्य नाम**—अलियावन, कचरू, कजोरी; कतवारू, कत्तू, किरही, कुकरिया, कुक्कुर, कुनाई, कुरकुट, कूड़ा, कूड़े, कूठी, कूरी, कूरे, खतुआ, खत्तू, खरपत्तू, खुद्दी, खेखरू, गासी, गिजुआ, गुदड़ी, गुबरी, गुहरी, गूदड़, गूदड़िया, गोजर, गोबर, गोबरू, घसिया, घस्सा, घासी, घुन, घुनऊ, घुन्नन, घुन्नी, चिथरू, चिरकिट, चिरकुट चिरकू, चिलरू, चिल्लर, चीथर, चीलर, चीलरू, चूखर, चूहा, चोकर, छिलकू, जीमिट्टी, जुठई, जूठन, झन्नू, झमई, झम्मन, झम्मा, झाऊ, झागू, झाडू, झिंगई, झिंगन, झिंगुरी, झिलगी, झींगुर, झीगुंरी, झुंडी, झेगई, झेगन, टिड्डी, डढ़ोरे, डीगुर, तिनकू, तुन्न, दले, दूना, धुरइ, धुरी, धूरे, धूल, पत्तर, पाती, पुचई, फतिंगन, फुनई, फूसन, फूसी, फूसे, फोगल, बालू, भुस्सू, भूआ, भूसी, भूस्सू, मटइया, मटोला, मट्टन, मनकी, मल, मलई, मिट्टी, रेत, रोडा, लुखई, सगवा, सग्गल, सग्गू, सरपत, सहिजन।

३—विनिमय साधन :—

अ—अन्न—अंडी, कदन, कुदई, कुदी, कुद्दू, कूदन, केराव, कोदई, कोदू, खेसरी, गुच्चन, गुच्चा, गुजई, चन्ने, चुनकई, चुनकू, चुन्नी चैना, जुआर तंदू, तिल, तिलई, तुअर, तूरी, दौली, दौलू, धान, पसई, बीजा, बूटे, भुट्टा, भुट्टू, मक्का, मक्कू, मटरा, मटरू, मटरे, मठरे, सत्तू, समई, समा, सम्मा, सम्मी, होरा।

(आ)—**मुद्रा**—अद्दू, अशर्फी, कंचन, कनक, कनिक, कुन्दन, कौड़ी, गिन्नी, चंदगी, चवन्नी, चाँदी, चौअन्नी, छकौडी, छक्कन, छक्की, छक्कू, छदम्मी, छदामी, तिनकौड़ी, दमड़ी, दम्मा, दम्मी, दाम, दावन, दुवन्नी, पंचकौड़ी, बिसई, बीसी, बोडई, बोड़ी, मुहर, मोहर, सरिया, सुनई, सुनकी, सुनहरी, सुन्नी, सुवर्ण, सोनई, सोना, सोनिया, सोनी, सोने, सोवरण, सौनी, सौनू, स्वर्ण, हेम, हेमन, हेमा।

४—अंध रूढ़ियाँ

य—अलग करना—अर्पणी, अर्पित, अलगू, खदेरन, खदेरू, जुदागी, डरी, डरू, डरे, डरैले, डलई, डल्लन, डल्ला, डल्लू, डाल, डालिम, डाली, डालू, पटकन, पड़रू, पड़े, पवारू, पब्बार, परहू, परोही, फेंकू, लुटई, लुटावन, लुट्टी, लुट्टू, लोटन, लोटना, विसर्जन, सोंप, सोंफी, सोपन।

(र) **खोंचना**—कढ़ा, कढ़ीले, कढ़ेर, कढ़ेरा, कढ़ोर, काढ़े, खचेड़, खचेरन, खचेरा, खचेरू, खचोड़े, खच्चू, घसीटा, घसीटे, घिराऊ, घिरावन, घिराहू, घिरू, घिसई, घिसलाई, घिसियावन, घिस्सू, घीसम, घीसा, घीसू, घेराऊ।

(ल) **कान या नाक छेदना**—कंछी, कंछेद, कंछेदी, कनछिद, कनछेद, छिद्द, छिद्दा, छिद्द, छेदा, छेदी, छेदुआ, छेदू, नकछेद, नकछेदी, नत्था, नत्थू, नत्थोला, नथ, नथई, नथवा, नथा, नथुआ, नथुन, नथुनी, नथोला, नथोलिया।

(व) **तौलना**—जुक्खा, जुखई, जुखतार, जोखन, जोखी, जोखू, तुलई, तुला, तुलिया, तुल्ला, तुल्लू, तोला, तौले।

(श) **फेरना**—अहोरवा, अहोरे, फिरई, फेर, फेरऊ, फेरन, फेरू, बगदू, बसावन, बहोरन, बहोरी, लूट, लूटन, लौटी, लौट, सुफेर।

(थ) **बदलना**—केजू, नगद, बदल, बदलन्, बदली, बदलू, बदले।

(स) **बेचना**—बिकाऊ, बिकान्; बिक्का, बिग्गा, बेचई, बेचन, बेचा, बेची, बेचू, बेचे, सुवेचन, सौदू।

(ह) **मनौती, मानना**—निहोर, मंतू, मनतोले, मनाऊ, मन्नन, मन्ना, मन्नी, मन्नू, मन्ने, मन्नो, मन्होती, मानता, माना, मानो।

(क्ष) **माँगना**—मंगत, मंगती, मंगतू, मंगन, मंगनी, मंगनू, मंगा, मंगी, मंगू, मंगे, मांगी, मांगू, मांगे।

(त्र) **मोल लेना**—किनयान, किनवन, किन्नू, कीना, बिसई, बिसार, बिसाहन, बिसाहू, मुलई, मुलहू, मुलुआ, मोलक, मोलहर, मोलहू, मोलू, मोल्हा, मौलिया।

५—भ्रममूलक उपपत्तियाँ—अलियार, आमिला, इंधारी, ओड़ी, ओरी, औघड़, कबूल, कलंदर, कुरबान, खलीफा, खाकन, खाकी, खैराती, खोपी, गंडा, गाजी, घुई, घुरंऊ, घुरभू, घुरमल, घुरहू, घुराऊ, घुर्रा, घुरूं, घूये, घूरन, घूरा, घूरे, चारा, छजुआ, छज्जू, छन्नू, छितना, छितरिया, छितानी, छित्ता, छीत, छीतर, छीतरिया, छीता, छीतू, जंत्री, जखई, जतन, जरबंधन, जहरी, जहरू, जाहर, जाहरिया, जाहरी, जाहिर, जुगत, जोगरा, जोगिया, जोगी, जोती, जौन, झंडा, झंडू, झंडूल, झंडे, झब्बा, झब्बू, झाबू, टहल, टहलू, डूँगरा, डोरी, तकिया, तक्कू, तखत, थनई, थन्नू, थम्मन, थान, थानी, थानू, दरगाही, दिहल, धज्जू, धूनी, ध्वजा, ध्वजाधारी, नगरसेन, नागा, नागू, निशान, परसादी, पाली, पीर, पीरी, पीरू, पुड़िया, फकीर, फकीरा, फकीरे, बक्स, बचन, बभूती, बलका, बलि, बलिदू, बल्कन, बहराइचो, बाव, बिरागी, बैताल, बैरंगी, बैरागी, भगत, भभूती, भुइंयां, भुय्यां, भूड़देव, भोपा, भोपी, भबूती, मंत्री, मखदूम, मदार, मदारी, मसानी, मिढ़ई, मुगल, मुल्ला, मुल्लू, मूड़न, मेड़ई, मेड़वा, मेड़ू, मेढ़ा, मेढ़ी, मेढ़, मौलवी, यंत्री, रक्खा, सक्कू, सगुन, सतोले, सती, सत्तू, सधवा, सवारी, साईं, सावन, सेचन, सेवन, सेवा, सैकू, स्याने, हरदिया, हरसू।

विकसित शब्दों के तत्समरूप तथा अर्थ :—

अशुभ नाम—

अजामिल (सं०) एक पापी। अनरूप<अन + रूप – कुरूप। अनेक<अ × नेक (फा०) बुरा। अपरूप (सं०) भद्दा। इंद्रजीत<इंद्रजित मेघनाद। ओछे<तुच्छ-क्षुद्र। करखू<कालिख<कालिमा-कलंक। करिया<काला-काल। कलंक (सं०)-दोष। कलुआ, कलूटी (दे० करिया)। कसूर-(अ०) दोष, कुम्भकरण<कुंभकर्ण। कुमनी ∠ कु + मन—बुरे मनवाला। कोवरन—कु + वर्ण-काला खोटू खोटे<क्षुद्र। गुलामी (अ०) दासत्व। गैरी (अ०)—पराया। घरभारी<गृह + भार। घिनई<घृणा। चूहड़, चूहरा, चूहरी<च्युत + हर भंगी। दसैया दस्सू<दस्यु-अनार्थ;<दास- सेवक। दासू<दास। दुर्जा, दुर्जो<दुर्जन। धिक्की<धिक्-धिक्कार। नंगा, नंगू नंगे<नग्न। निखिद्दी<निषिद्ध। पनारू<प्रणाली-परनाला। भिखारी<भिक्षुक। मकतूल (अ०) मारा गया। लुचई<लुच्चा<लुचकना (अनु०) दुष्ट। लोधर<लद्धड़ ∠ लब्ध – मोटा और सुस्त। सिरिया <सिड़ी<श्रृणीक – पागल।

निकृष्ट तथा नगण्य नाम—

अलियावन ∠ (देशज) कूड़ा, करकट। कचरू ∠ कच्चा ∠ कपण। कजोरी ∠ कजरा<काजल ∠ कज्जल। कतवारू, कत्तू ∠ कर्तन—घूरा। किरही<कीड़ा<कीट। कुकरिया<कुक्कुर – कुत्ता। कुनाई ∠ कुनना ∠ क्षुणन – बुरादा। कुरकुट ∠ कौर (कवल) + कुट—रोटी का छोटा टुकड़ा। कूड़ा, कूड़े, कूरी, कूरे ∠ कूट – कतवार। खतुआ, खतू<खात (गड्ढा)—घूरा, खादः ∠ क्षेत्र – खेत। खर-पतू ∠ खर + पत्र – कूड़ा करकट। खुद्दी ∠ क्षुद्र – कण, किनकी। खेखरू ∠ खीखर (अनु०) वन-बिलाव, लोमड़ी। खोभारी ∠ खोभार (कूड़ा) ∠ खम्भा। घूरा ∠ कूट – कूड़ाकरकट। गासी ∠ गांस ∠

ग्रंथन – तीर की नोक या फल, द्वेष;<गयास - गयासुद्दीन । गिजुआ ∠ गिजगिजाना (अनु०) - गिजाई । गुदड़ी ∠ क्षुद्र—गूदड़ी । गुबरी ∠ गोमय – गोबर । गुहरी ∠ गोहरी ∠ गो + ईल्ल या गोहल्ल – सूखा गोबर – उपला । गूदड़, गूदड़िया (दे० गुदड़ी) । गोजर ∠ खर्जु—कनखजूरा, कातर । गोबर गोबरी, गोबरू (दे० गुबरी) । घसिया, घस्सा, घासी ∠ घास - तृण । घुन, घुनऊ, घुन्नन, घुन्नी ∠ घुण । ∠ घूरामल ∠ घूरा (कूट) + मल-घूरे पर की बिष्ठा । चिथरू ∠ चीर्ण; ∠ चीर – चिथड़ा । चिरकिट, चिरकुट, चिरकू (दे० चिथरू) चिलरू, चिल्लर ∠ चिल्लड़ ∠ चिल – जूँ । चीथर – (दे० चिथरू) चिखुरी<चिखुर ∠ चिखुर – गिलहरी । चोकर ∠ चूर्ण – भूसी छिलकू ∠ छल्ल – छिलका । जो मिट्टी ∠ जीव + मृतिका । जुठई, जूठन<जुष्ट = जूठा । झजी, झजू ∠ झझी (अनु०) – कानी या फूटी कौड़ी । झमई, झम्मन, झम्मा ∠ झामी (देश०) = धूर्त, छली । झाऊ ∠ झानुक – एक वृक्ष । झागू ∠ गाज (अनु०) फेन । झाड़ू ∠ क्षरण – बुहारी । झिंगई, झिंगन, झिंगुरी < झींगुर < झिल्ली । झिलगी ∠ शिथिल + अंग – ढीला – आलसी । झींगुर, झींगुरी, झेंगई, झेंगन ∠ (दे० झिंगई) । झुंडी ∠ झंडा ∠ जयंत । टिड्डी ∠ टिट्टिभ । डढ़ोरे ∠ डढ़ना ∠ दग्ध—जलना । डींगुर<डिंगर – दास, दुष्ट, जूँ । तिनकू<तृण – तिनका<तीन कौड़ी। तुन्नू ∠ तुनक (फा०) दुर्बल । दले<दल—बुरी वस्तु; ∠ दलन—नाश । दूना ∠ दोना ∠ द्रोणि । धुरई, धुरी, धूरे, धूल ∠ धूलि । पत्तर, पाती ∠ पत्र-पत्ता । पुचई ∠ पोच<पूच (फा०)—कमजोर । फतिंगन ∠ पतंग-पतंगा । फुनई ∠ भुनगा (अनु०) । फूचो ∠ फुचड़ा (अनु०) । फूसन, फूसी, फूसे ∠ फूस तुष-घास फूस; फुसड़ा ∠ फुचड़ा । फोगल ∠ फोकला ∠ वल्कल —फोक । बालू<बालुका । भुस्सू<भूसा ∠ तुष । भूआ (देश०)-कास-कपास सेमल आदि के फूल का रेशा । भूसी, भूसू दे० भुस्सू । मटइयां, मटोला, मट्टन ∠ मृत्तिका—मिट्टी । मनकी ∠ मणिका—मनका । मल, मलई ∠ मल—मैला, विष्ठा । मिट्टी (दे० मटइया) । रेत<रेतस्—बालू । रोड़ा ∠ लोष्ठ-ईंट, पत्थर का टुकड़ा । लुखई ∠ लोमश- लोमड़ी । सगवा, सग्गल, सग्ग ∠ साग ∠ शाक । सरपत ∠ शरपत्र-सरकंडा । सहिजन ∠ शोभांजन-मुनगा ।

विनिमय साधन

अंडी ∠ एरंड—अंडी रेशम । कदन ∠ कदन्न-मोटा अन्न । कनिक ∠ कणिक—आटा (गेहूँ) । कुदई, कुदी, कुद्दू, कूदन<कोद्रक—कोदों चावल । केराव ∠ कलाय—मटर । कोदई, कोदू (दे० कुदई) । खेसरी ∠ कृसर-खेसारी, मटर । गुच्चन, गुच्चा ∠ गुचंनी ∠ गेहूँ (गोधूम) + चना (चणक) । गुजई ∠ गोजर ∠ गेहूँ + जौ (यव) । चन्ने<चणक-चना<चरण—पद । चुनकई, चुनकू, चुनिया, चुन्नी<चून<चूर्ण—आटा । चैना ∠ चयन- सांवा जाति का एक अन्न । जिनसी<जिन्स (फा०)-अनाज । जुआर ∠ ज्वार ∠ यवनाल । तंदू ∠ तंदुल ∠ तंडुल -चावल । तिलई – तिल । तुअरी, तूरी ∠ तूअर<तूनरी—अरहर, तूर । दौली, दौलू ∠ दौल ∠ दाल<दालि-चना की दाल, दौलत—पद । धानजू, धानू ∠ धान्य + जू (युक्त)—अनाज, चांवल । पसई<प्रसातिका—पसही, तिन्नी के चावल । बीजा ∠ बीज । बूटे ∠ विटप-हरा चना, बूट बेझू ∠ बेझर (देश०) गेहूँ, चना, जौ, मटर आदि में से दो या तीन मिले हुए अन्न । भुट्टू ∠ भृष्ट-मक्का का भुट्टा । मक्का, मक्कू (देश०)-मकई । मटरा, मटरू, मटरे ∠ मधुर—मटर । सतू ∠ सक्तु—सतुआ । समाई, समा, सम्मा, सम्मी ∠ श्यामक—सांवा । होरा ∠ होलक—होरहा ।

मुद्रा

अद्दू<अर्द्ध—दमड़ी का आधा । अशर्फी<अशरफी (फा०)-मुहर—सोने का सिक्का । इकन्नी <एक + आणक—एक आना । कंचन ∠ कांचन । कनिक ∠ कनक—वर्ण । कुंदन<कुंद—बढ़िया सोना । कौड़ा, कौड़ी ∠ कपर्दक । गिन्नी ∠ गिनी (अं०)—सोने का सिक्का । चंदगी ∠ चांदी ∠ चंद—

रजत। चवन्नी ∠ चतु: + आणक—चार आने का सिक्का। चादी ∠ चंद। चौअन्नी (दे० चवन्नी)। छकौड़ी ∠ षट् + कपर्दिका। छक्कन, छक्की, छक्कू ∠ षट्—छ: का समूह। छदम्मी, छदामी ∠ छ: + दाम ∠ षट् + द्रम्म—पैसे का चौथाई। तिनकौडी ∠ त्रिकपर्दक। दमड़ी ∠ द्रविण, द्रम्म-पैसे का आठवा भाग, दम्मा, दम्मी, दाम, दामन ∠ द्रम्म-बहुत छोटा पुराना सिक्का। दुअन्नी ∠ द्वि + आणक। नगद ∠ नकद (अ०)। पचकौडी ∠ पंचकपर्दक। बिसई, बीसी ∠ विशति-बीस। बोड़ई, बोड़ी ∠ बौंड़ी ∠ वृत्त-दमडी, छदाम। मुहर, मोहर ∠ मोहर (फा०) —अशरफी। सरिया ∠ श्री—छोटी मुद्रा। सुनई, सुनकी, सुनहरी, सुन्नी ∠ स्वर्ण, सुवर्ण—(सं०)। सोनई सोना, सोनिया, सोनी, सोने (दे० सुनई)। सोवरन ∠ सुवर्ण, ∠ सौवरन (अं० सोने का सिक्का। सौनी, सौनू ∠ स्वर्ण। हेमन, हेमा ∠ हेमन्-स्वर्ण।

अंध रूढ़ियाँ

अलग करने का भाव—अर्पणी, अर्पित (सं०)। अलगू ∠ अलग्न। खदेरन, खदेरू ∠ खोदना ∠ √खुद्—दूर करना। जुदागी ∠ जुदा (फा०)-पृथक् करना। डरी, डरू, डरे, डरेले, डलई, डल्लन, डल्ला, डल्लू, डाल, डालिम, डाली, डालू ∠ डालना ∠ तलन—गिराना। पटकन ∠ पटकना ∠ पतन + करण—गिराना। पड़रू, पड़े ∠ पड़ना ∠ पतन—गिर पड़ना। पवारू, पब्बर, पब्बार ∠ पवारना ∠ प्रेषण—फेकना। परहू, परोही ∠ परघना ∠ प्र + √हृ-त्यागना। फेंकू ∠ प्रेषण—फेकना। बखोरी ∠ बखेरना ∠ बिखरना ∠ विकीर्ण—छितराना। लुटई, लुटावन, लुट्टी, लुट्टू-लोटन, लोटना ∠ लुंठन-लिटाना। विसर्जन (सं०) ∠ वि + √सृज्—त्यागना + सौंप, सौंफी, सोपन ∠ समर्पण—सौंपना।

खींचना

कढ़ा, कढ़ीले, कढ़ेर, कढ़ेरा, कढ़ोर, काढ़े, ∠ कर्षण—कढ़ोरना, खीचना। खचेड़, खचेरा, खचेरू, खचोडे, खच्चू ∠ खीचना ∠ कर्षण। घसीटा, घसीटे, ∠ घृष्ट—घसीटना। घिराऊ, घिरावन, घिराहू < घिरांना (अनु०) < घिर्रू < घृष्ट—घसीटना। घिसई, घिसलाई, घिसियावन, घिस्सी, घीसम, घीसा, घीसू ∠ घृष्ट—घसीटना। घेराऊ ∠ घृष्ट—घसीटना।

छेदना

कंछी, कंछेद, कंछेदी, कनछिद, कनछेद ∠ कर्ण + √छिद्—कान छेदना। छिद्दन, छिद्दा, छिद्द, छेदा, छेदी, छेदुआ, छेदू ∠ √छिद्—छेदना। नकछेद, नकछेदी ∠ नाक (नक्र) + छेदन (√छिद्)। नत्था, नत्थू, नत्थोला, नथ, नथई, नथवा, नथा, नथुआ, नथुन, नथुनी, नथोला, नथोलिया ∠ √नाथ्—नाथना या नथ (नाक का गहना)।

तोलना

जुक्खा, जुखई, जुखतार, जोखन, जोखी, जोखू ∠ जोषण; < √जुष्—तौलना। तुलई, तुला, तुलिया, तुल्ला, तुल्लू, तोला, तौले ∠ तोलन < √तुल्।

फेरना

अहोरवा, अहोरे ∠ आहरण। फिरई, फिरऊ, फेरन, फेरू ∠ प्रेरण—फेरना। बगदू ∠ बगदाना (देश०) लौटाना। बहोरन, बहोरी ∠ बाहुड ∠ व्याघुट-बहोरना, लौटाना। लूटन, लूट, लौटी, लौटू ∠ उल्लोठन—लौटाना। सुफेर ∠ सु + प्रेरण-फेरना।

बदलना

बदलनू, बदली, बदलू, बदले < बदल (अ०)—बदलना।

बेचना

बिकाऊ, बिकानू, बिक्का, बिग्गा ∠ बिकना < विक्रय—बेचना । बेचई, बेचन, बेचा, बेची, बेचू, बेचे<बेचना<विक्रय । सुवेचन<सु + विक्रय । सौदू<सौदा (अ०)—बेचना, खरीदना ।

मनौती

निहोर<मनोहार-मनाना । मंतू, मनतोले, मनाऊ, मन्नन, मन्ना, मन्नी, मन्नू, मन्ने, मन्नो, मन्होती, मानता, माना, मानो ∠ मान्यता—मनौती ।

माँगना

मंगत, मंगती, मंगतू, मंगन, मंगनी, मंगनू, मंगा, मंगी, मंगू, मंगे, मांगी, मागू, मांगे <मार्गखि<√मार्ग् ।

मोल लेना

किनयान, किनवन, किन्नू, कीना ∠ कीनना<क्रीणन—मोल लेना । बिसई, बिसऊ, बिसार, बिसाहन, बिसाहू<विसाहना<विश्वास—मोल लेना । मुलई, मुलहू, मुलुआ, मोलक, मोलहर मोलहू, मोलू, मोल्हा, मौलिया<मूल्य—मोल लेना ।

भ्रम मूलक उपपत्तियाँ

अलियार अली (अ०) + यार (फा०)—एक पीर । आमिला<आमिल (अ०)—ओझा, सयाना । इंधारी<इंदारा ∠ इंद्र—इनारा, कूप । ओडी, ओरी<ओल;<क्रोड-ओलती । औघड<अव + घट-अनोखा । कबूल (अ०)-स्वीकार । कलंदर<कलंदूर (अ०) फकीर । कुरबान (अ०)-बलिदान । खलीफा (अ०) मुसलमानों का सबसे बड़ा धर्माध्यक्ष । खाकन, खाकी<खाक (फा०) साधू । खैराती <खैरात (अ०) दान । खोपी<खर्पर-–छप्पर का कोना । गंडा<गंडक-तावीज । गाजी (अ०)-बहराइच का गाजीमियाँ । घुरई ∠ घूर<कूट—घूरा । घुरबटोर<घुर + बटोरना (वर्त्तुल) । घुरविन<घुर + बिन (चयन) । घुरभरी (भरण) । घुरहू, घुराऊ, घुरी, घुरू (दे० घुरई) । घूये<घूया (देश०)-कपास आदि के फूल का रेशा, कास का फूल । घूरन, घूरा, घूरे-(दे० घुरई) । चौरी ∠ चतुर, देव-स्थान, वेदी । छजुआ, ∠ छज्जू ∠ छज्जा ∠ छाजन ∠ छादन—ओलती, ओरी । छन्नू ∠ छान ∠ छादन-छप्पर । छितना, छितरिया, छितानी, छित्ता, छीत, छीतर, छीतरिया, छीता, छीतू ∠ क्षिति—छोटी छिछली टोकरी । जंत्री ∠ यंत्र-जंतर । जखई ∠ यक्ष-जखैया देवता । जतन ∠ यत्न-उपाय, उपचार । जरबंधन ∠ जड़ + बंधन । जहरी, जहरू, जाहर, जाहरिया, जाहरी, जाहिर ∠ जाहिर (अ०)-जाहर पीर । जिंदा (फा०)-जीवित, जिंदा पीर । जुगत ∠ युक्ति-उपाय, उपचार । जोगरा, जोगिया, जोगी ∠ योगी । जोती ∠ ज्योति—देवताओं के आगे घी का दीपक जलाना । जोन ∠ यवन । झंडा, झंडू, झंडूल, झंडे, ∠ जयंत-देवता का झंडा । झन्ना ∠ झाड़ना ∠ क्षरण । झब्बा, झब्बू, ∠ झांपना ∠ उत्थापन-टोकरी । झाड़े ∠ क्षरण-झाड़फूँक । झाबू (दे० झब्बू) । टहल, टहलू ∠ तत् + चलन-सेवा । डूंगरा ∠ तुंग-टीला । डोरी ∠ डोरक-देवता का गंडा । तकिया (फा०) फकीर या पीर का निवास स्थान, गुदड़ी । तखत ∠ तख्त (फा०)—देवस्थान । थनई, थन्नू ∠ स्थान-थान, चौरी । थम्मन ∠ स्तंभन-मारण, मोहन आदि षड् उपचार । थान, थानी, थानू ∠ (दे० थनई) । दरगाही ∠ दरगाह (फा०)-सिद्ध पुरुष का समाधि स्थान । दिहल (पूर्वी हिन्दी)-दिया । धज्जू ∠ ध्वजा—झंडा । धूनी ∠ धूम्र-साधु की धूनी । ध्वजा-(दे० धज्जू) । ध्वजा धारी (सं०) । नागा, नागू ∠ नग्न-नागा साधू । निसान ∠ निशान (फा०)—झंडा । परसादी ∠ प्रसाद-नैवेद्य । पाली ∠ पालित-दूसरों से पाला हुआ । पीर, पीरी, पीरू (फा०)-सिद्ध । पुड़िया ∠ पुटिका-भस्मादि की पुड़िया । फकीर, फकीरा, फकीरे (अ०) । बन्द

∠बख्श (फा०) दान। बचन∠वचन-आशीर्वाद । बभूति∠विभूति-धूनी की भस्म, भभूत। बलकेश∠बली क (ओगी)+ईश। बलिकरण, वलिदू∠बलिदान-वलि देना। बलका, बल्कन∠वलीक—ओलती, ओरी। बाघ∠व्याघ्र-वाघदेव। विरागी.. विराग-वैरागी साधु। बैताल∠बेताल-शिव का एक गण। बैरंगी, बैरागी∠वैराग्य-वैरागी। भगत∠भक्त। भबूती, भभूती-(दे० विभूति) भुइया, भुय्यां∠भूमिया∠भूमि-ग्राम देवता। भूड़देव∠भूर+देव-बलुई मिट्टी। भैया∠भ्रातृ-एक प्रेत। भोपा, भोपू∠भोंभो (अनु०)-भोपू बजानेवाला भैरव का भक्त। मंत्री∠मंत्र। मखदूम (फा०) बगाल का पीर मकदूम शाह। मदार, मदारी (अ०)—मकनपुर का पीर मदारशाह। मसानी ∠श्मशानी-डाकिनी। मिढ़ई∠मढ़ी∠मठ। मियां (फा०)-एक पीर। मुगल (फा०)। मुल्ला, मुल्लू∠मुल्ला (अ०)। मूड़न∠मुंडन। मेडई, मेडू, मेढ़ा, मेढ़ी, मेढ़<मंडल-मेड़। मौलवी (अ०)। यंत्री (दे० जंत्री)। रक्खा∠रक्ष-भस्म, राखी। सक्कू∠सक्का (फा०)। सगुन∠शकुन। सतोलै, सती, सत्तू∠सती। सधवा∠साधु। सधागी∠सिद्ध या मदारी का (अनु०)। साईं∠स्वामी-फकीर। साधन∠साधना-मंत्र-सिद्धि-उपकरण। सुरई∠सौंपना∠समर्पण। सेचन (सं०)∠जल देना। सेवन∠सेवा। सैकू∠सैका∠सेचन-जलवट,∠सक्का (फा०)· ∠सिक्का (अ०)। स्याने∠सज्ञान—ओझा। हरदिया∠हरदेव लाला-एक प्रेत। हरसू∠हर्ष-हरसू पांडे—एक ब्रह्म राक्षस।

ग—गौण प्रवृत्ति द्योतक शब्द—

(१) वर्गात्मक—राय, शाह, सिह, साहु।

(२) सम्मानार्थक आदरसूचक—जी, जू।

(३) भक्तिपरक—आनन्द, ईश, ईश्वर, कुमार, कृष्ण, चंद्र, चरण, जीत, दयाल, दान, दास, देव, धन, नन्दन, नाथ, नारायण, पाल, प्रकाश, प्रसाद, बक्स, बहादुर, भगत, मनि, मल, राज, राम, लाल, विहारी, शकर, शरण, सेन, सेवक, स्वरूप।

३—विशेष नामों की व्याख्या—

१—**अजामिल**—काशी का एक पापी ब्राह्मण जो मरते समय अपने पुत्र नारायण का नाम लेने से मुक्त हो गया। "पापी अजामिल पार कियो जिन नाम लियो सुत ही को नराइन"।

खरदूषण—खर और दूषण रावण के चचेरे भाई थे जो राम के द्वारा मारे गये थे।

अलियारसिंह—सन् १०५० ई० में मलिकुलमुल्क के नेतृत्व में मुसलमानों का एक दल मदुरा में आया जिनके साथ एक सिद्ध फकीर अलियारशाह भी था इसकी समाधि मदुरा में बनी हुई है।

ओरीसिंह—जिनके बच्चे जीवित नहीं रहते, वे उनको पैदा होते ही ओरी (ओलती) के नीचे लेकर बैठ जाते हैं, और छप्पर से उस नवजात शिशु पर पानी डालते हैं। ऐसे बालकों का नाम ओरी, छज्जू, छन्नू, टोडर, वलिका, तारन आदि रख लेते हैं। इस प्रथा से लोग समझते हैं कि बच्चा दीर्घायु होगा।

कबूल सिंह—किसी देवी-देवता की मान्यता के पश्चात् उत्पन्न होने से बच्चे का यह नाम रखा गया है।

कुरबान सिंह—पुत्रजन्म तथा रक्षा के लिए किसी देवी-देवता पर बकरी आदि की भेंट चढ़ाते हैं। बलिदान सिंह में भी यही भावना है।

खलीफा—मुसलमानी राज्य की सबसे बड़ी पदवी। इस आदरसूचक नाम से कभी-कभी अन्य व्यक्ति को भी पुकारा जाता है, इसके आशीर्वाद से बच्चा पैदा हुआ समझा जाता है।

गंडा सिंह—मंत्र पढ़कर गाँठ लगाया हुआ धागा गंडा कहलाता है जिसे लोग रोग, और भूत-प्रेत की बाधा दूर करने तथा बच्चा की रक्षा के लिए गले में बाँधते हैं। बच्चे का जन्म गंडा तावीज के प्रयोग से समझा जाता है।

तुल्ला—बच्चे को तराजू के पलड़े में रखकर, कुदई आदि बिना बोये हुए अन्न से तौलते हैं।

नकछेदी लाल—बच्चे के जन्मते ही जिस करवट से बालक पैदा होता है उसी ओर के नाक या कान छेद दिये जाते हैं। ब्याह के समय उस नथ या वाली को उस बालक की ससुराल भेज देते हैं, जिसके बदले में वहाँ से दाई के लिए सोने या चाँदी की नई नथ या बाली आ जाती है।

छीतरिया—छीतर बाँस की छिछली टोकरी (डलिया) को कहते हैं। बच्चा पैदा होते ही उस छितली में रखकर थोड़ी दूर तक घसीटा जाता है जिससे वह चिरंजीव हो। ब्याह के समय वह डलिया उसकी ससुराल भेजी जाती है जिसके बदले में एक नई डलिया में पुए भर कर आते हैं औ साथ में दाई के लिये कपड़े आदि भी आते हैं। अष्टछाप के कवियों में भी एक छीत स्वामी का नाम है।

जाहरलाल—पुत्र का जन्म जाहर-पीर की जारत से समझा जाता है। चामुंडा से मथुरा आते हुए अम्बरीष टीला के नीचे जाहर पीर का मठ है और ऊपर हनुमान का मन्दिर है। जाहर पीर पहले हिन्दू था जो बाद को मुसलमान हो गया। आसपास के गाँवों में हिन्दुओं के घर इसकी पूजा होती है।

झंडा सिंह—पुत्र की कामना से कुछ मनुष्य देवी पर झंडा या निशान चढ़ाने का व्रत लेते हैं।

टुकई, पाली, रहतू—दूसरों के टुकड़ों से पला हुआ टुकई, दूसरों से पाला गया पाली, दूसरों के यहाँ रहने से रहतू नाम हुए।

तखत—सिक्खों के चार मुख्य गुरुद्वारे तख्त के नाम से प्रसिद्ध हैं (१) अमृतसर का श्री अकाल तख्त—यहाँ सिक्खों का विश्वविख्यात हरि मन्दिर है (२) पटना में पटना साहब जहाँ गुरु गोविन्द सिंह का जन्म हुआ था (३) पंजाब में आनन्दपुर साहब जहाँ गुरु गोविन्दसिंह रहते थे (४) हैदराबाद (दक्षिण) के नदिआड में हुजूर साहब जहाँ गुरु गोविन्दसिंह ने अपने जीवन के अन्तिम दिन बिताये थे। इसमें तीर्थ या मनौती की भावना हो सकती है।

थम्मन लाल—तंत्र के ६ प्रयोगों में से एक स्तम्भन भी है जो संतति की रक्षा के लिए किया जाता है।

नगर सेन—पश्चिम के गाँवों में नगर सेन धोबी की पूजा की जाती है।

बदलू—बदलना दो प्रकार से सम्भव हो सकता है—अन्नादि किसी वस्तु से या किसी दूसरे बच्चे से। दो मृतवत्सा माताएँ आपस में अपने बच्चों को बदल लेती हैं। इस विनिमय में बच्चों की माताएँ भी बदल जाती हैं। माताबदल नाम में भी यही भावना हो सकती है। दूसरी भावना यह होती है कि पहले बच्चे की मृत्यु के बाद माता (देवी) ने बदले में वैसे ही रूप-रंग का दूसरा बच्चा दे दिया है। एवज सिंह में भी बदलू की ही भावना है।

बहराइची—बहराइच में गाजी मियाँ की दरगाह है।

बाघ सिंह—हुशंगाबाद जिले के भूमिका पुजारी बाघदेव की पूजा किया करते हैं।

मखदूमसिंह—बंगाल के राजशाही जिले में पीर मखदूमशाह की एक दरगाह है।

मदारीलाल—कानपुर के पास मकनपुर में मदारशाह की एक बड़ी दरगाह है जहाँ पर पुत्रकामा स्त्रियाँ मनौती मनाया करती हैं।[1]

मियांलाल - अमरोहा और जलेसर में जैन खाँ की दरगाह है। वह मियां के नाम से प्रसिद्ध है। पश्चिम के गाँवों में उसकी पूजा होती है।

मूड़नदेव—दीर्घायु के लिए जन्म लेते ही बच्चे का मुंडन करा दिया जाता है।

सधारीलाल[1]—इस नाम का सम्बन्ध साध, सिद्ध या दक्षिणी सिद्धार साधुओं से हो सकता है।

सैकू—घड़े के आकार का मिट्टी का बड़ा बर्तन सैका कहलाता है, कदाचित् उसमें जल भरकर पीपल आदि पर लटकाने का कोई उपचार हो अथवा मैकू की तुक (ससुराल में उत्पन्न सैकू) हो। व्यंग्य प्रकरण में इसकी विशेष व्याख्या की गई है।

हरदिया—हुशंगाबाद के जुझारसिंह के भाई हरदौल लाला की पूजा की जाती है।

हरस—चैनपुर का हरसू पाँडे (१४२७) एक स्थानीय ब्रह्म राक्षस है। इसकी पूजा के लिए दूर-दूर के मनुष्य आते हैं।

समीक्षण

अनेक अंध रूढ़ियाँ हिन्दू-समाज का अंग बन गई हैं। कुछ जनता का जंतर-मंतर, जादू-टोना आदि में इतना गहन विश्वास दिखलाई देता है जितना शिक्षित तथा सभ्य मनुष्यों का यज्ञ-याग, तप-व्रतादि में नहीं देखा जाता। उनके स्याने-दिवाने, साधु-संत से विशेष मान एवं महत्त्व रखते हैं। उनके वचन, उनके आदेश अटल होते हैं। पुराण तथा अन्य धर्म-ग्रंथों की अपेक्षा यह बुढ़िया पुराण अधिक प्रसिद्ध एवं प्रचलित है। इस बात का प्रमाण इस प्रवृत्ति के वृहत् अभिधान संकलन से मिलता है,। विश्वास की गहरी जड़ पर टिका होने से मनुष्यों के हृदय पर इसका अमिट प्रभाव है। अबलाओं का तो यह सर्वस्व ही है।

माता की ममता संसार में प्रसिद्ध है, अजातपुत्रा अपने लाल का मुख देखने के लिए लालायित रहती हैं; मृतवत्सा अपनी रिक्त गोदी को पुनः भरने के लिए प्रबल उत्कंठा रखती है तथा पुत्रवती अपनी दुलारी सन्तति के लिए दीर्घायु की कामना करती है, वह मनाती है कि मेरा पुत्र चिरंजीवी हो, फले-फूले, मुझे कभी पुत्र विछोह न हो। इस भावना को सफल बनाने के लिए वह नाना प्रकार के उपचार एवं उपाय करती रहती है। सन्तति के कल्याणार्थ पुराणों में नाना व्रत-पर्वों का उल्लेख किया गया है। लोकाचार में भी अनेक मंत्र-यंत्र, झाड़-फूँक जादू-टोना, पूजा-

---

[1] बचपन में मुझे और मेरे छोटे भाई को लेकर मेरी माँ मकनपुर में मदार पूजने गईं। वहाँ दरगाह के पुजारियों ने मेरा नाम मदारीलाल रखा और मेरे छोटे भाई का नाम सधारीलाल। (मदारीलाल)

इकन्नीलाल की कहानी

प्रयाग विश्वविद्यालय के डा॰ रामकुमार वर्मा ने यह कहानी इस प्रकार सुनाई थी—मध्य-प्रदेश में मेरे घर के पास एक सज्जन रहा करते थे जिनके बच्चे जीवित नहीं रहते थे। उनकी धर्मपत्नी बहुधा मेरी माताजी से मिलने आया करती थीं। बातचीत में कई बार उन्होंने माता जी से इच्छा प्रकट की कि आप मेरे बच्चे को मोल ले लें। कदाचित् वह आपके आशीर्वाद से ही जीवित रहे। बहुत आग्रह करने पर माता जी को उन पर दया आ गई और उस शिशु को एक इकन्नी में मोल ले लिया। बच्चे का नाम इकन्नीलाल हो गया। ईश्वर की लीला, वह इकन्नीलाल जीवित है और आजकल अपने बदले हुए नये नाम से मध्य-प्रदेश में एक उच्च पदाधिकारी है।

पाठ जपादि प्रचलित हैं। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए धर्मानुष्ठान के नाम पर अनेक आडम्बर रचे जाते हैं, बलिदान दिये जाते हैं। संतान के सुख के लिए—उसे आयुष्मान बनाने के लिये घृणित तथा गर्हित प्रयोग तक करने पड़ते हैं। पर्व के प्रसङ्ग में बतलाया गया था कि स्त्रियाँ पुत्र कामना से जीवित्पुत्रिका, हलषष्ठी आदि अनेक व्रत रखती हैं। इस प्रकरण के निरूपण से भी अद्भुत भावनाओं का प्रत्यक्षीकरण होता है, विलक्षण प्रथाओं का उद्घाटन होता है। जन-साधारण की यह धारणा है कि बच्चे का कोई अशुभ नाम रखने से वह जीवित रहता है। इसीलिए पापी अजामिल या दैत्य खरदूषण आदि के नाम इस सङ्कलन में पाये जाते हैं। इसी विचार से अनेक मनुष्य अपने पुत्रों के जालिमसिंह, दुर्जनसिंह, घिनाऊ आदि दूषित नाम रख लेते हैं। बहुत से माता-पिता अपरिचित तथा दुर्व्यक्तियों की कुदृष्टि से सुरक्षित रखने के लिए विरोधीगुणवाची दुर्नाम रख लेते हैं। इसके फलस्वरूप सुन्दर रूपवान बालक भी करिया, कलकू, ओछे आदि नाम से सम्बोधित होते हैं। रक्षा का दूसरा उपाय यह विश्वास प्रतीत होता है कि बच्चे को एक ऐसा निकृष्ट तथा नगण्य वस्तु का नाम दे दिया जाय जिससे उसके प्रति माता-पिता की उपेक्षा तथा अवज्ञावृत्ति का बोध हो। घूरे, कूरे, कतवारू आदि नाम इसी मनोवृत्ति के परिणाम हैं। इस विरति भाव को प्रदर्शित करने का एक अन्य साधन यह है कि बच्चे को घूरे, टीले, कुएँ, खेत की मेड़ पर या छप्पर के नीचे रख देते हैं। ओरो, छज्जू, वलका, टोडर, छन्नू, मिड़ई, डोरी आदि नाम इसी घटना की सूचना देते हैं। प्रथाओं के नाम से भी अलगू, फेकू, डरे आदि नाम रखे जाते हैं। जिनके बच्चे उत्पन्न होकर मर जाते हैं वे अपने बालक के नाक या कान छिदा देते हैं इस प्रकार छेदालाल, छिदू आदि नाम पड़ गये हैं। इस प्रथा से नामों की दो भिन्न शाखाएँ हो गई हैं। कान छिदा हुआ बच्चा कन्छिदलाल, कंछीलाल आदि नामों से तथा नाक छिदा हुआ नकछेदी, नत्थी आदि नामों से पुकारे जाते हैं। कभी-कभी माँ अपने बच्चे को किसी कदन्न से तौलकर उस अन्न को भंगिन को दे देती है। इस प्रथा से भी दो प्रकार के नाम प्रारम्भ हुए हैं—(१) कुदई आदि अन्न सम्बन्धी या (२) तुलाराम, तुल्ला, जुलई आदि तौलने की प्रथा सम्बन्धी। कभी-कभी बालक को दूसरे के हाथ बेच दिया जाता है, इसलिए उसे बेचू या बेचन कहते हैं। फिर उसे छदाम, दमड़ी आदि नाममात्र का मूल्य चुकाकर मोल ले लेते हैं। इस विनिमय में कौड़ी से लेकर स्वर्ण तक काम में लाते हैं, दमड़ी, छदम्मी, कंचनलाल, मोलकचंद्र. इस प्रकार के नाम हैं। किसी वस्तु से बदलने से बालक का नाम बदलू और फेरने या लौटाने से लौटूसिंह, फेरन आदि नाम पड गये हैं। किसी देवमूर्ति या वयोवृद्ध व्यक्ति के चरणों में अर्पित कर पालनार्थ बच्चे को फिर माँग लिया जाता है। इससे माँगीलाल, मंगू, भीखू, मंगन आदि नामों की परम्परा प्रारंभ होती है। कभी-कभी इसी भावना से प्रेरित हो माँ अपने बच्चे को पालने के लिए दूसरे व्यक्तियों अथवा सम्बन्धियों को दे देती है। पाली, रहतू आदि नामों में यही भाव व्यजना है। कहीं-कहीं जन्मते ही बच्चे को दीर्घजीवी बनाने के लिए छितनी (उथली डलिया) में रखकर खींचते हैं। ऐसे बालकों को खचेरू, खदेरन, कढ़ेरू आदि नाम दिये जाते हैं। माताएँ प्रायः अपने बच्चे के जन्म तथा जीवन के लिए विविध प्रकार की मनौती मनाती हैं और इसी मनौती से शिशु के मन्नालाल, माना आदि नामकरण हो जाते हैं। इस प्रकार इस अन्वेषण में ये दश क्रियाएँ दश प्रथाओं की जननी तथा नाम बाहुल्य की उत्पादिका हैं। उनके विचार से यह प्रथाएँ बच्चे को अभयदान तथा जीवनदान प्रदान करती हैं।

इन रीतियों के अतिरिक्त कुछ भ्रममूलक उपपत्तियाँ भी जन-समाज में प्रचलित दिखलाई देती हैं, जिनके कारण बहुत से नामों का समावेश हो गया है। हिन्दू धर्म की यह विशेषता है कि वह प्रत्येक वस्तु में देवत्व की प्राण-प्रतिष्ठा कर लेता है और उसी भक्ति भावना से उसका साक्षात्कार करता है। प्राण-प्रतिष्ठा के पश्चात् उसके लिए अपवित्र घूरा घूरा नहीं रहता प्रत्युत् घूरा

भगवान् हो जाता है। अब उसकी अर्चना तथा वंदना इसी भावना से आरंभ होती है। उस समय वह घूरे को सर्वव्यापक भगवान् का प्रतीक अथवा प्रतिमा कल्पित कर लेता है। यह बात अन्य वस्तुओं के सम्बन्ध में भी घटित होती है। सन्तति की उत्पत्ति तथा आयु के सम्बन्ध में जितने उपचार यहाँ दृष्टिगोचर होते हैं वे इन चार वर्ग में विभक्त किये जा सकते हैं (१, वस्तु सम्बन्धी, (२) व्यक्ति सम्बन्धी, (३) स्थान सम्बन्धी, (४) और प्रथा सम्बन्धी। प्रथम उपचार में गंडा, झंडा, छितानी, झावा, यंत्र तंत्र, प्रसाद, भभूति, पुड़िया आदि वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है। द्वितीय में देवयोनि, साधु, वैरागी, जोगी भगत, ओझा, पीर फकीर, मुल्ला, आदि की गणना आती है। तृतीय में ओरी-छज्जा के तले, डोरा (मेड),तकिया, तखत-थान, दरगाह. बलिका, वेदी, मदार. मसान, नेड़, सत्ती चौरा आदि स्थान सम्मिलित हैं। चतुर्थ उपचार के अंतर्गत, अनेक प्रथाओं का विधान एवं अनुष्ठान किया जाता है। उपर्युक्त दस क्रियाओ के अतिरिक्त सिर का जन्मते ही मुड़वाना बलि चढ़ाना, ज्योति जगाना, साधु-सन्तों की सेवा या टहल करना आदि अनेक अन्य विधान भी दृष्टि-गोचर हो रहे हैं।

मुसलिम संसर्ग के कारण बहुत से विदेशी नाम इस प्रवृत्ति में दिखलाई देते हैं। अंधविश्वा-साविष्ट निम्नस्तर की हिन्दू जनता सान्त्वना एवं सन्तुष्टि के लिए मदार, गाजी, दरगाह, पीर, फकीर आदि अन्य विजातीय संस्कृति-मूलक मृतकों तथा समाधि-स्थानों को पूजने में संलग्न मालूम देती है।

इस प्रवृत्ति के नामो में यह विशेषता है कि प्रायः समस्त संग्रह विकृत रूपो से बना है। गौण प्रवृत्तियाँ भी इसके बृहत् समुच्चय को देखते हुए अत्यंत न्यून हैं। इन बातों से यह स्पष्ट विदित होता है कि निम्न कोटि को अशिक्षित जनता में अंधरूढ़ियों का प्रचार अधिक है। वैष्णव आदि धर्मों के सदृश अंधविश्वास की अविच्छिन्न तथा अविरल धारा देश के एक कोने से दूसरे कोने तक प्रवाहित हो रही है। पश्चिम का घसीटा पूर्व का घिसियावन के रूप में प्रकट हो जाता है। गोरखपुर आदि पूर्वी प्रांतों का कतवारू मेरठ आदि पश्चिमी देशो का घूरे ही हैं।[1] इस प्रवृत्ति में विश्वास के साथ श्रद्धा तथा भक्ति का सम्यक् समन्वय पाया जाता है।

---

[1] दक्षिण का कुप्पू (धूल) स्वामी तथा राजस्थान का कजोड़ी (कूड़ा कचरा) मल नामों में भी यही भावना काम कर रही है।

दार्शनिक प्रवृत्ति

(१) अध्यात्म विद्या—

(२) मनोविज्ञान—

(३) नैतिक गुण—

(४) शिष्टाचार सम्बन्धी गुण—

(५) सौंदर्यभावात्मक गुण—

पंद्रहवाँ प्रकरण

(१) अध्यात्म-विद्या[1]

१—गणना

क—क्रमिक गणना—

(१) नामों की संख्या—११६

(२) मूल शब्दों की संख्या—७६

(३) गौण शब्दों की संख्या—३८

ख—रचनात्मक गणना—

प्रवृत्ति	एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	योग
ब्रह्म	८	२६	४		३८
आत्मा		२०	६	१	२७
माया		६	२		११
लोक	११	१८	३		३२
जीवन	२	१८			२०
कर्म तथा फल	१	३	१	१	६
स्वर्ग	१	४	१		६
मुक्ति	१	५	३		६
	२४	१०३	२०	२	१४६

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द—

(१) ब्रह्म—अखंड, अखिल, अच्युत, अद्वैत, अनंत, अनादि, अविनाश, असीम, आत्मानंद, आत्माराम, ईश्वर, ओ३म्, केवल, चिदानंद, जीवधर, जीवेंद्र, नित्य, निरंजन, निराकार, निर्विकार, परमात्मा, प्रणव, प्रभु, ब्रह्म, मायाकांत, मायाधारी, मायापति, मायाराम, विभु, विश्वरूप, सच्चिदानंद, सर्वशक्तिमान्, सृष्टिनारायण, सोऽहम्, हंसनाथ, हंसराम।

(२) आत्मा—आत्म, आत्मा, कर्मेंद्र, जीव, हंस, हंसा, हंसू।

(३) माया—त्रिगुणा, ब्रह्मकला, माया, रामकला।

(४) लोक—खलकई, खलक, जग, जगई, जगत, जहान, त्रिभुवन, त्रिलोक, त्रिलोकी, दुनियाँ, दुनी, दुन्नी, दुन्नू, भवसागर, भूमण्डल, लुकई, लुक्की, लोक, लोका, विश्व, संसार।

(५) जीवन—जीवन, जीवा, हयात।

(६) कर्म तथा फल—कर्म, फल, फलई।

---

[1] किं कारणं ब्रह्म कुतः स्म जाता जीवाम केन क्व च सम्प्रतिष्ठाः।
अधिष्ठिताः केन सुखेतरेषु वर्तामहे ब्रह्मविदो व्यवस्थाम्॥
कालः स्वभावो नियतिर्यदृच्छा भूतानि योनिः पुरुष इतिचिन्त्यम्।
संयोग एषां न त्वात्मभावादात्माप्यनीशः सुखदुःखः हेतोः॥
(श्वेताश्वतर० १।१-२)

(७) स्वर्ग—देवलोक, देववास, बैकुंठ, हरिनिवास।

मुक्ति—दिव्यानंद, निर्वाण, परमारथ, मुक्ति, मोखा।

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ—

(१) विकृत शब्दों के शुद्ध रूप—

विकृत रूप	शुद्ध रूप
हंसा, हंसू	हंस
खलकई	खलक
जगई	जग
दुनी, दुन्नी, दुन्नू	दुनियाँ
लुकई, लुक्की, लोका	लोक
फलई	फल
परमारथ	परमार्थ
मोखा	मोक्ष

(२) विजातीय प्रभाव—

शब्द	भाषा	अर्थ
खलक	अरबी	सृष्टि, संसार
जहान	फारसी	जगत्
दुनियाँ	अरबी	संसार
हयात	अरबी	जीवन

ग—मूल शब्दों की निरुक्ति—

अद्वैत, ईश्वर[१], ब्रह्म (∠√वृंह्)—आरंभ में ही निर्गुण ब्रह्म के प्रकरण में ईश्वर के गुण एवं स्वरूप पर पर्याप्त प्रकाश डाला जा चुका है। यहाँ केवल उसके दार्शनिक रूप का ही विवेचन करना विधेय है। यही कारण है कि इस नाम सूची में परमात्मा के समस्त नामों का उल्लेख करना उचित नहीं समझा गया। आजकल दो सिद्धांत विशेष मान्य तथा प्रचलित हैं:—

(१) पूर्व परम्परागत वैदिक सिद्धांत जिसमें ईश्वर, जीव तथा प्रकृति की पृथक्-पृथक् सत्ता मानी गई है। तीनों अनादि हैं। ऋग्वेद[२] में लिखा है कि ईश्वर और जीव, दोनों मित्र प्रकृति रूपी वृक्ष पर बैठे हुए हैं। जीव उसके फलों को खाता है और ईश्वर उसका उपभोग नहीं करता है। इस वैदिक सिद्धांत के अनुसार ईश्वर, जीव तथा प्रकृति—इन तीन सत्ताओं को अनादि माना गया है—यही त्रैतवाद है। ईश्वर सृष्टि उत्पन्न करता है, पालता है और प्रलय करता है।[३] उसमें तीन विशेषता हैं:—

(१) सर्वव्यापकता।

---

[१] योग० समाधिपाद सूत्र २४

[२] ऋ० मं० १ सू० १६४ मं० २०

[३] जन्माद्यस्ययतः—वेदान्त० १-२

(२) सर्वज्ञता।

(३) सर्वशक्तिमत्ता।

वह जीव (आत्मा) और प्रकृति अर्थात् माया का अधिपति है। आत्मा जिस प्रकार शरीर का संचालन करती है उसी प्रकार वह संसार का संचालन करता है। इसीलिए उसे परमात्मा कहा गया है। निर्विकार, निराकार, सच्चिदानद, अविनाशी आदि उसके गुण हैं।[1] वह जगत् का निमित्त कारण है, प्रकृति से सृष्टि की रचना करता है। जीवों को उनके कर्मों का फल देता है। स्वसंवेद्य एवं अनिर्वचनीय ब्रह्म को कबीर ने जन बोली में "गूँगे का गुड" कहा है।

शंकर के मत से सर्वत्र केवल ब्रह्म ही ब्रह्म[2] है। वे जीव तथा प्रकृति का पृथक् अस्तित्व नहीं मानते। इसलिए वे उसे अद्वैत कहते हैं। वेदांत का ब्रह्म निर्गुण तथा निष्क्रिय बतलाया गया है। सृष्टि उत्पन्न करने के लिए उसे ईश्वर का रूप धारण करना पड़ता है। शङ्कर आत्मा को ही ब्रह्म कहते हैं।

आत्मा—परमात्मा की तरह आत्मा भी अनादि और अनन्त है। उसका लक्षण सुख, दुःख, राग, द्वेष, इच्छा, प्रयत्न बतलाया गया है।[3] ईश्वर के सदृश जीवात्मा में भी सत् तथा चित् गुण विद्यमान हैं। दोनों अनादि काल के साथी हैं। किन्तु प्रकृति का भोग करने से जीव बारंबार जन्म मरण के बंधन में पड़ता है। उसका आनन्द अल्प तथा अस्थायी होता है। ईश्वर के तुल्य उसके गुणों में आधिक्य एवं नित्यत्व नहीं पाया जाता। निरंतर गतिवान् रहने, प्राप्त करने और बंधन में पड़ने के कारण जीव को आत्मा (∠√अत्) कहा गया है। पंचभौतिक शरीर के जीवन, गति एवं संज्ञत्व का संचार करने से जीवात्मा कहलाता है। वह कर्म करने में स्वतंत्र किन्तु फल भोगने में परतंत्र है। यही उसके बंधन का हेतु है। इस बंधन से मुक्त होने पर ही स्वर्ग का आनन्द अनुभव करता है। जीव असंख्य हैं। इसके विपरीत शंकर के अद्वैतवाद सिद्धांत के अनुसार जीव, ब्रह्म, आत्मा, परमात्मा एक ही हैं। अविद्याजन्य माया से आत्मा और ब्रह्म में भेद प्रतीत होता है। इस अज्ञान के हटने से जीव अहं ब्रह्माऽस्मि का अनुभव करने लगता है। यही उनके विचारानुसार मुक्ति कहलाती है। शंकर स्वामी वैदिक त्रैतवाद को नहीं मानते। उनका कहना है कि ससार में नानारूपत्व माया के कारण दिखाई देता है। व्यक्ताव्यक्त जो कुछ है ब्रह्म ही ब्रह्म है।[4]

माया जन्य अविद्या से जीव अपने को ब्रह्म से भिन्न एवं बहुरूप देखता है। जब यह अपने वास्तविक रूप से परिचित हो जाता है तो सब बंधनों से मुक्त हो जाता है। मुक्ति केवल ज्ञान से ही सम्भव है। इस प्रकार शंकराचार्य ने मायावाद का आश्रय लेकर अद्वैतवाद को सिद्ध किया और

---

[1] एकस्त्वमात्मा पुरुषः पुराणः सत्यः स्वयंज्योतिरनंत आद्यः।
नित्योऽक्षरोऽजस्र सुखोनिरंजनः पूर्णोऽद्वयो मुक्त उपाधितोऽमृतम्॥
(भाग० पु० १०-१४-२३)

[2] अस्तितावन्नित्य······ब्रह्म। (शा० भा०)

[3] इच्छाद्वेष प्रयत्न सुख-दुःख ज्ञानान्यात्मनो लिङ्गम्
न्याय० अ० १ सू० १०

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनंदहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।
(गीता २-२३)

[4] सर्वं खल्विदं ब्रह्म—छा० ३-१४-१

ब्रह्म को निर्गुण तथा निष्क्रिय मानकर एक ईश्वर की कल्पना की जिसने अपनी मायासे सृष्टि रची। उनकी माया ईश्वर से कोई भिन्न पदार्थ नहीं है।

माया—कुछ दार्शनिकों का मत है कि माया ईश्वर की वह कल्पित शक्ति है जो उनके आदेशानुसार सब कार्य करती रहती है। वस्तुतः प्रकृति ही माया है।[1] सत रज तम की साम्यावस्था का नाम प्रकृति है[2] जो त्रिगुणात्मक रूप से सृष्टि रचना में उपादान कारण मानी गई है। सांख्य दर्शन में इसे प्रधान के नाम से अभिहित किया गया है। सृष्टि प्रकृति का व्यक्त रूप है। ईश्वर और जीव के सदृश यह भी अनादि मानी गई है। शंकर के अनुसार माया ब्रह्म की अविद्या जनित मिथ्या यवनिका अथवा आवरण है। केवल ब्रह्म ही सत्य है और सब असार तथा भ्रममात्र है। इसके लिए दो नाम ब्रह्मकला और रामकला भी प्रयुक्त हुए हैं जिनका आशय ईश्वर की शक्ति अथवा विभूति है। ये नाम सृष्टि रचना की ओर संकेत करते हैं।

जगत्—इसका अर्थ चलने वाला अर्थात् परिवर्तनशील है। यह त्रिगुणात्मक प्रकृति का व्यक्तरूप है।

त्रिभुवन, त्रिलोक, त्रिलोकी—भुवन तथा लोक शब्द जगत् के अर्थ में आते हैं। कोई कोई तीन भुवन और तीन लोक मानते हैं—आकाश, पाताल, मर्त्यलोक। कहीं-कहीं चौदह भुवन माने गये हैं। भू, भुव, स्व, मह, जन, तप, सत्य यह सात लोक ऊपर और अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल पृथ्वी के नीचे के लोक हैं।

भवसागर—भव = संसार। यहाँ संसार की उपमा समुद्र से दी गई है। रूपक अलंकार है।[3]

लोक—यह प्रवृत्ति विश्व-प्रेम का परिचय देती है। सृष्टि रचना के विषय में अनेक सिद्धांत प्रचलित हैं, उनमें कुछ पौराणिक, कुछ पांथिक तथा कुछ दार्शनिक हैं। इनमें से यहाँ पर केवल तीन दार्शनिक सिद्धांतों का संक्षिप्त वर्णन दिया जाता है :

१—आरम्भवाद—न्याय-वैशेषिक के अनुसार कल्प के आदि में ईश्वर के ईक्षण एवं जीवों के कर्मों के कारण विभिन्न प्रकार के अणु परमाणुओं का सम्मिलन होता है, जिससे नाना प्रकार के पदार्थों का निर्माण हो जाता है। जिस प्रकार तागों के ताना बाना से एक नया वस्त्र बन जाता है और अंत में उनका नाश हो जाता है, उसी प्रकार प्रत्येक कल्प में सृष्टि की उत्पत्ति तथा प्रलय होती रहती है।

(२) परिणामवाद—सांख्य के अनुसार प्रधान तथा मुख्य पुरुष से सृष्टि-सर्जन होता है। प्रधान अर्थात् प्रकृति अचेतन है और पुरुष अर्थात् आत्मा चेतन तथा अनन्त है। इन्हीं पुरुषों के कारण प्रकृति की साम्यावस्था में विकार उत्पन्न हो जाता है। इसके फलस्वरूप सृष्टि की उत्पत्ति होती है। इसमें कारण से कार्य होता है—यथा दूध से दही। प्रधान से (१) महत् या बुद्धि (२) अहंकार अथवा चित (३) पाँच तन्मात्राएँ (४) मन (५) पाँच ज्ञानेंद्रिय (६) पाँच कर्मेंद्रिय और (७) पंच तत्त्व की सर्जना हुई।

(३) विवर्तवाद—यह वेदांतियों का सिद्धांत है। शंकर स्वामी लिखते हैं कि यह दृश्यमान् जगत् केवल भ्रम है। इसकी कोई वस्तु सत्य नही है, जैसे अँधेरे में रज्जु सर्परूप दिखलाई देती

---

[1] मायांतु प्रकृतिं विद्यात्—श्वेताश्वतर उप० ४-१०

[2] सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः—सांख्य अ० १ सू० ६१

[3] अपार संसार समुद्रमध्ये निज्जमतो मे शरणं किमस्ति
गुरोकृपालोकृपया वदेतद् विश्वेशपादाम्बुजदीर्घ नौका। (शंकर)

है तथा मरुभूमि में मृग-तृष्णा जल-सम प्रतीत होता है। उसी प्रकार यह संसार है। "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या" यह वेदांतियों की उक्ति है।

कर्म—कर्म तीन प्रकार के माने गये हैं। (१) क्रियमाण अर्थात् वर्तमान कर्म। (२) संचित कर्म—अर्थात् एकत्रित कर्म जिनका फल आगे मिलनेवाला है। (३) प्रारब्ध कर्म—जिनका फल मिल रहा है।

मुक्ति—जीवात्मा जन्म-मरण के बन्धन से छूट परमात्मा के रूप में परमानन्द प्राप्त करता है, इसी को मुक्ति अथवा मोक्ष कहते हैं। शङ्कर के अनुसार मुक्ति वह अवस्था है जब आत्मा माया के बन्धन से मुक्त हो "अहं ब्रह्मास्मि" का अनुभव करने लगती है। उनके मतानुसार ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिल सकती है[1]। मुक्ति चार प्रकार की बताई गई—(१) सालोक्य। (२) सामीप्य। (३) सायुज्य और (४) सारूप्य।

स्वर्ग—यह मनुष्य के मस्तिष्क की विचित्र कल्पना है। स्वर्ग ऐसा स्थल माना गया है जहाँ दुःख का लेश भी न हो। भिन्न-भिन्न धर्मों में भिन्न भिन्न स्थानों को स्वर्ग कहते हैं। विष्णु का वैकुण्ठ, महेश का शिवलोक, ब्रह्मा का ब्रह्मलोक, राम का साकेत, कृष्ण का गोलोकादि स्वर्ग के नाम से प्रसिद्ध हैं। जन-साधारण अमरावती को स्वर्ग कहते हैं जहाँ अनेक प्रकार के देवता निवास करते हैं। इन्द्र स्वर्ग का राजा है जिसके नंदन वन में कल्पवृक्ष है। कामधेनु यहाँ की गाय है। उर्वशी, मेनकादि इन्द्र की अप्सरा हैं। वहाँ सब प्रकार का आनंद ही आनंद है जिसके भोगने के लिए मुक्त जीव मृत्यु के पश्चात् वहाँ जाते हैं।

घा—गौण शब्द—

१—वर्गात्मक—राय, सिंह

२—भक्तिपरक—आनंद, इंद्र, किशोर, कुमार, चंद्र, चरण, जाहिर, जीत, दत्त, दयाल, दास, दीन, देव, नंदन, नाथ, नारायण, पाल, प्रकाश, प्रताप, प्रसाद, प्रेम, फल, बक्स, बहादुर, बोध, भूषण, मल, मुनि, मोहन, राम, लाल, वल्लभ, वीर, शरण, सहाय, सुमिरन, स्वरूप।

३—विशेष नामों की व्याख्या—

आत्मानंद—आत्मा का प्रयोग जीव तथा ब्रह्म दोनों के लिए होता है। शरीरस्थ आत्मा को जीव तथा संसार में व्याप्त आत्मा को ब्रह्म संज्ञा दी गई है। प्रथम इस लघुपिंड का संचालन करता है, द्वितीय ब्रह्मांड का। आत्मा के ये दो अर्थ लेने से इस नाम से द्वैतवाद का सिद्धांत प्रतिपादित होता है। अतः आत्मानंद का आशय हुआ जीवात्मा अथवा परमात्मा में लीन होने का आनंद। आत्मा को भी परमात्मा माननेवाले अद्वैतवादी दोनों में कोई भेद नहीं देखते। केवल माया के आवरण के कारण जीव अपने को ब्रह्म से भिन्न समझता है। इस यवनिका के हट जाने से यह द्वित्व भाव भी लुप्त हो जाता है। इसलिए उनके अनुसार आत्मा परमात्मा का बोधक है। इससे शंकर का अद्वैतपक्ष ध्वनित होता है।

आत्माराम[2]—इस नाम का कई प्रकार से समास विग्रह हो सकता है। (१) आत्मा में रमण करनेवाला अर्थात् ब्रह्म इससे द्वैतवाद का पक्ष सिद्ध होता है। (२) विश्व में रमण करनेवाली आत्मा अर्थात् व्यापक विश्वात्मा। यह आत्मा ही सर्वत्र व्याप्त है। इससे अद्वैतवाद का समर्थन होता है। (३) आत्मा के लिए उल्लिखित आत्मानंद देखिए।

---

[1] ऋते ज्ञानान्नमुक्तिः।

[2] आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रंथा अप्युरुक्रमे।
कुर्वन्त्यहैतुकीं भक्तिमित्थं भूतगुणो हरिः॥

कर्मेंद्र नारायण—इससे दो भावनाएँ उद्भासित होती हैं (१) जीव कर्म का स्वामी है अर्थात् वह कर्म करने में स्वतंत्र है। जो चाहे सो करे जो चाहे न करे। (२) कर्मफल का स्वामी नारायण है। जीव को कर्म का फल ईश्वर देता है।

भूमंडल दास—इस नाम में लोक सेवा की कैसी भव्य उद्भावना है! जन साधारण का भगवान तक पहुँचना दुष्कर है। उसके लिए संसार सेवा ही सरल मार्ग है। हरि न सही हरिजन ही सही। हम उसकी सृष्टि को प्रेम करें, जीवों को कष्ट न पहुचाएँ, सब के कल्याण में अपना कल्याण समझें—यहीं परमेश्वर की प्राप्ति के सुलभ साधन हैं। भूमंडल दास सत्य ही विश्व प्रेम का व्यक्तीकरण करता है। यह समस्त नाम परमात्मा का वाचक भी हो सकता है। भूमंडल है दास जिसका अर्थात् ईश्वर।

विश्वरूप—परमात्मा के दो रूपों की चर्चा इन नामों में स्पष्ट रूप से पाई जाती है। जग रूप, विश्वश्रवा आदि नाम उसके विराट रूप को व्यक्त करते हैं। निराकार स्वरूप, विभु आदि उसके अव्यक्त रूप की भावनावाले नाम हैं।

विराट पुरुष के अनेक रूपों में से विश्वरूप[1], अनंतरूप[2], पूर्णरूप[3], पर (परम) रूप[4], मुख्य

---

[1] विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखोविश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैद्यावाभूमी जनयत् देव एकः॥
(ऋग्वेद ८-३-१६-३)

रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं
महाबाहो बहुबाहूरुपादम्।
बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं
दृष्ट्वालोकः प्रव्यथितास्तथाहम्॥२३॥
(भ० गीता अ० ११)

सहस्र शीर्षः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

[2] पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः।
नाना विधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च॥५॥
(गीता अ० ११)

It (jail) was Vasudeva who surrounded me. I walked under the branches of the tree in front of my cell but it was not the tree, I knew it was Vasudeva, it was Sri Krishna whom I saw standing there and holding over me his shade. I looked at the bars of my cell, the very grating that did duty for a door and again I saw Vasudeva, It was Narayan who was guarding and standing sentry over me. Or I lay on the coarse blankets that were given me for a couch and felt the arms of Sri Krishna around me the arms of my Friend and Lover. I looked at the prisoners in the jail, the thieves, the murderers, the swindlers, and as I looked at them I saw Vasudeva, it was Narayana whom I found in these darkened souls and misused bodies.

(Aurovindo,—Utterpara Speech)

खं वायुमग्निं सलिलं महीं च
ज्योतींषि सत्वानि दिशोद्रुमादीन्
सरित्समुद्रांश्च हरेः शरीरं
यत्किञ्च भूतं प्रणमेदनन्यः॥
(श्रीमद्भा० ११।२।४१)

हैं। प्रथम में रूप की विचित्रता का, द्वितीय में संख्या की अनंतता का, तृतीय में उपमा की पूर्णता का एवं चतुर्थ में संस्थान (आकृति) की विशालता का संकेत है।

विराट पुरुष के अंग

[३] सत्यलोक—सिर
तपोलोक—ललाट
जनलोक—मुख
महर्लोक—ग्रीवा
स्वर्लोक—उरः स्थल
नभस्तल—नाभि
महीतल—जघन प्रदेश
अतल-वितल—उरू
सुतल—जानु
अधर्म—पीठ
धर्म—स्तन
प्रजापति-मित्रवरुण—गुह्येंद्रियाँ
इंद्र प्रभृति देवता—बाहु
दिशाएँ—कान
शब्द—श्रवणशक्ति
अश्विनीकुमार—नासारंध्र
गंध—घ्राणेंद्रिय
प्रज्वलित अग्नि—जठराग्नि
अंतरिक्ष—नेत्रगोलक
सूर्य—चक्षु
दिनरात—पलक
ब्रह्मलोक—भ्रू विलास
जलदेव—तालु
रस—जीभ
वेद—मस्तक
यमराज—डाढ़ें
स्नेह—दांत
अनंत सृष्टि—चितवन
लज्जा—ऊपरी ओठ
लोभ—अधर (नीचे का ओठ)
मोहनी माया—मुसकान
समुद्र—कोख
पर्वत—अस्थियाँ
नदियाँ—नाडी जाल
वृक्ष—रोम
वायु—प्राण
(आयुरूप) काल—गति
(गुण-कर्म-प्रवाह) संसार—कर्म
मेघ—केश
संध्याएँ—वस्त्र
अव्यक्त (प्रधान)—हृदय
चन्द्रमा—मन
महत्त्व—चित्त
अहंकारात्मकरुद्रदेव—अंतःकरण
हाथी, ऊँट, घोड़ा, खच्चर—नख
मृगादिसवपशु—कटि
पक्षी—शिल्प चातुर्य
स्वायंभुव मनु—बुद्धि
मनुष्य—निवास स्थान
गंधर्व, विद्याधर, अप्सरा—स्वर
प्रह्लाद—स्मरणशक्ति
चतुर्वर्ण—मुख, भुजा, उर, चरण
यज्ञ—कर्म

[४] इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम्।
मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि ॥७॥
पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा।
बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत ॥६॥
पश्यामि देवांस्तव देव देहे
सर्वांस्तथा भूतविशेषसङ्घान्।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थ
मृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान् ॥१५॥
(गीता अ० ११)

सोऽहम्—इस नाम से आत्मा तथा परमात्मा दोनों का बोध होता है। 'सः' ईश्वर के लिए तथा 'अहम्' जीव के लिए प्रयुक्त हुए हैं। वेदान्तियों का कहना है कि मायाविष्ट जीव को जब अपना वास्तविक स्वरूप ज्ञात हो जाता है तो वह अपने को ब्रह्म समझता है। यह नाम सोऽहमस्मि-वाक्य का अंश है और उसी सिद्धावस्था की ओर निर्देश करता है। इसका अभिप्राय है मैं वही हूँ अर्थात् मैं ही ब्रह्म हूँ। अजपाजप या हंस मंत्र में भी सोऽहम् का अनुभव होता है। श्वास द्वारा हं तथा उच्छ्वास के संग सों निकलता है। इस नाम में वेदान्त का सार सन्निहित है।

४—समीक्षण

प्रस्तुत नामावली के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि अध्यात्म विद्या अत्यत क्लिष्ट होने पर भी कुछ न कुछ मनुष्य इसकी ओर अवश्य प्रवृत्त रहते हैं। यह भी उनके निरंतर चिंतन का विषय रहा है। ब्रह्म के वही नाम निर्गुण ईश्वर प्रवृत्ति से यहाँ लिए गये हैं, जिनमें कुछ दार्शनिकता के भाव विद्यमान हैं। इन नामों पर उस प्रवृत्ति में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। यहाँ पर इस विशेषता की ओर भी संकेत कर देना उचित होगा कि अखंडानंद, अखिलानंद, अच्युतानंद तथा नित्यानंद ये पूरे पूरे नाम भी ईश्वर के वाचक हैं। पद के पूर्वांश अखंड, अखिल, अच्युत नित्य भी ईश्वर के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। अतः ये ही शब्द मूल प्रवृत्ति में रखे गये हैं। इसी प्रकार केवलानंद आदि नामों में भी अर्द्ध तथा सम्पूर्ण नाम मूल प्रवृत्ति के अन्तर्गत आ सकते हैं। चिदानंद से दो तथा सच्चिदानंद से ईश्वर के तीन गुण व्यक्त होते हैं। परमात्मा, निर्विकारशरण, आत्माराम, जीववर, हंस नाथ तथा मायापति आदि नाम त्रैतवाद के पोषक हैं। उनसे ईश्वर, जीव तथा प्रकृति-इन तीन भिन्न पदार्थों का बोध होता है। अद्वैतवाद के पक्ष को अद्वैत-कुमार, आत्माराम, ब्रह्मकला प्रसाद, रामकला दीन, सोऽहम् आदि नाम प्रतिपादित करते हैं। मूल प्रवृत्ति की व्याख्या में इन पर विशेष प्रकाश डाला गया है। इन नामो से ईश्वर के गुणो का परिचय पर्याप्त मिलता है; परन्तु आत्मा अथवा जीव का बहुत सूक्ष्म परिचय दिया गया है। उसमें बोध, हर्ष, प्रकाश तथा वीरत्व गुण पाये जाते हैं। वह कर्मों का स्वामी है, किन्तु ईश्वर के अधीन है। कई गुणों की समता होने से उसे हंस भी कहा गया है। माया ईश्वर की त्रिगुणात्मक शक्ति है जो उसके अधीन रहती है। जगत् प्रकृति का व्यक्त रूप है। लोक अथवा भुवन-संबंधी नाम मनुष्य के विश्व-बंधुत्व का परिचय दे रहे हैं। मनुष्य जीवन में कर्म करता है। सुकर्मों का फल दिव्यानंद (स्वर्ग सुख) अथवा मुक्ति है। अग्नि मित्र, अनिलकुमार, आकाशचन्द्र, सलिलकुमार, पृथ्वी पति आदि नामों में पंच महाभूतों का समावेश है। रेणुकण से लेकर नक्षत्र मण्डल तक उसकी सृष्टि के अंग हैं जो अपना-अपना कार्य संचालन कर रहे हैं।

(२) मनोविज्ञान

गणना—

क—क्रमिक गणना—

(१) नामों की संख्या—३८८

(२) मूल शब्दों की संख्या—१५७

(३) गौण शब्दों की संख्या—३३

ख—रचनात्मक गणना —

	प्रवृत्ति	एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	योग
अंतःकरण चतुष्टय—	मन	१	३			४
	चित्त		२			२
	बुद्धि	२	४	१		७
	अहंकार		२			२
पंचतन्मात्रा—	रूप	३	१३	१		१७
	शब्द		६	२		८
	रस		१			१
	गंध	१	१			२
पंचज्ञानेन्द्रियाँ—	नेत्र	२	१४	३		२०
	योग सम्बन्धी		६			६
	ध्यान तथा स्मृति	२	१२	१		१५
	विचार तथा अनुभव		२	१		३
मनोयोग—	आनन्द	१२	५५	११	१	७९
	आशा		४			४
	आश्चर्य	१	३			४
	इच्छा	४	२०	१	१	२६
	गर्व	३	८	१		१२
	ग्लानि तथा लज्जा	१		१		२
	चिंता	१	५			६
	ज्ञान	४	२६	४		३४
	प्रेम	९	६०	२०	१	९०
	भय		१			१
	लोभ		१			१
	वैराग्य		१			१
	शांति	१	१०			११
	शोक	२	१			३
	श्रद्धा भक्ति तथा विश्वास		५	१		६
	साहस	१	२			३
रस—	श्रृंगार रस	१	३			४
	हास्य रस		१			१
	वीर रस	१	८	३		१२
	शांत रस		१			१
		५३	२८१	५१	३	३८८

२—विश्लेषण :—

क—मूल शब्द—

(१) अंतःकरण चतुष्टय—

मन—मनई, मनुआ, मनो (यह तीनो मन के विकृत रूप हैं)।

चित्त—चित, चित्तन (चित्त)

बुद्धि—धी, बुद्धि, मेधा।

अहंकार—माम।

(२) पंचतन्मात्रा—

रूप—रुपई, रूप, रूपी, सूरत, स्वरूप (रूप के विकृत शब्द-रुपई, रूपी)।

शब्द—शब्द, शब्दल (शब्द)।

रस—रसमय।

गंध—महक, सुगंध।

(३) पंचज्ञानेन्द्रियाँ—

नेत्र—अच्छ (अक्षि), दृग, नयन, नेत्र, नैना (नेत्र), लोचन।

योग—जोग (योग), जोग-ध्यान, योग।

ध्यान तथा स्मृति—खयाली (ख्याल), खियाल (ख्याल), चिति, ध्यान, ध्यानी, याद, लगन, सुरति, सुरती (सुरति), स्मृति।

विचार—विचार।

अनुभव—अनुभव।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति—

अंतःकरण चतुष्टय—

मन—

मनई, मनुआ—मन अन्तःकरण की वह वृत्ति है जिससे मनुष्यों में संकल्प-विकल्प, इच्छा, प्रयत्न, वेदना, बोध, विचार आदि उत्पन्न होते हैं। इसका स्थान हृदयाकाश है। यह पंचज्ञानेन्द्रियों के द्वारा ज्ञान प्राप्त करता है और पंचकर्मेन्द्रियों से कार्य सम्पादन कराता है। जाग्रत तथा स्वप्नावस्था में कार्यों में संलग्न रहता है किन्तु सुषुप्ति में वह निष्क्रिय हो जाता है। न्यायदर्शन[1] के अनुसार मन वह है जिससे एक ही काल में दो पदार्थों का ज्ञान ग्रहण नहीं होता।

चित्त—

चित्त, चित्तन—चित्त अंतःकरण चतुष्टय में से एक वृत्ति है। इसके दो भाग होते हैं—प्रथम भाग मनोवेग उत्पन्न करता है तथा द्वितीय भाग स्मृति, वासना और संस्कार का स्थान है।

बुद्धि—

चित्ति, धी, बुद्धि, मेधा—बुद्धि दो प्रकार की होती है। (१) तार्किक बुद्धि—तर्क द्वारा सत्यासत्य का विवेचन करती है और (२) मेधावी बुद्धि—तर्क द्वारा निश्चित सत्य पर श्रद्धा या विश्वास उत्पन्न कराती है।

अहंकार—

माम—अहंकार समष्टि में से व्यष्टि का निर्माण करता है। अपनत्व की भावना इसकी सत्ता से ही उद्भूत होती है। यह व्यक्तित्व ही जगत की सर्जना तथा स्थिरता का मूल हेतु है।

पंचतन्मात्रा—

रूप, रस, गंध, शब्द तथा स्पर्श ये पंचतन्मात्राएँ कहलाती हैं। इनका उद्भव अहंकार से होता है और इनसे पंचभूतों का आविर्भाव हुआ है। पृथ्वी का मुख्य गुण गंध, जल का रस, अग्नि

---

[1] **युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसोलिङ्गम्।**
न्याय अ० १ आ० १ सूत्र १६

का रूप, आकाश का शब्द तथा वायु का स्पर्श माना गया है। ये गुण पंचज्ञानेन्द्रिय द्वारा ग्रहण किये जाते हैं। नेत्र से रूप, जिह्वा से रस, नासिका से गंध, श्रोत से शब्द तथा त्वचा से स्पर्श का बोध होता है।

१—रूप—

रुपई, रूप, रूपी, सूरत, स्वरूप—रूप से अभिप्राय मनुष्य की वाह्याकृति तथा सौन्दर्य से होता है।

शब्द—

शब्द, शब्दल—शब्द वह सार्थक ध्वनि है जिससे किसी पदार्थ या भाव का बोध होता है। संत सम्प्रदाय में वह ईश्वर का वाचक भी है। कभी-कभी अनहद शब्द के अर्थ में भी लिया जाता है। महाभाष्य में शब्द का यह लक्षण दिया है— कानों से प्राप्त, बुद्धि से ग्राह्य और प्रयोग से प्रकाशित होनेवाला तथा आकाश में स्थित रहनेवाला शब्द कहलाता है।[1]

रस—

रस—रस उस आनंद को कहते हैं जो काव्य पढ़ने या नाटक देखने से प्राप्त होता है। (१) साहित्य में नौ प्रकार के रस—शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, अद्भुत, वीभत्स और शान्त हैं (२) किसी चीज के खाने का स्वाद जो ६ प्रकार का होता है यथा—मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, और कषाय।

गंध—

महक, सुगंध—घ्राणेंद्रिय द्वारा गृहीत गुण का नाम गंध है।

पंच ज्ञानेन्द्रिय—

अच्छ, दृग, नयन, नेत, नेत्र, नैना, लोचन—पंच ज्ञानेन्द्रियों के योग से मन प्रकृति के वाह्य ज्ञान को प्राप्त करता है। इनमें नेत्र का स्थान बहुत ऊँचा है। नेत्रों पर ही अधिक नाम प्रचलित हैं क्योंकि उनके द्वारा इस दृश्य जगत् का बोध होता है। इन नामों से नामधारी के दीर्घायतन तथा सुन्दर लोचनों की ओर भी संकेत होता है।

योग—पतञ्जलि मुनि ने योग दर्शन में चित्त वृत्ति निरोध[2] को योग कहा है। यह ८ प्रकार का बतलाया गया है। यम, नियम तथा आसन शरीर नियंत्रण के लिए; प्राणायाम तथा प्रत्याहार मन दमन के लिये और धारणा, ध्यान तथा समाधि आत्मा का परमात्मा से मिलने के लिए होते हैं। इसे मुक्ति का साधन भी कहा गया है।

ध्यान—अष्टांग योग के अंतर्गत ध्यान सप्तम अंग है। प्रत्याहार तथा धारणा द्वारा केन्द्रित एवं एकत्रित शक्ति को आत्मा में लगाने का नाम ध्यान है। कपिल ने सांख्य दर्शन[3] में लिखा है मन को निर्विषय बनाने से आत्मा की वहिर्मुखी वृत्ति बंद होकर अंतर्मुखी वृत्ति स्वतः जाग्रत हो जाती है यही ध्यान है। योग दर्शन[4] में मन का निर्विषय करना ही ध्यान कहा गया है।

स्मृति—शिक्षा-उपदेश-अध्ययनादि द्वारा संचित ज्ञान को स्मृति[5] कहते हैं। यह ज्ञान चित्त कोष में संगृहीत होता रहता है।

---

[1] श्रोत्रोपलब्धिर्बुद्धिनिर्ग्राह्यः प्रयोगेणाऽभिज्वलित आकाशदेशः शब्दः।
शब्दगुणमाकाशम्। (महाभाष्य)।

[2] योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः। योग० पा० १—२

[3] रागोपहतिर्ध्यानम्। सांख्य० ३--३०।

[4] ध्यानं निर्विषयं मनः (योग दर्शन)

[5] संस्कारमात्र जन्यं ज्ञानं स्मृतिः। (तर्क संग्रह)

सुरति—इसका अर्थ है ईश्वरानुग्रह की स्मृति, लगन, स्मरण इत्यादि। श्री सम्पूर्णानंद इसको स्रोत का विकृत रूप मानकर चित्तवृत्ति का प्रवाह अर्थ में लेते हैं। गुलाल ने मन को ही सुरति माना है।[1] डॉ० बड़थ्वाल[2] ने इसको संतों की उलटी चाल के अर्थ में स्मृति से निकाला है। राधा स्वामी सम्प्रदायवाले इसे जीवात्मा या परमात्मा के अर्थ में ग्रहण करते हैं। सुरति या सुरत प्रेम (सुरत या रति) का व्यंजक भी हो सकता है।

विचार—संकल्प-विकल्पादि मानसिक प्रक्रियाएँ विचार कहलाती हैं।

अनुभव—स्मृति से भिन्न ज्ञान को अनुभव[3] कहते हैं।

ग—गौण शब्द

१—वर्गात्मक—राय, सिंह।

२—(अ) सम्मानार्थक—आदरसूचक— बाबू

३—भक्तिपरक—अंबर, आनंद, किशोर, कुमार, चंद, चंद्र, दत्त, दयाल, दास, नारायण, पाल, प्रकास, प्रसाद, फेर, बहल, बहादुर, बोध, बोधन, भद्र, मणि, मल, मोद, मोहन, राज, राम, लाल, वल्लभ, विजय, वीर, शरण, सहाय, सुख, स्वरूप।

मनोवेग[4]

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द

आनंद—अहलाद, आनंद, आमोद, उल्लास, खुशी, चित्त वहल, चैन, चैना, प्रमोद, प्रसन्न, मगन, मगनू, मनफूल, मनमोद, मोद, मोदी, विनोद, विनोदी, शर्म, शर्मधर, शादी, हरक, हरकुआ, हरख, हरखू, हरसी, हुलसन, हुलास, हुलासी, हृषिभू—

आशा—आश, आसा, उम्मेद,

आश्चर्य—अचंभे, अचरज, आश्चर्य

इच्छा—अंछा, अभिलाख, अभिलाष, अभिलाषी, अरमान, इंछा, इच्छा, गरज, गर्जन, गजूं, तिरखा, तृषा, मन कामना, मनोरथ, रुचि, ललक, ललका, ललकू, हिंछा।

गर्व—अभिमान, गुमान, गुमानी, घमडी, दरब, दर्प

---

[1] भीखा यही सुरति मन जानो।

[2] Nirgur school of Hindi Poetry (P. 294)

[3] सर्व व्यवहार हेतुर्ज्ञानं बुद्धिः। साद्विविधा स्मृतिरनुभवश्च। संस्कार मात्र जन्यज्ञानं स्मृतिः। तद्भिन्नं ज्ञानमनुभवः। (तर्क संग्रह)

[4] मानव हृदय भावों का भण्डार है। भावुक अंतःकरण में जलतरंगों के तुल्य ये मनोभाव क्षणे क्षणे उदय-विलय होते रहते हैं। प्रत्येक प्रवृत्ति की पृष्ठभूमि में कोई न कोई भाव विद्यमान रहता है। यही मनोवेग मनुष्य की समस्त कार्य-प्रणाली का संचालन किया करते हैं। यही उसके सुख दुख के साथी होते हैं। विविध विषयों के सम्पर्क में आने से अभिनव अनुभूतियों का आविर्भाव होता रहता है जिन्हें मनोवेग या भाव कहते हैं। प्रेमादि प्रेष्य तथा भयादि अप्रेष्य दोनों ही प्रकार के मनोविकार इस संकलन में पाये जाते हैं। इन मनोभावों में आनन्द तथा प्रेम अपना विशेष स्थान रखते दिखलाई देते हैं। जीवन के लिए ये दोनों ही अत्यन्त अपेक्षित एवं आवश्यक हैं। एक जीवन को जीने योग्य बनाता है, द्वितीय उसे सरसता देता है। दोनों ही स्फूर्ति, शक्ति, सुख एवं शांति के दाता हैं।

ग्लानि तथा लज्जा—छोभ, लज्जू

चिंता—औसेरी, कुलफत, चिंता, सोचन

ज्ञान—ज्ञान, ज्ञानी, प्रबोध, बोध, बोधन, बोधी बोधे, सुबोध, होश।

प्रेम—अनुराग, इश्क, उलफत, नेह, पिम्मा, पिरूआ, पेम, पेमा, प्यार, प्रीति, प्रेम, प्रेमी, मुहब्बत, राग, लगन, सन्हैया, स्नेह, स्नेही, हुब, हुबई, हुब्ब, हुब्बा, हेत, हेतम, हेता।

भय—भय।

लोभ—लोभ।

वैराग—वैराग।

शांति—शम, शमी, शांति।

शोक—कलकू, खेदन, खेदू।

श्रद्धा भक्ति तथा विश्वास—भक्ति, विश्वास, श्रद्धा, सरधू।

साहस—हौसिला, हौसिले।

नव रस

शृंगार रस—रस राज, शृंगार, सिंगार, सिंगारु।

हास्य रस—हास।

वीर रस—दानवीर, धर्मवीर, दयावीर, युद्धवीर, वीर।

शांत रस—शांत।

१—विकृत शब्दों के शुद्ध रूप और अर्थ

विकृत या विकसित रूप	तत्सम रूप	अर्थ
अहलाद	आह्लाद	हर्ष
चैना	चैन	सुख, आनंद
मगनू	मगन	प्रसन्न
मोदी	मोद	प्रसन्नता
विनोदी	विनोद	आनंद
हरक, हरकुआ, हरख, हरखी	हर्ष	,,
हुलसन, हुलसी	हुलास	,,
आश	आशा	आशा
अंछा	इच्छा	इच्छा
अभिलाख, अभिलाष, अभिलाषी	अभिलाषा	इच्छा
इंछा	इच्छा	,,
गर्जन, गरजू	गरज	,,
तिरखा	तृषा	,,
ललका, ललकू	ललक	प्रवल इच्छा
हिंछा	इच्छा	इच्छा
दरब	दर्प	घमंड
लज्जू	लज्जा	शर्म
औसेरी	औसेर	चिंता
सोचन	सोच	,,
बोधन, बोधी, बोधे	बोध	ज्ञान

नेह	स्नेह	प्रेम
पिम्मा, पेम, पेमा	प्रेम	,,
पिरुआ	प्यार	,,
सन्हैया	स्नेह	,,
हेत, हेतम, हेता	हेतु	अनुराग
कलकू	कलक	शोक
खेदन, खेदू	खेद	,,
सरधू	श्रद्धा	बड़ों के प्रति पूज्य भाव
सिंगार, सिंगारू	श्रृंगार	श्रृंगार रस
हुबई, हुब्बा	हुब	प्रेम

२—विजातीय प्रभाव

शब्द	अर्थ
खुशी (फा०)	आनंद
शादी (फा०)	,,
उम्मेद (फा०)	आशा
अरमान (तुरकी)	इच्छा
गरज (अरबी)	,,
गुमान (फा०)	घमंड
कुलफत (अ०)	मानसिक चिंता
होश (फ०)	ज्ञान, चेतना
इश्क (अ०)	प्यार
उलफत ,,	,,
मुहब्बत ,,	,,
हुब ,,	,,
हौसला ,,	साहस
हिम्मत ,,	,,
कलकू ,,	शोक

ग—मूल शब्दों की निरुक्ति—

आनंद—अभीप्सित वस्तु की प्राप्ति, कार्य की सिद्धि अथवा इच्छा पूर्ति से जो सुख मिलता है उसे आनंद कहते हैं।

आशा—किसी पदार्थ के मिलने की इच्छा अथवा किसी कार्य-सिद्धि की कामना को आशा कहते हैं।

आश्चर्य—यह अद्भुत रस का स्थायी भाव है। किसी असाधारण वस्तु या व्यक्ति असम्भावित कार्य या व्यापार अथवा लोकोत्तर दृश्य को देखकर हृदय में एक विशेष प्रकार का कौतूहल होता है जिसे आश्चर्य भाव कहते हैं।

इच्छा—हृदय की वह वृत्ति है जो किसी अभाव को प्रकट करती है।

उल्लास, मनफूल, शर्म—आनंद।

गर्व—रूप, गुण, कुलादि में अन्य से अपने को श्रेष्ठ समझना गर्व कहलाता है।

ग्लानि, लज्जा—वह क्लेश है जो अपनी त्रुटियों के कारण अपने मन में होता है। अपने विषय में दूसरों की बुरी भावना होने की आशंका से मन में जो संकोच होता है उसे लज्जा कहते हैं।

चिंता—इष्ट की अप्राप्ति या अनिष्ट की प्राप्ति के कारण जो विकार होता है उसे चिंता कहते हैं।

ज्ञान—मन की वह वृत्ति जो किसी वस्तु, बात या व्यापार के तथ्य तक पहुँचती है अथवा उसके सत्य स्वरूप का निर्णय करती है ज्ञान या बोध कहलाती है।

प्रेम—यह श्रृंगार रस का स्थायी भाव है। किसी वस्तु या व्यक्ति विशिष्ट के प्रति विशेष आकर्षण को प्रेम कहते हैं।

भय—किसी आपत्ति के आगमन की आशंका से जो मनोविकार होता है उसे भय कहते हैं। यह भयानक रस का स्थायी भाव है।

राग—प्रेम, अनुराग, आसक्ति।

लोभ—मन की वह वासना है जिसमें किसी वस्तु के प्राप्त करने की तीव्र उत्कंठा निहित रहती है।

वैराग्य—वैराग्य या विरक्ति चित्त की वह वृत्ति है जिससे सासारिक विषय वासनाओं तथा प्रपञ्चों से मन हटाकर एकांत में ईश्वर भजन में अनुरक्त होते हैं।

शम, शांति—शांति वह संतोषात्मक भावना है जिससे मन स्थिर तथा कामना रहित हो सुख का अनुभव करता है।

शोक—वह मनोविकार है जो इष्ट के नष्ट होने से या अनिष्ट की प्राप्ति से होता है। यह करुण रस का स्थायी भाव है।

श्रद्धा, भक्ति, विश्वास—किसी गुण-विशिष्ट के कारण किसी के प्रति पूज्य भावना जाग्रत हो जाती है उसे श्रद्धा कहते हैं, रागमयी श्रद्धा ही भक्ति कहलाती है, किसी के प्रति मन का दृढ़ निश्चय विश्वास है।

साहस—मन की वह वृत्ति है जिससे किसी पराक्रम करने अथवा संकट का सामना करने की शक्ति प्राप्त होती है।

हृषिभू—आनंददाता।

रस—साहित्यिक आनंद को रस कहते हैं।[1] यह नव प्रकार का होता है श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, शान्त।

श्रृंगार रस—इसमें स्त्री-पुरुष के पवित्र प्रेम का वर्णन होता है। इसे रसराज भी कहते हैं। इसके दो भेद संयोग तथा विप्रलम्भ होते हैं। श्रृंगार का स्थायी भाव रति या प्रेम है।

हास्यरस—किसी के अनोखेपन से उत्पन्न विनोद का भाव हास कहलाता है जो हास्य रस का स्थायी भाव है।

वीर रस—साहित्य का वह रस जिससे वीरता, उत्साह आदि की पुष्टि होती है। वीरों के अनुसार यह भी कई प्रकार का होता है। इसका स्थायी भाव उत्साह है। युद्धवीर में शत्रुनाश का, दया वीर में दया-भाजन के संकट मोचन अथवा सहायता का, दानवीर में त्याग का तथा धर्म वीर में पाप-विनाश एवं धर्म स्थापना का उत्साह होता है।

---

[1] वाक्यं रसात्मकं काव्यम्, (साहित्य दर्पण ३)

शांत रस—असार संसार की विनश्वर वस्तुओं से विरत या उदासीन होने से तथा ईश्वराधना में दत्त चित्त होने से अपूर्व शांति प्राप्त होती है जिससे शान्त रस की निष्पत्ति होती है। इसका स्थायी भाव निर्वेद[1] है।

ग—गौण शब्द

(१) **वर्गात्मक**—राय, सिंह, सिनहा।

(२) **सम्मानार्थक**—(अ) **आदरसूचक**—बाबू।

(आ) **उपाधिसूचक**—आचार्य।

(३) **भक्तिपरक**—आनंद, करण, कांत, किशोर, कुमार, गिरि, चंद, चंद्र, चरण, जीवन, दत्त, दयाल, दास, दीन, देव, नंद, नंदन, नाथ, नारायण, निर्देश, निधि, नीति, पति, पाल, प्रकाश, प्रताप, प्रसाद, प्रिय, प्रेम, बहादुर, भिक्षु, भूषण, मणि, मल, मनोहर, मित्र, रत्न, रमण, राम, रुचि, रूप, लाल, वन, वर्धन, वल्लभ, वीर, शरण, शेखर, सहाय, सुंदर, सुख, सुमिरन, सेवक, स्नेही, स्वरूप।

विशेष नामों की व्याख्या।

आशा—इच्छा।

मानव अंतःकरण में दो ज्योतियाँ जगमगाती रहती हैं, एक का नाम है आशा जो जीवन को आदि से अंत तक संकटों में—संघर्षों में अपनी अमर आभा से नितराम आलोकित करती रहती है। यह प्राणों की चिरसंगिनी है। प्राणों के न रहने से आशा नहीं रहती और आशा के चले जाने पर प्राण भी निष्प्राण होने लगते हैं। प्राणों के लिए वह संजीवनी बूटी है। द्वितीय ज्योति इच्छा है जो बहुधा सहस्रधा किरणवती हो मनुष्य को कर्मण्य एवं शर्मण्य बनाती है। आशा और अभिलाषा जीवन को जीवंत बनाने में सहायता देती हैं। आशा अभिलाषाओं के अनुबंध को एक सूत्र में ग्रंथन करती है।

४—समीक्षण

इसके अंतर्गत अन्तःकरण चतुष्टय, पंचम ज्ञानेन्द्रिय संकल्प विकल्पादि मन की क्रियाएँ एवं मनोवेग सम्मिलित हैं। किसी आतिशय्य के कारण ही इस प्रकार के नाम पड़े हैं। रूपाकृति से मानव शीघ्रतम आकृष्ट हो जाता है। अतः सुन्दर बच्चों के नाम अन्य तन्मात्राओं की अपेक्षा रूप पर ही अधिक पाये जाते हैं। राधा-स्वामी आदि पंथों में शब्दयोग का विशेष महत्त्व है। कभी-कभी वे शब्द को ईश्वर के अर्थ में भी प्रयुक्त करते हैं। इन मतो के कारण ही शब्द पर नाम पाये जाते हैं। नेत्र शरीर का एक अत्यंत आवश्यक अंग है। मन के आकर्षण का वही मुख्य साधन हैं। उसके बिना मुख शोभाहीन हो जाता है, सम्पूर्ण ज्ञान विज्ञान नेत्रों के द्वारा ही प्राप्त होता है। इस विशेषता के अतिरिक्त नेत्र सम्बन्धी नाम नामी के लोचनों का सौंदर्याधिक्य भी या उनकी विलक्षणता प्रकट करते हैं। इसलिए पंच ज्ञानेन्द्रियों में नेत्रपरक नाम ही दिखलाई देते हैं। विचारादि विविध अवस्थाओं पर भी कुछ नाम दिखलाई देते हैं। ब्रह्म की अनुभूति का अनुमान अनुभवानंद नाम में मिलता है।

मनोवेगों में आनन्द तथा प्रेम नामों का प्राबल्य दिखलाई देता है। आनन्द जीवन का लक्ष्य होता है। जन्म से मृत्यु तक मनुष्य उसी की खोज में संलग्न रहता है। पंच क्लेशों तथा त्रितापों से

---

[1] शृङ्गार हास्य करुण रौद्रवीर भयानकाः।
बीभत्साद्भुत संज्ञैचित्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः॥
निर्वेदस्थायि भावोस्ति शांतोपि नवमो रसः—काव्यप्रकाश ४

मुक्त होने के लिए वह सतत प्रयत्नशील रहता है। संसार की प्रत्येक वस्तु में—अपने प्रत्येक पुरुषार्थ में प्रत्येक प्राणी आनंद का ही अन्वेषण करता है। उसकी भक्ति भी परमानन्द के लिए ही होती है। इन नामों में आनन्द अपने विभिन्न छायातपों मे—नाना रूपों में दृष्टिगोचर हो रहा है। प्रेम को जीवनवटी अथवा सजीवन बूटी कह सकते हैं। यह भी आनन्द का एक साधन है। परमाणुओं की संसक्ति के सदृश इसमें भी विचित्र आकर्षण होता है। विश्व को एक सूत्र मे बाँधने में लिए यह एक अन्यतम साधन है। यह अनेक रूपों से संसार में व्याप्त है। भक्ति भी अनन्य प्रेम ही है।

अन्य मनोभावों में इच्छा, ज्ञान तथा शान्ति सम्बंधी पर्याप्त नाम हैं। इसका हेतु यह है कि कोई न कोई इच्छा मनुष्य के मन में उठती ही रहती है, क्योंकि सहज बोध अथवा सहज वृत्ति से उसका काम नहीं चलता। व्यक्ति शाति की गोद में ही आनन्द का अनुभव करता है। षड् विकारों में से अकेले लोभानंद ही दर्शन दे रहे हैं। रसों और स्वाथीभावों में से कुछ पर ही थोड़े से नाम पाये जाते हैं।

(३) नैतिक तथा नागरिक गुण

१—गणना

क—क्रमिक गणना—(१) नामों की संख्या २२५

(२) मूल शब्दों की संख्या ६७

(३) गौण शब्दों की संख्या ४६

ख—रचनात्मक गणना

प्रवृत्ति	एक पदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	पंचपदी नाम	योग
धर्म	१	१३	३		१	१८
धृति		१३	१			१४
क्षमा		६				६
दम		४				४
सत्य	१	१६	३			२०
दया	१	२५	३	१		३०
दान	१	८	१			१०
संतोष	२	१५				१७
तप		१	१			२
व्रत प्रतिज्ञा		१२	२			१४
आदर्श		२	१			३
त्याग		१				१
न्याय		१				१
मानमर्यादा	२	९				११
विनय	१	७				८
शील	१	१३	१			१५
सहायता	१					१
हित	१	९	१			११
भरोसा	३	१३				१६
शरण	१	६	२			९
मेल मिलाप	१	३	१			५
नीति नियम उपदेश		७	२			९
	१७	१८४	२२	१	१	२२५

२—विश्लेषण :—

क—मूल शब्द

धर्म—धम्मी, धर्म, धर्मू ।

धृति—धीर, धीरज, धीरा, धीरू, धृति, धैर्य, सुधीर ।

क्षमा—क्षमा

दम—इंद्री दमन, जितेंद्रिय, दमन ।

सत्य—ऋत, यथार्थ, सचई, सत, सत्य ।

दया—अनुग्रह, करुणा, कृपा, तवक्कुल, दया, नेवाजी, महर, मेहर ।

दान—खैराती, दान ।

संतोष—तोखी, त्रिपति, दिलासा, परितोष, संतोकी, संतोखी, संतोष, सबरू ।

तप—तप ।

व्रत-प्रतिज्ञा—कौलधारी, कौली, कौलू, टेक, टेकन, तोबा, परन, व्रत ।

नागरिक गुण—

आदर्श—आदर्श ।

त्याग—त्याग ।

न्याय—न्याय ।

मानमर्यादा—आन, आनू, इज्जत, पति, पतेई, मर्याद, महातम, महातिम ।

विनय—विनय ।

शील—चरित्र, शील, सुशील ।

सहायता—सहाय ।

हित—उपकारी, नेकी, परोपकार, हित, हितकारी, हितू ।

भरोसा—अधार, आधार, आधारी, आसरा, टेक, टेकन, भरोखन, भरोस, भरोसा, भरोसे ।

शरण—शरण ।

मेल-मिलाप—मिलई, मिलाप, मिल्लू, सुलह ।

नीति नियम-उपदेश—उपदेश, नियम, नियमी, नीति ।

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ

१—विकसित या विकृत शब्दों के तत्सम रूप

विकृत रूप	तत्सम रूप	अर्थ
धम्मी (पा० धम्म), धर्मू	धर्म	धर्म
धीरा, धीरू	धीर	धीरज
इंद्री दमन	इंद्रिय दमन	इंद्रियों को वश में करना
सचई	सत्य	सत्य
नेवाजी	नेवाज	दयालु
महर	मेहर	दया
खैराती	खैरात	दान
तोखी	तोष	संतोष
त्रिपति	तृप्ति	,,

संतोकी, संतोखी	संतोष	संतोष
सबरू	सब्र	धैर्य
कौलू	कौल	व्रत प्रतिज्ञा
सरधू	श्रद्धा	बड़ों के प्रति पूज्य भाव
टेकन	टेक	प्रतिज्ञा, सहारा
परन	प्रण	,,
आनू	आन	व्रत, प्रतिज्ञा
पतेई	पति	लज्जा
मर्याद	मर्यादा	धर्म-सीमा
महातम, महातिम	माहात्म्य	महिमा
हित्तू	हित	भलाई
अधार, आधारी	आधार	सहारा
भरोखन, भरोस, भरोसे	भरोसा	भरोसा
मिलई, मिल्लू	मेल	मेल

२--विजातीय प्रभाव

शब्द	भाषा	अर्थ
तबकुल	अरबी	भरोसा
नेवाजी	फारसी	दयालु
मेहर	,,	दया
खैराती	अरबी	दान
सबरू (सब्र)	,,	धैर्य, संतोष
कौल	,,	व्रत, प्रतिज्ञा
तोबा	,,	भविष्य में अनुचित कार्य न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा
इज्जत	,,	आदर
नेकी	फारसी	भलाई
सुलह	फारसी	मेल मिलाप

ग—मूल शब्दों की निरुक्ति

धर्म—

धर्म[1] वह आचरण है जिससे समाज की रक्षा और कल्याण हो, सुख शांति की वृद्धि हो और परलोक में सद्गति प्राप्त हो। यह चार प्रकार का बतलाया गया है (१) वर्ण धर्म (२) आश्रम धर्म (३) सामान्य धर्म या मानव धर्म[2] (४) साधन धर्म।

[1] धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्॥
(मनु० ६ + ९२)

धर्म के १० अंग धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, (चोरी न करना), शौच, इन्द्रिय निग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध।

[2] सत्यं दया तपः शौचं तितिक्षेक्षा शमो दमः।
अहिंसा ब्रह्मचर्यं च त्यागः स्वाध्याय आर्जवम्॥

पुण्य—(१) धर्म का कार्य (२) शुभ कार्य का संचय।

दिलासा—धैर्य, धीरज। धृति-धीरज।

अपकार करनेवाले से बदला लेने की पूरी सामर्थ्य रहते हुए भी बदला न लेकर उस अपकार को प्रसन्नता के साथ सहन कर लेने को क्षमा कहते हैं।[1]

इंद्रिय दमन—इंद्रियों को किसी भी बुरे विषय की ओर न जाने देना और सदा उनको अपने वश में रखकर कल्याणकारी विषयों में लगाये रहना इंद्रिय-दमन अथवा इंद्रिय-निग्रह कहलाता है।

ऋत—यथार्थ, सत्य।

मन सहित वाणी के यथार्थ कथन का नाम सत्य है अर्थात् जैसा देखा, समझा और सुना है। ठीक वही सुनने वाले की भी समझ में आवे, ऐसे कथन का नाम सत्य है।[2]

करुणा, दया—वह दुखपूर्ण वेग जो किसी मनुष्य के मन में दूसरे को कष्ट में देखकर उत्पन्न होता है और वह उन कष्टों को दूर करने का प्रयत्न करता है।

संतोष—चित्त की वह वृत्ति जिसमें मनुष्य अपनी वर्तमान दशा में ही पूर्ण सुख का अनुभव करता है।

श्रद्धा—आप्त पुरुषों तथा शास्त्रादि में दृढ़ निश्चय या बड़ों के प्रति पूज्य भाव।

विश्वास—मन का दृढ़ निश्चय, देवता तथा शास्त्र में आस्था।

शौच (पवित्रता) यज्ञ, तप, दान, स्वाध्याय, उपस्थ निग्रह, व्रत, मौन, उपवास और स्नान यह दस नियम[3] कहलाते हैं।

तप—तपस्या शरीर को कष्ट देकर चित्त को एकाग्र करने की क्रिया।

व्रत—किसी पुण्य तिथि में पुण्य प्राप्त करने के लिए उपवास तथा संकल्प करना।

आदर्श—अनुकरण करने योग्य पदार्थ।

त्याग—किसी पदार्थ से अपना अधिकार हटा लेने अथवा पृथक् करने की क्रिया; दान, वैराग्य उत्पन्न होने पर सब सांसारिक विषयों से सम्बन्ध न रखने की क्रिया।

संतोषः समदृक् सेवा ग्राम्येहोपरमः शनैः।
नृणां विपर्ययेहेक्षा मौनमात्मविमर्शनम्॥
अन्नाद्यादेः संविभागो भूतेभ्यश्च यथार्हतः।
तेष्वात्मदेवताबुद्धिः सुतरां नृषु पाण्डव॥
श्रवणं कीर्तनं चास्य स्मरणं महतां गतेः।
सेवेज्यावनतिर्दास्यं सख्यमात्मसमर्पणम्॥
नृणामयं परो धर्मः सर्वेषां समुदाहृतः।
त्रिंशल्लक्षणवान् राजन् सर्वात्मा येन तुष्यति॥

(श्रीमद्भा० ७।११।८—१२)

[1] क्षमा सत्यपि सामर्थ्ये अपकार सहनं क्षमा।

[2] सत्यं यथार्थे वाङ्मनसे यथादृष्टं यथानुमितं यथाश्रुतं तथा वाङ्मनश्चेति परत्र स्वबोध संक्रान्तये वागुक्ता सा यदि न वञ्चिता भ्रान्ता वाप्रतिपत्तिवन्ध्या वा भवेदिति। (योग० सा० पा० सू० ३ काव्यालंकृत भाष्य)।

[3] शौचमिज्या तपो दानं स्वाध्यायोपस्थनिग्रह।
व्रत मौनोपवासं च स्नानं च नियमा दश॥

ख—गौण शब्द

(१) वर्गात्मक—राय, सिंह।

(२) भक्तिपरक—आचरण, आशा, आनंद, कांत, किशोर, कुमार, गिरि, चंद, जनक, जीत, जीवन, तीर्थं, दत्त, दयाल, दास, दीन, देव, धीर, नाथ, नारायण, निरूपन, निवास, पति, पाल, प्रकाश, प्रताप, प्रिय, प्रीति, प्रेमी, बहादुर, बोध, भद्र, भूषण, मल, मित्र, मोहन राखन, राज, राम, लाल, विहारी, व्रत, शरण, शील, शेखर, सहाय, साधन, सेन, स्वरूप।

(३) विशेष नामों की व्याख्या

मूल शब्दों की व्याख्या से सभी नाम स्पष्ट हो जाते हैं।

४—समीक्षण

इस प्रवृत्ति के दो अंग दृष्टिगोचर हो रहे हैं—(१) सदाचार सम्बंधी सात्विक गुण जिनके अंतर्गत मानव धर्म, यम तथा नियम मुख्य हैं (२) शिष्टाचार सम्बंधी नागरिक गुण जो समाज में पारस्परिक व्यवहार मे प्रयुक्त होते हैं। प्रथम धर्म के आधार हैं जिनके बिना उसमें स्थिरता नहीं आती। धर्म परायण मनुष्य में जो गुण होने चाहिए वे अधिकांश में प्रस्तुत नामों में उपस्थित हैं। धर्म, धृति, क्षमा, दया, सत्य, दम, दान, संतोष, श्रद्धा-विश्वास, तप तथा व्रत आदि सात्विक गुणों का उल्लेख यहाँ पाया जाता है।

सामाजिक अव्यवस्था को रोकने के लिए द्वितीय वर्ग भी अत्यंत आवश्यक है। बड़ों का छोटो के प्रति, छोटों का बड़ों के प्रति तथा बराबरवालों का आपस में क्या व्यवहार होना चाहिए। इसी प्रश्न का उत्तर शिष्टाचार का आधार है। संगठित समुदाय का नाम ही समाज है, अतः जिस नियम के व्यतिक्रमण करने से समाज अथवा उसके किसी अंग का अहित हो—ह्रास हो, वह कर्म सर्वथा हेय तथा त्याज्य है। विनयशील-सम्पन्न आदर्श व्यक्ति ही सच्चा समाज सेवक हो सकता है। समाज के कल्याण के लिए परोपकार की भावना वाञ्छनीय है, यही ऋजु मार्ग है।

नैतिक प्रवृत्ति पर वंग तथा आर्यसमाज का प्रभाव परिलक्षित हो रहा है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इन गुणों के द्वारा उत्तम उपाधियाँ निर्मित की जाती हैं।

आत्मिक विकास के हेतु सदाचार तथा सामाजिक अभ्युदय के लिए शिष्टाचार परमावश्यक हैं। प्रथम जीवन की आधार शिला है, द्वितीय नागरिकता का स्तम्भ है। दोनों पर ही यह लोक समाज अवस्थित है। हीरालाल, पंचकोड़ी आदि प्राचीन पद्धति के नाम अब लुप्तप्रायः हो रहे हैं और शनैः शनैः उनका स्थान गुण सम्बंधी नवीन प्रणाली के नाम ले रहे हैं। दया, धर्म, सत्य, संतोष, शील, धृति, व्रत, प्रतिज्ञा, परोपकार, मान मर्यादा, दानादि नैतिक गुण भारतीय चरित्र की मुख्य विशेषता प्रदर्शित कर रहे हैं। सद्गुण ही श्रेष्ठ व्यक्ति की दैवी सम्पत्ति हैं।[1]

---

[1] अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः

दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्।१।

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।

दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्।२।

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।

भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत।३।

(गीता अध्याय १६)

दार्शनिक प्रवृत्ति—(४) सौंदर्यभावात्मक गुण।

सदाचार एवं शिष्टाचार सम्बन्धी गुणों के अतिरिक्त कुछ ऐसे गुणों का अस्तित्व भी देखा जाता है जिनसे रूप-सौंदर्य की अभिव्यक्ति होती है। सौंदर्य में रूप रग का समन्वय रहता है। भगवान की यह विभूति महिलावर्ग का सहज आभूषण है। यही कारण है कि इससे सम्बन्धित नाम स्त्री समाज में विशेष समादृत होते हैं। स्वरूप रानी, सुषमा, प्रभावती, रूपा, शोभादि नाम इस प्रवृत्ति के परिचायक हैं। पुरुषों के नामों में रूप, काति, ओज, तेज, प्रकाशादि गुणों का योग रहता है। रूपलाल, तेजा, प्रकाश, स्वरूप चंद, काति स्वरूप इसके उदाहरण हैं। शोभासम्पन्नेतर व्यक्ति के लिए ये नाम व्यंग्य में परिणत हो जाते हैं। अर्थभेद के कारण तेज-प्रकाश सम्बन्धी नाम अग्नि तथा सूर्य के, रूपमूलक नाम कृष्ण के और कातिपरक नाम पार्वती के अंतर्गत लिखे गये हैं। यह स्मरण रखना चाहिए कि सौंदर्य भावात्मक नाम प्रायः विशेष्य से बनाया जाता है। सुंदर, अच्छे आदि बिशेषणों से निर्मित नाम श्लाघात्मक विशेषण प्रवृत्ति में सन्निविष्ट हो सकते हैं।

राजनीतिक प्रवृत्ति

(१) राजनीति

(२) इतिहास

सोलहवाँ प्रकरण

राजनीति

१—गणना

क—क्रमिक गणना

(१) नामों की संख्या ४१५

(२) मूल शब्दों की संख्या १८४

(३) गौण शब्दों की संख्या ४६

ख—रचनात्मक गणना

नाम प्रवृत्ति	एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	पंचपदी नाम	षट्पदी नाम	योग
वीर पूजा	४४	१६५	६०	१६	२	१	२९८
साहित्यकार	१०	४०	१०	१			६१
देश भक्ति	१	२०	६	१			३१
स्वदेशी		१					१
क्रांति		७					७
अमन	२	२					४
संघ		१					१
स्वतंत्रता		२	३				५
स्वराज्य		७					७
	५७	२२५	११२	१८	२	१	४१५

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द

(१) वीरपूजा—

(अ) देशभक्त :—अजित, अमर, अमरतू, अमरा, अमरू, अम्मर, अरविंद, आल्हा, इंदल, इंदुल, इंद्रजीत, ईश्वरचंद्र, उदई, उदन, उदय, उदयचंद, उदयराज, उदयसिंह, उदिया, उदैराज, उद्या, ऊदल, ऊदा, एदल, खुदीराम, गाधी, गामा, गामू, चितरंजन, चितरंजनदास, छतरू छत्तन, छत्तर, छत्ता, छत्तू, छत्र, छत्रधारी, छत्रसाल, छत्री, जगन, जगनू, जयमल, जवाहर, जवाहरलाल जवाहरसिंह, जसई, जसराज, जस्सन, जस्सा, जस्सू, जागन, जैमल, टोपी, तन्नू, तांतियाँ, ताना, ताला, ताहर, तिलक, तिलकन, तेजा, दसवंत, दसे, दसैया, दस्सू, दुर्गादास, देशराज, नाना, प्रताप, प्रतापसिंह, प्रतापी, फतह, फत्ता, फत्ते. बंदा, बंदू, बंदे, बच्छराज, बदन, बदनसिंह, बदना, बनाफल, बादल, बाल गंगाधर, बापू, बिकरमा, विकरमाजीत, ब्रह्मानंद, भगतसिंह, मलिखान, मलिहा, मल्हन, मल्हू, मल्हेश, मल्हो, मूलशंकर, रवींद्र, रवेंद्र, राना, रामदास, राममूर्ति, रासविहारी, लाखन, लाजपति, लालचंद, विक्रम, विक्रमादित्य, शिवराज, शिवाजी, श्योराज, श्रद्धा, श्रद्धानंद, समरथ, समर्थी, सुभाषचंद, सुरेंद्र, सुरेंद्रनाथ, सुहेली, सूरज, सेवाजी. हकीकतराय, हरिसिंह।

(आ) लोककथा नायक—कारलाइल[1] ने कई प्रकार के वीरों का उल्लेख किया है। उसका कहना है कि न केवल संग्राम में तलवार चलाने वाले ही वीर होते हैं, अपितु जान को हथेली पर रख कर घोर संकटों को झेलनेवाले देशभक्त, आविष्कारक, अन्वेषक, साहित्यिक आदि भी वीरों की श्रेणी में गिने जा सकते हैं। प्राचीन रसज्ञों ने धर्मवीर दानवीर, दयावीर और युद्धवीर—ये चार विभाजन किये हैं। वस्तुतः गुण तथा कार्य की विभिन्नता से धर्मवीर, दयावीर, दानवीर युद्धवीर, कर्मवीर विद्यावीर आदि वीरो के अनेक भेद हो सकते हैं। कृपाण, कलम या कायादि इसके अनेक साधन हैं। नायक-निष्ठा भी वीरपूजा का एक अंग है।

लाखा बंजारा, पूरण मल भगत, अमरसिंह राठौर, वीर विक्रमाजीत, हकीकतराय, बंदा वैरागी, आल्हा ऊदल, मोरध्वज, रूप वसंत, पद्मावती, श्रवण कुमार, हरिचंद गोपीचंद भर्थरी आदि अनेक नायक-नायिकाओं की दंत-कथाएँ गाँव-गाँव तथा घर-घर प्रचलित हैं। नल-दमयंती, ढोला-मारू, सारंगा-सदावृक्ष, हीर-रांझा, सावित्री-सत्यवान, लैला-मजनू, लालारुख-गुलफाम आदि अनेक प्रेम की युगल मूर्तियाँ जनता के मन मंदिर में आज भी विराजमान हैं। लोकगीतों ने उन्हें अमर बना दिया है। उनके कथा-नायक अपनी कुशलता, संलग्नता, कुशाग्र बुद्धिमत्ता, उदारता, प्रेमासक्ति, धर्म परायणता, अदम्य साहस-उत्साह, त्याग-तपस्या, परोपकारितादि गुणों के कारण ही ग्रामीण जनों के प्रीतिभाजन हो रहे हैं। इनमें कुछ ऐतिहासिक हैं, कुछ अनैतिहासिक या काल्पनिक।

लोक गाथाओं के नायक भक्ति-प्रेमादि भावातिरेक के आदर्श होते हैं। इसलिए सामान्य भावुक जनजीवन उनकी ओर शीघ्र आकृष्ट हो जाता है। इस विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण वे गीतों, कहानियों, आल्हा संगीतो आदि लोक साहित्य के रूप में जनता में अमर रहते हैं। इन गीतों और कहानियों की भाषा बड़ी सरल और कहने का ढंग अत्यन्त रोचक होता है। तीव्र भावावेश के कारण उनका अमिट प्रभाव पड़ता है। लोग गीतों को प्रेमविभोर हो गाते हैं और कहानियों को बड़ी रुचि से सुनते हैं। बच्चों की कहानियों में प्रायः नायक का नाम नहीं रहता "एक राजा के चार बेटे थे या किसी शहर में एक साहूकार रहता था" आदि वाक्यों से ये कहानियाँ शुरु होती हैं। कभी-कभी अनार- दे (देवी), रानी फूलन दे आदि कल्पित नाम भी दे दिये जाते हैं। लोक-साहित्य मौखिक तथा लिखित दोनों रूपों में प्रचलित रहता है।

दंतकथाएँ बड़ी आकर्षक, प्ररोचक, विनोदपूर्ण, कौतूहल-वर्द्धक एवं आश्चर्यजनक भूमिका के साथ प्रारम्भ होती हैं।[2] चटपटी चटनी की तरह लोककथाओं की यह अटपटी भूमिका श्रोताओं की भूख (उत्कंठा) को बहुत तेज कर देती है। इन कहानियों में सच-झूठ पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता। प्रवक्ता उन्हें यथारुचि घटा बढ़ा सकता है। इनके तीन मुख्य काम हैं—घड़ी भर का विश्राम, दिल बहलाव और जानकारी।

---

[1] Carlyle's Hero and Hero-worship.

[2] बात सी न झूठी, बतासा सी न मीठी, घड़ी-घड़ी का बिसराम—जानै सीताराम। सक्कर कौ घोड़ा सकलपारे की लगाम, छोड़ दो दरियाव में चला जाय छमा छम छमा छम। हाथ भर के मियाँ साब, सवा हाथ की डाढ़ी, हलुवा के दरिया में बहे चले जाते हैं—चार कौर इधर मारते हैं, चार कौर उधर मारते हैं। इस पार घोड़ा, उस पार घास—न घास घोड़े को खाय न घोड़ा घास को खाय। इतने के बीच में दो लगाई धींच में, तऊ न आये रीत में, तब धर कढोरे कीच में, झट आ गये बस रीत में। हँसिया सी सूधी, तकुआ सी टेढ़ी, पहला सौ कर्रौ १ पथरा सौ कोरौ, २ हात भर ककरी नौ हात बीजा—होय होय, खेरे गुन होय ३। बतासा कौ नगाड़ौ, पोनी कौ डंका—किड़ी धूम किड़ी धूम। जरिया ४ कौ कांटौ अठारा हाथ लांबौ—भीत फोर भैंस कै लागौ।

विदेशी नायकों में खलीफा हारूं[1], बादशाह कारूं,[2] परोपकारी हातिम,[3] बहराम[4] आदि प्रसिद्ध हैं।

अनेक नाम उन देशी विदेशी लोककथानायकों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पण कर रहे हैं। सिनेमा से भी ऐसे नामों के प्रसार में कुछ प्रोत्साहन मिल रहा है। उच्च साहित्य की अपेक्षा लोक-साहित्य में नई वृद्धि बहुत कम होने पाती है। नये नायक इतने रोमांचकारी नहीं होते कि वे अपने असाधारण जीवन से चारणों या जन कवियो को अपनी ओर आकर्षित कर सकें। इनमें से अधिकांश नामो का अध्ययन इतिहास, वीर पूजा आदि प्रवृत्तियों में हुआ है। अवशिष्ट नामों का प्रस्तुत सकलन से कोई सम्बन्ध नही है।

(२) साहित्यकार—अमरसिंह, अयोध्यासिंह, कबीर, कालिदास, केशवदास, गिरिधरदास, जगन्नाथ, जयदेव, जयशंकरप्रसाद, जल्लन, जल्लू, तुलसीदास, देवदत्त, द्विजदेव, दुर्जेंद्र, दुर्जेंद्रनाथ, नारायण, पद्माकर, प्रतापनारायण, प्रेमचंद्र, भर्तृहरि, भवभूति, भस्सू, भाष, भासू, भिखारीदास, भूषण, मतिराम, मयूर, महावीरप्रसाद, रत्नाकर, रवींद्र, लल्लूलाल, बंकिमचंद, वाल्मीक, विद्यापति, विश्वनाथ, विहारीलाल, व्यास, शंकर, श्रीहर्ष, सदल, सदासुखराय, सबलसिंह, सूदन, सूरदास, सेनापति, हरिचंद, हरिश्चंद्र, हर्ष, हेमचंद।

(३) देशभक्ति—देशदीपक, देशपति, देशपाल, देशभूषण, देशरत्न, देशराज, देशसिंह, देशहितैषी, भारत, भारतचंद्र, भारतज्योति, भारतनरेश, भारतप्रकाश, भारतप्रसाद, भारतभानु, भारतभूषण, भारतमित्र, भारतरत्न, भारतवासी भारतविजय, भारतवीर, भारतसपूत, भारतसिंह, वतनसहाय, वतनसिंह, सुदेशचंद्र, स्वदेशसिंह, हिन्दपाल।

कहानियों की बहन महानियाँ। तानै बसाए तीन गाँव—एक अंजर, एक बंजर, एक में मांसई नइयाँ। जामैं नइयाँ मांस, ४ बामैं बसैं तीन कुम्हार—एक लंगड़ा, एक लूलो, एक के हातई नइयाँ। जाकैं नइयाँ हात, तानै बनाई तीन हंड़ियाँ—एक ओंगू, एक बोंगू, एक कै औंठई नइयाँ। जाकै नइयाँ ओंठ, ताय बिसाऐं तीन जनी, ६ एक औरू, एक बौरू, ८ एक कैं मौंहई ९ नइयाँ। जाकै नइयाँ मौंह, बानैं चुरए १० तीन चांउर—एक अच्चौ, एक कच्चौ, एक के चोरई नइयाँ। बाने नेउते तीन बाम्हन—एक अफरौ, ११ एक डफरौ, एक कै पेटई नइयाँ। जो इन बातन कौं झूठी समझै तो राज कौं डंड और जात कौं रोटी। कहता तौ कहता पर सुनता सावधान चइए। न कहन वारें कौ दोस न सुननवारे कौं दोस, दोस वाकौं जाने बात बनाकें ठाड़ी करी और दोस बउकौं नइयाँ काएके बानैं तो रैन काटबे कौ बात बनाई—दोस बाकौं जो दोस लगावै। और बात सचियइ हुइए काएके तवई तौ कही गई।

विक्रम स्मृति ग्रंथ(२००१) पृ० ११३-१४ (बुंदेलखण्डी भूमिका)

[अर्थ—१ रुई से भी कठोर, २ पत्थर से भी कोमल, ३ गाँव, ४ झरबेरी, ५ आदमी, ६ मोल लेती है ७ स्त्रियाँ, ८ मूक, ९ मुँह ही, १० पकाये, ११ तृप्त]

[1] हारूं—बगदाद का खलीफा हारुल्लरशीद बड़ा न्यायप्रिय राजा था।

[2] कारूं—हजरत मूसा के चचेरे भाई कारूं के पास अतुल धनराशि थी। कहते हैं कि उसके विशाल खजाने के तालों की कुंजियों को ४० ऊँटों पर लाद कर ले जाते थे।

[3] हातिमताई—अरब का एक परोपकारी, उदार और दानी सरदार।

[4] बहराम—बहरोज और बहराम तिबरिस्तान के एक अमीर के लड़के थे। बहरोज बड़ा सुशील तथा सरल स्वभाव का था। बहराम उद्दंड और दुश्चरित्र था। कुसंगति में पड़कर बहराम इतना बिगड़ गया कि वह अपने भाई की जान लेने पर उतारू हो गया। अंत में बहरोज ने उसे फाँसी से बचाया। उस समय से वह बिलकुल नेक बन गया।

(४) राष्ट्रीय आन्दोलन :—

स्वदेशी—स्वदेशी।

क्रांति—क्राति।

अमन—अमन, अमना, अम्मन।

संघ—संघी।

स्वतंत्रता—स्वतंत्र, स्वाधीन।

स्वराज—स्वराज, स्वराज्य।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति

अमर, अमरतू, अमरा, अमरू, अम्मर—देखिए इतिहास में अमरसिंह।

अरविंद—पांडीचेरी के प्रसिद्ध योगी अरविंद घोष पहले प्रसिद्ध क्रांतिकारी देशभक्त थे। इनको अंग्रेजी राज्य में कई बार जेल यात्रा करनी पड़ी, अंत में यह योग की ओर प्रवृत्त हुए। तब से यह अपना योगाश्रम खोलकर साधना में अपने दिन बिताने लगे। इनका स्वर्गारोहण अभी हुआ है।

आल्हा—प्रसिद्ध वीर आल्हा अपने भाई ऊदल के साथ महोबे में राजा परमाल के यहाँ रहते थे। इनकी बावनगढ़ की लड़ाई प्रसिद्ध है। यह अमर माने जाते हैं। इन्हीं के नाम पर आल्हा गाई जाती है जिसमें इनकी वीरता का वर्णन है। [<आला (अ०)-सर्वश्रेष्ठ]।

इंदल—आल्हा का पुत्र। (<इंद्र)।

ईश्वरचंद विद्यासागर—बंगाल के प्रसिद्ध विद्वान्, यह मातृ-भक्त, दीन-वत्सल, उदार, आत्माभिमानी थे। इन्होने अनेक सुधार किये और कई पुस्तकें लिखी। दया तथा विद्या गुण विशिष्ट होने के कारण इनको दयासागर तथा विद्यासागर भी कहते थे।

ऊदल या उदयसिंह—यह आल्हा के छोटे भाई बड़े युद्धप्रिय थे। इनके घोड़े का नाम बेंदुला था। इन्होंने बावन गढ़ की लड़ाइयों में बड़ी वीरता दिखलाई और अन्त में पृथ्वीराज से युद्ध करते हुए चामुंडाराय के हाथ से मारे गये। यह बड़े वीर, साहसी, तथा उद्दंड प्रकृति के थे। इनकी यह उक्ति प्रसिद्ध है "बड़े लड़ैया महुवे बारे जिनसे हारि गई तरवारि"।

खुदीरामबोस – बंगाल के प्रसिद्ध क्रांतिकारी देशभक्त इनको अंग्रेजी सरकार ने ३० अप्रैल १६०८ ई० को मुजफ्फरपुर में श्रीमती और कुमारी कैनेडी पर बम गिराने के अपराध में फाँसी की सजा दी थी।

गांधी—महात्मा मोहनदास कर्मचंद गांधी २ अक्टूबर १८६६ को पोर बंदर में पैदा हुए। विलायत से वैरिष्टरी पास कर १८८६ में देश को लौट आये और समाज तथा देश के सुधार में अग्रसर हुए। १३ वर्ष की आयु में इनका व्याह कस्तूराबाई से हुआ। १८६२ ई० इन्हें एक अभियोग में अफ्रीका जाना पड़ा। वहाँ भारतवासियों की दुर्दशा देखकर इनको अत्यंत खेद हुआ और कांग्रेस की नींव डाली। सत्याग्रह के कारण वहाँ उनको कई बार जेल जाना पड़ा। सन् १६१४ के महायुद्ध में इन्होंने इस विचार से सरकार की सहायता की कि युद्ध के पश्चात् भारतवासियों को विशेष अधिकार प्राप्त हो जायंगे, किन्तु इनकी यह आशा फलवती न हुई। पंजाब में जलियानवाला हत्या कांड आरम्भ हो गया। गांधी जी ने सत्याग्रह बड़े भयंकर रूप से प्रारम्भ किया। सरकार ने इनको

कारागार का दंड दिया। सन् १९२४ में वे भारत कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। निर्धनों की विवशता को देखकर इन्होंने १९३० में नमक कानून भंग किया। विलायत की राउंड टेबिल कांनफ्रेंस में सम्मिलित हुए किन्तु उसका कोई फल न निकला तो उन्होंने फिर आंदोलन आरम्भ किया। इसलिए अन्य नेताओं के साथ गाधीजी को फिर जेल जाना पड़ा। १५ अगस्त सन् १९४७ को भारत विभक्त होकर स्वतंत्र हो गया। इन्होंने दक्षिण में हिन्दी प्रचार की विशेष योजना की, यह हिन्दू मुसलिम एकता के उपासक थे। हरिजन सेवा इनके जीवन का उद्देश्य था। इनके ही महान प्रयत्न से भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। यह बड़े ईश्वरभक्त थे। इनकी "रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम" यह रामधुन प्रसिद्ध है, यह अहिंसा के पुजारी, सत्य व्रती एव शाति के देवता थे। ३० जनवरी सन् १९४८ ई० को नाथू राम गोड़से द्वारा पिस्तौल से मारे गये।

गामा—पटियाले का विश्व विजयी प्रसिद्ध पहलवान।

चितरंजन—चितरंजन दास पाँच नवम्बर सन् १८७० ई० में बंगाल में पैदा हुए। इन्होंने शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् कलकत्ता हाईकोर्ट में वकालत प्रारम्भ की। श्री अरविन्द घोष के अभियोग मे इन्होंने बड़ी तत्परता, निपुणता तथा उत्साह दिखलाया। तबसे यह सर्वजनीन कार्यों में अधिक भाग लेने लगे। इनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। यह कविता, कहानी तथा लेख लिखते थे, दीनों के प्रति सहानुभूति रखते थे। देश में जागृति करने के लिए इन्होने दो पत्र निकाले। यह स्वराज्य दल के सबसे बड़े नेता थे। असहयोग में भाग लेने के कारण सरकार ने उनको ६ मास का जेल दंड दिया। जनता ने इनको दीन बंधु की उपाधि से विभूषित किया। सन् १९२५ में दार्जिलिंग में इनका स्वर्गवास हो गया।

छत्रसाल—ओरछा के महाराज छत्रसाल महोबा के चंपतराय के पुत्र थे जो अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध थे। इन्होंने मुगल सम्राट से अनेक लड़ाइयाँ लड़ीं और अपनी स्वतंत्रता, स्वाधीनता तथा स्वाभिमान को सुरक्षित रक्खा, इनमें जातीयता कूट-कूटकर भरी हुई थी।

जयमल—चित्तौड़ का एक वीर सरदार जो किले की रक्षा करते हुए अकबर की गोली से मारा गया।

जवाहर—इस नाम के दो व्यक्ति प्रसिद्ध हैं।

१—जवाहरलालनेहरू—वर्तमान समय के प्रसिद्ध देश-भक्त हैं, जो आजकल प्रधान मंत्री के पद पर सुशोभित हैं।

जवाहरसिंह—यह भरतपुर के राजा सूरजमल के पुत्र थे। यह अपनी वीरता, त्याग तथा देश प्रेम के लिए प्रसिद्ध हैं। इन्होने अपने पिता के साथ कई बार दिल्ली को लूटा। पश्चिमी ग्रामों में इनकी वीरता के बहुत से भजन गाये जाते हैं।

जसराज (यशराज)— महोबे के प्रसिद्ध वीर आल्हा-ऊदल के पिता।

जागन—आल्ह खंड का एक वीर जिसने आल्हा-ऊदल के साथ रहकर अनेक युद्धों में भाग लिया।

टोपी—वीर तांतियाँ टोपी सन् १८५७ के गदर में विरोधी दल का सेनानायक था। धनु विद्या में विशेष कौशल दिखलाने से पेशवा ने तांत्या (धनु) टोपी की उपाधि दी।

तन्नू—सिंहगढ़ का विजेता वीर तानाजी शिवाजी की सेना का एक मुख्य सरदार था। तानाजी की मृत्यु पर शिवाजी उद्गार थे—गढ़ आला पन सिंहगेला।

ताला- आल्हा ऊदल का साथी एक वीर जिसने कई लड़ाइयों में उनका साथ दिया।

तिलक—बाल गंगाधर तिलक १३ जुलाई सन् १८५६ में दल गिरि में उत्पन्न हुए, इन्होंने देश तथा समाज की बड़ी सेवा की और १८८१ में केशरी (मराठी) तथा मरहठा (अंग्रेजी) दो पत्र निकाले। रानाडे के साथ इन्होंने राजनीति में भाग लिया, १८६५ में कांग्रेस के सदस्य हुए। १८६६ ई० से १८६७ तक देश में भयकर अकाल पड़ा और दक्षिण में महामारी का प्रकोप बढ़ा। इन्होंने जनता की अत्यन्त सेवा की, लार्ड कर्जन के वंग-भंग के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन आरम्भ किया। सन् १६०५ में काशी कांग्रेस के बाद स्वदेशी आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। विद्रोह के कारण ६ वर्ष का कालापानी हुआ और मांडले भेज दिये। जेल में प्रसिद्ध गीता-रहस्य की रचना की। जब होम-रूल लीग ने स्वतंत्रता की आग भड़का दी तो उसमें उन्होंने पूर्ण योग दिया। बम्बई में ३१ जुलाई सन् १६२० को इनका स्वर्गवास हुआ। यह उत्कृष्ट विद्वान्, स्पष्टवादी तथा उग्र आलोचक थे। इनका महावाक्य यह था—स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।

नाना—(१) नाना फड़नवीस—एक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ जो पेशवा के मंत्री थे। (२) धोंधूपंत या नाना साहब निर्वासित पेशवा के दत्तक पुत्र जिन्होंने १८५७ के राज-विद्रोह में विशेप भाग लिया था।

प्रतापसिंह—मेवाड़ के महाराणा प्रताप अपनी वीरता के लिए अत्यंत प्रसिद्ध हैं। इन्होंने अपना सारा जीवन देश तथा जाति की रक्षा के लिए अर्पण कर दिया। इन्होंने मुगल सम्राट् अकबर से लड़ाइयाँ लड़ीं। सन् १५७६ ई० में सलीम की भारी सेना के साथ हल्दीघाटी पर विकट संग्राम हुआ। इसमें २२००० राजपूतों ने अपने जीवन की आहुतियाँ दीं। अंत में सलीम तथा शाही सेना के पैर उखड़ गये और प्रताप की विजय हुई। संकट पर संकट सहने पर भी आत्माभिमानी प्रताप ने मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की।

फत्ता—जयमल और फत्ता मेवाड़ की दो विचित्र विभूतियाँ थीं जिनका नाम एक साथ ही बड़े आदर के साथ लिया जाता है। जयमल की मृत्यु के बाद किले की रक्षा का भार वीर फत्ता के ऊपर पड़ा। यह केलवा का सरदार जगावत वंश का मुखिया था। यह अपनी मा का एकलौता बेटा था। वीर क्षत्राणी ने अपने पुत्र को केसरिया बाना पहनाकर अकबर की शाही सेना से लड़ने भेजा और स्वयं भी अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित हो अपनी पुत्र-वधू के साथ शत्रुओं से लड़ते-लड़ते अपने प्राण विसर्जन कर दिये, फत्ता ने बड़ी वीरता से किले की रक्षा की। अंत में अकबर की असंख्य सेना ने चित्तौड़ को घेर लिया और नगर को नष्ट कर दिया, राजपूतों के साथ फत्ता वीर गति को प्राप्त हुआ। फत्ता फतह सिंह का सूक्ष्म रूप है।

बंदा—देखिए साधु संत।

बच्छराज (वत्सराज)—आल्हा के चचेरे भाई मलखान के पिता का नाम बच्छराज था जो आल्हा के पिता देशराज के भाई थे।

बदनसिंह—भरतपुर के महाराजा सूरजमल के पिता थे जिनकी वीरता के भजन पश्चिम में गाये जाते हैं।

बनाफर—क्षत्रियों की एक जाति जिसमें आल्हा ऊदल उत्पन्न हुए थे।

ब्रह्मानंद—महोबा के राजा परमाल तथा मल्हना रानी का पुत्र जो आल्हा-ऊदल के साथ

अनेक लड़ाइयों में रहा था। इसका व्याह पृथ्वीराज की पुत्री बेला से हुआ था। बेला के गौने के समय यह युद्ध में मारा गया।

बादल—देखिए इतिहास में गोरा बादल

भगतसिंह—पंजाब के देश भक्त वीर भगतसिंह को काकोरी के अभियोग मे प्राण-दंड मिला।

मलखान (<मल्लष्कृण)—ऊदल के चचेरे भाई बच्छराज के पुत्र थे। इन्होंने अनेक युद्धों में बड़ी वीरता दिखलाई और अत में समर में वीरगति को प्राप्त हुए।

मूलशंकर—स्वामी दयानंद का नाम-देखिए दयानंद मतप्रवर्त्तक में।

रवींद्र—कवींद्र रवींद्र महर्षि देवेंद्रनाथ के पुत्र थे। इनका जन्म ६ मई १८६१ ई० में कलकत्ते में हुआ, बचपन से ही इनको प्रकृति से अत्यंत प्रेम था। इनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी, कविता, निबंध, कहानी, उपन्यास लिखकर इन्होंने बँगला साहित्य की बड़ी सेवा की। लोक प्रसिद्ध गीतांजलि पर इनको नोबुल पुरस्कार मिला। सन् १६०१ में बोलपुर में शाति निकेतन की स्थापना की। विलायत जाकर इन्होंने आर्य संस्कृति एव सभ्यता का संदेश मनुष्यों को सुनाया। सन् १६१४ में सरकार ने इनको सर की उपाधि दी जिसको इन्होंने सरकार के अनुचित कार्यों के कारण लौटा दिया। कलकत्ता तथा आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटियों ने इनको डी० लिट० की उपाधि से विभूषित किया। इस महान् आत्मा का स्वर्गारोहण सन् १६४१ में हुआ।

रामदास—शिवाजी के गुरु समर्थ रामदास प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ थे जिन्होने शिवाजी को राजनीति का उपदेश दिया था। मराठी में इनका दास बोध ग्रंथ प्रसिद्ध है।

राममूर्ति—एक प्रसिद्ध पहलवान जिसने अपनी वीरता के कार्यों से संसार को चकित कर दिया।

रासविहारी—बंगाल के एक प्रसिद्ध देशभक्त डा० रासविहारी घोष सूरत (१६०७) तथा मद्रास (१६०८) के कांग्रेस अधिवेशनों के सभापति निर्वाचित हुए।

लाखन—आल्हा का मित्र राजा रतिभान का पुत्र और कन्नौज के राजा जयचंद का भतीजा।

लाजपति—पंजाब-केशरी लाला लाजपत राय अपनी देश भक्ति के कारण मांडले की जेल में भेज दिये गये। यह आर्य समाज के भी प्रसिद्ध नेता थे। इन्होंने अनेक समाज सुधार के कार्य किये। देश के प्रत्येक आन्दोलन में अग्रणी रहे। सन् १६२० में कलकत्ता के विशेष कांग्रेस अधि-वेशन के सभापति निर्वाचित हुए। इस देश तथा समाज सेवी की मृत्यु सरकार के प्रहारों से हुई।

लालचंद—पंजाब के प्रसिद्ध देश भक्त उर्दू कवि लाल चंद फलक।

शिवाजी—शिवाजी का जन्म अप्रैल १० सन् १६२७ को शिवनेर के दुर्ग में हुआ। इनकी माता जीजाबाई ने बचपन से ही वीरता की कहानियाँ सुना सुनाकर इनमें वीर रस का संचार कर दिया था। बचपन में दादा जी कोणदेव से शिक्षा प्राप्त की। समर्थ गुरु रामदास ने इनमें हिन्दुत्व की भावना भर दी। मावलियों की सहायता से दुर्ग पर दुर्ग जीतना आरम्भ कर दिया। दक्षिण के सुलतान उसकी विजयों से सचेत हो गये। बीजापुर के सुल्तान ने अफजल खाँ को शिवा जी के पकड़ने के लिए भेजा। कपटी अफजल खाँ को उन्होंने बाघनख से मार डाला। औरंगजेब ने शिवाजी के विरुद्ध शायस्ता खाँ को भेजा किन्तु वह भी हारकर भाग गया। औरंगजेब के बहुत प्रयत्न करने पर भी शिवाजी उसकी चालों में न आये और शाही किलों तथा सेना को बहुत

दिनों तक लूटते रहे। शिवाजी एक नीति-निपुण कुशल शासक तथा वीर योद्धा थे। उन्होंने अपने राज की बड़ी अच्छी योजना बनाकर सुव्यवस्था स्थापित कर दी थी। कट्टर हिन्दू होते हुए भी वह पक्षपाती न थे। उन्होंने मुसलिम फकीर तथा मसजिदों को भूमि तथा रूपया दिया। मुसलिम स्त्रियों और कुरान को बड़े आदर के साथ लौटा देते थे। विद्वानों का आदर करते थे और राष्ट्र तथा जाति के सच्चे सेवक थे। भूषण कवि ने इनके वीरोचित कार्यों का बड़ा ओजपूर्ण वर्णन शिवा बावनी तथा शिवराज भूषण में किया है।

श्रद्धानंद—यह आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता थे। इन्होंने कांगड़ी में गुरुकुल खोलकर मनुष्यों के सम्मुख शिक्षा तथा संस्कृति का प्राचीन आदर्श प्रस्तुत किया। यह बड़े निर्भीक स्वभाव के थे। एक बार दिल्ली में इन्होने सैनिक की बंदूक के सामने अपनी छाती खोल दी थी। इन्होंने शुद्धि, संगठन आदि अनेक समाज सुधारों में बहुत भाग लिया। अंत में एक निर्दयी यवन की गोली की भेंट हुए।

सुभाषचंद्र बोस का जन्म १८९७ ई० में २४ परगना में हुआ था। १९२१ के असहयोग आन्दोलन में सरकारी आई० सी० एस० पद से त्यागपत्र दे दिया फिर आप नेशनल कालेज के व्यवस्थापक हो गये। क्रांतिकारी होने के कारण सरकार ने इनको जेल भेज दिया। मुक्त होने पर आपने बाढ़ पीड़ितों की अत्यन्त सहायता की। आप कई बार जेल भेजे गये। सन् १९२८ की कांग्रेस अधिवेशन के सभापति निर्वाचित हुए, सन् १९३० में लाहौर के अधिवेशन में स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास कराया, सन् १९३८ में फिर आप कॉंग्रेसके अध्यक्ष चुने गये और सन् १९३९ में त्याग पत्र दे दिया। १९४१ में खुफिया पुलिस की आँखों में धूल झोंककर लापता हो गये। जर्मनी में हिटलर से और जापान में टोजो से भारत को स्वतंत्र कराने के लिए मंत्रणा की। द्वितीय महायुद्ध के अंत में सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज को जन्म दिया जिसका अभिवादन "जयहिन्द" तथा मूलमंत्र "दिल्ली चलो" था। २३ मार्च सन् १९४२ को वायुयान की दुर्घटना से इस वीर नेता की मृत्यु बताई जाती है।

सुरेंद्र—सर सुरेंद्र नाथ बनर्जी बंगाल के प्रसिद्ध वक्ता तथा नेता थे। यह वक्तृत्व कला में बड़े प्रवीण थे। इन्होंने देश की सराहनीय सेवा की। सन् १८९५ में पूना कॉंग्रेस अधिवेशन के सभापति निर्वाचित हुए और अहमदाबाद में सन् १९०२ में दूसरी बार सभापति बनाये गये।

सुहेली—यह सुहेल का विकृत रूप है, राजा सुहेल देव ग्यारहवीं शताब्दी में उत्तर कौशल पर राज्य करते थे। इन्होंने उत्तर प्रदेश के पूर्वीय भाग को मुसलमान शासकों के अधीन होने से बचाया और गजनी की एक बृहत् सेना का सर्वनाश किया, यह बड़े जातीय वीर राजा माने जाते हैं। बहराइच के पास चितौरा में सुहेलदः मेला इनकी स्मृति में लगाया जाता है।

सूरजमल—भरतपुर के राजा सुजानसिंह को सूरजमल भी कहते हैं। इन्होंने अपने पुत्र जवाहरसिंह के साथ दिल्ली को लूटा था और मुगल राज के पतन में सहायक हुए। सूदन कवि ने इनके लिए सुजान चरित बनाया।

हकीकत राय—यह पंजाबी वीर बालक था। इसने मुसलमान होने की अपेक्षा अपने धर्म के लिए जान देना स्वीकार किया। अन्त में काजी के आदेश से इस वीर बालक को प्राण-दंड दिया गया।

हरिसिंह—यह महाराजा रणजीत सिंह का एक वीर सेनानायक था जो काबुल को विजय करने के लिए भेजा गया था। उसने अफगानियों पर ऐसा आतंक जमा दिया कि आज तक भी अफगान बच्चे हरीसिंह नलुआ के नाम से हौआ की तरह डरते हैं।

(२) साहित्यकार—

कालिदास—संस्कृत के महाकवि कालिदास राजा विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से एक थे। इनके शकुंतला नाटक, रघुवंश, कुमार सम्भव, मेघदूत आदि ग्रंथ प्रसिद्ध हैं।

केशवदास—(१६१२-७४) यह हिन्दी नव रत्नों में उच्च स्थान रखते हैं। यह ओरछा के राजा रामसिंह के भाई इंद्रजीतसिह की सभा में रहते थे। यह संस्कृत के विद्वान् थे। इनके ग्रंथों में रामचंद्रिका, कविप्रिया और रसिकप्रिया अधिक प्रसिद्ध हैं। यह अपने क्लिष्ट काव्य के लिए विख्यात हैं। "जाको देन न चहे विदाई, पूछै केशव की कविताई" आदि वाक्य इनकी कविता के विषय में कहे जाते हैं। यह चमत्कारी कवि रीतिकाव्य के आचार्य कहे जाते हैं।

गिरधरदास—गिरधर कविराय का जन्म संवत् १७७० के लगभग माना जाता है। इनकी नीति की कुंडलिया सर्वप्रिय हैं। सरल भाषा में लोक व्यवहार का अनुभव वर्णन किया है।

जल्लन—पृथ्वीराज रासो के रचयिता चंदबरदाई का पुत्र था जिसने अपने पिता की मृत्यु के बाद रासो को पूर्ण किया। इस ग्रंथ में यह उल्लेख मिलता है—"पुस्तक जल्लन हाथ दै, चले गजनि नृपकाज।"

जयदेव—गीत गोविंद के रचयिता जयदेव अपनी कोमलकांत पदावली के लिए प्रसिद्ध हैं, इन्होने राधा-कृष्ण के प्रेम का बडा सुंदर वर्णन किया है, "ललित लवंग लता परिशीलन कोमल मलय समीरे" यह पंक्ति इनके मधुर शब्द-चयन का सुंदर निदर्शन है।

द्विजदेव (महाराज मानसिंह)—अयोध्या के महाराज थे, शृंगार बत्तीसी और शृंगार लतिका इनके ये दो सरस काव्य ग्रंथ प्रसिद्ध हैं।

द्विजेंद्र—प्रसिद्ध बंगाली नाट्यकार इनके उस पार, शाहजहॉ, दुर्गादास, तारा बाई आदि कई ऐतिहासिक नाटको के हिन्दी अनुवाद हो चुके हैं।

पद्माकर—(संवत् १८१०-१८९०) रीतिकाल के उत्कृष्ट कवि हैं। इनकी सुंदर कविता ने सर्वप्रियता प्राप्त की है। इनका कई राजदरबारो में अच्छा सम्मान था। इनके जगत-विनोद, पद्मा-भरण तथा गंगालहरी प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। इनकी कविता में अनुप्रास का अधिक आनंद आता है।

प्रतापनारायण—कानपुर के पं० प्रतापनारायण मिश्र एकविनोद प्रकृति के व्यक्ति थे। इन्होंने गद्य तथा पद्य दोनों में रचना की है। यह ब्राह्मण सर्वस्व नामक पत्र निकालते थे। इनका यह विनय-पद्य बहुत प्रसिद्ध है। "पितु मातु सहायक स्वामि सखा, तुमही इक नाथ हमारे हो।"

प्रेमचंद—हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री धनपतराय का यह उपनाम था। इन्होंने रंगभूमि, कर्मभूमि, सेवा सदन, निर्मला, गोदान, गबन आदि कई उच्च कोटि के उपन्यास लिखे। इनकी छोटी कहानियाँ बहुत लोक-प्रिय हुई और उनके अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। सामाजिक तथा ग्राम्य-जीवन चित्रण करने में बड़े सिद्धहस्त थे।

भवभूति—कालिदास के पश्चात् संस्कृत नाट्यकारों में अधिक प्रसिद्ध हैं। यह विदर्भ के रहनेवाले थे और कान्यकुब्ज के महाराज यशोवर्मन की सभा में रहते थे। इनका जीवन-काल सातवीं शताब्दी में बताया जाता है। इनके महावीर चरित्र, मालतीमाधव और उत्तररामचरित, नाटक प्रसिद्ध हैं।

भास—यह संस्कृत कवि सातवीं शताब्दी के पहले हुआ होगा। इनके कई नाटक बताये जाते हैं।

भिखारीदास—आचार्य भिखारीदास प्रतापगढ़ के ट्योंगा गाँव के रहनेवाले थे। इनके काव्य निर्णय, श्रृंगार निर्णय, छंदार्णव आदि ग्रंथ प्रसिद्ध हैं। प्रतापगढ़ के राजा के भाई हिन्दूपति सिंह के आश्रय में रहते थे। इन्होने छद, रस, अलंकार, रीति, गुण, दोष, शब्द-शक्ति आदि काव्य के सब अंगों का विशद वर्णन किया है। इनकी विषय प्रतिपादन शैली उतम तथा भाषा साहित्य एवं परिमार्जित है।

भूषण -भूषण कवि का जन्म १६६२ विक्रमी में टिकवाँपुर (कानपुर) गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी था।

"इन्द्र जिमि जम्भ पर वाड़व सुअम्भ पर,
　　रावण सदम्भ पर रघुकुल राज है।
पौन वारिवाह पर सम्भु रति नाह पर,
　　ज्यों सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुम दण्ड पर चीता मृग झुण्ड पर,
　　भूषन वितुण्ड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर,
　　त्यों मलिच्छ बंस पर सेर सिवराज है।

इस छंद पर शिवाजी ने कई लाख रुपया दिया और राजकवि बनाकर सम्मानित किया। महाराज छत्रसाल ने उनकी पालकी का दंडा अपने कंधे पर रख लिया तब यह तुरंत "साहू को सराहो कि सराहो छत्रसाल को" पढ़ते हुए पालकी से कूद पड़े। पन्ना, कुमायूँ, बूँदी के महाराज के दरबार में भी इनका आदर-सत्कार हुआ। संवत् १७७२ में ८० वर्ष की अवस्था में देहान्त हुआ। यह वीर रस के कवि थे तथा हिन्दू जाति के प्रतिनिधि कवि कहलाते हैं। इनकी भाषा ओजपूर्ण होती हैं। शिवराज भूषण, शिवा बावनी और छत्रसाल दशक इनके प्रसिद्ध ग्रंथ माने जाते हैं।

मतिराम—इनके रसराज तथा ललित ललाम ग्रंथ प्रसिद्ध हैं। इनकी रचना अत्यंत सरस तथा भाषा स्वाभाविक है।

मयूर—यह महाकवि वाण के ससुर तथा संस्कृत 'सूर्य शतक' के रचयिता थे।

जगन्नाथ दास रतनाकर—संवत् १६२३ में काशी मे पैदा हुए। आप अयोध्या-नरेश के मंत्री रहे। स्वभाव के सरल, हँसमुख, मिलनसार तथा उदार साहित्य मर्मज्ञ थे। संवत् १६८६ में हरिद्वार में आपकी मृत्यु हुई, आपके मुख्य ग्रंथ हैं—हरिश्चंद्र, गंगावतरण, उद्धव-शतक, विहारी रत्नाकर और सूर सागर की टीका (अपूर्ण)।

लल्लूलाल—(संवत् १८२०-८२) यह आगरे के गुजराती ब्राह्मण थे। कलकत्ते के फोर्ट विलियम कालेज में अध्यापक रहे। इन्होने गद्य में प्रेमसागर लिखा जिसमें भागवत दशम स्कंध की कथा है।

वंकिमचंद—यह वंग भाषा के प्रसिद्ध उपन्यासकार तथा कवि थे। सरकारी नौकर होते हुए भी इन्होंने ऐसी क्रांतिकारी पुस्तकें लिखी जिनसे देश तथा समाज में जाग्रति पैदा हुई। आनंद मठ, चौबे का चिट्ठा आदि कई पुस्तकें अत्यंत लोकप्रिय है। बंदे मातरम् नामक राष्ट्रीय गीत इन की ही रचना है।

विद्यापति—संवत् १४६० में तिरहुत के राजा शिवसिंह की सभा में थे। इन्होंने अधिकांश राधा-कृष्ण-सम्बंधी श्रृंगार के पद बनाये जो बहुत ही सरस तथा सुन्दर हैं, इनको मैथिल कोकिल कहा गया है।

विहारीलाल—वह ग्वालियर के निकट वसुवागोविंदपुर में पैदा हुए। यह जयपुर के महाराज जयसिंह के दरबार में राजकवि थे। इनका विहारी सतसई नामक ग्रन्थ बहुत प्रसिद्ध है।

सदल—यह भी लल्लूलाल के साथ फोर्ट विलियम कालिज में अध्यापक थे। इन्होंने (संवत् १८०३-८१) नासिकेतोपाख्यान बनाया।

सदासुखराय—मुंशी सदासुखराय निआज दिल्ली के रहनेवाले थे। चुनार में यह एक अच्छे पद पर थे। इन्होंने उर्दू फारसी की किताबें लिखीं। नौकरी छोड़कर प्रयाग में हरि-भजन करने लगे। हिन्दी गद्य के जन्मदाताओं में से हैं। इन्होंने विष्णु पुराण से कई उपदेशात्मक प्रसंग लेकर एक हिन्दी पुस्तक लिखी।

सूदन—यह मथुरा के चौबे थे। इन्होंने भरतपुर के महाराज सुजानसिंह (सूरजमल) के नाम पर सुजान चरित नामक एक वृहत् काव्य लिखा।

सूरदास—यह अष्टछाप के सर्व श्रेष्ठ कवि हैं, इन्होंने अपने सूर सागर में कृष्ण चरित का सुंदर वर्णन किया है। इनका शृंगार और वात्सल्य रस संसार के साहित्य में अनुपम है।

हरिश्चंद्र—भारतेंदु हरिश्चंद काशी में सं० १६०७ में पैदा हुए। इन्होंने देश सेवा तथा समाज सेवा में प्रमुख भाग लिया। उनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। इन्होंने अनेक नाटकों की रचना की। गद्य तथा पद्य दोनों लिखते थे। चंद्रावली, भारतदुर्दशा, नील देवी, अंधेर नगरी, मुद्राराक्षस, सत्य हरिश्चंद्र आदि अनेक पुस्तकें लिखीं। राष्ट्रभाषा हिन्दी गद्य के जन्मदाता माने जाते हैं।

(३) देश भक्ति—ये नाम अधिकतर उपाधिसूचक हैं।

भारत—यह विशाल महाद्वीप उत्तर में हिमालय पर्वतराज, पूर्व-दक्षिण में महोदधि तथा दक्षिण-पश्चिम में रत्नाकर से आवृत है। यह कृषि-प्रधान देश खनिज पदार्थों से भी परिपूर्ण है। इसी हेतु यह सोने की चिड़िया कहलाता है। यहाँ के चित्र-विचित्र पशु-पक्षी तथा बहुमूल्य वनस्पति अपना विशेष स्थान रखते हैं। यह प्राचीन सभ्यता तथा संस्कृति का केंद्र है जहाँ से ज्ञान का प्रकाश चतुर्दिक प्रस्फुरित हुआ। सम्राट् भरत के नाम से भारत तथा आर्यों का निवास-स्थान होने से आर्यावर्त कहलाया। ये दोनों प्राचीन नाम हैं। इसे मुसलमान हिंद या हिंदुस्तान और अँगरेज इंडिया कहते हैं।

(४) राष्ट्रीय आंदोलन—

स्वदेशी—स्वदेशी का आंदोलन सन् १६०६ में बंगाल से आरम्भ हुआ। १६१० में कांग्रेस से स्वदेशी का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

क्रांति—६ अगस्त सन् १६४२ का देशव्यापी राज विद्रोह जिसने अँगरेजी शासन की नींव हिला दी।

अमन—कांग्रेस के प्रभाव को दबाने के लिए अँगरेजी सरकार ने अमन सभाएँ खोली थीं जिनमें राजकर्मचारी और कुछ चाटुकार ही सम्मिलित होते थे।

संघ—देखिये समीक्षण।

स्वराज्य—पहले-पहल स्वामी दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश में स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया। इसके उपरान्त १६०६ में दादा भाई नौरोजी ने स्वशासन या स्वराज्य का प्रस्ताव कांग्रेस के सामने रखा। १६१४ में एनी-बिसेण्ट की होमरूल लीग की स्थापना हुई, जो सन् १६१७ में अखिल भारत-वर्षीय होमरूल लीग कहलाई। २३ अप्रैल १६१६ को तिलक की होमरूल लीग बनाई गई। १६२६

में काग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव पास कर दिया। सन् १६४७ ई० को भारतीयों को स्वतंत्रता और स्वराज्य प्राप्त हो गये।

ग—गौण शब्द—

(१) वर्गात्मक—सिंह, सिनहा।

(२) सम्मानार्थक—(अ) आदरसूचक—जी, जू, बाबू, श्री।

(आ) उपाधिसूचक—राजा, राजेंद्र, राणा, लाल।

(३) भक्तिपरक—आनंद, किशोर, कुमार, कृष्ण, चंद, जंग, जीत, दास, देव, ध्वज, नंद, नंदन, नाथ, नारायण, पाल, प्रकाश, प्रणवीर, प्रताप, प्रयत्न, प्रबल, प्रबोध, बहादुर, भानु, भूषण, मणि, मल, मोहन, रणवीर, राज, राम, लाल, विक्रम, विहारी, वीर, शंकर, शरण, साहब, सेन, सेवक, स्वरूप।

(३) विशेष नामों की व्याख्या—(मूल प्रवृत्ति में देखिए)।

(४) समीक्षण

देश की राजनीतिक परिस्थिति कैसी थी। इस बात का पता इस प्रवृत्ति से चलता है। देश परतंत्रता के पञ्जे में जकड़ा हुआ था। उसको स्वतंत्र करने का प्रयत्न देशभक्तों की ओर से समय समय पर होता रहा। इन देशभक्तों की तालिका में राजा महाराजा तथा प्रजा वर्ग के अनेक वीर सम्मिलित हैं। पहले रीति काल के आचार्यों ने वीरों को चार वर्गों में विभक्त किया था। वस्तुतः इनके अतिरिक्त अन्य वीर भी हो सकते हैं। यह आवश्यक नहीं कि युद्ध में प्राण विसर्जन करनेवाला करवालधारी सैनिक ही वीरगति को प्राप्त हुआ समझा जावे। कलम का प्रयोग करनेवाला लेखक भी वीरों की गणना में आ सकता है क्योंकि वह अपनी पुस्तकों द्वारा मनुष्यों के विचारों को परिवर्तित कर देता है। वह क्रान्ति के लिए अनुकूल वातावरण एवं क्षेत्र प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार विज्ञान पर बलि होनेवाले आविष्कारक तथा निर्जन अगम्य एवं प्राणान्तक स्थलों में प्राणाहुति देनेवाले अन्वेषक भी वीर श्रेणी में ही आते हैं। क्योंकि उन्होंने अपने जीवन को विकट संकट में डालकर नूतन ज्ञान का प्रसार किया। इस संकलन में वीरों के पर्याप्त नाम मिलते हैं। जिनमें राजा-महाराजा, सैनिक, लेखक, धार्मिक व्यक्ति तथा देशभक्त सम्मिलित हैं। इससे वीर पूजा में भारतीयों की प्रगाढ़ श्रद्धा तथा निष्ठा प्रकट होती है।

यवन काल में देशभक्ति की लहर केवल कुछ राजा-महाराजाओं में ही उठी थी। शनैः-शनैः स्थिति परिवर्तित होती गई। मुसलिम साम्राज्य का दीप निर्वाण हुआ। अंगरेजीशासन ने मेघों के सदृश परिव्याप्त हो सम्पूर्ण भारत को आच्छादित कर लिया। अनाचार एवं अत्याचार से उत्पीड़ित देश त्राहि-त्राहि करने लगा। सन् १८५७ में राज-विद्रोह की एक प्रचण्ड ज्वाला प्रज्ज्वलित हुई। वह राजा तथा प्रजा दोनों का संयुक्त प्रयत्न था। किन्तु दुर्भाग्य वश वह सफलीभूत न हो सका। तदुपरान्त आर्यसमाज तथा कांग्रेस ने अपने प्रचार द्वारा मनुष्यों की मानसिक प्रवृत्तियों को बदलना प्रारम्भ किया। अँगरेजी साहित्य ने भी इसमें बड़ी सहायता की। मनुष्यों में विचार स्वातंत्र्य आने लगा। कष्ट सहने की क्षमता, साहसादि सद्वृत्तियाँ जाग्रत होने लगीं। अब वे भीरु से वीर हो गये। जन-साधारण में भी देशभक्ति के भाव भर गये। सहस्रों देशभक्त हँसते-हँसते अपने प्राणों की आहुतियाँ देने लगे।

स्वतंत्रता के रंग में रँगे हुए इस देश में उस समय अनेक आन्दोलनों का जन्म हुआ। वंगभंग के पश्चात् स्वदेशी का प्रबल प्रचार प्रारम्भ हो गया था। कांग्रेस ने स्वराज्य का प्रस्ताव

पास कर दिया। अन्ततोगत्वा सन् १९४२ में ऐसी देशव्यापी भीषण क्रान्ति[1] हुई कि अँगरेजों के छक्के छूट गये और वे सन् १९४७ में भारत को स्वराज्य दे अपने देश को चले गये।

वीर पूजा के वातावरण तथा महारथी साहित्यकारों की रचना ने देश-भक्ति की सुप्त भावना और भी जागरित कर दी। मनुष्यों का ध्यान अपनी जन्म-भूमि की दरिद्रता, दासता एवं विवशता की ओर आकृष्ट हुआ। स्वदेशी की लहरें उठने लगीं। क्रान्ति की आँधियों से विजातीय शासकों के दिल दहल गये। उन्होंने इस वर्द्धमान् क्रान्ति को प्रशान्त करने के लिए स्थान स्थान पर इनके विरोध में अमन सभाएँ स्थापित कीं; किन्तु उन्हें कुछ सफलता न मिली। मनुष्यों का विचार-स्वातंत्र्य इतना परिपक्व हो गया था कि अन्त में उन्होंने न केवल स्वतंत्रता ही अपितु स्वराज्य भी प्राप्त कर लिया। इस अन्ध युग में भी वीरों का आदर्श हमारे सम्मुख रहा, साहित्य ने उसे और भी प्रोज्वल कर दिया। भारत भक्तों का एक सेना-दल सन्नद्ध हो गया जिसने विविध उपायों से देश का उद्धार किया। वीर पूजा के अन्तर्गत मुसलिम तथा आंगल कालीन वीर ही दृष्टिगोचर हो रहे हैं। जब देश दासता की शृंखला से जकड़ा हुआ था प्रत्येक श्रेणी के वीरों ने अपना सर्वस्व बलि देकर मातृभूमि की सेवा की। भारती के सुपुत्रों में स्वतन्त्र हिन्दू काल के व्यक्ति भी सम्मिलित हैं। अन्य युगों के लेखकों को यहाँ स्थान नहीं दिया गया है। इसलिए यह संख्या अल्प है, उनके नाम अन्यत्र आ चुके हैं। स्वदेशी आन्दोलन में आवेग तथा आवेश दोनों थे जिससे वह देशव्यापी हो गया। अस्थायी क्रान्ति ने अपना प्रभाव चिरस्थायी कर दिया। अमन सभाओं में जनता की रुचि न थी, केवल राजकर्मचारी तथा कुछ चाटुकार राजभक्त ही उनमें सम्मिलित होते थे। बौद्ध काल में संघ अत्यंत शक्तिशाली था। तीन शरणों में संघ शरण भी प्रसिद्ध रहा। 'संघ शरणंगच्छामि' की शपथ लेनी पड़ती थी। उसके उपरान्त किसी प्रबल संघ की स्थापना नहीं हुई। कांग्रेस विदेशी शब्द था अतः जन-समाज के नामों में प्रचलन न पा सका। स्वतन्त्रता तथा स्वराज्य सबको प्रिय लगते हैं। यद्यपि ये शब्द नाम के लिए उपयुक्त नहीं हैं तथापि कुछ नामों से इनकी सूचना भी मिलती है। देशभक्ति के नाम प्रायः उपाधियों से ही बने हैं जिनका आधार देश तथा भारत शब्द ही हैं।[2]

---

[1] नौ अगस्त (लड़के का नाम) और सन् बयालीस (लड़की का नाम) इस क्रांति के स्मारक नाम हैं।

[2] प्रस्तुत नामों के अतिरिक्त चार नाम राजनीतिक दृष्टि से बड़े महत्त्व के देखने में आये हैं जिनसे राजनीति की अद्यतन प्रगति का चित्रण प्रत्यक्ष हो जाता है। इस निबंध से उनका कोई सम्बन्ध न होते हुए भी वे स्खलित शृंखला की उन विलुप्त कड़ियों के सदृश हैं जिनसे उसकी पूर्ति में सहायता मिल सकती है। पाकिस्तान तथा मुसलिमलीग इन दो मुसलमानी नामों का उल्लेख भूमिका के पूर्वार्द्ध में हो चुका है। मुसलिमलीग कांग्रेस की प्रतिद्वंद्वी संस्था थी जिसके कारण भारतवर्ष का विभाजन हुआ और पाकिस्तान तथा हिन्दुस्तान दो पृथक्-पृथक् राज्यों की नींव पड़ी। तीसरा नाम एलबर्ट कृष्ण अली है जो खिलाफत के दिनों का स्मरण दिलाता है, जब कि 'हिन्दू मुसलिम भाई भाई' के नारे लगाये जाते थे। इस नाम में हिन्दू, इसलाम तथा ईसाई संसार के तीन बड़े बड़े धर्मों का कैसा सुन्दर समन्वय दृष्टिगोचर हो रहा है। चौथा नाम 'बुलगानिनसिंह' है जो रूस के महामात्य बुलगानिन तथा सोवियत कांग्रेस के नेता खुरश्चेव के भारत आगमन का नवीनतम संदेश दे रहा है।

(२) इतिहास

१—गणना

(क) क्रमिक गणना

(१) नामों की संख्या—४६४

(२) मूल शब्दों की संख्या—२३६

(३) गौण शब्दों की संख्या—३३

(ख) रचनात्मक गणना—

काल	एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	पंचपदी नाम	षट्पदी नाम	योग
पौराणिक काल	७	२३	१७	३			५०
रामायण काल	९	४०	३०		१		८०
महाभारत काल	१९	६९	२३	२	१		११४
आधुनिक काल	२९	१३३	३९	३			२०४
वैदेशिक नाम	६	१०					१६
	७०	२७५	१०९	८	१	१	४६४

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द—

पौराणिक काल—अंशुमान, अज, असमंजस, उत्तम, दिलीप, दुष्यंत, बलि, भगीरथ, मांधाता, मोरध्वज, रंतू, रग्घू, रघु, रघुआ, रोहताश, रोहिताश्व, शाल्वेद्र, सर्वदमन, हरिचंद, हरिचंदी, हरिश्चंद्र।

रामायण काल—अंगद, इंद्रजीत, कुंभकरण, कुश, कुशध्वज, कुशिया, चंद्रकेतु, चरत, जनक, जनकू, जामवंत, दधिवल, दधिराम, दशरथ, दूतराम, धर्मध्वज, बाली, बाले, मिथिलाबिहारी, मिथिलेश, मेघनाद, जनक, विभीषण, रामसखा, रावण, रिच्छपाल, रिच्छेश्वर, लङ्केश, लव, लवकुश, लवा, सखाराम, सुखेन, सुग्रीव, सुमंत, हरिनाथ, हरिराज, हरीश।

महाभारत काल—अभिमन्यु, अर्जुन, उग्रसेन, उत्तराकुमार, कंस, कन्ना, कन्नू, कन्नो, करना, कर्ण, कुंती, कुंतीश, कृष्णा, गांधारी, चंद्रभान, चंद्रहास, चित्रांगद, जनमेजय, जुरजोधन, दुर्योधन, दुश्शासन, देवव्रत, द्रोपद, धनंजय, धर्मराज, धर्मावतार, धर्मेंद्र, धृष्टद्युम्न, धौकल, नकुल, परीच्छित, वभ्रुवाहन, भिम्मा, भीम, भीमा, युधिष्ठिर, रुकम, रुक्म, रेवत, विचित्रवीर्य, शिशुपाल, शूरसेन, सकनू, सकने, सकुन, सखालाल, सहदेव, सुफलक, सुयोधन।

उत्तर महाभारत काल—अकबर, अजयपाल, अनंगपाल, अमरू, अमीचंद, अशोक, अहिल्या, इंद्रजीत, करमचंद, कुंभ, कुम्भा, कुमारपाल, खड़गसिंह, खुर्रम, गोराचाँद, चंद्रगुप्त, चंपत, चंपा, चंपू, चित्तू, चित्रकेतु, जगमल, जयचंद, जयमल, जयसिंह, जसवंत, जहाँगीर, जहाँदर, जालिमसिंह, जुझारसिंह, जोधन, जोधराज, जोधा, जोधी, टीपू, टुड़िया, टोडर, टोडरमल, टोड़ी, टोड़े, दलीप, दिलसुख, धान, ध्यानसिंह, ध्यानी, नंदकुमार, नवनिहारसिंह, नवरंग, नवरत्न, नारंग, नारंगी, नौरंग, नौरंगी, नौरतन, परमाल; परमालिक, पिरथी, पिरथीराज, पुष्पजित, पुष्पदत्त, पुष्पमित्र, पुष्यमित्र, पृथ्वी. पृथ्वीराज, प्रियदर्शी, बद्दल, बहादुर, बाज, बाजबहादुर, बाजी, बादल, बीरबल, बीरम, भगमल, भम्मा, भामाशाह, भारा, भारामल, भावसिंह, भोज, भोजा, भोजी, मकरंद, मलहर, महानंद, मान, मानसिंह, मालचन्द, मौर्य, यशवंत, रणजीत, रणधीर, रणवीर, रतनसिंह, राजसिंह, रामराय, रामसिंह, रायसिंह, रूपवसंत, लखमीचन्द, विशाल, वीरवृषल, शक्तिसिंह,

शालिवाहन, संग्रामसिंह, समुद्र, सलेम, सुजान, सुजानी, स्कंद, हमीर, हर्ष. हर्षवर्धन, हिम्मत बहादुर, हिम्मा, हुलकर।

वैदेशिक—अफलातून, नादिर, नियादर, न्यादर, बहराम, रुस्तम, लुकमान, सिकंदर, सुलेमान, सोहराब, हातिम।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति

अंशुमान—महाराज सगर के पौत्र।

अज—दशरथ के पिता।

असमंजस—सगर के पुत्र

उत्तम—महाराज उत्तानपाद के पुत्र. ध्रुव के सौतेले भाई।

दिलीप—रघु के पिता थे, इनकी गोभक्ति प्रसिद्ध है।

दुष्यंत—एक पुरुवंशी राजा जिन्होंने शकुन्तला से गंधर्व ब्याह किया था, इनसे सर्व दमन (भरत) प्रतापी पुत्र उत्पन्न हुआ।

बलि—प्रह्लाद के पौत्र जिसको विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था।

भगीरथ—सगर के वंशज जो गंगाजी को पृथ्वी पर लाये।

मांधाता—एक सूर्यवंशी राजा, जो सतयुग में हुए थे। यह अपने पिता युवनाश्व के उदर से उत्पन्न हुए, जन्मते ही ऋषियों ने यह प्रश्न किया 'कं एषध्यास्यति' उसी समय इंद्र ने उतर दिया "मां धास्यतिः' इसीलिए इनको मांधाता कहते हैं।

मोरध्वज—राजा मोरध्वज ने अपने पुत्र को आरे से चीरकर छद्मवेषी कृष्ण तथा अर्जुन के सिंह को खाने को दिया। इसकी राजधानी अहिक्षेत्र (बरेली) थी।

रंतू—यह रंति का विकृत रूप है जो रंतिदेव का पूर्वार्द्ध है. यह चंद्रवंशी राजा भरत की छठी पीढ़ी में हुआ था। यह बहुत ही धार्मिक तथा उदार चित्त था और अतुल संपत्ति का स्वामी था। उसने वृहत् यज्ञ किये जिनमें बलि तथा भोजन के लिए वध किये हुए पशुओं के चर्म से रुधिर की चर्मण्यवती (चम्बल) नामक सरिता बहने लगी।

रघु—प्रसिद्ध सूर्यवंशी महाराजा रघु, जिनके नाम से रघुवंश चला।

रोहिताश्व—हरिश्चंद्र के पुत्र।

शाल्वेंद्र—शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन, सत्यवान के पिता।

सर्वदमन—दुष्यंत तथा शकुन्तला के पुत्र, जिनके नाम से यह देश भारतवर्ष कहलाया।

हरिश्चंद्र—सत्यवादी तथा दानी राजा हरिश्चंद्र सूर्य वंश में उत्पन्न हुए थे। इनकी स्त्री का नाम शैव्या तथा पुत्र का नाम रोहिताश्व था। इनके सत्य की परीक्षा के लिए विश्वामित्र ने इन्हें बड़ा कष्ट दिया। अन्त में राजा सफल हुए।

रामायण काल —

इंद्रजीत—इंद्र को जीतने से मेघनाद को इंद्रजीत कहते हैं।

कुशध्वज—जनक के भाई।

चंद्रकेतु—लक्ष्मण के पुत्र।

दधिवल—राम की सेना का एक बंदर।

दूतराम—अंगद।

धर्मध्वज—एक जनकवंशी राजा का नाम।

बालि—अंगद का पिता।

मिथिलेश—जनक।

रामसखा—सुग्रीव ।

रिच्छेश्वर—जामवंत ।

लवकुश—सीता-राम के पुत्र ।

सुखेन—एक वैद्य जिन्होंने लक्ष्मण के लिए संजीवनी बूटी मंगवाई थी ।

सुमंत—दशरथ के सचिव ।

हरिनाथ, हरीश, हरिराज—सुग्रीव ।

महाभारत काल—

अभिमन्यु—अर्जुन का पुत्र । उसने चक्रव्यूह का विच्छेदन किया था । छल से जयद्रथ ने उस वीर बालक का वध कर डाला ।

उग्रसेन—कंस के पिता ।

उत्तरा कुमार—परीक्षित ।

कर्ण—कुन्ती के पुत्र कर्ण । यह बाण विद्या में निपुण थे । दुर्योधन ने अपनी ओर मिलाने के लिए इन्हें अंग देश का राजा बना दिया । उसकी ओर से महाभारत में इन्होने घोर संग्राम किया । कर्ण का दान प्रसिद्ध है ।

कुंतीश—कुंती के स्वामी पांडु ।

कृष्णा—द्रौपदी ।

गंधारी—दुर्योधन की माँ ।

चंद्रभान—कृष्ण सत्यभामा के पुत्र ।

चंद्रहास—केरल का राजा, सुधार्मिक का पुत्र, मूल नक्षत्र में पैदा हुआ । इसके बाये पैर में छै अंगुलियाँ थी । इसके बाप को शत्रुओं ने मार डाला । यह दीन और अनाथ होकर इधर-उधर मारा-मारा फिरा । अत्यंत प्रयत्न तथा प्रयास के बाद फिर अपना राज पा लिया । कृष्ण और अर्जुन अश्वमेध का घोड़ा लेकर जब दक्षिण आये तो इसने उनसे मित्रता कर ली ।

चित्रांगद—राजा शातनु और सत्यवती के पुत्र ।

जनमेजय—राजा परीक्षित के पुत्र थे ।

दुश्शासन—दुर्योधन का अत्याचारी भाई । इसने भरी सभा में द्रौपदी का चीर हरण किया था ।

देवव्रत—भीष्म, अपने पिता शातनु की इच्छापूर्ति के लिए आजन्म ब्रह्मचारी रहने का भीषण व्रत धारण किया इसलिये इनको भीष्म भी कहते हैं ।

द्रोपद—द्रोपदी के पिता ।

धनंजय—अर्जुन—सर्वाञ्जनपदाञ्जित्बा वित्तमादाय केवलं, मध्ये धनस्य तिष्ठामि तेनाहुर्मां धनंजय ।

धर्मराज—युधिष्ठिर ।

धृष्टद्युम्न—द्रोपदी के भाई, इन्होंने द्रोणाचार्य का सिर काट लिया था ।

धौकल—ध्रुव कर्ण का अपभ्रंश ।

नकुल—नकुल सहदेव माद्री के पुत्र तथा अर्जुन के भाई थे । यह अश्व-विद्या में बड़े चतुर थे ।

परीक्षित—अर्जुन के पौत्र ।

बभ्रुवाहन—अर्जुन का पुत्र जो चित्रांगदा से उत्पन्न हुआ था ।

रुक्म—रुक्मिणी का भाई ।

रेवत—बलराम के ससुर का नाम।

विचित्रवीर्य—शांतनु के पुत्र।

शिशुपाल—चेदि का राजा जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।

शूरसेन—कृष्ण के पितामह।

सकुन—(शकुनि) दुर्योधन का मामा जो द्यूतविद्या में बड़ा निपुण तथा दुष्ट स्वभाव का था।

सखालाल—अर्जुन।

सुफलक (श्वफल्क)—अक्रूर के पिता—

सुयोधन—दुर्योधन।

आधुनिक काल—

अकबर—(सन् १५५६-१६०५) मुगल-सम्राट् अकबर महान् हुमायूँ का पुत्र था। यह चतुर शासक, प्रवीण प्रबंधक, उदार, गुण-ग्राही तथा नीतिकुशल था। इसने हिन्दुओं के साथ सदयता तथा सहृदयता का व्यवहार कर उन्हें मिलाने की सफल चेष्टा की। राणा प्रताप के अतिरिक्त अन्य सभी राजपूत अकबर के अधीन हो गये। इसके दरबार के सप्तरत्न प्रसिद्ध हैं।

अजयपाल—अजमेर के एक चौहान राजा का नाम।

अजीतसिंह—महाराजा जसवंतसिंह के पुत्र जो उनकी मृत्यु के बाद पैदा हुए थे। उनका पालन-पोषण वीर दुर्गादास ने किया और राजगद्दी पर बिठाया। औरंगजेब ने इनको अपने अधीन करने के लिए कई आक्रमण किये किन्तु वह अपने उद्देश्य में सफल न हुआ।

अनंगपाल—दिल्ली के महाराज पृथ्वीराज के नाना थे, इनकी मृत्यु के बाद दिल्ली और अजमेर पृथ्वीराज के अधिकार में आ गये।

अमरू (अमरसिंह)—यह राजा जसवंतसिंह के बड़े भाई थे जिनको उनके पिता राजा गज-सिंह ने मारवाड़ से निकाल दिया था। शाहजहाँ ने इनको अपना दरबारी बनाया और नागौर की जागीर दी। यह बड़े वीर, स्वाभिमानी तथा उद्धत स्वभाव के थे। एक बार बहुत दिन दरबार से अनुपस्थित रहे। मृगया से लौटने पर बादशाह ने कोई कटु शब्द कहा और धन दण्ड देने की धमकी दी। अमरसिंह ने उत्तेजित हो बक्शी सलावत खाँ को बादशाह के सामने ही मारकर गिरा दिया और शाहजहाँ पर भी प्रहार किया किन्तु वह खाली गया। बादशाह ने अन्दर भागकर अपनी जान बचाई। वीर राठौर ने कई दरबारियों की जान ली। अंत में वह भी मारा गया। आगरे के किले में अमरसिंह राठौर का फाटक अब भी प्रसिद्ध है।

अमीचंद—यह कलकत्ते का साहूकार जगत सेठ के वंश का था। इसने नवाब सिराजुद्दौला के विरुद्ध क्लाइव द्वारा रचित षड्यंत्र में भाग लिया। उसने धमकी दी कि यदि ३० लाख रुपये न दिये जायँगे तो सारा भेद नवाब से कह दूँगा। क्लाइव ने एक जाली कागद दिखलाकर उसको शांत किया, अंत में अमीचंद को कुछ न मिला तो वह पागल हो गया।

अशोक—सम्राट् अशोकवर्धन महान् भारतवर्ष के प्रसिद्ध शासकों में गिने जाते हैं। कलिंग युद्ध से पहले क्रूर तथा निर्दय स्वभाव के थे, इसके पश्चात् अचानक ही इनके जीवन में परिवर्तन हो गया और वे रक्तपात से घृणा करने लगे। अन्त में बौद्ध-धर्म के अहिंसा रूप को स्वीकार कर लिया। बौद्ध-धर्म के प्रचार के लिए इन्होंने स्थान-स्थान पर बौद्धधर्म की शिक्षाएँ स्तंभों तथा शिलाओं पर खुदवाईं। अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री को बौद्धधर्म के प्रचारार्थ लङ्का भेजा।

अहिल्याबाई—इंदौर के महाराज मल्हारराव हुलकर की स्त्री थीं। यह बहुत धर्मात्मा तथा उदार चित्त थी।[1]

इंद्रजीत—ओरछा-नरेश के भाई जो बड़े दानी थे।[2]

करमचंद—दानी कर्मचंद।[3]

कुम्भ (कुम्भा)—१४१६ में गद्दी पर बैठा। मेवाड़ के राना लाखा के पुत्र, कुम्भा बड़े वीर योद्धा थे। इन्होंने मालवा के महमूद खिलजी को युद्ध में परास्त किया और चित्तौड़ में एक विजय-स्तम्भ इसके स्मारक में बनवाया। इन्होंने मेवाड़ की रक्षा के लिए चौरासी दुर्गों में से ३२ दुर्ग बनवाये और अनेक वीरोचित कार्य किये। यह कवि भी थे। प्रसिद्ध मीराबाई इनकी स्त्री थीं। यह १४१६ में गद्दी पर बैठे।

कुमारपाल—(११४३-११७३) यह गुजरात का एक न्यायनिष्ठ कुशल तथा सर्वप्रिय राजा हुआ है जिसने सोमनाथ के मन्दिर का पुनरुद्धार किया। जैन कवि हेमचंद इसके पुरोहित थे।

खड़गसिंह—महाराज रणजीतसिंह का पुत्र जो उनकी मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठा।

खुर्रम—(शाहजहाँ) (१६२७-१६५६) मुगल सम्राट् शाहजहाँ के बचपन का नाम, इसके शासन-काल में कला-कौशल की अधिक उन्नति हुई थी। दीवान आम, दीवान खास, दिल्ली के किले में दो अनुपम राजप्रासाद बनवाये। संसार की विचित्र वस्तुओं में इसके निर्माण किये हुए ताजमहल की गणना की जाती है। विख्यात मयूर सिंहासन इसी विलास व्यसनी सम्राट् ने बनवाया था। अंतिम बीस वर्ष इसने अपने पुत्र औरङ्गजेब के कारागार में व्यतीत किये।

गोरा—प्रसिद्ध वीर राजपूत जिसने चित्तौड़ की रानी पद्मिनी की रक्षा के लिए अपनी जान विसर्जन की।

चंद्रगुप्त—महानंद की मृत्यु के बाद चंद्रगुप्त मौर्य मगध के राजा हुए जिन्होंने अपनी वीरता तथा कुशलता से अपने राज्य में वृद्धि की। यूनान के प्रसिद्ध सेनापति सिल्यूकस को परास्त कर उसकी कन्या से ब्याह किया। कौटिल्य शास्त्र के प्रणेता प्रसिद्ध चाणक्य इनके गुरु थे।

---

[1] भारती को देखा नहीं, कैसा है रामा का रूप केवल कथाओं में ही सुने चले आते हैं।
सीताजी का शील सत्य, वैभव शची का कहीं किसी ने लखा ही नहीं ग्रन्थ ही बताते हैं।
'दीन' दमयन्ती की सहनशीलता की कथा झूठी है कि सच्ची कौन जाने कवि गाते हैं।
इंदुपुर-वासिनी प्रकाशनी मल्हार वंश मातु श्रीअहिल्या में सभी के गुण पाते हैं।
(ला० भगवानदीन)

[2] वे तुरंग सेत रंग संग एक, ये अनेक,
हैं सुरंग अंग-रंग पै कुरंग-मीत से।
ये निसंक-अंक-यश, वे ससंक केसौदास,
ये कलंक-रंक, वे कलंक ही कलीत से।
वे पिये सुधाहि ये सुधा-निधीस के रसैजू,
साँच हू सुनीत ये पुनीत, वे पुनीत से।
देहि ये दिये बिना बिना दिये न देहि वे,
हुए न हैं न होंहिंगे न इंद्र इंद्रजीत से।
—केशवदास।

[3] मेरे जाने मेरे तुम कान्ह हौ करमचंद तेरे जाने तेरौ मैं तो बापुरो सुदामा हूँ।

चंपत—(चंपतराय) ओरछा के राजा छत्रसाल के पिता।

चित्तू—एक पिंडारी सरदार।

जगमल—राणा उदयसिंह के बाद जगमल उदयपुर के सिंहासन पर बैठा। किन्तु अन्य सामंतों ने इसको गद्दी से हटाकर महाराणा प्रताप को उसी स्थान पर बिठलाया।

जयचंद—कन्नौज का राजा, पृथ्वीराज का प्रतिद्वंद्वी। इसकी कन्या संयोगिता का हरण पृथ्वी राज ने किया था।

जयमल—चित्तौड़ का एक वीर सरदार जो चित्तौड़ की रक्षा करते हुए अकबर के द्वारा मारा गया।

जय सिंह—१—राना जय सिंह (१६८०-९८)—इसने औरंगजेब के साथ संधि कर ली।

२—मिर्जा राजा जय सिंह (१६२५-६७)—औरंगजेब ने इसको ६००० का मनसबदार बनाया। शिवाजी को दिल्ली जाने में इसी का प्रयत्न था और इसी के षड्यंत्र से शिवाजी वहाँ से मुक्त हुए। औरंगजेब ने इसके पुत्र को लालच देकर मरवा डाला तब से अंबर की अवनति आरम्भ हुई।

३—सवाई जयसिंह—(१६६३-१७४३)—इसने दक्षिण की लडाइयों में बड़ी वीरता दिखलाई। मारवाड के राजा ने इससे संधि की। इसने जयपुर की नींव डाली और कई स्थानों पर वेधशालाएँ बनवाई। यह ज्योतिष का बडा पंडित था।

जसवन्त सिंह—(१६३८-७०) चतुर तथा वीर शासक थे औरंगजेब की अध्यक्षता में इन्होंने कई लड़ाई लड़ी। युवराज दारा ने इनको मालवा का अधिपति बना दिया। शाहजहाँ के पुत्रों में राज्य के लिए युद्ध छिड़ गया। इस लड़ाई में जसवंत सिंह ने विशेष भाग लिया, औरंगजेब ने भयभीत होकर उनको काबुल के अफगानी विद्रोहियों को दबाने के लिए भेज दिया जहाँ वे मारे गये।[1]

जहांगीर—(१६०५-१६२७) भारत का न्यायप्रिय मुगल सम्राट् था। राज का समस्त कार्य इसकी बुद्धिमती रानी नूरजहाँ किया करती थी।

जहाँदर—जहाँदारशाह का राज्याभिषेक १० अप्रैल १७१२ को लाहौर में हुआ १७१२ में विद्रोहियों के हाथ मारा गया। देहली में हुमायूँ के मकबरे के पास गाड़ दिया गया।

जालिम सिंह—कोटा के राव राना जालिम सिंह बड़े नीतिकुशल तथा चतुर शासक थे। उन्होंने अपने राज को मराठो और पठानो से बचाया। सन् १८१७ ई० में उन्होंने अँगरेजों से संधि कर ली।

जुझार (<युद्ध) सिंह—ओरछा के राजा वीरसिंह देव बुंदेला के पुत्र थे।

जोधन—(१) जोधाबाई—बीकानेर के रायसिंह की पुत्री जहाँगीर को ब्याही गई थी जिससे शाहजहाँ पैदा हुआ। इसकी कबर आगरे के पास सिकंदरे में है। (२) जोधा (१४४४-८८) इसने जोधपुर की नींव डाली और मंडोर के स्थान में इसी को अपनी राजधानी बनाया।

टीपू—मैसूर के राजा हैदर अली का पुत्र था।

टोडरमल—अकबर का बुद्धिमान् अर्थसचिव।

दिलीप—महाराज रणजीत सिंह का पुत्र। (२) रघु के पिता, दशरथ के पूर्वज।

दिलसुख—राजा दिलसुख राय एटा जिला के साधारण व्यक्ति थे जो गदर में अँगरेजों की सहायता करने के कारण राजा बना दिये गये।

---

[1] दान मांझ तरुराज अरु मान॰ मांझ कुरुराज।
नृप जसवंत तो सम कहत, ते कवि निपट निकाज॥
(कविराजा मुरारिदान)

ध्यान सिंह—रणजीत सिंह का मंत्री।

नंद कुमार—यह बंगाली ब्राह्मण थे जिन्होंने हेस्टिंग्स पर अभियोग चलाया था। हेस्टिंग्स ने इनको जालसाजी का दोष लगाकर फाँसी दिलवा दी।

नव निहार सिंह—महाराज पृथ्वीराज का सुयोग्य पौत्र जो किले के फाटक गिरने से मर गया।

नवरंग (औरंगजेब)—(१६५६-१७०७) एक मुगल बादशाह जो अपने धर्म का बड़ा कट्टर था। यह हिन्दुओं से दुर्व्यवहार करता था। मुगल राज का पतन इसकी मृत्यु के बाद आरम्भ हुआ।

नवरत्न—विक्रमादित्य के सभा के ये नव रत्न हैं :—

धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वैताल, घटकर्पर, कालिदास वराह मिहिर, वररुचि।

परमाल—यह महोबा के राजा थे जिनके यहाँ आल्हा-ऊदल रहते थे।

पिरथीराज (पृथ्वीराज)—यह अंतिम दिल्ली के हिन्दू राजा थे। इन्होंने मुहम्मद गोरी को कई बार हराया। इनके दरबार में चंद्र बरदाई नाम का एक कवि था जिसने इनका पूरा जीवन-चरित अपने रासो में लिखा है।

पुष्पमित्र—ई० पू० दूसरी शताब्दी में यह मगध का राजा था इसका राज्य नर्वदा तक फैला हुआ था। इसने विदेशी यवन राजा मिनेंडर को जीतकर अपना राज्य बढ़ाया। इस शुंगवंशी राजा ने दोअश्वमेध यज्ञ भी किये।

प्रियदर्शी—महाराजा अशोक की उपाधि।

बहादुर (बहादुर शाह)—अंतिम मुगल बादशाह जिसने गदर में भाग लिया था इसलिए अँगरेजों ने कैद कर रंगून भेज दिया। इसका उपनाम जफर था। इसका अंतिम यह शेर प्रसिद्ध है :—

दम दमे में दम नहीं है, खैर माँगो जान की।
बस जफर अब हो चुकी, शमशेर हिन्दुस्तान की।
इन पंक्तियों से कैसी विवशता टपकती है।

बाजबहादुर—मालवा का शासक था। इसकी रानी रूपमती अत्यंत सुंदर थी। बाजबहादुर और रूपमती की प्रेमकथा प्रसिद्ध है।

बाजी—बाजीराव पेशवा जो बिठूर में रहता था।

बादल—एक वीर बालक, उसने पद्मिनी को बचाने में बड़ी वीरता दिखलाई।

बीरबल—यह अकबर के ७ रत्नों में गिने जाते हैं, इनकी बुद्धि विलक्षण थी। इनके चुटकुले प्रसिद्ध हैं।

बीरम—(बैरम खाँ) अकबर के संरक्षक, हिन्दी के कवि रहीम खानखाना के पिता थे।

भम्मा—भामाशाह—चित्तौड़ के दानवीर भामाशाह जिन्होंने समस्त कोष महाराणा प्रताप को समर्पण कर दिया था।

भावसिंह—मतिराम ने इस राजा की दानशीलता का परिचय दिया है।[१]

भोज—धारा नगरी के राजा जिनके समय में संस्कृत का अधिक प्रचार हुआ।

---

[१] दिन दिन दीन्हें दूनी संपति बढ़ति जाति ऐसो याकों कछू कमला को बर वर है।
हेम हय हाथी हीरा वकसि अनूप जिमि, भूपन को करत भिखारिन को घर है।
कहै मतिराम और जाचक जहान सब एक दानि सत्रुसाल नंदन को कर है।
राव भावसिंह जू के दानि की बड़ाई देखि, कहा कामधेनु है कछू न सुरतरु है।

मकरंद—आल्ह खंड का एक राजा।

मल्हर राव (हुलकर)—इन्दौर का मराठा शासक।

महानंद—मगध के राजा इनकी मृत्यु के बाद चंद्रगुप्त शासक हुआ।

मान—(राजा मानसिंह) अकबर के विश्वसनीय दरबारी, जोधपुर के महाराजा भारमल के पौत्र थे।

मालचंद्र—यह नाम जोधपुर के राजा मालदेव के नाम पर रखा गया प्रतीत होता है। मालदेव ने बड़ी वीरता से शेरशाह का सामना किया, किन्तु शेरशाह के षड्यंत्र के कारण उनके और सामंतो के बीच अविश्वास हो गया। यह शिवाना के दुर्ग को भाग गये।

रणजीत (सिंह)—पंजाब के सिक्ख राजा जिन्होंने काश्मीर जीतकर अपने राज में मिला लिया था।

रतनसिंह—चित्तौड की रानी पद्मिनी के पति।

राजसिंह—१६५२-८०, इस शूरवीर राना ने औरंगजेब से लड़ाई छेड़ दी और रूपनगर में शाही फौजों को काटकर वहाँ की राजकुमारी से शादी कर ली। उसने कई बार शाही सेना पर विजय प्राप्त की।

रामराय—एक पेशवा का नाम।

रामसिंह—यह जोधपुर की गद्दी पर बैठते ही गृह युद्ध में लिप्त हो गये और अंत में हारकर राजसिंहासन छोड़कर भाग गये।

रायसिंह—बीकानेर का राजा था।

विक्रमादित्य—उज्जेन के न्यायप्रिय तथा दानी महाराज जिनकी सभा के नवरत्न प्रसिद्ध हैं। सिंहासन बत्तीसी और बैताल पच्चीसी में इनकी वीरता, निपुणता, उदारता, साहसादि अनेक गुणों का वर्णन है। इन्होंने मालवा से शकों को निकाल दिया था, तभी से विक्रम संवत् प्रचलित हुआ। विक्रमादित्य दान, कृत्य तथा साधना में अद्वितीय थे।[1]

विशाल—वीसलदेव या विग्रहराज बारहवीं शताब्दी के मध्य में अजमेर और दिल्ली का राजा हुआ। स्वयं कवि था और कवियों का मान करता था।

वीर वृषल—वृषल चंद्रगुप्त का नाम है (देखिए चंद्रगुप्त)।

शक्तिसिंह महाराणा प्रताप का अनुज।

शालिवाहन—शक जाति का एक प्रसिद्ध राजा जिसने शक संवत् चलाया।

संग्रामसिंह (राणा सांगा)—यह बड़े वीर थे। युद्ध करते-करते इनके शरीर में ८४ घाव हो गये थे। खनुआ के युद्ध (१५२६) में बाबर से युद्ध करते मारे गये।

समुद्र (समुद्र गुप्त)—गुप्त राजवंशीय एक बड़े वीर प्रतापी राजा।

सलेम—सलीम—जहाँगीर।

सुजान—भरतपुर के महाराज वदनसिंह के पुत्र सुजानसिंह उपनाम सूरजमल बड़े पराक्रमी, वीर योद्धा थे। इनके पुत्र जवाहरसिंह थे। इन जाट राजाओं ने कई बार दिल्ली को लूटा।

स्कंदगुप्त—(४५०-४६७) गुप्त वंश के प्रसिद्ध पराक्रमी सम्राट्।

हमीर—चित्तौड़ के राणा कुंभ का उत्तराधिकारी था। यह अत्यंत वीर तथा पराक्रमी था। इसका हठ प्रसिद्ध है। "तिरिया तेल हम्मीर हठ चढ़ेन दूजी बार।"

---

[1] यत्कृतम् यन्नकेनापि यद्दत्तं यन्न केनचित्।
यत्साधितमसाध्यं च विक्रमार्केण भूभुजा॥

हर्षवर्धन—भारतवर्ष का एक बड़ा प्रतापी राजा हुआ। इसने पंजाब, कन्नौज, गौड, मिथिला, उड़ीसा आदि देशों को जीतकर कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया। इसकी सभा के बाण कवि ने हर्ष चरित्र लिखा। चीन का प्रसिद्ध यात्री ह्वेनसांग इसी के समय भारतवर्ष में आया था।

हिम्मतबहादुर— यह बाँदा के शासक थे। इनका असली नाम गुसाईं अनूपगिरि था। महाकवि पद्माकर ने इनकी प्रशंसा में "हिम्मत बहादुर विरदावली" नामक पुस्तक की रचना की है।

हुलकर—इन्दौर के मरहठा राजा हुलकर नाम से प्रसिद्ध हैं।

वैदेशिक—

अफलातून—(Plato) यूनान का एक प्रसिद्ध दार्शनिक, यह सुकरात का शिष्य था।

नियादर—नादिरशाह खुरासान के गड़रिये का लड़का था जो अपने पराक्रम से ईरान का राजा हो गया। महमूद के शासन काल में सन् १७३६ में आक्रमण किया और दिल्ली को लूटकर तख्तताऊस के साथ बहुत सा माल ले गया।

रुस्तम—ईरान का प्रसिद्ध वीर योद्धा।

लुकमान—प्रसिद्ध वैद्य।

सिकंदर—यूनान का बादशाह जिसने भारत पर आक्रमण किया था।

सुलेमान—यहूदियों का एक बादशाह जो पैगम्बर माना जाता है।

सोहराब—रुस्तम का पुत्र, जो अज्ञान के कारण अपने पिता के हाथों से मारा गया।

हातिम—यमन के राजा तई का पुत्र जो बड़ा परोपकारी, धार्मिक तथा सत्यवादी था। इसने अपनी विचित्र बुद्धि से सात गूढ़ पहेलियों को हल किया। इसकी कहानियाँ राजा विक्रमादित्य की वैतालपचीसी का स्मरण दिलाती हैं। इसका समस्त जीवन दूसरों की भलाई करने में व्यतीत हुआ। यह हातिमताई के नाम से प्रसिद्ध है।

ग—गौण शब्द—

(१) वर्गात्मक—राय, सिंह।

(२) आदरसूचक—जू।

(३) भक्ति परक—आनंद, इंद्र, किशोर, कुमार, कृष्ण, चंद, दत्त, दास, दीन, देव, नंदन, नाथ, नारायण, पति, पाल, प्रकाश, प्रताप, प्रसाद, बहादुर, मणि, मल, मोहन, राज, राम, लाल, वंश, विहारी, वीर, शरण, सहाय, स्वरूप।

३—विशेष नामों की व्याख्या

देखिए मूल शब्दों की निरुक्ति

४—समीक्षण

देश काल के विचार से इतिहास का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। पौराणिक काल से लेकर आज तक के अनेक देशों के उज्ज्वल हीरे छायापथ की नक्षत्रमाला के जाज्वल्यमान तारकों के सदृश चमक रहे हैं। अपूर्व आदर्श, सात्विक प्रवृत्तियाँ, अटल व्रत-अनुष्ठानों तथा अद्भुत गुणों को लेकर पूर्वकालीन महापुरुष हमारे सम्मुख उपस्थित होते हैं। यह भारत की विभूतियां एक अपूर्व संदेश दे रही हैं। प्रत्येक महापुरुष किसी न किसी गुण का प्रतीक है। इसमें पौराणिक काल के सूर्य तथा चंद्रवंशी राजाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित हैं जो अपने अलौकिक गुणों के कारण प्रसिद्धि पा चुके हैं।

रामायण के रामादि तथा महाभारत के कौरव पांडवादि अनेक पात्र दृष्टि गोचर हो रहे हैं।

इतिहास के अर्वाचीन काल में राजपूताना तथा मगध का विशेष स्थान है। राजस्थान के

मेवाड़ तथा मारवाड़ के कुल कई कारणों से अच्छी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। मगध में कई राजवंशों ने जन्म लिया तथा क्रमशः राज्य विस्तार करते-करते उत्तरी भारत के स्वामी बन गये, सबसे प्रथम चंद्रगुप्त मौर्य का नाम आता है जिसने यूनानियों को परास्त किया, मैगस्थनीज के वृतांत तथा कौटिल्य (चाणक्य) अर्थशास्त्र मौर्यकालीन देश का सम्यक् विवरण देते हैं। इस वंश का दूसरा प्रसिद्ध राजा महाराज अशोक हैं जिसने कलिंग को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया किन्तु उसका सबसे श्लाघनीय कार्य यह है कि उसने बौद्ध-धर्म के सदाचार सम्बंधी उपदेशों को स्तूपो, शिलाओं पर यत्र-तत्र उत्कीर्ण करा दिया। उसके शासन काल को भारत का स्वर्ण-युग कह सकते हैं। गुप्त-वंश ने भी कई शक्तिशालो राजा उत्पन्न किये जो अपनो विजय, राज्य वृद्धि तथा कला-कौशल के लिए विख्यात हैं। देश में साहित्य, शिक्षा तथा शिल्प की उन्नति हुई तथा मनुष्य सुख एवं शाति से जीवन व्यतीत करते थे। इनका आतंक दूर-दूर तक छाया हुआ था।

गुप्त वंश के पश्चात् महाराज हर्षवर्धन का नाम उत्कर्ष पर पहुँचता है। हर्ष के समय में राज्य तथा सुख शाति की अभिवृद्धि हुई। वह कवियों को प्रोत्साहन देता और स्वयं भी कविता करता था। कादम्बरी-प्रणेता बाण इसी की सभा में रहता था। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने देश की समृद्धि का सुंदर चित्रण किया है।

मुस्लिम काल के हिन्दू राजाओं का कार्य अत्यंत कठिन हो गया था। अनेक हिंदू राजा विजातीय सभ्यता तथा संस्कृति के प्रवाह को रोकने में लगे रहते थे। ऐसे व्यक्तियो में पृथ्वीराज, (सुहेलदेव) छत्रसापाल, जुझारसिंह आदि थे। पंजाब के महाराजा रणजीतसिंह ने काश्मीर को जीतकर अफ़गानों*पर अपना सिक्का बैठा दिया। उस ओर से आनेवाले विजातीय आक्रमणों का द्वारबंद हो गया। बीरबल अपनी वाक्पटुता तथा राजा भोज गुण ग्राहकता के लिए प्रसिद्ध हैं। भोज के समय में घर-घर संस्कृत विद्या का प्रचार था। मुगल सम्राटों में अकबर, सलीम (जहागीर), खुर्रम (शाहजहाँ), नौरंग (औरंगजेब), बहादुरशाह ऐसे सरल नामों को हो अपनाया गया है।

संख्या के अनुसार आधुनिक काल में सबसे अधिक नाम हैं, यह उचित हीं है क्योंकि वर्त्तमान प्रत्यक्ष होने से अधिक प्रभावशाली होता है। महाभारत में लाखों वीरों ने भाग लिया, उनमें से इतने नामों का प्रचलित रहना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। युद्ध का मूल हेतु दुर्योधन तीनों रूपों में विद्यमान है। युधिष्ठिर उसको सदैव सुयोधन कहते थे, ग्रामीण उसे जुरजोधन के नाम से पुकारते हैं। इस युग का सबसे अधिक प्रसिद्ध नाम कर्ण है जो तत्सम तथा तद्भव दोनों रूपो में प्रचलित है। रामायण काल परोक्ष होते हुए भी रामायणादि ग्रंथों से आवर्त्तन होता रहता है। अतएव वह स्मृति-नेत्रों से कभी तिरोहित नहीं होता। महाराज जनक इसके विशेष प्रतिनिधि हैं। पौराणिक काल सबसे सुदूरवर्त्ती होते हुए भी अनेक नाम दे रहा है। सबसे प्रिय नाम के दोनों रूप हरिश्चंद्र तथा हरिचंद प्राप्त हैं। देश तथा काल का अतिक्रमण कर किसी आश्रय के बिना विदेश में मान्यता पाना असम्भव ही होता है, इस दृष्टि से विदेशी नाम इतने ही अलम् है। 'तू बड़ा अफलातून है,' "वहम की दवा लुकमान के पास भी नहीं है", 'वह बड़ा हातिम है,' तू क्या रुस्तम है, आदि वाक्य देहातों में आज भी सुनाई देते हैं।

यों तो ऐतिहासिक नामों की संख्या गणनातीत है, किन्तु यहाँ पर वही नाम सम्मिलित किये गये हैं जिनका इतिहास की दृष्टि से विशेष महत्व है, जिनके कार्य एवं कृतियों से जनता का कल्याण हुआ है।

सामाजिक प्रवृति

(१) संस्थाएँ
(२) शिष्ट प्रयोग
(३) आजीविका वृत्ति
(४) स्मारक
(५) भोग-पदार्थ
(६) कलात्मक नाम
(७) समाज सुधार

सत्रहवाँ प्रकरण

सामाजिक प्रवृत्ति

१—गणना

क—क्रमिक गणना

१—नामों की संख्या—१३२०

२—मूल शब्दों की संख्य—१७०४

३—गौण शब्दों की संख्या—७७

ख—रचनात्मक गणना—

नाम प्रवृत्ति—	एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	पंचपदी नाम	योग
संस्थाएँ—वर्ण तथा जाति	२२	४२	४			६८
कुल तथा वंश	१	८	२	१		१२
प्रथा तथा संस्कार	१	४	४			९
उत्सव मेला		९				९
शिष्ट प्रयोग—अभिवादन		२०	२८	१०	१	५९
आशीर्वाद तथा बधाई	१०	७१	२३	१		१०५
शिष्ट सम्बोधन	२	४२	१४	४		६२
आजीविकावृत्ति—बुद्धिजीवी, व्यवसायी तथा श्रमजीवी	१२	३१	४			४७
राजकर्मचारी	२३	६५	३			९१
स्मारक—देश	१५	६३	३			८१
काल	५४	१०३	११	२		१७०
भोग पदार्थ—फल मेवा	४	२१	१			२६
मिठाई आदि खाद्य पदार्थ	२१	३२	१			५४
औषध	७	३१	१			३९
द्रव्य विशेष	२	९	३			१४
कलात्मक—वस्त्र	५	२०	२			२७
(अ) उपयोगी कला—रत्नाभूषण	६९	१९०	८	१		२६८
प्रसाधन साधन (फूल)	१३	४६	४			६३
आयुध	६	१५	१			२२
वाद्ययंत्र	१६	२७				४३
(आ) ललित कला—वास्तु कला	१	४				५
तक्षण कला	२	४	१			७
चित्र कला	१	८	१			१०
संगीतकला—रागरागिनी	१३	१	४			१८
समाज सुधार—अछूत		३	१			४
गो रक्षा			१			१
शुद्धि	१	५				६
	३०१	८७४	१२५	१९	१	१३२०

(१) संस्थाएँ

२—विश्लेषण :—

क—मूल शब्द :—

वर्ण तथा जाति—अँगरेज, अँगरेजी, आर्य, ओसवाल, खन्ना, खन्नू, गुप्तू, गूजर, गूजरा, गोपी, गोरखा, घोसी, चमरू, चौबे, जदु, जद्दू, डोमन, डोमर, डोमा, तेलही, तेलू, थवई, द्विजराज, धूसर, नरदेव, पडा, फिरंगी, बंगाली, बुंदेला, बैस, बैसी, भील, भुस्सू, भूदेव, भूसुर, भोटी, मल, मलई, मल्ल, माथुर, माली, मावली, मुकरजी, मुदई, मोदी, राजपूत, लखरू, लोदी, लोहारी, हिन्दू।

टि०—विकृत शब्दों के शुद्ध रूप कोष्ठक में दिये जाते हैं :—

खन्नू (खन्ना); गुप्तू (गुप्त); गुजरा (गूजर); चमरू (चमार); जद्दू (जदु); डोमन, डोमर, डोमा (डोम); तेलही, तेलू, (तेली); फिरंगी (फ्रैंक Frank); बैसी (वैश्य या बैस); भुस्सू (भूसुर); मल, मलई, मल्ला (मल्ल); मुदई (मोदी)।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति :—

अँगरेज, अँगरेजी—इंगलिस्तान के रहने वाले।

ओसवाल—वैश्यों की एक उपशाखा।

खन्ना—खत्रियों की एक उपजाति।

गुप्तू—वैश्यों के नाम के साथ गुप्त शब्द का प्रयोग होता है।

गूजर—क्षत्रियों की एक शाखा। (गुर्जर)

गोपी—ग्वाला की स्त्री।

गोरखा—नैपाल के अंतर्गत एक प्रदेश तथा उसके निवासी।

घोसी—ग्वाला, अहीर।

चमरू—चमार।

चौबे—चतुर्वेदी ब्राह्मण।

जदु—जदुवंशी (यदुवंशी) अथवा जादव।

डोमन—भारतवर्ष की एक अस्पृश्य नीच जाति जो मुर्दों को एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाने और चिता जलाने का काम करती है। इस जाति के लोग बाँस की टोकरियाँ बनाकर बेचते हैं।

द्विजराज—ब्राह्मण।

धूसर—बनियों की एक जाति, जो अब भार्गव ब्राह्मण के नाम से प्रसिद्ध है।

नरदेव—ब्राह्मण

पंडा—किसी तीर्थ या मंदिर का पुजारी।

फिरंगी—फ्रांस देश का रहनेवाला।

बुंदेला—बुदेलखंड निवासी एक राजपूत जाति।

बैस—क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा जो बैसबाड़ा में रहती है।

भील—कोल, भील, संथाल आदि भारत की जंगली जातियाँ हैं।

भुस्सू, भूदेव—हिन्दुओं के चार वर्णों में से प्रथम वर्ण—ब्राह्मण।

भोटी—भूटान देश का रहनेवाला भोटिया।

मल, मलई, मल्ल—एक प्राचीन जाति का नाम जो कुस्ती लड़ने में बड़ी कुशल थी।

माथुर—(१) मथुरा-निवासी चौबे ब्राह्मण (२) कायस्थ तथा वैश्यों की एक शाखा।

माली—फूल बेचनेवाली जाति-विशेष जो बगीचों में पेड़-पौधे लगाने और उन्हें सींचने का काम करती है।

मावली—महाराष्ट्र की एक पहाड़ी वीर जाति जो शिवाजी की सेना में लड़ती थी।

मुकरजी—मुखोपाध्याय—बंगाल की एक ब्राह्मण जाति।

मुदई, मोदी—दाल, आटा, चावल आदि बेचनेवाला बनिया।

राजपूत—राजपुताना की क्षत्रिय जाति।

लखरू—लाख की चूड़ी बनानेवाली एक जाति।

लोदी—एक जाति।

लोहारी—लोहे के औजार बनानेवाले लोहारी कहलाते हैं।

हिन्दू—हिन्द का रहनेवाला हिन्दू अथवा वह व्यक्ति जो देव, अवतार, मूर्ति-पूजा, तीर्थ, पुराण आदि में विश्वास रखता है।

कुल या वंश सम्बंधी मूल शब्द—कुलवंत, कुल्लू (कुल), वंश।

प्रथा तथा संस्कार सम्बंधी मूल शब्द—जौहर, रीति, शादी, स्वयंवर।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति :—

जौहर—राजपूतों की एक प्रथा जिसमें प्रबल शत्रु से पराजय की सम्भावना देख राजपूत स्त्रियाँ जलती चिता में प्रवेश कर अपने प्राण दे देती थीं।

स्वयंवर—आर्यावर्त की एक प्राचीन प्रथा जिसमें विवाह योग्य कन्या उपस्थित व्यक्तियों में से अपना वर स्वयं चुन लेती थीं।

मेला-उत्सव सम्बंधी मूल शब्द—उत्सव, जुबली, तौहारी, दियाली, मेला, रक्खा, विजया, होरी।

मूल शब्दों की निरुक्ति :—

उत्सव—पर्व, त्योहार, जलसा।

जुबली—(Jubilee) उत्सव-विशेष जो २५,५० तथा ६० वर्ष में मनाया जाता है जिसको क्रमशः रजत जुबली, स्वर्ण जुबली तथा हीरक जुबली कहते हैं। यह विदेशी शब्द हर्षसूचक है।

तौहारी (त्योहार), **दियाली**, (दीपावली), **रक्खा** (रक्षाबंधन), **विजया** (दशहरा), **होरी** (होली)—इनकी व्याख्या पर्वोत्सव में देखिए।

(२) शिष्ट प्रयोग

अभिवादन सम्बंधी मूल शब्द—जयकिशोर, जयकृष्ण, जयगणेश, जयगोपाल, जयगोविंद जयजगदीश, जयदयाल, जयनंद, जयनंदन, जयनारायण, जयप्रकाशनारायण, जयप्रभु, जयभगवान, जयमुरारी, जयराजविहारीलाल, जयराम, जयविहारी लाल, जयवीर, जयशंकर, जयशिव, जयश्री, जयश्रीकिशन, जयश्रीदेव, जयश्रीनाथ, जयश्रीराम, जयश्रीसिंह, जयहिंद, जुहार, जैजैराम, जैजैलाल, जैजैसिंह, जैजोति, जैविशुन, जैवेनी, नमोनारायण, राम राम, हरेकृष्ण, हरेराज, हरेराम।

टिप्पणी—(१) यह अभिवादन देवों के नामों से पहले जय, जयजय, नमो, हरे शब्द रखकर बनाये गये हैं, कहीं-कहीं देव के नाम को द्वित्व भी कर देते हैं यथा :—राम-राम।

(२) कृष्ण तथा विष्णु के पर्यायवाची :—किशोर, कृष्ण, गोपाल, गोविंद, जगदीश, नंद, नंदन, नारायण, प्रभु, भगवान, मुरारी, विहारी, लाल, श्रीदेव, श्रीनाथ, श्रीसिंह, विशुन।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति :—

जयदयाल—यह राधा स्वामियों के गुरु शिवदयाल के उत्तरांश से बनाया गया प्रतीत होता है।

जयनंद– नंद विष्णु को कहते हैं।

जयप्रकाशनारायण--सूर्य का नाम प्रकाशनारायण है।

जयवीर—वीर शब्द महावीर का उत्तरार्द्ध है।

जयहिंद—यह अभिवादन देशभक्ति का द्योतक है। प्रसिद्ध नेता सुभाषचंद्र बोस ने द्वितीय महायुद्ध के अंतिम दिनो में विदेश में हिन्दुस्तानियों को संगठित कर आजादहिंद फौज का निर्माण किया था, उसका अभिवादन 'जयहिंद'' था और जयघोष था "दिल्ली चलो"।

जुहार—राजपूतों में प्रचलित अभिवादन।

जैजै सिंह—यह सिक्खों की सिंह सभा का अभिवादन प्रतीत होता है। जय नृसिंह।

जैजोति—ज्योति का अर्थ सूर्य तथा विष्णु दोनों है।

जैबेनी—यह त्रिवेणी के भक्तों का अभिवादन है।

हरे कृष्ण, हरेराम—यह दोनों अभिवादन आजकल अति प्रचलित कीर्तन की ओर भी संकेत करते हैं।

हरे राज—राज का अर्थ राजा, पृथु, युधिष्ठिर, इंद्र, चन्द्रमा होता है। सम्भव है यह किसी राज्य का स्थानीय अभिवादन हो।

आशीर्वाद तथा बधाई सम्बंधी मूल शब्द—अजरैल, अमरतू, अमृत, आनंदमंगल, आशीर्वाद, आशीर्वादी, उद्धरन, उमर, उमराखी, कलियान, कल्याण, कुशल, खुमान, खुमानी, चिरंजी, चिरंजीव, चिरंजीवी, चिरौंजी, चैनसुख, जई, जय, जयमंगल, जयमंत, जयलक्ष्म बहादुर, जयविजय, जयविभव, जयवीर, जयशील, जयसुख, जयानंद, जिन्दा, जीया, जीआ, जीवन, जीसुख, तालेवर, तेजस्वी, धन्य, बरकत, भागमल मुबारिक, राजमंगल, रोशन, रोहन, विजय, विजयप्रताप, वृद्धि, शुभ, सजीवन, सतजीवन, सत मंगल, सदाजीवन, सरजीवन, सलामत, सुखमंगल, सुखानंद, सुफल,[1] सुभाग।

ख—मूल शब्दों की निरुक्तिः—

अजरैल—यह अजर शब्द से बना है इसका अर्थ होता है जो कभी वृद्ध न हो।

अमरतू—अमरत्व के लिए आशीर्वाद।

आशीर्वाद[1]—मंगलवाद

उद्धरन—उद्धार करने की अभिलाषा का भाव पाया जाता है।

उमर—यह उर्दू शब्द है जिससे दीर्घायु का भाव प्रकट होता है।

कल्याण—मंगल।

खुमान—आयुष्मान्।

चिरजी, चिरौंजी (चिरंजीवी)—आयुष्मान्।

तालेवर—धनवान भाग्यवान।

धन्य—पुण्यवान् जो अपने नाम-यश आदि द्वारा प्रसिद्ध हो।

बरकत—धनदौलत की बढ़ती।

मुबारक—बधाई।

राजमंगल—राज तथा कल्याण।

---

[1] लक्ष्मीस्त्वे पङ्कजाक्षी निवसतु भवने भारती कण्ठदेशे
वर्धन्ता बन्धुवर्गाः प्रवल रिपुगणाः यान्तु पातालमूले
देशे देशे सुकीर्तिः प्रसरतु भवतां पूर्णकुन्देन्दुशुभ्राम्
जीवं त्वं पुत्र पौत्रैः स्वजन परिवृत्तैः भोज्यतां राज्य लक्ष्मी।

रोहन—वृद्धि। (एक नदी)

शिवमंगल—क्षेमकुशल।

सजीवन—अमर।

सदाजीवन—चिरंजीव।

सरजीवन (सजीवन)—जिलानेवाला, हराभरा।

सलामत—सुरक्षित, स्वस्थ (अरबी शब्द)।

सुभाग—अच्छे भाग्यवाला।

शिष्ट सम्बोधन सम्बन्धी मूल शब्द—गुरुदेव, धर्मावतार, प्राणजीवन, प्राणनाथ, प्राणपति, प्राणवल्लभ, प्राणेश्वर, बड़े बाबू, बड़े लल्ला, बड़े लाला, बबुनी, बापू, बाबू, महाराज, महाशय, लाला, लालाबाबू, श्रीपद, श्रीमंत, श्रीमत्, श्रीमहाराज, श्रीमान्, श्रीवंत, साहब, हजूर, हृदयनंदन, हृदयनाथ, हृदयनारायण, हृदयप्रकाश, हृदयमोहन, हृदयराम हृदयस्वरूप, हृदयानंद, हृदयेश, हृदेश, हृदेश्वर।

टि०—प्राण, हृदय तथा हृत् से बने हुए शब्द प्रायः स्त्रियाँ अपने पति को सम्बोधन करने के लिए प्रयोग करती हैं।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति :—

गुरुदेव—यह सम्बोधन गुरुजनों के लिए है। विशेषतः मनुष्य कवींद्र रवींद्र के लिए प्रयोग करते हैं।

धर्मावतार, महाराज, श्रीमहाराज—यह सम्बोधन राजाओं के लिए प्रयुक्त होते हैं।

बबुनी—बाबू का स्त्रीलिंग है।

बापू—यह बाप से बना है और बड़ों के प्रति पूज्य भावना का सूचक है। गांधीजी को प्रायः मनुष्य बापू कहा करते थे।

बाबू—सामान्य सम्बोधन का शब्द।

महाशय—आर्यसमाज द्वारा प्रचलित सम्बोधन।

लाला—कायस्थ तथा बनियों के लिए सम्बोधन।

श्रीपद महात्माओं के लिए आदरसूचक सम्बोधन।

श्रीमंत, श्रीमत्, श्रीमान्, श्रीवंत—समृद्धिशाली व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं।

साहब, हजूर—यह विदेशी सम्बोधन बड़े आदमियों के लिए व्यवहृत होते हैं।

(५) आजीविका वृत्ति

बुद्धिजीवी, व्यवसायी तथा श्रमजीवी सम्बन्धी मूल शब्द—उद्यमपति, किंकर, जंगी, जंगू, जौहरियाँ, जौहरी, डाक्टर, तिलंगी, दलाल, दस्सू, दासू, दूत, बसीठन, बालिस्टर, बैरिस्टर, ब्यौपारी, भंडारी, महाजन, मुखतार, योद्धा, वकील, वैद्य, सईस, सवारू, साहूकार, सेवक, सादागर, हकीम।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति :—

उद्यमपति—किसी व्यवसाय का स्वामी।

किंकर—सेवक।

जंगी—सैनिक।

जौहरिया, जौहरी—रत्नों का व्यवसायी।

तिलंगी—तिलंगी सेना का योद्धा।

दलाल— सौदा खरीदने या बेचने में सहायता देनेवाला मनुष्य।

दस्सू—दास।

दूत— संवाद पहुँचानेवाला व्यक्ति।

बसीठन—(अवसृष्ट) दूत।

बालिस्टर, वैरिस्टर, मुखतार, वकील— कानून जाननेवालों की पदवियाँ।

महाजन—साहूकार।

योद्धा—सैनिक।

सईस—घोड़ों का सेवक।

राजकर्मचारी सम्बन्धी मूल शब्द—अमलदार, अमीन, इन्स्पेक्टर, इलाकेदार, कंपोडर, कन्नैल, कप्तान, कर्नल, कलक्टर, कोतवाल, खजानची, चौधरिया, चौधरी, जडैल, जमादार, जिलेदार, टिकैत, डिप्टी, थानेदार, दफेदार, दरपाल, दरवान, दरोगा, दलपति, दलमीर, दलेंद्र, दीवान, दीवानी, दुर्गपाल, नबरदार, नाजिर, नायक, नायब, निरीक्षणपति, पहरनाथ, फज्जे, फौजदार, बक्सी, भण्डारी, मंत्री, मास्टर, मीर मुंशी, मुंशी, मुंसिफ, मुखिया, मुत्सद्दी, मुसद्दी, मेजर, वजीर, सरिस्ते, सरिस्तेदार, सिकत्तर, सिकदार, सिपाही, सुपरीडैंट, सूबे, सूबेदार, सेनपाल, सेनापति, हवलदार, हाकिम।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति :

अमलदार—शासक।

कन्नैल—(कर्नल) Colonel का विकृत रूप—सेना नायक।

जंडैल—(जनरल) General सेनाध्यक्ष।

टिकैत—(१) राजा का उत्तराधिकारी युवराज। (२) पुरानी प्रथा के अनुसार विहार के जमींदार के बड़े पुत्र को टिकैत, दूसरे को कुमार, तीसरे को फौजदार, चौथे को ठाकुर मणि और पाँचवें को गुरुमणि कहते हैं।

दफेदार—सेना का एक कर्मचारी जिसके अधीन थोड़े सिपाही होते हैं।

दरपाल, दरवान—द्वारपाल।

दलपति, दलमीर, दलेंद्र—दल का मुखिया।

निरीक्षणपति—जाँच करनेवाला Auditor Inspector।

फज्जे—(फरजी) प्यादा—"प्यादा ते फरजी भयो टेढ़ो टेढ़ो जाय।"

फौजदार—सेना का एक अफसर।

मीर मुंशी—सबसे बड़ा मुंशी।

मुन्सिफ—न्याय विभाग का एक छोटा अफसर।

मुत्सद्दी, मुसद्दी—लेखक।

मेजर—Major General सेना का कर्मचारी।

वजीर—मंत्री।

सरिस्ते, सरिस्तेदार—(१) किसी विभाग का प्रधान कर्मचारी। (२) अदालत के मुकदमों की मिसलें रखनेवाला कर्मचारी।

सिकत्तर—सिक्रेट्री (Secretary), अमात्य।

सिकदार—मजिस्ट्रेट।

सूबेदार—सेना का एक अफसर।

सेनपाल—सेनापति ।

हवलदार—सेना का छोटा अफसर ।

हाकिम—शासक ।

(४) स्मारक

देश-सम्बंधी मूल शब्द—अंबर, अजमेर, अजमेरी, अमरावती, अमरीका, अलवर, ईदर, कनौजी, कलकत्ता, कलकत्ती, कशमीर, कशमीरी, कालपी, काश्मीर, खंधारी, गुजरात, गुजराती, चनार, जंबू, झारखंडी, झारखडे, डिल्ली, दिल्ली, दिल्लू, नैपाल, पंजाब, पंजाबी, पेशावर, पेशावरी, बंग, बंगाली, बकसर, बनारस, बनारसी, बलिया, भूटान, मद्राज, मघहर, महवा, माड़ू, मारू, माल, मुल्तान, मोरंग, रेवारी, लाहौरी, शांति निकेतन, शिमला, सांची ।

मूल शब्दों की निरुक्ति :—

अंबर—आमेर जयपुर की पुरानी राजधानी ।

अजमेर—हिन्दू, जैन और मुसलमानों का तीर्थ-स्थान है ।

अमरावती—मध्य प्रदेश का प्रसिद्ध नगर ।

अमरीका—एक महाद्वीप जिसको पाताल देश कहते हैं ।

अलवर, ईदर—राजपूताने के राज्य ।

कन्नौजी—कनौज—फरुखाबाद जिले का एक प्रसिद्ध नगर जो पहले जयचंद की राजधानी थी ।

कलकत्ता—हुगली नदी के तट पर भारतवर्ष का एक प्रसिद्ध नगर ।

कलकत्ती—राजघाट के पास गंगा तट पर एक स्थान जहाँ नदी के ऊपर से नहर जाती है ।

कशमीर—भारतवर्ष के उत्तर में एक अत्यंत सुंदर देश जिसको पृथ्वी का स्वर्ग कहते हैं ।

कशमीरी—प्राकृतिक दृश्य तथा स्वच्छ जलवायु के लिए प्रसिद्ध है । केसर, ऊनीशाल दुशाले तथा शाही उद्यानों के लिए विश्व विख्यात है ।[1]

कालपी—उरई के पास एक नगर ।

खंधारी—खंधार (कंधार) नगर जो भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिम में अफगानिस्तान में स्थित है ।

गुजरात—काठियावाड़ का एक प्रांत, पंजाब का एक नगर ।

चनार—चुनार मिर्जापुर के पास एक नगर जो शेरशाह के बनवाये हुए किले तथा मिट्टी के बर्तन के लिए प्रसिद्ध है ।

जंबू—काश्मीर का एक प्रसिद्ध नगर ।

झारखंडी, झारखडे—एक बन जो वैद्यनाथ से जगन्नाथपुरी तक फैला हुआ है ।

डिल्ली, दिल्ली, दिल्लू—भारत की राजधानी जो जमुना के किनारे स्थित है । इसका प्राचीन नाम इंद्रप्रस्थ था ।

नैपाल—हिमालय के अंतर्गत एक स्वतंत्र राज्य ।

पंजाब, पंजाबी—सिंधु और उसकी पाँच सहायक नदियों से बना हुआ देश ।

---

[1] **"यहि अमरन को ओक, यहीं कहुँ बसत पुरंदर" (श्रीधर पाठक)**

पेशावर, पेशावरी—भारतवर्ष के उत्तर पश्चिम में खैबर घाटी का एक प्रसिद्ध नगर।

बंग, बंगाली—बंगाल देश।

बक्सर—विहार का एक ऐतिहासिक नगर।

बनारस, बनारसी—काशी (वाराणसी)।

बलिया—उत्तर प्रदेश का एक पूर्वी जिला जहाँ दैत्यराज बलि रहते थे।

भूटान—नैपाल के समीप एक छोटा पहाड़ी राज्य।

मद्राज—दक्षिणी भारत का प्रसिद्ध नगर तथा बन्दरगाह है जो पूर्वी तट पर है।

मघहर—यहाँ मरना अशुभ समझा जाता है।

महवा—महोवा में आल्हा ऊदल रहते थे।

माडू—माड़ोगढ़ का राज्य।

मारू—मारवाड़।

माल—मालवा प्रांत।

मुल्तान—पंजाज का एक नगर।

मोरंग—नैपाल का पूर्वी भाग।

रैवारी—राजपूताने का एक व्यापारिक नगर।

लाहौरी—पाकिस्तानी पंजाब की राजधानी लाहौर।

शांति निकेतन—कलकत्ता के पास बोलपुर में कवि सम्राट् रवींद्रनाथ ठक्कुर द्वारा स्थापित एक विश्वविद्यालय।

शिमला—भारतवर्ष की ग्रीष्मकालीन राजधानी।

सांची—भूपाल राज्य में बौद्धों का एक पवित्र स्थान। सांची के बौद्धस्तूप प्रसिद्ध हैं।

मूल शब्द (काल)—इतवार, इतवारी, कार्त्तिक, कार्त्तिकी, कोजी, गुरुआ, गुरुवारी, चितई, चितानी, चेत, चेता, चैतवा, चैतवार, चैतू, चैत्र, छप्पन, जड़ाऊ, जुम्मा, जेठ, जेठवा, जेठा, जेठू, ज्येष्ठ, तायन, थावर, नौबंर, नौअगस्त, पूसा, पूसी, पूसू, पूसे, पोके, पोख, पोखई, पोस, पोसन, पोसी, पोसू, फाल्गुन, बरखा, बरसाती, बसत, बसती, बुद्धन, बुद्धा, बुद्धू, बुध, बुधई, बुधुआ, बुधै, बैसाखू, भदई, भदैंयाँ, भदोले, भदौंआ, भादों, मंगर, मंगरी, मंगरू, मंगरे, मंगल, मंगला, मंगलिया, मंगली, मंगलू, मघ, मघई, मघाना, माघी, वृहस्पति, शनि, शरत, शिशिर, शुक्र, शुक्ल, शुक्लु, श्याम कार्त्तिक, समारू, सावन, सावनियाँ, सुकई, सुकरू, सुक्कर, सुमरियाँ, सुमारू, सुमिरा, सुमेर, सुमेरा, सुमेरी, सुम्मारी, सोमारु, सौमवार, सौमवारी, हेमंत।

टिप्पणी—अधिकांश नामों की रचना दिन, मास तथा ऋतुओं के नाम पर हुई है।

दिन परक :—

इतवार—इतवार, इतवारी।

सोमवार—समारू, सुमरिया, सुमारू, सुमिरा, सुमेर, सुमेरा, सुमेरी, सुम्मारी, सोमारु, सौमवार, सौमवारी।

मंगल—कोजी, मंगर, मंगरी, मंगरू, मंगरे, मंगल, मंगला, मंगलिया, मंगली, मंगलू।

बुध—बुद्धन, बुद्धा, बुद्धू, बुध, बुधई, बुधुआ, बुधै।

वृहस्पति—गुरुआ, गुरुवारी, वृहस्पति।

शुक्र—शुक्र, सुकई, सुकरू, सुकर।

शनीचर—थावर, शनि।

मास परक :—

चैत्र—चितई, चितानी, चेत, चेता, चेतवा, चैतवार, चैतू, चैत्र।

बैसाख—बैसाखू।

जेठ—जेठ, जेठवा, जेठा, जेठू, ज्येष्ठ।

सावन—सावन, सावनियाँ। (श्रावण)

भादों—भदई, भदैयां, भदोले, भदौआ, भादों।

कार्तिक—कार्तिक, कार्तिकी, श्याम कार्तिक।

पौष (पूस)—पूसा, पूसी, पूसू, पूसे, पोके, पोखा, पोखई, पोस, पोसन, पोसी, पोसू।

माघ—मघ, मघई, मघाना, माघी।

फाल्गुन—फाल्गुन।

ऋतु परक :—

बसंत—बसंता, बसंती।

ग्रीष्म—तपन।

वर्षा—बरखा, बरसाती।

शरद्—शरत्।

हेमंत—हेमंत।[1]

शिशिर—शिशिर।

उभय पक्ष :—

शुक्ल—शुक्ल, शुक्लू।

कृष्ण—श्याम।

मूल शब्दों की निरुक्ति :—

कोजी—कुज का विकृत रूप – कु = पृथ्वी – ज = उत्पन्न हुआ अर्थात् मंगल तारा।

छप्पन—संवत् ५६ में बागड़ देश में भीषण अकाल पड़ा था।[2]

जड़ाऊ—शीतकाल

नवम्बर—अंग्रेजी का ११वाँ महीना।

नौ अगस्त—सन् १९४२ में देश के बड़े-बड़े नेता पकड़कर जेल में बंद कर दिये गये, जिससे आन्दोलन की आग और भड़क उठी और एक बडा राजविद्रोह प्रारम्भ हो गया। इस घटना के स्मारक में सुलतानपुर जेल में दो देश-भक्तों ने यह निर्णय किया कि वे अपने लड़का-लड़की के नाम नौ अगस्त और सन् बियालीस रखेंगे। और उनका आपस में विवाह करेंगे। दैवयोग से एक के पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम नौ अगस्त रक्खा गया। दूसरे सज्जन के कन्या हुई जिसका नाम सन् बियालीस रखा गया। यह नौ अगस्त सन् ४२ की घटना का स्मारक है।

श्याम कार्तिक—कार्तिक मास का कृष्ण पक्ष

---

[1] नव प्रवालोद्गमसस्यरम्य
प्रफुल्ललोध्रः परिपक्वशालिः,
विलीन पद्मः प्रपतत्तुषारो
हेमंतकालः समुपागतः प्रिये ॥ (कालिदास—ऋतु-संहार)

[2] "छप्पन बारी साल फिर मति अइयो मोरी बागड़ में।"

५—भोग पदार्थ

मूल शब्द (फल-मेवा)—अगूर, अंगूरी, अनार, केरा, केला, कैथा, खिन्ना, खिन्नी, (खिरनी ∠क्षीरणी), खीरा, खीरू, (∠क्षीर) जंबू, जमीरी, बादाम, मुनक्का, मेवा, शरीफा, सपड़ी, सपरू।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति

केरा—केला का विकृत रूप (∠कदली)।

जंबू—जामुन

जमीरी—नीबू (जंबीर)

नारियल—नरियल ∠नारिकेल

शरीफा—सीताफल

सपड़ी-सपरू—अमरूद

मूल शब्द (मिठाई आदि खाद्य पदार्थ)—इमरती, खजला, खुर्चन, गुलगुल, घेवर, चमचम, चिन्नी, चिन्नू, चीनी, दधि, दुधई, दूध, दूधी, नवनीत, नीनू, पकौड़ी, पेड़ी, बतासू, बरफू, बेसन, मक्खन, मक्खनू, मक्खी, मक्खू, मखना, मखन्नू, मठरा, मठरू, माखन, मावा, मिठाई, मिठौन, मिश्री, मिसिरिया, मिसिरी, मीठा, लुचई, लोनी, सिमई।

टिप्पणी—चीनी के विकृत रूप—चिन्नी, चिन्नू।

दूध—दुधई, दूधी।

मक्खन—मक्खनू, मक्खी, मक्खू, मखना, मखन्नू, माखन <मंथज या√मद्-इकट्ठा करना।

मिश्री—मिसिरिया, मिसिरी।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति :—

इमरती <**अमृत**—उरद की पीठी की बनी हुई जलेबी की तरह एक मिठाई।

खजला—खाजा नाम की मिठाई (<खाद्य)।

खुर्चन—एक मावा की मिठाई, मथुरा का खुर्चन प्रसिद्ध है।

गुलगुल—पुआ।

घेवर—एक प्रकार की मिठाई।

चमचम—छैना की एक बंगला मिठाई।

दधि—दही।

नवनीत, नीनू—मक्खन।

पेड़ी—पेड़ा का विकृत रूप। (<पिंड)

बतासू—बताशा का विकृत रूप।

बरफू (बर्फी)—कलाकन्द।

मठरा, मठरू—एक नमकीन पकवान।

मावा—दूध का खोया।

मिठौन—मीठा।

लुचई[1]—मैदे की पतली पूरी (<रुचि)।

लोनी—(<नवनीत) मक्खन, यह लवन (मलमास) और लोना चमारिन की ओर भी संकेत करता है।

---

[1] व्यंग्यार्थ लुच्चा,

सिमई—गुंधे हुए मैदे के सूत के समान सूखे हुए महीन लच्छे जो दूध में पकाकर खाये जाते हैं। यह समया देवी की ओर भी संकेत करता है।

मूलशब्द (औषध)—ईंगुर, कपूर, कपूरी, कर्पूर, कस्तूर, कस्तूरी, कुंकुम, केशर, गुलकन्द, गुलाल, चूरन, चूर्ण, दवा, दवाई, दारू, धनिया, फीम, फुलेल, भेषज, महक, मिर्चा, मेहँदी, मोम, हरिचंदन, हिंगन, हिंगा, हिंगू।

मूल शब्दों की निरुक्ति :—

ईंगुर—सिंदूर जिसे सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपनी माँग में भरती हैं।

कपूर, कपूरी, कर्पूर—एक सफेद रंग का सुगन्धित द्रव्य जो हवा लगने से उड़ जाता है।

कस्तूर, कस्तूरी—मृगनाभि से निकलनेवाला एक सुगन्धित द्रव्य।

कुंकुम—केसर।

केशर—फूल के बीच के महीन तंतु जो काश्मीर से आते हैं।

गुलकंद—गुलाब के फूलों में चीनी मिलाकर धूप में पकाई हुई रेचक औषधि।

गुलाल—होली के दिनों में एक दूसरे के मुँह पर लगाने की लाल रोरी।

दारू—औषधि।

फीम—अफीम का सूक्ष्म रूप।

फुलेल—फूलों की सुगंधि से बसाया हुआ तेल जो सिर में लगाया जाता है।

भेषज—दवा।

मेहँदी<मेन्धी—एक पौधा जिसकी पत्तियाँ पीसकर स्त्रियाँ हाथ पैर में लगाती हैं जिससे वे लाल हो जाते हैं।

मोम—वह चिकना नरम पदार्थ जिससे मधु-मक्खियाँ अपना छत्ता लगाती हैं।

हरिचंदन—पीला चंदन।

हिंगन, हिंगा, हिंगू—हींग के विकृत रूप हैं। एक छोटे पौधे का जमाया हुआ गोंद या दूध जिसमें तीव्र गंध होती है। इसका मसाले में प्रयोग होता है।

टिप्पणी—अधिकांश शब्द बच्चे के वर्ण की ओर संकेत करते हैं।

मूल शब्द (द्रव्य विशेष)—कमोरा, कलम, किताब, गंगाजली, गुंजी, टिकट, दुरबीन, पोथी, बटन, मशाल, लोहा, हंडुल।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति :—

कमोरा—मिट्टी का बर्तन।

गंगाजली—गंगाजल भरने के लिए धातु की सुराही, गंगाजल नामक महीन वस्त्र।

गुंजी (गुञ्जा)—सुनारों के तोलने की रत्ती।

टिकट—रेल, डाक, लाटरी या तमाशे का टिकट।

दुरबीन—एक यंत्र जिससे दूर की वस्तु अति निकट तथा स्पष्ट दिखलाई देती है। दूरवीक्षण यंत्र।

पोथी—पुस्तक।

मशाल—एक प्रकार की मोटी बत्ती जिसको पकड़ने के लिए लकड़ी लगी रहती है और जलते रहने के लिए बार-बार तेल डाला जाता है।

हंडुल—हंडा, बर्तन।

६—कलात्मक

(अ) उपयोगी कला

मूल शब्द (वस्त्र)—अंडी, खासे, गंछी, चोगा, जाली, झंगू, झगई, झगा, झग्गन, झग्गा, झलरू, झल्लर, झल्लू, झिलमिल, टूला, टोपी, तनसुख, मकतूल, मखमल, मेखरी, रेशम।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति :—

अंडी (एरण्ड)—रेशमी वस्त्र।

खासे (खासा)—एक सूती कपड़ा।

गंछी—गमछा, अँगोछा।

चोगा—पैरों तक लटकता हुआ ढीला कुरता।

जाली—महीन छेदवाला वस्त्र।

झंगू, झगई, झगा, झग्गन, झग्गा—छोटे बच्चों को पहनाने का ढीला झँगा।

झलरू, झल्लर, झल्लू, झिलमिल—एक प्रकार का सुन्दर महीन वस्त्र।

टूला—अंग्रेजी ट्यूल का अपभ्रंश—एक प्रकार का सूती मुलायम कपड़ा।

तनसुख—एक प्रकार का सुन्दर फूलदार वस्त्र।

मकतूल—काला रेशम।

मखमल—एक बढ़िया रेशमी वस्त्र जो एक ओर रूखा और दूसरी ओर चिकना और मुलायम होता है।

मेखरी (मेखली)—एक प्रकार का पहनावा जिसको गले में डालने से पेट और पीठ ढके रहते हैं और दोनो हाथ खुले रहते हैं।

रत्नाभूषण[1]

मूलशब्द तथा उनके अर्थ—आरसी<आदर्श – अँगूठे का शीशा जड़ा हुआ आभूषण। इंद्रमणि (सं०) नीलम। कंठा<कंठ-गले का गहना, माला। कड़ा, कड़े<कटक – हाथ या पाँव का गहना। गुच्छक, गुच्छन<गुच्छ – झब्बा, फुंदना। गोमिद<गोमेद – एक मणि। चीज<(फा०)-अलंकार। चुटकई<चोटी<चूड़ा – सिर के जूड़े में पहनने का एक गहना। चुन्ना, चुन्नी, चुन्नू<चूर्ण – रत्नकण। चुरई, चुराऊ, चुरूं, चूड़ल, चूड़ा<चूड़ा – चूड़िया। चूड़ामणि (सं०)। चूरामन<चूड़ामणि – शीश फूल। चूरा (दे० चुरई)। चैक (अं०) गले का गहना। छगल<छागल<साकल<शृंखला – पैर का गहना। छप्पन, छप्पू<छाप<चपन-ठप्पेदार अंगूठी। छल्लन, छल्लू<छल्ला<छल्ली – मुँदरी। जौहर (अ०) रत्न। झांझन (अनु०) पैर का गहना, पायल। झाम,

---

[1] मारवाड़ी बड़े धनाढ्य होते हैं उनकी स्त्रियां गहनों से लदी रहती हैं।

कुछ मारवाड़ी आभूषण

सिर—बोर, रखड़ी, पतरी, नली, टीडीभलका, चांद-सूरज, मेला, शक्करपारा,

कान—टोट्यां, बाल्या, करणफूल, लौंग, मेला, ओगनियां, एरिंग

नाक—नथ, लौंग, भवंरक्यों, नोजरिंग।

मुँह—चीपां।

गला—तुसी, बजंटी, थमणियो, मांदल्यो, सतफूली, चैन, लोक्यर, नेकलिस, मोतियों की लड़ें, खूंगाली, माला, कांठलो।

हाथ (भुजा)—भुजबन्द, टड्डा, बाजू, अरमंत, ताइत।

हाथ (पँचा)—पूंचा, गोखरु, बंगड़ी, आंवला, कंकण, बोरियो, हथफूल, जोटा, गूजरी, बीरियां।

कमर—कणकती, कूंची लटकण, आंकड़ो, मांदल्यो।

पैर—कड़ा, आंवला, नेवरी, टणका, सांटा, तोड़ा, लमंद, छड़ा, हवाई जहाज की जोड़, पायलां, रमझोल, फोलर्यां।

झामर, झामा (देश०) – झब्बा पैर का गहना। झुमकन, झुमराव<झूमना<झंप – झुमका – कान का गहना। झुल्लर, झुल्ली<झूलना<दोलन – झुमका। झूमक (दे० झुमकन), झूमर<झंप – सिर या कान का गहना। झूलर (दे० झुल्लर)। टिकई, टिकुआ, टिकोरी, टिकोली, टिक्कन, टिक्कू, टीकम, टीका<वटिका, तिलक – बेंदी। तिहुली<त्रि + यष्टि – तीहुल। तुर्रन, तुर्री<तुर्रा – पगड़ी में लगाने की कलगी। तुशन<तोशा (फा०) बांह का एक गहना। तेंगड़ी<किंकिणी;<त्रि + कटक – तगड़ी। तेहर<तिलड़ी<त्रि + यष्टि – तीन लड़ की माला। तोड़े<त्रुट – हाथ, पैर या गले का गहना। दूधमणि<दुग्ध + मणि – स्फटिक। नगऊ, नगीना, नगे, नगेला<नगीना (फा०)-मणि, रत्न। नत्था, नत्थी, नत्थू, नत्थोला, नथ, नथई, नथवा, नथुआ, नथुन, नथुनी, नथोला, नथोलिया< नाथ – नाक का गहना। नवरत्न (सं०) – नवरत्न जडितहार। नवलाख<नव + लक्ष – नौ लाख का हार। नाथू (दे० नत्था)। नीलम, नील मणि, नीलरत्न (र०)<नीलमणि। नूपुर[1] – (सं०) – बिछिया। नेउर<नूपुर – घुंघरु, पेजनी, बिछिया। नौ रतन<नवरत्न। नौ लखा (दे० नवलखा) पटरू<पटल – हाथ की चूड़ी। पन्ना, पन्नी, पन्नू<पर्ण – मरकत मणि। पलक, पलकन, पलकू< पलक-बेंदी। पहुँची<प्रकोष्ठ – पहुँचा – कलाई का गहना। पारस मणि (सं०) – पारस पत्थर। पुखराज<पुष्पराग–पीतमणि। पुरई, पुलई, पुल्लू<पर्व – अंगुली के पोर या नाक का गहना; फुल्ल – नाक का पोला या मणि, पुल्ली। पेचू<पेच (फा०) – कलगी। पोला, पोलहन (दे० पुलई) प्रशस्त मणि (सं०) – उत्तम मणि। फुंदन, फुंदी, फुन्नन, फुन्नी<फूल (फुल्ल) + फंदा (बंध) – फुंदना, झब्बा। फूल, फूला, फूलूँ<फुल्ल – फुलिया। बंदी<विंदु-बेंदी। बारी, बारु, वाली, वाले< वलय – कान की बाली, हाथ का कड़ा। विंदू (दे० बंदी)। वीरा, वीरिया, वीरी, वीरू ∠ वीर – कान की तरकी या कलाई का गहना। बुदन<विंदु – कान के बुंदे, वेंदी। बुलाक, बुलाकी< बुलाक (तु०) – नथ का सुराहीदार मोती। बुल्लन, बुल्ला, बुल्लू, बुल्लो ∠ बोल ∠ मौलि – बोल्ला, बोलड़ा, सिर का गहना। बूंदी (दे० बुंदन), बूल (बुल्लन)। वोरी, वोरे ∠ बोल ∠ मौलि – सिर का गहना; बुल्ला-बुद्बुद-पैर का गहना। बोला (दे० बुल्लन)।

भूकन ∠ भूषण। भूगल ∠ भोगली (देश०) – नथ, कान का गहना। भूषण (सं०)। मनि, मनो—मणि। मनिका, मनिया, मानिक ∠ माणिक्य – लालमणि। माणिक्य (सं०)। मुंदर ∠ मुद्रिका – मुंदरी, अंगूठी। मुकुट मणि (सं०)। मुक्ता, मुक्तामणि, मुक्ताल मुक्तावन ∠ मुक्ता – मोती। मुद्रिका (सं०)। मुरकी ∠ मुरण (मुरकना या मुड़ना) – बाली। मूंगा, मोंगा ∠ मुग्द – प्रवाल। मोता, मोती ∠ मुक्ता। मोरी ∠ मुकुट। रतना ∠ रत्न। रत्न (सं०)। राम नामा ∠ राम + नाम – हार। लाल (अ०) – लालमणि। लुर, लूरी ∠ लुरकी ∠ लुलन – बाली; ∠ लोर ∠ लोल – कुंडल। लौंगी ∠ लवंग – नाक या कान की पुल्ली। शेखर (सं०) – किरीट। हमेल, हमेला ∠ हमायल (अ०) – हुमेल गले का गहना। हिरैया, हीरा ∠ हीरक। हीरामणि (सं०)।

विशेष शब्दों की व्याख्या

चूड़ा—(१) बांह का आभूषण (२) हाथ का कड़ा (३) शिरोभूषण।

झूमर—(१) सिर में पहनने का सोने का एक आभूषण जिसमें घुँघुरु या झब्बे लटकते रहते हैं। (२) कान का एक गहना।

टिक्कू, टीकम, टीका—(१) माथे की बिंदी (२) एक सोने का आभूषण।

तोड़ा—(१) सोने या चाँदी की चौड़ी लच्छेदार सिकड़ी जो हाथ में पहनी जाती है। (२) गले में पहनने का आभूषण।

फुंदन—(१) फूल के आकार की गाँठें जो झालर आदि के छोर पर शोभा के लिए बांधी जाती हैं (२) झब्बा।

---

[1] कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि। (रामा०)

मुंदर—(१) कान का कुंडल (२) मुँदरी – अँगूठी।

मूंगा—समुद्र का एक कीडा जिसकी लाल ठठरी के मनके बनाकर पहने जाते हैं, प्रवाल।

रामनामा—राम नामी गले का हार जिसके बीच के पान में राम नाम अंकित रहता है।

मूल शब्द (फूल)—इंदीवर, कंवल, कंवल्लू, कदंब, कदम, कमल, कमोद, कुमुर, कुमुदू, कुवलय, गुलाब, गेतल, गेदन, गेदा, चंपक, चंपा, चंपू (चंपा), चमेला (चमेली), चमेली, पदन्, पदम्, पदुआ, पद्दुम, पदोही, पद्दन, पद्द, पद्म, सेवती, हरचंपा।

(१) कमल के विकृत रूप– कंवल, कंवल्लू।

(२) कुमुद के विकृत रूप कमोद, कुमुदू।

(३) गेंदा के विकृत रूप—गेतल, गेंदन।

(४) पद्म के विकृत रूप—पदन्, पदम्, पदुआ, पदुम, पदोही, पद्दन, पद्द,

कमल के पर्याय वाची—इंदीवर, कमल, कुवलय, पद्म।

ख—मूलशब्दों की निरुक्ति :—

इंदीवर—नीला कमल

कदंब, कदम—एक सदा बहार वृक्ष जिसका फल कुछ खटमिट्ठा होता है।

कुमुद—कोकाबेली, कुँई।

कुवलय—नील कमल।

सेवती—सफेद गुलाब।

टिप्पणी—ये पुष्प बच्चे के रूप रंग की ओर इंगित करते हैं।

मूलशब्द (आयुध)—असि, खंग, खंगा, खड़गे, खरगा, खरगाई, खरगी, खरगू, चंद्रहास, चोब, टेंगारी, ढुल्ली, ढाल, त्रिशूल, धनुआ, धनुक, बंब, भाला, वज्र, सागी।

टिप्पणी—खड्ग के विकृत रूप-खंग, खंगा, खड़गे, खरगा, खरगाई, खरगी, खरगू।

ख—मूलशब्दों की निरुक्तिः—

असि—तलवार।

चंद्रहास—तलवार—रावण की तलवार का नाम चंद्रहास था "चंद्रहास हरु मम परितापा" यह सीता जी का वाक्य है।

चोब—सोना या चाँदी मढ़ी छड़ी जो चोबदारों के पास रहती है।

टेगाड़ी—फरसा (∠ टंग ∠ टंक्—कुल्हाड़ी, तलवार)।

ढल्ली—ढाल।

त्रिशूल—महादेव का त्रिफला आयुध।

धनुआ, धनुक—धनुष।

सांगी—बर्छी (<शक्ति)।

मूलशब्द (वाद्ययंत्र)—चिकाड़ा, चेगाड़ा, झलई, झल्लू, झाली, डंबर, डंबरा, डंबल, डमरू, ढक्कन, ढक्कू, ढगा, ढुरई, ढुल्ली, तत्री, तुनतुन, तुनतुनियां तुन्नू, तुमरी, तुरी, निशान, नौबत, बंसू, बजऊ, बाँसुरी (वंशी), बाजा, बाजे, बीन, बीना (वीणा) मजीरा, मारू, मुरलिया, मुरली, वंशी, सरंगी (सारंगी)।

ख—मूल शब्दों की निरुक्तिः—

चिकाड़ा, चेगाड़ा—सारगी की तरह का एक बाजा (<चीत्कार)।

झलई, झल्लू, झाली—झांझ बाजा (<झल्ली)।

डंबर, डंबरा, डंबल—डमरू के विकृत रूप जिसे महादेव बजाते हैं ।

ढक्कन, ढक्कू, ढगा (ढक्कन)—नगाड़ा (∠ढक् - ढकना) ।

ढुरई, ढुल्ली—(ढोल) ।

तन्त्री—वीणा ।

तुनतुन तुनतुनियाँ—बच्चों का बाजा ।

तुमरी—तुमडी, कद्दू (लौकी) का बना हुआ बीन बाजा जिसे सपेरे बजाते हैं (<तुम्बक) ।

तूरी (तूर) निशान—नगाड़ा ।

नौबत (फा०)—मंगलसूचक बाजा जो मंदिरों, महलों या बड़े आदमियों के घरों पर बजता है, जिसमें प्रायः नगाड़ा तथा सहनाई बाजे होते हैं ।

मारू—युद्ध का नगाड़ा ।

मुरली—वंशी ।

(आ) ललित कला

मूलशब्द (वास्तुकला)—जग निवास, जंग मंदर, मंडल, मंडिल, मंदिर ।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति

जग निवास, जगमंदर—महाराज उदयपुर के दो झीलस्थ महल ।

मंडल, मंडिल—मंदिर के विकृत रूप ।

मूल शब्द (तक्षण कला)—मूरति, मूर्ति ।

मूल शब्द (चित्रकला)—चित्तर, चित्तर सिंह, चित्र कृष्ण, चित्र गोपाल, चित्र दत्त, चित्र पाल, चित्र पाल सिंह, चित्र मणि, चित्र शरण, चित्रराय ।

मूलशब्द (राग रागिणी)—कल्याण, गौरी, झूमर, टप्पा, टोड़ी, देवकली, ध्रुव, पूर्वी, वागेश्वरी भैरव, भैरवी, बसंत, श्री ।

(७) समाज सुधार

मूल शब्द (अछूत)—अछूत, महाशय, हरिजन ।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति :—

महाशय—इसका अर्थ है उदार चित्तवाला । यह नाम आर्य समाज ने उन लोगों को दिया जो मुसलमानी मत छोड़कर आर्य बन गये हैं ।

हरिजन—इसका अर्थ है ईश्वर भक्त । यह नाम गांधीजी ने अछूत जातियों के मनुष्यों के लिए व्यवहृत किया है ।

मूल शब्द (गो रक्षा)—गो रक्ष ।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति :—

गो रक्ष—भारतवर्ष कृषि-प्रधान देश है अतएव यहाँ गाय की बड़ी मान्यता है । भारतवासी इसे गो माता कहते हैं । इनकी रक्षा के लिए समय-समय पर अनेक प्रयत्न हुए । सबसे प्रथम स्वामी दयानंद ने गो-वध के विरुद्ध गो करुणा निधि पुस्तक की रचना की, जिसमें उन्होंने सिद्ध किया कि एक गाय से सैकड़ों मनुष्यों का पालन-पोषण हो सकता है । इसके फलस्वरूप अनेक गौशालाएँ खोली गईं तथा अनेक सभा-समितियाँ गो रक्षा के लिए स्थापित हुईं । इसके उपरांत महामना मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी तथा अनेक मान्य नेताओं ने गोवध रोकने का प्रयत्न किया ।

मूल शब्द (शुद्धि)—शुद्धि, सुद्धि (शुद्धि) सुद्ध (शुद्धि) ।

ख—मूल शब्दों की निरुक्ति :—

शुद्धि—शुद्धि आन्दोलन को आर्य समाज ने मुस्लिम तथा ईसाइयों को फिर हिन्दू धर्म में मिलाने के लिए चलाया।

ग—गौण शब्द :—

(१) वर्गात्मक—गिरि, पुरी, राय, शाह, सिंह, सी।

(२) सम्मानार्थक :—

(अ) आदरसूचक—जी, बाबू, श्री।

(आ) उपाधि सूचक—राजा, लाल।

(३) भक्तिपरक—आनंद, इंद्र, ईश, ईश्वर, कांत, किशोर, कुमार, कृष्ण, गोपाल, चंद, चंद्र, चरण, जीत, ज्योति, दत्त, दयाल, दास, दीन, देव, नंद, नंदन, नारायण, पति, पाल, प्रकाश, प्रसाद, बक्स, बहादुर, भूषण, मणि, मल, मोहन, रंजन, रत्न, राज, राम, रूप, लाल, विहारी, शंकर, शरण, सहाय, सेन, सोहन, स्वरूप।

३—विशेष नामों की व्याख्या—

व्याख्या के योग्य कोई विशेष नाम नहीं है। मूल की निरुक्ति से सब नाम स्पष्ट हो जाते हैं।

हेमंत कुमार—ऋतुपरक नाम है[1]।

हमेल सिंह—इस नाम से स्त्रियों की आभूषणों के प्रति ममता प्रगट होती है[2]।

(४) समीक्षण

इसके अंतर्गत समाज सम्बन्धी संस्थाएँ, प्रथाएं, भौतिक जीवन की सामग्री तथा सुधार की कुछ आधुनिक योजनाएँ सम्मिलित हैं। हिन्दुओं के चारों वर्ण किसी न किसी रूप में दिखलाई देते हैं। अनेक उपजातियाँ देश तथा व्यवसाय-भेद के कारण बन गई प्रतीत होती हैं। बहुसंख्यक नामों

---

[1] हेमंत कुमार—बसंत पंचमी के शुभ दिन जन्म होने से मेरे पहले पुत्र का नाम बसंत कुमार रखा गया। एक दिन बाजार से मैंने एक कंघी खरीदी, उस पर हिंदी में हेमन्त लिखा हुआ था, उसे देखते ही मेरे दिल में यह विचार उठा कि दूसरे पुत्र का नाम हेमंत कुमार क्यों न रखा जाय। नाम भी अच्छा है। जन्माष्टमी के दिन दूसरा पुत्र पैदा हुआ तो उसका पूर्व निश्चय के अनुसार हेमंत कुमार नाम रख लिया गया। इस प्रकार बसंत का भाई हेमंत हो गया। अब ऋतुओं पर नाम रखने की धारणा पक्की हो गई और जब तीसरा पुत्र पहली मई को हुआ तो उसका नाम शरत्कुमार रखा गया।

—विमलेंदु

[2] पायल अनौट बाँक बिछिया प्रिया के पाँय,
जेहर, जराव-जरीरसना रसीली की।
वलय-वलित कर कंकन कलित तापै,
राजै रुचि चारु चुरियान चमकीली की॥
झूलत हमेल हार, वेसर करन फूल,
माँग-मुकता पै छवि चूड़ामनि नीली की।
स्यामल घटा में ज्यौं चमंक चपला की चारु,
नीबे दुपटा मैं त्यौं दमंक दुति पीली की॥

से ब्राह्मण वर्ण का प्रभुत्व दिखलाई दे रहा है। अंग्रेज तथा फिरंगी दो विजातियाँ दूसरे देश की हैं। अनेक प्रकार के अभिवादन एवं तदनुकूल आशीर्वादात्मक प्रयोग पाये जाते हैं। सम्बोधन के लिए श्रीमान, बाबू, साहब, महाशय आदि अनेक आदरसूचक शब्द आपस में व्यवहार करते हैं। पुलिस, सेनादि प्रभावशाली विभागों के राजकर्मचारियों के पदों पर अधिक नाम रखे गये हैं। इससे शासन-अवस्था का पता भी चलता है। नाना प्रकार के व्यवसायों का उल्लेख मिलता है। कुछ मनुष्य सेवा करके भी अपनी जीविका वृत्ति उपार्जन करते हैं। यह बताया जा चुका है कि नामकरण के साथ शिशु के जन्म काल तथा स्थान का अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है। दिन, मास, ऋतु के नाम पर अनेक नाम रखे गये हैं। स्थान-सूचक नामों में वही नाम यहाँ लिये गये हैं जो किसी नगर अथवा गाँव के नाम हैं। काल तथा स्थल सम्बन्धी अन्य सामान्य नाम व्यंग्य के अन्तर्गत रखे गये हैं। स्थानपरक नामों की अपेक्षा काल वाचक नाम अधिक हैं। उनमें अपभ्रंश रूप भी बहुसंख्या में दिखलाई दे रहे हैं। लाहौर, मुल्तान तथा पेशावर प्रभृति नगर अब पाकिस्तान के अन्तर्गत हैं।

धार्मिक पर्वों के अतिरिक्त इन लोगों में सामाजिक त्योहार भी मनाये जाते हैं, कहीं-कहीं मेले भी लगते हैं। स्वयंबर, जौहर, सती आदि अनेक विचित्र प्रथाएँ हिन्दुओं में प्रचलित हैं। इनके भौतिक जीवन में नाना प्रकार की सामग्री का पर्याप्त समावेश रहता है। सूती, ऊनी, रेशमी वस्त्र के व्यवहार करते हैं। भाँति-भाँति की मिठाइयाँ, फल, मेवादि इनके खाद्य पदार्थ हैं। मिर्चादि मसाले प्रेमी मालूम होते हैं। कपूर, केसर, कस्तूरी आदि बहुमूल्य औषधियों का प्रयोग भी करते हैं। अलंकार-प्रियता इनके जीवन की विशेषता है। पैर की अँगुलियों से लेकर सिर की चोटी तक स्त्रियों का कोई अंग आभूषणों से रिक्त नहीं रहता। मिठाई की ममता की अपेक्षा आभूषणों का मोह अधिक आकर्षक प्रतीत हो रहा है, अलंकारों का इतना सुन्दर प्रदर्शन किसी अन्य देश में दुर्लभ है। जैसे अस्त्र-शस्त्र के संचालन में निपुण दिखलाई देते हैं वैसे ही वाद्ययंत्रों में भी कम कुशल नहीं हैं। तेल, फुलेल, इत्र के शौकीन हैं। फूलों से अपना शरीर और घर सजाते हैं। देवार्चना में भी पुष्पार्पण करते हैं। गुलाब से गुलकंद तैयार किया जाता है। इनका सबसे प्यारा फूल कमल प्रतीत होता है। फूलों में सबसे अधिक पर्यायवाचक शब्द कमल के ही पाये जाते हैं। कलम, किताब, दुरबीन आदि कुछ अन्य उपयोगी वस्तुओं के भी नाम मिलते हैं।

ललित कलाओं का अत्यन्त सूक्ष्म प्रदर्शन इस अभिधान संग्रह से होता है। मन्दिर तथा भवन निर्माण में उच्च कोटि की वास्तुकला तथा मूर्तियों में उत्कृष्ट तक्षण कला के अद्भुत निदर्शन पाये जाते हैं। चित्रकला के कुछ नाम मिल गये हैं। इनमें कुछ देव चित्र भी सम्मिलित हैं। कलाकार राजा रवि वर्मा भी अपने चित्रों के कारण ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। संगीत में वाद्य, नृत्य एवं गान सम्मिलित हैं। भरत इसके आचार्य प्रसिद्ध हैं। नृत्य तथा वाद्य में भगवान शंकर एवं कृष्ण अत्यन्त प्रवीण थे। मध्य युग में संगीत का ह्रास हो चला था। हरिदास, बैजू बावरे, तानसेन आदि कुछ सिद्धहस्त संगीतज्ञ यत्र-तत्र इसकी गौरव वृद्धि कर रहे थे। कुछ वर्ष पहले संगीत एक अनावश्यक एवं अनादृत विषय समझा जाता था। अतः समाज में प्रचलित कुछ ही राग रागिनियों के नाम यहाँ उद्धृत किये गये हैं। संगीत को पुनर्जीवित कर उत्कर्ष पद पर पहुँचाने का श्रेय विष्णु दिगम्बर को है।

समाज सुधार के लिए होनेवाले आन्दोलनों में हरिजनोद्धार, शुद्धि और गो रक्षा का इन नामों में उल्लेख मिलता है।

सामाजिक प्रवृत्ति के अध्ययन से अधोलिखित विशेषताओं का पता चलता है।—(१) ब्राह्मण के अतिरिक्त अन्य वर्ण तथा जातिपरक नाम प्रायः निम्न श्रेणी के मनुष्यों के वास्तविक नाम

का स्थान ले लेते हैं। किन्तु ब्राह्मण वर्ग पर नाम श्रद्धा के कारण रखे गये हैं। (२) प्रथा, संस्कार, उत्सव, मेला, देश, काल, बाजे, आन्दोलन सम्बन्धी नाम घटना अथवा परिस्थिति के कारण पड़ते हैं। (३) व्यवसायी तथा कर्मचारियो पर नाम उनकी महत्ता के कारण रखे गये हैं। (४) आशीर्वाद तथा बधाई में शुभेच्छा रहती है। (५) फूल-फल तथा अन्य वस्तुओ पर नाम रूप रंग के कारण पड़ जाते हैं। (६) रत्नाभूषण, वस्त्र तथा मिठाई पर नाम रखने का हेतु उनकी सर्वप्रियता तथा व्यक्तियों की अभिरुचि-विशेष है। (७) मन्दिर-मूर्ति पर भक्ति तथा चित्र पर उनकी मनोमोहकता के कारण नाम रखते हैं। राग-रागिनियों के देवता होते हैं अतः उन पर नाम प्रायः बहुत ही कम रखे जाते हैं।

समाज के उन्नयन के लिए विकासादि नई-नई योजनाओं के आयोजित करने के भी कुछ प्रमाण पाये जाते हैं।[1]

---

[1] विकासचन्द्र।

अभिव्यंजनात्मक प्रवृत्ति

(१) दुलार

(२) उपाधि

(३) श्लाघात्मक विशेषण

(४) व्यंग्य

अठारहवाँ प्रकरण

दुलार

१—गणना

क—क्रमिक गणना—

(१) नामों की संख्या २७२ ।

(२) मूल शब्दों की संख्या १५८ ।

(३) गौण शब्दो की संख्या २४ ।

मूल तथा गौण शब्द में अनुपात—५८·०६:८·८ ।

ख—रचनात्मक गणना—

एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	योग
६६	१८३	१७	३	=२७२

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द—आत्मानंद, आत्माराम, कक्कू, कीरेंद्र, कीरे, कुँवर, खिलावन, खुनखुन खोखा, गुड्डू, गुड्डे, गुलगुल, गुलाब, चंदा, चमचम, चिगनू, चिगुड़, चिरई, चुनमुन, चेंघू, छगन, छग्गा, छब्बा, छुन्ना, छुन्नन, छुन्नू, झुनझुन, तूती, तोता, तोती, तोफा, ददई, ददन, ददनी, दद्दन, दद्दी, दद्दू, दुलवारी, दुलारे, दुलिया, दुली, दुलुआ, दुले, दुल्ला, दुल्ली, दुल्ले, दुहिता नंद,दूल चंद, नाती, नौनिहाल, पंछी, पंतू, पंते, पटरू, पटे, पट्टू, पट्टे, परम हंस, पुतन्नी, पुत्तन, पुत्ती, पुत्तू, पोतन, प्यार चंद, प्यारे, फरजंद, बचई, बचऊ, बचन, बचनू, बचन्नू, बचाऊ, बची, बचुली, बचुल्ली, बच्चन, बच्चा, बच्चू, बच्चे, बटुआ, बट्टन, बट्टा, बट्टी, बट्टू, बबई, बबऊ, बबन, बबुआ, बबुनी, बब्बन, बब्बू, बाबुली, बाल, बालक, बिटन, बिट्टकन, विट्टकुन, विट्टन्ना, विट्टन, बुटई, बुट्टन, बुट्टी, बेटा, भइया, भउआ, भाई, भाऊ, भैया, मिट्ठन, मिट्ठू, मिठाई, मिठोन, मिन्नी, मिसिरिया, मीठा, मुनिया, मुनुआ, मुन्ना, मुन्नी, मुन्नू, मोती, रतन, राजाबाबू, लड़ैती लाल, ललई, ललन, ललैयन, लल्लन, लल्ला, लल्ली, लल्लू, लल्लूराजा, लाडूलाल, लालबच्चा, लालमन, लालहंस, लालू, शिशु, साहबजादा, सुआ, सुगई, सुगन, सुग्गन, सुग्गा, सुबच्चन, सुवन, सुवनू, सोहन, हंस-स्वरूप, हवीब, हीरा, हीरामणि, हीरामन, होरिल ।

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ—

१—रचनात्मक टिप्पणियाँ—(देखिए समीक्षण) ।

पर्यायवाचक शब्द—

(१) तोता—आत्माराम, कीर, टुइंयां, पटे, मिट्ठू, लालमन, सुआ, सुग्गा, सुबन, हीरामन ।

(२) बच्चा—कक्कू, कुंवर, खोखा, छुन्ना, पुत्तन, फरजंद, बेटा, लाल, शिशु, साहबजादा, सुबन ।

अच्छे ∠ अच्छ । आत्मानंद- (सं०) आत्मा को प्रिय । आत्माराम (सं०) तोते के लिए प्यार का शब्द । कक्कू ∠ कोका (पं०),<कोका (फा०)-बालक । कीरेंद्र-(सं०) कीरे<कीर-तोता । कुँअर, कुवर ∠ कुमार । खिलावन ∠ खेल ∠ केलि । खुनखुन (अनु०) झुनझुना बाजा । खुखई ∠ खोखा (बं०)

कोका फा०) बालक। गुड्डू, गुड्डे ∠ गुड़-गुड़िया; ∠ गूदड़ < चुद्र। गुलगुल ∠ (अनु०) मालपुआ। चंदा ∠ चंद, चंद्र। चमचम (देश०) एक मिठाई। चिगन, चिंगना (देश०)-छोटा बच्चा। चिगुण ∠ लँगड़ा-बच्चा। चिरई ∠ चटक-चिड़िया। (चू चू का अनु०)। चुनमुन ∠ चूर्ण + मुन्ना (हिं०) आटे का पुतला। मुन्ना (प्यार)। चेंघू ∠ चेंगड़ा ∠ चें चे करना (अनु०) छोटा बच्चा। छगन, छग्गा < छगट-छोटा बच्चा। छब्बा, छब्बू ∠ छवि-सुन्दर; ∠ छवना, छवा; ∠ छौना < शावक-बच्चा। छुन्ना, छुन्नन, छुन्नू < छौना-शावक-बच्चा। भुनभुन ∠ भुनभुना (अनु०) खिलौना, भांभन (अनु०) पायल। तोता, तोती ∠ तूती ∠ (फा०)। तोफा – तोहफा (अ०)-उपहार, भेंट। ददई, ददन, ददन, ददी, ददू ∠ दादा ∠ तात-प्यारा। दुलवारी, दुलार, दुलारे, दुलिया, दुली, दुलुआ, दुले, दुल्ला, दुल्ली, दुल्ले दूल ∠ दुलार ∠ लाड ∠ लालन-प्यारा। दुहितानंद (सं०) लडकी का पुत्र नंद, नंदन (सं०)-पुत्र। नवजादिक ∠ नवजात-सद्योजात शिशु। नाती ∠ नप्तृ-लडकी का लड़का। नौनिहाल ∠ नव + निहाल (फा०) बच्चा। पंछी ∠ पक्षी-चिडिया। पंतू, पंते ∠ पोता ∠ पौत्र-लड़के का लडका। पटरू ∠ पटल-हाथ का गहना। पटरू, पटे, पट्टू, पट्टे ∠ पट्ठ-तोता। परमहंस (सं०)-शुद्धजीव. पुतन्नी, पुत्तन, पुत्ती, पुत्तू, पोतन ∠ पुत्र। प्यारचंद ∠ प्रिय + चंद (चद्र) प्यारा चाद। बचई, बचऊ, बचन, बचनू, बचन्नू, बचाऊ, बची, बचली, बचुल्ली, बच्चन, बच्चा, बच्चू, बच्चे ∠ वत्स। बटुआ, बट्टन, बट्टा, बट्टी बद्ध ∠ बेटा ∠ बटु-पुत्र। बबई, बबऊ, बबन, बबुआ, बबुनी, बब्बन, बब्बू, बाबुली ∠ बाबू ∠ बाबा (तु०)-बच्चो के लिए प्यार का सम्बोधन। बाल, बालक (सं०)। बिटन, बिट्ठकन, बिटकुन, बिटुन्ना, बिट्टन ∠ बेटा < वटु-पुत्र। बुटई, बुट्टन, बुट्टी ∠ बूटा ∠ विटप-फूल। बेटा ∠ वटु-पुत्र। भइया, भउआ, भाई, भाऊ, भैया ∠ भाई-भ्रातृ। मिट्ठन, मिट्ठू, मिठाई, मिठोन, मीठा ∠ मिष्ट-मीठा तोता। मिन्नी <, मिनमिनाना (अनु०)। मिसिरिया < मिसरी (मिस्रदेश से) मिश्रित मिश्री। मीठा ∠ मिष्ट। मुनिया ∠ मुनि-लाल नामक छोटी सुन्दर चिड़िया, रायमुनी, मुनुआ, मुन्ना, मुन्नी, मुन्नू ∠ मुनमुना (देश०) एक पकवान; ∠ मुनरा (देश०) कान का एक गहना; ∠ मुनिया ∠ मुनि-राय मुनी प्यार का एक सम्बोधन। मोता, मोती ∠ मौक्तिक। रतन ∠ रत्न। राजा बाबू ∠ राजा + बाबू (तु०) बच्चों के प्यार का सम्बोधन। लड़ेती ∠ लाड़ ∠ लालन-लाडला। ललई, ललन, ललैयन, लल्लन, लल्ला, लल्ली, लल्लू, लल्लू राजा, लाड़ू, लाल. लाल बच्चा, लालमन, लालहंस, लालू ∠ लाल ∠ लालक-पुत्र, प्यारा। शिशु (सं०) साहब जादा (अ०)-पुत्र। सुआ, सुगई, सुगन, सुग्गन, सुग्गा ∠ शुक। सुबच्चन ∠ सु + बच्चा। सुवन, सुवनू ∠ सूनु-पुत्र। सोहन ∠ शोभन-सुन्दर। हंस स्वरूप (सं०) शुद्ध स्वरूप। हबीब (अ०)-मित्र। हीरामणि (सं०)। हीरामन ∠ हीरक + मणि-हीरा, तोता। हीरा ∠ हीरक। होरिल (देश०)-नवजात शिशु।

घ—गौण शब्द

(१) वर्गात्मक - राय, सिंह।

(२) आदरसूचक—जी, साहब।

(३) भक्तिपरक—अच्छे, कुमार, कृष्ण, चन्द, दत्त, दास, दीन, नरायन, नवाजादिक, नाथ, नारायण, प्रकाश, प्रसाद, बक्स, मल, राय, रूप, लाल, बिहारी, शंकर, सहाय, स्वरूप।

३—विशेष नामों की व्याख्या—

आत्मानंद, आत्माराम—पुत्र की उत्पत्ति पिता की आत्मा से मानी गई है। "आत्मा वै जायते पुत्रः" इसलिए वह सबका प्रिय तथा आनंद देनेवाला होता है। आत्माराम तोते को भी कहते हैं जो अपने रूप रंग तथा बोली के कारण पुत्रवत प्रिय तथा हर्षदायक होता है।

गुड्डूप्रसाद, गुड्डे सिंह—जिस प्रकार बच्चो को गुडिया आदि खिलौने अत्यंत प्रिय होते हैं और उनमे वह दिन भर खेलते रहते हैं। इसी प्रकार बच्चे भी माँ बाप आदि के प्यारे खिलौने हैं। इसी भावना से प्रेरित हो, प्रायः बच्चों के खिलौनों पर नाम रख लिये जाते हैं।

दुहितानंद—पुत्री पुत्र से अधिक प्यारी होती है और उसका पुत्र उससे भी अधिक प्रिय होता है।

मिठाईलाल—स्वादिष्ट मिठाई के सदृश बच्चों की भोली बोली भी अत्यंत मधुर होती है। इसलिए वे सबको प्यारे लगते है। इसलिए चमचम, गुलगुल आदि मिठाइयो के नाम उन्हें दुलार के कारण दिये जाते हैं।

मुनियाप्रसाद—एक बहुत छोटी सुन्दर चिड़िया जो झाडियों में फुदकती रहती है मुनिया कहलाती है। वह लाल नामक पक्षी की स्त्री होती है। उड़ते समय पंखो को फड़फडाते हुए बड़ी सुहावनी लगती है। कुछ मनुष्य उसको पालते भी हैं। बच्चो के प्यार के नाम मुनियाँ, मुन्नू आदि कदाचित् इसी से बने हुए प्रतीत होते हैं।

मोतीलाल—पुत्र मोती रत्न आदि अमूल्य मणियों के समान प्रिय होता है इसीलिए ऐसे नाम रखे जाते हैं। यह प्रसिद्ध देश भक्त पं० जवाहरलाल नेहरू के पिता का नाम था जो अपने समय के एक विख्यात वकील, देशभक्त, राजनीतिज्ञ तथा नेता थे।

लाल बच्चा राम—लाल लाड प्यार का नाम है जो अनेक अर्थों में आता है (१) छोटा, प्यारा (२) कृष्ण (३) लाल रंग का सुन्दर पक्षी (४) लाल मणि। लल्लन आदि नाम इसी के रूपांतर हैं।

हीरामणि—कुछ पक्षियों को रूप रंग के कारण तथा कुछ को मधुर बोली के कारण पाला जाता है। इनमें तोते मुख्य हैं। ये कई प्रकार के होते हैं। दोनों गुण होने के कारण तोते मनुष्य को अत्यंत प्रिय होते हैं। एक विशेषता यह है कि ये मनुष्यों की तरह शब्दों को रटकर बोल सकते हैं। इसलिए बहुत से लोग इसे राम राम रटा देते हैं। जिन घरों में पुत्र नहीं होते हैं वहाँ इसे ही पुत्रवत् मानकर अपना मनोविनोद करते हैं। तोते अनेक रंग के होते हैं। हीरामणि तथा लालमणि इनकी दो विशेष जाति हैं। दुलार के नामों में तोता सबसे अधिक प्यारा प्रतीत होता है।

४—समीक्षण

इन नामों में एक प्रकार की आत्मीयता एवं प्रगाढ़ अंतर्प्रियता अभिव्यंजित होती है। नामी के लिए एक कोमल कल्पना का प्रादुर्भाव होता है जिससे सरसता, सौंदर्य एवं श्रेष्ठत्वादि अनेक गुणों एवं हर्षादि सुखद मनोवृत्तियों का आवेग उमड़ पड़ता है। दुलार का नाम मिठास, शोभा, स्नेह एवं भोलेपन की प्रतिकृति है जिसमें व्यंग्य की कटुता, घृणा अथवा अन्य कलुषित मनोवेगों का प्रवेश असम्भव होता है। ये नाम माता पिता अथवा अन्य सम्बधियों द्वारा बचपन में ही दिये जाते हैं।

इस समुदाय के अधिकांश नाम इस प्रकार रखे गये हैं :—

(अ)—पुत्र के पर्यायवाचक शब्दों द्वारा बनाये गये नामों की संख्या अधिक है। इसमें विकृत रूप भी अतिशय संख्या में प्रयुक्त हुए हैं। जिस प्रकार एक छोटा बच्चा शब्दों को मनमाना रूप दे देता है वही दशा इन नामों में भी प्रतीत होती है यथा-पुतन्नी, बच्चन, छगन, छुन्नुन, बुट्टन आदि।

(आ)—तोता एक सुन्दर तथा मधुरभाषी पक्षी है जो अनेक रंग रूप का होता है। जंतु-जगत में केवल वही एक जीवधारी है जो मनुष्यों की बोलियों का कुछ अनुकरण कर लेता है अत-एव वह जन-समाज में अत्यंत प्रिय हो गया है। इस प्रकरण में तोता के पर्यायवाची शब्दों पर भी बहुसंख्यक नाम पाये जाते हैं। यथा-आत्माराम, मिट्ठू, पटे, सआ, सुग्गा आदि।

(इ)—बच्चे प्यार के कुछ विशेष शब्दों से पुकारे जाते हैं। ये नाम ऐसे शब्दों से बने हुए हैं जिनसे माधुर्य, सौंदर्य प्रेम के साथ-साथ, प्रकृत ऋजुता भी प्रकट होती हो एवं बाल्य चापल्य का भी किंचित् पुट हो यथा कुँवर, दुलुआ, मुन्ना राजा आदि।

(ई)—बच्चे मनुष्यों के सजीव स्थानापन्न खिलौने हैं जिनके साथ वे यथावकाश खेला करते हैं। बड़ी आयु में काष्ठधात्वादि निर्मित खिलौनों से खेलने की अवस्था तथा व्यवस्था में बड़ा परिवर्तन हो जाता है। किंतु पुरानी भावना के जाग्रत रहने से बच्चों को 'खिलौना सम्बंधी नाम दे दिये जाते हैं। जिस प्रकार बचपन में खिलौने प्यारे होते हैं, उसी प्रकार माता-पिता को अपने बालक प्रिय होते हैं। वे खिलोने के सदृश्य ही उनसे खेलते हैं।

(उ)—चमचम, गुलगुल आदि मिठाइयों पर बच्चों के नाम इसलिये रखे जाते हैं कि वह सर्व प्रिय होती हैं।

(ऊ)—कुछ प्रिय सम्बंधियों पर भी नाम रख लिये जाते हैं।

यथा—कक्कू, ददई, भइया।

(ए)—कुछ नाम अन्य प्रिय पदार्थों पर भी मिलते हैं यथा चंदा, मोती, गुलाब, हीरा।

प्यार के नाम प्रायः लघु, विकृत तथा गौण प्रवृत्ति रहित होते हैं।

उन्नीसवाँ प्रकरण

उपाधियाँ

१—गणना

क—क्रमिक गणना—

(१) नामों की संख्या १०४६ ।

(२) मूल शब्दों की संख्या ६३६ ।

(३) गौण शब्दों की संख्या ५६ ।

दोनों में अनुपात ६०.६ : ५.३ ।

ख—रचनात्मक गणना—

	एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	पंचपदी नाम	षट्पदी नाम	योग
वीरता	१२	६६	६४	२३	५		२३०
धन	१२	३८	७				५७
विद्या	४	७०	२३	१			६८
सम्मानविशेष	१३	२३७	११३	१०	५		३७८
राजपद	१६	६०	१३४	३७	५	१	२८६
	६०	५३१	३७१	७१	१५	१	=१०४६

इस प्रवृत्ति में दो शब्दवाले नामों की संख्या सबसे अधिक है। गणना की दृष्टि से उपाधियों का क्रम इस प्रकार है। (१) सम्मान विशेष (२) राज पद (३) वीरता (४) विद्या (५) धन। पाँच तथा छै शब्द वाले नाम ऐश्वर्यबोधक हैं।

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द—(१) वीरता—अंवर जीत, अंवर सिंह, अख्तियार सिंह, अग्रबहादुर, अजय, अजयदेव, अजय बहादुर, अजय सिंह, अजय स्वरूप, अजयेंद्र, अजीत सिंह, अतिबल सिंह, अनी बहादुर, आदि वीर सिंह, आर्य वर, आलम सिंह, उत्तम सिंह, उदभिद सिंह, कटक बहादुर, कटार सिंह, केशरी मर्दन सिंह, खंधारी सिंह, खडग सिंह, खरग जीत सिंह, खरग बहादुर, खलक सिंह, चमू सिंह, जंग जीत, जंग जीत सिंह, जंग बहादुर, जंग विजय सिंह, जंगवीर सिंह, जंग शेर बहादुर सिंह, जग जीत, जग जीतन, जगत सिंह, जगत वीर सिंह, जगवीर, जगसिंह, जत्थे सिंह, जय कृत सिंह, जहान सिंह, जैत, जैत बहादुर, जैतू, तेजवीर, तेज सिंह, दल गंजन, दल जीत, दल थम्मन, दल मर्दन सिंह, दल विजय, दलवीर, दल श्रृङ्गार, दलसिंगार सिंह, दल सिंह, दवन सिंह, दावा सिंह, दिग्विजय नाथ, दिग्विजय भास्कर, दिग्विजय सिंह, दिल बहादुर सिंह, दिलावर सिंह, दुनियासिंह, दुनी सिंह, दुन्नू सिंह, दुर्गविजय सिंह, दुर्ग सिंह, दुर्जय सिंह, दुर्जेंद्र नाथ, दुर्जेंद्र प्रताप, दुर्विजय, दुर्विजय सिंह, द्वंद बहादुर, द्वंद राज, धनुर्धर, धनुर्धराचार्य, धनुषधर, धनुषधारी सिंह, नर बहादुर, नरवीर, निर्भय सिंह, पंजाब सिंह, पद्म सिंह, प्रचंड सिंह, प्रसिद्ध सिंह, फौजराय, फौजू सिंह, बंग बहादुर, बंब बहादुर, बलधारीसिंह, बल बहादुर, बलवंत बहादुर, बलवत राय, बलवंत सिंह, भवसागर सिंह, भारत सिंह, भाल सिंह, भुजबल, भुजबल सिंह, भुजवीर सिंह, भुजेन्द्रपाल सिंह, भूदल सिंह, मद

गंजन सिंह, मल, मलई सिंह, मल्ला, मल्लू, महारथी, महा सिंह, युद्धराज, युद्धवीर, युद्धवीर सिंह, रणंजय, रणंजय सिंह, रण कर्कश सिंह, रणजोर सिंह, रण धीर, रण पति, रण बहादुर, रण बाज, रण भद्र, रणमत्त सिंह, रण विजय, रण विजय बहादुर सिंह, रण विजय सिंह, रणवीर, रणवीर बहादुर सिंह, रणवीर विजय सिंह, रणवीर विहारी, रणवीर सिंह, रण सिंह, रनपत, रिसाल सिंह, लशकरी सिंह, विजई, विजय प्रकाश, विजय बहादुर राय, विजय बहादुर सिंह, विजय मूर्ति, विजय वीर सिंह, विजय स्वरूप, विजयेंद्र जीत, विश्ववीर, वीर पाल सिंह, वीर बंधु, वीर बहादुर, वीर भंजन, वीर मणि, वीर व्रत वीर शमशेर सिंह, वीर सिंह, वीर सेन, वीरेंद्र, वीरेंद्र वीर सिंह, वीरेंद्र भान, वीरेंद्र सिंह, शत्रुसिंह, शमशेरजंग, शमशेरजंग बहादुर, शरशेरबहादर, शार्दूलराज, शूरवीरसिंह, शूरसिंह, शेरपाल सिंह, शेरबहादुर, शेरसिंह, संहारसिंह, सत्यपृथ्वीसिंह, समरजीतसिंह, समरपालसिंह, समरबहादुरसिंह, समरसिंह, समरेंद्र, समरेंद्रनाथसिंह, समरजीतसिंह, सर्वदमनसिंह, सामंत, सारजीतसिंह, सावंता, सिरताजजंग बहादुर, सेनबहादुर सिंह, सेनसिंह, हस्तबहादुर, हस्तमल ।

इस प्रवृत्ति की यह विशेषता है कि जातीयसिंह इनमें उपाधि का एक अंग बन गया है ।

(२) धन

अमीर, अमीरबहादुर, अमीरराय, अमीरी, उमराय, उमराव, करोड़पति, करोड़ी, जगतसेठ, जगसेठ, धनवीर, लक्खी, लक्खू, लक्ष, लक्षपति, लक्षराय, लक्ष्मीसागर, लखईसिंह, लखटकिया, लखपति, लखमीर, लखरू, लखिया, लखी, लखीचद, श्रीसागर, श्रेष्ठमणि, श्रेष्ठी, साहु, साहूकार सेठ, सेठू, हजारी ।

(३) विद्या

अलूमसिंह, अचारी, आचार्य, आलिम, इलमचंद, इलाचंद, कवींद्र, कवींद्रशेखर, ज्ञानचंद, ज्ञानदेव, ज्ञानधर, ज्ञाननाथ, ज्ञानप्रकाश, ज्ञानभानु, ज्ञानभूषण, ज्ञानसागर, ज्ञानसिंह, ज्ञानानंद, ज्ञानेंद्र, ज्योतिषभूषण, तीव्रमेध, पंडित, परीक्षासिंह, प्रतिभा-भूषण, बुद्धिसागर, ब्रह्मविशारद, मुंशी, मेधार्थी, मौलवी, विज्ञानभिक्षु, विज्ञान स्वरूप, विज्ञान-हंस, विज्ञानानंद, विद्याकांत, विद्याधर, विद्यानंद, विद्यानिधि, विद्यानिवास, विद्याप्रकाश, विद्याभानु, विद्याभास्कर, विद्याभूषण, विद्यारत्न, विद्यार्थी, विद्यावंत, विद्यावागीश, विद्याविनोद, विद्याशिरोमणि, विद्यासागर, विद्यासिंधु, विद्यासिंह, विद्वत्तमचंद्र, विद्वाननाथ, विद्वानसिंह, विवेकरंजन, विवेकशरण, विवेकशील, वेदप्रकाश, वेदप्रिय, वेदभानु, वेदभास्कर, वेदभूषण, वेदमणि, वेदमित्र, वेदरत्न, वेदव्रत, वेदव्रतभूषण, वेदांती, वेदानंद, सुधींद्र, सुमेदी ।

(४) सम्मान-विशेष

अमूल्य रत्न प्रभाकर, आनंद भूषण, आनंद मूर्ति, आनंद स्वरूप, आर्य भास्कर, आर्य भूषण, आर्यमणि, आर्यरत्न, आलमचंद, इलाचंद्र, उत्तमशील, उपदेशबहादुर, करुणानिधान, करुणानिधि, करुणासागर, कर्मबहादुर, कर्मवीर, कार्येंद्र, कीर्तिभूषण, कुमनी, कुलकांत, कुलचंद्र, कुलजीतराय, कुलदीपक, कुलदेव, कुलनंदन, कुलानंद, कुलपति, कुलभास्कर, कुलभूषण, कुलरंजन, कुलराज, कुलवंत, कुलवीर, कुलेंद्र, कुलोमणि, कुल्लनसिंह, कृपाशील, कृपासागर, कृपासिंधु, क्षमाकर, क्षमास्वरूप, खंजादेसिंह, ख्यातसिंह, गढ़पति, गुणज्ञ, गुणबहादुर, गुणवंतराय, गुणागार, गुणवीर, गुणवीरप्रसाद, गुणानंद, गुणीनाथ, गुनई प्रसाद, गुनूसिंह, जगजोत, जगज्योति, जगतचंद्र, जगतप्रकाश, जगतबंधन, जगतबंधु, जगतभास्कर, जगतमणि, जगतसिंह, जगबंधु, जगभानु, जगमल, जगमानसिंह, जगमेहर, जगरतन, जगरोशन, जगवंश, जयप्रकाश, जयमूर्ति, जयरत्न, जयस्वरूप, जयकरणसिंह,

जस जीतसिंह, जसपतराय, जसपाल, जसबीर, जसमल, जितेंद्र, जितेन्द्रविक्रमसिंह, जितेन्द्रवीरसिंह, जितेंद्रव्रत, जीवनज्योति, टेकबहादुर, ताजबहादुर, ताजमल, ताजसिंह, ताल्लुकेदार, दयानिधान, दयानिधि, दयासागर, दयासिंधु, दयास्वरूप, दरबारी, दानबहादुर, दानसिंह, दानिशराय, दानीसिंह, दावनसिंह, दावासिंह, दीनबंधु, दीनानाथ, दुनियामणि, दुनीचंद, देशकरण, देशबंधु, धर्मकीर्ति, धर्मभिक्षु, धर्मभूषण, धर्ममित्र, धर्मवीर, धर्मव्रत, धर्मशिरोमणि, धर्मशील, धर्मस्वरूप, धर्मात्मा, धर्मावतार, धर्मेंदु, धर्मेंद्र, धर्मेष्ठी, धीरात्मानंद, धीरेंद्र, धीरेश, धुरंधर, धुरीधर, धुरेंद्र, नेकपालसिंह, नेकभूषण नेवाजसिंह, परमजीतराय, पुण्यश्लोक, पेशलमुकुट, प्रणवीरसिंह, प्रियदर्शन, प्रियदर्शी, प्रियव्रत, बलतेजसिंह, बसुधानंद, बसुधासिंह, भंवर, भंवरपालसिंह, भंवरसिंह, भ्रमर, भ्रमरसिंह, भारतचंद, भारतज्योति, भारतनरेश, भारतप्रकाश, भारतभानु, भारतभूषण, भारतमित्र, भारतवीर, भारतसिंह, भारतेंदु, भारतेश्वर, भुवनचंद, भुवनदिवाकर, भुवनभास्कर, भूप्रकाश, भूमित्र, मनईसिंह, मालचंद मित्रानंद, मिर्जाराय, यशोविमलानंद, युवराज, युवराज बहादुर, योगधारीराय, राजकरण, राजकिशोर, राजकुमार, राजबन्धु, राजवंशी, राजरोशन, राजवंत, राजवंश, राजवल्लभ, राजाबहादुर, राजेश्वर राय, रायबहादुर, रायसिंह, रावराजा, लोकमणि, लोकमन, लोकमित्र, लोकसिंह, वंगेंद्र, वंगेश्वर, वंशदेव, वंशधारीलाल, वंशपति, वंशबहादुर, वंशभूषण, वंशराज, वंशरोपन, वंशलोचन, वशींद्र, विश्वचंद्र, विश्व प्रकाश, विश्व प्रिय, विश्वबंधु, विश्व मित्र, विश्व रंजन, विश्व विनोद, शम्मूर्ति, शर्मधर, शाति प्रिय, शांति भूषण, शांति सागर, शांति स्वरूप, शाहजादा, शाहजादे, शिरोमणि, शील स्वरूपानंद, शीलेंद्र, शीलेश, सज्जन सिंह, सत्यनिष्ठ, सत्यप्रिय, सत्य प्रेमी, सत्य भक्त, सत्यभान, सत्य भूषण, सत्य मूर्ति, सत्य रंजन, सत्यरूप, सत्यवादी, सत्यवीर सिंह, सत्यव्रतराय, सत्य व्रतसिंह, सत्य स्वरूप, सभा कांत, सभाचंद, सभाजीत, सभा जीतसिंह, सभापति, सभा मोहन, सभासिंह, सरकार बहादुर, सरताज बहादुर, सरदार सिंह, सरदारी, सरफराज सिंह, सल्तनत बहादुर, सल्तनत राय, सल्तू, सवाई सिंह, सिद्दार, सिरताज सिंह, सिरतू सिंह, सुगुण, सुगुण चंद, सुधीर, सुधीर चंद, सुल्तान सिंह, सुशील, सुशीलचंद, सुशील प्रकाश, सुशील बहादुर, सुशील भूषण, सुशील स्वरूप, सुशीलेंद्र, हिन्दूपति, हुकुम पाल, हुकूमतराय, हुक्म सिंह।

(५) राजपद

अवनींद्र, छत्रपति, छत्रपाल, छमापति, छमापाल, छितिपाल, छितीश, छितीश्वर, छितेश्वर छमापति, चक्रवर्ती, जनेश्वर, जमीपाल, दुनियापति, दुनियाराय, धरणीकांत, नरदेव, नरपति, नरेंद्र, नरेंद्र बहादुर, नरेंद्रभानु, नरेंद्रभूषण, नरेंद्रवीर, नरेश, नरेश्वर, नवाब, नब्बू, नाहा, निरपति, नृप, नृपति, नृपेंद्र, नृपेश, पुरुष पाल, पृथ्वीपाल, पृथ्वीश, बादशाह, बोपति, भुआर, भुआल, भुवनकांत, भुवनपाल, भुवनेंद्र, भुवाल, भूप, भूपति, भूपन, भूपा, भूपाल, भूपाली, भूपेंद्र, भूपेश, भूमिनाथ, भूमींद्र, महरजवा, महाराज, महाराजा बहादुर, महिपाल, महिराज, महीप, महीपत, महीपति, महीश, मुलकराज, रजई, रजना, रजुआ, रजोला, रज्जन, रज्जा, रज्जू, राज, राजकरण, राजकेश्वर, राजदेव, राजधर, राजधारी सिंह, राजन, राजनाथ, राजनारायण, राजनेतिसिंह, राजपत, राजपति, राजपाल, राजबहादुर, राजभूषण, राजमणि, राजमन, राजमल, राजमुकुट, राजरतन, राज राजसिंह, राज राजेश्वर, राजा, राजू, राजेंद्र, राजेश, राजेश्वर, राजेसिंह, रावत, रावल, शाह, सम्राट, साहु, सुल्तान।

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ :—

(१) रचनात्मक—ये सम्मानार्थक उपाधियाँ प्रायः निम्नलिखित शब्दों के योग से निर्मित हुई हैं :—

(अ)—आनंद, सत्य, शील, धीर, करुणा, क्षमा, कृपा, दया, दान, सुशील, शांति, धर्म, जितेंद्र, जस आदि गुणों के योग से।

(आ) लोक, आलम, विश्व, जग, जगत, भू, भुवन, दुनिया, देश, भारत आदि स्थानों के योग से।

(इ)—कुल, वंश, सभा के योग से।

(ई)—आर्य, भँवर, राज, आदि उपाधियों के योग से।

(उ)—ताज, जय के योग से।

(२)—पर्य्यायवाचक शब्द (अ)—आलम, लोक, विश्व, जग, जगत, दुनिया, दनी, संसार के पर्यायवाचक।

(आ)—इला, भू, वसुधा, कु, पृथ्वी के पर्य्यायवाची।

(इ)—कुल, वंश।

(३) विकसित शब्द तथा उनके तत्सम रूप—कुमनी (कुमणि); कुल्लन (कुल); खंजादे (खानजादा); गुनई (गुणी); गुन्नू (गुण); जोत-(ज्योति); बंधन (बधु); मेहर (मिहिर); रतन (रत्न); जस (यश); जितेंद्र (जितेंद्रिय); दुनीदुनिया; नेवाज (निबाज); भंवर (भ्रमर), मनई (मनुष्य); मन (मणि); वशींद्र (वशींद्रिय); सिद्दार (सरदार); सिरतू (सरताज); हुकुम (हुक्म)

(४) विजातीय प्रभाव—निम्नलिखित उर्दू, फारसी तथा अरबी के शब्द पाये जाते हैं।— खंजादे, रोशन, ताज, ताल्लुकेदार, दरबारी, दानिश, दुनिया, नेक, बहादुर, मिर्जा, शहजादे, सरताज, सरदार, सल्तनत, सुल्तान, हुकुम, हुकूमत।

(१) रचनात्मक टिप्पणी—ये राजपद प्रायः पृथ्वी, मनुष्य के पर्यायवाची तथा राजा शब्द से बने हैं।

(२) पर्यायवाची शब्द (अ)—पृथ्वी के पर्यायवाची शब्द-अवनी, क्षमा, क्षिति, धरणी, पृथ्वी, भू, महि, मही, भूमि, जमी।

(आ)—मनुष्य के पर्यायवाची—जन, नर, नृ, पुरुष।

(३) विकसित शब्द तथा उनके तत्सम रूप—नाहा (नाथ); निरपति (नृपति); भुआर, भुआल, भुवाल (भूपाल); महरजवा (महाराज); रजई, रजना, रजुआ, रजोला, रज्जन, रज्जा, रज्जू, राज, राजू (राजा); साहु (शाह या साधु)।

(४) विजातीय प्रभाव—निम्नलिखित उर्दू, अरबी, फारसी के शब्द पाये जाते हैं। दुनिया, नवाब, बादशाह, मुल्क, शाह, सुल्तान।

ग—मूल शब्दों की निरुक्ति

अंबरजीत—अंबर या आमेर जयपुर राजा की पुरानी राजधानी थी।

अनी बहादुर—अनी = सेना।

उदभिद सिंह—उदभिद = नाश करनेवाला।

कटकबहादुर—कटक = सेना।

केशरी मर्दन सिंह—सिंह को मारनेवाला।

खन्धारी सिंह—कंधार देश का वीर।

खडग सिंह—तलवार चलाने में वीर।

चम्मू सिंह—चम्मू (चमू) = सेना।

जैतू—विजेता।

तेज सिंह—तेज = प्रताप।

दलगंजन—सेना का संहार करनेवाला।

दल थम्भन—दल को रोकने वाला। मारवाड़ के राजा गज सिंह (१६२०-३८) की उपाधि।

दल मर्दन—सेना का संहार करनेवाले।

दल शृंगार—सेना के शिरोमणि।

दावा सिंह—दावन = दमन।

दिल बहादुर, दिलावर—साहसी।

दुर्जय सिंह—बड़ी कठिनाई से जीता जानेवाला।

द्वंद बहादुर—मल्ल युद्ध में वीर।

पंजाब सिंह—महाराजा रणजीत सिंह की उपाधि।

पदम सिंह—सेना का एक पद्म व्यूह, पद्म = गज, संख्या, निधि, राम, ब्रह्मा, कमल।

बंग बहादुर—बंग = बंगाल।

बंब बहादुर—बंब = बम का गोला। (Atom bomb)

मद-गंजन प्रसाद—अहंकार को नाश करनेवाला।

मल—मल्ल-युद्ध करनेवाला।

महारथी—बड़ा योद्धा।

रणंजय—रणजीत।

वीर शमशेर सिंह—तलवार का वीर।

शमशेर जंग—युद्ध में तलवार चलाने में निपुण।

शार्दूल राज—शार्दूल = सिंह।

हस्त बहादुर—हस्त = हाथ।

संपत्ति—

उमराय, उमराव—(उमरा) अमीर का बहुवचन, अरबी शब्द है जो प्रतिष्ठित लोग या सरदार के अर्थ में आता है।

करोड़ी—जिसके पास करोड़ रुपया हो, खजांची।

जगत् सेठ—अत्यंत धनवान पुरुष, यह सेठ लखमी चंद की पदवी थी।

लक्खी, लक्खू, लक्षपत्ति, लक्षराय, लखई सिंह, लखटकिया, लखपति, लखरू, लखिया, लखी, लखीचद—जिसके पास लाखों रुपये की संपत्ति हो।

लखटकिया—टका—चाँदी की पुरानी मुद्रा।

लखमीर—मीर = मुखिया—लखपतियों सा मुखिया।

साहु—शाह का विकृत रूप जो राजा के अर्थ में व्यवहृत होता है। सेठ, महाजन, (देखिए ईश्वर प्रवृत्ति के अन्तर्गत गौण प्रवृत्ति में)।

हजारी—एक हजार सिपाहियों का सरदार जो मुसलमानी शासन-काल में नियुक्त किया जाता था। हजारों की सम्पत्ति का स्वामी।

विद्या—

आचारी (आचार्य), आचार्य—वेद का अध्यापक, गुरु, पुरोहित, एक सरकारी उपाधि जो संस्कृत की सबसे उच्च परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर प्रदान की जाती है।

(आलिम अरबी)—यह विद्वान् या पंडित के अर्थ में आता है।

इलमचंद—इल्म (अरबी) विद्या के अर्थ में आता है।

इलाचंद—इला = पृथ्वी का चाँद।

कवींद्र—कवियों में श्रेष्ठ।

तीव्रमेध—तीक्ष्ण बुद्धिवाला।

त्रिवेदी—तीन वेद का जाननेवाला, ब्राह्मणों की एक उपाधि।

पंडित—जो पंडा अर्थात् बुद्धि से युक्त है, शास्त्रज्ञ, विद्वान्।

ब्रह्मविशारद—(१) ब्रह्म को जाननेवाला, (२) वेद का अर्थ समझनेवाला।

मेधार्थी—मेधा + अर्थी = बुद्धि को चाहनेवाला।

मौलवी (अ०)—पंडित, मुसलमानी धर्म का आचार्य।

विद्याभास्कर—विद्या का सूर्य।

विद्यावागीश—वागीश = बृहस्पति, देवताओं के गुरु।

विद्याविनोद—विद्या का आनंद लेनेवाला।

विद्यासागर—यह उपाधि विशेषतः ईश्वरचंद्र के लिए प्रयुक्त हुई थी।

विद्वत्तमचंद्र—विद्वानों में अत्यत श्रेष्ठ।

विवेकरंजन· विवेक—भली बुरी वस्तु का ज्ञान, सत्य ज्ञान।

विद्वान्सिंह—विद्वानों में श्रेष्ठ, विद्वान् वह है जो आत्मा के स्वरूप को समझता हो।

सुमेदी—(सुमेधी) अच्छी बुद्धि वाला।

सुधींद्र—विद्वानों में श्रेष्ठ।

सम्मान—

गढ़पति—दुर्ग का स्वामी।

गुनईप्रसाद—गुणों का प्रसाद।

जगमल—संसार में श्रेष्ठ।

जगरोशन—संसार में प्रसिद्ध।

जीवनज्योति—जीवन को प्रकाश देनेवाला अथवा जीवन की आशा।

टेकबहादुर—टेक = प्रतिज्ञा को पूर्ण करनेवाला।

ताजसिंह—मुकुटधारियों अर्थात् राजाओं में श्रेष्ठ।

ताल्लुकेदार—अवध के बड़े जमींदारों की उपाधि।

मालचंद—माल मालवा के लिए प्रयुक्त हुआ है।

रायबहादुर—यह उपाधि अंग्रेजी सरकार द्वारा रईसों को दी जाती थी। यह रायसाहब से उच्च श्रेणी की है।

हुकूमतराय—शासन को चलानेवाला।

गौण शब्द

(१) वर्गात्मक—राय, सिंह, सिनहा।

(२) भक्तिपरक—आनंद, किशोर, कीर्ति, कुमार, चंद, चंद्र, चरण, जीत, दत्त, दास, दीन, देव, ध्वज, नंद, नंदन, नाथ, नारायण, नेति, पत, पति, पाल, प्यारे, प्रकाश, प्रताप, प्रसाद, बक्स, बरन, बल, बली, बहादर, भान, भूप, भूषण, मणि, मन, मनोहर, मूल, महेंद्र, मित्र, मोहन, राम लाल, वसंत, विक्रम, विजय, विहारी, वीर, व्रत, शंकर, शरण, शाह, सहाय, सेन, स्वरूप।

३—विशेष नामों की व्याख्या

अंबरजीत, अंबर सिंह—अंबर या आमेर जयपुर राज की प्राचीन राजधानी थी जो जयपुर से कुछ दूरी पर पहाड़ियों में बसाई गई थी।

अभिराज सिंह—अभिराज सर्वश्रेष्ठ के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है अथवा जिसका शासन सर्वत्र हो।

केशरी मर्दन सिंह—सिंह को मारनेवाले शेर बबर के समान बली।

खन्धारी सिंह—अफगानिस्तान में कंधार नामक एक नगर है।

खलक सिंह—खलक=दुनिया।

दिग्विजय सिंह—चक्रवर्ती राजा अपनी सेना के साथ अन्य देशों को अपने अधीन करने के लिए निकलते थे। यह यात्रा दिग्विजय के नाम से प्रसिद्ध थी। राजा रघु ने अपने आस-पास के समस्त राजाओं को जीतकर दिग्विजय पूर्ण की थी जिसका वर्णन कालिदास ने रघुवंश में किया है।

शमशेर जंग—यह उपाधि दो विजातीय शब्दों से बनाई गई है शमशेर=तलवार और जंग युद्ध के अर्थ में आते हैं।

सरजीत सिंह—यह सर्वजीत सिंह का रूपांतर प्रतीत होता है।

हस्त बहादुर—जो अपने कर-कौशल दिखाने में प्रवीण हो।

धन—

उमराव—यह अरबी शब्द अमीर के बहुवचन उमरा का विकृत रूप है जो धनी प्रतिष्ठित तथा सरदार के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

करोड़ी—करोड़ रुपये का स्वामी करोड़ी कहलाता है। खजांची को भी करोड़ी कहते हैं।

लक्खी—जिसके पास लाखों रुपये की सम्पत्ति हो। लखपति, लक्षपति लखटकिया आदि भी इसी अर्थ में आते हैं।

श्री सागर—जिसके पास अतुल सम्पत्ति हो।

साहु—फारसी शब्द शाह का अपभ्रंश रूप है जो राजा के अर्थ में आता है। मालदार महाजनों में इसका प्रयोग होता है। देखिए ईश्वर के गौण प्रवृत्ति में शाह।

शिक्षा सम्बंधी—

अलूमसिंह—अलूम—अरबी शब्द इल्म का बहुवचन है। इस उपाधि से प्रकट होता है कि यह व्यक्ति अनेक विद्याओं में पारंगत है।

अचारीप्रसाद—आचारी संस्कृत की आचार्य उपाधि का विकसित रूप है। आचार्य संस्कृत की सबसे बड़ी पदवी है जो राजकीय संस्कृत कालेज काशी से परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थी को दी जाती है।

ज्योतिषभूषण—नक्षत्र सम्बंधी विद्याओं में निपुण।

तीव्रमेध—तीक्ष्ण बुद्धिवाला।

त्रिवेदीदत्त—यह वेद सम्बंधी उपाधियाँ बड़ौदा राज्य के अंतर्गत वेदों की परीक्षा पास करने पर प्रदान की जाती हैं। तीन वेदों में उत्तीर्ण परीक्षार्थी त्रिवेदी कहलाता है। ब्राह्मणों में त्रिवेदी एक उप जाति है।

प्रतिभाभूषण—असाधारण बुद्धि वाले व्यक्ति को इस प्रकार की उपाधियाँ प्रदान की जाती हैं।

मुंशी—मुंशी अरबी का शब्द है जो उर्दू पढ़े-लिखे मुसलमान, कायस्थ तथा अन्य व्यक्तियों के लिए आदरार्थ व्यवहृत किया जाता है। फारसी की एक परीक्षा का नाम मुंशी है।

मेधार्थी—धारणावती बुद्धि को मेधा कहते हैं।

विज्ञानभिक्षु, विज्ञान स्वरूप, विज्ञान हंस, विज्ञानानंद—ये उपाधियाँ साइंसवेत्ताओं को दी जाती हैं। विज्ञान ईश्वर का नाम भी है।

वेदांतीप्रसाद—वेदांत का जाननेवाला वेदांती। वेदांत दो अर्थों में प्रयुक्त होता है।

(१) वेद का अंतिम अंश अर्थात् उपनिषद् और आरण्यक आदि जिनमें आत्मा, परमात्मा, संसार आदि का निरूपण है अर्थात् ब्रह्म विद्या।

(२) षड् दर्शनों में से एक दर्शन जिसमें ब्रह्म की पारमार्थिक सत्ता स्वीकार की गई है अर्थात् उत्तर मीमांसा।

सम्मान—

कुलदीप दास—इस उपाधि से यह भावना प्रकट होती है कि यह व्यक्ति दीपक के सदृश अपने कुल की उज्ज्वल कीर्ति का प्रकाश फैलायेगा।

जगमेहर सिंह—मेहर चंद्र के अर्थ में आता है। संसार को चन्द्रमा के सदृश आलोक तथा आनंद देनेवाला।

दरबारी—मुसलमान बादशाहों की राजसभा का सभासद दरबारी कहलाता था।

दानिश राय—दानिश = बुद्धि।

दावन सिंह—(१) दावन = दमन, नाश (२) खुखड़ी, हंसिया।

दावा सिंह—दावा = अधिकार।

देशकरण—करण = आभूषण।

धर्मावतार—अत्यंत धर्मात्मा—शिष्टाचार में राजा तथा न्यायाधीश को सम्बोधित करते समय धर्मावातार कहते हैं। महाराज युधिष्ठिर की एक उपाधि।

धर्मेंद्र—यह उपाधि युधिष्ठिर तथा यम की है। अत्यंत धार्मिक पुरुष के लिए भी प्रयुक्त होती है।

धुरंधर—धुरी को धारण करनेवाला अर्थात् सम्पूर्ण भार अपने ऊपर लेनेवाला।

पुण्य श्लोक—पुण्य ही है कीर्ति जिसकी।

पेशल मुकुट—पेशल = चतुर + मुकुट = शिरोमणि।

प्रियदर्शी—प्रिय है दर्शन जिसका, यह महाराज अशोक की उपाधि थी।

भंवरपाल सिंह—राजपूताने में राजा के बड़े पुत्र को भँवर कहते हैं। वही युवराज पद तथा राज्य का अधिकारी होता है।

भारत चन्द—भारत सम्बंधी उपाधियाँ देशभक्ति की सूचक हैं।

भारतेंदु—यह हिन्दी के प्रसिद्ध कवि हरिश्चंद्र की उपाधि है।

मिर्जाराय—(१) मिर्जा (फा०) का अर्थ वीर या वीर का पुत्र अर्थात् मीरजादा।

(२) तैमूर वंश के शाहजादों की उपाधि।

(३) मुगलों की उपाधि।

यशोविमलानंद—विमल यश में आनंद लेनेवाला अथवा जिसे यश में ही विमल आनंद मिलता है। विमल देहरी दीपक के सदृश है।

राजाबहादुर—अंग्रेज सरकार द्वारा धनियों, जमींदारों तथा ताल्लुकेदारों को यह उपाधि वितरण की जाती थी।

रावराजा—यह उपाधि अंग्रेजों की ओर से प्रतिष्ठित धनी महाराष्ट्रों को दी जाती थी।

लोकमणि—लोक सम्बंधी उपाधियाँ लोकप्रियता सूचित करती हैं।

वंगेंद्र—बंगाल के स्वामी।

वंशरोपन—वंश को स्थापन करनेवाला, वंश सम्बंधी उपाधियाँ वंश के उत्कर्ष को व्यक्त करती हैं।

वशींद्रदत्त—वंश में हैं इंद्रियाँ जिसकी।

विश्वचंद—विश्व सम्बन्धी उपाधियाँ व्यक्ति के विश्व प्रेम को प्रकट करती हैं।

शम्मूर्ति—शांतिस्वरूप।

शमंधर—शांति धारण करनेवाला।

शाहजादा (फा०)—बादशाह का पुत्र।

शीलस्वरूपानंद—शील से युक्त उपाधियाँ चरित्र से सम्बन्ध रखती हैं।

सभाकांत—सभा सम्बन्धी उपाधियाँ जनता पर व्यक्ति का प्रभाव सूचित करती हैं।

सरकार बहादुर—यह शासक के लिए प्रयुक्त होता है।

सरताज बहादुर—सिरताज का अर्थ सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, शिरोमणि, सरदार आदि होता है।

सरदार—सिक्खों की एक उपाधि।

सल्तनत बहादुर—अरबी शब्द सल्तनत, राज्य तथा शासन अर्थ में आता है।

सवाईसिंह—जयपुर महाराज जयसिंह को औरंगजेब ने यह उपाधि प्रदान की थी। तभी से यह उपाधि जयपुर के राजवंश में चली आती है।

सुल्तानसिंह—सुल्तान शब्द फारसी है जो सम्राट् के अर्थ में आता है। यह मुसलमान बादशाहों की उपाधि है।

राजपद—

छत्रपति—क्षत्रियों का अधिपति।

चक्रवर्ती—एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक राज करनेवाला सार्वभौम राजा।

नवाब—(१) किसी बड़े प्रदेश के शासन के लिए नियुक्त किया हुआ मुसलमान बादशाह का प्रतिनिधि।

(२) छोटे-छोटे मुसलमानी राज्यों के शासकों की उपाधि।

(३) अंग्रेजो की ओर से मुसलमानों को दी जानेवाली राजा के समान उपाधि।

(४) जो बड़े अमीरी ढंग से रहता हो और अपव्यय करता हो (व्यंग्यात्मक)।

राजकेश्वर—छोटे-छोटे राजाओं को राजक कहते हैं।

राजनेति-सिंह—राज्य का नेतृत्व करनेवाला।

रावतमल—रावत = छोटा राजा।

रावल सिंह—राजपूत सावंतों की एक उपाधि रावल है।

४—समीक्षण

इस प्रवृत्ति के अंतर्गत नामों की विशेषता यह है कि अधिकांश नाम प्रायः समस्तपदी हैं जिनमें गौण प्रवृत्तियों का अधिकतर अभाव है। इस वृहत् संकलन में इतने प्रकार की उपाधियाँ सम्मिलित हैं—

(१) सामरिक उपाधियाँ—ये उन शूरवीर सैनिकों, सामंतों, सेनापतियों तथा राजाओं को सरकार द्वारा प्रदान की जाती हैं जिन्होंने अपने, बल, शौर्य धैर्य, पराक्रमादि गुणों से शत्रु पर विजय प्राप्त करने में संग्राम में विशेष कौशल प्रदर्शित किया है। इनकी रचना विशेषतः रण, सेना, सिंह,

मर्दन, आयुध, रथ, जयविजय, बलवीर, आदि युद्ध संबंधी शब्दों से अथवा उनके पर्यायों से हुई है। राज की ओर से इन पदवियों को योधाओं एवं अन्य वीर मनुष्यों को उत्साहित करने के लिए अधिक संख्या में वितरण किया जाता है क्योंकि इनके प्राप्त करने में प्राणों को विकट संकट में डालना पड़ता है। यही नहीं, कभी-कभी तो जीवन की आहुति देने पर ही इनकी प्राप्ति होती है।

(२) **गुणात्मक उपाधियाँ**—कभी-कभी किसी सभा—समिति अथवा संस्था की ओर से विशेष व्यक्तियों को उनके क्षमा, धर्म, सत्य, शील, शांति आदि गुणों के कारण इन पदों से सम्मानित किया जाता है। कभी-कभी जनता तथा राजा की ओर से भी यह समादरणीय भाव प्रदर्शित होता है।

(३) **पांडित्यमूलक उपाधियाँ**—इनमें दो प्रकार की उपाधियाँ सम्मिलित हैं।

(अ)—विद्या-विषयक उपाधियाँ विश्वविद्यालय अथवा विद्वत् परिषद् द्वारा परीक्षार्थियों को उनकी सफलता पर वितरण की जाती हैं।

(आ)—बुद्धि-विषयक उपाधियाँ विद्वानों को राजसभा अथवा विद्वत् परिषदों की ओर से प्रदान की जाती हैं। कभी-कभी संभ्रात पुरुष भी विशेष व्यक्तियों की प्रतिभा, मेधा, बुद्धि, ज्ञानादि गुणों से प्रभावित हो उन्हें इन उपाधियों से विभूषित करते हैं।

(४) **धन संबंधी**—अमीर, करोड़ी, लखपति, हजारी, सेठ आदि उपाधियाँ सम्पत्तिशाली पुरुषों को राजा की ओर से प्रदान की गई हैं।

(५) **सम्मानसूचक**—दुर्भिक्ष, जल विप्लव, भूकम्प, महामारी आदि घोर संकट में मनुष्यों की सहायता करने अथवा अन्य परोपकार के कार्यों में अग्रसर होने के उपलक्ष में जनता अपने प्रिय नेताओं को नाम-विशेष से अभिहित करने लगती है—विश्वबंधु, दीनानाथ, देशबंधु आदि ऐसे ही नाम हैं।

जाति, देश, समाज की सेवा में प्रवृत्त होने पर ये उपाधियाँ प्राप्त हुई हैं।

कभी-कभी मनुष्य अपनी हितैषिता को अपने कुल या वंश के उत्थान तक ही सीमित रखता है। कुलभास्कर, वंशभूषण आदि उपाधियाँ इसी प्रवृत्ति की सूचक हैं। रायबहादुर, सरदार बहादुर, राव राजा, सल्तनत बहादुर आदि राजभक्तों की उपाधियाँ हैं। देशभक्तो को उनकी देशसेवा के उपलक्ष में सम्मानसूचक भारतभूषणादि नाम दिये गये हैं। कुछ अन्य प्रकार की उपाधियाँ भी इस संग्रह में सम्मिलित हैं जिनका विवरण टिप्पणियों में दिया जा चुका है। राजपद की उपाधियाँ राजा तथा युवराज के पर्य्यायवाचक शब्दो से बनी हैं इनमें पैतृक एवं स्वयं उपार्जित दोनों प्रकार के सम्मान पद संकलित हैं। युवराज आदि पद जन्मसिद्ध स्वत्व से स्वतः प्राप्त हो जाते हैं।

अधिकांश में इन सब उपाधियों का उद्देश्य उत्साहित तथा सम्मानित करना ही होता है ताकि अन्य पुरुष भी ऐसे कार्यों के करने में संलग्न हों। उपाधियों से प्रभावित होकर ही मनुष्य उन पर अपने नाम रखते हैं, धन जन बल शासनादि के कारण राजा का मान देश में सबसे अधिक होता है, इसलिये उसका प्रभाव भी जनता पर अधिक पड़ता है अतएव राजा से संबंध रखनेवाले नामों की संख्या भी विशेष है, उपाधियों के क्रम से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं—

(अ) भारतीयों में गुणों का अधिक मान है।

(आ) देश में राजा विशेष गौरव से देखा जाता है।

(इ) वीरता यहाँ के मनुष्यों का आभूषण है।

(ई) धन की अपेक्षा विद्या को विशेष महत्त्व दिया जाता है।

श्लाघात्मक विशेषण

नैतिक एवं सौंदर्य भावात्मक गुण तथा उपाधियों के अतिरिक्त कुछ ऐसे शब्द भी नामों के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं जिनसे संज्ञी के व्यक्तिगत सौंदर्य, सौकुमार्य, माधुर्य, शीलशक्ति आदि सद्गुण सम्बंधी विशेषताएँ व्यक्ति होती हैं। व्यक्त के रूप की मनोज्ञता, अंगो की प्राकृतिक कोमलता, वाणी की मधुरिमा आदि अनेक विशेषताएँ प्राय: जन्मजात होती हैं जिन्हें व्यंग्य कहना असगत एवं अन्याय होगा। इनको श्लाघात्मक विशेषण कह सकते हैं। ये स्तुत्यर्थक विशेषण मनुष्य की व्यक्तिगत विशेषता के परिचायक होते हैं। प्रियदर्शी, कोमल, सुंदर, मंजु, मंजुल, चंद्रवदन, सुभाष, सुदृष्टि, सुदर्शन, सुकुमार, सुलोचना, मंजुभाषिनी, खुशदिल, मनोरंजन, मृदुल मनोहर, मुदित मन, अच्छे, सज्जन, बलवान, शान्त, सुशील, सरूपी, दानी, सोहन आदि शब्दो द्वारा इस प्रवृत्ति की अभिव्यंजना होती है। व्यक्ति में जब यथार्थ विशेषता होती है तभी वह नाम इसके अंतर्गत आ सकता है अन्यथा उसे व्यंग्य कहना ही उचित होगा। चंद्रानन, कमलनयन, फूलवदन आदि अलंकारिक नाम भी शरीर-सौंदर्य में अभिवृद्धि करने के कारण इन्हीं नामो में सम्मिलित हो सकते हैं। माधुर्य, ऋजुता, नम्रता, विनय सम्बंधी तथा प्रियम्वदा, प्रसन्नवदन आदि नाम स्वभाव की सौम्यता प्रदर्शित करते हैं। स्वर बलाघात के कारण—उच्चारण-भेद से—कभी-कभी प्रशस्त शब्द भी विपरीत अर्थ का बोधक हो जाता है। देवानाम् प्रिय (मूर्ख), मंगलामुखी (वैश्या) आदि कुछ शुभार्थसूचक शब्द समूह भी दुराशय के लिए रूढ़ हो गये हैं।

श्लाघात्मक नामों का क्षेत्र भी अत्यन्त व्यापक है। इसमें सौंदर्य भावात्मक एवं नैतिक गुणों का समावेश रहता है। उपाधियाँ भी श्लाघात्मक ही होती हैं। इनमें बहुत थोड़ा सा अन्तर रहता है। सौंदर्यात्मक नाम किसी व्यक्ति के स्वरूप की, भावात्मक उसके स्वभाव की एवं नैतिक उसके चरित्र की विशेषता बतलाते हैं। उपाधि में किसी एक ही गुण का आतिशय्य समाविष्ट रहता है और व्यंग्य में कटुता, उपहास तथा अरमणीयता। स्तुतिपरक नामों में विशेष्य भी विशेषण का ही काम करता है।

कभी-कभी एक ही शब्द के तत्सम तथा तद्भव रूपों अथवा दो समानार्थी पर्यायवाची शब्दों से दो विरोधी गुणों का बोध होता है। हंसोड़ा (खिल्लो) व्यंग्य व्यंजक हैं। परन्तु प्रसन्न वदन (हंसमुख) श्लाघात्मक नाम हैं। इसी प्रकार छवीले (छैला) व्यंग्य हैं और सरूपी श्लाघात्मक हैं। हसोड़ा और छवीले शाब्दी व्यंग्य हैं। आर्थी व्यंग्य में अर्थ या भाव प्रबल रहता है, जो श्लेष, काकु आदि से व्यक्त किया जाता है। एक ही शब्द अर्थ-भेद से दोष या गुण का बोधक हो सकता है। चतुर चालाक के अर्थ में व्यंग्य है, निपुण या दक्ष के अर्थ में गुण बोधक है। व्याज निंदा से भी जहाँ स्तुति के रूप में निंदा की जाती है आर्थी व्यंग्य ही समझना चाहिए। आप बड़े सत्यवादी हरिश्चन्द्र हैं। इसका अर्थ हुआ आप बड़े झूठे हैं। श्लाघात्मक विशेषणों का स्थान उपाधि तथा व्यंग्य के मध्य में समझना चाहिए। उपाधियाँ अर्जित होती हैं। उनमें आस्तिक धर्मों का मूल्यांकन किया जाता है। व्यंग्य में वक्रता होती है। परंतु यह प्रकृत विशेषता व्यक्ति के जीवन को सहज रूप से परमोज्वल एवं मनोरम बनाती है।

श्लाघात्मक विशेषण प्रवृत्ति नैतिक या सौंदर्य—भावात्मक गुण प्रवृत्ति से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। अंतर केवल इतना ही होता है कि द्वितीय में विशेषण के स्थान में विशेष्य से काम लिया जाता हैं। मंगलभाषित में किसी व्यक्ति के अवगुण, त्रुटि या दोष को गुणबोधक शब्द से प्रकट किया जाता है। अंधे व्यक्ति को प्रज्ञाचक्षु अथवा सूरदास कहने से उसकी यथार्थ प्रशंसा नहीं है। यह केवल शिष्ट पुरुषों के व्याहरण का एक विशिष्ट प्रयोग या प्रिय ढंग है जिससे नेत्रहीन व्यक्ति के अंतःकरण को कोई आघात न पहुँचे।

पहले यह बताया गया है कि नाम में यथार्थता न होने से सुंदर अर्थ वाला नाम भी व्यंग्य बन जाता है। अवसर, परिस्थिति, घटना, भावना आदि विशिष्ट प्रयोग के कारण वह श्लाघात्मक के स्थान में निंदात्मक रूप धारण कर लेता है।

आख्याहि भद्रे प्रियदर्शनस्य,
न गङ्गदतः पुनरेति कूपम्[1]।

यहाँ प्रियदर्शन अप्रिय दर्शन हैं। गंगदत्त नामक मेढ़क गोह से कह रहा है—हे भद्र गोधे! उस कलमुहे कुलभक्षी अशुभ दर्शन विषधर से कह दो कि गंगदत्त अब उस कुएँ में नहीं आनेवाला है। तीसमारखाँ जैसी उपाधियाँ जिनका आदि स्रोत विरोधी अर्थों (गुणों) से आरम्भ होता है किसी न किसी दुर्गुण की बोधक ही होती हैं। तीस मक्खियाँ मारनेवाले तीसमारखाँ का नाम वीरता का बोधक नहीं, प्रत्युत असमर्थता तथा कायरता प्रकट करता है। मरती तो एक चुहिया भी नहीं और नाम रख लिया तीसमारखाँ। ऐसे नाम न उपाधियाँ हैं, न श्लाघात्मक विशेषण और न मंगल भाषित। इन्हें व्याज निंदक व्यंग्य ही कह सकते हैं।

आत्मश्लाघा आत्महत्या है, परंतु ये श्लाघात्मक सरस विशेषण सभ्य समाज में व्यक्तिगत आभूषण समझे जाते हैं।

---

[1] पंचतंत्र

बीसवाँ प्रकरण

व्यंग्य

(१) गणना—

क—क्रमिक गणना—

(१) नामों की संख्या—१७२६

(२) मूल शब्दों की संख्या—१२०५

(३) गौण शब्दों की संख्या—३७

मूल तथा गौण शब्दों में अनुपात ६६. ७ : २. ०७

ख—रचनात्मक गणना—

एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	योग
५७६	१०६२	८७	४	=१७२६

इस प्रवृत्ति में २ शब्दवाले नाम सबसे अधिक हैं तथा ४ शब्द से अधिक नामों का सर्वथा अभाव है। व्यंग्य की दूसरी विशेषता यह है कि इसमें अन्य प्रवृत्तियों की अपेक्षा मूल तथा गौण शब्दों के अनुपात में अधिकतम विषमता है।

२—विश्लेषण

क—मूल शब्द—अंगन, अंगना, अंगनू, अंगने, अगरनी, अग्रज, अचक, अचपल, अच्छे, अजगर, अजायब, अज्ञात, अटल, अटलू, अटल्ली, अणुक. अदालत, अद्रि, अधिक, अनमोल, अनमोलक, अनाड़ी, अनुआ, अनुज, अनुरूप, अनूप, अफीमी, अबलक, अब्बल, अभिराज, अभिराम, अमल, अमलधारी. अमान, अमोल, अमोलक, अमोला, अलगरज, अलबेल, अलबेला, अलबेली. अलबेले, अहरवा, अहलू, आनन, आफत, आलू, इकराम, इलाका, उगम, उग्रह, उचित, उजबक, उजागर, उजियारी, उज्जी, उज्जू, उज्ज्वल, उदय, उम्दा, ऊदा, ऊधम, ऋजु, ऋतु, एकांत, ओस, औदान, कंगलिया, कंगलू, कंगाली, कंजरा, कंजू, कंपन, कट्टर, कट्टल, कठिन, कद्दल, कद्दी, कद्दू, कनौड़ा, कब्जा, करिंगन, करिया, करेरे, कर्णसुख, कलंदर, कलई, कलबा, कलिया, कलुंआ, कलूटा, कलूटी, कल्लन, कल्ला, कल्लू, कारू, कारे, काबिज, कायम, कालू, काले, किलोला, किल्कू, कुंजर, कुंजल, कुंजा, कुंठी, कुकई, कुकरिया, कुक्कुर, कुटई, कुटिल, कुटिलू, कुनुरू, कुन्नुन, कुन्नू, कुन्मुन, कुन्हन, कुब्बत, कुमले, कुरिया, कुलंजन, कुलबुल, कुलाहल, कुल्लन, कुल्लू, कूदन, केरा, केसरी, केसरिया, केहरि, केहरिया, केहरी, कैरा, कोंचा, कोका, कोकी, कोठी, कोड़ा, कोकिल, कोमल, कोयला, कोरे, कौलीन, खंजन, खगन, खजान, खडेरन, खबरदार, खरखर, खासा, खासे, खितई, खितारू, खिलई, खिलपत. खिलानंद, खिलावन, खिलाड़ी, खिल्लन, खिल्ला, खिल्लू, खुन्ना, खुन्नी, खुन्नू, खुरखुर, खुरखुन, खुरबुर, खुरभुर, खुरमल्लो, खुल्ला, खुल्ले, खुश, खुशदिल, खुसमन, खूंटी, खूब, खूबलाल, खूबी, खूबेंद्र, खेला, खेलू, खैरा, खौनी, ख्याली, गंजन, गंभीर, गंभू, गजा, गज्जन, गज्जी, गज्जू, गट्टन, गट्टी, गट्टू. गठीले, गढ़ू, गद्दर, गन्ना, गन्नू, गप्पी, गप्पू, गफलू, गबड्आ, गबदी, गबदू, गबद्दी, गबर, गबरी, गबरू, गब्बर, गब्बू, गमला, गमलू, गलेसिंह. गहन, गहनी, गहोता, गाजर, गिरि, गुट्टन, गुठेले, गुड्डू, गुड्डे, गुदना, गुद्दी, गुन्ना, गुरुवत, गुलगुल, गुलजार, गुलजारी, गलफाम, गुलबदन, गुलराज, गुलवंत, गुलशन, गूदन, गूलर, गेंझन, गेना, गेनी,

गोगा, गोजर, गोटन, गोटी, गोड़, गोड़ू, गोदी, गोना, गोरे, गोलैया. गोसू, गोल्हे, गौर, घनसूर, घमनू, घमरू, घम्मन, घरभरन, घरभरू, घरभावन घानू, घामू, घिघई, घुटई, घुट्टन, घुमची, घुम्मन, घुरविन, घूरे, चंगड़, चंगा, चंगुल, चंगू, चंचल, चंद्रोदय, चक्खन, चतुर, चतुरगुन, चतुरजीत, चतुरी, चतुरे चनकी, चनखी, चमकू. चातक, चाली, चाहत, चाहते, चाहली, चिखुरी, चिखुरू, चिटकउ चिट्टन, चित्तर, चिनगी, चिपुन्नी, चिम्मन, चिलम सिंह, चुंदू, चुंबन, चुकता, चुक्खन, चुखई, चुखारू, चुटकई, चुलबुल, चुल्हन, चुहल, चूहा, चेंटा, चेंखुर, चेखू, चेतकर, चेला, चोंच. चोंचू, चोखे, चौकिया, चौंधी, चौबार, चौहल, छंगन, छंगा, छंगी, छंगुर, छंगुल, छंगू, छंगे, छउ, छकरा, छक्कन, छक्की, छक्कू, छगल, छटंकी, छप्पी, छप्पन, छप्पू, छबील, छबीले, छागुर, छिंगा, छुटकऊ, छुटकन, छुटकुनू, छुटकुन्नू, छुटके, छुटमन, छुटवारी, छुट्टन, छुट्टा, छुट्टी, छैल बहादुर, छैला, छैलू, छोट, छोटक, छोटवा, छोटू, छोटे, जंगल, जंगलिया, जंगली, जंजाली, जगमग, जबर, जबरू, जबला, जब्बा, जब्बार, जट्टन, जमान, जरबंधन, जलाहल, जायसी, जिनसी, जिरई, जिलई, जिह्वा, जुंगड़, जुंगी, जुग, जुगई. जुगत, जुगल, जुगली, जुगलू, जुगुल, जुग्गड़, जुग्गा, जुग्गी, जुग्गू, जुटई, जुलफ, जोक, जोंकी, जोजन, जोड़ा, जोड़े, जोरा, जोरावर, जोल्ला, जौम, झंकारू, झक्कड़ी, झगडू, झग्गड़, झड़ुआ, झड़ुले, झड़ोले, झनकू, झपट, झबरू, झब्बा, झब्बू, झमई, झमेला, झरगत, झरगदा, झरगा, झरिया, झरिहक, झरिहग, झरी, झरूँ, झलई, झलक, झाइया, झिनकई, झिनकन, झिनकू, झिनको, झिन्नू, झिलंगी, झिल्लू, झीलक, झीलन, झुंटू, झुनकू, झुनखुन, झुनझुन, झुन्ना, झुन्नी, झुन्नू, झूरी, झूरू, झोरी, झौरी, टंटा, टंटू, टिड्डी, टिन्नी, टिम्मल, टिरिश्रवा, टिर्रा, टिल्ला, टीमल, टुंटन, टुंड, टुंडई, टुंडा, टुंडी, टुइयां, टुकई, टुकी, टुक्की, टुड़िया, टुनटुना टुनटुनिया, टुन्न, टुन्नू, टूंडी, टेंटी, टेंगचू, टेनी, टोकी, टोक, टोला, ठंडी, ठडे, ठक्कन, ठग, ठाठ, ठेया, ठेला, डगर, डंडा, डगमग, डगरू, डबलू, डलमीर, डांगर, डिगरी, डिब्बा, डीपू, डुड, डुल्लक, डुल्ला, डुल्लन, डूंगर, डूंगरा, डेबरा, डेरा, डेरू, डोकरी, ढंगू, ढाक, ढाकन, ढुनमुन, ढोड़ा, ढोढई, ढोढा, ढोतल, तनकू, तनारू, तब्बा, तलफ, तलफी, तल्कू, तहसील, तांतिया, ताड़ी, तालुक, तालुका, तीतर, तीतल, तुंडी, तुनतुन, तुनतुनियां, तुरंत, तुरंती, तुरी, तुर्रन, तुफानी, तेजी, तोंदी, थम्मन, थावर, थोप, दंगल, दगली, दखन्न, दब्बू, दलेलसिंह, दावा, दिमाग, दिलखुल, दिलबदन, दिलभर, दिलभरी, दिलमन, दिलमोहन, दिलराज, दिलवंत, दिलवर, दिलसुख, दिला, दिलावर, दीदार, दीन, दीना, दुंदी, दुक्खी, दुखई, दुखी, दुखू, दुबरी, दुभई, दुर्गं, दुर्बल, दुर्बली, दुर्लभ, दूंदे, दूभर, दूल्हे, देहरी, द्वंद, द्वारी, द्वीप, धवल, धारा, धारी, धारे, धुंधई, धुंधले, धुनधुना, धुनमुन, धुन्नी, धूँधा, धूम, धूसर, धोंधा, धौंताल, धौंधन, धौरी, धौरे, नंगा, नगू, नंगे, नकई, नकचू, नकटा, नकटू, नकली, नक्का, नगऊ, नगद, नगिन, नगेला, नचऊ, नचको, नजरी, ननई, ननकऊ, ननका, ननकू, नन्नी, नन्नू, नन्ने, नन्हकू, नन्हा, नन्हू, नन्हे, नया, नवल, नवीन, नहर, नाटे, नान्हू, नाहर, नाहरिया, निकई, निक्का, निगाही, निगाहू, निजन, निठुर, निनुआ, निन्नू, निन्हकू, निर्बल, निवास, नीवर, नीबू, नीमन, नीमर, नुखई, नेउर, नेकसा, नेक्सी, नेक्से, नेका, नेता, नोखा, नोखे, नोहर, नौती, नौनिहाल, नौबस्ता, नौबहार, नौरंग, नौसे, नौहर, नौहरिया, न्यादर, पंथ, पंथू, पकौड़ी, पक्कू, पगरोपन, पघइंया, पटकन, पट्ठे, पतंगी, पतरीक, पतरे, पतवारू, पत्तर, पबारू, पब्बर, पब्बार, परचन, परदेशी, परबत, परसन, परांकुश, परिखा, परोही, पर्वत, पलई, पसेरा, पहल, पहलवान, पहली, पहलू, पहाड़ी, पाखंडी, पाड़, पाली, पुचई, पुदई, पुद्दन, पुरई, पुलकित, पुलिंदा, पूंजी, पेन्चू, पेशी, पोखर, पोन्चू, पोदना, पोप, पोपी, पोशाकी. पोस्ती, प्रकट, प्रथम, प्रभात, प्रभाती, प्रभूत, प्रमादकरण, प्रवीण, प्रवेश, प्रसन्न, प्रियंवद, फक्कड़, फककू, फल, फलई, फवादी, फुटबाल, फुदकई, फुदनी, फुद्दन, फुद्दी, फुनई, फुन्नन, फुलझरी, फुलवारी, फुचो, फूल, फैली, फोइया, फोगल, फोपी, फौरन, बंका,

बँटुश्रा, बंटे, बंधन, बंबल, बखेड़ी, बगई, बग्गे, बजरी, बटोही, बड़ऊ, बड़कन्न, बड़का, बड़कू, बड़के, बड़े, बढ़ऊ, बनोले, बतोसी, बनखंडी, बनच्चा, बनवासी, बन्ना, बन्ने, बरखंडी, बरजोर, बर्धू, बराती, बरियार, बलवान, बसगीत, बसावन, बस्ती, बहरी, बहाली, बहोरन, बांका, बाके, बांगुर, बाउर, बाउल, बाउलिया, बाग, बाघ, बाजारी, बाटू, बादी, बालबोध, बिकटबाबा, बिचई, बिचेल, बिच्चा, बिपत, बिपति, बिपतिया, बिलटू, बिलाई, बिल्मन, बिल्ला, बिल्ले, बिल्हड़, बिसाई, बिसार, बीन, बुश्रा, बुचन्न, बुच्चू, बुझी, बुझारत, बुझावन, बुटई, बुट्टन, बुढ़ऊ, बुनियादी, बुलंद, बूश्रा, बूचन, बूचा, बूचे, बूझा, बूढ़े, बूतान, बेग, बेदरिया, बेदल, बेपरवाही, बेरी, बेलन, बेहवल, बैठोल, बोतल, बोदड़, बोदा, बोदिल, बोदे, बोना, बोनी, बोवल्ली, बोरी, बौरे, बौड़म, बौरंगी, भंगडी, भंगबहादुर, भंगू, भक्कू, भगलिया, भगोला, भगोले, भय, भल्लर, भल्लू, भवन, भाल, भालू, भिनका, भिनकू, भिन्नू, भुंडा, भुंडी, भुंदन, भुकुई, भुखई, भुजा, भुट्टू, भुनई, भुरई, भुलदर, भूश्रा, भूड़, भूमिकासिंह, भूर, भूरा, भूरे, भूलोटन, भेंग, भेजू, भेदी, भोंड़, भोंदल, भोनू, भोंदू, भोपू, भोरी, मंडित, मंडिल, मंथन, मंदरा, मंहगी, मंहगू, मंहगे, मकडा, मकनू, मगनमूर्ति, मचलू, मचान, मच्चोला, मजनू, मजबूत, मटकन, मटुकी, मटोला, मट्टन, मठरा, मठरू, मठोली, मढ़ई, मढ़ी, मतवार, मत्तोहन, मदऊ, मट्ठू, मनफेर, मनवहल, मनबोध, मनराज, मनरूप, मनवीर, मनसुख, मनसुखा, मनसूबा, मनियार, मनोगी, मर्कट, मलतू, मल्लू, मवासी, मस्तू, महल, महाजीत, महादीन, महिलानंद, माटू, मिचकू, मिजाजी, मिज्जा, मिथुन, मिलई, मीठा, मुंडा, मुंडे, मुक्खा, मुखई, मुटरी, मुरादी, मुलायम, मुसई, मुसाफिर, मुहकम, मुहलत, मूक, मूडन, मूड़, मूसा, मूसी, मूसे, मृगराज, मृणाल, मेंहदी, मेघू, मेला, मैका, मैकू, मोकम, मोखा, मोटा, मोहकम, मोज, मोजो, मोजू, मोदू, मौनी, यात्रा, यादकरण, युगल, रंगबाज, रंगीला, रंजन, रजनी, रजनू, रतुश्रा, रसमय, रहतू, रहबा, राजहंस, राबटी, रावंती, राहु, रुकमकेश, रूश्रा, रूर, रेत, रोजो, रोना, राम, रोनन, रोमल, रोटीसिंह, रौनक, लंगड़, लंगड़ी, लंब, लघुश्रा, लटूर, लटूरे, लटोरे, लट्टी, लट्टू, लड़े, लड़ेरू, लत्ती, लबतू, लबरू, लशकरी, लहरी, लहुर, लाऊ, लातू, लाभ, लायक, लाल हंस, लुचई, लुचुर, लुटुर, लुतरी, लुरखुर, लूले लूरी, लेश, लौधर, लौबा, लौलीन, लोहर, ल्हौरे, विकल, विकारी, विचित्र, विचित्रानंद, विदेशी, विद्युत, विपिन, विलक्षण, वीर भारी, वृतांती, वृहद्दल, शरवती, शर्फन, शिलीमुख, शीशा, शेरा, शैतान, शैल, शोभांग, शोभित, शौकत, शौकी, संचित, संतोषजनक, सकड़े, सच्चल, सच्चा, सजन, सजीवन, सज्जन, सज्जी, सट्टू, सतोवन, सदन, सदनू, सदर, सदरी, सनहू, सनाथ, सपूती, सप्पू, सफरी, सबारू, समई, समय, समझावन, समुंदर, समान, सरज, सरवती, सरिता, सलेटू, सँहगू, सहती, सहतू, सहते, सहल, सहवीर, सहे, सहेल, सहोदर, सांझी, सांवरे, सानंद, सामर्थी, सारसपाल, सिताब, सिल्लू, सीरे, सुंदरू, सुकुमार, सुकुमारी, सुकेश, सुगम, सुघड़, सुचित, सुढ़ाल, सुदई, सुदन, सुद्ध, सुदर्शी, सुधन, सुधार, सुधुश्रा, सुधैया, सुनकी, सुनहरा, सुबेदा, सुब्बन, सुब्बा, सुरदे, सुरफू, सुरहल, सुलायक, सुल्हड़, सुवचन, सुहावन, सुहृतरंजन, सूखा, सूचित, सूबा, सूरू, सूरे, सेखू, सेकू, सोंधी, सोंधू, सोपी, सोंफी, सोखन, सोता, सोतिम, सौरवी, स्यारू, स्वारथ, स्वास्थ्यरंजन, हंगन, हंगू, हंडुल, हंसमुख, हठी, हत्ती, हत्थीं, हत्थू, हरक, हरदिया, हरवर, हरहंगी, हरिश्चंद्र, हलकू, हलके, हवेल, हानी, हिल्ला, हस्ती, हुंकार, हुंडी, हुनर, होशियार।

ख—मूल शब्दों पर टिप्पणियाँ

(१) रचनात्मक टिप्पणियाँ—देखिए समीक्षण ।

(२) पर्यायवाचक शब्द :—

(अ) नाटे—अणुक, अनुआ, गहन, गेनी, टिन्नी, टीमल, ढुइयाँ, ल्हौरे, गट्टा ।
(आ) नाभि—ढुंढई, ढुंढी, ढोढा ।
(इ) बाग—गुलजार, गुलशन, चमन ।
(ई) बन—गहन, जंगल, विपिन ।

तत्सम शब्द तथा उनके अर्थ

अग्रज-पहले उत्पन्न, श्रेष्ठ । अचपल-धीर, गंभीर । अजगर-बड़ा साप । अज्ञात—गुप्त । अणुक-छोटा । अद्रि-पर्वत । अधिक । अनुरूप-समान, सदृश, योग्य । अनूप-जलप्राय: देश । अभिराज-ज्योतिर्मय । अभिराम-सुंदर । अमान-मानरहित । आनन-मुख । उग्रह-उद्धार । उचित-ठीक । उदय-प्रकट। ऋजु-सरल । ऋतु। एकात । कठिन। कर्णसुख-कर्णप्रिय । कुंजर, कुंजल-हाथी। कुक्कुर-कुत्ता । कुटिल-छली । केशरी । कोकी-चकई पक्षी । कोकिल-कोयल । कोमल । कौलीन-अच्छे वंश से सम्बन्धित । खंजन-खंडरिच । गंजन-अवज्ञा । गम्भीर-धीर, शांत । गिरि । घनसूर-नितात अंधा । चंचल । चंद्रोदय । चतुर । चातक-पपीहा । चुंबन । चेतकर-सावधान करनेवाला । जंगल । जिह्वासिंह-बक्की, चटोर। दीन-दरिद्र । दुर्ग-किला । दुर्बल-दुबला । दुर्लभ-दुष्प्राप्य, विलक्षण । द्वंद-जोड़ा, कलह । द्वीप । धवल-श्वेत, स्वच्छ । धारा-नदी का प्रवाह । धूम-ठाठ, प्रसिद्धि, ऊधम । समारोह । धूसर-मटमैला, खाकी । नवल-नवीन, नया । पुलकित-प्रसन्न, गदगद । प्रथम-पहला । प्रभात-सवेरा । प्रभूत-अधिक । प्रमाद करण-नशीला । प्रवीण-चतुर । प्रवेश-आगमन, पहुँच । प्रसन्न । प्रियंवद-मधुरभाषी । फल । बलवान । बालबोध-बच्चों की सी समझ । भवन-घर । भाल-माथा । भूमिका-भूमि । मनरूप-मन के अनुकूल । मनवीर । मर्कट-बन्दर । महाजीत । महादीन । महिलानंद-स्त्री का प्यारा; ∠महेल (महल) + आनन्द; ∠महेला (सुन्दर) । मिथुन-जोड़ा, एक राशि । मूक-गूंगा । मृगराज-सिंह । मृणाल-कमल नाल । रजनी-रात । रसमय-रसीला । राजहंस । राहु-एक राक्षस । रुक्मकेश-सुनहले बालवाला । रूर-सुन्दर । रोम-रोएँ । लम्ब-लम्बा । लाभ । लाल हंस । लेश-अणु, थोड़ा । विकल-व्याकुल । विकारी-बुरा । विचित्र । विचित्रानन्द । विदेशी । विद्युत-बिजली । विपिन-वन । विलक्षण-अद्भुत । वृतांती-सूचक । वृहद्बल-अतिबली । शिलीमुख-भौंरा । शीश । शैल-पर्वत । शोभांग-सुन्दर अंग वाला । शोभित-सुन्दर । संचित-इकठा किया हुआ । संतोषजनक-संतोष देनेवाला । सज्जन । सदन-घर । सनाथ । समय । सरल-सीधा । सरिता-नदी । सहेल-आसानी से । सहोदर-सगा भाई । सानन्द । सारसपाल-सारस पक्षी पालनेवाला । सुकुमार- कोमल । सुकेश । सुगम-सरल । सुहृत् रंजन-मित्र-विनोदी । सूचित-सूचना दी गई । स्वास्थ्य रंजन-आरोग्यवर्द्धक । हठी (हठिन्) । हरियेंद्र-सिंह । हस्ती (हस्तिन्)-हाथी ।

विकसित शब्दों के तत्सम रूप तथा अर्थ

अंगन, अंगना, अंगनू , अंगने<अंगण-आंगन । अगरनी ∠ अग्रणी – श्रेष्ठ । अचक ∠चक्र (भरपूर, आश्चर्य धीरे । अचानक ∠अज्ञानात् – सहसा । अच्छे ∠ अच्छ । अटल, अटलू , अटल्ली ∠ अ + टलन । अनमोल, अनमोलक<अमूल्य । अनाड़ी ∠ अनार्य । अनुआ ∠अणु । अनूप ∠अनुपम । अबलक ∠ अवलक्ष – चितकबरा । अमोल, अमोलक, अमोला ∠ अमूल्य । अलबेल, अलबेला, अलबेली, अलबेले ∠ अलभ्य । अहरवा ∠ अहरा ∠ आहरण – कंडे का ढेर, लोगों के ठहरने का स्थान । अहलू ∠ अहला ∠ अहरा – बाद, झड़ी । अगार ∠ अग्र (श्रेष्ठ) या आकर (कोष) या आगार – घर, छप्पर । उगम ∠ उद्गम – उदय । उजागर ∠ उद् + जागरण – प्रकाशित, प्रसिद्ध । उजाला ∠ उज्ज्वल । उजियारी ∠ उज्ज्वल । उज्जी, उज्जू ∠ उज्ज्वल । ऊधम ∠ उद्भ्रम – उत्पात । ओस ∠ अवश्याय । ओदान<अवदान – बल, शुद्ध, आचरण, उल्लंघन ।

कंगलिया, कंगलू, कंगाली ∠ कंकाल । कंजरा (देशज) – कंजड़ जाति । कंजू ∠ कंज – कंजी ऑख-वाला, कंजा । कट्टर, कट्टल ∠ कर्त्तन - दृढ़ विश्वासी । कटरा ∠ काष्ट + गृह–चौकोर छोटा बाजार । कनौड़ा ∠ काना ∠ काण – एकाक्ष या कर्णक – दोषपूर्ण । करिंगन ∠ करिंगा ∠ कलिंग (चतुर) – ठिठोलिया । करिया ∠ काल – काला । करेरे ∠ कड्डा – कड़ा । कलई, कलवा, कलिया, कलूटा, कलूटी, कल्लन, कल्ला, कल्लू, कालू, काले ∠ काल – काला । किलोला ∠ कल्लोल – तरंग, आनंद । किल्कू ∠ किलकिल – हर्षध्वनि । कुंजन ∠ कुंज । कुंजल ∠ कुंजर – हाथी । कुजा ∠ कुंज । कुंठी ∠ कुण्ठ - अकर्मण्य – मूर्ख । कुंडी ∠ कुंड – जलाशय, अन्न नापने का बर्तन, सधवा स्त्री का जारज पुत्र । कुकरिया ∠ कुक्कुर–कुत्ता । कुटई ∠ कुटी । कुटिलू ∠ कुटिल । कुनरू, कुनुरु ∠ कुंदरु ∠ कुंदर – एक फल । कुन्नुन, कुन्नू, कुन्मुन, कुन्हुन ∠ कोण – कोना । कुमले ∠ कोमल । कुरिया ∠ कुटी – झोपड़ी । कुलंजन ∠ कुल + अंजन-कुल कलंक । कुलबुल (अनु०)– आतुर । कुलाहल ∠ कोलाहल । कूदन ∠ कोद्रक – कोदो चावल । केरा ∠ कदली–केला । केसरिया, केसरी ∠ केसर-केसर के रंग का । केहरिया, केहरी ∠ केसरी-सिंह । कैरा ∠ कैरव-भूरा, कंजा । कोका, कोकी (देखिए कुकई) । कोठी ∠ कोष्ठक । कोड़ा (कौड़ा) ∠ कपर्दक (बड़ी कौड़ी); < कंड (अलाव) । कोयल ∠ कोकिल । कोरे ∠ कर्बुर - मूर्ख, दरिद्र, नया । खंडेरन ∠ खंडहर ∠ खंड + गृह । खगन ∠ खंगन ∠ खय - आगे निकले हुए दातवाला, त्रुटिपूर्ण । खडगा ∠ खड्ग - तलवार । खरखर (अनु०) खरखर ध्वनि । खागा ∠ खड्ग । खासा, खासे (देश०)- बढ़िया । खितई, खितारू ∠ खेत ∠ क्षेत्र । खिला ∠ केलि ता स्खल । खिलाड़ी ∠ केलि । खिलावन ∠ केलि । खिल्लन, खिल्ला, खिल्लू ∠ केलि या स्खल । खुरखुर, खुरखुन, खुरबुर, खुरभुर (अनु०) ध्वन्यात्मक शब्द । खुरमल्लो ∠ क्षुर + मलन-पैर पीटना । खुल्ला, खुल्लो ∠ खुल-खुला स्थान । खूंटी ∠ क्षोड-खूँटा सा छोटा । खेखरू ∠ खंखरा (देश०)- झीना, दुर्बल । खेतल ∠ क्षेत्र । खेरी ∠ खटक-छोटा गाँव । खेला, खेलू ∠ केलि । खैरा ∠ खदिर-कत्थई । खौनी ∠ खूनी < खून-हत्यारा या क्षौणि-पृथ्वी । गंजन ∠ (१) खंज (गंजा); गंज (फा०)- मंडी; गंजन (सं०) नाशक । गंभू ∠ गम्भीर या गभुआर ∠ गर्भ + बाल । गज्जन, गज्जी, गज्जू ∠ गज-हाथी सा डील । गट्टन, गट्टी, गट्टू ∠ ग्रंथि-ठिंगना, बौना । गठीले < ग्रंथि-गठीला । गढ़ ∠ गढ़-दुर्ग । गन्ना, गन्नू ∠ कांड । गप्पी < गल्प (बं०); ∠ कल्प । गबडुआ ∠ गड़बड ∠ गड्डबड्ड < गर्त + बृहत् अव्यवस्थित; ∠ गब्बर < गर्व । गबदी, गबदू, गबद्दी ∠ गो + धी-मूर्ख । गब्बू ∠ गर्व; ∠ गायक; ∠ गव्य । गरज ∠ गर्ज । गले ∠ गल-कण्ठ । गहन ∠ ग्रहण । गहनी ∠ ग्रहण-आभूषण, ग्रहण । गहोता ∠ गृहीत-स्वीकृत । गाजर ∠ गृंजन । गुट्टन ∠ गुटिका-बौना, नाटा । गुठीले ∠ गुट्ठल ∠ गुटिका मूर्ख, जड़ । गुढ़ाई ∠ गूढ़ । गुड्डु ∠ गुड्डु-गुड़िया । गुदना, गुदाई, गुद्दी ∠ गोद ∠ क्रोड । गूदन ∠ गोद ∠ क्रोड । गूलर ∠ गोल, उदुंबर । गेंझन ∠ गझिन ∠ गझना ∠ गच्छ-सघन, गठीला । गेनी ∠ गैन ∠ गमन-मार्ग; गैना (देश०) छोटा । गोजर ∠ खजुर-कनखजूरा । गोटन, गोटी ∠ गुटिका-नाटा । गोड़ ∠ गम्- पैर । गोदी ∠ क्रोड । गोना < गमन गोने के समय उत्पन्न । गोरे < गौर-श्वेतवर्ण । गोलैया < गोल नाटा । घमनू < घामड़ < घर्म मूर्ख । घमरू, घम्मन (दे० घमनू) । घर भरन, घरभरु < गृह + भरण । घरभावन < गृह + भावन-घरवालों का प्रिय । घानू < घात-प्रहार । घामू < घर्म-धूप । घिगई < घिग्घी (अनु०)-घिघियानेवाला । घिनई < घृणा । घुच्चन < घोंचू (घुक)-मूर्ख । घुटई, घुट्टन < घुंटक या घुटन-घुटने के बल चलना । घुमची < घुंघची < गुंजा । घुम्मन < घूमना < घूर्णन । घुर-बिन < कूट + वीक्षण-घूरे से बीननेवाला । घूरे < कूट-घूरा । घेंघई < घेंघा < (देश०) । चंगड़, चंगा, चंगुल < चंगा < चंग-स्वस्थ । चक्खन < चक्षु । चनखी < चिनगी < चिनगारी < चूर्ण + अंगार । चमकू < चमत्कार । चाली < चल-छली । चाहत, चाहिली < इच्छा । चिखरु + चिखुरी < चिकुर-गिलहरी । चिटकऊ ∠ चिटकना (अनु०)-चिढ़ना । चिट्टन < चिट्टा ∠ सित -सफेद । चित्तर < चित्र ।

चिनकुवा<चिनक (अनु०)-चुनचुनाहट। चिनगी (देखिए चनखी)। चिपुन्नी∠चिल्लपों<चीत्कार + ओं (अनु०)। चुंदू∠चुधा < चक्-चुंधी आँख वाला। चुकता<च्युत्कृत-उऋण। चुक्खन चुखई, चुखारु<चोखा<चोक्ष-बढ़िया। चुटकई∠चोटी<चूड़ा। चुरई∠चुर (देश०)-मांद;<√चुर् चोर। <चूड़ी चूड़ा। चुलबुल<चलवल-चंचल। चुल्हन ∠चूल्लि-चूल्हा, नटखट। चूहा ∠चू (अनु०) + हा (प्रत्य०) चेंटा ∠ चींटी ∠चिमटना (अनु०)। चेंखुर, चेंखू ∠ चिखुरी ∠ चिकुर-गिलहरी। चेला < चेटक। चोंच ∠ चंचु-मूर्ख। चोकी < चतुष्क। चोखे < चोक्ष। चौकिया < चउक < चतुष्क-चौक। चौंधी (दे० चुन्दू)। चौवार<चतुर + वार-चारों ओर से खुली हुई कोठरी। चोहरी∠चूहड़ा ∠ च्युत + हर-श्वपच। छङ्गा, छंगन, छंगुर, छंगुल, छङ, छकरा, छक्कन, छक्कू, छगले <षड् + अंग-जिसके हाथ में छः अंगुली हो। छटंकी <षड् + टंक। छप्पन, छप्पी < चपन-मुद्रा, षट् ∠पंचाशत् (५६)। छवील, छबीले<छवि-सुन्दर। छांगुर, छिंगा (दे० छंगन)। छुटकऊ, छुटकन्, छुटके, छुटमन, छुटवारी, छुट्टन, छुट्टी<छोटा∠क्षुद्र। छैल, छैला, छैलू<छवि। छोट, छोटक, छोटन, छोटवा, छोट्टू, छोटे (देखिए छुटकऊ)। जंगलिया, जंगली<जंगल। जंजाली<जग + जाल-झगड़ालू। जगमग (अनु०) जगार<जागरण। जट्टन – जटा। जरबंधन<जड़ + बन्धन। जलाहल<जलाजल-जलमय। जीबोध∠जीव + बोध। जुगड़, जुग्गी (अनु०) जुगई<युग या युग्म जोड़ा। जुगति∠युक्ति। जुगरे, जुगल, जुगुल, जुग्गड़, जुग्गा, जुग्गी, जुग्गू∠युगल;∠युग्म। जुटई < योटक-जोड़ा। जोंक <जलूका। जोजन <योजन। जोड़ा, जोरा <जोट <योटक। जोल्ला <युगल, योटक। झंकारु< झंकृत-झंकार। झक्कड़ी<झक (अनु०)। झगई, झगड़ू, झग्गड़, झग्गा <झकझक (अनु०)। झड़ुआ, झड़ुले, झडोले<झंडला<जयंत + उला (प्रत्य०); क्षरण (झड़ना)-बाल। झनकू<झन्नू<झीना<क्षीण-दुबला, झपट<झंपाझड़प। झप्पा ∠झपना (अनु०)-परेशान होना। झबरु<(अनु०) झबरा, बिखरे लम्बे बालों वाला। झब्बन, झब्बा<(अनु०)-फुंदना। झमई, झमेला, झम्मन ∠झांव (अनु०) झगड़ा। झरगत, झरगदा, झरगा, झरिया, झरिहक, झरिहग, झरी, झरूं<झर वर्षा की झड़ी। झलई∠ झल या जल-क्रोध। झलक <झल्लिका-चमक। झांइयाँ∠झांई < छाया-परछाई। झावर< झाँपना <उत्थापन-डलिया। झिनकई, झिनकऊ, झिनकू, झिन्नू ∠झीना < क्षीण-पतला दुबला। झिलंगी<शिथिल। झिल्लू <चैल-पतला। झीनक (देखिए झिनकऊ)। झीमल <झीमना (अनु०) झूमना। झीलन, झीलर <क्षीर। झुद्दू <झुण्ट-गुल्म; < जूट-बडे-बडे बाल वाला। झुनकू, झुनखुन, झुनझुन ∠(अनु०)। झुन्ना, झुन्नी, झुन्नू∠दे० झुनकू। झुवीला ∠जटा। झूरी, झूरू ∠ झूरा ∠ ज्वर – सूखा। झोंटा<जटा। झोरी(अनु०) ∠झोर निकम्मा; झौर - झगड़ा। टंटा, टंटू ∠टनटन (अनु०) झगड़ा। टिड्डा<टिट्टिभ। टिम्मल∠टीम टाम (अनु०) छैला। टिरिअवा, टिर्रा∠टर्रा∠टरटर (अनु०)– बड़बड़ानेवाला। टिल्ला ∠ टिलवा (अनु०)-नाटा, ∠टीला∠अष्टीला - भीटा, ढूह। टीमल (दे० टिम्मल)। टुंटन∠टुंट या टुंडा∠तुंड - लूला। टुंड, टुंडई, टुंडा, टुंडी∠टुंडा<तुंड - लुंजा;∠टूंड़∠तुंड या तुंद - नाभि, ढोंढी। टुइयां∠टुण्टुक - नाटा। टुकई, टुकी, टुक्की∠ स्तोक - टुकड़ा। टुड़िया (दे० टुडई)। टुनटुन, टुनटुनिया, टुन्ना∠(अनु०)। टूंडी∠तुंड नाभि। टूला∠टोला<तूलिका - मुहल्ला। टेंगचू ∠ टें टें (अनु०)। टेंटी (देश०)- करील का फल। टेनी∠ टाइनी (अं०)-नन्हा। टोंट ∠ तुंड या त्रुट-लूला। टोकी ∠ टूंक<स्तोक-टुकड़ा। टोला <(दे० टूला)। ठंडी <ठंढा<(अनु०)। ठक्कन<ठक (अनु०) भौचक्का। ठग<स्थग। ठाट<ठाठ<स्थातृ– सजावट। ठुकी<ठुकना (अनु०) हानि सहना। ठेला<ठेलना (अनु०) धक्का। डंगर<(देश०)- पशु;<डिंगर-दुष्ट, मोटा। डंडा<दंड। डगमग (अनु०)-लड़खड़ाना। डगरु-(देश०)-मार्ग। डलमीर <तल (झील) + मीर (पर्वत)। डांगर (देश०) कृश, मर्व। डिब्बा<डिम्ब। डुंड<तुंड या

स्थाणु-लुंज, ठूठ। डुल्लक, डुल्ला, डुल्लन<दोलन-घुमक्कड़। डूंगर, डूंगरा<तुंग-टीला। डेबरा <ड्योढी∠देहली-फाटक। डेरा, डेरु<डहर-बायां;<स्था-तंबू। डोकरी<ढोक (देश०)-झुकना। ढंगू<तंग-पद्धति, चतुर। ढाक, ढाकन<आषाढक-पलाश। ढिलई, ढिल्लू<शिथिल ढीला। ढुनमुन (अनु०) लुढ़कना। ढुरई, ढुल्ली<धार-प्रसन्न होना। ढेलांकी<शिथिल+अंग— ढीला। ढोंडा, ढोढई, ढोढ़ा <तुंड, ढंढि-नाभि। ढोंतल<तोंदल<तुंड-बड़पेट्ट। तनकू<तनिक< तनु—छोटा;<तृण-तिनका। तातिया<तांत<तंतु-तांत सा पतला। ताड़ी<ताड़-ताड़ सा सीधा। तीतर, तीतल<तित्तिर-तीतर; <त्रि+इतर-तैतिल-तीन लड़कियों के बाद जन्मा पुत्र, तेंतरा। तुंडी<तुंडि-नाभि, मुख। तुनतुन, तुनतुनिया (अनु०) बाजा। तुरंत, तुरंती<त्वरा। तूरी<तूर-नगाड़ा। तोंदी<तुंड-बड़े पेट वाला। थम्मन<स्तंभन-रोकना। थावर<स्थावर-अचल। थोप< स्थापन, छोपना। दब्बू<दबना<दमन। दीना, दीनू<दीन-दरिद्र, नम्र। दुंदी<द्वंद्व-उपद्रवी दुक्खी, दुखई,<दुःखू। दुखाती<दुःख÷अत। दुबरी<दुर्बल। दुभई<द्विविधा-दुबिधा; <दुभर दूभर। दूंदुर, दूदे<द्वंद्व-झगड़ालू। दूभर<दुर्भर-कठिनता से सहा जानेवाला। दूल्हें< दुर्लभ। देहरी<देहली। दोदी<द्वंद्व। धारी, धारे<धारा। धुंधई, धुंधले< धुंध<धूम्र+अंध - धूमिल। धुनधुना<धनुस या धुन (अनु०) धुनियां। धुनमुन<धुनबुन <धुन+वयन या धुन (अनु०)-लगन। धुन्नी<धूनी<धूम्र-साधुओं की धूनी, नाभि या धुन (अनु०)। धूंधा<धुंध<धूम्र-धूमिल;<धोंधा<ढुंढि-बेडोल, मूर्ख। धूम<धूमधाम (अनु०) धूम। धोंकल<धोकड़<धौकना<धम्-हट्टा कट्टा। धोंधन, धोंधा- देखिए धूंधा। धौताल<धुन+ ताल-साहसी, उपद्रवी। धौरी, धौरे<धवल-सफेद। नंगा, नंगू, नंगे<नग्न। नकई, नकचू<नाक <नक्र। नकटा नकट्टू<नक्र+टा (प्रत्य०)। नक्का∠(देश०)-पक्का, बदनाम या∠नाक∠नक्र। नगऊ, नगिन, नगेला<नग्न। नचऊ, नचको∠नाच∠नृत्य। ननई, नन-कऊ, ननका, ननकू, नन्नी, नन्नू, नन्ने, नन्हकू, नन्हा, नन्हू, नन्हें∠न्यंच। नया∠नव। नाटा∠नत-बौना। नान्हू ∠न्यंच-छोटा। नाहर, नाहरिया∠नरहरि-सिंह। निकई, निक्का∠न्यंच∠नन्हा। निजन∠निर्जन-जन शून्य स्थान। निठुर<निष्ठुर-क्रूर। निनुआ, निन्नू, निन्हकू नन्हा∠न्यंच। नीवर∠ निर्बल। नीबू∠(१) निर्बल (२) निम्बुक-नीबूफल। नीमन∠निर्मल-चंगा, सुन्दर। नीमर∠निर्बल। नुखई∠अनोखा∠अ+ईक्ष-विचित्र। नेउर∠नेवर∠नूपर-घुंघुरू; नेवला∠नकुल-न्यौला। नेकसा, नेकसी, नेकसे<न्यंच+सदृश-छोटा सा। नेता<नेतृ-नायक। नोखा, नोखे (दे० नुखई)। नोहर∠ (१) मनोहर; (२)∠नोपलभ्य, दुर्लभ, (३) नौहड़ा∠नवग्रह या हांडी (हिं०)। नौवस्ता<नव+ बसति। नौरंग<औरंग (जेब) का अपभ्रंश;∠नारंगी;<नवरंग-अलबेला। नौहर, नौहरिया (देखिए नोहर)। पंथ, पंथू <पथ। पकौड़ी∠पक्का+बरी (बड़ी)∠पक्व+बटी। पक्कू∠पक्व-दृढ़। पग-रोपन <पद+रोपण-पैर जमाना। पघइंया <प्रग्रह-रस्सी। पटकन <पतन+करण-पछाड़ना। पट्ठे< पुष्ट। पतंगी<पतंग-पतंग सा हल्का;<पत्रंग-लाल रङ्ग। पतरीक, पतरे, पतवारू, पत्तर<पात्रट-पतला। पनकोठी <पर्णकुटी। पवारु, पब्बर, पब्बार <पवारना∠अ+वार्य-फेंकना (अंध० वि०);< प्रबल। परचन<परिचयन-परिचय। परसन<स्पर्श;<प्रसन्न! परोही<प्ररोहण। पलई, पल्ला< पालन-किसी दूसरे से पाला गया। पसेरा...पंच+सेर-पाँच सेर का। पहल, पहली, पहलू <प्रथम। पहाड़ी<पाषाण। पाखंडी<पार्षडिन। पाढ़∠पट्ट-मचान; पाडा- मुहल्ला। पाली (दे० पलई)। पुदई, पुद्दन<पिद्दी (अनु०)-नाटा। पुरई<पुर-नगर। पुलिंदा<पूलक (मूंज का मुट्ठा) पूंजी∠ पुंज-मूलधन। पोखर<पुष्कर—तालाब। पोदना (दे० पुदई)। पोप, पोपी<पुहुप<पुष्प <पोप (रोम का पोप)-सबसे बड़ा पादरी, धर्म पुरोहित, ढोंगी (व्यं०)। प्रगट<प्रकट। फक्कड़, फक्कू<फक्किका-दरिद्र और मस्त, निर्द्वन्द। फलई∠फल-लाभ। फुदकई, फुदनी, फुद्दन, फुद्दी∠फुदकना-(अनु०) पिद्दी

चिड़िया। फुनई, फुन्नन, फुन्नी ∠ फुंदना ∠ फुल्ल + बंध (फंदा)-भब्बा । फुलझरी ∠ फुल्ल + झर। फुलवारी ∠ फुल्ल + वारी-बाग। फूचो ∠ फुचड़ा (अनु०)-रेशा, मुँह का झाग, बेकार चीज। फैली ∠ प्रसरण-मोटा। फोइया ∠ फोया<फलक-फाहा (सा हल्का)। फोगल<फोकला<वल्कल-छिलका। फोपी फूफी∠(अनु०) बुआ। बंका ∠ वक्र-टेढ़ा, वीर। बंटुआ, बंटे ∠ वितरण-बाँटनेवाला, नाशक। बंबल ∠ बंब या बंबा (अनु०) बंबं करनेवाला, जल का स्रोत;<बैंबू (मलाया)-बांस की तरह लम्बा। बखेड़ी< बकबक (अनु०) झगडालू। बटोही<बाट-पथिक। बड़कन्नू, बड़का, बड़कू, बड़े, बढ़ऊ ∠ वर्द्धन या वृहत्-बड़ा। बतोले; वतोसी ∠ वार्ता-बातूनी। वनखंडी<वन + खंड-वनवासी। बनच्चा ∠ बन + चर। बन्ना, बन्ने ∠ वरना ∠ वरण-दूल्हा। बरखंडी<वट (वन)-खंड। बरजोर ∠ बल + जोर। बराती ∠ वर + यात्रा या व्रात। बरियार ∠ बलवान। बर्सू<वर्ष या वर्षा। बसगीत<बसति-बस्ती, जनपद। बसावन ∠ वसन-वंश चलाना। बस्ती<वसति। बहरी ∠ वधिर-बहरा ∠ बहिर-घर के बाहर + वल्लभ सम्प्रदाय के मंदिर के बाहर रहनेवाले कर्मचारी (बहरिया); बहर-समुद्र। बहोरन<बाहुड़ ∠ व्याघुट-लौटानेवाला, वंश चलानेवाला। बांका,बांके<वक्र बंक-टेढ़ा, सुन्दर, छैला, वीर, गहना। बांगुर ∠ (देश०) फंदा, बंधन < बांकुरा ∠ वंक-वांका, चतुर; ∠ बांगर (देश०)-वह भूमि जो झील, नदी के बढ़ने पर कभी पानी में नहीं डूबती; ∠ वांगड़<बंगा ∠ वक्र ∠ बंगली, मूर्ख, लुच्चा, बाउर ∠ प्राकार कच्चा घर। बाघ ∠ व्याघ्र-सिंह। बाटू ∠ वाट-मार्ग। बादी ∠ वादी-झगड़ालू। विकट बाबा< बिकट + बाबा। विचई, बिचेल, बिच्चा ∠ द्वीच-बीच का। विपत, विपत्ति, विपतिया<विपत्ति। बिलटू<उलटना ∠ उल्लोठन-नष्ट होना। बिलाई ∠ विडाल-बिल्ली; विलयन-नष्ट होना। विल्मन ∠ बिलंब-देर। बिल्ला, बिल्ले-(दे० बिलाई)। बिल्हड़ ∠ (देश०) बेढंगा। बिसई ∠ बिसाहना ∠ विश्वास मोल लेना। बिसार< विशाल। बीच (दे० बिचई)। वीरभारी वीर + भार बड़ा योद्धा। बुआ (देश०)-फूफी (से पाला गया)। बुचन्नू, बुच्चू<बूचा (देश०) कनकटा;<वत्स-बच्चा। बुज्झी<बुद्धि। बुझारत, बुझावन<बुध्य - समझना, चतुर। बुटई बुट्टन<बूटा<विटप-छोटा पौधा। बुढ़ऊ<वृद्ध-बुढ़ापे में जन्म लेने या बचपन में बूढ़ों की सी बातें करने से। बुड्ढा की कहानी टिप्पणी में—बूचन, बूचा, बूची, बूचे (दे० बुचन्नू)। बूझी ∠ दे०<बुज्झी। बूढ़े (दे० बुढ़ई)। बूतान<बित्त<वित्त-सामर्थ्य। बेग<वेग-शीघ्र। बेदल<बे + दल-बिना पत्ते का, ठूँठ। बेरी ∠ बेड़ी< विलय; ∠ वेरबेर-देर; ∠ बदरी; ∠ बैर ∠ बेलन ∠ वेलन-वेलन सा छोटा या लुढ़कने वाला। बेहवल < विह्वल-व्याकुल। बैठोल < बैठना < वेशन-बैठनेवाला, आलसी, निकम्मा। बोदड़, बोदा, बोदिल, बोदे < अबोध-मूर्ख, दुर्बल। बोना, बोनी < वामन-नाटा। बोबल्ली, बोरी, बोरे, बौड़म< बावला<बातुल-पागल। बौरंगी<बहु + रंगी-बहुरुपिया, छैला। भंगड़ी, भंग, भंगू<भृंगी। भंगेड़ी। भक्कू < भकुआ < भेक-मूर्ख। भगलिया, भगोला, भगोले < व्रजन-भगोड़ा। भटा < भट-योद्धा। भरपूर < भरण + पूर्ण-पूरी तरह से भरा हुआ। भमना < भवन। भल्लर, भल्लू, भालू < भल्लुक। भिनका, भिनकू < भिनकना (अनु०)-गन्दा होने से मक्खियों का भिनभिनाना और उससे घृणा होना। भिन्नू < भिन भिनाना (अनु०)। भुंडा, भुंडी (रूंड का अनु०)< भंड-दुष्ट; भोंडा (देश०)। भुन्दन < भोंदू < बुद्धू < अबोध। भकुई (दे० भक्कू)। भुखई < बुभुक्षा-भुक्कड़। भुट्टू < भृष्ट-मक्का। भुनई < भवन। भुरई < भूरा < बभ्रु। भुलंदर; भुलुआ < भोला < भूलना < विह्वल। भूआ (देश०)-रुईसा हल्का। भूड़ < भुरभुरा (अनु०) बालू मिली हुई भूमि। भूर, भूरा, भूरी, भूरे < बभ्रु। भूलोटन < भू + लुंठन। भेंग (देश०)-भेंगा-वह जिसकी टेढ़ी तिरछी पुतली चलती हो। भेजू< भेजा (देश०) खोपड़ी का गूदा। भेदी < भेद-भेदिया। भोंड़ भोड़ा < (देश०)। भोंदल, भोंदू < बुद्धू। भोंनू < भवन। भोंपू < भों (अनु०) + पू (प्रत्य०)। भोरिया, भोरी < विह्वल-भोला। भौरी < भ्रमर-भ्रमर-सा काला; < भ्रमण घुमक्कड़, सिर में बालों की भंवरी। मंडिल < मंदिर। मंदरा < मंथर, मंद, मन्दर-

सुस्त, नाटा, मदराचल। मकड़ा ∠ मर्कटक। मगन ∠ मग्न। मचलू (अनु०) अड़ना। मचान < मंच, मच्चोला (दे० मचलू)। मटकन < मट्-मटकना। मट्ठुकी < मुकुट, < मिट्टी + मृत्तिका। मटोल. मट्ठन < मट्ठर < मद, आलसी < मृत्तिका, मिट्टी सा। मठरा, मठरू, मटोली < मठ। मढई, मढी < मठ। मतवार < मत्त + वार-मतवाला, पागल। मत्तोहन < मत्त + वहन-उन्मत्त। मदऊ, मद्दू < मद-मस्त। मनफेर < मन + प्रेरण-उपेक्षा करना। मनफूले ∠ मन + फुल्ल-प्रसन्न चित्त। मन बहल < मन + बहलाना। मनराज < मनो राज्य-सुन्दर, सुखद काल्पनिक स्वप्न। मनसुखा < मन + सुख विदूषक। मनियार < मणि-सुन्दर। मनोगी < मनोयोग-मन को एकाग्र करनेवाला। मरकट + मरण बहुत ही दुबला, पतला, क्षीण, < मर्कट-बन्दर सा नटखट। मलतू मलन। मल्लू < मल्ल। मवासी < मवास- दुर्ग। महँगी, महँगू, महँगे < महार्घ-दुर्भिक्ष। माठू < मठ। मिचकू ∠ मूंदना < मुद्रण-बार बार आँखे खोलना और बद करना। मिलई < मिलन। मिहीं < महीन < महा + क्षीण-पतला। मीठा < मिष्ठ। मुंडा, मुडे < मुंड-सिर। मुक्खा, मुखई < मुख-बड़े मुंहवाला; < मुख्य-मुखिया; < मोक्ष-मुक्ति। मुचुआ < मोचन छुडाना। मुटरी मुष्ट-मोटा। मुसई < मूषक मूसा, चूहा। मूड़न < मुंड-सिर। मूसा, मूसी, मूसे (दे० मुसई)। मेंहदी < मेन्धी मेला < मेलक-उत्सव। मैका, मैकू < मायका ∠ मातृ-पीहर। मोकल ∠ मुक्त-लंबा-चौडा। मोखा ∠ मोघ (व्यर्थ); ∠ मोक्ष, ∠ मुख। मोटा ∠ मुष्ट। मौदू ∠ मोद-आनंद; ∠ मोधू ∠ मुग्ध मूर्ख। मौनी ∠ मौनिन्-चुप रहनेवाला। रंगीला ∠ रङ्ग-रसिक। रजन् ∠ राजन्। रतुआ ∠ रात्रि। रनुज ∠ रण। रहतू, रहबा, रहोबा ∠ राज (विराजना) किसी अन्य के घर रह कर पला हुआ। रामती < रामति < रम् — भीख मागने के लिए इधर-उधर घूमना। रावटी < राज छोटा तंबू। रुकम < रुक्म-स्वर्ण। रूआ < रोम। रूरा ∠ रूर सुंदर। रेत < रेतसू < बालू। रोना < रुदन। रोम, रोमन, रोमल < रोम। रोटी (तामिल)। लघुआ ∠ लघु-छोटा। लट्टूर, लट्टूरी, लटोरे, लट्टी, लट्टू ∠ लटवा-बालों की लटें; < लड्-लटा हुआ। लड़े < रणन-लड़ाका। लड़ेत ∠ लाड़ ∠ लालन प्यारा। लत्ता, लत्ती ∠ लत्तक चिथडा। लबतू, लबरू < लबार ∠ लपन-झूठा, गप्पी। लहरी < लहर-मौज। लहुर, लाऊ < लघु-छोटा। लातू < (देश०) लात चलानेवाला। लालहंस < लाल + हंस। लुचई, लुच्चा < (देश०)। लुचुर < लचड़ < लचक (अनु०)। लुट्टुर < लुटेरा < लुट्। लुनरी (देश०) चुगलखोर। लुरखुर, लूरी < लुरना (अनु०) ढीला; < लोल-चञ्चल। लूले < लून-लुंजा। लोही < लोहित-ऊषा या प्रातः की लाली। लौधर < लद्धड़ < लब्ध-मोटा और आलसी। लौवा < लोबा < लोमश-लोमड़ी। लौलीन < लय + लीन-तन्मय। लौहर, ल्हौरे < लघु-छोटा। सकड़े < संकीर्ण तंग; < शृंखला संकड़ी, गहना, जंजीर। सच्चल, सच्चा < सत्य। सजना, सज्जी ∠ सज्जन। सट्टू ∠ सट्टा ∠ (देश०)। सतोवन ∠ सत् + वन-तपोवन। सदनू ∠ सदन-घर। सनहू < स्नेह। सपूती < सपुत्र। सप्पू < सर्प। समई < सामर्थ्य। समझावन < समुज्झ < सम्बुद्ध। समुंदर ∠ समुद्र। सयान < सज्ञान। सरिया (देश०)-ऊँचीभूमि < श्री-छोटी मुद्रा। सलेटी < सिलेटी < शिला-सिलेटी रङ्ग। सस्ती, सहती, सहतू सहते < स्वस्थ-सस्ता। सहंगू ∠ संहगा (महगा का अनु०)-सस्ता। सहेल < सुहेला < शुभ-सुखदायक; स + हेलया-सरलता से; ∠ सह + ईल (प्रत्य०)-साथी; सुहेल (अ०) एक तारे का नाम (अगस्त्य)। सहे ∠ सहन-आगन। सांझी ∠ संध्या; ∠ सज्जा-मंदिर के सामने की सजावट। सांवरे ∠ श्यामल। सांवा < श्यामक सांवा चावल। सामर्थी ∠ सामर्थ्य। सिल्लू ∠ शिला उंछ, पटिया; ∠ सिलीबल्ला (देश०)-मूर्ख। सीरे ∠ शीतल — सुस्त। सुंदरु, सुन्दा ∠ सुन्दर। सुघर ∠ सुघट — सुन्दर। सुचित ∠ सु + चित्त — निश्चित। सुचेत < सु + चेतस् — सतर्क। सुढाल ∠ सुडौल < सु + डौल (हिं०)-सुन्दर। सुदई, सुदन < सूधा < शुद्ध सीधा; < सूदन — नाशक। सुद्ध < शुद्ध—सीधा, पवित्र। सुधने, सुधुआ, सुधैया < शुद्ध-सीधा। सुधार ∠ सु + दार (हिं०)। सुनकी ∠ सु + नाक (नक्र) या नख, सुन्दर नाक या नखवाला, < सूनिक — मांस बेचनेवाला; < शौनक ऋषि; < शौनिक-कसाई। सुनहरा < स्वर्ण। सुबेदा ∠ सु + वेद - अच्छा

ज्ञानी;<सूबेदार (फा०)। सुभई ∠ शोभा, शुभ। सुरदे<सु० + रद (दांत);<सुहृत् – मित्र। सुरफू < सुफला ∠ सुलभा – (सुलफा) गांजा। सुरहले<सुरहर < सरल – सीधा ऊपर की ओर गया हुआ। सुलायक<सु + लायक (अ०)। सुल्हड़ (विल्हड़ का अनु०) सुलझा, सुलक्षण। सुहावन< शोभन – सुन्दर। सूखा ∠ शुष्क-अनावृष्टि, पतला दुबला;<सूक < शुक्र – एक ग्रह; ∠ सूका < सपादक – चवन्नी। सूरू, सूरे<सूर, शूर – अंधा, वीर। सैकू (मैकू का अनु०)-ससुराल में उत्पन्न। सोंधी, सोंधू<सुगंध; < सौध (भवन)। सोंपी ∠ सौंपन<समर्पण - पालने के लिए किसी को सौंपा या दिया हुआ; < सिपुर्द-(फा०)। सोंफी < शत पुष्पा – सौंफ के रंग का; < सूफी (अ०) सूफी सम्प्रदाय। सोखन < शोषण – सुखाना, नाश करना। सोता, सोतिम < स्रोत पानी का सोता या सुप्तावस्था। सौखी < शौक-लालसा। स्यारू < सियार < शृगाल-गीदड़। स्वारथ < स्वार्थ। हंगन, हंगू (अनु०) हंगनोटी में जन्म। हंडुल < हंडा < भांडक हंडा सा पेटवाला। हंसमुख < हंस + मुख-प्रसन्न बदन। हत्ती, हत्थी, हत्थू < हस्तिन्-हाथी, हथिया नक्षत्र; < हस्त-हाथ, हरक < हर्ष; हर + क (प्रत्य०) नाशक। हरदिया < हरिद्रा-हल्दी; ∠ हरदेव। हरवर < हड़बड़ (अनु०)-जल्दी! हरहंगी < हड्ड (अस्थि)। अंगी-दुबला, पतला, हर + हांगी (स्वीकृति); < शरभंग-एक ऋषि। हलकू, हलके < लघुक- हलका, < हल्क (अ०)- गांवों का समूह। हानी < हानि। हिल्ला < हल्ला (अनु०) शोर। हुण्डी < √हुड्-उगाहना।

विजातीय शब्द तथा उनके अर्थ

अजायब (अ०)-विलक्षण। अदालत (अ०)-न्यायालय। अफीमी < अफ्यूनी (फा०)। अव्वल (अ०) प्रथम, श्रेष्ठ। अमल धारी, < अमल (अ०) नशेबाज। अलगरज (अ०) निश्चिंत। आफत (फा०)-आपत्ति। आलू < आलु (शाक) या < आला-(अ०) श्रेष्ठ। इकराम (अ०)-उपहार, पारितोषिक। इलाका (अ०)-कई गाँवों की जमीदारी। उजबक (तु०)-तातारियों की एक जाति, मूर्ख, उजड्ड। उम्दा (अ०) उत्तम। ऊदा < ऊद (अ०), < काबूद (फा०)-बैगनी। कंपन < कैंप (अ०) छावनी। कद्दल, कद्दी, कद्दू, कद (अ०) ऊँचाई, < कद्दी (अ०) हठी। कबजा (अ०)-अधिकार। कलंदर < कलंदूर (अ०) फकीर। काबिज (अ०)-अधिकार प्राप्त। कायम (अ०)-स्थापित। कुकई < कोक (तु०)-गुलाबी झलक लिए नीला रंग। कुल्लन, कुल्लू < काकुल (फा०)-बालों की लटें। कोंचा < कूंचा (फा०)-गली, कूंचा, कोका, कोकी (दे० कुकई)। खिलपत < खिलवत (अ०)-एकांत स्थान। खुन्ना, खुन्नी, खुन्नू, खून (फा०)—हत्यारा, खून सा लाल। खुश (फा०)। खुशमन < खुश (फा०) + मन-प्रसन्न चित्त। खुशवंत < खुश (फा०) + वंत (प्रत्यय)-प्रसन्न। खूब (फ०)-अच्छा। खैरा < खदिर-कत्थई रङ्ग। खौनी (दे० खुन्ना), ख्याली (फा०)-ध्यानी। गद्दर < गदर (अ०) – विद्रोह। गफलू < गफलत (अ०)-असावधान। गबर, गबरी, गबरू, गब्बू < गब्बर (फा०)-घमंडी। गुरबत < गुर्बत (अ०)-निर्धनता। गुलजारी < गुलजार (फा०)-वाटिका। गुलफाम (फा०) एक फूल। गुलबदन (फा०) बहुमूल्य रेशमी वस्त्र, फूल सी कोमल काया। गुलराज, गुलवंत (फा०)। गुलशन (फा०)- उद्यान। गोसू < गोशा (फा०) कोना। चिम्मन < चमन (फा०)-बाग। चिलम (फा०) तम्बाकू पीने का पात्र। जबरू,जबला, जब्बा, जब्बार, < जबर (फा०)-बली। जमान < जवान (फा०)-तरुण। जिनसी < जिंस (फा०) गल्ला, अन्न। जिरई < जिरह, जुरह (अ०) तकरार, < जेर (फा०)-तंग किया गया। जिलई < जिला (अ०)-प्रांत, < जेल (अ०)। झुंगड़, झुंगी < जुनून (फा०)-झक्की। जुलफ < जुल्फ (फा०) काकुल, बुलबुलियाँ। जोवर (फा०) बलवान। जौम < जोम (अ०)-जोश, आवेश। टेनी < टाइनी (अं०) – नन्हा। डबलू < डबल (अं०)-दुहरा, मोटा। डिगरी < डिकरी (अं०)। टीपू < डिपो (अं०)-भंडार, गोदाम। तनारू < तनाजा (अ०) झगड़ा। तब्बा < ताब (फा०) शक्ति। तलफ, तल्फीह (अ०) नष्ट। तहसील (अ०) छोटी कचहरी। तालुक, तालुका (अ०)।

तुरंन ∠ तुर्रा (फा०) अनोखा । तुफानी (अ०)<तूफान–बखेड़िया । तेजी<तेज (फा०)-तीक्ष्ण, महंगा । दंगल, दंगली (फा०)–झगड़ालू । दखल (अ०) अधिकार । दलेल ∠ ड्रिल (अं०) । दावा (अ०) अधिकार । दिमाग (अ०) मस्तिष्क । दिलखुल, दिलवदन, दिलभर, दिलमन, दिलमोहन, दिलराज, दिलवंत, दिलवर, दिलसुख, दिला-दिलावर में दिल (फा०) । दीदार (फा०) दर्शन ।नगद ∠ नक्द (अ०) । नजरी ∠ नजर (अ०) दृष्टि । नजर (फा०) । निकई, निक्का, < नेक (फा०)-अच्छा । निगाही, निगाहू, ∠ निगाह (फा०) दृष्टि । नेक ∠ नेक (फा०) । नौनिहाल (फा०)-बच्चा । नौबहार (फा०)-नवबसंत । नौसे<नौशा (फा०)-दूल्हा । न्यादर<नादिर (फा०)-अद्वितीय । पहलवान (फा०)-मल्ल । पुचई<पोच<पूच (फा०)-निर्बल । पेचू<पेच (फा०)-छल । पेशी<पेश(फा०) आगे, भेट । पोपी<पोप (अं०)-रोम का बड़ा पुजारी । पोशाकी∠पोशाक (फा०)-परिधान (दुर्बलता का भाव) । पोस्ती∠पोस्त (फा०) आलसी । फसादी (फा०)-झगड़ालू । फुटबाल (अं०)-गेंद सा फूला हुआ । बगई, बग्गे<बाग (फा०) । बजरी<बाजार (फा०) । बहरी (अ०)-समुद्री । बहाली (फा०)-स्वस्थ, प्रसन्न । बाग (फा०) । बाजारी (फा०) । बुनियाद (फा०)-नींव । बुलंद (फा०)-ऊँचा । बोतल<बाटल (अं०) । मनसूबा (अ०) युक्ति, विचार । मस्त (फा०) मतवाला, घमंडी । महल (अ०) । मिजाजी (अ०)-घमंडी । मिज्जा<मिजाजी (अ०) । मुसाफिर (अ०)-पथिक । मुहकम (अ०) दृढ़, पक्का । मुहलत<मोहलत (अ०)-अवकाश । मोहकम<मुहकम (अ०)-पक्का । मौजी, मौजू<मौज (अ०)-उमग । रंगवाज<रंग+बाज (फा० प्रत्यय०) रौनक (अ०)-शोभा । लंगड़, लंगड़ी<लंग (फा०)-लंगड़ा । लगर;<लबड़;<लंबतड़-नटखट, धृष्ठ;<लंगर (पं०)—सदावर्त । लश्करी (फा०)-छावनी । लायक (अ०) -योग्य । शरबती<शर्बत (अ०)–पीला मिला हुआ हल्का हरा रंग । शर्फन<शरीफ (अ०)-सज्जन । शेरा<शेर(फा०) सिंह । शैतान (अ०)-दुष्ट । शौकत, शौकी<शौक (अ०)–व्यसन, चाव । सदर, सदरी (अ०)–बड़े हाकिम के रहने का स्थान । सफरी (अ०)-यात्रा सम्बंधी । सरबती–(दे० शरबती) । सवारू<सवार (फा०) । सिताब (फा०) तुरंत । सुब्बन, सुब्बा< सूबा<सूबः (अ०) किसी देश का भाग । सुरफू<सुलफा (फा०) । सुलायक<सु (सं०) प्रत्यय)+ लायक (अ०) । सूबा (दे० सुब्बन), सेखू∠शेखी (फा०)–गर्व, अहंकार, आत्म श्लाघा । हलकू, हलके<हलका (अ०) कई गाँवो का समूह । हवेल<हवेली–प्रासाद । हुनर (फा०)–कला । होशियार (फा०)–बुद्धिमान, निपुण ।

मूल के विशेष शब्दों की व्याख्या

कायम—स्थापित—पहली संतान के मरने के बाद पैदा होने से वंस को स्थापित करने-वाला हुआ ।

कुकई —कूका नामक नानकपंथी सम्प्रदाय । कोका रंग का ।

कुकरिया—(१) कुक्कुर दंत—वह दांत जो साधारण दांतों के अतिरिक्त नीचे को आड़ा निकलता है, जिससे ओठ कुछ ऊपर उठ जाता है । (२) कुक्कुर—यदुवंशी अंधकराज का पुत्र ।

कुनुन—(१) (क्वणित)—बच्चे के रोने का शब्द । (२) कोण—छप्पर का कोना ।

कुलंजन (कुरंजन)—चित्त को खेद पहुँचानेवाला ।

कोड़ा (कोढ़ा)—गोबर इकट्ठा करने के लिए बाड़ा जहाँ चौपाये बाँधे जाते हैं (२)—कौड़ा—अलाव ।

खंजन—(१) (खंज) लंगड़ा (२) खंजन पक्षी ।

गंभीर—शिप्रा नदी की सहायक गंभीरा ।

गंभू—(१) गभुआर जिसका मुंडन न हुआ हो, (२) गभीर, (३) गब्भा (फारसी)—रुई भरा गद्दा।

गद्दर—गदर (अरबी)—उपद्रव, बलवा। सन् १८५७ का गदर।

गहन, गहनी—(१) जंगल, (२) ग्रहण लगने का समय, (३) गहना या आभूषण, (४) गंभीर।

गौर—गोबर का शिवलिङ्ग। गोरा रंग।

घुटई—(घोट)—चट।

चित्तरसिंह—भीरु।

चिनगी—नट के साथ का लड़का जो बातचीत में बड़ा चतुर होता है।

चिलमसिंह—अधिक हुक्का पीने की तल। कुछ लोगो में तम्बाकू पीने का व्यसन है।

जट्टन—(१) जटाधारी, (२) जटना, ठगना, (३) जाट।

जरबंधन—वंश के अनुक्रम को जीवित रखनेवाला।

जलाहल—(१) जलमय, (२) (जोलाहल), (३) कुरेश्वर के पास जलाहल देवी।

जायसी—मलिक मुहम्मद जायसी। जायस का रहनेवाला।

जिंदा—जिंदा बाबा का मेला घुसिया (जालोन) में पूस की पूर्णिमा को होता है।

जिह्वासिंह—बकवादी, चटोर।

जुंग, जुंगड़—मनमौजी।

झमई—(झाम)—धोखा कपट।

झिलंगी, झिल्लू—झिलमन-पतला, दुर्बल (२) (झिल्ली) आंख का जाला, झील के पास उत्पन्न।

झुनकू, झुन्ना—(१) नूपुर या पैजनी का शब्द (२) खिलौना या चहना (३) झुन एक छोटी चिड़िया।

झोरी—झोर झराड़ा, (२) पेड़ों या झाड़ियों का समूह या कुंज।

टुन टुन, टुन टुनियाँ—टुन टुनियाँ एक प्रकार का छोटा तोता जिसकी चोंच पीली और गला बैगनी रंग का होता है।

टुक्की—टुकड़ा—ऐसा अंध विश्वास है कि जिसके बच्चे जीते नहीं वह अपने बच्चे को अपने किसी संबन्धी के यहाँ भेज देता है जो इन नामों से संबोधित होता है। क्योंकि वह दूसरे की रोटी के टुकड़ों पर जीवन निर्वाह करता है।

तब्बा—(१) (तबना) क्रोध से लाल होना-(२) (तवा)-एक प्रकार की लाल मिट्टी (३) रोटी सेकने का लोहे का बर्तन जो अपने काले पन के लिए प्रसिद्ध है, (४) (तबान) मोटा-बलवान।

ताँतिया—तांत के समान पतला (देखिए वीर पूजा में तांतिया टोपी)।

तुरी, तुर्रन—(१) (तूर) अरहर का का खेत (२) नगाड़ा।

तेजी—(१) स्वभाव का तेज (२) मँहगी (३) तीन कन्याओं के बाद उत्पन्न पुत्र तीजा या तेंतरा कहलाता है जो माता पिता तथा बहिनों के लिए अनिष्टकर होता है।

थम्मन—वंश के अनुक्रम को जीवित रखने वाला, स्तम्भव नामक तांत्रिक क्रिया।

थावर—(१) पर्वत (२) बैठने वाला, अचंचल (३) शनिवार।

धुंधई—धुंधला, धुंएँ के रंग का कुछ काला, मंददृष्टि।

नोहर—(१) दुर्लभ-(२) (नोहरा)-पशुओं की लम्बी कोठरी, सार।

नौती—(१) (न्यौता)-निमंत्रण-(२) (नौरता) नौरात्र में उत्पन्न ।

पगरोपन—वंश के अनुक्रम को स्थिर रखनेवाला ।

पघइया—(१)—चौपायों को बांधने की रस्सी-(२) पगाह (फ़ारसी) यात्रा करने का समय, प्रातःकाल । (३)-पघैया-गाँव गाँव घूम-घूमकर बेचनेवाला व्यापारी ।

पटकन—(१) (पटक) तंबू-(२) पटकना-गिराना ।

पतंगी—(१) अधिक पतंग उड़ानेवाला-(२) पतंग की तरह हलका, (३) पतंगी रङ्ग ।

पोप, पोपी—(१) ईसाइयों के कैथोलिक सम्प्रदाय के प्रधान गुरु जो इटली की राजधानी रोम में रहते हैं (२)-स्वामी दयानंद ने व्यंग्य से पंडित पुजारियों के लिए पोप शब्द का प्रयोग किया है (३) पुष्प ।

भूमिका सिंह—दूसरा भेष धारण करना, बनावटी भेष ।

मौनी—(१) मौनी बाबा ।[1] (२) जैनियों के मौनधारी साधु मुनि (३) बुन्देलखण्ड के व्रती मौनिए ।

रोजी—(१) (रोज) रोना-(२) जीविका-वह जिसके सहारे भोजन वस्त्र प्राप्त हो । (३)-रौजा-बाग-(४)-नवरोज में उत्पन्न ।

लत्ती—(१) लात फेकनेवाला-(२) (लत) दुर्व्यसनी (३) (लतरी) केराव- एक अन्न (४) लत्ता-फटा वस्त्र । (५) एक देवी ।

लबतू—(१) (लवित्र) हसिया-(२) (लवन) मलमास ।

लबरू—(१) झूठ-(२) (लवन) मलमास (३) (लवारू) बच्चा ।

सहवीर—(१) दुःख सहन में जो वीर हो गुणवाचक-(२) भाई के साथ उत्पन्न अर्थात् युग्म (३) सह—अगहन मास-(४)-महादेव के गण ।

सुनकी—(१) (सुनकी) सुन्दर नाक वाला-(२) (सुनखी)-अच्छे नखवाला-(३) शौनक ऋषि ।

घ—गौण शब्द—

(१) वर्गात्मक—राय, साहु, सिंह, सिनहा ।

(२) सम्मानार्थक—

(अ) आदरसूचक—जी, बाबू ।

(आ) उपाधिसूचक—राजा ।

(३) भक्तिपरक—आनंद, करण, कुमार, गुन, चंद, जीत, दत्त, दयाल, दास, दीन, देव, नाथ, नारायण, पत, पाल, प्रसाद, बक्स, बहादुर, भाई, भैया, मन, मल, राज, राम, राय, लाल, वल्लभ, विहारी, शरण, सहाय, सेन ।

४—विशेष नामों की व्याख्या

अजगरसिंह—व्यंग्य के अतिरिक्त इससे एक धार्मिक भावना भी प्रगट होती है । नागों में श्रेष्ठ अर्थात् शेष भगवान ।

अधिकलाल—(१) अधिकांगी—किसी-किसी बच्चे के अंगुली या दांत संख्या से अधिक हो जाता है जैसे छंगू ।

(२) अधिक तिथि—अधिक तिथि सौर वर्ष पूरा करने में लिए जोड़ी जाती है । बच्चे के जन्म दिन की ओर संकेत करता है ।

(३) अधिक मास—मलमास-जो सौर वर्ष पूरा करने के लिए जोड़ा जाता है । सम्भवतः बच्चा मलमास में हुआ हो ।

---

[1] मौनं सर्वार्थसाधकम् ।

(४) नौ महीने से अधिक समय में उत्पन्न हुआ हो।

(५) विशेष, प्रधान (काकु से व्यंग्य।

अनूपकिशोर—(१) अनूप—(अनोखा) बच्चे के रूप, आकृति, स्वभाव अथवा गुणों में अनोखापन होने से यह नाम पड़ा।

(२) अनूपशहर (बुलंदशहर) में उत्पन्न हुआ हो।

(३) वह स्थान जहाँ जल अधिक हो अनूप कहलाता है। जन्म के स्थान की ओर संकेत करता है।

(४) ब्रज तथा मऊ (मालवा) को भी अनूप कहते हैं।

(५) अनुपम।

(६) गोस्वामी, अनूप गिरि उपनाम हिम्मतबहादुर।

ऊधमपालसिंह, ऊधमसिंह—व्यंग्य के अतिरिक्त ऊधम उद्धव का विकृत रूप प्रतीत होता है। काश्मीर में माधोपुर के निकट ऊधमपुर भी है। उन दोनो नगरों की सन्निकटता ने ही मेरा ध्यान उद्धव की ओर आकर्षित किया था। देशभक्त ऊधमसिंह ने इगलैंड में जलियान वाला बाग में गोली चलानेवाले कर्नल डायर को मारा था।

कंगाली चरण—जन्म परिस्थिति के अतिरिक्त यह भक्त भावना का भी सूचक है। कङ्काली (कंस काली) देवी का मंदिर कंकाली टीले पर मथुरा के पास स्थित है। उसे देवकी की कन्या समझकर कंस ने मारना चाहा था। परन्तु वह उसके हाथ से छूटकर आकाश को चली गई थी।

कुटिलसिंह, कुटलू—व्यंग्य के अतिरिक्त अन्य भावना भी इनसे प्रगट होती है। कुटिला—(१) सरस्वती नदी (२) राधिका की ननद (३) पार्वती की बड़ी बहन (४) कुटल—छान-छप्पर (अन्धविश्वास)।

खुरमल्लो राम—देहाती बोलचाल में कभी कभी मनुष्य के पैरों को खुर कह दिया करते हैं। इसलिए खुरमल्लो का अर्थ हुआ पैर फेंकनेवाला, यह बच्चे के स्वभाव का सूचक है। खुरमा-छुहारा, एक मिठाई।

चतुरसेन—व्यंग्य के अतिरिक्त इसमें ये भावनाएँ भी सन्निहित हैं।

(१) चतुर (प्रवीण) है सेना जिसकी, (२) जिसके पास चतुरंगिणी (हाथी, घोड़े, रथ, पैदल) सेना हो।

चतुरी नारायण—कृष्ण का भी वाचक है।

चनकीसिंह, चनखीसिंह—चनक—चना के अर्थ में भी आता है। इससे चना से तौलने का अन्धविश्वास प्रकट होता है (चाणक्य)।

चमनगोपाल—स्थान के साथ-साथ इसमें कृष्ण के प्रति भक्ति-भावना भी पाई जाती है।

छटंकीराम—व्यंग्य के अतिरिक्त यह नाम इस कथा की ओर भी संकेत करता है। जब गोपियाँ यशोदा से कृष्ण की माखन चोरी का उलहना देने लगीं तब नंदरानी ने छोटे बड़े पत्थर (छोटे छटंकी, बड़े पसेरी) लाकर सामने रख दिये और उनसे माखन दही तौल तौलकर ले जाने के लिए कहा[1]।

डलमीरसिंह—कश्मीर की प्रसिद्ध झील डल जिसके तट पर शालिमार, निशात आदि प्रसिद्ध मुगल सम्राटों के भव्य उद्यान स्थित हैं। श्रीनगर भी इसी झील के चारों ओर बसा हुआ है। चतुर्दिक उच्च पर्वत-मालाओं से आवृत है।

---

[1] 'जाको खायो सोई ले जाओ री।
गारी मत दीजो मो गरीबिनी को जायोरी'॥

द्वीपनारायण—शिशु जन्म स्थान के अतिरिक्त यह नाम व्यास द्वैपायन की ओर भी संकेत करता है क्योंकि वह भी एक द्वीप पर उत्पन्न हुए थे।

धारासिंह—इस नाम से ये तीन भावनाएँ व्यंजित होती हैं :—

(१) किसी नदी की धारा के निकट जन्म हुआ हो।

(२) उत्पत्ति के समय मूसलाधार वर्षा हो रही हो।

(३) धारा नगरी का सिंह अर्थात् राजा भोज, जिसके समय में संस्कृत साहित्य तथा कवियों का विशेष उत्कर्ष रहा।

धुनमुनदास—(१) कुछ मनुष्यों में शब्द को दोहराने की प्रवृत्ति होती है। यहाँ पर धुन की निरर्थक आवृत्ति प्रतीत होती है अतः धुनमुन का अर्थ धुनिवाला अर्थात् मौजी हुआ।

(२) कल्पना से धुनि मुनि मानकर धुनिवाला मुनि अर्थ भी ले सकते हैं।

धूम बहादुर—धूमसिंह—धूम को धूम्र का अपभ्रंश मानने से निम्नलिखित अर्थ प्राप्त होते हैं :—

(१) धूम्रवर्णी अर्थात् धुएँ के रंग का।

(२) धूम्र=शिव।

(३) धूम्रा=पार्वती इस प्रकार इन दोनों नामों का अर्थ शिव हुआ।

(४) देखिए ऋषिमुनि प्रवृत्ति में धूमऋषि।

(५) जन्मकाल की धूमधाम की ओर भी संकेत करता है।

नंगे दास—नंगा शब्द दिगंबर शिव के लिए भी व्यंग्य है।[1]

नहरदेव—यह नाम किसी स्थानीय नहर के किनारे के देवता का भी सूचक है। सम्भव है सजी नहर के तट पर पैदा हुआ हो।

नाहरसिंह—यह उपाधिसूचक नाम वीरता का बोधक है। सिंह सार्थक होने से इसका अर्थ हुआ सिंहों में श्रेष्ठ।

प्रगटसिंह—प्रगट प्रसिद्ध तथा प्रादुर्भाव के अर्थ में आता है। यह नाम प्रह्लाद तथा हिरण्यकशिपु की कथा की ओर संकेत करता है। इसमें विष्णु भगवान् नृसिंह के रूप में प्रकट हुए थे।

प्रवेशचंद्र—चंद्रोदय के समय पुत्र की उत्पत्ति का सूचक है।

प्रवेश नारायण—नारायण का प्रवेश अथवा नारायण के भक्त का प्रवेश या पहुँच।

बागुर राम—यह नाम राम की उस स्थिति का निर्देश करना है जब वह मेघनाद की नागफाँस में बद्ध थे।

---

[1] हँसि-हँसि भाजैं देखि दूलह दिगम्बर को,
पाहुनि जे आवैं हिमाचल के उछाह में।
कहै 'पदमाकर' सु काहू सों कहै को कहा,
जोई जहाँ देखैं सो हँसेई तहाँ राह में॥
मगन भयेऊ हँसै नगन महेस ठाढ़े,
और हँसे येऊ हँसि-हँसि कै उमाह में।
सीस पर गंगा हँसै भुजनि भुजंगा हँसै,
हास ही को दंगा भयो नंगा के विवाह में॥
(जगद्विनोद, पद्माकर पंचामृत ॥६६८)

बीचपालसिंह—यह नाम अन्य अर्थों का भी निर्देश करता है। वीचि का अर्थ लहर तथा किरण होता है। अतः उपलक्षणा से यह दोनों समुद्र तथा सूर्य के वाचक हैं। इसलिए वीचपाल का अर्थ हुआ वरुण तथा शिव। बीच मँझले के अर्थ में प्रयुक्त हुआ प्रतीत होता है।

भूड़देव—(१) भूड़ बालू मिली हुई भूमि यथा भूड़ बरेली—स्थानसूचक व्यंग्य।

(२) भूड़ देव कोई स्थानीय देवता जिसकी मनौती से पुत्रजन्म हुआ (अंधविश्वास)।

भौंरीलाल—(१) भ्रमर की तरह काले रंग का।

(२) बालों के चक्र को भँवरी कहते हैं।

मंथनप्रसाद (१) यह नाम जन्म समय की किसी दुर्घटना की ओर निर्देश करता है।

(२) समुद्र-मंथन से चतुर्दश रत्नों की प्राप्ति हुई, उन्हीं के सदृश अमूल्य तथा उपयोगी।

(३) मंथान—शिव के अर्थ में आता है जो नाश करनेवाले हैं।

मजनूलाल—(१) पागल, दीवाना, अति दुर्बल मनुष्य।

(२) प्रेमी।[1]

विजयाभिनंदन—यह किसी विजयोत्सव के हर्ष की सूचना देता है।

विजया—दुर्गा, विजयादशमी आदि तिथियाँ, इससे धार्मिक प्रवृत्ति का सूचक हुआ।

विद्युत्कुमार—शक्ति की एक मूर्ति का नाम विद्युत् गौरी है। सम्भव है यह नाम जैन देवता तडित्कुमार की ओर संकेत करता हो।

सप्पू—इस संबन्ध में एक कहानी प्रसिद्ध है।[2]

सैकूलाल—(१) सैकू सैका से बना प्रतीत होता है। जिसका अर्थ घड़ा है। पीपल के पेड़ में सब देवताओं का वास बतलाया जाता है और शनिवार के दिन अपनी बहन दरिद्रा से मिलने के लिए लक्ष्मी जी उसके पास आती हैं। प्रायः मनुष्य विविध कामनाओं से पीपल पर जल चढ़ाया करते हैं। कोई-कोई जल का घट भी बाँध देते हैं। कदाचित् पुत्र कामना से यह घट बाँधा गया हो।

(२) एक पंडित ने सैकू का अर्थ ससुराल में पैदा हुआ बतलाया जो मैकू का अनुकरण प्रतीत होता है।

(३) सेकुवा एक प्रकार की बर्छी को भी कहते हैं।

(४) धान के अर्थ में सेकुरी शब्द आता है जो अंधविश्वास का व्यंजक है।

४—समीक्षण

अंधविश्वास के तुल्य यह प्रकरण भी अत्यंत रोचक है। दोनों का आधार शिक्षा का अभाव एवं संस्कृति का मिथ्या रूप है। अतएव दोनों का प्रचार प्रायः अशिक्षित तथा अशिष्ट निम्नस्तर के

---

[1] मजनू अरब के एक सरदार का पुत्र था। उसका असली नाम कायस था। वह लैला नाम की कन्या पर आसक्त हो गया और जब उसने सुना कि उसका विवाह दूसरे के साथ हो जायगा तो वह उसके वियोग में पागल हो गया। इसीलिये प्रेम-वियोगी को व्यंग्य से मजनू कहते हैं।

[2] एक दिन एक मूर्ख देहाती को मार्ग में एक सर्प मिला तो उसने पूछा "कोर्भवान"। इस शिष्टाचार के उत्तर में सर्प ने कहा "सप्पोऽहं" (देहाती ने रेफ अधिक बोला था इसलिए सर्प को रेफ लोप करना पड़ा) देहाती ने फिर प्रश्न किया "रेफः क्गतः" सर्प ने उत्तर दिया "तवमुखे"। बेचारा मूर्ख सर्प की इस वाक्पटुता से अत्यंत लज्जित हुआ।

समाज में ही सीमित है, इसी हेतु दोनों प्रवृत्तियों में विकृत शब्दों की संख्या प्रचुर है और गौण शब्द अल्प संख्यक हैं। इन समता के साथ दोनों में एक विषमता भी दिखलाई दे रही है। प्रथम में अप्रिय तथा कुत्सित शब्द होते हुए भी एक मंगलमयी भावना सन्निहित रहती है, द्वितीय में विषाक्त कटूक्ति तथा उपहास का पुट रहता है। अंधविश्वास की अपेक्षा इसमें यह विशेषता और है कि ऐसे नाम बड़ी आयु में भी पड़ जाते हैं। शनैः शनैः मनुष्य उनके वास्तविक नामो को भूल जाते हैं। इसके विपरीत, अंधविश्वास के नाम केवल बचपन में ही सम्भव हो सकते हैं, श्रेष्ठ शब्द भी काकु से विरोधी अर्थ की अभिव्यंजना करता है। अन्धविश्वास का दुर्जनसिंह अशुभ शब्द होते हुए भी शुभाशी का सन्देश देता है, किन्तु व्यंग्य का सुजान भी अच्छा नहीं, क्योंकि इसमें एक कुटिल भावना कार्य कर रही है। व्यंग्य व्यक्ति के शरीर, चरित्र अथवा जीवन की विलक्षणता व्यक्त करता है, यह अभिव्यंजना प्रियाप्रिय दोनों प्रकार के शब्दों द्वारा होती है। इस बृहदाख्यावली में व्यंग्य के तीन भेद दिखलाई देते हैं।

(१) शारीरिक व्यंग्य जिनमें रूपाकृति के नाम सम्मिलित हैं, रूप के अन्तर्गत सौंदर्य एवं वर्ण का समावेश रहता है। समानधर्मी पुष्पादि पदार्थों से भी यह काम लिया जाता है। अंगों का न्यूनाधिक्य अथवा वैकल्प अभिव्यंजक नाम आकृति से सम्बन्ध रखते हैं। दौर्बल्य, स्थूलता, खर्वत्व, विशालतादि काया के गुण सम्बन्धी नाम भी इसी प्रकार के व्यंग्य के अंग हैं। इसके उदाहरण गोरेलाल, छंगामल, नाटे, विशाल, सूरे, भिनकू, खूनी आदि हैं।

(२) चारित्रिक व्यंग्य उन नामों में पाया जाता है जो मनुष्य के स्वभाव, गुण, मनोविकार तथा अन्य भाव-भावनाओं से सम्बन्धित होते हैं। इस प्रकार के नामों के पड़ने का कारण यह होता है कि मानव-प्रकृति अथवा प्रवृत्ति मर्यादा का उल्लंघन कर किसी एक ओर ही विशेष आसक्ति प्रदर्शित करती है। चिलमसिंह हुक्का का प्रेमी है। इससे उसका स्वभाव प्रकट होता है। किसी वस्तु विशेष में स्वभावतः अत्यधिक अभिरुचि होने से ऐसे नाम रख लिये जाते हैं। समान गुण होने से अतीत के नामों की आवृत्ति भी हो जाया करती है। दुर्वासा क्रोध के प्रतीक हैं, तो नारद कलह-प्रियता की प्रतिमा। इसी हेतु क्रोधी पुरुष को दुर्वासा या परशुराम कहने लगते हैं और कलहकारी को नारद या माहिल। कभी कभी तादृक प्रकृति वाले जीव जन्तुओं पर भी ऐसे नाम रख लिये जाते हैं। लोमड़ी की चालाकी प्रसिद्ध है तो शृगाल की भीरुता। इन्हीं गुणों के कारण व्यक्तियों के नाम उन जानवरों पर रख लिये जाते हैं। गप्प हाँकनेवाला गप्पी और शेखी मारनेवाला शेखू के नाम से पुकारे जाते हैं। उपहासमूलक विरोधी गुणों का आरोप करने से कथोपन्यास के विचित्र पात्रों का सर्जन होता है। कायर को तीसमारखाँ तथा दुर्बल को सींकिया पहलवान ऐसे नामों के नमूने हैं। नाटक का विदूषक इसी प्रेरणा का फल है। मानसिक वृत्तियों की पुनः-पुनः त्वरावृत्ति होने से वे एक प्रकार से नित्यत्व का रूप धारण कर लेती हैं। इसीलिए खुशदिल, हंसमुख आदि नाम पड़ जाते हैं। इसी प्रकार अन्य भाव-भावनाओं से अभिनव अभिधानों का आविर्भाव होता है।

(३) तृतीय प्रकार का व्यंग्य स्वतः मानव जीवन से सम्बन्ध रखता है। देश, काल, घटना, परिस्थिति आदि से सम्बद्ध होने के कारण उनका मनुष्य पर अत्यन्त प्रभाव पड़ता है। मनुष्य पूर्णतः नहीं तो अंशतः अवश्य परिस्थितियों का दास होता है। देश, काल तथा घटना के अतिरिक्त उसके कार्य कलाप भी एक जाल प्रस्तुत करते रहते हैं। निर्दिष्ट देश-काल के विशिष्ट नाम तो स्मारक प्रवृत्ति में प्रवृष्ट हो चुके हैं। यहाँ केवल अनिश्चित देश काल से सम्बन्ध रखनेवाले नाम ही लिखे गये हैं। आँगन में उत्पन्न पुत्र अँगना कहलाता है, तो उजाले में जन्मा उजियारी लाल या अँजोरे राम नाम से पुकारा जाता है। जन्म के समय नेग के लिए दाई के झगड़ने से झगडू या जंजाली नाम पड़े।

नामों की गणना के विचार से व्यंग्य का प्रवृत्तियों में सर्वप्रथम स्थान है। इसकी एक विशेषता यह है कि मूल शब्दों की अपेक्षा पूरक शब्द अत्यन्त न्यून हैं। इसके दो कारण हो सकते हैं, (१) अधिकांश नाम बिना सहायक शब्दों के ही प्रयुक्त हुए हैं। (२) एक ही पूरक शब्द की अनेक बार आवृत्ति हुई है। इसकी तीसरी विशेषता यह है कि इतने मूलशब्द किसी अन्य प्रवृति में नहीं पाये जाते। इसका अभिप्राय यह है कि मूल शब्द की आवृत्ति नाममात्र को ही हुई है। अतः इसमें नवीन नामों की संख्या अधिक है। तत्समों की अपेक्षा इसमें तद्भव या विकसित रूप ही प्रचुर मात्रा में प्रयुक्त हुए हैं, यह इसकी चतुर्थ विशेषता है। बहिरंग एवं अंतरंग दृष्टियों से व्यंग्य में शरीर-विज्ञान, मनोविज्ञान, मानव विज्ञान आदि अनेक विज्ञानों का समावेश पाया जाता है; इनके अतिरिक्त भारतीयों के लोक-व्यवहार कौशल वाग्वैदग्ध्य, व्युत्पन्नमतित्व आदि की अभिव्यंजना इन नामों से स्पष्ट हो रहा है। अमूर्त भाव भावनाओं को साकार एवं सजीव करने में इनकी औपचारिक बुद्धि अत्यन्त प्रखर एवं प्रवीण दिखलाई देती है। मूर्खता के लिए लक्ष्मी-वाहन उल्लू, शीतला-वाहन गर्दभ तथा भोले बाबा का नादिया (वृषभ) लोक प्रसिद्ध हैं।

अनधिकारी पुरुषों के उपाधिमूलक नामों पर भी व्यंग्य का रंग चढ़ जाता है। डाकू, लुटेरा और अत्याचारी रत्नाकर रत्नाकर न था। वाल्मीकि होने पर ही वह सच्चा रत्नाकर हुआ।

व्यंग्य के अनेक भेदोपभेदों के पचड़े में न पड़ उससे सम्बन्धित कुछ अन्य बातों का उल्लेख कर देना ही अलं होगा।

व्यंग्य का मुख्य धर्म चिढ़ाना है जिसमें तीन प्रकार की भावनाएँ पाई जाती हैं—(१) सुधार की, (२) विनोद की (३) या परपीड़ा या वेदना की। पहले में दुर्गुणों या दोषों को दूर करने का प्रयत्न किया जाता है। झुटकऊ, खिल्लो आदि नामों में सुधार की भावना काम करती दिखलाई देती है। द्वितीय में विनोद की भावना से चिढ़ानेवाले और चिढ़नेवाले दोनो पक्ष को आनंद मिलता है। इस गणना में वे मनुष्य आते हैं जो किसी उद्देश्य से चिढ़ते हैं। उनकी चिढ़ कृत्रिम होती है। कोई-कोई भक्त अपने इष्टदेव के नाम से दिखाने के लिए चिढ़ने लगते हैं ताकि बार-बार अपने आराध्य देव का नाम कानों में पड़ता रहे। वस्तुतः वह अपने मन में बहुत प्रसन्न होता है। रवींद्र बाबू का भंगभक्त दरवान शोभाराम बनावटी क्रोध दिखलाने के लिए बालकों के पीछे डंडा लेकर दौड़ता है जब वे चुपचाप उसके कान में 'राधे श्याम' कह कर भाग जाते हैं। बालक उसके बनावटी चिढ़ने से खुश होते हैं और उसका हृदय भी अपने भगवान् का नाम सुनकर गद्गद हो जाता है। कुछ दिनों में शोभाराम का नाम ही राधेश्याम हो जायगा। तीसरा दल उन लोगों का होता है जिनके शरीर, स्वभाव, चरित, विश्वास, रुचि आदि में कुछ वैचित्र्य होता है जिसका उल्लेख करने से उन्हें मानसिक वेदना होती है जो झुँझलाहट, क्रोध, पीड़ा आदि शारीरिक क्रियाओं अर्थात् अनुभावों में रूपांतरित होने लगती है। यह सच्चा चिढ़ना है। कुछ लोगों को बैंगन, करेला, कद्दू आदि से इतनी घृणा हो जाती है कि वे उसका नाम सुनते ही मारने को दौड़ने लगते हैं। अंत में वे बैंगन, करेला या चिढ़नेवाली अन्य वस्तु के व्यंग्य नाम से ही कुख्यात हो जाते हैं। तकिया कलाम (सखुन तकिया) भी व्यंग्य का रूप धारण कर लेता है। 'जो का तुमारे साब' क्षमा कीजिए, 'भगवान तुम्हारा भला करे', जो है सो या 'समझे' आदि अनेक प्रचलित तकिया कलाम हैं। एक व्यक्ति का एक ही तकिया कलाम होता है जिसे वह बातचीत में बार-बार दुहराता जाता है। अंत में वही उसका व्यंग्य नाम बन जाता है।

---

[१] जैसे भगवान की लीलाएँ एक से एक निराली होती हैं वैसे ही भक्तों की भावनाएँ भी एक से एक अनोखी होती हैं। राम के एक भक्त ने अपने घर का नामकरण "निर्बल के बल राम" किया है।

खर-खर, धुन धुना, झक झक, टुन टुनियाँ जैसे ध्वन्यात्मक नाम; अंगूठा राम, अनारदे, रम्पेल-स्टिल्टज-किन (Rumpel Stilts-kin)[1] जैसे बच्चों की कहानियों के नाम और काला पहाड़, अंगुलिमाल[2] आदि ऐतिहासिक नाम व्यंग्य के रंग में डूबे हुए हैं।

प्रहसनो, उपन्यासों और कहानियों में प्रयुक्त लतखोरी लाल, ढोलक राम, चौपट चरण, गबड़ुआ आदि विषय के अनुकूल मनगढ़ंत व्यंग्य नाम हैं। संस्कृत नाटकों के विदूषक; अंग्रेजी राजदरबारो के क्लाउन (clown) या कोर्ट जेस्टर (court jester); सरकसों के जोकर (joker); महफिलों के मसखरे तथा रासधारियों के मनसुखे केवल रसोद्दीपक व्यंग्य नामधारी ही होते हैं।

लाल बुझक्कड़, गोबर गनेस, ढपोरसंख, शेखचिल्ली, तीसमारखाँ जैसे परम्परा से प्रचलित व्यंग्यात्मक नाम श्रेणी विशेष के विशिष्ट गुणों के प्रतीक से बन गये हैं।

किन्नर, किंशुक जैसे प्रश्नमूलक व्यक्तिवाचक नाम व्यंग्यात्मक ही समझना चाहिए।

सामान्य मनुष्य ही नहीं देवता भी व्यंग्य के रंग से नहीं बचने पाये हैं। छंगुरी की तरह उनमें भी त्र्यंबक, चतुर्भुज, षण्मुख, सहस्रनयन आदि व्यंग्य नाम प्रचलित हैं। एक एक देव के कई कई व्यंग्य नाम देखे गये हैं। कृष्ण के रणछोर, दामोदरादि; शिव के भोले बाबा, दिगम्बरादि; गणेश के लम्बोदर, वक्रतुंडादि व्यंग्य नाम हैं। हनुमान और वामन भी व्यंग्य ही हैं। ऋषि-मुनियों में भी कुकुर, उलूक, कुक्कुटादि प्रसिद्ध हैं।

---

[1] Little does the lady dream.
Rumpel-Stilts-Kin is my name.

(रानी नहीं जानती कि मेरा नाम 'रम्पेलस्टिल्टज-किन' है) आनंद की उमंगों से भरा हुआ एक बौना देव जंगल के एकांत में ऊपर का गीत गा-गाकर नाच रहा था। रानी के गुप्तचरों ने, जो उसके नाम की खोज में थे, महल में जाकर यह बात रानी को सुनाई तो वह समझ गई कि यह वही जंगली बौना देव है जो उसके पुत्र को लेना चाहता है, दूसरे दिन बौना देव राजकुमार को लेने आया। रानी ने उसका गुप्त नाम बतला दिया। प्रतिज्ञाबद्ध बौने को राजकुमार के बिना ही लौटना पड़ा।

गुप्त नाम की एक अन्य कहानी भी बच्चों की पुस्तकों में मिलती है—एक निर्दयी डाकू अपने प्रत्येक कैदी से अपना गुप्त नाम पूछा करता था। जो नहीं बतला पाते थे वे बेचारे जान से मार दिये जाते थे।

[2] अंगुलिमाल एक अत्याचारी डाकू था जो मनुष्यों की अंगुलियों की माला पहना करता था। अंत में वह बुद्ध के उपदेश से बौद्ध-भिक्षु बन गया।

: ३ :

हिन्दी नामों में भारतीय संस्कृति

संस्कृति के कुछ अंग

धर्म

दर्शन

सामाजिक जीवन

राजनीतिक प्रगति

इतिहास

शासन-तन्त्र

साहित्य

ललित कलाएँ

विज्ञान

प्रकृति-प्रेम

भौगोलिक परिज्ञान

भारतीय संस्कृति

प्रस्तुत अभिधानों में भारतीय संस्कृति के अनेक रूपों का आभास दृष्टिगोचर हो रहा है जिससे यह प्रकट होता है कि उसका स्वरूप परमोज्वल, पवित्र एवं मनोमोहक है। वैदिक युग से लेकर आज तक सहस्त्रों वर्षों से उसकी एक अविच्छिन्न तथा अविरल धारा प्रवाहित हो रही है। इस अमरता के मूल हेतु आर्यों की आस्तिक भावनाएँ, सात्विक गुण एवं आदर्श चरित्र हैं। जीवन का कोई ऐसा कार्य-क्षेत्र नहीं, जिसमें उसके पुरुष-पुंगवों के महान् व्यक्तित्व की मुद्रा न दिखलाई देती हो। ऐसा जान पड़ता है कि अपनी जीवंत शक्ति की अभिवृद्धि करने तथा उसे चिरस्थायित्व देने के लिए आर्य-हिन्दू संस्कृति अपने में अन्य संस्कृतियों का समावेश भी समय-समय पर करती रहती है। इन नामों में धर्म-दर्शन की दिव्यता, कलाओं की कमनीयता, साहित्य की सुषमा, ज्ञान-विज्ञान की विलक्षणता आदि संस्कृति के अनेक रम्य रूपों का समाहार प्रत्यक्ष हो रहा है। समाहार में समन्वय है, समन्वय में सौंदर्य है।

इन नामों से तत्कालीन संस्कृति के विविध अंगों की रूपरेखा इस प्रकार प्राप्त होती है।

धर्म

धार्मिक नामो की वृहत् संख्या (लगभग ७५ प्रतिशत) से भारत के इस प्रदेश में धर्म की प्रधानता दिखलाई दे रही है। इस वातावरण के कारण मनुष्यों के समस्त कृत्यों, विचारों, मनोभावों तथा भावनाओं में धर्म की एक अतर्धारा प्रवाहित हो रही है। उनके प्रत्येक संकल्प-विकल्प में धर्म का एक पुट दृष्टि-गोचर होता है जो उनकी सत्य निष्ठा, पूर्ण आस्था एव दृढ़विश्वास का व्यंजक है।

नाम गणना के अनुसार १६२१३ नामों में से ८०२३ नाम देव संबंधी हैं। इससे स्पष्ट है कि लगभग ५० प्रतिशत भारतीय देव-देवियों में श्रद्धा-भक्ति रखते हैं। इस संकलन मे देवों के तीन प्रकार के नामों का उल्लेख मिलता है। सबसे बड़ी संख्या हिन्दू देवताओं के नामों की है। कुछ तीर्थंकरों के नाम भी सम्मिलित हैं। बहुत ही अल्प संख्या बुद्ध के नामों से सम्बन्ध रखती है। इससे हिन्दू, जैन तथा बौद्ध इन तीन बड़े-बड़े धर्मों का प्रभाव देश में परिलक्षित हो रहा है।

निराकार ईश्वर के अतिरिक्त जनता में त्रिदेव, पचदेव, लोकपाल, अवतार आदि अनेक देवो तथा पार्वती, लक्ष्मी, सरस्वती आदि अनेक देवियों की पूजा भी प्रचलित दिखलाई देती है। इससे यहाँ के मनुष्यों की अभिरुचि बहुदेववाद की ओर झुकी हुई प्रतीत होती है। हिन्दुओं की आराधना के दो रूप यहाँ दृष्टिगोचर हो रहे हैं। (१) निर्गुण—निराकार ब्रह्मोपासना अर्थात् परापूजा तथा (२) सगुण—साकार देवार्चना अर्थात् वैधी पूजा।

ब्रह्मोपासना—परापूजा मानसिक आराधना है जिसमें न कोई बाह्य उपचार है, न कोई आडंबर। ब्रह्म के अवाङ्मनसगोचर होने के कारण उसकी उपासना का क्षेत्र बहुत ही सीमित एवं संकुचित दिखलाई दे रहा है। कतिपय विद्वानों, वेदांतियों, निर्गुणी संतों तथा आर्य समाज आदि कुछ आधुनिक संस्थाओं में ही इसका विशेष प्रचार दृष्टिगोचर हो रहा है। ईश्वर के विषय में उन लोगों की धारणा है कि वह सर्व व्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् आदि अनन्त गुणों से युक्त निराकार एवं निर्विकार है। सृष्टि-रचना, प्रजापालनादि उसके मुख्य कार्य हैं। वह स्वभाव से दयालु, न्याय-कारी आदि लक्षणोपेत है। परमात्मा चैतन्य, ज्ञानी तथा आनन्द-स्वरूप भी है। इस प्रकार ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव तथा स्वरूप का सम्यक् परिचय इन नामों से प्राप्त हो रहा है। वेदों में उसे

प्रणव के नाम से अभिहित किया गया है। प्रणव के व्यक्तिगत नामों से परोवरीयस ओम् संज्ञा विशेष लोक-प्रिय दिखलाई दे रही है। संत-समाज में ईश्वर के संबंध में दो भावनाएँ और प्रचलित हैं। पहली सेव्य-सेवक संबंधी सेवा-धर्म की भावना है जो साहब, हजूर, मालिक आदि नामों से व्यक्त हो रही है। प्रियतम, बालम, दूल्हा आदि नामों से माधुर्यरस की दूसरी भावना व्यंजित हो रही है। कदाचित् ये दोनों भावनाएँ सूफ़ीमत के प्रभाव का परिणाम हो अथवा उपनिषद् का कोई मंत्र इस प्रेरणा के मूल में रहा हो।

देव पूजा—प्रतिकूल परिस्थिति, अनुपयुक्त पर्यावरण एवं कष्टसाध्य होने के कारण बहुत थोड़े से ही मनुष्यो का मन इस अनौपचारिक मानसिक आराधना में संलग्न दिखलाई दे रहा है। सर्वसाधारण में वैधी पूजा ही विशेष रुचिकर प्रतीत होती है। सगुण-साकार-देव-पूजा के अंतर्गत अनेक प्रकार के देव सम्मिलित दिखलाई दे रहे हैं। अधिकांश मनुष्य त्रिदेवों एव पंचदेवों में आसक्ति रखते हैं। कुछ लोकपालों के श्रद्धालु भी मालूम होते हैं। अवतारों में रामकृष्ण के भक्तों की संख्या अत्यधिक दृष्टिगोचर हो रही है। प्रतिमा-पूजन जनता में अधिक प्रिय प्रतीत होता है। ये लोग नदियों में भी बड़ी निष्ठा रखते हैं, यक्ष, किन्नर, गंधर्व आदि अनेक प्रकार की छोटी-छोटी देव-योनियों में भी इनकी आस्था पाई जाती है। इनके अतिरिक्त निम्नश्रेणी के कुछ अशिक्षित लोगों में भूत-प्रेत, पीरों-फकीरों तथा कब्रों की मान्यता भी दिखलाई देती है। मुख्य-मुख्य देवों का नामों से प्राप्त परिचय नीचे दिया जाता है।

ब्रह्मा—उसकी उत्पत्ति विष्णु के नाभिस्थ कमल से हुई है। त्रिदेवों में ब्रह्मा सबसे ज्येष्ठ माना गया है उसके चार मुख हैं, सरस्वती उसकी स्त्री है। सनक, सनंदन, सनातन, सनत्कुमार, कामदेव तथा नारद उसके मुख्य मानस-पुत्र हैं। हंस उसका वाहन है। वह मनुष्यों के भाग्य का विधाता है तथा सृष्टि की रचना करता है। ब्रह्मा की उपासना निराकार तथा साकार दोनों ही रूपों में व्यक्त हो रही है।

विष्णु—विष्णु के स्वरूप, कार्य-कलाप, गुण एवं चरित्र सम्बन्धी अभिव्यंजना इन नामों में पर्याप्त रूप से पाई जाती है। राजिव-लोचन हरि का रूप सुन्दर तथा सौम्य है। चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा तथा पद्म सुशोभित है, माता का नाम विकुंठा है। धन की देवी लक्ष्मी उसकी भार्या है, गरुड़ उसकी सवारी तथा जय-विजय नामक दो द्वारपाल हैं, वक्षस्थल को कौस्तुभमणि तथा श्रीवत्स विभूषित कर रहे हैं, क्षीर सागर में शेषनाग नारायण की शय्या है। समय-समय पर देवताओं की सहायता करना, अवतार लेकर असुरों को मारना, दुष्टों का दमन, भक्तों की रक्षा तथा विश्व का पालन करना आदि बैकुंठ वासी विष्णु के अनेक कार्य हैं। लोक-हितैषिता की भावना के कारण हरि का नाम बहुत प्रिय हो गया प्रतीत होता है, विष्णु की पूजा निराकार, सुराकार तथा नराकार तीनों रूपों में की जाती है।

शिव—विष्णु के सदृश महेश का भी बहुत कुछ इतिवृत्त इन नामों से प्राप्त हो जाता है। शिव के तीन नेत्र तथा पंच मुख हैं। जटाओं में गंगा, ललाट पर चन्द्रमा, हृदय पर भुजग, नीलाभ कठ में मुण्डमाला, गौर वर्ण शरीर पर भस्म, कटि में मेखला, एक हाथ में त्रिशूल तथा दूसरे में डमरू शोभित हैं। महादेव का परिवार अत्यन्त शक्तिशाली है। उसकी पत्नी आदिशक्ति महामाया पार्वती है जो नाना रूपों और नाना नामों से दुर्द्धर्ष दैत्यों का दलन करती है। उसका बड़ा पुत्र स्वामिकार्तिकेय देवताओं का सेनानी है। दूसरा पुत्र लम्बोदर-गजानन गणेश है जो विघ्नहर तथा विघ्नकर दो विरोधी गुणों के कारण परोवरीणदेव माना जाता है। महेश के गुणों में जैसी बहुलता है वैसी ही कार्यों में भी बहुरूपता एवं विपुलता दिखलाई दे रही है। ब्रह्मा के सदृश शिव की पूजा भी निराकार तथा सुराकार दोनों रूपों में प्रचलित है।

इंद्र—लोकपालों में इंद्र का कुछ विशेष परिचय मिलता है। वह स्वर्ग का राजा तथा देवों का अधिनायक है। उसकी स्त्री शची तथा पुत्र जयंत हैं। वह वज्र से अपने शत्रुओं का संहार करता है, कुबेर उसका कोषपाल है। जलदेव, वरुण, अग्नि, मरुत, कामदेव आदि अनेक देवता उसकी सभा में रहते हैं, बृहस्पति देवों का गुरु है।

सूर्य—सूर्य की गणना पंच देवों में की जाती है। वह ग्रहो का स्वामी माना जाता है। यम, यमुना, अश्विनीकुमार तथा शनि उसकी सतान हैं। वह प्रकाश तथा उष्णता का स्रोत है।

चंद्र—चंद्र नक्षत्रों का अधिपति है। रोहिणी उसकी स्त्री है। उसके पुत्र का नाम बुध है।

हिंदुओ में विष्णु के अवतारो को विशेष मान्यता दी गई है—इन अवतारो में मर्यादा-पुरुषोत्तम राम तथा लीला पुरुषोत्तम कृष्ण मुख्य अवतार हैं।

राम—का जन्म अयोध्या में राजा दशरथ तथा कौशल्या के यहाँ हुआ। यह चार भाई थे। कैकई से भरत और सुमित्रा से लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न उत्पन्न हुए। राम लक्ष्मण दोनो भाइयों ने विश्वा-मित्र से धनुर्विद्या सीखी। जनक-नंदिनी सीता के साथ कौशल्या-नदन का परिणय हुआ। अपने अनन्य सेवक पवन के अवतार हनुमान की सहायता से राघव ने रावण आदि असुरों का विनाश किया। सीता के लव और कुश दो पुत्र हुए। लोकसग्रही गुणों के कारण राम का नाम अत्यन्त प्रिय हो गया है। भगवान राम की पूजा तीनों रूपो में प्रचलित दिखलाई देती है। निराकार रूप में वह साक्षात् ब्रह्म है, सुराकार रूप में विष्णु तथा नराकार रूप में अवतारी राजा राम। रामराज्य स्वर्ण-युग का प्रतिनिधि माना गया है।

कृष्ण—प्रस्तुत नामों में कृष्ण की प्रत्येक अवस्था का सम्यक् चित्रण अंकित हुआ है। बच-पन की बाल-लीलाएं, तारुण्य की अठखेलियाँ तथा वृद्धावस्था के गम्भीर उपदेश—सभी कुछ व्यक्त हो रहे हैं। कृष्ण के माता-पिता का नाम देवकी-वसुदेव हैं। व्रजमोहन का प्रारंभिक लालन-पालन नंदयशोदा के घर हुआ। बड़े भाई का नाम बलराम है। रानियों में रुक्मिणी तथा सत्यभामा मुख्य हैं। वसुदेव के पुत्र तथा पौत्र का नाम क्रमशः प्रद्युम्न तथा अनिरुद्ध है। गोपियों मे राधा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। गोपाल के जीवन की झाँकी नामों के द्वारा व्रज के जन-जीवन में दिखलाई दे रही है। कस आदि बड़े-बड़े असुरो को बचपन में ही मारकर मधुसूदन ने अपनी महत्ता का परिचय दिया तथा गीता का उपदेश दे शान्ति की वर्षा की। विष्णु का अवतार होने के कारण राम के सदृश कृष्ण की भी तीनों रूपों में अर्चना की जाती है।

गंगा—ब्रह्म-द्रव अर्थात् निराकार ब्रह्म का नीराकार रूप होने के कारण गंगा को अन्य नदियों की अपेक्षा अत्यधिक महत्व दिया गया है। भगीरथ की तपस्या के कारण सुर-सरिता गंगा स्वर्ग से अवतरित हो इस भूलोक में आई। चिरकाल तक शिव की जटाओं में खेलती रही। वहाँ से प्रवा-हित हो जह्नु के आश्रम में पहुँची, ऋषि ने उसका आचमन कर लिया। भगीरथ की प्रार्थना पर जह्नु ने उसे फिर से मुक्त कर दिया। गंगा सागर में पहुँचकर सगर के साठ हजार मृत पुत्रों का उद्धार किया।

हनुमान—अंजना तथा केसरी के पुत्र हनुमान को पवन का अवतार माना गया है। संकट-मोचन होने के कारण जनता में बजरगबली की पूजा का बड़ा प्रचार दिखलाई देता है।

मूर्ति पूजा—देवार्चना के अतिरिक्त हिंदुओं में प्रतिमा-पूजन का भी व्यापक रूप दिखलाई दे रहा है। पचदेवों, रामकृष्णादि अवतारों तथा अन्य देव-देवियों के स्वर्ण, मणि, प्रस्तरादि निर्मित देव-विग्रहों—चलाचल मूर्तियों का पूजन किया जाता है। अर्द्धनारी-नटेश्वरादि यवयुग्म या हरशंकरी

मूर्तियों के आधार पर गौरीशंकर, राधा कृष्ण, सीताराम आदि युग्म नामों का श्री गणेश हुआ होगा।

अन्य देवों का विवरण तत्संबंधी प्रवृत्तियों के अध्ययन में दिया गया है।

उपर्युक्त बातों से यह निष्कर्ष निकलता है कि वर्तमान हिन्दू-जनता में भगवान के निराकार, सुराकार एवं नराकार इन तीनों रूपों की पूजा का विधान प्रचलित है। निराकार रूप में ब्रह्म, सुराकार रूप में ब्रह्मा, विष्णु, शिवादि देव तथा नराकार रूप में राम कृष्णादि अवतार ग्रहण होते हैं। बहु-देववादी होते हुए भी वह देवो को एक ही सत्ता के विभिन्न रूप समझती है अथवा उस परम सत्ता तक पहुँचने के लिए उन्हें सोपान-साधन मानती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने इष्टदेव का पूजन करता है, अपनी समस्त कामनाएँ उसी के सम्मुख रखता है, अपने हृदय के उद्‌गारों को उसी के आगे खोलता है, अन्य देवों में भी वह श्रद्धा-भक्ति रखता है; उन्हें भी वह मान्यता की दृष्टि से देखता है और साथ ही ईश्वर के अस्तित्व में भी उसका दृढ़ विश्वास रहता है। इस प्रकार उसकी बहुरूपता में भी एकरूपता झलकती है। नाना देवों के पूजन से उद्‌भूत प्रतिद्वंद्विता हरिहर, रामकृष्ण, शिव-गोविंदादि देव युग्म नामों से दूर करने की चेष्टा की गई है। भिन्न-भिन्न देवों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए यह समभावना की मनोवृत्ति ही दिखलाई देती है। अनेकता में एकता तथा एकता में अनेकता हिंदू धर्म के इस रहस्य का उद्‌घाटन इन नामों से स्पष्ट हो रहा है।

धर्म सम्प्रदाय-पंथादि—तीन प्रकार के धार्मिक नामों से हिंन्दू, जैन तथा बौद्ध इन तीन भारतीय धर्मों का पता चलता है। सनातन हिंदू-धर्म के ये तीन रूप परिलक्षित हो रहे हैं—(१) वैदिक—इसमें आर्य समाज तथा राजा राममोहनराय के ब्राह्मसमाज की गणना की जा सकती है। निर्गुण ब्रह्माराधना तथा वेदादि सच्छास्त्रों में निष्ठा—इन दो बातों का उसमें विशेष प्रचार देखा जाता है। आर्यों में यज्ञ को भी महत्ता दी गई है। उनके विशेष शब्द है—ओम्, वेद, यज्ञ, आर्य, सत्यादि। (२) पौराणिक—यह अनेकशाखा-उपशाखाओं में दिखलाई देता है। पंच देवों से पाँच सम्प्रदाय प्रचलित हुए। वैष्णव धर्म का तो स्पष्ट उल्लेख मिलता है। इनके अतिरिक्त शंकर, रामानुज, माधव, निम्बार्क, वल्लभादि ने भी अनेक वादों-मार्गों (मतों) को जन्म दिया। देवों में भक्ति भावना, वर्ण-व्यवस्था तथा आश्रमों में श्रद्धा, पुराणादि ग्रंथों में आस्था; पर्वादि की मान्यता, अवतार, मूर्ति पूजा तथा तीर्थों में निष्ठा जातिभेद, छुआछूत, कर्मफल, स्वर्गादि में विश्वास आदि हिंदूधर्म के अनेक मूलतत्व इन नामों से उद्‌भासित हो रहे हैं।

विष्णु के परिवार तथा अवतार सम्बन्धी नामों की संख्या का योग ३६७७ है। शिव एवं उसके पुत्र-कलत्र सम्बन्धी नामों की संख्या का योग २६६७ है। इस न्यूनाधिक संख्या की दृष्टि से जनता में वैष्णव धर्म का विशेष प्रभाव सिद्ध होता है।

(३) **पांथिक**—गोरख, नानक, कबीर, दादू आदि अनेक संत-साधकों के नामों पर गोरखपंथी, सिक्ख, कबीर पंथी, दादू पंथी आदि नाना प्रकार के पंथ देश में प्रचलित हो गये हैं। उनमें कुछ निर्गुण पंथी हैं, कुछ सगुण साकार देवों के उपासक। निर्गुण पंथों की विशेषता, सतनाम, सतगुरु, शब्द, सुरति, हुकम, अनहद, नामादि पारिभाषिक शब्दों से व्यक्त हो रही है। सिक्खों के अमृत, राहत, पंच प्यारे आदि शब्द-विशेष हैं।

जैनधर्म के प्रवर्तक जिन माने जाते हैं। जैनियों के देवता तीर्थंकर कहलाते हैं। ऋषभदेव से लेकर महावीर तक अनेक तीर्थंकरों के नाम इस संकलन में विद्यमान हैं। परमेष्ठी, सूरि, मुनि आदि शब्दों से जैनधर्म की विशेषता प्रकट होती है। बुद्ध के नाम बौद्ध की ओर संकेत कर रहे हैं। भिक्षु शब्द इस धर्म का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

कुछ विजातीय शब्द इसलाम तथा ईसाई धर्म की ओर भी संकेत करते हैं।

तीर्थ—तीर्थ संबंधी नामों की बड़ी संख्या से यह ज्ञात होता है कि जनता में इनकी बडी महत्ता है। चार धाम तथा सप्तपुरी के अतिरिक्त अनेक छोटे-बड़े तीर्थों का उल्लेख मिलता है। भारतवर्ष के मानचित्र से पता चलता है कि देश का कोई भाग इनसे रिक्त नहीं है। अतः तीर्थ यात्रा के ब्याज से सम्पूर्ण भारत-भ्रमण का लाभ भी होता रहा होगा। इनकी स्थिति से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये प्रायः सरिताओं के पुलिनपर, समुद्र के तट पर तथा पर्वतों की घाटियों में अवस्थित हैं। इन पुण्य-स्थलों का सम्बन्ध विशेषतः रामकृष्ण, विष्णु, शिव, पार्वती आदि देवों से रहता है। कुछ तीर्थों का सम्बन्ध धर्म-गुरुओं के जन्म स्थान, निर्वाण-क्षेत्र तथा उनके जीवन परक घटना-स्थलों से भी रहता है। जैन, सिक्ख तथा बौद्ध तीर्थों के नाम भी पर्याप्त संख्या में पाये जाते हैं।

मंगल-अनुष्ठान—शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक विकास एवं आत्मिक उत्कर्ष के लिए इन लोगो में नाना प्रकार के मङ्गल-अनुष्ठान प्रचलित दिखलाई दे रहे हैं। नित्य, नैमित्तिक तथा वार्षिक यज्ञ-यागादि वैदिक कर्मकाड में कुछ लोगो की अनुरक्ति है, तो कुछ की पर्वोत्सवों में। व्रत, पर्व, उत्सव, जयती, लीला, मेला आदि अनेक प्रकार के अनुष्ठान मनाने की प्रवृत्ति जनता में पाई जाती है। इनके सामाजिक अनुष्ठानो में भी धार्मिकता का पुट रहता है। सुख, सौभाग्य, संतति, सम्पत्ति, स्वर्गादि की प्राप्ति के लिए ये लोग व्रत रखते हैं, पर्वोत्सवो पर आनंद मनाते हैं। अनेक स्थानो पर सामाजिक तथा धार्मिक मेले भी लगाये जाते हैं। जन्माष्टमी, नवमी आदि पुण्य तिथियों पर कृष्ण, रामादि महापुरुषों की जयतियाँ मनाई जाती हैं। अवतारों के लीलाभिनय में भी इनकी आसक्ति दिखलाई देती है। होली, दिवाली, श्रावणी तथा विजयादशमी इनके मुख्य सामाजिक त्योहार हैं और शिवरात्रि, एकादशी आदि वैयक्तिक। पर्वों में सोमवती, अमावस्या, बाहुली (कार्तिक-पूर्णिमा) तथा गंगा दशहरा मुख्य हैं। कुंभ तथा सूर्य-चंद्र-ग्रहण भी पर्वों में ही सम्मिलित किये जाते हैं। इन नामो से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि सर्व साधारण के जीवन में इन पर्वों का कितना अधिक मूल्य है।

पूजा-उपचार—हिंदू धर्म में नवधाभक्ति, एकादश आसक्तियों तथा षोडशोपचार का विशेष महत्व माना गया है। प्रस्तुत नामों से जिस प्रकार विभिन्न कोटि के देवो की ओर निर्देश किया गया है उसी प्रकार उनकी अर्चना के भी नाना विधान पाये जाते हैं। निर्गुण की उपासना केवल मनोयोग पर ही निर्भर रहती है, किन्तु सगुण-साकार की पूजा के लिए नवधाभक्ति आदि कुछ अन्य उपचार की भी आवश्यकता होती है। वैधी पूजा के ये विधान नामों में गौण प्रवृत्तियों से सम्यक्‌रूपेण व्यक्त हो रहे हैं। जन साधारण में श्रवण, कीर्तन, स्मरणादि नवधाभक्ति का प्रचलन दिखलाई दे रहा है। ये लोग अपने उपास्य देव के रूप, लीला, प्रभाव, गुणादि पर-मुग्ध हो उसे पिता, पति, स्वामी अथवा सखा मानकर अपनी प्रेमासक्ति प्रकट करते हैं। आसन, अर्घ्य, धूप-दीप, फलफूलादि आतिथ्य की प्रायः समस्त सामग्री देवों के षोडशोपचार में प्रयुक्त की जाती रही है। निमंत्रण से लेकर नीराजना तक के अनेक विधानों का उल्लेख इन नामों में पाया जाता है।

इनकी वैधी पूजा में अष्ट द्रव्य का प्रयोग अपना अमूल्य स्थान रखता है। प्रत्येक वस्तु किसी न किसी भावना का प्रतीक समझी जाती है। जल जन्मजरामरण से निवृत्ति देता है। चंदन से भवताप शांत होते हैं। अक्षय गुणों की प्राप्ति के लिए अक्षत सम्मिलित किये जाते हैं। फूलों से काम-वासना दूर होती है। नैवेद्य क्षुधातृप्ति करता है, दीपक मोह-अंधकार निवारक है। अष्ट कर्म-क्षय के लिए धूपादि सुगंधित पदार्थों का व्यवहार करते हैं तथा फलों से मुक्ति-लाभ माना गया है।

नामों के अनुसार हिन्दुओं

(नामों पर इनका कितना गहरा प्रभाव है

मास	१ प्रतिपदा	२ द्वितीया	३ तृतीया	४ चतुर्थी	५ पंचमी	६ षष्ठी	७ सप्तमी	८ अष्टमी
चैत्र	गौरीव्रत, फाग, तिलक, आरोग्य, विद्याव्रत, नवरात्रि, फूलडोल	बालेंदु, नेत्रव्रत,	गौरी, मनोरथ, आशा विनायक, दोलनोत्सव	मेष सतु-आसं क्रांति, गणेश,	श्री, सौभाग्य	कुमार	मोदन व्रत, नाम, सूर्य	अशोक, भवानी दुर्गा, शीतला
वैसाख			परशुराम जयंती, नर-नारायण, हयग्रीव जयन्ती, अक्षयगौरी,	गणेश			गङ्गा, कमल	शीतला
ज्येष्ठ			पार्वती जयंती, रम्भा	गणेश				शिवपूजा शीतला (बसौरा)
आषाढ़		रथयात्रा		गणेश		स्कन्द	सूर्य	
श्रावण			ठकुराइन जयंती सुकृत, कजलीगौरी	सकट	नाग-पञ्चमी, मातृ पञ्चमी		तुलसी जयन्ती शीतला, कुमारी	दुर्गा, शिव कोटि
भाद्रपद	मौन		हरतालिका वरद	सकट, बहुला, कजली, शिवा,	ऋषि, मित्र, भाई	चन्द्र, हलषष्ठी, चम्पा	अक्षय ललिता	कृष्ण, राधा उमामहेश्वर
आश्विन	अशोक, कलश		ललिता व्रत	गणेश	शान्ति		सरस्वती, महालक्ष्मी	जिउतितया व्रत (जीवित पुत्रिका) दुर्गा अन्नपूर्णा
कार्तिक	अन्नकूट बलि पूजा	गोधन यम, चित्रगुप्त		करक, वैनायकी		सूर्य	अहोई	अशोक, राधा, गोप
मार्गशीर्ष				गणेश		स्कन्द	मित्र,	भैरव
पौष				गणेश				
माघ				सकट	वसन्त	मकर सूर्य संक्राति	अचला, विधान	भीष्म
फाल्गुन				गणेश	कुंभ सूर्य संक्रांति			जानकी जयन्ती

टिप्पणी—मलमास में पुरुषोत्तम व्रत

के कुछ व्रत-पर्वोत्सवादि
इस सारिणी से प्रत्यक्ष हो रहा है)

९ नवमी	१० दशमी	११ एकादशी	१२ द्वादशी	१३ त्रयोदशी	१४ चतुर्दशी	१५ पूर्णिमा	१६ अमावस्या
राम जन्म कल्याणी दर्शन		कामदा	महा-वारुणी, मदन	शिवरात्रि दमनकोत्सव	हाटकेश्वर, केदार दर्शन मदन	सत्यनारायण हनुमानजयंती	वह्निव्रत
चण्डिका, जानकी-जन्म		मोहनी	मधुसूदन	कामदेव	नृसिंह जयन्ती	वैसाखी	
उमा	गङ्गा दशहरा	भीमसेनी		शिवरात्रि			सोमवती
		योगिनी	वामन जयंती	शिवरात्रि	अम्बिका	गुरु पूजा, व्यास पूजा	कोकिला व्रत
		कामदा	दधि	शिवरात्रि		रक्षा बंधन	श्रवण, ऋषि तर्पण
	विजया दशमी अवतार दशमी	जया, पद्मा, झूला	वामन	शिवरात्रि	अनंत	महालय	कुशोत्पादिनी
मातृ, दुर्गा	विजया	इंदिरा	पद्मनाभ	शिवरात्रि	वराह जयंती ढेड़िया	शरद, आकाश द्वीप	पितृविसर्जन
अक्षय	आशा	रंभा प्रबोधनी		धन्वंतरि जयंती धनतेरस शिवरात्रि	नरक बैकुंठ हरिहर पूजन हनुमान जयन्ती	वराह जयती	सोमवती, अन्न कूट, दिवाली, बलिपूजा, वीर-निर्वाण
		मोक्षादि गीता जयन्ती		शिवरात्रि		संक्रान्ति	
		सफला	सुषमा	शिवरात्रि			
		जया		शिवरात्रि			मौनी
		विजया आमलकी		शिवरात्रि		होलिकादहन	

अंध-विश्वास—धर्म के नाम पर अशिक्षित तथा अर्द्धशिक्षित जन-साधारण में अंध-विश्वासमूलक कुछ रूढ़ियो ने भी जड़ जमा रखी है। स्त्रियाँ मुख्यतः बुढ़िया-पुराण के टोना-टोटका आदि जैसे उपचारों में प्रगाढ़ श्रद्धा रखती हैं। मिथ्याप्रतीति के कारण वे इन मूढ़ परम्पराओं को पुत्र के जन्म तथा जीवन के अचूक साधन मानती हैं। पुत्र-लाभ-लिप्सा तथा उसकी दीर्घायु की लालसा से लालायित पुत्र-कामा एवं मृतवत्सा ललनाएँ इन अंध रूढ़ियों को अमोघ राम-रक्षा-कवच ही समझती हैं। अंधविश्वास के इन नामों में अनेक रोचक अंतर्कथाएँ एवं प्रथाएँ अंतर्हित रहती हैं जिनसे अनेक विचित्र लोकाचारों का परिचय मिलता है। जनता के लौकिक जीवन की ये अलौकिक झांकियाँ हैं जिनके दर्शन देश में सर्वत्र ही हो जाते हैं। पश्चिम के घुरऊसिंह में संरक्षक की जो हितैषणामनोवृत्ति दिखलाई देती है वही पूर्व के कतवारू (कूड़ा-कर्कट) लाल, राजस्थान के कजोड़ा (कचरा) मल तथा दक्षिण के कुप्पू (धूल) स्वामी में भी सन्निहित है। यह अंधविश्वास इन नामों में तीन प्रकार से व्यक्त हो रहा है।

क—ओछे लाल, दुर्जनसिंह, घसिया, गूदड़िया, चौलर मल, खुन्नी, जालिमसिंह आदि घृणा-सूचक दुर्नामों से माता-पिता की पुत्र के प्रति अवज्ञा तथा उपेक्षा की मनोवृत्ति प्रकट होती है।

ख—पुत्र को दीर्घजीवी बनाने के लिए उपेक्षा-मूलक प्रथाओं में निम्न अंधरूढ़ियाँ मुख्य हैं।

(१) अलगूराय, फेकूसिंह, लुटई, पड़ेलाल, डालचन्द आदि नामों में अलग करने की मनोवृत्ति पाई जाती है। इससे बच्चा को जच्चा से पृथक् कर भूमि पर रख दिया जाता है।

(२) खचेरू, घसीटा, कढ़ेरा, आदि नामों से खींचने की प्रथा की ओर संकेत है। इसमें सद्योजात शिशु को किसी छितानी (उथली डलिया) में रखकर भूमि पर कुछ दूर खींचकर उसकी आयु बढ़ाई जाती है।

(३) छेदीलाल, नकछेदी, कंछीलाल आदि नामों से छेदने का भाव व्यक्त होता है। जिस करवट से बच्चा धरती पर आता है उसी ओर उसका कान या नथुना छेद दिया जाता है।

(४) तुलाराम, जोखू आदि नाम इस बात के सूचक हैं कि नवजात बालक को कोदो, समा आदि किसी कदन्न से तौला गया है।

(५) फेरूमल, बहोरीलाल, लौटूसिंह आदि नामों में किसी मान्य व्यक्ति या देवता को समर्पित पुत्र को पालनार्थ फेरने या वापस लेने की भावना है।

(६) बदलू राम, पलटू दास आदि नामों से व्यक्त होता है कि दो माताओं ने आपस में एक दूसरे के पुत्र को बदल लिया है। किसी वस्तु से बदलने का भाव भी हो सकता है।

(७) बेचेलाल, बेचन आदि नामों से पता चलता है कि संझी दमड़ी, छदाम, छकौड़ी आदि स्वल्प मूल्य पर बेचा गया है।

(८) मोल लेने की भावना मुलई, बिसाहू, मोलकराम आदि नामों से व्यक्त होती है। जिन वस्तुओं से बेचते या बदलते हैं उन्हीं से मोल भी ले सकते हैं। चवन्नीलाल चार आने में मोल लिया गया है।

(९) मन्नालाल, मन्नन, मानता प्रसाद आदि नामों में किसी नदी, देवयोनि, व्रत पर्व आदि की मनौती मानी गई है।

(१०) किसी देवता या मान्य व्यक्ति को अर्पित किये हुए शिशु को पालनार्थ फिर से भीख के रूप में माँग लिया जाता है। मंगतू, मांगीलाल, माता भीख, आदि नाम इसके उदाहरण हैं। यह प्रथा फेरने की प्रथा के तुल्य ही है।

(११) नवजात शिशु का तुरन्त ही मुडन कर दिया जाता है। मूड़नदेव इसी प्रथा की व्यंजना करता है।

(१२) मृतवत्सा माताएँ कभी-कभी अपने बच्चों को पालनार्थ अपने सम्बन्धियों को दे देती हैं। रहतू, पाली, टुकई, बुआलाल आदि नाम इसी धारणा के हेतु हैं।

(१३) दाई का पुत्रोत्पत्ति के नेग के लिए झगड़ना भी एक शुभ सगुन समझा जाता है। झगडू, जंजाली, टंटू, फसादी, आफतिया आदि ऐसे ही नाम हैं।

(ग) अंध विश्वास के अन्तर्गत कुछ अन्य भ्रांतिपूर्ण उपपत्तियाँ भी पुत्र को चिर-जीवन देने की क्षमता रखनेवाली समझी जाती हैं जिनका सम्बन्ध किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान, व्रत-पर्व, आशीर्वाद, प्रक्रिया (उपचार) आदि के नामों से रहता है।

(१) वस्तु संबंधी उपपत्तियाँ डोरीलाल, झंडासिंह, कोदई, अशर्फीलाल गंडासिंह, छीतरिया आदि नामों से व्यक्त हो रही हैं।

(२) जाहरिया, मदारीलाल, साधो, बैरागी, फकीरा हरसू, आदि नाम पीर फकीर और साधुओं से सम्बन्ध रखते हैं। धुन-धुना जातिगत नाम है जो किसी धुनिया सयाने के उपचार की ओर संकेत करता है।

(३) थानसिंह, दरगाहीलाल, बहराइची आदि नाम देवस्थानों की जारत करने से हुए हैं।

(४) व्रत-पर्व, सम्बन्धी उपपत्तियाँ जिउतिया, जीत आदि सन्तति के हितार्थ व्रत-पर्वों में दिखलाई देती हैं।

(५) अमृतसिंह, चिरंजीलाल, सजीवन, खुमानसिंह, जीवनदास, अमर बहादुर आदि नामों में आशीर्वादात्मक उपपत्ति है। गुरु नानक के आशीर्वाद ने मरदाना को अमर कर दिया।

(६) प्रक्रियाएँ कुछ तान्त्रिक होती हैं, कुछ सामान्य। तांत्रिक अभिचारों में जंतर-मंतर (यंत्र-मंत्र) जादू टोना आदि मुख्य उपचार हैं। इनका सम्बन्ध कुरबानसिंह, मेडू, पारूसिंह, बलिकरनसिंह, डोरीसिंह, टहलू, जंत्रीलाल आदि नामों से रहता है।

अंधविश्वास भी वैष्णव धर्म के सदृश सामान्य जनता में देशव्यापी हो रहा है।

महात्मा—भारतीय प्रकृत्या गुण-ग्राहक होता है उसकी यह गुण-ग्राहकता अथवा वीर पूजा की भावना महात्मा तथा महापुरुषों के बहुसंख्यक नामों से व्यक्त हो रही है। ये महात्मा अपने आत्मसंयम, अगाध पांडित्य, नैतिकबल एवं परोपकारिता के कारण जनता में पूजनीय हो गये हैं। अनेक महात्माओं ने अपने गहन ज्ञान तथा अनुपम अनुभव को उत्कृष्ट ग्रंथों में संचित कर दिया है जो सदैव मनुष्य का पथ-प्रदर्शन करते रहते हैं। इन पुण्यात्माओं की तीन श्रेणियाँ यहाँ पर दृष्टिगोचर हो रही हैं। कुछ अतीत के ऋषि-मुनि हैं जो सद्गुणों के प्रतीक माने जाते हैं। कुछ मत-प्रवर्तक धर्म गुरु हैं जिन्होंने सनातम धर्म के किसी एक अंग अथवा अंश को लेकर या प्रचलित धर्म में ही कुछ सुधार अथवा परिवर्तन कर एक नया रूप दे दिया है। बहुत से अनुयायी अपने धर्म-गुरु को ईश्वर का अंश अथवा अवतार मानते हैं। वर्तमान युग के साधु-संत तथा गुरु तृतीय श्रेणी के महात्मा हैं जिनके सत्संग, प्रवचन-सदुपदेश तथा पुण्य दर्शन से जनता लाभान्वित होती है, इन ऋषि, मुनि, गुरु, साधु संतादि दिव्य पुरुषों के पवित्र नामों को स्मृति रूप से अपनाकर निष्ठावान भक्त अपनी श्रद्धांजलि अर्पण कर रहे प्रतीत होते हैं।

इस निखिल भारतवर्षीय महात्माओं के सत्संग में युग-युग के सिद्ध पुरुषों के दर्शन हो रहे हैं। प्राचीन युग के ऋषि मुनियों में अत्रि, अंगिरा, वशिष्ठ आदि सप्तर्षि, दत्तात्रेय, नारद, शुकदेव

मुख्य हैं। अनसूया तथा गार्गी दो ऋषि-पत्नियाँ भी सम्मिलित हैं। अनेक ऋषि-मुनियों का उल्लेख साहित्य प्रकरण में आगे किया गया है। धर्म-गुरुओं में शंकर, वल्लभ, नानक, रामानन्द, कबीर, दयानन्द, गोरखनाथ के नाम उल्लेखनीय हैं। सन्त समाज में देश के सभी प्रान्तों के प्रमुख साधु एकत्रित हैं। पंजाब के तेग बहादुर, गोविन्दसिंह आदि सिक्खों के गुरु, रामतीर्थ, सन्त निहालसिंह आदि; सिंध के सच्चल स्वामी आदि; राजस्थान की मीराबाई; महाराष्ट्र के तुकाराम, रामदास, ज्ञानदेव, नामदेव आदि दक्षिण के त्यागराय, पुरंदर आदि बगाल के चैतन्यदेव, रामकृष्ण, विवेकानंद, देवेन्द्र नाथ आदि; उत्तर के सूर, तुलसी, हरिदास आदि; इस संघ की शोभा बढ़ा रहे हैं। भक्तों की श्रेणी में भक्तप्रवर नरसी महता, पूरण भगत, सदना कसाई, सेना नाई, धनाजाट, रैदास चमार, नाभा भंगी, पीपा महाराज आदि; सत्संग की महिमा गा रहे हैं। इनमें न कोई जाति या वर्ण भेद है, न ऊँच-नीच की भावना, न कालस्थान की बाधा। सई बाबा (सिंध), जिंदा बाबा (उ० प्र०), मेहरबाबा (महाराष्ट्र), पौहारी बाबा (गाजी पुर), मौनी बाबा आदि अनेक पहुँचे हुए साधु-फकीर भी आसन जमाये हुए हैं।

इन पुण्यात्माओं के अनुकरणीय जीवन का मनुष्य की अंतवृ:त्तियों पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।

"धर्म-ग्रंथ"—दयानंद सरस्वती के आगमन से पूर्व श्रुतियों का स्वाध्याय संस्कृत के कतिपय विद्वानों के गृहों तक ही सीमित रहा है। आर्य-समाज की उत्प्रेरणा से वेदो के प्रति दिन-दिन श्रद्धा भक्ति बढ़ती जा रही है। इसके फलस्वरूप नामों में ओम् शब्द के सदृश वेद शब्द का प्रयोग भी रुचिकर होता जा रहा है। दर्शन, शास्त्र, उपनिषद् आदि गूढ़-ग्रंथों की कथा भी विद्वत्-मंडली में प्रचलित हो रही है। कृष्ण-चरित्र से सम्बन्धित होने के कारण पुराणों में श्रीमद्भागवत की कथा का विशेष प्रसार दिखलाई दे रहा है। वाल्मीकीय रामायण तथा व्यास का जयकाव्य (महाभारत) हिन्दुओं की संस्कृति के दो विशाल स्तंभ हैं। इन ग्रंथ-रत्नों में वैदिक सिद्धांतों एवं नैतिक तथ्यों का निरूपण मर्यादा-पुरुषोत्तम राम तथा लीला-पुरुषोत्तम कृष्ण के पुनीत चरितों द्वारा किया गया है। धर्म का वास्तविक स्वरूप इनके कथानकों से अंकित हो जाता है। हिन्दू समाज के कौटुम्बिक, सामाजिक एवं जातीय जीवनादर्शों के चित्र इनमें सन्निविष्ट है। गोस्वामी तुलसीदासकृत रामचरितमानस (रामायण) का पारायण बहुधा श्रद्धालु भक्त किया करते हैं। उपनिषदों तथा महाभारत का सार-गीता का पाठ आजकल भक्तों का कंठहार हो रहा है। श्रीमद्भगवत गीता में निष्काम कर्म की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया गया है। गीता पृथ्वी पर कर्म, भक्ति तथा ज्ञान की त्रिवेणी प्रवाहित कर रही है। कन्याओं के नामों पर गीता का प्रभाव अधिक दिखलाई देता है। नामों के अनुसार हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थों में वेद, भागवत, रामायण तथा गीता अधिक लोक-प्रिय है।

जिस प्रकार मन की मलिनता दूर करने एवं जीवन की दुरूह-ग्रंथियों को सुलझाने के लिए महात्माओं के सत्संग की महिमा सर्वसाधारण में देखी जाती है उसी प्रकार धर्म-ग्रंथों का स्वाध्याय तथा श्रवण भी निःश्रेयस की प्राप्ति के लिए अत्यंत आवश्यक समझे जाते हैं।

दर्शन

अध्यात्म-विद्या—इन धर्मधुरीण तत्वज्ञानियों की दार्शनिक प्रज्ञा भी अतिशय विकसित प्रतीत होती है। अध्यात्म विद्या के सदृश गहन से गहन विषयों पर इन्होंने चिंतन एवं मनन किया है। कुछ लोग ईश्वर, जीव तथा प्रकृति का पृथक्-पृथक् अस्तित्व मानते हैं, परन्तु कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं जो आत्मा-परमात्मा में भेद नहीं मानते तथा प्रकृति की भी पृथक् सत्ता स्वीकार नहीं करते। उनके विचार से ब्रह्म ही सब कुछ है। वही जीव के नाना रूपों में प्रकट होता है। माया उसकी शक्ति है जो इस व्यक्त विभिन्नत्व का मूल हेतु समझी जाती है। रामानुज, मध्व, वल्लभादि आचार्यों की भी माया के विषय में यही धारणा रही है, परन्तु वे जीव तथा ब्रह्म में अंशांशी सम्बन्ध मानते हैं। इस प्रकार उन्होंने यत्किंचित् परिवर्तन कर विशिष्टाद्वैत, द्वैताद्वैत, पुष्टि-मार्ग आदि अनेक वादों का प्रतिपादन किया है। भारतीय अभिधानों में अद्वैतवादियों के ब्रह्म के तीनों स्वरूपों का दर्शन हो जाता है।

१—निर्गुण निराकार—शुद्ध चैतन्य तथा निष्क्रिय ब्रह्म। २—सगुण निराकार—माया विशिष्ट सृष्टि कर्ता ईश्वर। ३—सगुण साकार—ब्रह्मा, विष्णु, महेश।

ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों सत् हैं। आत्मा तथा परमात्मा चेतन भी हैं। आनन्दमय केवल ब्रह्म ही कहा गया है। ईश्वर की अन्य विशेषताएँ हैं—निराकारता, सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता, सर्व-शक्तिमत्ता आदि। सृष्टि-सृजन तथा प्राणियों का पालन-पोषण उसके दो मुख्य कार्य हैं। ईश्वर एक है, जीवों का स्वामी तथा त्रिगुणात्मक प्रकृति का नियामक है। शंकर ने मायाविष्ट ब्रह्म को ईश्वर की संज्ञा दी है।

अजरामर आत्मा के विषय में इन लोगों की यह धारणा है कि वह जीवन-मरण के बंधन में पड़ती है और पुनः मुक्ति की कामना करती है। जीव कर्म फल भोगने के लिए इस संसार में जन्म लेता है, वह हंस के सदृश गतिशील, उज्ज्वल तथा विवेकपूर्ण है। सुख-दुःख, राग-द्वेष, इच्छा-प्रयत्न जीव के लक्षण हैं। वेदांती आत्मा तथा जीव में किंचित् भेद मानते हैं। जब आत्मा जन्ममरण के बन्धन में पड़ जाती है तब उसकी जीव संज्ञा होती है।

सत् रज-तम त्रिगुणात्मक प्रकृति से लोक-लोकांतरों की रचना मानी गई है। कोई तीन लोक मानता है, कोई चौदह। गतिशील होने से इस सृष्टि का नाम जगत् है। अव्यक्त प्रकृति को ऋत कहा गया है। काया को वे पंचभूत-संभूत मानते हैं। मोक्षानंद के लिए कल्पवृक्ष, अमृतादि अनुपम पदार्थों से परिपूर्ण स्वर्ग की कल्पना भी की गई है।

भारतीय जीवन में अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी दोनों प्रकार की दार्शनिक दृष्टियों का समन्वय दृष्टिगोचर हो रहा है। अंतर्दृष्टि से वे 'अणोरणीयान्' अंतरात्मा के निरीक्षण-परीक्षण में संलग्न रहते हैं एवं बहिर्दृष्टि से 'महतोमहीयान्' परमात्मा के विराट रूप को समझने तथा उसकी अनंत शक्तियों का अनुभव करने का प्रयत्न करते हैं।

इन मनीषियों के चिरचिंतन की भूमिका विशेषतः त्रितापों से मुक्त हो परमानन्द की प्राप्ति की ओर दिखलाई देती है। एतदर्थ उनकी साधना-वृत्ति—(१) हेय अर्थात् दुःख का स्वरूप क्या है। (२) हेय-हेतु अर्थात् दुःख क्यों आते हैं। (३) हान अर्थात् दुःख के अभाव का मुख्य स्वरूप मोक्ष

क्या वस्तु है तथा (४) हानोपाय अथवा दुःख निवृत्ति के कौन-कौन से साधन हैं—इस ग्रंथि-चतुष्टय के निर्ग्रंथन में संलग्न रहती प्रतीत होती है। ब्रह्मानंद को ही ये परमानंद समझते हैं जो सालोक्य, सामीप्य, सायुज्य तथा सारूप्य मुक्ति-लाभ के रूप में योग के अष्टांगों द्वारा मुमुक्षु को प्राप्त होता है।

इन तत्वदर्शियों ने जन्म-मृत्यु, कर्म-फल आदि अन्य गूढ़तम समस्याओं पर भी विचार विमर्श किया है।

मनोविज्ञान—दर्शन की द्वितीय धारा मनोविज्ञान के रूप में दृष्टिगोचर होती है। प्रस्तुत संकलन में मन तथा उसकी अनेक प्रक्रियाओं एव आवेगों की चर्चा मिलती है। उन्होंने अन्तःकरण के मन, चित्त, बुद्धि तथा अहङ्कार—ये चार विभाजन किये हैं। रूप, शब्द, रस, गंध, स्पर्श—इन पंचतन्मात्राओं का उल्लेख भी इन नामों में पाया जाता है। अष्टांगयोग के अनेक अंग इनमें सन्निविष्ट हैं। यम-नियम के द्वारा मन का संयम कर कतिपय भारतीयों ने ध्यानयोग द्वारा परब्रह्म का अनुभव भी कर लिया प्रतीत होता है। अनेक सुन्दर मनोभावों के समन्वय से नाना रसों की निर्मल निर्झरिणी अविरल रूप से प्रवाहित हो रही है। जनता के सर्वप्रिय मनोवेगों में आनन्द तथा प्रेम अपने अनेक छाया-तपों में दिखलाई दे रहे हैं। मानव-हृदय की तीन प्रबल भावनाएँ—इच्छा-शक्ति, ज्ञान-पिपासा एवं शांति-कामना त्रिवेणी के सदृश मन को प्रशस्त, पवित्र एवं प्रफुल्ल करती हैं।

नीतिः—दैवी सम्पदा से परिपूर्ण भारतीय जीवन संसार के लिए एक उच्च आदर्श प्रस्तुत कर रहा है। इससे उनके नैतिक तथा आत्मिक बल का बहुत कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। उनके चरित्र में दो प्रकार के सद्गुण परिलक्षित होते हैं। धर्म के मूलतत्व—धृति, क्षमा, दम, सत्य, दया, दान, संतोष, तप व्रतादि सदाचार सम्बन्धी नैतिक गुण हैं तथा नागरिक गुणों में विनय, हित, शील, त्याग, न्याय, मेल आदि मुख्य हैं। इन सात्विक गुणों से उनके अनुपम शिष्टाचार, उदात्त चरित्र एवं आदर्श जीवन की अभिव्यक्ति होती है। दान-दया-सत्यादि अनेक सात्विक गुण आर्यों के संयमशील व्यक्तित्व के कारण मूर्तिमंत हो गये हैं। इसके अनेक निदर्शन इन नामों में दिखलाई दे रहे हैं। इन आत्मयाजियों के लोक-प्रेम तथा विश्वबंधुत्व की उत्कट भावना ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'स्वदेशो भुवनत्रयम्' आदि सूक्तियों को सार्थक बना दिया है।

इतना ही नहीं, उनकी आत्मबन्धुत्व-भावना 'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' तथा 'आत्मवत् सर्व-भूतेषु की परिधि को पारकर—वसुधा और त्रिभुवन से ऊपर उठकर अध्यात्म के उच्चतम शिखर सोऽहम् तक पहुँच गई है। चार प्रकार की मुक्ति ही उनके लिए सर्वस्व नहीं—तद्वत्, तद्रूप, तदश वा तादात्म्य ही उनकी चरम सीमा नही। सोऽहम् सोऽहम्-सोऽहम्—वह मैं हूँ, वह मैं हूँ, प्राणिमात्र मैं ही हूँ। इस प्रकार 'स्व' तथा 'पर' का अंतर विलयन होने पर आत्मीयता अपना व्यापक रूप धारण कर लेती है। अंततोगत्वा, आत्मतत्व ही परमात्मतत्व है—इस पूर्ण आत्मबोध की अवस्था में 'अहं-ब्रह्मास्मि' परमात्मा भी मैं ही हूँ, वह अपने सत्य स्वरूप को पहचान लेता है। यही अभिन्नता वेदान्तियों का आत्मविज्ञान है। यह अस्मिता (अहंता) नहीं, अहं के विराट रूप की भावना है—परमतत्व से आत्मीयता स्थापित करना है जिसे मनोवैज्ञानिकों ने भाव-तादात्म्य (तदनुभूति) कहा है।

इन नैतिक निधियों के अतिरिक्त इनकी सौंदर्य-भावना भी अत्यन्त उत्कृष्ट एवं उज्ज्वल दिखलाई देती है। सौंदर्य के साधन नेत्रों को विशेष महत्व दिया गया है। इन अभिधानों में न केवल शारीरिक सुषमा का ही उल्लेख है अपितु प्रकृति के नाना रूप-सौंदर्यों की ओर भी ध्यान आकर्षित किया गया है। नक्षत्रों में रंजनकारी चंद्रकलाओं, खनिज पदार्थों में कांत-प्रभ कांचन एवं रंगरजित रत्नों; पक्षियों में बहुवर्णी शुकों एवं पुष्पों में कमनीय कमलों के प्रति उनका अतिशय अनुराग प्रतीत होता है।

सामाजिक व्यवस्था, आर्थिक स्थिति तथा भौतिक जीवन

वर्ण-व्यवस्था—जनता के सामाजिक जीवन का चित्रण इन नामों से बहुत कुछ मिलता है। हिंदू समाज में अनेक संस्थाएँ हैं जो उसके संगठन को सुदृढ़ बनाती हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र इन चार वर्णों का कतिपय नामों में उल्लेख पाया जाता है। कुछ मनुष्यों में प्राचीन पद्धति के जाति सूचक उपनाम शर्मा, वर्मा, गुप्त तथा दास अपने नामों के अंत में व्यवहृत होते देखे जाते हैं। ब्राह्मण का कर्म था शर्म अर्थात् सुख शांति स्थापन करना, क्षत्रिय का वर्म (कवच) धारण कर रक्षा करना, वैश्य का धन संचय एवं गोपन करना, तथा शूद्र का सेवा-शुश्रूषा करना। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य द्विज कहलाते हैं। चारों वर्णों की अपनी-अपनी अनेक उपजातियों का उल्लेख उनके गोत्र के नामों में मिलता है। कुछ जातियाँ देश-भेद के कारण हो गई हैं, जैसे—बुंदेला, बंगाली, माथुर आदि। व्यवसाय के आधार पर भी कुछ जातियाँ बन गई प्रतीत होती हैं। तेली, ग्वाला, थवई, माली, मोदी, लखरु, लोहार आदि व्यवसायी जातियाँ हैं। इन वर्णों के अंतर्गत सूर्यवंश, चंद्रवंश, चित्रगुप्त वंश, हरि (यदु) वंश, रघुवंशादि अनेक प्रमुख वंश सम्मिलित हैं। डोम अस्पृश्य तथा भील वन्य जातियाँ हैं। अग्रज, द्विजराज, भूदेव आदि नाम विप्रों के लिए प्रयुक्त हुए हैं। इससे अन्य वर्णों पर उनका प्रभुत्व प्रकट होता है। फिरंगी, अंग्रेज, मुगल आदि कुछ विदेशी जातियों का उल्लेख भी पाया जाता है।

आश्रम—दूसरी उल्लेखनीय संस्था है। चातुर्वर्ण्य के सदृश मानव जीवन को भी ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यस्थ—इन चार अंगों में विभाजित किया गया है। विद्याध्ययन तथा शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक शक्ति को सुदृढ़ करने के लिए ब्रह्मचर्य, संसार के सुखभोगने तथा परोपकार के लिए गृहस्थ; एकांत वन में जाकर मनन एवं साधना करने के लिए वानप्रस्थ तथा जग से विरक्त हो ईश्वर-आराधना और लोक-कल्याण करने के लिए संन्यास आश्रम माने गये हैं। बटु, ब्रह्मचारी शब्द प्रथमाश्रम के; दूल्हा, वरना, शादी, स्वयंवर गृहस्थ के; यति, मुनि वानप्रस्थ के; साधु, स्वामी आदि संन्यास आश्रम के प्रतिनिधि शब्द हैं।

यज्ञ-संस्कार—यज्ञ संबंधी अनेक नाम इस बात की सूचना देते हैं कि इन लोगों में यज्ञ-होम के प्रति बहुत आस्था रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि इनका कोई भी शुभ कार्य तथा संस्कार यज्ञ के बिना परिपूर्ण नहीं समझा जाता। पुत्रोत्पत्ति के लिए भी यज्ञ-याग एक उत्तम साधन माना जाता रहा है। विश्वजित यज्ञ का उल्लेख भी मिलता है। प्रयाग का नाम ही यज्ञों की साक्षी दे रहा है। कर्ण वेध, नामकरण आदि अनेक संस्कार इनके जीवन के अंग बन गये हैं।

पर्वोत्सव—जनता में अनेक पर्व तथा उत्सव मनाने की प्रवृत्ति दिखलाई देती है। चार वर्णों के चार प्रसिद्ध त्योहार ये हैं—ब्राह्मणों की श्रावणी, क्षत्रियों की विजयादशमी, वैश्यों की दीपावली तथा शूद्रों की होली। देश में सर्वत्र ही अनेक छोटे बड़े मेले लगते हैं। हरिहर क्षेत्र का मेला संसार के प्रमुख मेलों में गिना जाता है। हरिद्वार, नासिक, उज्जैन तथा प्रयाग—इन चार स्थानों पर कुंभ मेला लगता है। प्रयाग का माघ मेला प्रसिद्ध है। बटेश्वरादि अन्य मेले भी अपना महत्व रखते हैं। ये मेले समाज-संगठन, विचार-विनमय, धर्मोपदेश तथा व्यापारादि के साधन समझे जाते हैं। कुछ महापुरुषों की जयंतियाँ भी मनाई जाती हैं। धार्मिक पर्वों का उल्लेख धर्म-प्रवृत्ति में पहले हो चुका है।

शिष्टाचार—भारतीय शिष्टाचार अत्यंत उच्चकोटि का दृष्टिगोचर होता है। पारस्परिक सम्बोधन के लिए श्रीमन्, भगवन्, महाशय, महोदय, लाला, बाबू, मुंशी, साहब, हजूर आदि अनेक

शिष्ट प्रयोग व्यवहार में लाये जाते हैं। स्त्रियाँ अपने पतियों को प्राण-जीवन, प्राणनाथ, प्रियतम, हृदय नंदन, हृदयेश्वर आदि सरस शब्दों से सम्बोधित करती हैं। बालकों को मुन्ना, बच्चा, कुंवर, बेटा, लल्ला आदि प्रिय शब्दों से पुकारते हैं। समवयस्कों को मित्र, सुहृद, भाई, बंधु आदि स्नेह-स्निग्ध शब्दों से अभिहित करते हैं। राजा के लिए धर्मावतार, महाराज, देवादि विशिष्ट शब्दों का प्रयोग किया जाता है। अनेक प्रकार के शिष्ट सम्बोधनों से इनके सौजन्य का बोध होता है।

अभिवादन तथा आशीर्वाद—अभिवादन तथा आशीर्वाद के लिए इनके यहाँ अनेक प्रकार के ललित, श्लील, शुभ एवं प्रिय प्रयोग पाये जाते हैं। विशेषतः दिव्याभिवादन ही अधिक प्रचलित है जिसमें प्रायः प्रत्येक सम्प्रदाय अपने-अपने इष्टदेव का नाम लेता है। कभी-कभी जय, नमः तथा हरे शब्द भी अपने इष्टदेव के आदि में संयुक्त कर देते हैं—जैसे—जयराम, नमो नारायण, हरे कृष्ण आदि। राम को द्वित्व करके भी यह अभिवादन बना लिया जाता है। जय-हिन्द देशभक्ति सूचक अभिवादन है। जुहार एक विशेष प्रकार का अभिवादन है जो क्षत्रियों, जैनियो तथा कुछ निम्नस्तर की जातियों में प्रचलित है। वैनायिकी एवं आशीर्वादात्मक अभिवादनों का प्रयोग भी यत्र-तत्र देखा जाता है। इन अभिवादनों से धर्म, विनय एवं मंगल-भावना व्यक्त होती है।

अभिवादन के सदृश आशीर्वाद भी आर्यों में शिष्टाचार का एक अंग माना गया है। सुख, सम्पत्ति, सौभाग्य, संतति, स्वास्थ्यादि की प्राप्ति की मङ्गलमयी कामना ही इसके मूल में दिखलाई देती है। आशीर्वाद नामों में इतना व्यापक है कि चतुष्फल, एषणा, अभ्युदय तथा निःश्रेयस सब कुछ इसके अंतर्गत आ गया है। आशीर्वादी लाल, आयुष्मान, खुमान सिंह, चिरंजीलाल आदि अनेक नाम इसके ही फल-स्वरूप प्रतीत होते हैं। गुण, उपाधि तथा फलयोग के नामों में भी आशीर्वाद का ही आभास दृष्टिगोचर होता है।

सामाजिकता के ये सुन्दर छींटे (शिष्ट प्रयोग) भारतीय सभ्यता की मुखश्री को कैसी दिव्यता दे रहे हैं!

प्रथाएँ—इन लोगों में स्वयंवर, सती, जौहरादि कुछ विलक्षण प्रथाएँ भी प्रचलित हैं। स्वयंवर में कन्या वर को स्वयंवरण करती है, कुछ कुलीन गृहों की महिलाएँ कभी-कभी पति के शव के साथ चिता में जल कर सती हो जाती हैं। शत्रु से पराजित होने पर वीर राजपूत लड़ते-लड़ते मर जाते हैं और वीरांगनाएँ अपने सतीत्व की रक्षा के लिए अग्नि में प्राणाहुति दे देती हैं। यही जौहर व्रत है।

शिक्षा-दीक्षा—ज्ञानेन्द्र, विद्यासागर, त्रिवेदी, आचार्य, कवींद्र, वेदरत्न आदि शिक्षा संबंधी अनेक उपाधियों से यह विदित होता है कि भारतीयों में विद्यानुराग अत्यन्त पराकाष्ठा को पहुँच चुका है। विद्यार्थी जीवन में वे ज्ञानार्जन करते हैं। उनका ज्ञान किसी एक ही दिशा में सीमित न होकर, बहुमुखी प्रतिभा का द्योतक हो गया है। उनका वाग्वैदग्ध्य, वक्रोक्ति-व्यञ्जना, हास-परिहास, प्रत्युत्पन्नमतित्व आदि कौशल उनके व्यंग्यों से परिलक्षित होते हैं। लिखने में वे कलम का प्रयोग करते हैं तथा अपने दीर्घ अनुभव एवं विविध ज्ञान को पुस्तकों में सञ्चित कर सुरक्षित रखते हैं।

समाज-सेवा—दीनबंधु, लोकमित्र, दयासागर, दानबहादुर, कुलभूषण, देश-दीपकादि अनेक उपाधियाँ इन लोगों की समाज-सेवा का स्मरण दिला रही हैं। इनकी दृष्टि में नर-सेवा तथा नारायण-पूजा में कोई विशेष अंतर नहीं है।

काल-विभाजन—आर्यों ने कल्प को युगों में और युग को संवत्सरों में विभाजित किया है। प्रत्येक वर्ष में चैत्र, बैसाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन (क्वार), कार्तिक, मार्गशीर्ष (अगहन), पौष, माघ, फाल्गुन नाम के बारह मास होते हैं। और दो-दो मास की एक ऋतु मानी

गई है। सोम, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, शनिवार और इतवार का एक सप्ताह मानते हैं। मास को शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष में और वार को दिन तथा रात्रि में विभक्त किया गया है। दिक्काल-ज्ञान उनके आह्निक जीवन का सहायक रहा है।

आजीविका—मनुष्यों की जीविकावृत्ति के ६ मुख्य आधार दिखलाई देते हैं। (१) असि-जीवी वे व्यक्ति हैं जो अस्त्र-शस्त्रों के द्वारा अपना जीवन निर्वाह करते हैं। इसके अंतर्गत सेना तथा पुलिस के कर्मचारी सम्मिलित किये जा सकते हैं। (२) मसिजीवी को बुद्धिजीवी भी कह सकते हैं। इस वर्ग में लेखक, वकील, वैद्य, अध्यापक आदि रखे जा सकते हैं। (३) कृषि-जीवी खेती का काम करते हैं। (४) पण्यजीवी अर्थात् व्यवसायी वे हैं जो वाणिज्य-व्यापार में लगे रहते हैं। (५) उपयोगी एवं ललित कला का काम करने वाले शिल्पजीवी कहलाते हैं। (६) श्रमजीवी में वह भृत्य-वर्ग सम्मिलित है जो कठोर परिश्रम कर अपना तथा अपने परिवार का पालन पोषण करता है।

मनोरंजन—मनुष्यों के मनोविनोद के साधन भी प्रचुर मात्रा में दिखलाई देते हैं। छोटे-छोटे बच्चे नाना प्रकार के खेल कूद तथा खिलौनों में, नवयुवक कुश्ती, फुटबाल आदि में एवं वृद्ध ईश्वर भजन, धर्म ग्रंथ-पारायण में रुचि रखते हैं। लड़कियाँ गुड़ियों से खेलती हैं। कुछ व्यक्ति जल, थल, तथा पुलिन पर विहार करते हैं। कुछ तोता आदि पक्षियों को पालते हैं। कुछ की अभिरुचि गाने-बजाने की ओर है और कुछ प्रकृति-चित्रण के अनुकरण पर चित्रकारी करते हैं। साहित्य चर्चा, संगीतोल्लास, कला-कौशल, कथा-वार्ता, आयुध-अभ्यास, क्रीडा-कौतुक, वृक्षारोपण, हास-परिहास आदि नाना प्रकार के मनोरंजनो से अवकाश के समय ये लोग अपना दिल बहलाते होंगे।

आर्थिक स्थिति

सम्पत्ति संबंधी नामों का बाहुल्य, सुवर्ण के पर्यायों की प्रचुरता, अनेक प्रकार की अमूल्य मणियों का प्रयोग, विविध भाँति के सिक्कों का प्रचलन, आभूषणों का नानात्व तथा भोज्य एवं भोग्य पदार्थों की बहुरूपता से देश की आर्थिक दशा अतिशय समुन्नत दृष्टिगोचर हो रही है। विविध अन्नों के अतिरिक्त पृथ्वी से भाँति-भाँति की धातुएँ तथा अन्य उपयोगी खनिज पदार्थ और समुद्र से मोती आदि मिल जाते हैं।

विनिमय के साधन—कुदईसिंह, रामकटोरी, अशर्फीलाल आदि नामों से पता चलता है कि जनता में तीन प्रकार के विनिमय-साधन प्रचलित रहे हैं, आदान-प्रदान या व्यापार के लिए अन्न एक सुलभ साधन है। आवश्यकतानुसार कभी-कभी द्रव्यों का भी एक दूसरे से परिवर्तन कर लेते हैं। परन्तु मुद्राएँ विनिमय का सबसे उत्तम साधन प्रतीत होती हैं। छोटी से छोटी मुद्रा से लेकर बड़ी से बड़ी मुद्रा तक का उल्लेख यहाँ पर मिलता है। कौड़ी से लेकर सोने की अशर्फी तक देश में प्रचलित दिखलाई देती है। समुद्र की कौड़ियाँ; ताँबे का छदाम, दमड़ी, अद्धा तथा पैसा; निकल या गिलट की इकन्नी आदि; चाँदी के चवन्नी-रुपये आदि एवं स्वर्ण की मुहर, अशर्फी तथा गिन्नी का प्रचलन भारतवर्ष में रहा है। आर्थिक दृष्टि से व्यापार के लिए इन मुद्राओं का विशेष महत्व बतलाया गया है। ये कला-कौशल की समृद्धि का आभास दे रहीं हैं।

पशु-पालन—मानव-प्रवृत्ति पशु-पक्षी पालन की ओर भी प्रतीत होती है। गाय, बैल, घोड़ा, हाथी चल सम्पत्ति समझे जाते हैं। अनेक वन्य पशु पालतू बना लिये गये हैं। कृषि के लिए बैल; सवारी के लिए हाथी-घोड़े; चौकीदारी के लिए कुत्ते पालते हैं। गाय की मान्यता माता के तुल्य मानी जाती है। दुग्ध, दधि, घृतादि के कारण उसे कामधेनु कहा गया है। राजा महाराजाओं के यहाँ सिंहादि हिंसक जंतु पाले जाते हैं। मृगादि अन्य जंगली जीव भी नित्य सम्पर्क के कारण विशेष

परिचित हो गये हैं। रसिकजन तोता, मैना, मोर, हंस आदि सुन्दर पक्षी पालते हैं। तीतरों के युद्ध से ये लोग अपना मनोविनोद करते हैं। आत्माराम (तोता) वस्तुतः आत्माराम ही है जो अपने रूप रंग तथा मधुर बोली के कारण अत्यन्त प्रिय हो गया है। अनुकरण-प्रिय होने से भक्तजन उसे राम राम का उच्चरण सिखलाते हैं। शुकों की लालमन, टुइयाँ, हीरामन आदि अनेक जातियों का उल्लेख मिलता है। अनेक पर्यायों तथा तत्सम्बन्धी संख्या-बाहुल्य से उसकी जन-प्रियता व्यंजित होती है।

भौतिक जीवन

भोज्य पदार्थ—भारतीय भौतिक जीवन विचित्रताओं से परिपूर्ण प्रतीत होता है। जहाँ एक ओर सरलता का सूचक है वहाँ दूसरी ओर भोग-विलास की मात्रा भी कम नहीं दिखलाई देती। नाना प्रकार के मिष्ठान्न, पक्वान्न तथा फल-मेवे उनके व्यंजनों में सम्मिलित हैं। आत्मा के लिये आनन्द रस एवं मन के लिए नव रस हैं, तो रसना के लिए षड् रस विद्यमान हैं। मिठाइयों में लड्डू, पेड़ा, इमरती, खुर्चन, बरफी, घेवर, चमचम, खुरमा, आदि विशेष प्रिय दिखलाई देते हैं। उनके स्वादिष्ठ भोजन में सिमई, लुचई, मठरी, खीर, पकौड़ी, पूरी-कचौड़ी आदि का समावेश भी रहता है। मक्खन-मिश्री एवं दूध-दही में उनकी विशेष रुचि पाई जाती है। फलों में अंगूर, अनार, आम, केला, कैथा, खिरनी, खीरा, जामुन, संतरा, नीबू, नारंगी, शरीफा और अमरूद मुख्य हैं। बादाम, मुनक्का, चिरोंजी आदि विविध प्रकार की मेवा सेवन करते हैं। गुलाब के फूलों से औषधि रूप एक स्वादिष्ठ अवलेह गुलकंद बनाते हैं। वे सुगंधित तथा मूल्यवान तीन ककार (कपूर, केशर, कस्तूरी) का व्यवहार भी करते हैं। मिर्चादि मसाले तथा सुगंधित तेल फुलेल का प्रयोग भी उनमें देखा जाता है। चंदन की शीतलता एवं सुगंध से वे सम्यक् परिचित प्रतीत होते हैं।

परिधान—रेशमी, ऊनी और सूती तीनों प्रकार के परिधानों का प्रयोग हिंदुओं में पाया जाता है। उद्भिज्ज से सूत, पशुओं से ऊन तथा जंतु-जगत से रेशम उत्पन्न करते हैं। धनिकों के गृहों में रेशम, मखमल, अंडी, तनसुख आदि महार्घ वस्त्र धारण किये जाते रहे होंगे। साधारण लोगों में खासा, टूल आदि का व्यवहार दिखलाई देता है।

आभूषण—मनुष्यों की सबसे अधिक विलास-प्रियता उनके अलंकारों से प्रदर्शित होती है। वे न केवल अपने इष्टदेव को ही नाना भूषणों से विभूषित करते हैं, अपितु स्वयं भी आपादमस्तक स्वर्ण-रजताभूषण धारण करते हैं। पुरुष प्रायः मुकुट, कडा तथा अंगूठी पहनते हैं। कंठा और बालियाँ छोटे बच्चों के अलङ्कार हैं। स्त्रियों की गहनो से बड़ी ममता प्रदर्शित हो रही है। उनका कोई अङ्ग अनलंकृत नहीं दिखलाई देता। इन आभूषणो को धारक अङ्गों के आधार पर तीन श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं:—

(१) कटि तथा अधोभाग के आभूषण—कटि में कर्धनी, पैरों में नूपुर (बिछिया), झांझन मुख्य हैं। (२) कटि तथा कंठ के मध्य भाग के आभूषणों में भुजाओं में अंगद, अंगूठा में आरसी, अंगुलियों के छल्ले, मणिबंध की पहुँची और चूड़ियाँ आदि तथा कंठ के हार, माला, हमेल आदि मुख्य हैं। (३) नाक में नथ और बुलाक, कानो में बाली और बुंदे, माथे पर बेंदी, तिलक और सिर में शीशफूल कंठ के ऊर्ध्व भाग के आभूषण हैं। रानी, महारानी, सेठानी आदि सम्पन्न महिलाएँ नवरत्न जटित नौलखाहार, बहुमूल्य मालाएँ, हीरे की अँगूठी एवं स्वर्णकंकण धारण करती हैं। आभूषणों में बिछिया, बेंदी और चूड़ियाँ सुहाग (सौभाग्य) के चिह्न समझे जाते हैं।

आयुध—समर सम्बन्धी अनेक उपाधियाँ मनुष्यों की वीरता, साहस, पराक्रम तथा शौर्य की सूचना दे रही हैं। खड्ग, करवाल, त्रिशूल, धनुष आदि भाँति-भाँति के अस्त्र-शस्त्र संचालन में वे अत्यन्त सिद्धहस्त प्रतीत होते हैं। दूल्हा तथा दलश्रृंगार दोनों ही उनकी सरस कल्पना के आधार प्रतीत होते हैं। साहित्य की अमर कृतियाँ उनकी लेखनी का चमत्कार है तो विजय-स्तम्भ उनके आयुध-कौशल के शाश्वत प्रतिमान हैं। ढाल, तलवार आदि नानायुधों से सुसज्जित हो भेरी, मारु, ढोलादि रणवाद्य बजाते हुए वीर सैनिक युद्ध-स्थल को प्रस्थान करते रहे होंगे। चक्रवर्ती सम्राटों की दिग्विजय का उल्लेख भी मिलता है।

सामाजिक-आन्दोलन—समय-समय पर समाज में अनेक आन्दोलन भी हुए हैं। इनमें गो-रक्षा, हरिजनोद्धार तथा शुद्धि मुख्य हैं। दूध, घी, दही आदि अमृतोपम खाद्य पदार्थ तथा कृषि के लिए बैल देने के कारण हिन्दुओं में गाय की मान्यता विशेष दिखलाई देती है। दूसरा आंदोलन अछूतोद्धार का है जिसका मुख्य उद्देश्य अस्पृश्य जातियों को समानाधिकार दिलाना है। दयानंद सरस्वती तथा महात्मागांधी के सदुद्योग से उनमें बहुत कुछ सुधार हो गये हैं और अब वे आर्य, महाशय, हरिजन आदि भद्र नामों से पुकारे जाते हैं। धर्मेतर व्यक्ति को शुद्ध कर हिन्दू धर्म में सम्मिलित कर लेना शुद्धि आंदोलन की विशेषता है।

राजनीतिक प्रगति

देश-दशा तथा विदेशी शासन—ऐसा प्रतीत होता है कि देश में कोई चन्द्रगुप्त सा प्रतापी सम्राट् एवं चाणक्य सा नीति कुशल मंत्री न रहने के कारण अनेक छोटे-छोटे राज्यों की स्थापना हो गई थी। कदाचित् उनकी पारस्परिक फूट के फलस्वरूप विदेशी शासकों को यहाँ अपना अधिकार तथा आधिपत्य जमाने में सफलता मिली है। इसी दासता के अनेक लक्षण प्रस्तुत नामों में पाये जाते हैं। (१) अधिकांश अधिकारीवर्ग के लिए विदेशी भाषा के शब्द प्रयुक्त हुए हैं। विदेशी भाषा का आधिपत्य विदेशी राज्य में ही सम्भव हो सकता है। (२) विदेशी शासन का अंत करने तथा देश को स्वाधीन बनाने के लिए प्रयत्न-शील अनेक देश-भक्तों का प्रादुर्भाव प्रायः ऐसे ही समय में हुआ करता है। स्वराज्य प्राप्ति के लिए राजनीतिक क्रांतियों का ध्येय भी देश को विदेशी सत्ता तथा दासता से मुक्त करना ही होता है। इन नामों के अध्ययन से उपर्युक्त तीनो बातों का सम्यक् परिचय मिलता है। अधिकांश राजकर्मचारियों के पदों के नाम उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी आदि विदेशी भाषा के शब्दों से बने हुए हैं।। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उस समय भारत में विदेशी शासन का प्रबल प्रभाव रहा है। फौजदार, मुत्सद्दी, दीवान, मीरमुंशी आदि पद मुसलिम आधिपत्य के अवशिष्ट चिह्न हैं। अंगरेजी राज्य का प्रभुत्व कलक्टर, कर्नल, सुपरिटेंडेंट, इंस्पेक्टर आदि नामों से प्रकट हो रहा है। मुसलमानों ने फारसी द्वारा तथा अंगरेजों ने अंगरेजी द्वारा अपनी-अपनी सस्कृतियों को प्रसारित करने की चेष्टा की। कचहरी के वकील, मुखतार, बालिस्टर, जज, मुसिफ आदि नाम भी अतीत के दासत्व की स्मृतियाँ हैं। विदेशी शासन के साथ-साथ देश में उनकी चिकित्सा पद्धतियों ने भी प्रवेश किया। वैद्यों के अतिरिक्त यूनानी हकीमों और अंगरेजी डाक्टरों ने अपने-अपने उपचार आरम्भ किये। इसकी सत्यता नामों से स्पष्ट हो रही है। विजेता मुसलमान इस देश में आकर बस गये थे। इस लिए नवाब, सुलतान, शाह आदि राजपद भी जनता में अपनाये गये। इसके विपरीत दूरस्थ अंगरेजी सम्राट् तथा उनके अधीनस्थ ड्यूक आदि भारतीयों के लिए अपरिचित ही रहे। इसलिए उनके नामों तथा पदों का इस नामावली में सर्वथा अभाव है।

स्वाधीनता-संग्राम—विदेशी दासता से मुक्त करने के लिए अनेक देश भक्तों का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने समय-समय पर देश को स्वतंत्र करने का प्रयास किया। इस प्रयत्न के तीन मुख्य काल दिखलाई दे रहे हैं। (१) मुगलों के शासनकाल में प्रताप, छत्रसाल, शिवाजी आदि राजाओं ने व्यक्तिगत रूप से हिंदुओं की परतंत्रता को हटाने का भरसक प्रयत्न किया। (२) सन् १८५७ में अंगरेजों को देश से निकालने के लिए देशी राजाओं और प्रजा की ओर से एक सम्मिलित विद्रोह उठ खड़ा हुआ जो सत्तावन के गदर के नाम से इतिहास में विख्यात हुआ। इसके प्रधानपात्र नाना साहब, बहादुरशाह, लक्ष्मीबाई, तांतिया टोपी (रामचंद्र पांडुरङ्ग तात्या टोपे) आदि अनेक वीर देश भक्तों के नामों का यहाँ उल्लेख पाया जाता है।

तीसरा उद्योग कांग्रेस तथा गांधी का है जो स्वदेश, स्वदेशी, स्वतंत्रता तथा स्वराज्यअभिमुखी हो चारों दिशाओं में स्फुरित हुआ। दयानंदआदि अनेक धार्मिक सुधारकों के आंदोलनों के कारण देश जाग उठा था, मनुष्यों की मनोवृत्तियों में परिवर्तन होने लगा था। अनुकूल वातावरण पाकर निष्पन्न क्षेत्र में कांग्रेस ने कार्य आरम्भ किया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और स्वदेशी का प्रचार होने लगा। समस्त देश के बड़े-बड़े नेताओं ने इस स्वदेश-यज्ञ में सहयोग प्रदान किया जिनमें बाल गंगाधर तिलक, लाजपत राय तथा विपिनचन्द्र पाल मुख्य हैं जो बाल, लाल, पाल के नाम से प्रसिद्ध हुए।

स्वाधीनता की लहर को रोकने के लिए अंगरेजी सरकार द्वारा प्रसारित विरोधी आंदोलनों का सूत्र-पात अमन आदि नामों में दिखलाई दे रहा है। रासबिहारी घोष, खुदीराम बोस, भगतसिंह, चन्द्र-शेखर आजाद आदि अनेक हुतात्माओं ने स्वतंत्रता की वेदी पर अपने प्राणो की आहुतियाँ दीं। गांधी जी के नेतृत्व में राष्ट्र में एक नवीन शक्ति का संचार हुआ। "नौअगस्त" नाम सन् ४२ की एक चिनगारी है जो देशव्यापी पराधीनता को दग्ध करने में समर्थ हुई। यह नाम ६ अगस्त १६४२ की भीषण क्रांति का स्मारक है। सुभाष का प्यारा 'जयहिन्द" स्वतन्त्रता-संग्राम-अभिनय के अंतिम दृश्य का जवनिकापात है। यह नाम युगपद् कई भावनाओं की अभिव्यंजना करता है— भारत की विजय, विदेशी सत्ता को विदाई का अंतिम प्रणाम तथा स्वतन्त्रता और स्वराज्य का स्वागत। रामराज्य के लिए उत्सुक प्रजा विजयाभिनंदन मनाने लगी। आनद-विभोर जनता ने स्वतंत्रता तथा स्वराज्य के सूत्रधार महात्मागाधी को बापू के नाम से पुरस्कृत किया। स्वतंत्रता तथा स्वराज्य ये दो अभीष्ट फल भारत को प्राप्त हुए।

इतिहास

प्रस्तुत नामों में दो प्रकार के व्यक्ति दृष्टिगोचर हो रहे हैं। प्रथम वर्ग में धर्म भावना वाले ऋषि-मुनि, गुरु, साधुसंत आदि महात्मागण हैं जिनका उल्लेख धार्मिक प्रवृत्ति के अंतर्गत हो चुका है। राजा महाराजा, शासक, सचिव, सेनानी, सामंतादि विशेष गुण सम्पन्न महापुरुषों का द्वितीय वर्ग है। इतिहास के इन महापुरुषों को प्रागैतिहासिक काल, रामायण काल, महाभारत काल, तथा उत्तर महाभारत काल—इन चार समुदाय में विभाजित किया जा सकता है।

प्रागैतिहासिक काल—पौराणिक काल के राजाओं में सूर्य तथा चंद्रवंशी दो राजकुल विशेष प्रसिद्ध प्रतीत होते हैं। इन नरेंद्रो की लोक-प्रियता का कारण उनके गुणातिरेक हैं। दिलीप की गो-सेवा, रघु की दिग्विजय, भगीरथ का अपने पूर्वजों के उद्धार हेतु गंगावतरण का महान प्रयास तथा हरिश्चन्द्र की सत्यवादिता एवं दानवीरता की कहानियाँ आज भी लोगों के मुँह से सुनाई पड़ती हैं। चंद्रवंश का दुष्यन्त तथा उसका पुत्र भरत प्रबल प्रतापी चक्रवर्ती नरेश हुए हैं। मोरध्वज का महात्याग कौन नहीं जानता है। चन्द्रवंश की अपेक्षा सूर्यवंश के सम्राटों के नाम अधिक प्रयुक्त हुए हैं जिससे उस वंश का प्रभुत्व तथा महत्व प्रकट हो रहा है।

रामायण काल—इस काल के अनेक राजाओं के नाम संकलित दिखलाई दे रहे हैं। राम का नाम दशरथ, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्नादि आत्मीय जनों; जनकादि सम्बन्धियों तथा जामवंत, सुग्रीव हनुमानादि हितैषियों के नामों के साथ विद्यमान है। सुग्रीव के बड़े भाई बालि के नाम का प्रयोग भी हुआ है। राम के प्रतिद्वंद्वी रावण, उसके भाई कुंभकरण और विभीषण तथा उसके पुत्र मेघनाद का उल्लेख भी मिलता है। राम-लक्ष्मण के पुत्र लव-कुश तथा अगद-चन्द्रकेतु के नाम भी प्रयुक्त हुए हैं। नामों से राम का पक्ष ही प्रबल प्रतीत हो रहा है।

महाभारत काल—महाभारत काल के वीर दो दलों में विभक्त दिखलाई दे रहे हैं। प्रथम दल में युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव पंच पांडव; कृष्णादि यदुवंशी तथा धृष्टद्युम्न, द्रुपदादि देश-विदेश के अनेक वीर राजा, सामंत, नायक आदि सम्मिलित हैं। विपक्ष में दुर्योधन, दुःशासनादि कौरव; शकुनि, कर्णादि, अनेक वीर प्रतिद्वंद्वी दिखलाई दे रहे हैं। इस नरेन्द्र मंडल में कंस, शिशुपाल, जरासन्ध आदि अनेक प्रबल राजाओं का भी समावेश है। अन्य महारथी तथा शक्ति-सम्पन्न व्यक्तियों में द्रोण, अश्वत्थामा, भीष्म, चित्रांगद, विचित्रवीर्यादि उल्लेखनीय हैं। अर्जुन की संतान-परम्परा में बभ्रुवाहन, अभिमन्यु, परीक्षित, जनमेजय आदि नाम आ गये हैं।

उत्तर महाभारत काल—इतिहास के इस युग में अनेक शक्तिशाली राजाओं के नाम सन्निविष्ट हैं। मौर्यवंश के चन्द्रगुप्त, अशोकादि; शुंगवंश के पुष्यमित्रादि; गुप्तवंश के चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त, स्कंदगुप्तादि; मुगलवंश के अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, औरङ्गजेब आदि प्रसिद्ध सम्राट हो गये हैं। मेवाड के राणाओं में कुम्भा, हमीर, राणासांगा, अजीतसिंह, राजसिंह, प्रतापादि तथा मारवाड़ के जसवंतसिंह आदि नाम उल्लेखनीय हैं। मारवाड़ की अपेक्षा मेवाड़ का महत्व विशेष दिखलाई दे रहा है। इनके अतिरिक्त भारत के अनेक भूपालों के नाम दृष्टिगोचार हो रहे हैं जिनमें शक-सवत्सर का प्रवर्तक शालिवाहन, उज्जैन का विक्रमादित्य, दिल्ली का पृथ्वीराज, गुजरात का कुमार पाल, अजमेर का अजयसिंह, कन्नौज का जयचन्द्र, पंजाब का रणजीतसिंह, जयपुर का सवाई जयसिंह, भरतपुर के बदनसिंह, सूरजमल और जवाहरसिंह, मगध का महानन्द, धारानगरी का भोज, मैसूर का टीपू सुलतान, बीकानेर का रायसिंह, कोटा का जालिमसिंह, महोबा का परमाल, ओरछा का छत्रसाल, इन्दौर की अहिल्याबाई, बाँदा का हिम्मत बहादुर, मालवा का बाजबहादुर, दिल्ली का बहादुरशाह, उत्तर कौशल का सुहेलसिंह तथा महाराष्ट्र का शिवाजी मुख्य हैं। गोरा, बादल, जयमल, फत्ता, भामाशाह, दुर्गादास, बीरबल, टोडरमल, मानसिंह, अमीचन्द, हरीसिंह नलुआ, ध्यानसिंह, नन्दकुमार, आल्हा-ऊदल, भावसिंह, जुझारसिंह, इन्द्रजीतसिंह, अमरसिंह आदि इस युग के व्यक्ति विशेष हैं।

उपर्युक्त नामों के अतिरिक्त इतिहास प्रसिद्ध कुछ विदेशी महापुरुषों के नाम भी इस मण्डल में दिखलाई दे रहे हैं। यूनानी सिकंदर और खुरासानी नादिरशाह भारत-आक्रमण के लिए प्रसिद्ध हैं। अफलातून विद्वत्ता के, लुकमान चिकित्सा के, हातिम परोपकारिता के तथा सुलेमान न्याय-प्रियता के प्रतीक समझे जाते हैं।

सूर्य वंश तथा चन्द्रवंश की वंशानुक्रमणिकाएँ वृक्षों द्वारा दिखलाई गई हैं।

सूर्यवंश-वृक्ष
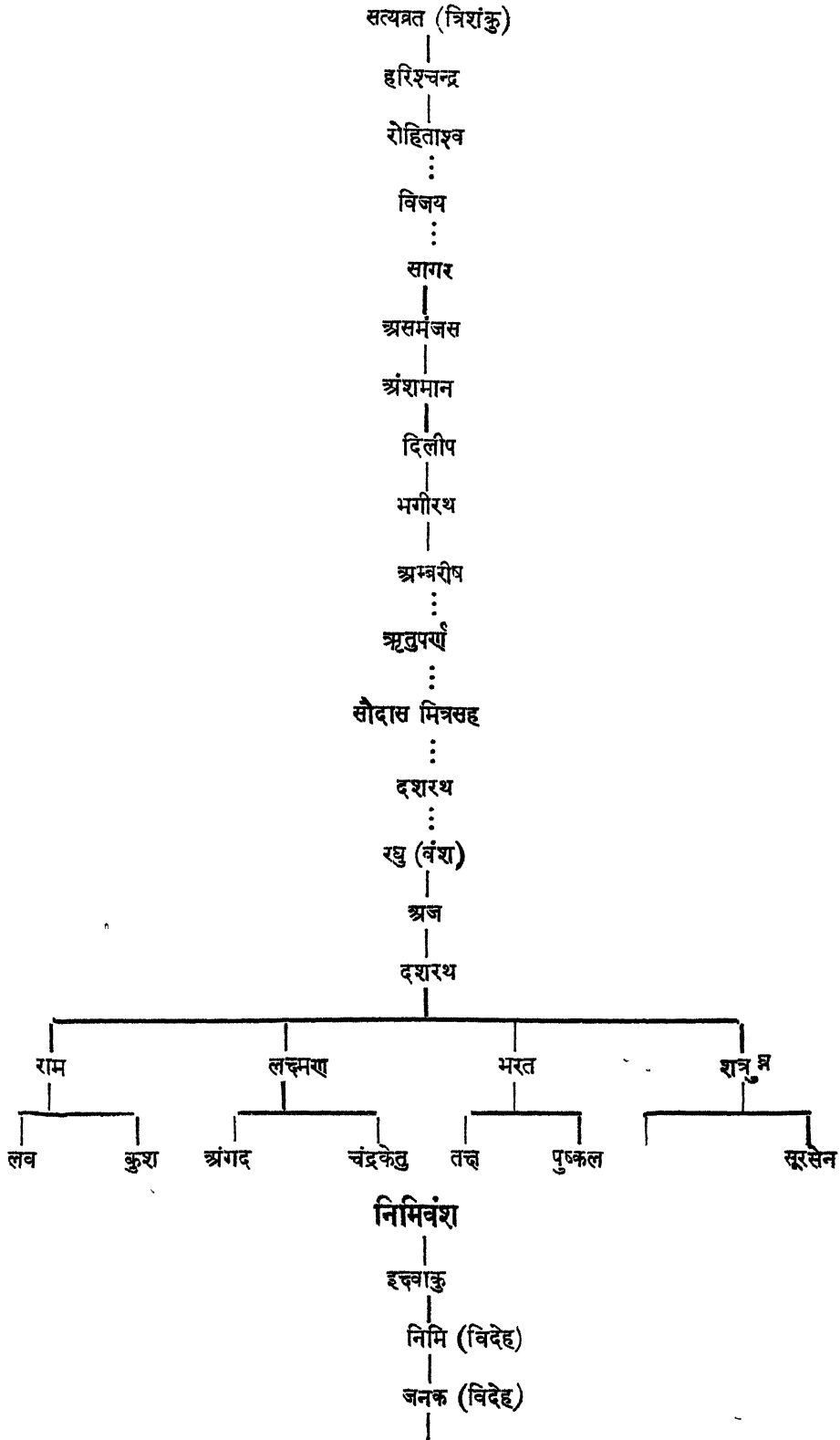
निमिवंश

इक्ष्वाकु
|
निमि (विदेह)
|
जनक (विदेह)
|

पुरुवंश—जनमेजय, सुमति, ध्रुव, दुष्यंत, भरत, भरद्वाज, रंतिदेव, हस्ती, कण्व, मेधातिथि, जयद्रथ, विश्वजित, सेनजित, सुकृत, ब्रह्मदत्त, धृतिमान, सुपार्श्व, कृत, सुधीर, रिपुंजय, नील, शांति।

कुरुवंश—परीक्षित, जनमेजय, उग्रसेन, भीमसेन, जह्नु, दिलीप, प्रतीप, शांतनु, भूरिश्रवा, शल्य, भीष्म, चित्रांगद, विचित्रवीर्य, धृतराष्ट्र, पांडु, विदुर, दुर्योधन, दुःशासन, पाँचों पांडव, श्रुतकीर्ति, इरावन, वभ्रुवाहन, अभिमन्यु।

[प्रस्तुत संकलन में आये हुये नामों को ही इन वंश वृक्षों में स्थान दिया गया है। वंश शृङ्खला के लुप्त नामों को बिन्दुओं से दिखलाया गया है। इन वृक्षों का आधार विष्णु पुराण है]

शासन-तंत्र

तंत्र विधान—देश का सबसे बड़ा शासक राजा होता आया है। सारी शक्तियाँ उस पर केन्द्री-भूत रहती है। सारा उत्तरदायित्व उसी का होता है। इन नामो से यह पता चलता है कि राजा के लिए तीन बातें आवश्यक हैं जो राजा, भूप तथा नृप शब्दों के निर्वचन से व्यक्त होती हैं। (१) राजा (राज-चमकना) को ऐश्वर्यशाली होना चाहिए ताकि उसका प्रभाव तथा आतङ्क मित्रा-मित्र दोनों अनुभव कर सकें। वह अपने स्वत्वो की रक्षा कर सके। भू या उसके पर्यायों से बने हुए राजा के अर्थ में आने वाले अन्य शब्द यह सूचित करते हैं कि राजा चलाचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति का स्वामी हो ताकि उसकी द्रव्य सम्बन्धी आवश्यकताएँ पूर्ण होती रहें। (३) नृप या इसी प्रकार के नर (नृ) से बने हुए शब्द यह प्रकट करते हैं कि राजा की सैन्य-शक्ति भी अत्यन्त प्रबल हो जिससे वह अपनी प्रजा की रक्षा कर सके। धन शक्ति, जन शक्ति एवं प्रतापादि गुण ही राज्य को चिरस्थायी बना सकते हैं। राजा की सहायता के लिए एक मंत्रिमंडल तथा अन्य राज कर्मचारी होते हैं। राजा का पुत्र युवराज कहलाता है।

सतयुग—वैदिककाल में शासन की क्या व्यवस्था थी इसका कोई स्पष्ट उल्लेख प्रस्तुत नामों में नहीं पाया जाता। शिवि आदि आत्मयाजी महिपालो के नामों से इतना ही अनुमान लगाया जा सकता है कि ये राजपुरुष अपनी प्रजा के कल्याण में अवश्य संलग्न रहते होंगे। मांधाता आदि अनेक सम्राटों का शासनकाल सतयुग के नाम से प्रसिद्ध है जिससे प्रतीत होता है कि उस समय देश की शासन पद्धति बड़ी सुन्दर होगी। प्रजा सब प्रकार से सुख-सम्पन्न होगी। मनुष्यों के आचार-विचार आहार-बिहार एवं व्यवहार सब सत्य पर ही अवलम्बित रहते होंगे। सत्यनिष्ठा ही उनकी प्राण-प्रतिष्ठा रही होगी।

त्रेता—त्रेता युग में प्रजा का जीवन अत्यंत आनन्दमय रहा प्रतीत होता है। किसी को कभी किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं रहा होगा। राजा अपने मंत्रिमण्डल के परामर्श से राजकाज करते रहे होंगे। यही कारण है कि रामराज्य स्वर्ण युग का प्रतीक बन गया। रामायण, महाभारतादि अनेक ग्रंथ—

'दैहिक दैविक भौतिक तापा।
रामराज काहू नहि व्यापा।'

की उद्घोषणा आज भी कर रहे हैं।

द्वापर—द्वापर के मनुष्यों की मनोवृत्तियाँ स्वार्थ तथा लोभ-परायण प्रतीत होती हैं। भाई-भाई में संघर्ष होने लगा। देश का विभाजन अनेक राज्यों में होने से राज-प्रबन्ध व्यक्तिगत वस्तु बन गई। इस काल में अच्छे और बुरे दोनों ही प्रकार के नृपतियों के नाम विद्यमान हैं।

कलियुग—महाभारत के पश्चात् देश ह्रासोन्मुखी हो गया। आन्तरिक युद्धों के कारण शासन-प्रबन्ध भी अस्त-व्यस्त रहा होगा, कभी-कभी अन्तराल में गुप्त, मौर्य, वर्द्धन आदि कुछ प्रतापी राजवंशों में चंद्रगुप्त, अशोक, हर्षवर्द्धन आदि समृद्धिशाली राजा हुए जिनकी सुन्दर व्यवस्था के कारण देश में शांति रही और प्रजा को सुख मिला।

मुसलिम तथा अंगरेजी शासन का बहुत कुछ परिचय इन नामों से व्यक्त हो रहा है। पुलिस विभाग के सिपाही, दीवान, दरोगा, इंसपैक्टर, कोतवाल, सुपरिंटेंडेंट, सेना के हवलदार, रिसालदार, कर्नल, जनरल, कप्तान, सेनापति, कचहरी के मुंशी, मीरमुंशी, मुत्सद्दी, तहसीलदार, डिप्टी, कलक्टर तथा न्याय विभाग के वकील, मुख्तार, बैरिस्टर, जज आदि अनेक विभागों के सरकारी कर्मचारियों का बहुत स्पष्ट उल्लेख पाया जाता है। इनके अतिरिक्त खजानची, बक्सी, सदरआला, दीवान, सिकत्तर,

वजीर, मंत्री, सूबा, गवर्नर, लाट, राजा, बादशाह, आदि अन्य हाकिम भी अपना पूर्ण सहयोग दे रहे हैं। इस प्रकार द्वारपाल (दरबान) से लेकर दिल्लीपति तक सब छोटे-बड़े राज कर्मचारी अष्टांगाश्रित शासन-तंत्र के संचालन में संलग्न हैं।

साहित्य

भारतीय वाङ्मय का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। वेदों से लेकर हिंदी की नवीन से नवीन रचना तक यह अनेक रूप—अनेक वेष धारण करने को विवश हुआ। वैदिक संस्कृत, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, पाली, व्रज, अवधी, खड़ी बोली (आधुनिक हिंदी) आदि अनेक भाषाओं का परिधान धारण कर चुका है। सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों की उस पर अमिट छाप लगी हुई है। इतना विशाल साहित्य होते हुए भी केवल कुछ धार्मिक ग्रंथों के नाम के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों पर नाम नहीं रखे गये। इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं—

(१) अन्य पुस्तकों के प्रति मनुष्यों की कोई ऐसी भक्ति-भावना नहीं है जिससे वे उनका पारायण आदि में नित्य प्रयोग कर सकें।

(२) कभी-कभी पुस्तकों के नाम कर्ण-कटु अप्रिय एवं निरर्थक होते हैं अ... उनका विषय अरुचिकर होता है। इससे मनुष्य उनकी ओर आकर्षित नहीं होते।

(३) जीवन चरित, नाटकादि कुछ पुस्तकों के नाम प्रायः उन प्रसिद्ध पुरुषों के नाम पर ही रखे जाते हैं जो पहले से प्रचलित हैं।

(४) कुछ पुस्तकों के नाम लेखक अथवा कवि के नाम से युक्त होते हैं।

(५) कुछ पुस्तकों के नाम अधिकांश में ऐसे विषयों से सम्बद्ध रहते हैं जो प्रायः दुरूह, गूढ़ अथवा अंतर्द्वंद्वों की ओर प्रवण होने से अनुपयुक्त होते हैं।

(६) परन्तु मुख्य हेतु यह प्रतीत होता है कि पुस्तकों के नाम उन प्रवृत्तियों पर नहीं रखे जाते जिन पर मनुष्यों के नाम होते हैं।

धार्मिक पुस्तकों के नाम प्रयुक्त होने के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं—उनकी रचना किसी अलौकिक शक्ति अथवा दिव्य व्यक्ति के द्वारा हुई है। (ऋषि मुनि अथवा मत प्रवर्तक भी अलौकिक अथवा दिव्य व्यक्ति ही होते हैं।) कुछ ग्रंथों में इष्टदेव के चरित अथवा उनकी लीलाओं का वर्णन होता है इसलिए वे इष्टदेव के सदृश ही मान्य एवं पूज्य समझे जाते हैं। देव-स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना-सम्बन्धी पुस्तकें प्रायः भक्ति-भाजन होती हैं। उत्कृष्ट नीति-संकलन भी मनुष्यों को प्रिय होते हैं।

उल्लिखित कथन का यह निष्कर्ष नहीं है कि इन नामों में साहित्य-सामग्री का नितांत अभाव है। प्रत्यक्ष में न सही प्रच्छन्न रूप से—उपलक्षणा से—समस्त वाङ्मय यहाँ पर विराजमान है। कालिदास के नाम-स्मरण से ही उसकी समस्त कृतियाँ आकाश में नक्षत्रों के तुल्य जगमगाने लगती हैं। जिस प्रकार अपने भवन के सतमंजिले पर खड़ा हुआ मनुष्य सबको दृष्टिगोचर होता है उसी प्रकार कलाकार अपनी कृतियों की कीर्ति से ही चमकता है। कविता से ही कालिदास कालिदास हुए। साहित्यकारों ने साहित्य सेवा की और साहित्य ने उन्हें समृद्धशाली बनाया। प्रेमचन्द्र ने उपन्यास बनाये और उपन्यासों ने प्रेमचन्द्र को बनाया। यह अन्योन्याश्रित भाव है। जैसे दृष्ट सत्ता के पीछे एक अदृष्ट सत्ताका भान होता है वैसे ही ग्रन्थकार के नाम के पीछे उसकी कृतियाँ शरीर-संरक्षक के सदृश उपस्थित रहती हैं।

इस दृष्टि से अध्ययन करने पर निगमागम शास्त्रो से लेकर अद्यावधि साहित्यकारो तक की एक बृहत् परम्परा ऋषि, मुनि, मतप्रवर्तक, साधु-संत, गुरु, लेखक एवं राजाओं के नामों में दृष्टि-गोचर होती है। इस दीर्घ कालीन साहित्य का क्रमपूर्वक विवेचन करना सरल नहीं है, क्योंकि नामो की बहुसंख्या बीच-बीच में अप्रयुक्त, अप्रचलित एवं विलुप्त होती रहती है। एक युग के अधिकांश नाम दूसरे युग में प्रायः व्यर्थ हो जाते हैं। आज जो नाम प्रचलित हुआ वह पहिले न था, सम्भव है वह कल भी न रहे। अतीत, अनागत तथा अद्यतन की त्रिकालीन कल्पांत अवधि का साथ विरले ही नाम दे सकते हैं।

कतिपय धार्मिक ग्रंथो के अतिरिक्त प्रत्यक्ष रूप से साहित्य सम्बन्धी अन्य किसी कृति का उल्लेख इस नाम संग्रह में नहीं मिलता है किन्तु वैदिक वाङ्मय से लेकर अद्यावधि तक के अनेक प्रमुख साहित्यकारों के नाम दृष्टिगोचर हो रहे हैं जो इस प्रकार विभक्त किये जा सकते हैं—

वैदिक कालीन—दर्शनकारो में न्याय के रचयिता गोतम, साख्य कर्त्ता कपिल, योग शास्त्र के लेखक पतंजलि, पूर्व मीमांसाकार जैमिनि तथा वेदांत प्रणेता व्यास हैं। स्मृतिकारों में मुख्य मनु, याज्ञवल्क्य, विष्णु, पराशर तथा नारद हैं। पाणिनि कात्यायनादि वैयाकरण तथा कुछ शास्त्रकारों के नाम यत्र-तत्र छिटके हुए हैं।

पौराणिक तथा ऐतिहासिक कालीन—पुराण तथा महाभारत-प्रणेता व्यास का उल्लेख ऊपर हो चुका है। रामायण के रचयिता वाल्मीकि हैं। इस युग के तीन ग्रंथ भागवत, गीता तथा रामायण भक्ति भावना के कारण जनता में अधिक प्रचलित तथा प्रसिद्ध प्रतीत होते हैं, क्योंकि इन धर्म-ग्रंथों पर प्रत्यक्ष रूपेण कुछ नाम पाये जाते हैं।

संस्कृत के प्रसिद्ध कवि कालिदास, भवभूति, माघ, श्रीहर्ष, जयदेवादि हैं। कालिदास के शकुंतला नाटक में मानव अंतर्द्वंद्वों का तथा रघुवंश, कुमार-सम्भव एवं मेघदूत काव्यों में प्रकृति-द्वय का उत्कृष्ट चित्रण मिलता है। भाषा-भाव एवं शैली के विचार से उनके ग्रंथ अद्वितीय हैं। भव-भूति का करुणरस प्रधान उत्तर रामचरित नाटक प्रसिद्ध है। बृहत् त्रयी के लेखकों में से माघ का शिशुपाल-वध तथा श्री हर्ष का नैषध चरित्र प्रकांड पांडित्य पूर्ण महाकाव्य हैं। जयदेव ने गीतगोविंद में कोमलकांत पदावली में राधा-कृष्ण भक्ति की मधुर धारा प्रवाहित की है। कादम्बरी प्रणेता बाण की रचना अनुपम है। अनेक नाटकों के निर्माता भास का नाम भी प्रसिद्ध है। बाण के आश्रयदाता सम्राट हर्ष ने स्वयं रत्नावली आदि नाटक लिखे हैं। रस तथा अलङ्कार ग्रथों में पंडितराज जगन्नाथ का रस गंगाधर और विश्वनाथ का साहित्य-दर्पण प्रशंसनीय है। अमरसिंह तथा हेमचन्द्र कुशल कोश-कार हुए हैं। ज्योतिष में बराह मिहिर, आर्यभट्ट तथा भास्कराचार्य के नाम देदीप्यमान हैं। आयुर्वेद से सम्बन्धित धन्वंतरि, चरक, सुश्रुत तथा नागार्जुन लोक-कल्याण के लिए वरदान स्वरूप हैं। काम-शास्त्र के विशेषज्ञ वात्स्यायन तथा कोकराज ने क्रमशः कामसूत्र तथा कोकशास्त्र की रचना की। सङ्गीत के आचार्य भरतमुनि हुए हैं। अर्थशास्त्र में चाणक्य का कौटिल्य शास्त्र विश्वविख्यात है। चाणक्य के अतिरिक्त अन्य निपुण नीतिकारो में शुक्र, विदुर तथा धौम्य के नाम उल्लेखनीय हैं। सांसारिक अनुभवों से आप्लावित शतक-त्रय के रचयिता भर्तृहरि से कौन परिचित नहीं है। विनोद द्वारा नीति शिक्षक, विश्व-विश्रुत पंच-तंत्र-प्रणेता विष्णु शर्मा भारती का एक अनमोल लाल है। राजा भोज के शासन-काल में संस्कृत का प्रचुर प्रचार रहा है। शङ्करादि अनेक मनीषियों ने अपने अमूल्य ग्रन्थ-रत्नों से संस्कृत साहित्य को अलंकृत किया है।

मध्यकाल में सस्कृत के अतिरिक्त प्राकृत, अपभ्रंश तथा पाली भाषा में भी ग्रंथ-रचना होने लगीं। जैनियों का बहुत सा साहित्य प्राकृत भाषा में है, बौद्ध साहित्य पाली भाषा में लिखा गया है।

हिन्दी साहित्य कालीन—इसका प्रारम्भ चद कवि से माना गया है। उसका पृथ्वीराज रासो वीर युग का एक विशाल महाकाव्य है। इसमें पृथ्वीराज के युद्धों का वर्णन है। इसी समय मैथिल-कोकिल विद्यापति ने राधा-कृष्ण की भक्ति में कोमलकांत पदावली की सरस रचना की। निर्गुणी सन्त कबीर, नानकादि ने अपने विचारों का प्रचार पदों में किया। सूरदास ने सूरसागर में कृष्ण भक्ति की तथा तुलसी ने रामचरित मानस में रामभक्ति की ऐसी पावन धाराएँ बहाईं कि दोनों के सङ्गम से देश में शांति की सरस्वती बहने लगी। रीति काल के प्रमुख कवि केशव, देव, बिहारी आदि ने शृंगार रस का शृङ्गार किया। भूषण ने वीरनायक शिवाजी का चित्रण कर निराली राष्ट्रीयता का परिचय दिया। भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान का राग गाया।

गद्य में सदा सुखलाल का सुखसागर, लल्लूलाल का प्रेम सागर तथा नाभाजी का भक्तमाल उल्लेखनीय हैं। प्रथम दो में कृष्ण-कथा एवं तृतीय में भक्तों का चरित्र वर्णित है। स्वामी दयानंद ने हिन्दी संस्कृत में अपने अपूर्व ग्रंथ लिखे जिनमें वैदिक पुनरुत्थान की ओर विशेष आग्रह किया है। उपन्यास तथा कहानियाँ प्रेमचन्द्र की अमर कृतियाँ हैं जिनमें पात्रों के चरित्र तथा ग्रामीण दृश्य सरल, शुद्ध एवं सजीवभाषा में चित्रित किये गये हैं। इनकी पुस्तकों में सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं का निरूपण सम्यक् दिया हुआ है। महात्मा गाधी ने भी अपनी हिन्दी कृतियो द्वारा हिन्दी साहित्य को प्रोत्साहन दिया।

कुछ वंगवासी विद्वान् भी इस साहित्यकार-संसद की शोभा बढ़ा रहे है। शारदा के इन श्लाघ्य सुपुत्रों में समाज-सुधारक ईश्वर चन्द्र, इतिहास-प्रवीण रमेशचन्द्र, ब्रह्मसमाज के प्रवर्तक राजाराम मोहनराय, उपन्यासकार वंकिमचन्द्र, शरच्चन्द्र, नाट्यकार द्विजेंद्रलाल तथा कवींद्र रवींद्र के नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने वाणी-मन्दिर को अपनी अमूल्य कृतियों से अलंकृत किया है।

इस वाङ्मय में आर्य जाति का आचार-विचार, कला-कौशल, आमोद-प्रमोद, ज्ञान-विज्ञान एवं अनुभव-अनुयोग का निष्कर्ष संगृहीत है जो जीवन को सरस, समुन्नत एवं सुन्दर बनाने में शक्ति सम्पन्न है।

ललित कलाएँ

मनुष्य स्वभाव से ही सौंदर्य प्रेमी है। प्रकृति के नाना रंग के फूलों से उसने हार, मालादि की रचना की, फूलदान अलंकृत किये। स्वागत-अभिनन्दन के हेतु तोरण-पताका से अपने भवन विभूषित किये। सुन्दर-सुन्दर पुष्पों को चित्रांकित किया गया। किसी ने कागज पर, किसी ने वस्त्रों पर तथा किसी ने गृह-भित्तियों पर भाँति-भाँति के रंगों में चित्रण कर उन्हें स्थायी रूप दे दिया। उनकी रमणीयता तथा मनोमोहकता और भी उत्कर्ष को प्राप्त हो गई। पक्षियों के प्रति भी यही अनुराग उत्पन्न हो गया। शुक सारिकादि ललित पक्षियों का लालन-पालन आरम्भ हुआ। रसिक तथा विलासी पुरुष मनोहर मोर-पङ्खों के मुकुट धारण करने लगे। पक्षियों में एक विशेषता है। उनमें सौंदर्य के साथ मधुरवाणी भी है। पुष्पों में मूक सौंदर्य है। रजनी की कालिमा में जब चमचमाते हुए तारे वियति में जगमगाते तो वे मुग्ध हो जाते। इसके अतिरिक्त मानव-मानस भी भव्य भावनाओं, कलित कल्पनाओं, अनुपम अनुभूतियों एवं विशद विज्ञान का मनोरम मंदिर है। आभ्यन्तर सौंदर्य के सम्पर्क से बाह्य सौंदर्य और भी प्रोज्वल हो जाता है—अत्यधिक खिलने लगता है, उसमें सरसता आ जाती है। सौंदर्य की अभिव्यंजना ही कला की जननी है।

सरस अनुभूति की व्यंजना का नाम ही कला है। प्राचीन काल में ६४ कलाएँ मानी जाती रही हैं। आज कल कलाओं के दो विभाग किये गये हैं। उपयोगी कला वे हैं जो मनुष्य के भौतिक

जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। अलंकारादि इसी के अन्तर्गत हैं जिनका वर्णन गत पृष्ठों में किया जा चुका है। ललित कलाओं में स्थापत्य, तक्षण, आलेख्य, सङ्गीत तथा काव्य-कला मुख्य हैं। कला से विशेष आनन्द का उद्रेक होता है।

धर्म-परायण देश में जहाँ विशाल, भव्य मन्दिर खड़े हों जिनके गर्भ-गृहों में नानालंकृत मूर्तियाँ विराजमान हो इन ललित कलाओं का सर्वदा अभाव हो ऐसा अनुमान करना केवल उपहासास्पद ही होगा। विलास-प्रिय, भूरि भोगी महाराजाओं के राजप्रसाद चित्रों से रिक्त कैसे हो सकते हैं। अनेक स्थलों पर नाटको में चित्रशालाओ का वर्णन आता है। अजन्ता की कंदराओ में अद्वितीय चित्रकला प्रदर्शित की गई है। दक्षिणी भारत तथा मथुरा वृन्दावन के हिन्दू देवालयों, आबू के जैन मन्दिरों तथा बौद्धों के विहारों में अनेक उत्कृष्ट एवं अनुपम कलाओं के दर्शन होते हैं।

वास्तु तथा तक्षण कला—हिंदू मन्दिरों में प्रायः सब कलाओं का समन्वय पाया जाता है। मन्दिर के निर्माणमें स्थापत्य, भित्तियों, गोपुरों, स्तम्भों, मंडपों, तोरणों आदि पर भास्कर्य; मूर्ति रचना में तक्षण, प्रसाधना के लिए चित्र कला के विचित्र निदर्शन प्राप्त होते हैं। प्रातः सायं देव-विग्रह के समक्ष सरस सङ्गीत एवं स्तोत्र पाठ के समय काव्य कला का प्रदर्शन होता है। इस नाम माला में तीन प्रकार से ललित कलाओ का आभास मिलता है—कलाकारों के नाम से, कृतियों के नाम से और कलाओं के नाम से। स्थापत्य तथा भास्कर्य कला के किसी विशेषज्ञ का नाम अधिक प्रसिद्ध न हुआ होगा। इन दोनों कलाओं की केवल कृतियाँ ही मन्दिर तथा भवन आदि के रूप में दृष्टिगोचर हो रही है। मुगल कालीन वास्तु-विद्या-विशारद दसवन्त, बसावन आदि कुछ नाम इस संग्रह में अवश्य पाये जाते हैं। तक्षण अर्थात् मूर्ति कला के किसी कलाविद् का नाम भी उल्लेखनीय नहीं है। मूरतिसिंह, मूर्ति-नारायण, शिवमूरति आदि कुछ नाम केवल कृतियों की ओर संकेत करते हैं।

चित्रकला—चित्रकारों में राजा रविवर्मा का नाम उल्लेखनीय है। चित्तरसिंहादि नामों से स्वतः आलेख्य की ओर इंगित होता है।

संगीत—संगीत में संमोहन जादू होता है। कहते हैं कि कृष्ण-की मुरली के स्वर से जड़-चेतन मुग्ध हो जाते थे। सङ्गीत के तीन अंग हैं—वाद्य, गान, तथा नृत्य। वाद्य से वायु में कम्पन उत्पन्न होता है। उन कम्पनों से स्वर-लहरी अनुप्राणित होती है। स्वर से अंग-स्फुरण होने लगते हैं। शरीर आनन्दोल्लास में विभोर हो जाता है। नौबत, मजीरा, डमरू, मुरली, सारंगी, वीणा, वीन, निशान, तुरही, ढोल आदि अनेक बाजों के नाम इस संग्रह में मिलते हैं। कृष्ण को वंशी प्रिय थी। डमरू बजाने में शङ्कर प्रवीण थे, सरस्वती तथा नारद की वीणा विश्वविमोहिनी थीं। कुछ बाजे युद्ध के समय बजाये जाते हैं, कुछ मङ्गलोत्सवो पर तथा कुछ देव-मन्दिरों में पूजा के समय बजते हैं।

गायन अपनी अद्भुत से शक्ति मानव-हृदय की भावुकता एवं सहृयता को प्रबुद्ध करने में अद्वितीय है। भरत सङ्गीत के आचार्य माने गये हैं। सूर, कबीर, तुलसी आदि संतों ने भी अनेक राग-रागिनियों में सहस्रों पद रचे हैं। श्री, टोड़ी, देवकली, राम-कली, भैरवी, मारु, वसंत रागो के थोड़े से ही नाम यहाँ संग्रहीत हुए हैं। इसके अतिरिक्त तानसेन, हरिदास, बैजूबावरा, विष्णु-दिगम्बर आदि कुछ सङ्गीतज्ञों के नामों का उल्लेख भी पाया जाता है, हिंदुओं के दो प्रमुख देवता शिव तथा कृष्ण नृत्यकला में अत्यन्त प्रवीण माने गये हैं। कृष्ण की रास लीला में नृत्य सदा हुआ करता था। शिव तांडव से सभी परिचित हैं। नृत्य विहारी, नटराज, नटवरादि नाम नृत्य कला के द्योतक हैं। प्रसिद्ध नृत्य-विशारद उदय-शङ्कर भट्ट, रामगोपालादि इस कला के जीते जागते नमूने हैं।

काव्य-कला—कविता अनिर्वचनीय आनन्द की देवी है। अन्य कलाओं की अपेक्षा इसका आधार अत्यन्त सूक्ष्मतम शब्दमूलक नाद है अतः ललित कलाओं में इसका स्थान सर्वोच्च माना

गया है। इसकी परिभाषा भिन्न-भिन्न काव्य मर्मज्ञों ने विभिन्न प्रकार से की है। कोई अलङ्कारो पर विशेष बल देता है, किसी के विचार से अर्थ की रमणीयता का इसमें विशेष महत्व है एवं किसी किसी ने रस का उद्रेक ही सर्वस्व मान लिया है। परिभाषा कुछ भी हो। परन्तु इसमें तीन गुण अवश्य होने चाहिए। (१) मनोरंजकता—जिससे पाठक तथा श्रोता का हृदय उसकी ओर स्वत: ही आकृष्ट हो। (२) विचारो की परिष्क्रियता—भावनाओं की पवित्रता जिससे उच्च उत्प्रेरणाएँ अंकुरित होकर चरित्र निर्माण में सहायक हों एवं निर्मल ज्योति स्फुरण हो दुर्गुणों तथा दुर्वासनाओं का दूषित तम दूर कर सके। (३) व्यक्ताव्यक्त से तादात्म्य स्थापित करना जिससे विश्वमैत्री तथा लोक कल्याण की भावना जाग्रत हो।

अपने आदर्श-ध्येय की सिद्धि के लिए कविता के पास साधन हैं—भाषा, छंद, अलङ्कार, रस-ध्वन्यादि। सरस, सरल तथा सुन्दर शब्दो के योग से वह अधिक प्रभावोत्पादिका हो जाती है। कुशल कवि अपनी प्रतिभा एव कल्पना के आमिश्र रूप द्वारा सच्ची कविता के सजीव चित्रण उपस्थित करता है। वह अपनी कोमल कल्पना से अमूर्त अन्तर्भावनाओं को मोहनी रूप दे देता है। ये रूपवती अनंग-अंगनाएँ प्रकृति की पृष्ठभूमि पर अलौकिक अभिनय प्रदर्शित कर जन-मन को मुग्ध कर लेती हैं। प्रस्तुत नामावली में ऐसे अनेक कवि-कोविदों के नाम सम्मिलित हैं जिन्होंने अपने अमूल्य रत्नों से सरस्वती देवी के अङ्गों को अलंकृत किया है। उनका उल्लेख साहित्य के अन्तर्गत हो चुका है।

विज्ञान

साहित्य-संगीतकला-प्रवीण हिन्दू जाति न केवल ज्ञान में ही चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई प्रतीत होती है, अपितु विज्ञान में भी उसका अतिशय कौशल व्यक्त हो रहा है। ज्ञान के अङ्ग प्रत्यङ्ग सम्पूर्णत: उसके अंतरङ्ग एवं बहिरङ्ग जीवन में घुल मिल गये मालूम होते हैं। उसका सार्वभौमिक धर्म संसार में शांति तथा सान्त्वना की अनुपम सरिता बहा रहा है। उसके अद्वितीय दर्शन ने ब्रह्म की सम्भूतियों तथा रहस्यों के उद्घाटन का प्रयत्न किया है, उसकी अनुकरणीय ललित कलाओं ने विश्व को सौंदर्य की भावना से आप्लावित कर दिया। उसके सर्वतोमुखी साहित्य ने ही देश देशांतरों को ज्योतिर्मय बनाया होगा। ज्ञान-विज्ञान के समन्वय से जगत के जीवन में यथार्थता आ गई है।

परमतत्व उनके निरन्तर चिंतन का लक्ष्य रहा है, आत्मतत्त्व का भी उन्होंने सम्यक् परिशीलन किया है। ये दोनों असंलक्ष्य विषय थे। उसी समय उन्होंने प्रकृति-तत्व का ज्ञान भी प्राप्त कर लिया। संलक्ष्य प्रकृति से उनका नित्य सम्बन्ध रहता था, इस सतत सम्पर्क से निरीक्षण तथा परीक्षण का विशेष सुयोग मिलता था। प्रकृति मंथन से उन्होने अनेक अमूल्य विज्ञान रत्न हस्तगत कर लिये। प्रकृति अध्ययन की सचेष्ट प्रवृत्ति ही विज्ञान की जननी है। इसी भावना से अनेक विद्याओं का प्रादुर्भाव हुआ। पञ्चतत्वों को, दैवी सम्पत्ति होने के कारण, देव तत्व में परिगणित कर लिया गया। मानव जीवन की स्थिति तथा पोषण उनके बिना असम्भव था। पृथ्वी उसके निवास का एकमात्र आधार थी। जल तो जीवन था ही, वायु के बिना क्षण भर भी जीना कठिन था। आकाश में अपने षट्कर्मों के करने का सुयोग मिलता था। अग्नि से वह प्रकाश तथा उष्णता प्राप्त करता था। ये पञ्च-तत्व मनुष्यों के लिए अत्यन्त उपादेय एवं उपयोगी रहे हैं। इस पञ्चमुखी प्रकृति से भौतिक विज्ञान का आरम्भ हुआ। प्रत्येक प्राकृतिक पदार्थ के गुण-दोष, आकृति-प्रकृति एवं स्थिति का ज्ञान उपलब्ध करने का प्रयास किया गया। इस भौतिक विज्ञान अथवा पदार्थ विज्ञान से ऋतु विज्ञान, उदधि विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान आदि अनेक विज्ञान उद्भव हुए।

नामो के सङ्कलन में सूक्ष्म रूप से अनेक विज्ञानों की ओर सङ्केत पाया जाता है। गणि-त शास्त्र के बिना जगत् का काम चलना असम्भव है अतएव उसका स्थान बहुत ऊँचा माना गया है। इन नामों में एक से करोड तक की संख्या का कैसा सुन्दर समावेश हुआ है—एक नाथ, द्विजराज, त्रिलोकी नारायण, चतुर्भुज, पञ्चानन, षट्वदन, सतई, अष्टभुजा प्रसाद, नवरत्न, दशरथ, शतानन्द हजारीलाल, लखपतिराय, करोड़ीमल आदि नाम एक प्रकार से इस विज्ञान की अभिव्यञ्जना करते हैं। ज्योतिर्मय नक्षत्रों के निरीक्षण में तो गणित अपनी पराकाष्ठा को पहुँच गया है।

ज्योतिष के बिना हिन्दुओं का कोई काम चलते हुए नहीं दिखलाई देता। अधिकांश नाम ज्योतिष के फलाफल के विचार से ही रखे जाते हैं। जन्म से मृत्यु पर्यन्त हिन्दू-जीवन ज्योतिष पर ही निर्भर रहता है। लाखो मील दूरस्थ नक्षत्र, ग्रह, उपग्रह, राशि, धूम्रकेतु आदि ज्योतिष्को की गति, परिमाण, दूरी, प्रभाव, उदयास्तकाल, ग्रहण इत्यादि अनेक ज्ञातव्य विषयो पर चमत्कार पूर्ण प्रकाश डाला है। खगोल सम्बन्धी अनेक ग्रन्थ प्रणेता ज्योतिषाचार्य्य वराह मिहिर ने ज्योतिर्विज्ञान की तीनों शाखाओ पर श्रेष्ठ ग्रन्थो का निर्माण किया। ग्रहराशि नक्षत्रादि ज्योतिष सम्बन्धी अनेक नाम इस संग्रह में दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

भौतिक विज्ञान के अनेक तत्त्वो का विधान इन अभिधानों में सन्निविष्ट है। प्रकृति के मूल-तत्त्व—'क्षिति जल पावक गगन समीरा' का अनेक नामों में प्रयोग हुआ है।

अश्विनीकुमार, धन्वंतरि, चरक, सुषेण आदि आयुर्वेद के प्राणस्वरूप हैं। नागार्जुन का नाम रसायन-शास्त्रियों में प्रसिद्ध है। अनेक धातुओं के मारण-शोधनादि में उन्होंने अद्भुत कौशल प्रदर्शित किया है। पारद-प्रयोग में तो वे अद्वितीय सिद्ध हुए। सुश्रुत ने न केवल रोगों के निदान, उपचार, औषधि, पथ्यापथ्यादि पर ही विचार किया वरन् शल्य-चिकित्सा के अनेक यन्त्रों का आविष्कार भी किया। वैद्यक के अष्टांगों पर सुन्दर ग्रंथ रचे गये।

काम विज्ञान पर वात्सायन, कोकादि विद्वानों के कई उत्तम ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनका उल्लेख साहित्य प्रकरण में हो चुका है। इनमें गार्हस्थ्य जीवन के अनेक अङ्गों पर प्रकाश डाला गया है।

हीरा, नीलम आदि रत्नों, सुवर्णादि धातुओं के प्रयोग से उनके खनिज पदार्थ सम्बन्धी ज्ञान का परिचय प्राप्त होता है। नाना जीव-जंतुओं के संसर्ग से उनकी गति जीव-विज्ञान में भी प्रवेश कर गई प्रतीत होती है। नल-नकुल तथा शकुनि इस विद्या में विशेष पारङ्गत थे। आयुर्वेद से उनके वनस्पति-विज्ञान का चातुर्य प्रकट होता है। मनोविज्ञान का उल्लेख दर्शन के अन्तर्गत हो चुका है।

ये विज्ञानवेत्ता न केवल सिद्धांत (Theory) में ही निष्णात थे वरन् प्रयोगात्मक विज्ञान में भी उनकी बुद्धि का चमत्कार प्रतिफलित होता है। अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र आविष्कृत कर उन्होंने धनुर्वेद को उत्कर्ष पर पहुँचाया। वे शस्त्र एवं शास्त्र दोनों के उद्भट पंडित प्रतीत होते हैं। साम्प्रत् वायुयानों को ऊपर मडराते देख कालिदास के पुष्पक विमान का सजीव चित्रण सहसा स्मरण हो आता है।

इस विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मनुष्यों की वैज्ञानिक दृष्टि प्रखर, दूरदर्शी एवं सर्वतोमुखी है। वे विज्ञान भिक्षु से उन्नति करते-करते विज्ञानाचार्य बन जाते हैं। विज्ञानानन्द कैसा सार्थक नाम है। जन-जीवन विज्ञानमय प्रतीत होता है।

प्रकृति-प्रेम

प्रस्तुत अभिधानों में ऐसे अनेक प्रसङ्गों का उल्लेख मिलता है जिससे यह उद्भासित होता है कि भारतवासी प्रकृति के बड़े पुजारी हैं। धवल हिमाच्छादित नगराज हिमालय एवं उसके उत्तुंग शृङ्ग कैलास, गौरीशङ्कर, केदारनाथ, बदरीनाथ आदि; विंध्याचल, नीलगिरि, महेंद्रादि अन्य पर्वत मालाएँ; उत्ताल तरङ्गान्वित रत्नाकर; कलकलनिनादिनीकल्लोलिनी गङ्गा यमुनादि; कमलोत्फुल्ल सरोवर, झील, ताल, तडाग आदि जलाशय; नाना प्रकार के वृक्षलताओं से परिपूर्ण अरण्य, वनखंड, झारखण्ड, उपवनादि एवं नानाकृति चित्रोपम उनकी हरित ताम्रवर्णी पत्रावलियाँ एवं उनमें महकते चित्रित प्रसून तथा चहकते बहुवर्णी विहंग अथवा झाँकती हुई अर्द्धमुकुलित मनोहर कलियाँ; तमिस्रा को धोते हुए विद्युत् कणों से ज्योतिरिङ्गण; रजनी के नीलाम्बर में झिलमिलाते तारे; शरत्-सिताभ्र में लुकता-छिपता एवं चाँदनी को अबीर सा बखेरता पूर्णिमा का चन्द्र; उषा की सुषमा से सम्पन्न अरुणोदय; नीरद रञ्जित गोधूलि आदि अनेक अनुपम, अवर्णनीय दृश्य उनके अन्तःकरण को प्रफुल्लित करते रहते हैं।

भारतवर्ष की स्थिति उसके लिए एक अमूल्य वरदान है। अधिकांश देश उष्णकटिबन्ध में बसा हुआ है। हिन्दी प्रदेश भी इसके प्रभाव से वञ्चित नहीं है। इसके परिणामस्वरूप वन, उपवन उद्यान, वाटिका विविध वर्ण के पुष्पों से परिपूर्ण रहते हैं। उनकी मुकुलित कलिकाओं एवं प्रफुल्लित कुसुमों से ऐसा प्रतीत होता है कि हरित, जडित, साडी पहने वन-श्री मन्द-मन्द मुसकराती है एवं कभी-कभी हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाती है। रङ्गों के कितने प्रकार, प्रकारों के कितने भेद-उपभेद, भेद-उपभेदों के कितने मिश्रण एवं मिश्रणों के कितने मिश्रणोपमिश्रण ! कदाचित् ही कहीं ऐसा वर्णसमुच्चय एवं समन्वय दृष्टिगोचर होता होगा। शरद् की शोभा से बसन्त का वैभव निराला दिखलाई देता है। यही कारण है कि हमारे नामों में भी वर्णों की इतनी विभिन्नता पाई जाती है। ऊदा, कोकई, नीला, पीला, लाल, हरा, भूरा, सुनहला, रूपहला, स्याम, कस्तूरी, गुलाबी, शर्वती, सिलेटी कपूरी, सेवती, केसरिया, नारङ्गी आदि अनेक रङ्गों का आभास मिलता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति के प्रेमी ये पुरुष-पुंगव रङ्गों के कारण ही पुष्पों की ओर आकृष्ट हो उन्हें अवतंसों के तुल्य धारण करने लगे। उनका रङ्ग, उनकी सुगन्ध, उनकी कोमलता, उनकी सरसता एवं उनका सौंदर्य ऐसे मनमोहक होते हैं कि अज्ञ भ्रमर भी उन्मत्त हो गुनगुनाकर उनके गुणानुवाद करने लगता है। मानव-प्रिय पुष्पों में कमल, कुमुद, कदम्ब, गुलाब, सेवती, गेंदा, चम्पा, चमेली आदि अनेक फूलों का उल्लेख पाया जाता है।[1] मनुष्य इनके हार, मालादि बनाकर धारण करते तथा कुसुमस्तवकों से अपने गृहों को सजाते हैं। देवों की अर्चना में भी विविध सुमनों का प्रयोग दिखलाई देता है। उत्सवों का स्वागत-अभिनंदन करने में प्रसून ही सर्वप्रथम है। ये वन-श्री, उद्यान-सुषमा, एवं वेश्म-शोभा को अतिरञ्जन करते हैं। कोकाबेली, रजनीगंधादि अपनी मनोमोहक सुगन्ध से चंद्रिका की चारुता को चौगुनी करती हैं। कमल अपने नाना रूप-रङ्ग तथा भीनी-भीनी सुरभि के हेतु सब का अत्यंत प्यारा बन गया है। वह लक्ष्मी का कोमल आसन है। ब्रह्मा का

---

[1] लड़कियों के नाम—शेफालिका (हरसिंगार), कचनार, जूही, रजनीगंधा, बेला कोकादि।

उद्भव मूल है। नलिन विलोचन विष्णु पद्मपाणि हैं। सुरेंद्रमहेंद्रादिदेव भी पद्म विभूषित रहते हैं। काया के चक्रों में भी नाना प्रकार के कमलों की कल्पना की गई है। क्या साहित्य, क्या शृङ्गार, क्या कला कमल सबको जीवन प्रदान करता दिखलाई दे रहा है। कोमल एवं कलित कमल भारतीय-संस्कृति का अमूल्य एवं रहस्यपूर्ण प्रतीक प्रतीत होता है।[1]

---

[1] कमल के पर्याय—अंबुज, अब्ज, अरविंद, इन्दीवर, उत्पल, कंज, कमल, जलज, कुवलय, नलिन, नीरज, पंकज, पद्म, पुंडरीक, राजीव, वनज, सरोज, सारंग, सारस।

भौगोलिक परिज्ञान

भौगोलिक स्थिति—इस देश का नाम भारत है जो राजा भरत के नाम पर पड़ा हुआ माना जाता है। मुसलमानो ने इसका नाम हिंद रखा। काश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा पेशावर से पुरी तक यह विस्तृत भूखण्ड फैला हुआ है। इन नामों की सहायता से स्थिति, भू-रचना, जल-वायु, कृषि-शाद्वल सम्बन्धी उपज, खनिज पदार्थ, कला-कौशल, व्यापार-वाणिज्य एवं नगरों से पर्याप्त परिचय प्राप्त हो जाता है।

पर्वत—इस देश के उत्तर में १२०० मील लम्बा हिमालय पर्वत, गौरीशंकर, कैलास आदि तुषार धवलित तुंग शिखरों के साथ, तीन समानांतर श्रेणियों में विभक्त है। मध्य में अनेक विस्तृत अधित्यकाएँ एवं उपत्यकाएँ बृहत् हिमागारों से आच्छादित हैं जो अनेक भारतीय सरिताओं के उद्गम-स्थल हैं। कैलास के समीप ही सुन्दर मान-सरोवर झील है। इन पर्वत मालाओं पर नाना प्रकार की वनस्पतियाँ उत्पन्न होती हैं। हिमाद्रि अमूल्य खनिज पदार्थों का भांडार है। **उपादेयता** की दृष्टि से इसे भारतवर्ष का कल्प-वृक्ष कहना अनुचित न होगा। इस देश के तीन ओर अधिकांश समुद्र हिलोरें ले रहा है जिसका पूर्वीय भाग गङ्गा सागर के नाम से प्रसिद्ध है। यह समुद्र भी कम उपयोगी नहीं है। बहुमूल्य वस्तुओं को प्रदान करने के अतिरिक्त यह वाणिज्य-व्यापार तथा विदेशयात्रा का सुगम साधन बना हुआ है।

महादेव, महेंद्र, गिरिनार, शत्रुञ्जय, रामटेक, राजगिरि, भुवनेश्वर, त्र्यम्बक, वेंकट, नीलाचल, रामेश्वर आदि अनेक छोटी-छोटी पहाड़ियों के अतिरिक्त हिमगिरि तथा विंध्याचल दो प्रमुख पर्वत मालाएँ हैं। हिमालय का संक्षिप्त परिचय प्रारम्भ में दिया गया है। विंध्याचल भारत के मध्य में पूर्व-पश्चिम फैला हुआ है और देश के दो विभाग—उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत का विभाजक बना हुआ है।

नदियाँ—भारतवर्ष की मुख्य-मुख्य नदियों के नाम इस संकलन से प्राप्त हो जाते हैं। हिमालय से निःसृत सिंधु तथा उनकी सहायक नदियाँ सतलज (गौरी), व्यास (विपाशा), रावती (इरावती), झेलम (वितस्ता), चिनाव (चन्द्रभागा), गङ्गा, यमुना, गोमती, सरयू, कोसी (कौशिकी) उत्तर भारत की प्रसिद्ध नदियाँ हैं। गङ्गा हिमालय में गंगोत्री से निकलती है और अलखनन्दा आदि अनेक सहायक नदियों के साथ प्रयाग में यमुना से सङ्गम करती हुई गङ्गा सागर में गिरती है। यमुना अपनी अनेक सहायक सरिताओं के साथ प्रदेश का एक बड़ा भूभाग अभि-सिंचन करती है। नर्मदा तथा ताप्ती मध्य में पश्चिम प्रवाहिनी हैं। गोदावरी और कृष्णा दक्षिण की प्रसिद्ध नदियाँ हैं। दक्षिण का 'कावेरी सुंदरम्' व्यक्तिवाचक नाम कावेरी नदी का उत्तम स्मारक है। अनेक छोटी-छोटी नदियाँ भी देश में यत्र-तत्र फैली हुई हैं। ये नदियाँ धरती को उर्वरा करती हैं तथा यातायात के उत्तम साधन हैं। अतएव उनके तट पर अनेक नगर बस गये हैं। इन पर्वत मालाओं तथा सरिताओं से देश की प्राकृतिक भू-रचना का सम्यक् बोध हो जाता है।

जलवायु—प्रस्तुत अभिधानों से जलवायु सम्बन्धी ज्ञान भी स्पष्ट अवगत हो रहा है। गर्मी, सर्दी तथा वर्षा के विचार से संवत्सर की षड्ऋतुओं के नाम यहाँ दृष्टिगोचर होते हैं। चैत्र-बैसाख में वसन्त, ज्येष्ठाषाढ़ में ग्रीष्म, श्रावण-भाद्रपद में प्रावृट् (पावस), आश्विन-कार्तिक में शरत्, अगहन-पौष, में शिशिर तथा माघ-फाल्गुन में हेमन्त ऋतु होती हैं।

कृषि सम्बन्धी उपज—अन्नों में विशेषतः गेहूँ, जौ, मक्का तथा कई प्रकार के चावल मुख्य हैं। चना, अरहर, मटर, खेसरी (केराव) आदि दालों का उल्लेख भी मिलता है। तिल, अंडी, नारियल यहाँ के प्रसिद्ध तिलहन हैं। अफीम के पौधे से पोस्त के दाने तथा अफीम प्राप्त होते हैं। तेल, इत्र, गुलाब-जल, गुल-कंद आदि गुलाब के फूलों से बनाये जाते हैं। कपास के पौधों से रुई मिलती है। केशर कश्मीर की विशेष उपज है। चीनी के लिए गन्ने की खेती की जाती है।

उद्भिज—वनस्पति में अशोक, वट, गूलर, पीपल, शमी, झाऊ तथा केला मुख्य हैं। कुश घासआदि तृणों का उल्लेख भी मिलता है। बाग-बगीचों में नाना प्रकार के फल-मेवों के वृक्ष भी लगाये जाते हैं।

अन्य उपज—कुछ पशुओं से भी अनेक उपयोगी वस्तुएँ मिलती हैं। गाय से दूध, घृत तथा मक्खन, भेड़ों से ऊन, कोष-कीटो से रेशम, मृगों से कस्तूरी, मोरों से मोरपंख, सुरागायों से चमर प्राप्त होते हैं।

खनिज पदार्थ—भारतवर्ष खनिज पदार्थों के लिए भी प्रसिद्ध है। रत्नगर्भा भारत-भू की खानों से हीरा, पन्ना, लाल, नीलम, गोमेद, उत्पल आदि अनेक प्रकार की महार्घ मणियाँ तथा सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, आदि उपयोगी तथा बहुमूल्य धातुएँ प्राप्त होती हैं। मुक्ता, प्रवाल आदि मूल्य-वान द्रव्यो के लिए रत्नाकर है। यही कारण है कि इस देश को 'सोने की चिड़िया' कहा गया है जगप्रसिद्ध कोहनूर भी भारतवर्ष की ही देन है।

शिल्पकला तथा वाणिज्य-व्यापार—अनेक प्रकार के उद्योग धंधे भी देश में प्रचलित दिखलाई दे रहे हैं। सूती, ऊनी, रेशमी वस्त्रों, नाना प्रकार के आभूषणों, भाँति-भाँति के खिलौनों, विविध प्रकार के आयुधों एवं वाद्ययंत्रों के निर्माण में शिल्पी वर्ग कालयापन करता है। अनुमानतः इन वस्तुओं के क्रय-विक्रय से सौदागर देश-विदेश में व्यापार करते रहते हैं।

प्रमुख-स्थान—कोशल, पंजाब, मालवा, गुजरात, मोरंग, भूटान, बंगाल, कश्मीर, नैपाल आदि कतिपय राष्ट्र तथा प्रान्तों के अतिरिक्त प्रस्तुत संकलन में तीन प्रकार के नगरों के नाम सम्मिलित हैं। (१) तीर्थ—ये प्रचुर संख्या में समस्त देश के विस्तृत भाग में फैले हुए हैं। इनका उल्लेख तीर्थ प्रवृत्ति में हो चुका है। (२) शिल्प कला एवं व्यापार केंद्र—कुछ नगर व्यापार के कारण उन्नति कर गये हैं। (३) कुछ समृद्धिशाली नगर सरकारी राजधानियाँ हैं। इन नगरों में कल-कत्ता, बम्बई, मद्रास, दिल्ली, लाहौर (पाक०), कन्नौज, बक्सर, अम्बर, ईदर, अलवर, अमरावती, अजमेर, पेशावर (पाक०), मुल्तान, रेवाड़ी आदि मुख्य हैं। शिमला ऐसे पार्वत्य शीतल नगरों को सरकार ने ग्रीष्म कालीन राजधानी बना लिया है। अमरीका महाद्वीप का नाम समुद्र यात्रा का सूचक है। जिसके व्यापार, पर्यटन, राजकार्य आदि अनेक उद्देश्य हो सकते हैं।

इन भौगोलिक पर्यावरण का प्रभाव देशवासियों के जीवन पर प्रत्यक्ष दिखलाई दे रहा है। ऐसे प्राकृतिक वातावरण में भोग तथा योग दोनों ही सम्भव हो सकते हैं। किंतु उनकी इन धारणा ने कि भोग का अन्त है मृत्यु एवं योग का मुक्ति, उनको भौतिकवाद से अध्यात्मवाद की ओर प्रवृत्त कर दिया प्रतीत होता है। भौतिक जीवन की अपेक्षा उन्हें नैतिक जीवन विशेष रुचिकर हुआ है। क्योंकि उसमें धर्म की भावना रहती है, कर्म का योग रहता है और रहता है ज्ञान का संश्रय।

इस नामावली के आधारभूत भारतवर्ष का यह मानचित्र प्रस्तुत होता है (पृ० ३६६)।
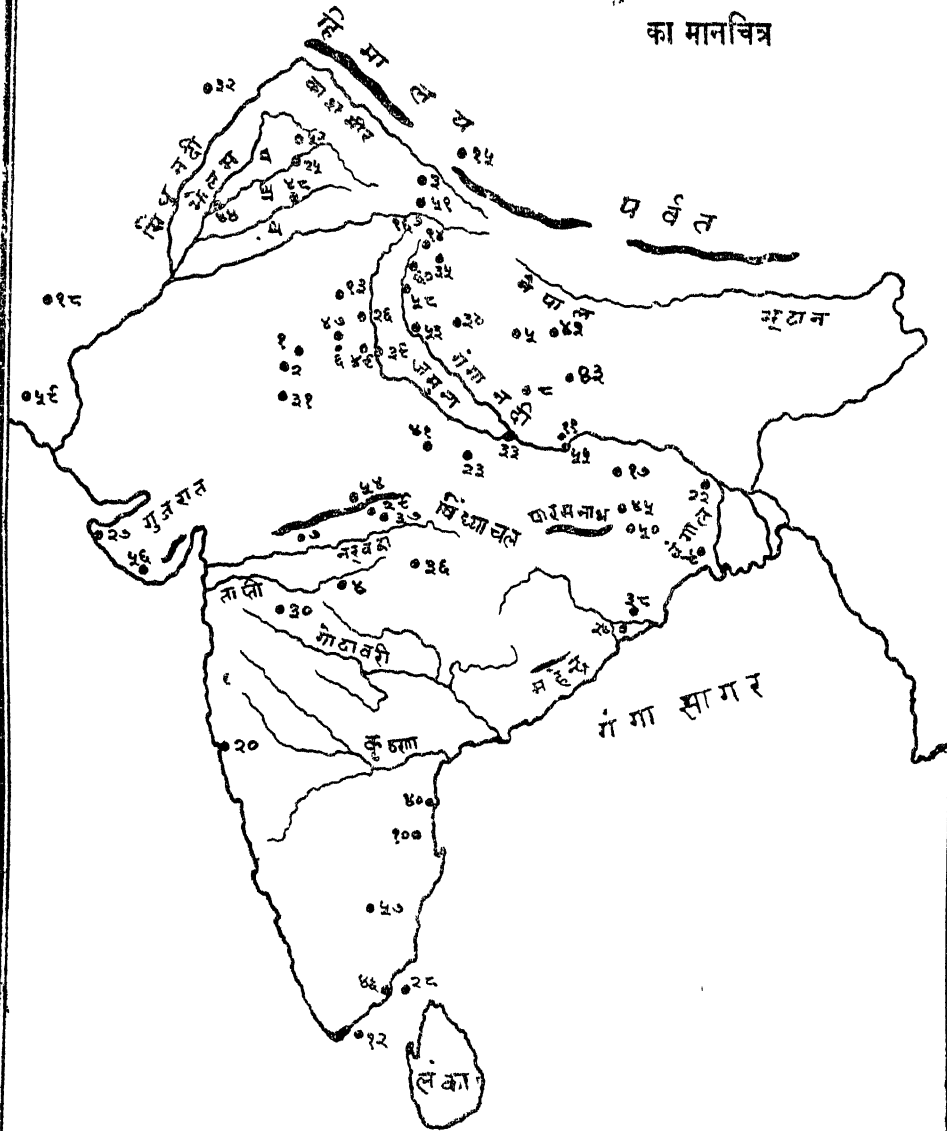
टिप्पणी—तीर्थ, नगर इत्यादि मुख्य-मुख्य स्थान अंकों से दिखलाये गये हैं। उनका विवरण अलग पृष्ठ पर देखिये।

निम्नलिखित स्थान भारतवर्ष के मानचित्र में अंकों द्वारा दिखलाये गये हैं :—

१—अम्बर
२—अजमेर
३—अमरनाथ
४—अमरावती
५—अयोध्या
६—अलवर
७—उज्जैन
८—कन्नौज
९—कलकत्ता
१०—कांची
११—काशी (वाराणसी)
१२—(कन्या) कुमारी
१३—कुरुक्षेत्र
१४—केदारनाथ
१५—कैलास
१६—गंगोत्री
१७—गया
१८—गंधार (कन्धार)
१९—गुजरात
२०—गोकरण
२१—गौरीशङ्कर
२२—चम्पा
२३—चित्रकूट
२४—जगन्नाथपुरी
२५—जम्बू
२६—दिल्ली (इंद्रप्रस्थ)
२७—द्वारका
२८—धनुष्कोटि
२९—धारा
३०—पञ्चवटी
३१—पुष्कर
३२—पेशावर
३३—प्रयाग (इलाहाबाद)
३४—बहराइच
३५—बद्रीनाथ
३६—बैजनाथ
३७—भीमाशङ्कर
३८—भुवनेश्वर
३९—मथुरा
४०—मद्रास
४१—महोबा
४२—मिथिला
४३—मुक्तिनाथ
४४—मुलतान
४५—राजगृह
४६—रामेश्वर
४७—रेवाड़ी
४८—लाहौर
४९—वृन्दावन
५०—वैद्यनाथ धाम
५१—शिमला
५२—श्रीरङ्गम
५३—संभल
५४—सांची
५५—सारनाथ
५६—सोमनाथ
५७—स्थानेश्वर (थानेश्वर)
५८—हरिद्वार
५९—हिंगलाज
६०—हृषिकेश (ऋषिकेश)

भारतीय संस्कृति की विशेषता

इस कंटकाकीर्ण कानन की शोधान्वेषण-दुर्गम यात्रा में अनेक जीवनमयी संस्कृति-सरिताओं को संतरण करना पड़ा जो अपने अमूल्य उपहार से एक विशाल, गम्भीर, एवं अद्भुत आर्य-सभ्यतार्णव के वक्षस्थल को अनुप्राणित कर रही हैं। भक्ति रामरस का अतिशय पुट होने से जिसका सलिल मलिन, अपावन एवं विषाक्त नहीं होने पाता; जो संयम, सदाचारादि सद्गुणो तथा सदुपदेशों के अनमोल मोतियो का आकर है, चतुर्दश विद्याएँ जिसकी चतुर्दश मणियाँ हैं; जो विचारों के यातायात का मुख्य साधन है; जो क्रूर क्रान्तियों तथा विषम विप्लवों में भी मर्यादोचित सीमा का कदापि उल्लङ्घन नहीं करता; जो सुशीतल, प्रकाशवती तथा सुकृतिमूला चन्द्रज्योत्स्ना-वेदात-शिक्षा की जन्म भूमि है; जो विश्वजनीन शांति-वर्षा का मूल स्रोत है तथा जो नामनिर्भरशीकरों का पुंजीकृत सौम्य रूप है, ऐसे रत्नाकर से कोई भी देश ऐश्वर्यशाली एवं गौरवान्वित हो सकता है। कौन कह सकता है कि ये अभिधान ऐसी सुन्दर, सुखद, शांतिप्रद एवं समृद्धिशाली संस्कृति की ज्योतिर्मयी गगन-गङ्गा के जाज्वल्यमान रत्न नहीं है। भारतीय संस्कृति का चारु चित्रण इनमें उद्भासित हो रहा है।

जिसे वेदों ने बीज रूप से इस पुण्य भूमि में वपन किया; आगमो ने अपने नूतन अनुसंधानों द्वारा जिसे प्रतिपादन कर अंकुरित किया; ऋषि मुनि आदि तपस्वी महात्माओं ने जिसे अपने बचनामृत से अभिसिंचन कर पल्लवित किया एवं रामकृष्णादि अवतारी महापुरुषों ने लोक-संग्रह की भावन से जिसे प्रसून-फलान्वित किया, वह आर्य-संस्कृति सत्यवती होने से दीर्घायुष्मती, शिव-संकल्पमयी होने से "सर्वभूत हितेरता" एवं सुन्दर स्वरुपिणी होने से सर्वप्राणवल्लभा होकर मानव-अंतःकरणों में विराज रही है। भूभृतराज हिमालय के उत्सङ्ग में, उत्तुङ्ग शृङ्गों की शीतल, सुन्दर एवं सुखद छाया में परिपोषित, परिवर्द्धित एवं परिपुष्ट भारतीय संस्कृति विश्व-सुख-शांति के निमित्त निश्चय ही मङ्गलवाद सिद्ध होगी।

: ४ :

शोध संबंधी अन्य तथ्य

नामों का प्रवृत्तिमूलक वर्गीकरण

कुछ आवश्यक तालिकाएँ तथा ग्राफ

अर्थ के संबंध में कुछ स्मरणीय बातें

लम्बे नामों के स्पष्टीकरण के कुछ नमूने

अतिरिक्त नामों की सूची

संदर्भ-ग्रंथ तथा ग्रंथकार

(य) नामों का प्रवृत्तिमूलक वर्गीकरण

१ धार्मिक प्रवृत्ति

ईश्वर—अकलंक अकलंकप्रसाद अकलू अक्षरसिंह अखंडसिंह अखंडानंद अखिलनिरंजन अखिलानंद अगमप्रकाश अगमसुखराय अगमस्वरूप अचिंत्यदेव अचिंत्यबहादुर अच्युतानंद अजातप्रसाद अतुलकुमार अद्वैतकुमार अद्वैतप्रसाद अद्वैतानंद अनंत अनघ अनाथनाथ अनादिलाल अनुपम अनुपमकुमार अनूप अनूपचंद्र अनूपदत्त अनूपदेव अनूपसिंह अपूर्वदयाल अपूर्वप्रकाश अपूर्वप्रसाद अभय अभेदानंद अमर अमलकांत अरूप अलख अलखचंद्र अलखदयाल अलखदेव अलखनाथ अलखनारायण अलखनिरंजन अलखप्रकाश अलखप्रसाद अलखबहादुर अलेश अविनाश अविनाशचंद्र अव्यक्तानंद अशरणशरण अशेष असीमकुमार असीमरंजन आत्माराम आनंदब्रह्मशाह आनंदरूप आनंदसागर आनंदस्वरूप ईशानंद ईश्वर ओजोमित्र ओम् ओम्दत्त ओम्देव ओम्नाथ ओम्नारायण ओम्निधि ओम्परम ओम्पालसिंह ओम्प्रकाश ओम्प्रकाशचंद्र ओम्प्रकाशसिंह ओम्प्रसाद ओम्प्रिय ओम्रत्न ओम्व्रत ओम्शरण ओम्सागर ओम्स्वरूप ओमानंद ओमेश्वरदयाल ओमेश्वरनाथ ओमेश्वरसहाय। कंतू कंतूप्रसाद करिमनराम करिमनलाल करुणाकर करुणानिधान करुणानिधि करुणापति करुणाभूषण करुणासागर कर्त्तारप्रसाद कर्त्तारसिंह कर्त्तासहाय कृपालदत्त कृपालसिंह कृपासिंधु केवल केवलप्रसाद केवलबहादुर केवलसिंह केवला केवलानंद केवलाप्रसाद। जीराजमल जीवधर जीवनंदनदास जीवनाथ जीवप्रकाश जीवबोधसिंह जीवराखनलाल जीवहर्षण जीवानंद जीवानंदलाल जीवाराम जीवालाल जीवेंद्रनाथ जीवेश्वर जीसुख जीसुखराय ज्ञानस्वरूप झलकनिरंजनस्वरूप। दयालशरण दयालु दाता दातादीन दाताप्रसाद दातासहाय दिलेशराय दिलेश्वर दिलेश्वरसिंह दीनदयाल दीनबंधु दीनानाथ दीनेश्वर दीनेश्वरदयाल दीनेश्वरलाल दुनियापति दुनियाराय। नित्यानंद नित्यानंदसिंह निरंकारकिशोर निरंकारदेव निरंकारनाथ निरंकारप्रसाद निरंकारबक्स निरंकारशरण निरंकारसहाय निरंकारस्वरूप निरंजन निरंजनकुमार निरंजनदेव निरंजननाथ निरंजनपाल निरजनप्रकाश निरंजनप्रसाद निरंजनलाल निरंजनसहाय निरंजनसिंह निरंजनस्वरूप निरंजनानंद निराकारसहाय निर्गुणसिंह निर्दोषानंद निर्भयशरण निर्भयस्वरूप निर्मल निर्मलदेव निर्मलप्रकाश निर्मलसिंह निर्मलस्वरूप निर्विकारप्रसाद निर्विकारशरण नूरदयाल। पतितपावन पतितपावनकुमार पतिपाल पतिराखन पतिराखनलाल पतिराज पतिराम परब्रह्मशिव परमकीर्तिशरण परमगुरुदयाल परमजीवराय परमदयालसिंह परमप्रकाश परमबल परमलाल परमसिंह परमसुख परमहंस परमहंसप्रसाद परमहंसभक्तसिंह परमा परमात्मा परमात्मादत्त परमात्मादीन परमात्मानंद परमात्माप्रकाश परमात्माप्रसाद परमात्माराम परमात्माशरण परमात्माशरणदीन परमात्मासहाय परमात्मास्वरूप परमानंद परमाराय परमेश्वर परमेश्वरचंद्र परमेश्वरदत्त परमेश्वरदयाल परमेश्वरदास परमेश्वरदीन परमेश्वरनाथ परमेश्वरप्रसाद परमेश्वरलाल परमेश्वरशरण परमेश्वरशरणदीन परमेश्वरसहाय परमेश्वरस्वरूप परमेश्वरानंद परिपूर्णानंद पीतमचंद[1] पीतमजी पीतमदास पीतमपुरी पीतमलाल पीतमसिंह पूर्णदत्त पूर्णदेव पूर्णप्रकाश पूर्णप्रताप पूर्णानंद प्यारेदास प्रकाशस्वरूप प्रजापति प्रणवकुमार प्रणवदेव प्रणवप्रकाश प्रणवानंद प्रभु प्रभुकुमार प्रभुचरण प्रभुदयाल प्रभुदास प्रभुदीन प्रभुदेव प्रभुनाथ प्रभुनारायण प्रभुप्रकाश प्रभुप्रताप प्रभुप्रसाद प्रभुलाल प्रभुसिंह प्रभुसुमिरनलाल प्राणजीवन

---

[1] दादू देखु दयाल को बाहरि भीतरि सोइ।
सब दिसि देखौं पीव कौं दूसर नाहीं कोइ॥

प्राणपति प्राणवल्लभ प्राणसुख प्राणेश्वरनाथ प्रियचरण प्रियतमचंद्र प्रियतमदास प्रियदत्त प्रियदेव प्रियनाथ प्रियमणि प्रियमित्र प्रियरंजन प्रियलाल प्रियशरणदेव प्रियसहाय प्रीतम प्रीतमकुमार प्रीतमदास प्रीतमसिंह बंधुदास बालमसिंह ब्रह्म ब्रह्मओंकार ब्रह्मकांत ब्रह्मकिशोर ब्रह्मकुमार ब्रह्मचरण ब्रह्मजाहिरसिंह ब्रह्मदत्त ब्रह्मदयाल ब्रह्मदास ब्रह्मदीन ब्रह्मदेव ब्रह्मदेवनारायण ब्रह्मदेवनारायणप्रकाश ब्रह्मदेवनारायणराय ब्रह्मदेवप्रसाद ब्रह्मदेवलाल ब्रह्मदेवसिंह ब्रह्मनंदनप्रसाद ब्रह्मनाथ ब्रह्मनारायण ब्रह्मनारायणप्रसाद ब्रह्मपाल ब्रह्मप्रकाश ब्रह्मप्रेम ब्रह्मभूषणप्रसाद ब्रह्मरत्न ब्रह्मवल्लभ ब्रह्मशरण ब्रह्मसिंह ब्रह्मसुमिरनलाल ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मानंद ब्रह्मेंद्र ब्रह्मेंद्रप्रतापसिंह मलिकदीन मलिकराज महबूबसिंह मायाकांत मालिक मौलासिंह। वरनाम विभुकुमार विमल विमलप्रसाद विमलशरण विरजानंद विशुद्धानंद विश्वपति विश्वपाल वेदकांत वेदनाथ वेदनिधि वेदपाल वेदमूर्ति वेदराज। श्रीओम् श्रीओम्भगवानचंद श्रीनिरंकारदेव श्रीब्रह्म श्रुतिकांत। सपूरनसिंह संपूर्णदत्त संपूर्णानंद सकलानंद सच्चिदानंद सच्चिदानंदकिशोर सच्चिदानंदप्रसाद सच्चिदानंदसहाय सच्चिदानंदसिंह सच्चिदानंदसिनहा सच्चिदानंदस्वरूप सज्जनसिंह सतगुरु सतगुरुचरण सतगुरुदयाल सतगुरुप्रसाद सतगुरुबक्ससिंह सतगुरुशरण सतगुरुसहाय सतगुरुसिंह सतगुरुसेवकसिंह सतनामसिंह सत्यनाम सत्यनामबक्ससिंह सत्यस्वरूप सदानंद सर्वगुणप्रसाद सर्वदानंद सर्वशक्तिमानलाल सर्वसुख सर्वेश्वरदयाल सांईदास सांईलाल[1] साहबदयाल साहबदास साहबदीन [illegible]प्रसाद साहबबक्शसिंह साहबराम साहबराय साहबलाल साहबशरण साहबशरणलाल साहबसिंह सा[illegible]ाहिबराजसिंह सृष्टिधर सृष्टिनारायण स्वयंप्रकाश स्वयंभू स्वयभूनाथ स्वामीचरण स्वामीदत्त स्वामीदयाल स्वामीदयालस्वरूप स्वामीदीन स्वामीदीनप्रसाद स्वामीनाथ स्वामीनारायण स्वामीप्रसाद स्वामीविहारी स्वामीशरण स्वामीस्वरूप। हंसनाथ हजूरसिंह हाकिम हाकिमचंद हाकिमलाल हाकिमसिंह हाकिमहुकुम हृदयनंदन हृदयनाथ हृदयनारायण हृदयप्रकाश हृदयप्रकाशराय हृदयमोहन हृदयराय हृदयस्वरूप हृदयानंद हृदयानंदसहाय हृदयेशचंद हृदेशनारायण हृदेश्वर।

ब्रह्मा—अंबुजकुमार अब्जनारायण कमलअयन कमलकिशोर कमलकुमार कमलदेव कमलदेवनारायणलाल कमलनाथ कमलनारायण कमलबासप्रसाद कमलासनसिंह कम्मललाल कर्त्तारनारायण कर्त्तारप्रसाद कर्त्तारसिंह कर्त्तासहाय गिराराम गिरेंद्र गिरेंद्रनाथ गिरेंद्रप्रतापसिंह। गिरेंद्रबहादुरसिंह गिरेंद्रराम गिरेंद्रसिंह चतुरानन चतुराननदास चतुराननप्रसाद चिंतामणि चिंतामणिसिंह धातृशरण नलिनीकुमार नियतिदेव पंकजलाल पदुमलाल पद्मकिशोर पद्मगर्भशाह पद्मदेव पद्मदेवलाल पद्मनारायण पद्मप्रसाद पद्माधारसिनहा परमेष्ठी परमेष्ठीदास प्रजापति बरमादीन बरमासिंह बागेश्वरदयाल बागेश्वरप्रसाद बागेश्वरलाल बानीराम बानीसुर बिरमनलाल बिरमलाल बीधा ब्रह्मदेव ब्रह्महंसनारायण ब्रह्मा ब्रह्मादत्त ब्रह्मानंद ब्रह्मालाल ब्रह्माशंकर ब्रह्मास्वरूप ब्रह्मेंद्रप्रतापसिंह भारतीराम मेधापति राजिवनारायणसिंह वागीश वागीशचंद्र वागीशदत्त वागीशनारायण वागीश्वर वाणीश वाणीशदत्त विद्याकांत विद्यानिवास विद्यामोहन विद्याराम विद्यासाहब विधिचंद्र विधिनारायण विमलेंद्र विमलेंद्रदास विमलेश विमलेशकुमार विरंचि विरंचीलाल विश्वकर्मा शारदाकांत शारदाराम श्रुतिदेव श्रुतिधर सरस्वतीनारायण सरस्वतीमणि सरोजकुमार सारसपाल सृष्टिनारायण हंसदेव हंसदेवलाल हंसध्वजसिंह हंसनाथ हंसनारायण हंसराज।

विष्णु—अच्युतमणि अजुगनारायण अनंतनारायण अनुग्रहनारायणसिंह अनुभवनारायण अनूपनारायण अपूर्वनारायण अमरनारायण अरविंदेक्षण अवतारनारायण अशोकविष्णु आदिपुरुष आदि-

---

[1] दादू सरवर सहज का तामें प्रेम तरंग।
तहँ मन झूले आतमा अपने साँई संग॥

पुरुष भगवान इंदिरारमण इकबालनारायण इकबालनारायणलाल इष्टनारायण उत्तमनारायण उपेंद्र उपेंद्रकुमार उपेंद्रदत्त उपेंद्रदेव उपेंद्रदेवनारायण उपेंद्रनाथ उपेंद्रप्रकाशचंद्र उपेंद्रप्रसाद उपेंद्रराज उपेंद्र-राम उपेंद्रवीरसिंह उपेंद्रशरण उपेंद्रसिंह ऐश्वर्यनारायणसिंह श्रीमश्रीधर श्रीमहरि कंवलधारीराय कमल-नयनसिंह कमलनेत्र कमलमोहन कमलाकांत कमलाचंद्र कमलानाथ कमलापति कमलापतिप्रसादसिंह कमलामोहन कमलासुख कमलेंद्र कमलेंद्रसिंह कमलेश कमलेशकुमार कमलेशचंद्र कमलेशदयाल कमलेशनारायण कमलेशमल कमलेश्वरसिंह कुमुदकांत कुमुदचंद्र कुमुदप्रसाद केवलनारायण कौस्तुभ-चंद्र कौस्तुभानंद गंगानारायण गजराम गजाधर गजाधरप्रसाद गजाधरसिंह गदाधर गदाधरप्रसाद गदाधरराम गदाधरराय गदाधरलाल गदाधरसिंह गयेंद्रनाथ गयेंद्रनारायण गरुड़ध्वजप्रसाद गुप्तारनाथ चक्री चक्रधर चक्रधरप्रसाद चक्रधरशरण चक्रधारीसिनहा चक्रपाणि चक्रपालसिंह चतुर्भुज चतुर्भुजनाथ चतुर्भुजनारायण चतुर्भुजप्रसाद चतुर्भुजसहाय चतुर्भुजाचार्य जगतनारायण जगतनारायणबहादुर जगतनारायणलाल जगतनारायणसिंह जगतपाल जगतारसिंह जगदीश जगदीशकिशोर जगदीशचंद्र जगदीशदत्त जगदीशनंदन जगदीशनाथ जगदीशनारायण जगदीशनारायणलाल जगदीशनारायणसिंह जगदीशप्रकाश जगदीशप्रताप जगदीशप्रसाद जगदीशबक्ससिंह जगदीशबहादुर जगदीशलाल जगदीश-वल्लभ जगदीशविहारी जगदीशशरण जगदीशसहाय जगदीशसिंह जगदीशस्वरूप जगदीश्वर जगदीश्वर-चंद्र जगदीश्वरनारायणसिंह जगदीश्वरप्रसाद जगदीश्वरशरण जगदीश्वराधार जगदीश्वरानंद जगदेव जगदेवनारायण जगदेवप्रसाद जगदेवराय जगद्धर जगद्धरप्रसाद जगधारी जगनायकसिंह जगनारायण जगन्नाथ जगन्नाथदयाल जगन्नाथदास जगन्नाथप्रसाद जगन्नाथबक्ससिंह जगन्नाथराम जगन्नाथलाल जगन्नाथस्वरूप जगन्नारायण जगपति जगपतिराम जगपतिसहाय जगपतिसिंह जगपाल जगपालकिशोर जगबंधुसिंह जगमूरत जगराजसिंह जगरूपसिंह जगेश्वर जगेश्वरदयाल जगेश्वरप्रसाद जगेश्वरशरण जनार्दन जनार्दनप्रसाद जनार्दनराय जनार्दनसिंह जनार्दनस्वरूप जनेश्वर जनेश्वरदास जनेश्वरप्रसाद जयकांत जय-नाथ जयनाथप्रसाद जयपति जयपाल जयरत्नसिंह जयविजयनारायण जयविजयनारायणसिंह जयेंद्र-नारायणसिनहा जयेंद्रलाल जागेश्वर जागेश्वरदयाल जागेश्वरनाथ जागेश्वरप्रसाद जैरक्खन जैराखन लाल ज्योतिषशरण तारन[1] तुलसीधर तुलसीनाथ तुलसीनारायण तुलसीरमण तुलसीवल्लभ त्रिजुगीदयाल त्रिजुगीनारायण त्रिभुवननारायण त्रिभुवनसुख त्रिलोकनारायण त्रिलोकीदत्त त्रिलोकीनारायण देव-नारायण देवनारायणप्रतापसिंह देवनारायणलाल देवनारायणसिंह देवप्रतापनारायणसिंह देवलोकसिंह धनंजय धनंजयप्रसाद धनंजयप्रसादराम धनंजयप्रसादसिंह धर्मप्रतापनारायणसिंह ध्रुवनाथ ध्रुवनारायण ध्रुवपति ध्रुवराज नरवरप्रसाद नरवरसिंह नरायन नरैना नरोत्तम नरोत्तमदास नरोत्तमप्रसाद नरोत्तम-लाल नरोत्तमसिंह नलिनविलोचन नागेंद्रनाथ नागेंद्रनारायण नारायण नारायणकिशोर नारायणचंद्र नारायणचंद्रलाल नारायणदत्त नारायणदास नारायणदीन नारायणदेव नारायणपति नारायणप्रसाद नारायणराम नारायणलाल नारायणविहारी नारायणशरण नारायणसहाय नारायणसिंह नारायणसेवक नारायणस्वरूप नारायणहरि नारायणाचार्य नित्यनारायण निर्भयनारायणसिंह पद्मकांत पद्मधर पद्मनाभ पद्मनाभप्रसाद पद्मपाणि पद्माकांत पद्माधरसिनहा पद्मापति पवित्रनारायण पवित्रपावन पुंडरीकाक्ष पुंडरीकाक्षाचार्य पुण्यदेव पुण्यदेवनारायणसिंह पुण्यदेवप्रसाद पुण्यश्लोक पुरुषोत्तम पुरुषोत्तमकुमार पुरुषोत्तमचंद्र पुरुषोत्तमदयाल पुरुषोत्तमदास पुरुषोत्तमदेव पुरुषोत्तमनाथ पुरुषोत्तमनारायण पुरुषोत्तम-प्रसाद पुरुषोत्तमभगवान पुरुषोत्तमलाल पुरुषोत्तमशरण पुरुषोत्तमसहाय पुरुषोत्तमसिंह पुरुषोत्तमस्वरूप प्रभुदेव प्रभुनारायण प्रसिद्धनारायण प्रसिद्धनारायणसिंह फणींद्रनाथ बक्सनारायणसिंह बदरीराम बद्री-धर बद्रीनाथ बद्रीनारायण बद्रीनारायणप्रसाद बद्रीनारायणलाल बद्रीनारायणसिंह बद्रीराजसेवकसिंह

---

[1] अर्थान्तर–कुब्जा।

बद्रीविशालराम बद्रीविशाललाल बिशंबर बिशंभरप्रसाद बिशन बिशनेंद्रनाथ बिशुनलाल बिश्नानंद बैंकटेश्वर भक्तवत्सल भक्तीशचंद्र भगवंत[1] भगवंतदयाल भगवंतप्रसाद भगवतराम भगवंतशरण भगवंत सिंह भगवतकिशोर भगवतचरण भगवतदत्त भगवतदयाल भगवतदास भगवतप्रसाद भगवतव्रत भगवत शरण भगवतसहाय भगवतसिंह भगवतस्वरूप भगवतानंद भगवतेंद्रप्रसाद भगवद्दास भगवन्ना भगव-न्नारायण भगवान भगवानदत्त भगवानदास भगवानदीन भगवाननारायण भगवानप्रकाश भगवान प्रताप भगवानप्रसाद भगवानबक्स भगवानमल भगवानशरण भगवानशरणसहाय भगवानसहाय भगवानसिंह भगवानस्वरूप भगेलूसिंह भगोलेसिंह भगोने भग्गनप्रसाद भग्गनमल भग्गूलाल मखदेव मधुसूदन मधुसूदनदत्त मधुसूदनदयाल मधुसूदनदास मधुसूदननारायणलाल मधुसूदनप्रसाद मधुसूदन-मुकुंद मधुसूदनलाल मनधारी महाजीतनारायण महानारायण महानारायणलाल माधव माधवकिशोर माधवकुमार माधवदास माधवदीन माधवनारायण माधवप्रसाद माधवमुकुन्द माधवराम माधवशरण माधवसहाय माधवेंद्रनारायण माधवेंद्रसिंह माधोराज माधोलाल माधोस्वरूप मायाराम मुकुन्द मुकुन्दचंद्र मुकुन्दचरण मुकुन्दनाथ मुकुन्दनारायण मुकुन्दप्रसाद मुकुन्दमनोहर मुकुन्दमाधव मुकुन्दमुरारी मुकुन्द-मोहन मुकुन्दराम मुकुन्दराय मुकुन्दलाल मुकुन्दवल्लभ मुकुन्दविहारी मुकुन्दसिंह मुकुन्दस्वरूप मुकुन्द-हरि मुकुन्दीलाल मुक्तनारायण मुनिप्राणविजय मुनीश मुनीशचद्र मुनीशनारायण मुनीशप्रताप मुनीश्वर मुनीश्वरदेव मुनीश्वरप्रसाद मुनीश्वरबक्ससिंह मुनीश्वरसिंह मुनीश्वरानंद मुनेश्वर मुनेश्वरकिशोर मुनेश्वरदत्त मुनेश्वरदयाल मुनेश्वरलाल मुनेश्वरशरण मुरहू मुराहूराम मुराहूसिंह यज्ञदेव यज्ञनारायण यज्ञराम यज्ञेशशरण यज्ञेश्वर यज्ञेश्वरप्रसादसिंह यागेंद्र यागेंद्रकुमार यागेंद्रनाथ यागेंद्रवल्लभ यागेंद्र-विहारीलाल यागेश्वरदत्त यागेश्वरप्रसाद रमाकांत रमाकांतप्रसाद रमाकातसिंह रमानंद रमानाथ रमानिवास रमापति रमापतिराय रमापतिलाल रमापतिसहाय रमाराम रमेंद्र रमेंद्रकुमार रमेंद्रदत्त रमेंद्रदयाल रमेंद्रप्रसाद रमेंद्रभूषण रमेंद्रसिंह रमेश रमेशचंद्र रमेशचंद्रप्रकाश रमेशदत्त रमेशदेव रमेशनाथ रमेशनारायण रमेशप्रतापनारायणसिंह रमेशप्रसाद रमेशबक्ससिंह रमेशबहादुर रमेशमोहन रमेशलाल रमेशविहारी रमेशशरण रमेशसिंह राजिवलोचन राजिवलोचनप्रसाद राजिवलोचनसिंह लक्ष्मीकांत लक्ष्मीनाथ लक्ष्मीनारायण लक्ष्मीनारायणलाल लक्ष्मीनारायणसिंह लक्ष्मीनिधि लक्ष्मीनिवास लक्ष्मीपति लक्ष्मीप्रकाश लक्ष्मीराजप्रसाद लक्ष्मीराम लक्ष्मीविलास लक्ष्मीविहारीलाल लक्ष्मीसहाय लक्ष्मेंद्र लक्ष्मेश्वरप्रसाद लखीचंद्र लखीराम लच्छीराम लच्छूराम लछीराम लोकराज लोकेंद्रनाथ लोलापति लोलासिंह लोलीराम विजयकांत विजयदेवनारायण विजयनरेश विजयनारायण विजयपाल विजय-पालसिंह विजयप्रतापनारायणसिंह विजयमुकुंद विजयराज विजयराजसिंह विजयराम विजयवल्लभ विजयेंद्रनाथ विजयेंद्रपालसिंह विजयेंद्रमोहन विजयेंद्रजीत विजेंद्रनाथ विजेंद्रनारायण विजेंद्रविहारी विजेंद्रशरण विठ्ठलदास विठ्ठलनाथ विठ्ठलराय विठ्ठलसिंह विमलदेव विमलनारायण विशुनअौतार विशेषनारायण विश्वंभर विश्वंभरदयाल विश्वंभरनाथ विश्वंभरप्रसाद विश्वंभरलाल विश्वंभरशरण विश्वंभरसहाय विश्वंभरानंद विश्वकांत विश्वदेव विश्वदेवप्रसाद विश्वधर विश्वनारायण विश्वपति विश्वपाल विश्वरूप विष्णु विष्णुकांत विष्णुकुमार विष्णुकृपाल विष्णुगोपाल विष्णुगोविंद विष्णुचंद्र विष्णुचरण विष्णुदत्त विष्णुदयाल विष्णुदास विष्णुदेव विष्णुदेवप्रसाद विष्णुदेवसिंह विष्णुघन विष्णुनाथ विष्णुनारायण विष्णुपाल विष्णुपुरी विष्णुप्रकाश विष्णुप्रसाद विष्णुप्रसादराय विष्णु-भगवान विष्णुमनोहर विष्णुमित्र विष्णुमुरारीलाल विष्णुराम विष्णुलालविहारी विष्णुशरण विष्णु-

---

[1] ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसश्श्रियः ।
ज्ञान वैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणा ॥
(विष्णु पुराण, अंश ६, अ० ५, श्लो० ७४)

सहाय विष्णुसेवक विष्णुस्वरूप[1] विष्णुस्वरूपप्रसाद वीरनारायण वीरनारायणसिंह वीरहरि वेंकटरमण वेंकटरमणसिंह वेंकटेश वेंकटेशचंद्र वेंकटेशनारायण वेंकटेशनारायणसिंह वेंकटेशप्रसादसिनहा वेंकटेश्वर वेंकटेश्वरचंद्र वेंकटेश्वरप्रसाद वेंकटेश्वरसिंह वैकुंठ वैकुंठचंद्र वैकुंठनाथ वैकुंठनाथराय वैकुंठनारायण वैकुंठनारायणसिंह वैकुंठप्रसाद वैकुंठराम वैकुण्ठविहारीलाल व्यंकटेश व्यंकटेशचंद्र व्यंकटेशनारायण व्यंकटेशप्रसाद व्यंकटेशसेवकसिंह शंखधर शांतरूप शांताकार शांतिस्वरूप शार्ङ्गधर शालिग्राम शिववल्लभ शिवहरि शिवहरिलाल शुद्धनारायण शुभनारायण शेषनाराण शेषराज शेषराम श्रीइंद्र श्रीकमलाकरजूदेव श्रीकरण श्रीकांत श्रीकातप्रसाद श्रीकांतभूषण श्रीकांतसेवकसिंह श्रीदेव श्रीदेव-प्रसाद श्रीदेवसिंह श्रीधर श्रीधरदयाल श्रीधरनारायण श्रीधरप्रताप श्रीधरप्रसाद श्रीधरानंद श्रीनंद श्रीनन्दन-राम श्रीनाथ श्रीनाथप्रसाद श्रीनाथलाल श्रीनाथशरण श्रीनाथसिंह श्रीनायक श्रीनारायण श्रीनारायणदास श्रीनारायणदेव श्रीनारायणराय श्रीनारायणसहाय श्रीनिकेत श्रीनिधि श्रीनिवास श्रीनिवासनारायण श्री-निवाससेवक श्रीनेति श्रीपति श्रीपतिकुमार श्रीपतिनारायण श्रीपतिनारायणराय श्रीपतिनारायणलाल श्रीपति नारायणसिंह श्रीपतिप्रसाद श्रीपतिराम श्रीपतिशरण श्रीपतिसहाय श्रीपाल श्रीपालसिंह श्रीभगवत श्रीभगवतदत्त श्रीभगवतनारायण श्रीभगवतलाल श्रीभगवान श्रीभागवतनारायण श्रीभावनश्रीभूषण श्रीमंतनारायण श्रीमणि श्रीमनोहर श्रीमन्नारायण श्रीमाधवशरण श्रीमोहन श्रीरंगजी[2] श्रीरंगनाथ श्रीरंगनारायणसिंह श्रीरंगबहादुर सिंह श्रीरंगसिंह श्रीरंजन श्रीरत्न श्रीराज श्रीवल्लभ श्रीवल्लभसहाय श्रीविलास श्रीविलाससिंह श्रीविहारी-जीदास श्रीशचंद्र श्रीशप्रसाद श्रीसदातन श्रीसहाय श्रुतिनाथ श्रुतिनारायण श्लोकनारायण श्वेत-वैकुंठ सत्यकांत सत्यदेव सत्यदेवनारायण सत्यदेवप्रसाद सत्यदेवलाल सत्यनारायण सत्यनारायणप्रसाद सत्यनारायणराय सत्यनारायणलाल सत्यनारायणसिंह सदहरीलाल समुद्रनारायण सलिका सलेकूसिंह सारङ्गधर सालिकचंद्र सालिकलाल सालिगराम सलिगरामलाल सिरपतराय सुदर्शनराम सुदर्शनराय सुदिष्टनारायणसिंह सुदृष्टनारायण सुधनारायण सुरतिनारायणसिंह स्मृतिनारायण स्वरूपनारायण स्वर्गवीरप्रसाद हयवरप्रताप हयवरप्रसाद हरि[3] हरिओम् हरिओम्प्रकाश हरिओम्सहाय हरिकरणप्रसाद हरिकांत हरिकिशनदास हरिकिशोर हरिकुमार हरिकृपाल हरिकृष्ण हरिकृष्णदयाल हरिकृष्णनारायण हरिकृष्णराय हरिकृष्णसिंह हरिगुन हरिगुनराम हरिगोपालदास हरिचरणवल्लभ हरिजीसिंह हरिज्ञान हरिदत्त हरिदत्तनारायण हरिदत्तराय हरिदेव हरिनदन हरिनंदनप्रसाद हरिनन्दनसिंह हरिनाथ हरिनाथ-प्रसाद हरिनाथराय हरिनाथसिंह हरिनाम हरिनामदास हरिनामनारायण हरिनारायण हरिनारायणदास हरिनिवास हरिपाल हरिपालदास हरिपालसिंह हरिप्रकाश हरिप्रतापसिनहा हरिप्रपन्न हरिप्रसाद हरिबख्स-सिंह हरिबलीलाल हरिबहादुर हरिभगवान हरिभजनदास हरिभजनलाल हरिभूषण हरिमंगल हरिमंगल-प्रसाद हरिमंगललाल हरिमाधव हरिमुकुन्ददास हरिमूर्तिसिंह हरिमोहन हरिमोहनदयाल हरिमोहननाथ हरिमोहनलाल हरिमोहनशरण हरिमोहनसहाय हरियश हरिया हरिरत्न हरिरमण हरिराज हरिराजकृष्ण हरिराजविहारी हरिराजशरण हरिराजसिंह हरिराजस्वरूप हरिराम हरिरूप हरिलाल हरिलालदास हरि-

---

१ सशंखचक्रं सकिरीटकुंडलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् ।
सहारवक्षः स्थलकौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ॥

२ बार बार बर मागऊं हरषि देहु श्रीरंग ।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग

३ हरति योगिचेतांसीति हरिः
हरिर्हरति पापानि दुष्ट चित्तैरपिस्मृतः
अनिच्छयापि संस्पृष्टो दहत्येवहि पावकः

वल्लभ हरिविलास हरिविलासराय हरिविष्णु हरिविहारीलाल हरिशरण हरिशरणानन्द हरिसहाय हरिसिंह हरिसुख हरिसुमिरन हरिसेवकसिंह हरिस्वरूप हरींद्र हरींद्रकुमार हरींद्रदेव हरींद्रनाथ हरींदनारायण हरींद्रभूषण हरेराज।

शिव—अंबधर अंबाशंकर अंबिकाकांत अंबिकाशंकर अंबिकेश अंबिकेश्वरप्रताप अंबिकेश्वरप्रसाद अक्षरसिंह अखंडसिंह अखण्डानंद अखिलेश अखिलेशचंद अखिलेशदत्त अखिलेश्वर अखिलेश्वरदत्त अखिलेश्वरनाथ अखिलेश्वरप्रसाद अखिलेश्वरसहाय अघोरनाथ अचलनाथ अचलेश्वर अचलेश्वरनाथ अचलेश्वरप्रसाद अजयशंकर अदेशप्रसाद अद्भुतनाथ अद्रिनारायणसिंह अनंतशंकर अनुग्रहशंकर अभयंकर अभय अभयचंद अभयचरन अभयचरणलाल अभयदत्त अभयदेव अभयनंदन अभयनंदनप्रसाद अभयनाथ अभयनारायण अभयपाल अभयपालसिंह अभयप्रकाश अभयराजसिंह अमरनाथ अमरेश अमरेशप्रसाद अमरेशसिंह अमरेश्वर अमरेश्वरप्रसाद अमृतशंकर अमृतस्वरूप अमृतानंद अर्द्धेंदुभूषणराय अलोपीनारायण अविनाश अविनाशचंद्र अविनाशविहारी आदित्येश्वर आद्यानाथ आद्याशंकर आनदकरण आनंदकांत आनंदशंकर आनंदीकांत आनंदीश्वरप्रसाद आनंदेश्वरसहाय आर्येंद्र आर्येंद्रपाल आशाकरण आशाकरणसिंह आशापालसिंह आशाकांत आशाराम आशाशंकर आशुतोष आशुतोषनारायण आशुतोषपाल आशेश्वरदयाल आसासिंह इंदुकांत इंदुभूषण इंदुशेखर इंदेश्वर इंदेश्वरदयाल इंद्रेशचरण इंद्रेश्वर इंद्रेश्वरनारायण इंद्रेश्वरप्रसाद इकबालशंकर इलाचंद्र इष्टनाथ ईशदत्त ईशनलाल ईशनारायण ईशानंद ईशानचंद्र ईश्वर ईश्वरकृपाल ईश्वरदत्त ईश्वरदयाल ईश्वरदयालराय ईश्वरदयालसिंह ईश्वरदास ईश्वरदीन ईश्वरदेव ईश्वरदेवप्रसाद ईश्वरदेवसिंह ईश्वरनाथ ईश्वरनारायण ईश्वरप्रकाश ईश्वरप्रसाद ईश्वरबक्ससिंह ईश्वरलाल ईश्वरशरण ईश्वरशरणदीन ईश्वरशरणलाल ईश्वरसहाय ईश्वरसिंह ईश्वरस्वरूप ईश्वरानद ईश्वरीनारायण उग्र उग्रदयाल उग्रनाथ उग्रनारायण उग्रराय उग्रहसिंह उग्रेंद्रसिंह उत्तमसहाय उदयनारायणशंकर उपेंद्रशंकर उमाकांत उमाकांतराय उमानंद उमानाथ उमानायकसिंह उमापति उमापाल उमामहेश उमाराम उमाशंकर उमाशंकरप्रसाद उमाशंकरराय उमाशंकरसिंह उमेंद्र उमेंद्रबिहारी उमेंद्रस्वरूप उमेश उमेशचंद्र उमेशचंद्र देव उमेशदत्त उमेशदयालसिंह उमेशशरण उमेश्वरदयाल उमेश्वरनारायण उमेश्वरप्रसादसिंह ऋषीश्वर ऋषीश्वरनाथ ऋषेश्वरदयाल एकनाथ एकराज एकराम ओंकार ओंकारदत्त ओंकारदयाल ओंकारदेव ओंकारनाथ ओंकारनारायण ओंकारपाल ओंकारप्रकाश ओंकारप्रसाद ओंकारबहादुर ओंकारमल ओंकारमुनिस्वामी ओंकारराम ओंकारलाल ओंकारशंकर ओंकारशरण ओंकारसच्चिदानंद ओंकारसहाय ओंकारस्वरूप ओंकारेश्वर ओमूशंकर ओमेश्वरदयाल ओमेश्वरनाथ ओमेश्वरसहाय औसानसिंह औसानेसर कटेश्वर कटेश्वरनाथ कटेश्वरप्रसाद कपर्दीनाथ कपिलेश्वर कपिलेश्वरशरण कमलशंकर कमलाशंकर कमलेश्वरदयाल कमलेश्वरप्रसाद कमलेश्वरराम कमलेश्वरराय कमलेश्वरस्वरूप कमलेश्वरानंद कमलेश्वरीनारायण करुणाशंकर कलेसर कल्पेश्वरप्रसाद कल्याणकांत कल्याणदेव कल्याणपति कविलाससिंह कांतानाथ कांताराम कांतिनारायण कांतिमोहन कांतिवल्लभ कांतेश्वरनाथ कामताराय कामताशंकर कामतासिंह कामदनाथ कामाख्य नारायणसिंह कामेश्वर कामेश्वरदयाल कामेश्वरदास कामेश्वरनाथ कामेश्वरप्रसाद कामेश्वरलाल कालीकांत कालीनाथ कालीराम कालीशंकर कालीशंकरदयाल कालीशंकरप्रसाद कालीसहाय कालीसिंह कालीसुंदर कालेंद्रप्रसाद कालेश्वरदयाल कालेश्वरप्रसाद कालेश्वरराय कालेश्वरस्वरूप काशीनरेश काशीनाथ काशीनारायण काशीराम काशीविश्वंभर काशीविश्वनाथ काशीशंकर किरणशंकर कुटेश्वरनाथ कुलेश्वरराम कुशलेंद्रसिंह कुशेश्वर कुशेश्वरप्रसाद कुशेश्वरसिंह कूरेश्वरप्रसाद कृपलेश्वर कृपाशंकर कृष्णमहेश कृष्णशंकर कृष्णेश्वरप्रसाद कृष्णेश्वरस्वरूप केंद्रपाल केदारधर केदारनाथ केदारनाथदास केदारनारायण केदारराम केदारविहारी केदारेश्वर कैलाशचंद्र कैलाशनाथ कैलाशनाथप्रसाद कैलाशनारायण कैलाश-

पति कैलाशपतिनाथ कैलाशपतिलाल कैलाशपर्वतनारायण कैलाशबहादुर कैलाशविहारी कैलाशबिहारी-दास कैलाशबिहारीराय कैलाशबिहारीलाल कैलाशभानु कैलाशभूषण कैलाशमूर्ति कैलाशराय कैलाश-शंकर कैलाशसिंह कैलाशी कैलासीप्रसाद कोतवालेश्वरप्रसाद कौलेशकुमार कौलेश्वर कौलेश्वरदयाल कौलेश्वरप्रसाद क्षमाधर क्षमानारायण क्षमापति क्षमापाल क्षेत्रनाथसिनहा क्षेत्रपाल क्षेमकरणदास क्षेम-नाथ क्षेमपाल खेतपालसिंह खेद्हरण खेमकरन खेमकरनलाल खेमचंद खेमनारायण खेमपाल खेमराज खेमसिंह खेमसुंदरनारायणसिंह खेमेश्वर खेमेश्वरसहाय खेरेश्वर गंगागिरीश गंगादेव गंगाधर गंगाधर-दास गंगाधरनाथ गंगाधारीसिंह गगानाथ गंगानारायण गंगाराम गंगावल्लभ गंगाशंकर गंगेश्वर गंगेश्वरप्रसाद गणेशशंकर गनपतेश्वर गनपतेश्वरप्रसाद गनपतेश्वरबहादुर गनेशपाल गिरिजानारायण गिरिजापति गिरिजापतिराय गिरिजाभूषण गिरिजाशंकर गिरिजाशंकरपालसिंह गिरिजेशनारायण गिरिजेशबहादुरसिंह गिरिजेशसिंह गिरींद्र गिरींद्रनाथ गिरींद्रराम गिरीशचंद्र गिरीशनाथ गिरीशनारायण गिरीशनारायणसिंह गिरीशपति गिरीशबहादुर गिरीशमोहन गिरीशवल्लभ गिरीशविहारीलाल गुटेश्वर गुणेश्वर गुप्तनाथ गुप्तेश्वर गुप्तेश्वरनाथ गुप्तेश्वरप्रसाद गुप्तेश्वरराय गुप्तेश्वरलाल गैबीनाथ गोकरणनाथ गोदावरीश गोपालमहादेव गोपालशंकर गोपेश्वर गोपेश्वरनाथ गोरखेंद्रबहादुरसिंह गोली राम गोविंदशंकर गौरशंकर गौरशंकरपाल गौरशंकरलाल गौरसिंह गौरीकांत गौरीनाथ गौरीराम गौरी-शंकर गौरीशंकरप्रसाद गौरीशंकरराय गौरीशंकरलाल गौरीशंकरशरणसिंह गौरीशंकरसिंह गौरीश्वर गौरीश्वरदयाल चंडीनाथ चंडीपाल चंडीराम चंद्राखन चंद्रकरण चंद्रकांत चंद्रकांतदेव चंद्रकेश चंद्रकेशराय चंद्रकेश्वर चंद्रकेश्वरप्रसादनारायणसिंह चंद्रचूड़ चंद्रचूड़प्रसाद चंद्रचूड़मल चंद्र-चूड़ामणि चंद्रचूरसिंह चंद्रधर चंद्रपाल चंद्रपालकुमार चंद्रपालसिंह चंद्रप्रभाशंकर चंद्रभाल चंद्रभालप्रसाद चंद्रभावन चंद्रभूषण चंद्रभूषणधर चंद्रभूषणनारायणशाह चंद्रभूषणलाल चंद्रभूषणशरण चंद्रभूषण-सिंह चंद्रमणि चंद्रमणिप्रसाद चंद्रमणिलाल चंद्रमुकुट चंद्रमौलि चंद्रमौलीश्वरप्रसाद चंद्रवल्लभ चंद्र-शंकर चंद्रशेखर चंद्रशेखरदेव चंद्रशेखरप्रसाद चंद्रशेखरसिंह चंद्रेंद्रबहादुर चंद्रेशसिंह चंद्रेश्वर चंद्रेश्वरप्रसाद चंद्रेश्वरशंकर चक्रेश्वर चक्रेश्वरकुमार चक्रेश्वरप्रसाद चक्रेश्वरलाल चक्रेश्वरसिंह चाँदकरण चित्तेश्वरसिंह चिरमौलीराय छितेश्वरदास जंबूदास जंबूप्रसाद जगतेश्वरीसहाय जगदंबा-नारायण जगदंबापति जगदीशशंकर जगनेश्वर जगनेश्वरदयाल जगबंधन जगबंधनराम जगेश्वर जगेश्वरप्रसाद जगेश्वरशरण जटाधर जटाशंकर जटाशंकरपति जटाशंकरप्रसाद जतींद्रप्रसाद जतींद्रराम जतेंद्र जमुनाशंकर जयंतीमोहन जलेश्वर जलेश्वरनाथ जलेश्वरनाथराय जलेश्वरसिंह जाग्रतेश्वर जाह्नवीशंकर जितेंद्रनाथ जीवनशंकर जीवेश्वर जोगदेव जोगींद्रनारायण जोगींद्रलाल जोगेंद्रप्रसाद जोगेंद्रसिंह जोगेशचंद्र जोगेश्वरप्रसाद ज्योतिशंकर ज्वालाशंकर झलकनिरंजनस्वरूप टप्पेनाथ टिके-श्वर टीलेश्वर टीलेश्वरराय डेलेश्वर तपेशचंद्र तपेश्वर तपेश्वरदत्त तपेश्वरराम तपेश्वरलाल तपेश्वर-सिंह तपेश्वरीनारायण तरुणेंदुशेखर तामेश्वर तामेश्वरप्रसाद तामेश्वरसिंह तारकेश्वर तारकेश्वरनाथ तारकेश्वरप्रसाद तारकेश्वरलाल तारकेश्वरसिंह ताराकांत ताराचंद्र ताराचंद्रदत्त तारानाथ तारापति ताराराम ताराशंकर तारासिंह तिलेश्वरसिंह तीरी तुंगनाथ तेजेश्वरप्रसाद त्रिंबक त्रिंबकलाल त्रिजुगीनाथ त्रिनाथदास त्रिनेत्र त्रिनेत्रप्रसादसिंह त्रिपुरारी त्रिपुरारीनाथ त्रिपुरारीबक्ससिंह त्रिपुरारीराम त्रिपुरारी-लाल त्रिपुरारीशंकर त्रिपुरारीशरण त्रिवेणीशङ्कर त्रिभुवननाथ त्रिभुवनशङ्कर त्रिलोकनाथ त्रिलोकनाथ-देव त्रिलोकनाथशरण त्रिलोकीनाथ त्रिलोचन त्रिलोचनदत्त त्रिलोचनप्रसाद त्रिशूलधारी त्रैलोक्यनाथ त्र्यंबकदत्त त्र्यंबकनाथ त्र्यंबकेश्वर त्र्यंबकेश्वरप्रसाद दक्षिणामूर्ति दक्षिणारंजन दयाशंकर दयाशंकरप्रसाद दयाशङ्करलाल दिगंवर दिगंवरचंद दिगंवरदत्त दिगंवरदयाल दिगंवरनाथ दिगंबरप्रसाद दिगंवरराम दिगंवरलाल दिगंवरसिंह दिनमणिशंकर दिव्यानंद दिव्यानंदविहारी दीनूशङ्कर दीनेश्वरदयाल दीनेश्वर-लाल दुग्धराम दुर्गाकांत दुर्गाचंद्र दुर्गानारायणसिंह दुर्गामाधव दुर्गाविनायकप्रसाद दुर्गाशङ्कर दुर्गा-

शंकरप्रसाद दुर्गाशङ्करप्रसादसिंह दुर्गाशाह दुर्गेशप्रतापनारायण दुर्गेशप्रसाद दुर्गेशशङ्कर दूधनाथ दूधराज दूधेश्वरप्रसाद देवपतीशनंदन देवमणि देवशङ्कर देवसिंह[१] देवीनाथ देवीनारायण देवीराम देवीशङ्कर देवीसहाय देवीसिंह देवेश्वर देवेश्वरप्रसादसिंह देवेश्वरसिंह दोदराज द्वीपधर धारेश्वर धुरकंडीराय धूर्जटी धूर्जटीप्रसाद नंदकेश्वर नंदशङ्कर नंदावल्लभ नंदीनाथ नंदेश्वर नंदेश्वरदयाल नंदेश्वरप्रसाद नगनारायण नगेंद्रनाथ नगेंद्रनारायण नगेंद्रप्रसाद नर्वदाशङ्कर नर्वदेश्वर नर्वदेश्वरनाथ नर्वदेश्वरप्रसाद नर्वदेश्वरसहाय नवनाथलाल नागभूषण नागमणिलाल नागेंद्रभूषण नारायणशंकर नित्यानंद नित्यारञ्जनबहादुर निरीहशंकर निर्भयनाथ निष्कामेश्वर निहालकरण निहालशंकर नीतीश्वरप्रसाद नीलकंठ नीलकंठप्रसाद नैनीशङ्कर पंचानन पंचमुखीलाल पञ्चवदनलाल पटेश्वरीभूषण पंडेश्वरीनाथ पदुमशङ्कर पन्नाशङ्कर परब्रह्मशिव परमेश्वर परमेश्वरचंद्र परमेश्वरदत्त परमेश्वरदयाल परमेश्वरदास परमेश्वरदीन परमेश्वरनाथ परमेश्वरप्रसाद परमेश्वरलाल परमेश्वरशरण परमेश्वरशरणदीन परमेश्वरसहाय परमेश्वरस्वरूप परमेश्वरानंद परमेश्वरीनारायण परमेश्वरीवल्लभ पर्वतेश्वरलाल पशुपति पशुपतिनाथ पशुपतिप्रसाद पशुपतिशरण पशुपतिसहाय पाटेश्वर पातालेश्वरनाथ पार्थिवेश्वरप्रसाद पार्थेश्वरप्रसाद पार्वतीनाथ पार्वतीराम पार्वतीशङ्कर पिनाकीदत्त पूरणशङ्कर प्यारेशङ्कर प्रपन्ननाथ प्रभाकांत प्रभाचंद्र प्रभाशङ्कर प्रभुशङ्कर प्रभुशङ्करराय प्रमेशनारायण प्रमेशसिंह प्रमेशकुमार प्रमेशचंद्र प्रमोदशङ्कर प्रसन्नदेव प्राणपतेश्वरीनारायण प्रेमशङ्कर प्रेमशङ्करलाल प्रेमहृदयशङ्कर प्रेमोशङ्कर फूलशङ्कर फूलेश्वर फूलेश्वरसिंह बंवेश्वरप्रसाद बंभोलीराम बंभोलेनाथ बटुकदेवपति बटुकी बनवारीशङ्कर बरखंडेश्वर बरमेश्वर बलकेश्वरप्रसाद बलरमेंद्रनाथ बलेशचंद्र बलेश्वरनाथ बलेश्वरराम बालकेशनारायण बालशङ्कर बालानंद बालाराम बालीशंकर बालेंदुधर बालेंदुभूषणसिंह बालेंद्र बालेश्वर बालेश्वरचंद्र बालेश्वरदयाल बलेश्वरदास बालेश्वरनाथ बालेश्वरप्रसाद बालेश्वरराय बालेश्वरलाल बालेश्वरसहाय बालेश्वरसिंह बालेश्वरस्वरूप बीजधर बीजासिंह बुंदेश्वरसिंह बैजनाथ बैजनाथप्रसाद बैजनाथराय बैजनाथसहाय बैजनाथसिंह ब्रह्मओंकार ब्रह्ममहेश ब्रह्मशङ्कर ब्रह्मशङ्करलाल ब्रह्माशङ्कर ब्रह्मेश्वर ब्रह्मेश्वरदयाल ब्रह्मेश्वरनाथ ब्रह्मेश्वरप्रसाद भंगभोला भंजूराम भंबूलचंद्र भक्तीशशङ्कर भगवतीधर भगवतीपति भगवतीसहाय भगवानशङ्कर भदेश्वर भद्दर भद्रजित भद्रदत्त भद्रपाल भद्रपालसिंह भद्रसेन भद्रेश्वरसिंह भवदत्त भवदेव भवनाथ भवानंद भवानीवल्लभ भवानीशङ्कर भवानीशङ्करसहाय भवानीशाह भालचद्र भामाशङ्कर भीमशङ्कर भीमाशङ्कर भीलचंद्र भोलेश्वरानंद भुजंगभूषण भुलई भुलईप्रसाद भुलईराम भुलईसिंह भुलुआ भुल्लनदास भुल्लनप्रसाद भुल्लनसिंह भुल्लू भुवनेश भुवनेशकुमार भुवनेशचंद्र भुवनेश्वर भुवनेश्वरनाथ भुवनेश्वरपति भुवनेश्वरप्रसाद भुवनेश्वरराम भुवनेश्वरराय भुवनेश्वरसहाय भुवनेश्वरस्वरूप भूतेंद्रकुमार भूमेश्वरशरण भूमेश्वरसिंह भूलराजसिंह भूला भूलीराम भूलेश्वर भैरवदत्त भैरवदास भैरवदीन भैरवनंदन भैरवनाथ भैरवनारायण भैरवप्रसाद भैरवराज भैरवराजदत्त भैरवलाल भैरों भैरोंदयाल भैरोंप्रसाद भैरोंसिंह भोगेश्वप्रसाद भोला भोलादत्त भोलादेव भोलानंद भोलानाथ भोलानाथलाल भोलानाथसिंह भोलाप्रसाद भोलाबक्स भोलाबाबा भोलाबाबू भोलाराम भोलाराय भोलालाल भोलाशंकर भोलाशरण भोलासिंह भोलीप्रसाद भोलूसिंह भोलेराम भोलेराय भोलेश्वर भोलेश्वरनाथ मंगलाधर मंगलामोहन मंगलेश्वर मंगलेश्वरदयाल मंगलेश्वरसिंह मंथनप्रसाद मखसूदन मखसूदनदास मखसूदनसिंह मणिशङ्कर मणिशङ्करलाल मणींद्रप्रसाद मणींद्रभूषण मणींद्रलाल मदनदहन मदनमहेश मदनसूदनलाल मदनेश्वरशरण मदनेश्वरीराय मनकामेश्वरनाथ मनमोहनशङ्कर मनमोहनशङ्करलाल

---

[१] दक्षिणे पुरतः सिंह समग्रं धर्ममीश्वरम्
वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम्
(दुर्गासप्तशती वैकृतिक रहस्य पृ० २५५)

मनशङ्कर मनसाराम मनसाशङ्कर मनिराजराम मनीराम मनेश्वरराम मयंकमोहन मयंकरंजन मयाशङ्कर मल्लिकार्जुनदेव मवानीराम महादेव महादेवनारायण महादेवप्रसाद महादेवराम महादेवलाल महादेवशाह महादेवसिंह महादेवस्वरूप महारुद्रसिंह महाशङ्कर महेंद्रशङ्कर महेश महेशकांत महेशचंद्र महेशदत्त महेशनंदन महेशनारायण महेशनारायणसिंह महेशप्रतापबहादुर महेशप्रसाद महेशप्रसादसिनहा महेशबल महेशबहादुर महेशमुनि महेशलाल महेशविहारी महेशविहारीलाल महेशशङ्कर महेशसिंह महेशस्वरूप महेशानंद महेशेंद्रशङ्कर महेश्वर महेश्वरकांत महेश्वरदयाल महेश्वरदास महेश्वरनाथ महेश्वरप्रसाद महेश्वरवत्ससिंह महेश्वरसिंह महेश्वरानंद महेश्वरीनारायण माताराम मातावरसिंह मातुराय माधोशङ्करमायाकांत मायाशङ्कर मायाशंकरलाल मित्रेश मुक्तिनाथ मुक्तिनाथशरण मुक्तिनाथसिंह मुक्तेंद्रप्रतापसिंह मुक्तेशदत्त मुक्तेश्वर मुक्तेश्वरदयाल मुक्तेश्वरप्रसाद मुक्तेश्वरराम मुक्तेश्वरराय मुक्तेश्वरीमोहनसिंह मुनिशङ्कर मुनींद्रनाथ मुनींद्रनाथनारायण मुनींद्रनाथराम मुनींद्रप्रताप मुनींद्रप्रसाद मुनींद्रबहादुर मुनींद्रसिंह मुनींद्रानन्द मुरारीशङ्कर मूकेश्वर मूलेश्वरसिंह मृगेंद्रनाथ मृत्युंजय मृत्युंजयनारायण मृत्युंजयनारायणलाल मृत्युंजयप्रतापसिंह मृत्युंजयप्रसादसिनहा मृत्युंजयसहायलाल मेखरी मेदिनिशङ्कर मेधापति मोहनशङ्कर मौलिचंद्र यतींद्र यतींद्रनाथ यतीशचंद्रराय यतीशनारायण यमुनाशङ्कर यादवेंद्रशङ्कर युगेश्वर युगेश्वरप्रसाद योगपाल योगराज योगाबरसिंह योगींद्रचंद्र योगींद्रपति योगींद्रनन्द योगीश्वरप्रसाद योगेंद्र योगेंद्रकुमार योगेंद्रचरणलाल योगेंद्रदयाल योगेंद्रनाथ योगेंद्रनारायण योगेंद्रनारायणलाल योगेंद्रपाल योगेंद्रप्रकाश योगेंद्रप्रसाद योगेंद्रबहादुर योगेंद्रमुनि योगेंद्रलाल योगेंद्रविहारीलाल योगेंद्रसिंह योगेश योगेशनारायण योगेशवीरप्रसाद योगेश्वर योगेश्वरदत्त योगेश्वरदयाल योगेश्वरप्रसाद योगेश्वरस्वरूप रणछोरशङ्कर रत्नशङ्कर रत्नेश्वर रत्नेश्वरप्रसाद रमाशङ्कर रमाशङ्करप्रसाद रमाशंकरलाल रमेशप्रसाद रमेशशंकर रविकरण रविशङ्कर रविशङ्करप्रसाद राजशङ्कर राजाशारदामहेशप्रसादसिंहशाह राजेंद्रशङ्कर राजेश्वरीशंकर रामकलेश्वर राममहेशलाल रामरुद्र रामशंकर रामशङ्करराम रामशङ्करलाल रामशम्भूशरण रामेश रामेश्वर रामेश्वरचंद्र रामेश्वरदत्त रामेश्वरदयाल रामेश्वरदास रामेश्वरदीन रामेश्वरनारायण रामेश्वरप्रतापसिंह रामेश्वरप्रसाद रामेश्वरलाल रामेश्वरशरण रामेश्वरसहाय रामेश्वरसिंह रायकैलाशनाथबली रायगोपेश्वरबली रायमहेशचरणसिनहा रुद्र रुद्रदत्त रुद्रदेव रुद्रनारायण रुद्रनारायणप्रसाद रुद्रपाल रुद्रपालसिंह रुद्रप्रकाश रुद्रप्रताप रुद्रप्रतापनारायण रुद्रप्रतापसिंह रुद्रप्रसाद रुद्रमणि रुद्रमोहन रुद्रमित्र रुद्रसिंह रुद्रहरि रुद्रानन रुद्राराध्य रुद्रेंद्रपालसिंह रुद्रेश्वरप्रसादसिंह रूदल रूदा रूपमहेश रेवतीशङ्कर रेवाधर रेवानन्द रेवाराम रेवाशङ्कर लछनेशङ्कर लज्जानाथ लज्जाराम लज्जाशङ्कर ललितारमण ललिताराय ललिताशङ्कर ललितेश्वरप्रसाद लालअंबिकेश्वरप्रतापसिंह लालगिरिजेशप्रतापसिंह लालगिरिजेशबहादुरपालसिंह लालेश्वर लालेश्वरनाथ लोकनाथ लोकेंद्र लोकेंद्रनाथ लोकेंद्रप्रसाद लोकेश लोकेशचंद्र लोकेशप्रसाद लोकेश्वर लोकेश्वरनाथ लोकेश्वरप्रसाद वंगेश्वरनाथ वंगेश्वरप्रसाद वटुक वटुकदत्त वटुकदेव वटुकनाथ वटुकप्रसाद वटुकबहादुर वटेश्वर वटेश्वरदयाल वटेश्वरनाथ वटेश्वरनारायण वटेश्वरपाल वनेशंङ्कर वनेश्वर वनेश्वरदयाल वामदेव वामदेवमल विजयशङ्कर विजयशंकरलाल विजयेंद्र विद्याशंकर विधुभूषण विनोदशंकर विपिनशंकर विभूतिनाथ विभूतिनारायण विभूतिप्रसाद विभूतिभूषण विभूतिमणि विभूतिराय विभूतिलाल विभूतिसिंह विमलनाथ विमलशंकर विमलेश्वरदयाल विशालेश्वर विश्वनाथ विश्वनाथचरण विश्वनाथदयाल विश्वनाथप्रताप विश्वनाथप्रसाद विश्वनाथप्रसादराय विश्वनाथप्रसादसिंह विश्वनाथबहादुर विश्वनाथराय विश्वनाथलाल विश्वनाथसहाय विश्वनाथसिंह विश्वविमर्दन विश्वशंकर विश्वेश्वर विश्वेश्वरचन्द्र विश्वेश्वरदत्त विश्वेश्वरदयाल विश्वेश्वरनाथ विश्वेश्वरनारायण विश्वेश्वरनारायणप्रसादसिंह विश्वेश्वरप्रसाद विश्वेश्वरप्रसादसिंह विश्वेश्वरराम विश्वेश्वरराय विश्वेश्वरस्वरूप विश्वेश्वरानंद विष्णुमहेश विष्णुशंकर विहारीशंकर वीरवाहन वीरवालेश्वर वीरभद्र वीरभद्रपाल वीरभद्रप्रताप वीरभद्रसिंह वीरवीरेश्वरमणि वीरेंद्रशंकर वीरेश वीरेशकुमार वीरेशचंद्र वीरेशदत्त

वीरेश्वर वीरेश्वरकुमार वीरेश्वरदयाल वीरेश्वरनाथ वीरेश्वरप्रसाद वीरेश्वरसहाय वीरेश्वरसिंह वृषकेतुसिंह वेणीशंकर वैद्यनाथ वैद्यनाथदत्त वैद्यनाथनारायणसिंह वैद्यनाथप्रसाद वैद्यनाथराम वैद्यनाथसिंह वैद्यपाल व्योमकेश व्रजेशशंकर शंकर शंकरचन्द्र शंकरदत्त शंकरदयाल शंकरदास शंकरदीन शंकरदेव शंकर-नारायण शंकरपाल शंकरप्रसाद शंकरबक्ससिंह शंकरबहादुर शंकरलाल शंकरशरण शंकरसहाय शंकरसिंह शंकरसेन शंकरस्वरूप शंकरानंद शंभुआ शंभुकुमार शंभूदत्त शंभूदयाल शंभूनाथ शंभूनाथ-प्रसाद शंभूनाथसहाय शंभूनारायण शंभूप्रसाद शंभूमुनि शंभूरत्न शंभूलाल शंभूशंकर शंभूशरण शंभूसिंह शक्तिदेव शक्तिधर शक्तिनाथ शक्तिनारायण शक्तिपाल शक्तिमोहन शंरणशंकर शशिशंकर शशिधर शशिभाल शशिभूषण शशिभूषणप्रसाद शशिभूषणलाल शशिभूषणशरण शशिमोहन शशि-मौलि शशिमौलिराम शशिशेखरानंद शांताराम शांतिचंद्र शांतिवीर शांतिशेखर शांत्यानंद शारदाशंकर शिब्बनचंद्र शिब्बननाथ शिब्बनलाल शिब्बा शिव शिवओम् शिवओम्कुमार शिवकंठ शिवकंठलाल शिवकरणदास शिवकरणनाथ शिवकरणराम शिवकांत शिवकिशोर शिवकुमार शिवकृपाल शिवकेदार शिवकैलाश शिवकोटिलाल शिवगुलाम शिवचंद शिवचंदन शिवचंद्रमोहन शिवच्चयनराम शिवचरण शिवचरणदत्त शिवचरणदास शिवचरणलाल शिवचरणसिंह शिवचेतन शिवजतनराम शिवजनार्दन शिवजन्म शिवजादिकलाल शिवजी शिवजीतलाल शिवजूठन शिवजोरराम शिवट्हल शिवतवक्कुल शिवतेजनारायण शिवदत्त शिवदत्तनारायणसिंह शिवदत्तबहादुर शिवदत्तसिंह शिवदयाल शिवदर्शन शिवदर्शनप्रसाद शिवदर्शनराय शिवदर्शनलाल शिवदर्शनसिंह शिवदान शिवदानमल शिवदान-सिंह शिवदास शिवदासप्रसाद शिवदीन शिवदीनप्रसाद शिवदुलारे शिवदेनी शिवदेव शिवधनसिंह शिवधनी शिवध्यानी शिवधारीसिनहा शिवनंदन शिवनंदनप्रसाद शिवनंदनलाल शिवनंदनसहाय शिवनंदनस्वरूप शिवनरेश शिवनरेशराय शिवनाथ शिवनाथप्रसाद शिवनाथप्रसादलाल शिवनाथराय शिवनाथसहाय शिवनाथसिंह शिवनायक शिवनायकसिंह शिवनारायण शिवनारायणप्रसाद शिव-नारायणलाल शिवनिधि शिवनिरंजनसिंह शिवपरसन शिवपलटनसिंह शिवपाल शिवपूजन शिव-पूजनप्रसाद शिवपूजनलाल शिवपूजनसहाय शिवप्यारे शिवप्यारेप्रसाद शिवप्रकाश शिवप्रकाशचंद्र शिवप्रताप शिवप्रतापनारायणसिंह शिवप्रतापराम शिवप्रपन्न शिवप्रवेश शिवप्रवेशनाथ शिवप्रसन्न शिवप्रसाद शिवफल शिवफेर शिवफेरराम शिवफेरसिंह शिवबंधन शिवबक्स शिवबच्चनलाल शिव-बच्चा शिवबदनलाल शिवबली शिवबहादुरसिंह शिवबालक शिवबालकप्रसाद शिवबालकराय शिवबालकसिंह शिवबोध शिवबोधन शिवभगवान शिवभजन शिवभावन शिवभीख शिवभूषण शिवमंगल शिवमनोगसिंह शिवमहेश शिवमीत शिवमुनि शिवमुनिराम शिवमूर्ति शिवमूर्तिप्रसाद शिवमूर्तिराम शिवमूर्तिसिंह शिवमोहन शिवमौलि शिवयज्ञ शिवयत्नप्रसाद शिवयोगी शिवरतीलाल शिवरत्न शिवरत्नलाल शिवराखन शिवराम शिवरामदास शिवरामप्रसाद शिवलहरी शिवलाल शिव-लालप्रसाद शिवलोचन शिववंश शिववंशदेव शिववंशराम शिववदनराय शिववदनलाल शिववदन-सिंह शिववरणसिंह शिववरदानीसिंह शिवविजयसिंह शिवविशाल शिवविहारी शिवविहारीलाल शिव-व्रत शिवव्रतराम शिवव्रतलाल शिवशंकर शिवशंकरप्रसाद शिवशंकरलाल शिवशम्भूसिंह शिवशरण शिवशरणदास शिवशेखर शिवसंतलाल शिवसंपतिराम शिवसंपतिलाल शिवसनेही शिवसहाय शिवसागर शिवसागरप्रसाद शिवसागरलाल शिवसागरसिंह शिवसिंह शिवसिंहासन शिवसुन्दर शिवसुमिरनलाल शिवसूरत शिवसेन शिवसेवक शिवसेवकप्रसाद शिवसेवकलाल शिवस्वरूप शिवहरख शिवहर्ष शिवांवर शिवागम शिवाचार्य शिवाधार शिवाधारलाल शिवाधीन शिवानंद शिवावतार शिवेंद्र शिवेंद्रचन्द्र शिवेंद्रनाथ शिवेंद्रबहादुर शिवेंद्रमोहन शिवेंद्रसहाय शिवेशचन्द्र शिवेश्वर शिवेश्वरप्रसाद शुद्धेश्वर शुद्धेश्वरप्रसाद शुभनाथ शुभ्रेंदुभूषण शुभ्रेश्वरप्रसाद शूलीनारायण शेखर शेखमणि शैलनाथ शैलेंद्र शैलेंद्रनाथ शैलेंद्रप्रकाश शैलेंद्रप्रतापसिंह शैलेश शोकहरण शोभाकांत शोभानंद शोभानाथ

शोभानाथलाल शोभापति शोभाराय श्यामशंकर श्यामाशङ्कर श्यामेश्वरप्रसाद श्यामेश्वरबहादुर-सिंह श्रीकंठ श्रीवर्धन श्रीशङ्कर श्रीशङ्करप्रसाद श्लोकनाथ सतेश्वरानद सतींद्रनाथ सतीश सतीशचद्र सतीशचरण सतीशनाथ सतीशनारायण सतीशप्रकाश सतीशबहादुर सताशसिंह सत्यशङ्कर सत्यानंद सत्येंद्र सत्येंद्रकुमार सत्येंद्रचंद्र सत्येंद्रनाथ सत्येंद्रनारायण सत्येंद्रप्रकाश सत्येंद्रप्रसाद सत्येंद्रबंधु सत्येंद्र-भूषण सत्येंद्रशरण सत्येंद्रसहाय सत्येंद्रस्वरूप सत्येश सत्येश्वर सत्येश्वरप्रसाद सदादयाल सदानंद सदानंदप्रसाद सदानंदसिंह सदापति सदाबलीप्रसाद सदारंग सदाशंकर सदाशिव सदाशिवचंद्र सदासहाय सदासुखराय सरबू सर्वचंद्रराय सर्वजीतनारायण सर्वदत्त सर्वदेव सर्वदेवप्रसाद सर्वप्रकाश सर्वेश सर्वेश-चंद्र सर्वेशदमन सर्वेशविक्रमसिंह सर्वेश्वर सर्वेश्वरदयाल सर्वेश्वरनाथ सर्वेश्वरसिंह सर्वोत्तमदाससहाय सिंहेश्वरसिंह सितेश्वरस्वरूप सिद्धनाथ सिद्धराज सिद्धरामेश्वर सिद्धेश्वर सिद्धेश्वरप्रसाद सिद्धेश्वरसिंह सुंदरीकांत सुंदरीराम सुंदरेश्वर सुंदरेश्वरदयाल सुधांशुशेखर सुधाकरनाथ सुबोधशंकर सुरेश्वर सुरेश्-वरदयाल सुरेश्वरनाथ सुरेश्वरलाल सुरेश्वरसेन सुरोत्तम सूरजकरण सूर्यकांत सूर्यमहेश सेतुबंधनाथ सेतुबंधरामेश्वर सोनेशंकर सोनेश्वर सोमनाथ सोमपतिसिंह सोमपाल सोमराखनसिंह सोमेंद्र सोमेंद्रनाथ सोमेशचंद्र सोमेश्वर सोमेश्वरदत्त सोमेश्वरदयाल सोमेश्वरनाथ सोमेश्वरप्रकाश सोमेश्वरलाल सोमेश्वरसिंह सोमेश्वरीनारायण स्थानेश्वरप्रसाद स्मरहर स्वयंप्रकाश स्वयंभूनाथ स्वामीश्वर हरकसिंह हरकानंदप्रसाद हरकरणनाथ हरकरणप्रसाद हरकरणलालसिनहा हरकिशोर हरख्यालसिंह हरगायनराम हरगुन हर-गुनराम हरगुरुचरण हरगौरीनाथ हरचरण हरचरणदयाल हरचरणलाल हरजयेंद्रसिंह हरजससिंह हर जीतसिंह हरजीराम हरजीवन हरजीवनदास हरज्ञानराय हरदयाल हरदर्शन हरदानसिंह हरदाम हरदीप-लाल हरदेव हरदेवदास हरदेवप्रसाद हरदेवबक्स हरदेवसहाय हरध्यानचद्र हरध्यानसिंह हरनाथ हर-नाम हरनामदास हरनामसिंह हरनामसुंदर हरनारायण हरनारायणराम हरपति हरप्यारीदेव हरप्यारेलाल हरफूल हरफूलदत्त हरबक्ससहाय हरभगतसिंह हरभगवान हरभगवानदास हरभजदास हरभजन-प्रसाद हरभजनलाल हरभजनसिंह हरभरोसेलाल हरभवनप्रतापबहादुरसिंह हरभानसिंह हरमंदिरसिंह हरविलास हरविहारीलाल हरवीरसिंह हरसहाय हरसुख हरसुखलाल हरसुमिरनलाल हरस्वरूप हरहेतुलाल हरिकेश हरिकेशनारायणसिंह हरिकेशपति हरिकेशसिंह हरिकेश्वरराय हरिरेंद्रप्रसाद हरिशंकर हरिशंकर-लाल हरिशंभूशरण हरिहरनाथ हरिहरशंकरराय हरीश्वरदयाल हरीश्वरनाथ हरीश्वरसहाय हरुआ हरेंद्र हरेंद्रकुमार हरेंद्रदेव हरेंद्रनाथ हरेंद्रनाथसिंह हरेंद्रनारायण हरेंद्रपाल हरेंद्रप्रतापसिंह हरेंद्रबहादुर हरेंद्रशंकर हरेंद्रसहायसिनहा हरेंद्रसिंह हरेशविहारीलाल हर्जोसिंह हरूमल हितेंद्रकुमार हितेशचंद्र हिमांशुधर हिमांशुराय हीराचंद हीराधर हीरानंद हीरानाथ हीराबल हीराबहादुरसिंह हीरामणि हीराराम हीरावल्लभ हीराशंकर हीरासिंह हेमनाथ हेमराज हेमशंकर हेमेंद्र हेमेंद्रनाथ हेमेंद्रप्रसाद हेमेंद्रशंकर हेमेंद्रस्वरूप ।

आ—त्रिदेव वंश (१) सरस्वती—बानीसिंह भारतीमल भारतीसिंह मनोरमा मनोरमाप्रसाद रायबागेश्वरीप्रसाद वागीश्वरीदयाल वागीश्वरीप्रसाद वागीश्वरीलाल वागीश्वरीशरण वाणीविलास विद्या-चरण विद्याचरणप्रसाद विद्यादत्त विद्यादास विद्यानंद विद्यानंदनसिंह विद्याप्रकाश विद्याप्रसाद विद्या-लाल विद्याविलास विद्याविनोद विद्याव्रत विद्याशरण विद्यास्वरूप विमलाचरण विमलाचरणदेव विमलादत्तराम विमलानंद विमलानंदन विमलानंदनप्रसाद विमलाप्रसाद शारदाचन्द्र शारदाचरण शारदाचरणलाल शारदानंद शारदानंदन शारदाप्रकाश शारदाप्रसाद शारदाबक्ससिंह शारदालाल शारदाशरण सरस्वतीचरण सरस्वतीप्रकाश सरस्वतीप्रसाद सरस्वतीसहाय सावित्रीकुमार ।

(२) ब्रह्मा के मानस पुत्र—(अ) चार पुत्र—सनक सनंदन सनत्कुमार सनातन । **(आ) नारद—**देवमुनि देवमुनिराय देवर्षि नारद नारदप्रसाद नारदमुनि नारदसिंह नारदानंद । **(इ)**

कामदेव—अंगरहित अनंगनाथ अनंगभूषण अनगलाल कदर्पनाथ कदर्पनारायण कामदेव कामसिंह कामू मकरध्वजसिंह मदन मदनकिशोर मदनकुमार मदननारायण मदनपाल मदनप्रकाश मदनप्रसाद मदनराय मदनसिंह मदनस्वरूप मदनानंद मनसिज मनोभवसिंह मन्मथनाथ मैनपाल मैनफल मैनबहादुरलाल मैनराम मैनसिंह मैना रतिकांत रतिनाथ रतिपाल रतिभवनसिंह रतिभानु रतिराम रतिरामबहादुर रतीश रागदेव रागदेवसिंह।

(३) लक्ष्मी—अमला अमलाप्रसाद कमला कमलाकर कमलाचरण कमलानंद कमलाप्रसाद कमलाप्रसादराय कमलामल कमली केश्वरीलाल घनेश्वरीप्रसाद नारायणीप्रसाद पद्मादत्त पद्मानंद मुनेश्वरीदास रमाचरण रमादत्त रमाप्रसाद रमाप्रसादलाल लक्ष्मी लक्ष्मीकिशोर लक्ष्मीकुमार लक्ष्मीचंद लक्ष्मीदत्त लक्ष्मीदास लक्ष्मीप्रकाश लक्ष्मीप्रसाद लक्ष्मीलाल लक्ष्मीसिंह लक्ष्मीसेवक लच्छुमीदास लच्छीमल लछीलाल लोलादास श्रीचरण श्रीजी श्रीदत्त श्रीदयाल श्रीपद श्रीप्रकाश श्रीप्रपन्नाचार्य श्रीप्रसाद श्रीबक्स श्रीबाबू श्रीभूषण श्रीलाल श्रीवंशकुमार श्रीविलास श्रीविलाससिंह श्रीशरणसिंह श्रीसिंह श्रीसेवक सिरिया हरिप्रियाशरण।

(४) पार्वती—अंनतेश्वरीप्रसाद अंबादत्त अंबादयाल अंबादास अंबाप्रसाद अंबालाल अंबासहाय अंबिकाचरण अंबिकादत्त अंबिकानंद अंबिकाप्रसाद अंबिकाबक्स अंबिकालाल अंबिकाशरण अंबिकाशरणसिंह अखिलेश्वरीप्रसाद अन्नदाप्रसाद अन्नपूर्णादत्त अन्नपूर्णानंद अन्नपूर्णाप्रसाद अफलासिंह अभयानद अमरेश्वरीप्रसाद अमला अमलाप्रसाद अलोपी अलोपीचरण अलोपीदत्त अलोपीदीन अलोपीप्रसाद अलोपीशरण अलोपीशरणदीन अष्टभुजा अष्टभुजाप्रसाद आदिज्योतिप्रसाद आद्याचरण आद्यादत्त आद्यानंद आद्याप्रसाद आद्याशरण आनदी आनंदीचरण आनदीदीन आनंदीप्रसाद आनंदीलाल आनंदीशरण आनंदीसहाय आर्या आर्यादत्त आर्यानंद आशाजीत आशादत्त आशादीन आशानंद आशाप्रकाश आशाप्रसाद आसासिंह इच्छापूरन इल्ला ईश्वरी ईश्वरीदत्त ईश्वरीनंदन ईश्वरीनंदनप्रसाद ईश्वरीप्रसाद ईश्वरीप्रसादसिंह ईश्वरीमल ईश्वरीलाल ईश्वरीसिंह उमा उमाचरण उमादत्त उमादयाल उमानंद उमाप्रकाश उमाप्रसाद उमामूर्ति उमाशरण उमासेन उमास्वरूप ऋषेश्वरीप्रसाद कमच्छाप्रसाद कमलेश्वरीप्रसादसिंह कमलेश्वरीशरण कलिकई कल्याणीदत्त कांताप्रसाद कांतिकिशोर कांतिचन्द्र कांतिनन्दन कांतिनन्दनशरण कातिप्रकाश कातिप्रसाद कातिलाल कांतिसिंह कांतिस्वरूप कात्यायनीदत्त कात्यायनीप्रसाद कामाछा कामाछाप्रसाद कामाख्याचरण कामाख्याप्रसादसिनहा कामेश्वरीदयाल कामेश्वरीप्रसाद कामेश्वरीलाल कामेश्वरीशरण कालकाप्रसाद कालिका कालिकाचरण कालिकादत्त कालिकानंद कालिकाप्रसाद कालिकाप्रसादराय कालिकालाल कालिकाशरण कालिकासिंह कालीकिंकर कालीकिशोर कालीकुमार कालीचरण कालीचरणसहाय कालीदत्त कालीदीन कालीनंदन कालीप्रकाश कालीप्रताप कालीप्रसाद कालीरत्न कालीशरणलाल कालीसहाय कालीसिंह कालीसुंदर केवला केवलानंद केवलाप्रसाद केशी कौमारीसिंह कौशिकीनंद क्षमानद क्षमास्वरूप खड़ेश्वरीप्रसाद खिमई खिम्मन खिम्मनदास खिम्मनलाल खिम्मासिंह खेमसिंह खेमा खेमानंद गंगेश्वरीप्रसाद गायत्री गायत्रीप्रसाद गायत्रीशरण गिरिजा गिरिजाकिशोर गिरजाचरण गिरिजादत्त गिरिजादयाल गिरिजानंदन गिरिजाप्रसाद गिरिजालाल गिरिजाशरण गुंजेश्वरीलाल गुंदे गुप्तेश्वरीप्रसाद गुह्येश्वरीप्रसाद गोलासिंह गोलैया गौरी गौरीकिशोर गौरीचरण गौरीचरणदास गौरीदत्त गौरीदयाल गौरीनन्दन गौरीप्रसाद गौरीमल गौरीलाल गौरीशरण गौरीशरणलाल गौरीसहाय चंडिकाचरणसिनहा चंडीचरण चंडीदत्त चंडीदास चंडीदीन चंडीप्रसाद चंडीलाल चंडीशरण चंडूबक्स चंडूलाल चंद्रिका चंद्रिकानंददास चंद्रिकाप्रसाद चंद्रिकाबक्ससिंह चंद्रिकालाल चंद्रिकासिंह जगदंबा जगदंबाप्रताप जगदंबाप्रसाद जगदंबालाल जगदंबाशरण जगदंबाशरणराय जगदंबासहाय जगदंबिकाप्रसाद जगदंबिकाशरणसिंह जगदीश्वरीप्रसाद जगदीश्वरीशरण

जगदीश्वरीसहाय जगमातासिंह जगेश्वरीप्रसाद जनेश्वरीदास जयंतीप्रकाश जयतीप्रसाद जयंतीलाल जयंतीसिंह जयकरी जयानंद जलेश्वरीदास जलेश्वरीप्रतापनारायणसिंह जालपा जालपासहाय जाली-चरण जैंती ज्योत्स्नाकुमार ज्वालादत्त ज्वालाप्रसाद ज्वालालाल ज्वालासहाय ज्वालासिंह ज्वाला-स्वरूप ज्वाली तपेश्वरी तपेश्वरीदत्त तपेश्वरीलाल तमात्यादीन तारकेश्वरीलाल ताराचरण तारादत्त ताराप्रसाद तारालाल तारासिंह तारिणीचरण तारिणीप्रसाद तुंगेश्वरीदत्त तेजेश्वरीप्रसाद त्रिगुणानंद दक्खिनी दक्खिनीदीन दक्खिनीलाल दक्खिनीसिंह दक्खीसिंह दाक्षायणी दुरगाई दुर्गा दुर्गाचरण दुर्गादत्त दुर्गादयाल दुर्गादान दुर्गादीन दुर्गाप्रसाद दुर्गाबहादुर दुर्गामल दुर्गालाल दुर्गाशरण दुर्गासिंह दुर्गेश्वरीदयाल दुर्गेश्वरीप्रसाद देवी देवीगुलाम देवीचंद देवीचरण देवीचरणलाल देवीतनय देवीदत्त देवीदयाल देवीदर्शनलाल देवीदहलराज देवीदास देवीदीन देवीनंदन' देवीप्रकाश देवीप्रसाद देवी-बक्स देवीभक्त देवीरत्न देवीलाल देवीविशाल देवीशरण देवीसहाय देवीसिंह देवीस्वरूप धूमबहादुर धूमसिंह नंदा[१] नंदासिंह नर्वदेश्वरीप्रसाद नारायणीप्रसाद नित्याननंद नित्यानंदसिंह पटेश्वरीसिंह पटेश्वरीदयालसिंह पटेश्वरीप्रतापसिंह पटेश्वरीप्रसाद पटेश्वरीभूषण परमेश्वरी परमेश्वरी-दयाल परमेश्वरीदीन परमेश्वरीप्रतापनारायण परमेश्वरीप्रसाद परमेश्वरीशरण परमेश्वरीशरणदीन परमेश्वरीसहाय पार्वतीनंदन पार्वतीप्रसाद पार्वतीलाल पूर्णानंद पूर्वीदीन बालाजी बालादत्त बालादीन बालानन्द बालाप्रसाद बालाबक्स बालाशरण बालासहाय बालासिंह बालेश्वरी बालेश्वरीप्रसाद बिदेश्वरी बिदेश्वरीप्रसाद बिजलेश्वरीप्रसाद बिजलेश्वरीप्रसादसिंह ब्राह्मीदत्त भगवती भगवतीचन्द्र भगवतीशरण भगवतीदत्त भगवतीदयाल भगवतीदीन भगवतीप्रसाद भगवतीबक्ससिंह भगवतीलाल भगवतीशरण भगवतीसहाय भगवतीसिंह भगवतीस्वरूप भद्रकालीदीन भवानी भवानीदत्त भवानीदयाल भवानीदास भवानीदीन भवानीप्रसाद भवानीफेर भवानीभीख भवानीमल भवानीशरण भवानीसिंह भागेश्वरीप्रसाद भीमा भुवनेश्वरीदयाल भुवनेश्वरीप्रसाद भैरवीप्रकाश भैरवीसहाय मंगला मंगलाचरण मंगलानन्द मंगलाप्रसाद मंगलाप्रसादसिंह मतईराय मतोले मनगौरीलाल मनपूरन मनसादीन मसुरिया मसुरियादीन मसुरियाप्रसाद मस्सू महामायाप्रसाद महाविद्याप्रसाद महारानीदीन महेशी महेश्वरीदयाल महेश्वरीनन्द महेश्वरीनन्दन महेश्वरीप्रसाद महेश्वरीराय महेश्वरीलाल महेश्वरी-शरणसिंह माईदयाल माताऔतारसिंह माताचरण माताटहल मातादयाल मातादीन मातादीनलाल मातानिवाज मातापलट माताप्रसाद माताफल माताफेर माताफेरप्रताप माताबक्स माताबदल माताबदल मणि माताभीख माताभीखलाल माताभीखसिंह मातारूप मातालाल माताशरणसिंह मातासेवक मातृदत्त मातृप्रसाद मातृकाप्रसाद माधवीप्रसाद माधवीशरण मामेश्वरीशरण मायादत्त मायादास मायादीन मायानंद मायाप्रकाश मायासहाय मायास्वरूप मावलीप्रसाद माहेश्वरीदत्त मुनेश्वरीदास मुनेश्वरीशरण-सिनहा राजराजेश्वरीप्रसाद राजेश्वरीदत्त राजेश्वरीदयाल राजेश्वरीप्रसाद राजेश्वरीलाल राजेश्वरीसिंह रानीदान रामेश्वरीप्रसाद रायमगलेश्वरीप्रसाद रुद्रीदत्त लक्ष्मेश्वरीशरण ललतू लालताप्रसाद लालता-बक्ससिंह लालतासिंह लालदुर्गाप्रसादलालसिंह विंध्यवासिनी विंध्यवासिनीदत्त विंध्यवासिनीप्रसाद विंध्यवासिनीसिंह विंध्येश्वरी विंध्येश्वरीप्रसाद विंध्येश्वरीशरणसिंह विजयलक्ष्मीशरण विजयानंद विजया-प्रसाद विश्वंबिकाप्रसाद वीरेश्वरीदयाल शंकरीप्रसादसिंह शक्तिचन्द्र शक्तिप्रसाद शक्तिशरण शक्तिसिंह

—तीन तीन तिथियों के नाम—

[१] नंदातिथि	भद्रातिथि	जयातिथि	रिक्तातिथि	पूर्णातिथि
प्रतिपदा १	दौज २	तीज ३	चतुर्थी ४	पंचमी ५
छठ ६	सप्तमी ७	अष्टमी ८	नवमी ९	दशमी १०
एकादशी ११	द्वादशी १२	त्रयोदशी १३	चतुर्दशी १४	पूर्णिमा १५

शाकंबरीलाल शाताप्रसाद शांतिप्रपन्न शांतिसेवकसिनहा शारदाशरण शिवनागरीप्रसाद शिवमाया-सहाय शिवशक्ति शिवशक्तिरूप शिवशक्तिशरण शीवासिंह शीनलाचरण शीतलादीन शीतलानंद शीतला-प्रसाद शीतलाबक्ससिंह शीतलाशरण शीतलासहाय शुद्धेश्वरीसिंह शोभा श्रीकांतिकुमार श्रीत्रिभुवनेश्वरी-प्रसाद संकटाप्रसाद संकठाचरण संकठाशरण संकठासहाय सतई सतनेश्वरीप्रसाद सतीप्रकाश सतीप्रसाद सत्तनसिंह सत्तीदीन सत्तीलाल सत्याचरण सत्याचरणलाल सत्यानंद सर्वशक्तिप्रकाश सर्वशक्तिप्रसाद सर्व-शक्तिस्वरूप सर्वेश्वरीदत्त सर्वेश्वरीदयाल सिंहवाहिनीकिशोर सितलूसिंह सिद्धिशरण सिद्धेश्वरीदयाल सिद्धेश्वरीप्रसाद सुंदरीप्रसाद सुरेश्वरीप्रसाद हरचण्डीलाल हरमायासिंह हरेश्वरीप्रसाद हिरैया हीरा हीरादत्त हीराप्रकाश हीराप्रसाद हीरालाल हीरासिंह ।

(५) स्वामि कार्तिकेय—अग्निकुमार अग्निलाल अजयकुमार अतुलकुमार अद्रिकुमार अनूपकुमार अभयकुमार आशुतोषकुमार कन्दकुमार कांतिकुमार कार्तिकेयप्रसाद कालीकुमार कुमार कुमारदास कुमारविजयसिनहा कुमारसिंह कुमारस्वामी गिरिजाकुमार गिरीशकुमार चन्द्रवदन चन्द्रानन चक्रेश्वरकुमार चमूपति चमूपतिकुमार जयवंतकुमार जितेंद्रकुमार तरुणकुमार तारकजित तेजकुमार तेजनंदनस्वरूप धन्यकुमार नवकुमार नवीनकुमार पुनीतकुमार प्रतुल्यकुमार प्रफुल्लकुमार प्रभुकुमार प्रशांतकुमार प्रसन्नकुमार बालकुमार भूतेंद्रकुमार मञ्जुलकुमार मनोहरशिवकुमार महादेवकुमार महेशकुमार मोरदेव यतींद्रकुमार रणविजयकुमार ललितकुमार लालकुमारसिंह विजयकुमार वीरेशकुमार वीरेश्वरकुमार शंभुकुमार शक्तिधर शिवकुमार शिवेंद्रकुमार शैलकुमार शैलजाकुमार शैलेंद्रकुमार शैलेशकुमार श्यामकार्तिकसिंह श्रीकुमार षटबदनसिंह सज्जनकुमार सतींद्रकुमारसिंह सतीशकुमार सन्मुखसिंह सुकुमारचन्द सेनपालसिंह सेनापति स्कन्दकुमार स्मृतिकुमार स्वामिकार्तिकेयलाल ।

(६) गणेश—उमाशंकरलाल ऋद्धिनाथ कमलाशंकरलाल कुशलपालसिंह कुशलेंद्रमणि कुशलेंद्रसिंह गजपति गजपतिनारायण गजपतिराय गजराज गजराजबहादुर गजराजसिंह गजरूप गज-बदनसिंह गजानन गजाननप्रसाद गज्जूसिंह गजेंद्र गजेंद्रदत्त गजेंद्रनाथ गजेंद्रनारायणसिंह गजेंद्रबहादुर गजेंद्ररत्न गजेंद्रवल्लभ गजेंद्रसिंह गणपति गणपतिदेव गणपतिप्रसाद गणपतिराय गणपतिलाल गणपति सहाय गणपतिस्वरूप गणरंजन गणेश[1] गणेशदत्त गणेशदास गणेशदीन गणेशनारायण गणेशपाल गणेशप्रतापनारायणसिंह गणेशप्रसाद गणेशमल्ल गणेशराम गणेशराय गणेशलाल गणेशविहारी गणेश-सिंह गणेशानंद गणेश्वर गनपतचन्द गनपतिसिंह गनेशबाबूसिंह गनेशराय गनेसीलाल गयेंद्रनाथ गयेंद्र-लाल गौरीगणेश चिंताहरण जयकरण जयकरणनाथ जयकरणलाल जैकू ज्ञानेंद्र ज्ञानेंद्रकुमार ज्ञानेंद्रदत्त ज्ञानेंद्रदेव ज्ञानेंद्रप्रकाश ज्ञानेंद्रप्रताप ज्ञानेंद्रप्रसाद ज्ञानेंद्रबहादुर ज्ञानेंद्रमोहन ढुंढीसिंह ढुंढिराज दुर्गा-विनायक प्रसाद द्विजेंद्रकुमार बुद्धिदेव बुद्धिनाथ बुद्धिपाल बुद्धिराय बुद्धिवल्लभ रायगणेश रायगणे-शलाल रायविनायकसिंह लंबोदर वक्रतुंड विनायक विनायकदत्त विनायकनंद विनायकप्रसाद विनायकराम विनायकराय विनायकलाल विनायकसिंह शिवगणेश शिवजादिकलाल शुभकरण शुभ-करणलाल शुभाकर श्रीकरण श्रीगणेश संकटहरण सिद्धगणेश सिद्धिनाथ सिद्धिविनायक सिद्धिसदनस्वरूप सिद्धीश्वर हत्थीसिंह हरनंदनप्रसाद हरनंदनराय हरनंदनशरण हरनंदनसहाय हानीराय हेरंबदत्त हेरंब-नाथ हेरंबमोहन ।

लोक पाल—(१) इंद्र—अमरपाल अमरपालसिंह अमरराज अमरेंद्र अमरेंद्र-कुमार अमरेंद्रकृष्ण अमरेंद्रनाथ अमरेंद्रप्रताप अमरेंद्रसिंह अमरेशबहादुरसिंह अमृतराज अमृतराय

---

[1] गणेश के १२ नाम और उनका माहात्म्य—वक्रतुण्ड एकदन्त कृष्णपिङ्गाक्ष गजवक्त्र लम्बोदर विकट विघ्नराज धूम्रवर्ण भालचंद्र विनायक गणपति गजानन - द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः न च विघ्नभयं तस्य सर्वं सिद्धिकरं परम् ।

इंदरसिंह इंदुल इंदूरी इंद्र इंद्रकांत इंद्रकिशोर इंद्रकिशोरलाल इंद्रकुमार इंद्रचंद्र इंद्रजीत इंद्रजीत-नारायण इंद्रजीतप्रसाद इंद्रजीतसहाय इंद्रजीतसिंह इंद्रदत्त इंद्रदयाल इंद्रदास इंद्रदीवानशरणसिंह इंद्रदेव इंद्रदेवदयाल इंद्रदेवनारायण इंद्रदेवप्रसाद इंद्रदेवसिंह इंद्रनाथ इंद्रनारायण इंद्रनारायणराम इंद्रपति इंद्रपतिप्रसाद इंद्रपतिराय इंद्रपाल इंद्रपालप्रसाद इंद्रपालसिंह इंद्रप्रकाश इंद्रप्रताप इंद्रप्रतापनारायण इंद्रप्रतापनारायणसिंह इंद्रप्रतापसिंह इंद्रप्रसाद इंद्रबली इंद्रबहादुर इंद्रबहादुरसिंह इंद्रभूपप्रसाद इंद्रभूषण इंद्रभूषणचंद्र इंद्रमणि इंद्रमल इंद्रमोहन इंद्रमोहननारायण इंद्रमौलिराम इंद्रराज इंद्रराजकिशोर इंद्रराजसिंह इंद्रलाल इंद्रलालसिंह इंद्रविक्रमसिंह इंद्रविजयसिंह इंद्रशंकर इंद्रसहाय इंद्रसिंह इंद्रसेन इंद्रसेनसिंह इंद्रस्वरूप इंद्रासन इंद्रासनधर इंद्रासनप्रसाद इंद्रासनसिंह एदलप्रसाद एदलसहाय एदल-सिंह कंदपाल घनेंद्रसिंहजूदेव जैसन दिवेंद्रसिंह देवकांत देवनाथ देवनाथराय देवनाथलाल देवनाथसहाय देवनायक देवपाल देवराज देवराजबली देवराजसिंह देवराजसेवकसिंह देवराय देवस्वामी देवेंद्रकुमार देवेंद्रचंद्र देवेंद्रदत्त देवेंद्रदेव देवेंद्रनाथ देवेंद्रनाथदेव देवेंद्रप्रकाश देवेंद्रप्रताप देवेंद्रप्रतापनारायणसिंह देवेंद्रप्रतापसिंह देवेंद्रप्रसाद देवेंद्रभूषण देवेंद्रमोहन देवेंद्रलाल देवेंद्रविजय देवेंद्रसिंह देवेंद्रस्वरूप देवेश पुरंदरसिंह बजरीदास महेंद्र महेंद्रकुमार महेंद्रजीतसिंह महेंद्रदयाल महेंद्रदेव महेंद्रनाथ महेंद्रनारायण महेंद्रपति महेंद्रपाल महेंद्रपालसिंह महेंद्रप्रकाश महेंद्रप्रकाशबहादुर महेंद्रप्रताप महेंद्रप्रतापनारायण महेंद्रप्रतापसिंह महेंद्रप्रसाद महेंद्रबहादुर महेंद्रबहादुरसिंह महेंद्रमानसिंह महेंद्रमोहन महेंद्रलाल महेंद्र-वीरसिंह महेंद्रशंकर महेंद्रशरण महेंद्रसिंह महेंद्रस्वरूप मेघनाथ मेघनारायण मेघनारायणराम मेघ-नारायणराय मेघपालसिंह मेघमरतराय मेघराज मेनपाल लालसुरेंद्रप्रतापसिंह लालसुरेंद्रबहादुरसिंह लेखनारायण लेखराज वासवदत्त वासवराज वासवानंद शक्रराजराय शचिकांत शचींद्रकुमार शचींद्रनाथ शचींद्रप्रकाश शचींद्रबहादुरसिंह शचींद्रनाल श्रीइंद्र सर्वभूपेंद्रसिंह सर्वेंद्रविक्रमसिंह सुरपतिसिंह सुरभूप-राय सुरेंद्र सुरेंद्रकिशोर सुरेंद्रकुमार सुरेंद्रकृष्ण सुरेंद्रदेव सुरेंद्रनाथ सुरेंद्रनारायण सुरेंद्रपालसिंह सुरेंद्र-प्रकाश सुरेंद्रप्रताप सुरेंद्रप्रतापनारायण सुरेंद्रप्रतापबहादुर सुरेंद्रप्रतापसिंह सुरेंद्रबहादुर सुरेंद्रभूषणप्रसाद सुरेंद्रमोहन सुरेंद्रमोहनराय सुरेंद्रलाल सुरेंद्रविक्रमसिंह सुरेंद्रविहारीलाल सुरेंद्रवीरविक्रमबहादुरसिंह सुरेंद्रसिंह सुरेंद्रस्वरूप सुरेश सुरेशकिशोर सुरेशकुमार सुरेशकुमारदेव सुरेशचंद्र सुरेशदत्त सुरेशदेव सुरेशनंदनप्रसाद सुरेशनारायण सुरेशप्रसाद सुरेशविहारीलाल सुरेशव्रतराय सुरेशशरण सुरेशस्वरूप सुरेशानंद सुरेश्वर सुरेश्वरदयाल सुरेश्वरनाथ सुरेश्वरलाल सुरेश्वरसेन ।

(२) अग्नि—अग्निकुमार अग्निदत्त अग्नेलाल उषर्बुध तेजकरण तेजगिरि तेजदत्त तेजप्रकाश तेजप्रताप तेजमल तेजसिंह वैश्वानर हुताशनदेव ।

(३) यम—कालेंद्रप्रसाद जमराम धर्मदेव धर्मदेवनारायणसिंह धर्मदेवराम धर्मदेवसिंह धर्मनाथ धर्मनारायण धर्मपाल धर्मराज धर्मेंद्र धर्मेंद्रकुमार धर्मेंद्रचंद धर्मेंद्रनाथ धर्मेंद्रनारायणसिंह धर्मेंद्रलाल धर्मेंद्रप्रसाद धर्मेंद्रमोहन धर्मेंद्रसहाय धर्मेंद्रसिंह धर्मेंद्रस्वरूप धर्मेश्वर धर्मेश्वरप्रसाद यमजी यमशरण सर्वजीतराय सर्वजीतसिंह ।

(४) वरुण—केंद्रदत्त केशचंद्र केशवीर केश्वर केश्वरीलाल जलईराय जलदेवप्रकाश जलेश्वर जलेश्वरनाथ जलेश्वरनाथराय जलेश्वरसिंह जलेसर नीरसिंह वरुण वरुणचंद्र वरुणदत्त वारींद्रसिंह वारीशचंद्र ।

(५) वायु—अग्निमित्र अनिलचंद्र अनिलप्रकाश पवनस्वरूप प्रभंजनसिंह बलकरण महाबल महाबलीसिंह समीरबक्शसिंह समीरशरण ।

(६) कुबेर—एडविडभू कुबेर कुबेरचंद कुबेरदत्त कुबेरदास कुबेरनाथ कुबेरप्रसाद कुबेरराम कुबेरलाल कुबेरसिंह कुमेरसिंह टंकनाथ धनधारी धननारायण धनपति धनपतिराम धनपतिराय

धनपतिसहाय धनपतिसिंह धनपाल धनपालचंद्र धनराज धनराजराम धनेंद्र धनेंद्रकुमार धनेश धनेशचंद्र धनेशपति धनेशप्रकाश धनेशशरण धनेश्वर धनेश्वरदयाल धनेश्वरनाथ धनेश्वरप्रसाद धनेश्वरराय नवनिधिनाथ निद्धिनारायण निद्धूराम निधीश पुष्पेंद्रकुमार पुष्पेंद्रनारायण यक्षराज रूकमपालसिंह संपतपालसिंह सोनपाल हेमपाल ।

(७) **सूर्य**—अजोरराय अंशधारीसिंह अंशुधर अंशुमाली अदितसहायलाल अरुण अरुणकुमार अरुणचंद्र अरूणप्रकाश अरुणविहारी अरुणसिंह अर्कनाथ अर्कूलाल आतपनारायणसिंह आदित्य आदित्यकिशोर आदित्यकुमार आदित्यकेतसिंह आदित्यदत्त आदित्यनाथ आदित्यनारायण आदित्यनारायणलाल आदित्यप्रकाश आदित्यप्रसाद आदित्यराम आदित्यलाल आदित्यवल्लभ आदित्यसिंह आदित्यस्वरूप आदित्येंद्र आदिमिहिर आफताबसिंह आलोकनारायण उदयनारायण उदयनारायणराय उदयनारायणलाल उदयनारायणसिंह उदयभान उदयभानसिंह उदितनारायण उदितनारायणलाल उद्योतनारायणसिंह उस्माकर कँवलभानसिंह किरणप्रकाश किरणसिंह खरभान खरभानराय खरभानसिंह खुरशेदबहादुर खुरशेदलाल जगतनयन ज्योतिनाथ ज्योतिनारायण ज्योतिनारायणप्रसाद ज्योतिनिवास ज्योतिप्रसाद ज्योतिभूषण ज्योतिलाल ज्योतिसिंह ज्योतिस्वरूप ज्योतिषप्रसाद ज्योतींद्रप्रसाद झलकनाथराय तपननारायण तपनाथ तप्तनारायण तपेशचंद्र तेजकरण तेजधर तेजधारीसिंह तेजनारायण तेजनारायणदेव तेजनारायणराम तेजनारायणसिंह तेजपति तेजपाल तेजपालशरण तेजपालसिंह तेजप्रकाश तेजबल तेजबलीदेव तेजबहादुर तेजभानप्रसाद तेजमणि तेजराज तेजेंद्र तेजेंद्रप्रतापसिंह तेजेशचंद्र तेजोराम दनकू दिनकरप्रसाद दिनदेव दिनपतिराय दिनेंद्रभानसिंह दिनेश दिनेशकुमार दिनेशचंद्र दिनेशदत्त दिनेशनारायण दिनेशनारायणसिंह दिनेशपालसिंह दिनेशप्रसाद दिनेशविहारीसिंह दिनेशमोहन दिनेशलाल दिनेश्वरदयाल दिनेश्वरप्रसाद दिनेश्वरसिंह दिवाकर दिवाकरदत्त दिवाकरनाथ दिवाकरप्रसाद दिवाकरमणि दिवाकरसिंह दिवेंद्रसिंह दिव्यज्योति देवदीपसिंह देवप्रभाकर देवमणि देवमणिप्रसाद धूपनारायण धूपनारायणलाल नवादित्यलाल परगासराय परमप्रकाश प्रकाश प्रकाशदत्त प्रकाशदेव प्रकाशनाथ प्रकाशनारायण प्रकाशपतिनाथ प्रकाशबहादुर प्रकाशभानुसिंह प्रकाशमल प्रकाशवीर प्रकाशस्वरूप प्रकाशानंद प्रकाशी प्रभाकर प्रभाकरदत्त प्रभाकरप्रसाद प्रभाकरलाल प्रभाकरानंद प्रभाकांत प्रभादित्यसिंह प्रभेशनारायण प्रभेशसिंह बालदिवाकर बालादित्य भनऊ भन्नामल भाना भानामल भानसिंह भानुकिशोर भानुकुमार भानुदत्त भानुदास भानुदीन भानुदेव भानुपालसिंह भानुप्रकाश भानुप्रताप भानुप्रतापनारायण भानुप्रसाद भानुभक्त भानुभूषण भानुराम भानुशंकर भानुशेखर भानुसिंह भास्कर भास्करदत्त भास्करनारायण भास्करप्रतापसिंह भास्करानंद मित्रनारायण मित्रपाल मित्रप्रसाद मित्रमणि मित्रसिंह मित्रसेन मित्रानंद मिहिरलाल मेहरचंद रथभानसिंह रब्बी रविकरण रविकांत रविकिशोर रविचंद रविचंदनाथ रविचंदप्रकाश रविचंद्रसिनहा रविदत्त रविदर्शनलाल रविदेव रविनंदन रविनंदनसिंह रविनाथ रविनारायण रविप्रकाश रविप्रताप रविप्रतापनारायणसिंह रविप्रतापबहादुरसिंह रविरत्न रविराज रविराम रविरामसिंह रविलाल रविवंश रविशरणसहाय रविसिंह रविसेन रश्मिकांत राहुनाथ लालउदयभानसिंह लालभानसिंह वेदमूर्ति श्रीप्रकाशनारायण सकलदेव सकलनारायण सवितादीन सुरजन सुरजनलाल सुरजनसिंह सुरजासिंह सुरजू सुरजूकुमार सूरज सूरजकिशोर सूरजकुमार सूरजदीन सूरजदेव सूरजदेवराय सूरजनाथ सूरजनाथलाल सूरजनाथसिंह सूरजनारायण सूरजपाल सूरजपालसिंह सूरजप्रकाश सूरजप्रताप सूरजप्रसाद सूरजप्रसादराय सूरजबक्ससिंह सूरजबल सूरजबली सूरजबलीप्रसाद सूरजबहादुर सूरजभान सूरजमोहन सूरजरतन सूरजलाल सूरजस्वरूप सूरजासिंह सूर्यकरण सूर्यकांत सूर्यकिशोर सूर्यकुमार सूर्यकुमारप्रसाद सूर्यकुमारसिंह सूर्यकृष्ण सूर्यचंद्र सूर्यदत्त सूर्यदीन सूर्यदेव सूर्यदेवनारायण सूर्यदेवनारायणसिंह सूर्यदेवप्रसाद सूर्यदेवसिंह सूर्यनंदन सूर्यनाथ सूर्यनारायण सूर्यपाल सूर्यप्रकाश सूर्यप्रतापनारायणसिंह सूर्यप्रतापसिंह

सूर्यप्रसाद सूर्यबक्ससिंह सूर्यबली सूर्यबहादुर सूर्यबालक सूर्यविक्रमसिंह सूर्यभानु सूर्यभानुलाल सूर्यभूषण[1] सूर्यमंगलसिंह सूर्यमणि सूर्यमोहन सूर्यराय सूर्यलाल सूर्यसिंह सूर्यसेन सूर्यस्वरूप सूर्यानंद सौरीशचंद्र ।

(८) चंद्र—अखिलचंद्र अतुलचद अतुलचंदकुमार अतुलेशचंद्र अनुकूलचंद्र अनूपचंद अमीचंद अमृतवास अमृतसागर अमुरारीचंद आकाशचंद्र इंदु इंदुकांत इंदुबक्स इंदुलाल अत्रेश्वर कलाधर कलानाथ कलाराम कार्तिकचंद कुमुदकांत कुमुदचद्र कुमुदिनीकांत कुमुदेंदु केवलचंद्र कौमुदीकांत चंदभुजसिंह चंदराम चंदानारायण चंदालाल चंदीप्रसाद चंदूराम चंदूलाल चंद्र चंद्रकिशोर चंद्रकीर्ति चंद्रकुमार चंद्रकेश चंद्रकेशराय चंद्रजीत चंद्रज्योति चंद्रदत्त चंद्रदीप चंद्रदीपलाल चंद्रदेव चंद्रदेवचंद्र चंद्रदेवनाथ चंद्रदेवनारायण चंद्रदेवप्रसाद चंद्रदेवराम चंद्रदेवसिंह चंद्रनारायण चंद्रप्रकाश चंद्रप्रतापसिंह चंद्रप्रभाकर चंद्रप्रसाद चंद्रबल चद्रबली चद्रबलीराम चंद्रबलीसिंह चंद्रभगवान चंदभान चंद्रमनोहर चंद्रमल चंद्रमा चंद्रमाधव चंद्रमाप्रकाश चंद्रमाराम चंद्रमासिंह चंद्रराज चंद्रलाल चंद्रवंश चंद्रवंशपाल चंद्रविशाल चंद्रविहारी चंद्रसहाय चंद्रसिंह चंद्रसेन चद्रहंस चंद्राकर चंद्रोदयसिंह चाँद चाँदनारायण चादबहादुर चांदबाबू चादमल चांदरतन चादविहारी चांदविहारीलाल चांदस्वरूप चारूचंद ज्योतिषचंद्र तारकचंद तरकचंददत्त तारकनाथ ताराकांत ताराचंद ताराचंददत्त तारानाथ तारापति ताराराम देवचंद्र द्विजदेव द्विजभूषण द्विजराज द्विजेंद्र द्विजेंद्रकुमार द्विजेंद्रनाथ द्विजेंद्रमणि नलिनचंद्र नलिनीकात नवलचंद्र नवीनचंद्र निखिलचंद्र निशाकर निशाकरकांत निशाकात निशानाथ निशिकात निशिराज निशेंद्रकुमार पीयूषधर पूनमचंद्र पूर्णचंद्र पूर्णेंदुनारायणसिंह प्रकाशचंद्र प्रथमचद्र प्रफुल्लचंद्र प्रभातचंद्र प्रसन्नचंद्र बालचंद्र बालेंदु बालेंदुप्रतापसिंह बुधेश भगवानचद्र मंजुलमयंक महताबचंद महताबनारायण महताबनारायणमल महताबराय महताबसिंह मोहितचंद यामिनीकात रजनीकांत रामरत्न रिच्छपालसिंह रेखचंद्र रोहिणीरमण ललितचंद्र विमलचंद्र विमलेंदु विशेश्वचंद्र शरच्चंद्र शरदेंदुकुमार शर्वरीश शशिकांत शशिकुमार शशिनंद शशिनाथ शशिनारायण शशिप्रकाश शशिभानसिंह शशिरंजनप्रसाद शशिराज शिखरचंद शिवकरनदास शिवभूषण शिवशेखर शिशुचंद्र शीतलचंद्र शोभितचंद्र श्रीचंद्र श्री चंद्रकुमार श्रीबंधु सकलचंद्र सर्वचंद्रराय सुकुलचंद्र सुधरचंद्र सुदेवचंद्र सुधांशु सुधाकर सुधाकरकुमार सुधाकरचंद्र सुधाकरदत्त सुधाकरप्रसाद सुधाधर सुधानंद सुधानिधि सुलेशचंद्र सोमकुमार सोमदत्त सोमदेव सोमनराय सोमनारायण सोमनिधि सोमपतिसिंह सोमप्रकाश सोमभद्र सोममित्र सोमवर्द्धन सोमेशचंद्र हरभूषणलाल हिमकर हिमांशु हिमांशुराम हिमांशुराय ।

(ई) विष्णु के अवतार १ मत्स्यावतार—प्रथमावतार मीनावतार मीनाराम मीनालाल ।

(२) कूर्मावतार—किच्छूमल धरकुमार धरीधरण ।

(३) वाराहवतार—बाराहशरण श्वेतवाराह ।

(४) नृसिंहावतार—नरसिंह नरसिंहकिशोर नरसिंहदयाल नरसिंहदास नरसिंहदेव नरसिंहनंद नरसिंहनारायणलाल नरसिंहनारायणसिंह नरसिंहपाल नरसिंहप्रसाद नरसिंहप्रसादसिंह नरसिंहबहादुर नरसिंहराम नरसिंहलाल नरसिंहसहाय नरसिंहसिंह नरहरि नरहरिदत्त नरहरिनारायण नरहरिप्रसाद नरहरिराम नरहरिराय नृसिंह नृसिंहनारायणलाल नृसिंहप्रसाद नृसिंहबहादुरसिंह नृसिंहराज नृसिंहवल्लभ सिंहरूप ।

---

[1] शिव

(५) वामनावतार—अल्पनाथ अल्पनारायण उपेंद्रकुमार उपेंद्रदत्त उपेंद्रदेवनारायण उपेंद्रनाथ उपेंद्रप्रकाशचंद्र उपेंद्रप्रसाद उपेंद्रराज उपेंद्रराम उपेंद्रवीरसिंह उपेंद्रशरण उपेंद्रसिंह टीकमचद टीकमराम टीकमराय टीकमसहाय टीकमसिंह टीकाप्रसाद टीकाराम टीकालाल टीकासिंह त्रिविक्रम त्रिविक्रमप्रसाद बलिराजराम बलिजीत बलिहारी वामन वामनदास वामनप्रसाद वामनवीरप्रसाद।

(६) परशुरामावतार—परशुराम परशुरामराय परशुरामसिंह परसू परसैया भार्गव भार्ग्वनाथ भृगुआस भृगुदत्त भृगुनंदन भृगुनंदनलाल भृगुनाथ भृगुनाथनारायण भृगुनाथप्रसाद भृगुनाथलाल भृगुनाथसहाय भृगुनाथसिंह भृगुराम भृगुरासन भृगुसिंह विप्रनारायण।

(७) बुद्धावतार—अमिताभ गौतम गौतमचंद्र गौतमदेव गौतमप्रकाश गौतमसिंह परमसुख बुद्ध बुद्धदेव बुद्धपाल बुद्धलाल बुद्धसेन शाक्यमुनि शाक्यसिंह सिद्धार्थ सिद्धार्थप्रकाश सिद्धार्थराय।

(८) कल्कि अवतार—अकलंकप्रसाद सम्बलराम सम्बुलराय संभरसिंह।

(९) राम—अकलूराम अखिलकिशोरराम अगमराम अच्छराम **अजीराम** अभयराम अयोध्यानाथ अयोध्याराम अयोध्यासिंह अलखराम अवधकिशोर अवधकिशोरप्रसाद **अवधकुमार** अवधनरेश अवधनाथ अवधनारायण अवधनारायणलाल अवधनारायणसिंह अवधपति अवधपतिराय अवधबहादुर अवधमणि अवधराजसिंह[1] अवधराम अवधलाल अवधबिहारीलाल अवधविहारीशरण अवधेंद्र अवधेंद्रप्रतापसिंह अवधेश अवधेशकांत अवधेशकिशोर अवधेशकुमार अवधेशकुमारसिंह अवधेशचंद्र अवधेशदयाल अवधेशनंदन अवधेशनदनसिंह अवधेशनारायण अवधेशप्रताप अवधेशप्रसाद अवधेशमणि अवधेशलाल अवधेशबिहारीलाल अवधेशसुन्दर अवधेश्वर अवधेश्वरप्रसाद अवधेश्वरप्रसादसिंह आदिराम आनराम इक्ष्वाकुनारायण ओधराय कंगराम कर्तारीराम कामताराम कृष्णराम केवलराम कोमलराम कौलीराम कौशलकिशोर कौशलकिशोरशरण कौशलकिशोरशरणसिंह कौशलकुमार कौशलनरेशकौशलपति कौशलपाल कौशलबिहारीलाल कौशलाधीश कौशलानंद कौशलेंद्र कौशलेंद्रकुमार कौशलेंद्रप्रताप कौशलेंद्रविक्रमसिंह कौशलेंद्रशरण कौशलेश कौशलेशचंद्र कौशलेशप्रसाद कौशलेशसुन्दर कौशल्यानंदन खिंगिनराम खासाराम खेगाराम ख्यालीराम गुनईराम चरित्रराम चित्रकूटराम जगईराम जगतराम जगदीशराम जगदेवराम जगराम जगरामदास जगरामबिहारी जगरामसिंह जगवरनराम जगवल्लभराम जग्गोराम जटाधारीराम जट्टनराम जतीराम जागेराम जानकीकांत जानकीजीवन जानकीजीवनप्रसाद जानकीजीवनप्रसाद सिनहा जानकीनाथ जानकीनाथसहाय जानकीरमण जानकीरमणशरण जानकीराम जानकीवल्लभ जानकीवल्लभशरण जानकीसिंह ज्योतिषराम तपस्वीराम तुर्सीराम तुलसीचंद्र तुलसीनाथ तुलसीनारायण तुलसीपतिराम तुलसीबहादुर तुलसीराम तुलसीवल्लभ तुहीराम तेजराम त्रिभुवनराम त्रिलोकराम त्रिलोकीराम त्रिवेणीराम त्रेतानाथ दलबलराम दलराम दशरथकुमार दशरथनंदन दशरथराम दशरथलाल दाताराम दानीराम दाशरथीराम दिलवरराम दिलसुखराम दिलेराम दिशाराम दुखछोरराम दुखहरराम दुलीराम दुल्लेराम देवराम धन्नीराम धार्मिकराम नामीराम निठुरराम नित्यराम निर्भयजीराम निर्भयराम निर्मलराम निहालराम नीकूराम नूरराम नेकनामराम नेकराम नेकरामसिंह नेतराम पतिराम पनराम परिखाराम पिताराम पुन्नेशराम पूरनराम प्यारेराम प्रकाशराम प्रसन्नराम

---

[1] स्युरुत्तरपदे व्याघ्र-पुंगवर्षभ- कुञ्जराः
सिंह शार्दूल नागाद्याः पुंसिश्रेष्ठार्थ गोचराः
(अमरकोष ११०४)

फ़ुरीराम फ़ुलीराम फूलधरराम बंधनराम बंधुराम बलवंतराम बानूराम बालकराम बालजीत बालजीतनारायण बालजीतप्रसाद बेदीराम ब्रह्मराम भद्रराम भरतराय भूमिजानाथ मंगुलराम मंजूराम मखोधरराम मनहारीराम मनोराम मर्यादराम मर्यादा पुरुषोत्तम महाबलराम महाराम महावीरराम मातवरराम माधवेश्वरपतिराम मानसराम मायाराम मुक्तिराम मुदितराम मुल्कीराम मेघूराम मैथिलीमोहन यशवंतराम यादराम रघुकुलतिलक रघुनंदन रघुनंदनदयाल रघुनंदनप्रसाद रघुनंदनलाल रघुनंदनविहारी रघुनंदनसहाय रघुनंदनसिंह रघुनंदनस्वरूप रघुनंदनाचार्य रघुनाथ रघुनाथचरण रघुनाथदास रघुनाथप्रसाद रघुनाथशरण रघुनाथसहाय रघुपति रघुपतिलाल रघुपतिसहाय रघुपतिसिंह रघुपतिस्वरूप रघुपालसिंह रघुराज रघुराजकिशोर रघुराजकिशोरनारायणसिंह रघुराजकुमार रघुराज-पालसिंह रघुराजबहादुर रघुराजबहादुरलाल रघुराजशरण रघुराजशाह रघुराजसिंह रघुराजसेवकसिंह रघुराजस्वरूप रघुवंश रघुवंशकुमार रघुवशनारायण रघुवंशनारायणसिंह रघुवंशभूषणप्रसाद रघुवंश-मणि रघुवंशरत्न रघुवंशलाल रघुवंशविहारी रघुवंशविहारीलाल रघुवंशसहाय रघुवंशस्वरूप रघुवंशी रघु-वंशीलाल रघुवर रघुवरचरण रघुवरदत्त रघुवरदयाल रघुवरदास रघुवरप्रसाद रघुवरविहारीलाल रघुवर-शरण रघुवरसहाय रघुवरसिंह रघुवरस्वरूप रघुवीर रघुवीरकिशोर रघुवीरदयाल रघुवीरनारायण रघुवीर-प्रसाद रघुवीरराय रघुवीरशरण रघुवीरशरणदास रघुवीरसहाय रघुवीरसिंह रघुवीरस्वरूप रजईराम रजनूराम रमई रमचंदी रमचन्ना रमदूराम रमनू रमला रमुआ रमोसे रम्मनराम रम्मनलाल रम्मू रागीराम राघव-दास राघवप्रसाद राघवराय राघवविहारी राघवशरण राघवसेन राघवानंद राघवेंद्र राघवेंद्रकुमार राघवेंद्र-नाथ राघवेंद्रनारायणसिंह राघवेंद्रप्रतापबहादुरसिंह राघवेंद्रप्रतापसिंह राघवेद्रलाल राघवेशसुंदर राघो राघो-प्रसादसिंह राजाकौशलकिशोरप्रसादमल राजाराम राजारामशरण राजितराम राम रामअँजोर रामअक्षयवर रामअचरज रामअचल रामअचलधर रामअचलराम रामअचलराय रामअचललाल रामअजेय राम-अद्वैते रामअधार रामअधीन रामअनंत रामअनुग्रह रामअवलंब रामअवलंबराय रामअभिलाष रामअयुग रामअयोध्यासिंह रामअरजसिंह रामअवधचंद्र रामअवधलाल रामअवधसिंह रामअवधेश रामअसीम रामआनंद रामआर्त रामआश्रय रामआसरे रामइकबालराय रामइकबाललाल रामइकबालसिंह राम-इच्छासिंह रामईश्वर रामउग्रहलाल रामउग्रहसिंह रामउचित रामउच्छवसिंह रामउछाह रामउजागर-प्रसाद रामउजागरसिंह रामउजार रामउदार रामऋतुपाल रामऋतुराजकुमार रामऋषि रामऋषिदेव राम-ओंकार रामऔतार रामऔतारलाल रामकठिन रामकठिनलाल रामकदम रामकमल रामकरण रामकला-नाथ रामकल्प रामकल्याण रामकामता रामकिंकर रामकिंकरराम रामकिंकरसिंह रामकिनकनसिंह रामकिशोर रामकिशोरलाल रामकिशोरसिंह रामकीर्ति रामकीर्तिशरण रामकुंडलसिंह रामकुवेर राम-कुबेरराम रामकुबेरलाल रामकुमार रामकुमारलाल रामकृतलाल रामकृतार्थलाल रामकृपाल रामकेदार रामकेरसिंह रामकेवलराय रामकोमल रामकौलराय रामकौशल रामकौशिक रामखातिर रामखिलाड़ी रामखिलावन रामखिलोना रामखेलावन रामखेलावनप्रसाद रामखेलावनलाल रामगति रामगतिराम रामगरीब रामगहन रामगहनराम रामगुलाम रामगुलामदास रामगृही रामचंद्र रामचंद्रदास रामचंद्रनारायण रामचंद्रप्रसाद रामचंद्रप्रसादलाल रामचंद्रलाल रामचम्मनलाल रामचरित रामचरित्रप्रसाद रामचरित्र-राम रामचरित्राचार्य रामचहेलीराम रामचिरंजीव रामचीजसिंह रामचीर रामचुंबन रामछकन राम-छत्रसिंह रामछवि रामछबीला रामछबीलाराम रामछबीलेसिंह रामजग रामजगसिंह रामजतन राम-जनकलाल रामजनम रामजन्म रामजन्मराय रामजयश्री रामजश रामजसलाल रामजान रामजानकीदेव

---

१ कल्याणानां निधानं कलिमलमथनं पावनं पावनानां ।
पाथेयं यन्मुमुक्षो सपदि परपदप्राप्तये प्रस्थितस्य ॥
विश्रामस्थानमेकं कविवर वचसां जीवनं सज्जनानां ।
बीजंधर्म द्रुमस्य प्रभवतु भवतां भूतये रामनाम ॥

रामजानकीराम रामजितवनराय रामजियावन रामजी रामजीत रामजीतनाथ रामजीतराम रामजीतराय रामजीदास रामजीपाल रामजीप्रसाद रामजीराम रामजीराय रामजीलाल रामजीवन रामजीवनदास रामजीसहाय रामजीसिंह रामजू रामजोखन रामजोति रामज्ञान रामज्ञानदास रामझलक रामटहलदास रामटहलराम रामतपस्या रामतंवकराय रामतवक्कुल रामतारक रामतूफानीराम रामतेगराय रामतेज रामतोष रामदत्त रामदयानिधि रामदर्श रामदर्शमणि रामदहलराय रामदहिन रामदहिनराम रामदास रामदिलासराय रामदीन रामदुलार रामदुलारे रामदुलारेलाल रामदुलारेशरणसिंह रामदेनी रामदेव रामदेवदास रामदेवराय रामदेवलाल रामदेवसिंह रामदेवीसिंह रामदेवेश रामदौड़ रामदौरराय रामद्वार रामधड़ाका रामधन रामधनदास रामधनप्रसाद रामधनराम रामधनीसहाय रामधनीसिंह रामधनेशसिंह रामधन्वीलाल रामधर रामधरित्त्रणराम रामधरित्त्रणलाल रामधरित्त्रणसिंह रामधारी रामधारीप्रसाद रामधारीराय रामधीरजसिंह रामधुन रामधुनलाल रामधोखे रामध्यानप्रसाद रामध्यानसिंह रामध्वजसिंह रामनंद रामनंदन रामनंदनप्रसाद रामनंदनराम रामनंदनसिंह रामनक्षत्र रामनक्षत्रमल रामनगीना रामनगीनाराम रामनगीनाराय रामनगीनालाल रामनजरसिंह रामनयन रामनरेश रामनरेशप्रसाद रामनवल रामनसीव रामनागर रामनाथ रामनाथराम रामनाथसहाय रामनायक रामनारायण रामनारायणप्रसाद रामनारायणराम रामनारायणलाल रामनिचोड़ रामनिधानसिंह रामनिधि रामनिधिप्रसाद रामनियादीराय रामनियादीसिंह रामनिरंजन रामनिरंजनलाल रामनिवाज रामनिवास रामनिशानीसिंह रामनिहालसिंह रामनिहोरप्रसाद रामनिहोरसिंह रामनिहोरे रामनेतिसिंह रामनैन रामनौकर र मपति रामपतिप्रसाद रामपतिराय रामपद रामपदार्थ रामपदार्थदास रामपदुमराय रामपरसादीराम रामपरिख ।रामपरीक्षाप्रसाद रामपलट रामपलटन रामपलटराय रामपलटलाल रामपाद रामपाल रामपालराय रामपालसिंह रामपालितराय रामपुत्र रामपुरी रामपूजन रामपूजनसहाय रामपोखनलाल रामप्यारे रामप्यारेराम रामप्यारेलाल रामप्रकटमणि रामप्रकाश रामप्रकाशलाल रामप्रगट रामप्रताप रामप्रतापनाथ रामप्रतोष रामप्रदीपलाल रामप्रपन्न रामप्रपन्नदास रामप्रपन्नाचार्य रामप्रभावमल रामप्रभावसिंह रामप्रवीणराय रामप्रवेश रामप्रवेशराय रामप्रवेशसिंह रामप्रसन्न रामप्रसाद रामप्रसादराय रामप्रसादीराम रामप्रिय रामप्रीति रामफकीरराम रामफकीरलाल रामफल रामफलराम रामफुलेलसिंह रामफूलराम रामफेर रामफेरराम रामबंगाली रामबंधनलाल रामबक्स रामवचन रामबटोही रामबड़ाईराम रामबदल रामबरफसिंह रामबल रामबलिहारी रामबली रामबलीराम रामबलीसिंह रामबसंतलाल रामबहादुर रामबहादुरलाल रामबहादुरसिंह रामबहालराम रामबहोर रामबहोरीलाल रामवाजसिंह रामबाबू रामबालक रामबालकप्रसाद रामबुझावन रामबूझ रामबेटीसिंह रामबोध रामभगवान रामभंज रामभजदत्त रामभजन रामभजनराय रामभजनलाल रामभद्र रामभरतसिंह रामभरोस रामभरोसाप्रसाद रामभरोसे रामभरोसेलाल रामभवन रामभाऊ राक्रुभाल रामभावन रामभास्कर रामभीखराय रामभुज रामभुजी रामभूलन रामभूषण रामभूषणप्रसाद रामभोजमंगल राममंदिर राममगन राममगनराम राममदनराम राममनावनसिंह राममनुक राममनोज्ञ राममनोरथ राममनोहर राममहातम राममिलन राममिहिर राममुकुट राममुनि राममुनेश्वर राममुहालसिंह राममोहर रामयज्ञ रामयज्ञेश्वर रामयतनदास रामयतनराम रामयतनराय रामयत्न रामयश रामयशमल रामयशवंत रामयादसिंह रामरंग रामरंजन रामरक्षपाल रामरक्षपालसिंह रामरक्षराय रामरक्षा रामरक्षानाथ रामरक्षाप्रसाद रामरख रामरघुनाथसिंह रामरघुवर रामरघुवीर रामरघुवीरप्रसाद रामरज रामरजपालसिंह रामरणविजयप्रसादसिंह रामरतिराम रामरतिशरण रामरत्न रामरत्नदास रामरत्नराम रामरत्नलाल रामरसिक रामराखन रामराज रामराजपाल रामराजपालसिंह रामराजसिंह रामराजा रामराज्य रामराय रामरिख रामरिखपाल रामरुचिसिंह रामरुद्र रामरूप रामरूपप्रसादसिंह रामरूपराम रामरूपसिंह रामरेख रामरेखलाल रामरेखा रामरेजसिंह रामलक्ष्मण रामलखन रामलगनसिंह रामलड़ेते रामललक रामलला रामललित रामलल्लूसिंह रामलाल रामलालराम रामलोचन रामलोट रामलौटनप्रसाद रामलौटलाल रामलौटनसिंह

रामलौटसिंह रामलौलीनसिंह रामवंशलाल रामवचनराम रामवदनराय रामबदनसिंह रामवर्ण राम-वल्लभ रामवाणराम रामवासी रामविचार रामविजय रामविजयप्रसादसिंह रामविजयशरण रामविनय रामविनायकसिंह रामविनोद रामविभूतिसिंह रामविमल रामविलास रामविलासप्रसाद रामविलाससिंह रामविशाल रामविश्वाससिंह रामविहारी रामविहारीलाल रामवीर रामवीरशरण रामवृक्ष रामवृक्षलाल रामव्यास रामव्रत रामव्रतप्रसाद रामव्रतसिंह रामशकल रामशकलप्रसाद रामशकललाल रामशब्द राम-शरण रामशरणदास रामशरणलाल रामशरणसहाय रामशरीक रामशांति रामशाह रामशिरोमणि रामशीस रामशीसराम रामशुहरत रामशृंगारप्रसाद रामशेखर रामश्रीनेत रामश्रीसिंह रामश्लोक राम-संभार रामसंवारे रामसकल रामसखीराम रामसजीवन रामसजीवनलाल रामसनेहसिंह रामसनेही रामसमर रामसमुझ रामसमुझमनि रामसमोख रामसमोखन रामसम्मुख रामसरोवर रामसहाय रामसहायराम रामसांवरे लाल रामसागर रामसागरराम रामसागरलाल रामसाथा रामसिंगार रामसिंह रामसिंहासन रामसिंहासन-राय रामसिंहासनसहाय रामसिंहासनसिंह रामसिद्ध रामसुन्दर रामसुंदरनाथ रामसुंदरराम राम सुंदरलाल रामसुन्दरसिंह रामसुकुल रामसुख रामसुखराम रामसुचित रामसुचितराम रामसुदर्शन रामसुदिष्ट रामसुध रामसुधार रामसुफल रामसुफेर रामसुभग रामसुभगराम रामसुमंत रामसुमिरन रामसुमिरनलाल रामसुमेर रामसुमेरराय रामसुरंजनराय रामसुरत रामसुरतिराय रामसुरेश रामसुरेशनाथ रामसुरजनराय रामसुलक्षण-लाल रामसुशील रामसुहागसिंह रामसुहावन रामसूरत रामसूरतमणि रामसेवक रामसेवकलाल रामसोच-राम रामसोचसिंह रामस्नेही रामस्मरण रामस्वयंबरप्रसाद रामस्वरूप रामस्वरूपदत्त रामस्वरूपराय रामस्व रूपसिंह रामस्वारथ रामस्वार्थसिंह रामहंस रामहजारी रामहजूर रामहरख रामहरखचंद रामहरखसिंह राम-हरि रामहरिदास रामहरिलाल रामहर्ष रामहित रामहितकारी रामहितराय रामहितसिंह रामहिमाचलसिंह रामहुकार रामहुजूरसिंह रामहुब्ब रामहृदय रामहेत रामाकात रामाचार्य रामाज्ञा रामादर्श रामाधार रामाधारराम रामाधारी रामाधिराज रामाधीन रामाधीनराय रामानुग्रह रामानुग्रहनारायणसिंह रामा-नुग्रहसिंह रामापति रामाभिलाष रामायतनराम रामायतनराय रामाराध्य रामावतार रामावतारदास-रामावतारलाल रामावलम्ब रामाशीष रामाश्रय रामाश्रयलाल रामाश्रयशरण रामासन रामू रामूमल रामू-राम रामेंद्र रामेंद्रप्रताप रायराघोप्रसाद रायसीतानाथवली रीमलराम रूपचंद्रराम रूपराम रूराराम रेखाराम लक्ष्मणराम लक्ष्मणराय लखनराम लखनलालराम लखनेश्वरप्रकाश ललितराम लवकुशराम लायकराम लालअवधेशप्रतापसिंह लालरामशिरोमणिसिंह लेखराम वशिष्टनारायण विजयराघव विजयराम विवेकी-राम वेदराम वैदेहीवल्लभ शंकरराम शत्रुदमननाथ शांतराम शिलानाथप्रसाद शिवकरनराम शिवजोरराम शिवराम शिवरामदास शिवरामदाससिंह शिवरामप्रसाद शिवलखनराय शुभराम श्रीराम सँवरूराम सकल-देवराम सचईराम सज्जनराम सतराग सत्यराम सत्यरामप्रसाद सदलराम सदाराम सनेहीराम समरथराम सरजूशाह सरजूसिंह सरयूकांत सरयूनारायण सरयूराम सर्यूनाथ सर्वदेवराम सर्वराम सर्वसुखराम सहवीर-राम सहीराम सांवलियाराम साकेतबिहारीलाल सितईराम सियंवर सियापतिराम सियारतन सियाराम सिया-रामशरण सियावर सियावरशरण सीताकांत सीतानाथ सीतानाथलाल सीतापति सीतापतिराम सीतारमण सीतारमणशरण सीताराज सीताराम सीतारामचरण सीतारामराय सीतारामलाल सीतावरशरण सुंदरराम सुग्रीवपति सुग्रीवराय सुधीरराय सुधीराम सुमंतपति सुवचनराम सुरतिराम सेनूराम स्वरूपराम हरिनाथराम हरिनारायणराम हरिहरराम हरेराम हितराम होराम होरिलराम।

(१०) **कृष्ण**—अखिलकिशोर अचलगोपाल अचलबिहारीलाल अजयकृष्ण अटलविहारी अटलविहारीलाल अतिसुंदरस्वरूप अतींदगोपालसिनहा अतुलकृष्ण अनंगमोहन अनंतगोपाल अनंत-विहारीलाल अनादिमोहन अनिरुद्धकृष्ण अनूपकिशोर अनूपदेव अनूपलाल अनूपशाह अनूपसुंदरलाल अनूपीलाल अनोखेलाल अपूर्वकृष्ण अभयकृष्ण अभिराजराय अमरेंदकृष्ण अमृतगोपाल अलखमुरारी अवतारकिशोर अवतारकृष्ण अविनाशविहारी असितकुमारसिंह अहिवरण अहिवरणलाल अहिवरण-

सिंह आनंदकंद आनंदकिशोर आनंदकिशोरप्रसादसिंह आनंदकुमार आनंदकृष्ण आनंदगोपाल आनंदघन आनंदचंद आनंदनारायण आनंदमाधव आनंदमोहन आनंदलाल आनंदविहारी आनंदविहारीलाल, आमोदविहारीलाल इकबालकृष्ण उग्रमोहन उत्तमलाल उत्तमस्वरूप उपेंदगोपाल उद्धवराम ऋषिकृष्ण ओमविहारीलाल कंतलाल कंधई कंधईप्रसाद कंधैयालाल कन्हई कन्हईराम कन्हैया कन्हैयाचंद कन्हैयाचरण कन्हैयाप्रसाद कन्हैयाबक्ससिंह कन्हैयालाल कन्हैयाशरण कमलकृष्ण कमलमोहन कर्त्ताकृष्ण कर्त्ताकृष्णलाल कश्यपकृष्ण कहानचंद कांजीमल कांतनारायण कांतराय कांतिकृष्ण कानासिंह कान्हकुमार कान्हसिंह कान्हा कान्हाराम कामिनीमोहन कामिनीमोहनप्रसाद कामेश्वरगोपाल कालीमर्दनसिंह काश्यपकृष्ण काहनकृष्ण किरणविहारीलाल किशन किशनराजसिंह किशनलाल किशनसिंह किशुन किशुनदयालसिंह किशुनधरराय किशुनाई किशोर किशोरचंद किशोरदत्त किशोरमल किशोरलाल किशोरसिंह किशोरानंद किशोरीचंद किशोरीनंद किशोरीनंदन किशोरीनंदनप्रसाद किशोरीनंदनसहाय किशोरीपति किशोरीमोहन किशोरीमोहनलाल किशोरीरमण किशोरीरमणप्रसाद किशोरीलाल किशोरीवल्लभ किस्सू किस्सूमल कुँअरबहादुर कुँअरलाल कुंजकिशोर कुंजनसिंह कुंजनारायण कुंजरमण कुंजलाल कुंजविहारी कुंजविहारीराम कुंजविहारीलाल कुंजविहारीशरण कुंजी कुंजीलाल कुंवरकन्हैया कुंवरकृष्ण कुंवरगोपाल कुंवरजी कुंवरजीलाल कुंवरपाल कुंवरप्रसाद कुंवरबहादुर कुंवरलाल कुंवरविहारी कुंवरविहारीलाल कुंवरशरण कुंवरसिंह कुंवरसेन कुमरचंद कुमारदास कुमारविजयसिनहा कुमारसिंह कृष्ण कृष्णआधार कृष्णऔतार कृष्णकन्हैया कृष्णकन्हैयालाल कृष्णकांत कृष्णकिंकरसिंह कृष्णकिशोर कृष्णकीर्तिशरण कृष्णकुमार कृष्णकुमारलालसिंह कृष्णकेशव कृष्णगोपाल कृष्णगोपालदत्त कृष्णगोपालदास कृष्णगोविंद कृष्णगोविंदलाल कृष्णचंद कृष्णचंदराय कृष्णचरण कृष्णजीवन कृष्णजीवनलाल कृष्णदत्त कृष्णदयाल कृष्णदास कृष्णदुलार कृष्णदुलारे कृष्णदेव कृष्णदेवनारायण कृष्णदेवप्रसाद कृष्णनंदन कृष्णनंदनप्रसाद कृष्णनंदनसहाय कृष्णनाथ कृष्णनारायण कृष्णनारायणलाल कृष्णपदारथसिंह कृष्णपाल कृष्णपालसिंह कृष्णप्यारे कृष्णप्यारेलाल कृष्णप्रकाश कृष्णप्रताप कृष्णप्रतापनारायण कृष्णप्रतापनारायणलाल कृष्णप्रतापसिंह कृष्णप्रसाद कृष्णप्रेम कृष्णबलीसिंह कृष्णबहादुर कृष्णभगवंतलाल कृष्णमणि कृष्णमनोहर कृष्णमनोहरदास कृष्णमनोहरनाथ कृष्णमनोहरलाल कृष्णमाधवलाल कृष्णमुरारी कृष्णमुरारीलाल कृष्णमुरारीशरण कृष्णमूर्ति कृष्णमोहन कृष्णमोहनदयाल कृष्णमोहनप्रसाद कृष्णमोहनराय कृष्णमोहनसहाय कृष्णयोगी कृष्णरत्न कृष्णराम कृष्णलाल कृष्णवल्लभ कृष्णवल्लभसहाय कृष्णविहारी कृष्णविहारीलाल कृष्णवीर कृष्णशरण कृष्णशेखरसिंह कृष्णसहाय कृष्णसिंह कृष्णसुंदर कृष्णसेवक कृष्णसेवकलाल कृष्णस्वरूप कृष्णस्वामी कृष्णकांत कृष्णानंद कृष्णानंदनाथ कृष्णानंदस्वरूप कृष्णावतार कृष्णावतारलाल कृष्णेंद्रपाल केवलकृष्ण केशव केशवकुमार केशवकृष्ण केशवचंद केशवदत्त केशवदयाल केशवदास केशवदेव केशवनंदन केशवनाथ केशवनारायण केशवप्रसाद केशवमोहन केशवराम केशवलाल केशवशरण केशवसिंह केशवस्वरूप केशवानंद केशी केशीशाह केसोंसाहु कोबरनशाह कोलाहल कोलाहलराम कोलाहलसिंह खानचंद खानजू खानसहाय खानसिंह गंगाव्रजभूषण गताश्रमनारायण गिरधारी गिरिधर गिरिधरगोपाल गिरिधरदयाल गिरिधरनारायण गिरिधरमुरारीलाल गिरिधरलाल गिरिधरशरण गिरिधरश्याम गिरिधारी गिरिधारीदास गिरिधारीलाल गिरिराजकिशोर गिरि-

---

[1] कर्षति योगिनां मनांसीति कृष्णः। अथवा
कृषिर्भूवाचकः शब्दोणश्चनिर्वृत्ति वाचकः
तयोरैक्यं परं ब्रह्मकृष्णइत्यभिधीयते।
कृषि भू सत्तावाचक है और णनिर्वृत्तिवाचक है।
इन दोनों की एकता होने पर परब्रह्म कृष्ण कहलाता है।

राजविहारी गिरिराजस्वामी गिरिवरकृष्ण गिरिवरधारी गिरिवरधारीलाल गिरिवरनारायणलाल गिरिवर नारायणसिंह गिरिवरलाल गिरीजकिशोर गिल्लूमल गीतकृष्ण गीतमलाल गीताराम गुणीलाल गूजरमल गोकुलचन्द गोकुलनारायण गोकुलराम गोकुलसिंह गोकुलानंद गोकुलेश गोकृष्णमूर्ति गोधनलाल गोधन-सिंह गोपचन्द गोपानंद गोपाल गोपालक गोपालकृष्ण गोपालकृष्णनारायण गोपालचन्द गोपालचन्दराय गोपालजी गोपालजीमल गोपालजीलाल गोपालदत्त गोपालदास गोपालदेव गोपालधर गोपालनरेश गोपालनाथ गोपालनारायण गोपालप्रसाद गोपालबहादुर गोपालमनोहर गोपालमोहन गोपालमोहनप्रसाद गोपालराज-स्वरूप गोपालराम गोपाललाल गोपालवल्लभ गोपालविहारी गोपालशरण गोपालशरणसिंह गोपालस्वरूप गोपालाचार्य गोपालानंद गोपीकांत गोपीकृष्ण गोपीकृष्णदास गोपीकृष्णनारायण गोपीकृष्णराम गोपी-नंदन गोपीनाथ गोपीनारायण गोपीमोहन गोपीरमण गोपीराम गोपीलाल गोपीवल्लभ गोपीशरण गोपी-श्याम गोपेंद्र गोपेंद्रप्रसाद गोपेश्वर गोपेश्वरनाथ गोरधनलाल गोरधनसिंह गोली गोलीराम गोलीसिंह गोलैया गोवर्धनलाल गोविंद गोविंदचन्द गोविंदचरण गोविंददास गोविंदनारायण गोविंदपति गोविंद-प्रसाद गोविंदमाधव गोविंदमुरारीलाल गोविंदराजसेवक गोविंदराम गोविंदलाल गोविंदवल्लभ गोविंद-विहारी गोविंदविहारीलाल गोविंदशरण गोविंदसहाय गोविंदस्वरूप गोविदानंद गोविंदावतार गौरीश्याम ग्वालशरण घनदयाल घनराम घनश्याम घनश्यामकिशोर घनश्यामकृष्ण घनश्यामचन्द घनश्याम दास घनश्यामनारायण घनश्यामप्रसाद घनश्यामबहादुर घनश्याममुरारी घनश्याममोहन घनश्यामलाल घनश्यामवल्लभ घनश्यामविहारी घनश्यामशरण घनश्यामसिंह घनसिंह घनसुंदरलाल घनानंद चंदनगोपाल चंद्रगोकुलराय चंद्रगोपाल चंद्रमाधव चक्रधारीकृष्ण चतुरविहारीलाल चतुर्भुजबिहारीलाल चरित्रविहारीलाल चितरंजनविहारी चित्रकांत चित्रकृष्ण चित्रगोपाल चैनविहारीलाल चोखे-लाल छगनलाल छविनंदन छविनाथ छविनाथलाल छविनारायण छविप्रकाश छविराज छविलाल छवि-सागर छैलविहारी छैलविहारीलाल जगतकिशोर जगतकुमार जगतकृष्ण जगतनंदन जगतमोहन जगत-मोहननाथ जगतविहारी जगतविहारीलाल जगदर्शन जगदानंद जगदीपनारायण जगदीशकृष्ण जगदीश-मोहन जगनंदन जगनंदनप्रसाद जगनंदनलाल जगन्नाथ जगन्नाथकृष्ण जगपाल जगपालकिशोर जगपाल-कृष्ण जगमालसिंह जगमूरत जगमेरसिंह जगमोहन जगमोहनदास जगमोहनराय जगमोहनलाल जगमोहन-शरण जगमोहनसहाय जगमोहनस्वरूप जगराजविहारी जगलाल जगवंतलाल जगवंशकिशोर जगवंशलाल जगवल्भ जगवीरशरण जगारदेव जदुनंदन जदुनंदनलाल जदुनंदनसिंह जदुनाथ जदुराजबली जदुलाल जदुवंशसहाय जदुवीर जनानंद जनार्दन जनार्दनदास जनार्दनप्रसाद जनार्दनराय जनार्दनसिंह जनार्दन-स्वरूप जमुनानाथ जमुनानारायण जमुनालाल जयकरणलाल जसोदानंद जसोदानंदन जसोदानंदराय जादवप्रसाद जादोराय जादोसिंह जालपाकृष्ण जितेंद्रमोहन जीवनकिशोर जीवनकृष्ण जीवनलाल जुगल-किशोर जुगलकिशोरप्रसादसिंह जुगललाल जुगलविहारीलाल जुगींद्रनारायण जुगुलकिशोरनारायण जुगुल-किशोरप्रसाद जुगुलचंदपाल जोगराज जोगेंद्रपाल ठकुरी ठकुरीप्रसाद ठकुरीलाल ठकुरीसिंह ठाकुर ठाकुर-चंद ठाकुरचरण ठाकुरजी ठाकुरदत्त ठाकुरदयालु ठाकुरदास ठाकुरदीन ठाकुरप्रसाद ठाकुरबक्ससिंह ठाकुरमल ठाकुरलाल ठाकुरसहाय ठाकुरसिंह ठाकुरानंद ताजविहारीलाल ताराकृष्ण तृप्तनारायण तेज-विहारी त्रिभुवनकुमार त्रिभुवनप्रकाश त्रिभुवनप्रतापसिंह त्रिभुवनप्रसाद त्रिभुवनबहादुरसिंह त्रिभुवनराय त्रिभुवनलाल त्रिभुवनविहारीलाल त्रिभुवनशरण त्रिभुवनसिंह त्रिभुवनसुख त्रिभुवनानंद त्रिमालसिंह त्रिमोहनलाल त्रिलोकचन्द त्रिलोकभास्कर त्रिलोकराय त्रिलोकसिंह त्रिलोकीसिंह त्रिवेणीमाधव त्रिवेणी-लाल त्रिवेणीश्याम दधिराम दयाकृष्ण दयालमोहन दयावंतलाल दानविहारीलाल दामवरसिंर दामलाल दामोदर दामोदरगोविंद दामोदरदास दामोदरदीन दामोदरनाथ दामोदरनारायण दामोदरप्रसाद दामोदर-लाल दामोदरसहाय दामोदरसिंह दामोदरस्वरूप दिनकरगोपाल दिनेशविहारीसिंह दिनेशमोहन दुखछोर दुखभंजन दुखभंजनप्रसाद दुखभंजनलाल दुखहरण दुखहरणनाथ दुखहरणसिंह दुनियालाल दुलारे-

मोहन दुलारेलाल देवकिशोर देवकीनंदन देवकीनंदनप्रसाद देवकीनंदनस्वरूप देवकीलाल देवकृष्ण देवकृष्णलाल देवकृष्ण द्वंदविहारी द्वारकालाल द्वारकेशजी द्वारिकाधीश द्वारिकानाथ द्वारिकाबहादुर द्वारिकाराम द्वारिकासिंह द्वारिकेश धीरेंद्रमोहन धूमविहारीलाल धेनुकृष्ण ध्यानकृष्ण ध्रुवविहारीलाल नंदकिशोर नंदकिशोरप्रसाद नंदकिशोरराम नंदकिशोरलाल नंदकिशोरसिंह नंदगोपाल नंदगोपालराम नंदजीराम नंदजीराय नंदजीलाल नंदजीसहाय नंददुलारे नंदनंदन[1] नंदन नंदनगोपाल नंदनप्रसाद नंदनलाल नंदनशरण नंदनसिंह नंदनस्वरूप नंदबहादुर नंदराज नंदराम नंदराय नंदरूप नंदलाल नंदवल्लभ नंदूलाल नटवर नटवरविहारीलाल नटवरलाल नवजादिकलाल नवनीतनारायण नवनीतराय नवनीतलाल नवलकिशोर नवलकिशोरप्रसाद नवलबहादुर नबलविहारी नवलविहारीलाल नवीनकिशोर नवीननारायण नागर नागरदत्त नागरदास नागरमल नागेंद्रमोहन नारायणविहारी निठुरविहारीलाल नितबरनसिंह नित्यकिशोर नित्यगोपाल नित्यविहारी नित्यविहारीलाल निवाजलाल निर्भयलाल निर्मलकुमार नीरदवरण नीलकुमार नीलकृष्ण नृत्यकिशोर नृत्यगोपाल नृत्यविहारीलाल नेतकृष्ण नैनीगोपाल नौनीतलाल नौनीलाल नौरंगविहारीलाल नौरंगीलाल पटवर्धनलाल पतिराखन पतिराखनलाल परमाराय परमालाल पार्थेश्वर पावनविहारीलाल पितांबर पीतमलाल पीतावरकिशोर पीतावरदत्त पीतांवरदास पीतांवरप्रसाद पीतावरलाल पीतांवरशरण पीतांवरसिंह पीतावरस्वरूप पुनीतलाल पुरुषोत्तम पुरुषोत्तमकुमार पुरुषोत्तमचन्द्र पुरुषोत्तमदयाल पुरुषोत्तमदास पुरुषोत्तमदेव पुरुषोत्तमनाथ पुरुषोत्तमनारायण पुरुषोत्तमप्रसाद पुरुषोत्तमभगवान पुरुषोत्तमलाल पुरुषोत्तमशरण पुरुषोत्तमसिंह पुरुषोत्तमस्वरूप पुलिनविहारीलाल प्यारेकृष्ण प्यारेमोहन प्यारेमोहनराम प्यारेमोहनलाल प्यारेलाल प्रकाशकिशोर प्रकाशकृष्ण प्रकाशविहारीलाल प्रकाशमोहन प्रकाशलाल प्रसन्ननाथ प्रफुल्लकुमार प्रफुल्लितकिशोर प्रभुलाल प्रमादहरलाल प्रमोदविहारीलाल प्रियकांत प्रियलाल प्रियाकांत प्रियानंद प्रियानंदनारायणसिंह प्रियानंदप्रसादसिंह प्रियानंदसिंह प्रियासहाय प्रियेंद्रपालसिंह प्रेमकिशोर प्रेमकुमार प्रेमकृष्ण प्रेमगोपाल प्रेमविहारी प्रेमविहारीलाल प्रेममाधव प्रेममोहन प्रेममोहनलाल प्रेमलाल प्रेमहरि फूलकृष्ण बंकटलाल बंदीछोर बंदीदीन बंदीप्रसाद बंदीरत्न बंदीराम बंधनलाल बंधलाल बंसिया वंसूसिंह बनवारी बनवारीराम बनवारीलाल बनवारीसिंह बरसानेलाल बलकांतचन्द्र बलदेवविहारीलाल बलरामकृष्ण बलविहारी बलविहारीलाल बलवीर बलवीरचन्द्र बलवीरदास बलवीरनारायण बलवीरप्रसाद बलवीरबहादुर बलवीरभद्रसिंह बलवीरशरण बलवीरसहाय बलवीरसिंह बसदेवकीनंदन बसवानंद बाँकेविहारी बाँकेविहारीराम बाँकेविहारीलाल बाँकेलाल बालकिशोर बालकृष्ण बालकृष्णदास बालकृष्णप्रसाद बालकृष्णसहाय बालकेशनारायण बालकेश्वरप्रसाद बालगोपाल बालगोविंद बालगोविंदप्रसाद बालगोविंदलाल बालगोविंदसहाय बालगोविंदसिंह बालमुकुद बालमुकुंददास बालमुकुंदलाल बालमुकुंदसहाय बालमुकुंदस्वरूप बिदाराम बिंदेविहारीलाल बिजनू विहरिया विहारीसिंह बृजभूखनलाल वृजराजकिशन ब्रह्मगोपाल ब्रह्ममोहन ब्रिजलाल भक्तीशचन्द भक्तीशप्रसाद भगनलाल भगनसिंह भगन्ना भगवानकिशोर भगवानकृष्ण भगवानविहारीलाल भगवानलाल भगोलेसिंह भगौने भग्गनप्रसाद भग्गनमल भग्गूलाल भानुकृष्ण भारतकृष्ण भारतकृष्णलाल भुवनमोहन भूकरनलाल भूपालकृष्णराय मंजूलाल मक्खनलाल मक्खनसिंह मगनकिशोर मगनकृष्ण मगनविहारी मगनविहारीलाल मगनलाल मढुकधारीसिंह मणिलाल मणींदप्रसाद मणींदभूषण मणींद्रलाल मथुरानंद मथुरानारायण मथुरामणि मथुराराम मथुरालाल मथुराविहारी मथुरासिंह मथुरीलाल मदनकिशोर मदनकुमार मदनगोपाल मदनमनोहर मदनमनोहरलाल मदनमुरारी मदनमोहन मदनमोहनकृष्ण मदनमोहनदास मदनमोहनलाल मदनमोहनशरण मदनमोहनसहाय मदनलाल मदनविहारी मदनविहारीलाल मधई मवबा मधुबनधर मधुबनलाल मधुरमनोहर मधुरमोहन मनप्यारेलाल मनभावनलाल मनमोदनारायण मनमोहन मनमोहनकुमार मनमोहनकृष्ण मनमोहनगोपाल मनमोहन-

[1] देवं नंदनंदनं वंदे।

दयाल मनमोहनदास मनमोहननारायण मनमोहनलाल मनमोहनशरण मनमोहनसहाय मनमोहनसिंह मनमोहनस्वरूप मनराखनलाल मनरूप मनहरननारायण मनहरनप्रसाद मनहर्षनारायण मनहारीराम मनहारीलाल मनोहर मनोहरकुमार मनोहरकृष्ण मनोहरदत्त मनोहरदयाल मनोहरदास मनोहरनारायण मनोहरप्रसाद मनोहरभूषण मनोहरलाल मनोहरशरण मनोहरश्याम मनोहरसिंह मनोहरस्वरूप मनोहरी· लाल महाराजकृष्ण महेंद्रकृष्ण महेंद्रमोहन माखनलाल माठूराम माथुर माधुरीमोहन माधुरीरमण मानिकलाल मीराराम मुकुंदराम मुकुंदलाल मुकुंदीलाल मुकुटधर मुकुटधारी मुकुटनारायण मुकुटमनोहर मुकुटमुरारी मुकुटबल्लभ मुकुटबिहारीलाल मुकुटेश्वरीमोहनसिंह मुदितमनोहरलाल मुरलीधर मुरलीधर-गोपाल मुरलीधरनारायणप्रसाद मुरलीमनोहर मुरलीमनोहरप्रसाद मुरलीमनोहरलाल मुरलीमनोहरशाह मुरलीमनोहरसिंह मुरलीश्याममनोहर मुरलीसिंह मुरहू मुरारीकृष्ण मुरारीचंद्र मुरारीमोहन मुरारीमोहन-लाल मुरारीमोहनसिंह मुरारीलाल मुरारीशरण मुराहूराम मुराहूसिंह मेघवरणसिंह मेघश्याम मेघसिंह मोर-मुकुट मोहन मोहनकिशोर मोहनकुमार मोहनकृष्ण मोहनचंद्र मोहनदयाल मोहनदास मोहननारायण मोहनप्यारे मोहनबहादुर मोहनमनोहरसिंह मोहनमुरारी मोहनराम मोहनलाल मोहनवल्लभ मोहन-विहारी मोहनशरण मोहनश्याम मोहनसिंह मोहनस्वरूप मोहनाचार्य मोहनीमोहनलाल यतींद्रमोहन यदु-चरित्रसिंह यदुनंदन यदुनंदनप्रसाद यदुनंदनराय यदुनंदनलाल यदुनंदनशरण यदुनाथ यदुनाथप्रताप-सिंह यदुनाथप्रसाद यदुनाथवक्ससिंह यदुप्रसाद यदुराज यदुराजबली यदुलाल यदुवंशभूषण यदुवंश-राम यदुवंशलाल यदुवंशशरण यदुवंशसहाय यदुवीरशरण यदुवीरसिंह यमलार्जुनसिंह यमुनाधर यशवंत-कृष्ण यशोदानंद यशोदानंदन यशोदानंदनप्रसाद यागेंद्रविहारीलाल यादवचंद्र यादवदत्त यादवदास यादवनाथ यादवप्रसाद यादवमोहन यादवेंद्र यादवेंद्रदत्त यादवेंद्रनाथ यादवेंद्रनारायणसिंह यादवेंद्र-पालसिंह यादवेंद्रप्रताप यादवेंद्रप्रसाद यादवेंद्रबहादुरसिंह यादवेंद्रशरण यादवेंद्रसिंह युगलकिशोर युगलकिशोरप्रसाद युगलकिशोरसिंह युगलनाथ युगलनारायण युगलराय युगलसिंह युगलेंद्र योगेंद्रकुमार योगेश्वर योगेश्वरदत्त योगेश्वरदयाल योगेश्वरप्रसाद योगेश्वरस्वरूप रंगदास रंगनाथ रंगनारायण रंग-प्यारेसिंह रंगबहादुरलाल रंगबहादुरसिंह रंगलाल रंगलालराम रंगविहारी रंगविहारीलाल रंगसिंह रंगी-लाल रङ्गीलेमोहन रंगीलेलाल रंगीसिंह रंगू रंगेश रंगेश्वरदयाल रंतूलाल रणछोरदास रणछोरप्रसाद रण-छोरलाल रतिलाख रतीशमोहन रत्नगोपाल रत्नविहारीलाल रनछोर रमणलाल रमणविहारीलाल रमणी-मोहनसिनहा रमणेतविहारी रसिकलाल रहसविहारीलाल रहस्यविहारी राजकृष्ण राजकेशव राजगोपाल राजमोहनशरण राजबिहारी राजविहारीलाल राजेंद्रमोहन राजेंद्रलाल राजेंद्रविहारी राजेंद्रविहारीलाल राजेश्वरमुरलीमनोहर राधाकमल राधाकांत राधाकुमार राधाकुमुद राधाकृष्ण राधाकृष्णलाल राधाकृष्णसिंह राधागोपाल राधागोविंद राधानाथ राधापति राधामणिराम राधामनहरणलाल राधामाधव राधामोहन राधामोहनराय राधामोहनसिंह राधारंजन राधारमण राधाराय राधावल्लभ राधाविनोद राधाविहारी राधा-सहाय राधिकानंदन राधिकानारायण राधिकारमणप्रसाद राधिकारमणप्रसादसिंह राधिकाविहारी राधे-कृष्णदास राधेगोविंद राधेनाथ राधेविहारीलाल राधेमोहन राधेलाल राधेश्याम राधेश्यामदास राधेश्याम-प्रसाद राधेश्यामलाल राधेश्यामसिंह राधेश्वरबली रामकेशव रामगोकुलसिंह रामगोपाल रामगोपाल-नारायण रामगोपालसिंह रामगोविंद रामगोविंददास रामश्याम रामगोकुलसिंह रामेश्वरकृष्ण रामकृष्ण-किशोरचन्द्र रामकृष्णदास रासविहारी रासविहारीलाल रुकमिनराय रुद्रगोपाल रुद्रमोहन रुद्रहरि रूपकांत रूपकिशन रूपकिशोर रूपकृष्ण रूपचन्द्र रूपनसिंह रूपनाथ रूपनारायण रूपनारायणदास रूपनारायणलाल रूपनारायणसिंह रूपबहादुर रूपरत्न रूपराज रूपलाल रूपसिंह रूपेंद्र रूपेंद्रप्रकाश रूपेंद्रबहादुर लक्ष्मीकृष्ण ललितकिशोर ललितकिशोरदास ललितकिशोरसिंह ललितकुमार ललितचन्द्र ललितमोहन ललितमोहन-नाथ ललितलाल ललितविहारीलाल ललितसिंह ललितारमण ललिताराम ललोराम लल्लनजीगोपाल लाड़िलीमोहन लाड़िलीलाल लालकृष्ण लालकुमारसिंह लालगतिसिंह लालगिरि लालचन्द लालचन्द-

सिंह लालजी लालजीत लालजीप्रसाद लालजीमल लालजीराम लालजीलाल लालजीसहाय लालजीसिंह लालधर लालनारायण लालप्रकाश लालबक्स लालबचन लालबहादुर लालबहादुरसिंह लालबाबू लालमणि लालमुनि लालराय लालविहारी लालविहारीलाल लालशरणराय लालसाहिब लालसिंह लालपट लीलांवरसिंह लीलाधर लीलाधरसिंह लीलानंद लीलानिधि लीलापति लीलापतिसहाय लीलापुरुषोत्तम लीलाराम लोकानंद वंशगोपाल वंशविहारीसिंह वंशीधर वंशीमनोहर वंशीलाल वनमाली वनमालीदास वनमालीप्रसाद वनमालीलाल वनविहारी वल्लभरसिक वल्लभराम वल्लभलाल वल्लभसिंह वासुदेव वासुदेवदास वासुदेवनारायण बासुदेवपति वासुदेवप्रसाद वासुदेवराम वासुदेवराय वासुदेवलाल वासुदेवविहारी वासुदेवशरण वासुदेवसहाय वासुदेवसिंह वासुदेवानंद विजयकृष्ण विजयगोविंद विजयमोहन विजयविहारी विदुरनाथ विनयकृष्ण विनीतविहारी विनोदकृष्ण विनोदविहारीलाल विपिनकृष्ण विपिनचंद्र विपिनमोहन विपिनविहारी विपिनविहारीलाल विमलकांत विमलकिशोर विमलकुमार विमलमोहन विमलविहारी विश्वप्रिय विश्वमोहन विश्वरंजन विश्वरूप विहारी विहारीचरण विहारीदास विहारीलाल विहारीशरण वीरविहारीलाल वीरेंद्रविहारी वीरेंद्रमोहन वृंदबहादुरसिंह बृंदानारायण वृंदावनविहारी वृंदावनलाल वृंदावनसिंह वेदकृष्ण व्यथितद्वारकानाथ व्रजइकबालसिंह व्रजकांत व्रजकांतस्वरूप व्रजकिशोर व्रजकुमार व्रजकृष्ण व्रजकृष्णदास व्रजगोपाल व्रजचंद व्रजचंदनाथ व्रजनंद व्रजनंदनप्रसाद व्रजनंदनराय व्रजनंदनलाल व्रजनंदनशरण व्रजनंदनसहाय व्रजनंदनस्वरूप व्रजनागर व्रजनाथ व्रजनायक व्रजनारायण व्रजनारायणमल व्रजनारायणराम व्रजपति व्रजपतिभूषण व्रजपतिराय व्रजपतिसिंह व्रजपतेश व्रजपाल व्रजपालशरण व्रजपालसहाय व्रजपालसिंह व्रजबहादुर व्रजबहादुरसिंह व्रजविट्ठलदास व्रजभान व्रजभानसिंह व्रजभुवनसिंह व्रजभूषण व्रजभूषणदत्त व्रजभूषणदास व्रजभूषणप्रसाद व्रजभूषणराय व्रजभूषणलाल व्रजभूषणसिंह व्रजमंगलसिंह व्रजमनोहरदास व्रजमुकुटकिशोर व्रजमोहन व्रजमोहनदास व्रजमोहनलाल व्रजमोहनशरण व्रजरत्न व्रजरत्नदास व्रजराज व्रजराजकिशोर व्रजराजकृष्ण व्रजराजबहादुर व्रजराजराय व्रजराजविहारी व्रजराजशरण व्रजराजसहाय व्रजराजसिंह व्रजराय व्रजलाल व्रजवंश व्रजवंशविहारी व्रजवंशविहारीलाल व्रजवल्लभ व्रजवल्लभदास व्रजवल्लभनारायणसिनहा व्रजवल्लभशरण व्रजवल्लभसहाय व्रजवासी व्रजवासीदत्त व्रजवासीलाल व्रजविलास व्रजविहारी व्रजविहारीलाल व्रजविहारीशरण व्रजवीर व्रजवीरशरण व्रजवीरशरणदास व्रजवीरसिंह व्रजस्वामी व्रजानंद व्रजेंद्र व्रजेंद्रकिशोर व्रजेंद्रकुमार व्रजेंद्रदत्त व्रजेंद्रनाथ व्रजेंद्रपाल व्रजेंद्रपालसिंह व्रजेंद्रप्रताप व्रजेंद्रप्रसाद व्रजेंद्रबहादुर व्रजेंद्रलाल व्रजेंद्रसिंह व्रजेंद्रस्वरूप व्रजेश व्रजेशकुमार व्रजेशचंद्र व्रजेशनारायण व्रजेश्वर व्रजेश्वरनाथ व्रजेश्वरप्रसाद व्रजेश्वरस्वरूप शंकरकृष्ण शंकरदामोदर शंकरमाधव शचींद्रगोपाल शरणगोपाल शरणविहारी शरणविहारीलाल शांतिगोविंदविहारी शिवकिशन शिवकृष्ण शिवगोपाल शिवगोविंद शिवगोविंदपाल शिवगोविंदप्रसाद शिवगोविंदलाल शिवगोविंदसिंह शिवजनार्दन शिवमाधव शिवमोहन शिवविहारी शिवविहारीलाल शिवश्याम शिवहरि शिवहरिलाल शिवेंद्रमोहन शुभलाल शैलेंद्रकृष्ण शोभानाथलाल शोभापति श्याम श्यामअधीन श्यामकिशोर श्यामकिशोरलाल श्यामकिशोरशरण श्यामकुमार श्यामकृपाल श्यामकृष्ण श्यामकृष्णकांत श्यामकृष्णराय श्यामखेलावन श्यामखेलावनलाल श्यामगोपाल श्यामगोपालनाथ श्यामचंद्र श्यामजी श्यामजीलाल श्यामजीसहाय श्यामजीसिनहा श्यामदत्त श्यामदास श्यामदुलारेलाल श्यामदेव श्यामनंदन श्यामनंदनसहाय श्यामनरेश श्यामनाथ श्यामनारायण श्यामपाल श्यामप्यारेलाल श्यामप्रकाश श्यामप्रसाद श्यामवदन श्यामवरण श्यामवरणलाल श्यामबहादुर श्यामबाबू श्यामभरोसे श्याममनोहर श्याममनोहरलाल श्याममनोहरसिंह श्याममुरारी श्याममूर्ति श्याममूर्तिप्रसाद श्याममोहन श्याममोहननाथ श्यामरथी श्यामराज श्यामरूपप्रसाद श्यामलकांत श्यामलकिशोर श्यामलदास श्यामलसिंह श्यामलानंद श्यामलाल श्यामविहारी श्यामविहारीलाल श्यामशरण श्यामसनेही श्यामसांवलेलाल श्यामसिंह श्यामसुंदर श्यामसुंदरदास श्यामसुंदरनारायण

श्यामसुंदरलाल[1] श्यामसूरत श्यामस्वरूप श्यामहित श्यामाकांत श्यामाकिशोर श्यामाकुमार श्यामादेव श्यामानंद श्यामापति श्यामाशरण श्यामाराम श्यामासिंह श्यामेंद्रसिंह श्यामेश्वरप्रसाद श्यामेश्वर-बहादुरसिंह श्यामोराम श्रीकिशोर श्रीकृष्ण श्रीकृष्णजीवन श्रीकृष्णदास श्रीकृष्णवल्लभ श्रीकृष्णसहाय श्री-गोपाल श्रीगोपालचंद्र श्रीगोपालनारायणराय श्रीगोविंद श्रीगोविंदराम श्रीनंदन श्रीनंदनदास श्रीनंदनप्रसाद श्रीमन्लाल श्रीमुरलीश्याममनोहर श्रीरंगजी श्रीरंगनाथ श्रीरंगनारायणसिंह श्रीरंगबहादुरसिंह श्रीरंगसिंह श्रीविहारीजीदास श्रुतिबंधु संसारीलाल सकलदेव सकलनारायण सखीचंद्र सखीचंद्रराम सखीचंद्रसहाय सखीराम सखेशचंद्र सगुनलाल सतीशगोपाल सत्यनारायणकृष्ण सत्यमोहन सत्यविहारी सदारंग सदा-विहारी सदाविहारीलाल सद्गोपाल सनेहीलाल सबलकिशोर सबलायकराय सबसुखलाल सरूपीलाल सर्वजीतनारायण सर्वजीतलाल सर्वजीतसिंह सर्वसुखलाल सलोनेश्याम सांवरेलाल[2] सावलदत्त सांवलदास सांवलप्रसाद सांवलसहाय सांवलिया सांवलियाविहारीलाल सांवलीमोहन सांवलेसिंह साखीगोपाल सामली-प्रसाद सिद्धगोपाल सिद्धविहारीलाल सुंदर सुंदरगोपाल सुंदरदास सुंदरनारायण सुंदरपाल सुंदरप्रकाश सुंदरप्रसाद सुंदरराम सुंदरलाल सुंदरश्याम सुंदरसिंह सुंदरस्वरूप सुघड़विहारीलाल सुदर्शनलाल सुदामा-राम सुदामाराय सुदामालाल सुदिष्टलाल सुनीलकुमार सुनीलचंद्र सुफलकसिंह सुमनविहारीलाल सुशील-विहारीलाल सूरजकृष्णप्रसाद सूर्यकृष्ण सूर्यमोहन स्वरूपकृष्ण स्वरूपचंद स्वरूपलाल हरगोपाल हर-गोविंद हरगोविंददयाल हरगोविंददास हरविहारीलाल हरिकृष्ण हरिकृष्णदयाल हरिकृष्णदास हरि-कृष्णनारायण हरिकृष्णराय हरिकृष्णसिंह हरिकेशपति हरिगुलाल हरिगोपालदास हरिगोविंदप्रसाद हरि-गोविंदलाल हरिगोविंदसहाय हरिगोविंदसिंह हरिवंशकिशोर हरिवंशप्रसाद हरिवंशभूषण हरिवंशराय हरिवंशलाल हरिवंशसहाय हरिवंशसिंह हरिहरगोपाल हरिहरश्याम हरेकृष्ण हरेशविहारीलाल हृषीकेश हृषीकेशलाल हृषीकेशशरण।

(उ) अन्य देव-देवियाँ—(१) अश्विनी—अश्विनीकुमार अश्विनीप्रसाद।

---

[1] स्याम तन स्याम मन स्याम ही हमारो धन,
आठौ जाम ऊधौ हमें स्याम ही सों काम है,
स्याम हिये स्याम जिये, स्याम बिनु नाहिं तिये,
आँधे की सी लाकरी अधार स्याम नाम है।
स्याम गति स्याम मति स्याम ही है प्रानपति
स्याम सुखदाई सों भलाई सोभाधाम है,
ऊधौ तुम भए बौरे पाती लैके आए दौरे
जोग कहाँ राखैं यहाँ रोम रोम स्याम है॥
(रत्नाकर-उद्धव शतक)

[2] माथे पै मुकुट देखि, चंद्रिका-चटक देखि,
छवि की लटक देखि रूप रस पीजिये।
लोचन बिसाल देखि गरे गुंज माल देखि,
अधर रसाल देखि चित्त चाव कीजिये॥
कुंडल हलनि देखि अलक बलनि देखि,
पलक चलनि देखि सरबस दीजिये।
पीतंबर की छोर देखि, मुरली की घोर देखि,
सांवरे की ओर देखि, देखिबोई कीजिये॥

(२) आकाश—आकाशमित्र आसमानसिंह गगनचंद्र गगनदेव गगनदेवनारायणसिंह गगनराम गगनलाल गगनबिहारीलाल गगनसिंह।

(३) ऊर्वा—ऊर्वादत्त।

(४) ऋभु—ऋभुदयाल ऋभुदेव।

(५) कलि—कलिराम।

(६) कल्पद्रुम—कल्पद्रुम।

(७) किन्नर—किंदर किंदरलाल किंदरुसिंह किन्नरसिंह।

(८) गंधर्व—गंधर्व गंधर्वसिंह गंधर्वसेन चित्रसेन विद्याधर।

(९) गरुड—खगेश खगेश्वर खगेश्वरप्रसाद गरुड़ गरुड़दत्त गरुड़दयाल द्विजराज पन्नगेश बाजपति बाजसिंह शिवगरुड़।

(१०) चक्रसुदर्शन—चक्कर चक्करसिंह चक्रदत्त चक्रदीन चक्रसिंह सुदर्शन सुदर्शनकुमार सुदर्शनचक्र सुदर्शनदयाल सुदर्शनदास सुदर्शनदेव सुदर्शनप्रसाद सुदर्शनसिंह।

(११) चित्रगुप्त—चित्रगुप्त चित्रगुप्तप्रसाद चित्रदत्त चित्रपालसिंह चित्रमणि चित्रशरण चित्रूराम चित्रूराय।

(१२) जयंत—जयंत जयंतकुमार।

(१३) दक्ष—दक्ष दक्षकुमार दक्षराज।

(१४) दिक्पाल—दिक्पाल दिक्पालमणि दिक्पालसिंह लोकपाल लोकपालसिंह।

(१५) दिग्गज—दिग्गजप्रसाद दिग्गजराम दिग्गजसिंह दिग्गे।

(१६) नांदी—नंदीदीन नंदीलाल नंदीसिंह।

(१७) पृथ्वी—उर्वीदत्त खौनीमल खौनीलाल भूदत्त भूदत्तप्रसाद भूदत्तसिंह भूमिकासिंह महीलाल मेदिनीप्रसाद मेदिनीशरण वसुधा वसुधानंद वसुधाराम।

(१८) बृहस्पति—देवपूजनराय देवाचार्य बृहस्पति वागीश वागीशचंद्र वागीशदत्त वागीशनारायण वागीश्वर वाचस्पति।

(१९) मंगल—कुजेंद्रदत्त।

(२०) मेघ—घनश्याम घनसिंह जलधरसिंह मेघसिंह।

(२१) यक्ष—यक्षदत्त।

(२२) राहु—राहुनाथ राहुवीरसिंह राहुमल।

(२३) वसु—वसुदत्त वसुपति वसुमित्र।

(२४) विश्वकर्मा—सुकर्मपालसिंह विश्वरूप।

(२५) शुक्र—शुक्रराज शुक्रलाल शुक्राचार्य।

(२६) सपाति—संपातीलाल।

(२७) शेष—उर्वीधर क्षमाधर धरणीधरप्रसाद धराधर नागनाथ नागेंद्र नागेंद्रकिशोर नागेंद्रकुमार नागेंद्रदत्त नागेंद्रप्रसाद नागेंद्रबहादुरसिंह नागेंद्रमोहन नागेश नागेशचंद्र नागेशदत्त नागेश्वर नागेश्वरदत्त नागेश्वरदेव नागेश्वरनाथ नागेश्वरनारायणसिंह नागेश्वरप्रसाद नागेश्वरबक्ससिंह नागेश्वरसहाय नागेश्वरसिंह नागेश्वरानंद पृथ्वीधर फणींद्र फणींद्रकुमार फणींद्रनाथ फणीश फणीशदत्त भूधर भूधरसिंह भूमिधर भोगमणि मेदिनीधर।

---

[1] क्रतुर्दक्षोवसुः सत्यः कालः कामस्तथैव च
धूरिश्च लोचनश्चैव तथा चैव पुरूरवाः
आश्रवश्च दशैवैते विश्वेदेवाः प्रकीर्तिताः।

(मत्स्य पु० १७१ बृहस्पति)

(२८) अन्य देवियाँ—अंजनी अंजनीप्रसाद उसई कनकलतासहाय गोचरण गोदानी गोमाजी तुलसी तुलसीदत्त तुलसीप्रसाद नंदिनीकुमार परीदीन बेलनराम बेलनसिंह बेलाप्रसाद बेलीचंद बेलीसिंह भालदाप्रसाद मालतीदास मीनालाल मुखनाथसिंह मुखराम मुखरामराय मुखरामसिंह मुखलाल मुखलालसिंह मैना रतलू रतिलाल रत्ती रत्तीलाल लीला लीलाप्रसाद लीलासिंह शचिकुमार सिद्धिप्रसाद सिद्धिसिंह सिमईराम सिमईसिंह ।

(ऊ) अन्यावतार (१) राम सम्बन्धी (अ) सीता—अवधेश्वरीनंदनसहाय अवधेश्वरीप्रसादसिंह जनकसुताशरण जानकी जानकीदत्त जानकीदास जानकीप्रसाद जानकीशरण जानकीसिंह जानकीस्वरूप मिथिलेश्वरीशरण मैथिलीशरण रमाकुमार रामजानकी रामजानकीदास रामजानकीप्रसाद रामतीप्रसाद रामदेवीसिंह रामप्रियाशरणसिंह रामवल्लभाशरण रामसिया रामसियादास रामसियाशरण रामा रामाद्या वैदेहीचरण वैदेहीशरण सितई सितईराम सियादीन सियानंद सियानंदनसिंह सियाप्रसाद सियाशरण सीताप्रताप सीतामल सीताशरण सीतासिंह ।

(आ) लक्ष्मण—उर्मिलानंदन उर्मिलाप्रसाद उर्मिलामोहन रामलक्ष्मण रामलक्ष्मणसिंह रामलखन रामलखनलाल रामलषन रामसहोदर लक्ष्मण लक्ष्मणकुमार लक्ष्मणचंद्र लक्ष्मणदास लक्ष्मणदेव लक्ष्मणप्रकाश लक्ष्मणप्रसाद लक्ष्मणशंकर लक्ष्मणसिंह लक्ष्मणस्वरूप लखन लखनकिशोर लखनदास लखनदेवप्रसाद लखनप्यारेलाल लखनप्रसाद लखनलाल लखनिया लछमन लछमनदास लछमनसिंह लछिमना लषण सियारामानुज सुमित्रानंदन सुमित्रानंदनप्रसाद सुमित्राप्रसाद ।

(इ) भरत—कैकईनंदनसहाय भरत भरतऔतार भरतकिशोर भरतकुमार भरतचंद्र भरतजी भरतनारायण भरतराज भरतलाल भरतसिंह भरताराय भरतू भरतूमल भरतो भरथप्रसाद भर्तूमल रामभरतसिंह ।

(ई) शत्रुघ्न—अरिदमनसिंह अरिमर्दन अरिमर्दनप्रसाद अरिमर्दनसिंह भरतानुजदास रिपुंजय रिपुखंडनसिंह रिपुदमनपाल रिपुदमनसिंह रिपुसूदन शत्रुघनप्रसाद शत्रुघ्न शत्रुघ्नसिंह शत्रुजीत शत्रुजीतसिंह शत्रुदमन शत्रुदमनप्रसाद शत्रुदमनसिंह शत्रुसूदन शत्रुहन ।

(उ) हनुमान[1]—अंजनीकिशोर अंजनीकुमार अंजनीनंदन अंजनीवीर अंजनीवीरप्रसाद अनिलकुमार अनिलकुमारराय अनिलमोहन केशरीकिशोर केशरीकिशोरशरण केशरीचंद्र केशरीनंदन केशरीनंदनप्रसाद केशरीनारायण केशरीप्रसाद केशरीमल केशरीलाल केशरीशरण केशरीसिंह केसरीकुमार केसरीमोहनलाल दुखमोचन पवनकुमार प्रभंजनकिशोर बजरंग बजरंगदत्त बजरंगनारायण बजरंगप्रसाद बजरंगबली बजरंदबलीप्रसाद बजरंगबहादुर बजरंगबहादुरसिंह बजरंगविहारी बजरंगविहारीलाल बजरंगलाल बजरंगशरण बजरंगसहाय बजरंगसिंह बजरंगी बजरंगीप्रसाद बजरंगीराम बजरंगीलाल बजरंगीसिंह बालकेशरी महाबल महाबलराम महाबली महाबलीप्रसाद महाबलीसिंह महावीर महावीरनारायण महावीरप्रसाद महावीरप्रसादनारायण महावीरप्रसादसिंह महावीरबली महावीरशरण महावीरशरणदास महावीरसहाय महावीरसिंह मारुतिकिशोर रामसेवक रामसेवकलाल रामहरीशसिंह वायुनंदन वीरहरि संकटमोचन संकटहरण समीरकुमार हनुप्रसाद हनुमंत हनुमंतलाल हनुमंतविहारीलाल हनुमंत-

---

[1] अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥

शरण हनुमंतशरणलाल हनुमंतसिंह हनुमतप्रसाद हनुमतसिंह हनुमान हनुमानदत्त हनुमानदयाल हनुमानदास हनुमानप्रकाश हनुमानप्रसाद हनुमानबक्ससिंह हनुमानमल हनुमानलाल हनुमानशरण हनुमानसहाय हनुमानसिंह हनूमान हनूमानचरण हनूमानप्रसाद हनूमानसिंह हन्नू हन्नूसिंह हरिनाथ हरिनाथप्रसाद हरिनाथसिंह।

(२) कृष्ण सम्बन्धी (अ) राधा—किशोरी किशोरीचरण किशोरीदत्त किशोरीदास किशोरीप्रसाद किशोरीशरण किशोरीसिंह नागरीप्रसाद नागरीमल प्रियादास प्रियाशरण बिंदा बिंदाचरण बिंदादीन बिंदाप्रसाद बिंदाशरण बिंदासिंह बिदोली बिंद्राप्रसाद माधुरीचरण माधुरीप्रसाद माधुरीशरण राधाकुमार राधाचरण राधाप्रसाद राधाशरण राधासहाय राधिका राधिकादत्त राधिकाप्रसाद राधिकासिंह राधेप्रसाद राधेशरण राधेसिंह लल्ली लल्लीप्रसाद लाडिलीप्रसाद लाडिलीशरण वृंदाप्रसाद ब्रजनागरीप्रसाद ब्रजबालाप्रसाद ब्रजेश्वरीप्रसाद ब्रजेश्वरीशरणसिंह श्यामा श्यामाचरण श्यामाधीन श्यामानंद श्यामाप्रसाद श्यामासिंह।

(आ) बलराम—कृष्णराम कृष्णबलदेव कृष्णवीर केशवीर गौरकिशोर गौरगोपाल दाऊजी दाऊजीदयाल दाऊजीराम दाऊदयाल दाऊप्रसाद दाऊलाल दाऊसहाय दाऊसिंह धेनुकराम नीलपट नीलांबर बलई बलकरण बलकांतचंद्र बलकेश बलकेश्वरप्रसाद बलजीत बलदाऊजी बलदाऊप्रसाद बलदाऊसिंह बलदीसिंह बलदुआ बलदेव बलदेवकुमार बलदेवदत्त बलदेवदास बलदेवप्रसाद बलदेवबक्ससिंह बलदेवराज बलदेवराम बलदेवराय बलदेवबिहारी बलदेवविहारीलाल बलदेवशरण बलदेवसहाय बलदेवसिंह बलधारी बलधारीसिंह बलबहादुर बलभद्र बलभद्रदास बलभद्रनाथ बलभद्रनारायण बलभद्रनारायणसिंह बलभद्रप्रसाद बलराज बलराम बलरामकिशोर बलरामदास बलरामप्रसाद बलराम बहादुर बलरामराय बलरामलाल बलरामसिंह बलवंत बलवंतबहादुर बलवंतराम बलवंतराय बलवंतशरण बलवंतसिंह बलविहारी बलविहारीलाल बलसहाय बलसिंह बलस्वरूप बलुआ बलुआमल बलेशचंद्र बलेश्वरनाथ बलेश्वरराम बलैया बलोत्तम बल्ला बल्लासिंह बल्ली बल्लीराम बल्लू बल्लूमल बल्लूसिंह बल्लेसिंह योगेशवीरप्रसाद रेवतीकात रेवतीरंजनसिनहा रेवतीरमण रेवतीरमणसिंह रेवतीराम रेवतीबल्लभ रेवतीसिंह रोहिणीकुमार रोहिणीकुमारलाल रोहिणीनंदन संकर्षण संकर्षणदास संकर्षणप्रसाद सखीचंद्रराम सारभद्रसिंह हलई हलधरसहाय हलबलसिंह हलिवतसिंह हलीनालाल हल्ली।

(इ) प्रद्युम्न—परदुमनसिंह प्रद्युम्न प्रद्युम्नकृष्ण प्रद्युम्नचंद प्रद्युम्ननारायण प्रद्युम्नप्रसाद प्रद्युम्नमूर्ति प्रद्युम्नशरण प्रद्युम्नसिंह प्रद्युम्नस्वरूप रुक्मिणीनंदन।

(ई) अनिरुद्ध—अनिरुद्ध अनिरुद्धकुमार अनिरुद्धदास अनिरुद्धनारायण अनिरुद्धप्रसाद अनिरुद्धलाल अनुरुद्धस्वरूप उषाकांत उषापति उषेंद्रप्रतापसिंह ऊसाराम।

(उ) रेवती—रेवती रेवतीचरण रेवतीनंदन रेवतीप्रसाद रेवतीलाल रेवतीशरण।

(ऊ) रोहिणी—रोहिणीप्रसाद।

(ए) देवकी—देवकी देवकीचरण देवकीप्रसाद देवकीभवानीदत्त देवकीशरण।

(ऐ) वसुदेव—देवकीराम बसुआ बसुदेवा बस्सू रोहिणीरमण बसुदेव बसुदेवसहाय।

(ओ) यशोदा—जसोदा जसौधी रामजसोदा।

(औ) नंद—नंद नंददत्त नंदप्रसाद नंदरूप नंदसिंह नंदस्वरूप नंदा नंदूप्रसाद नंदूसिंह।

नदियाँ—(१) गंगा—अलकनंदाप्रसाद गंगवा गंगविहारीलाल गंगा गंगाकिशोर गंगागणपति गंगागुलाम गंगाचरण गंगादत्त गंगादयाल गंगादास गंगादीन गंगादुलारे गंगानंद गंगानंद-

सिंह गंगाप्रतापदत्त गंगाप्रतापसिंह गंगाप्रसाद गंगाबक्ससिंह गंगाबहादुर गंगामहेश गंगामोहनराय गंगारत्न गंगाराम गंगालहरी गंगालाल गंगावत्ससिंह गंगावासी गंगाविष्णु गंगाविहारी गंगाशरण गंगासहाय गंगासिंह गंगासेवक गंगास्वरूप गंगू गंगोली जाह्नवीकुमार जाह्नवीदत्त जाह्नवीदास जाह्नवीप्रसाद जाह्नवीशरण ब्रह्मद्रवसिंह भागीरथी भागीरथीचंद भागीरथीप्रसाद भागीरथीमल भागीरथीराय भागीरथीलाल मंदाकिनीप्रसाद सुरसरि सुरसरिदयाल सुरसरिबक्ससिंह हरिगंगा।

(२) यमुना—कालिंदीप्रसाद कालिंदीशंकर कृष्णा जमुना जमुनादत्त जमुनादास जमुनादीन जमुनाप्रसाद जमुनालाल जमुनासहाय जमुनासिंह यमुनादत्त यमुनाप्रसाद यमुनाशरण यमुनाशरणलाल यमुनास्वरूप।

(३) नर्वदा—नर्वदा नर्वदाचंद्र नर्वदाप्रसाद नर्वदाशंकर नर्मदानंद रेवानंद रेवाप्रसाद रेवासिंह।

(४) सरयू—सरजू सरजूचरण सरजूदीन सरजूप्रसाद सरजूलाल सरजूविहारी सरजूशरणराय सरजूसिंह सरयूप्रसाद सरयूशरण।

(५) अन्य नदियाँ—कृष्णा गोदावरीप्रसाद गोमती गोमतीप्रसाद झेलमराय झेलमसिंह ताप्तीप्रसाद दामोदर पुनपुन फलगोप्रसाद फल्गूसिंह बन्ना वितस्ताप्रसाद सिंधुकुमार सिंधुराम सिप्रा सोना।

तीर्थंकर (१) केवलज्ञानी—केवल केवलचंद्र केवलप्रसाद केवलबहादुर।

(२) 'निर्वाणी'—निर्वाणचंद निर्वाणदत्तलाल निर्वाणदास निर्वाणबक्ससिंह निर्वाणसिंह।

(३) 'सागर'—सागर सागरचंद सागरदत्त सागरप्रसाद सागरमल सागरलाल सागरसिंह।

(४) 'महाशय'—महाशय।

(५) 'विमल'—विमल विमलकांत विमलकिशोर विमलकुमार विमलदेव विमलनाथ विमलप्रसाद विमलशरण।

(६) 'श्रीधर'—श्रीधर श्रीधरदयाल श्रीधरप्रताप श्रीधरप्रसाद श्रीधरानंद।

(७) 'दत्त'—दत्तप्रसाद दत्तराम दत्तसिंह दत्ता दत्तामल दत्तीलाल दत्तूप्रसाद दत्ते।

(८) 'दामोदर'—दामोदर दामोदरदास दामोदरदीन दामोदरनाथ दामोदरनारायण दामोदरप्रसाद दामोदरलाल दामोदरसहाय दामोदरस्वरूप।

(९) 'स्वामी'—स्वामीचरण स्वामीदयाल स्वामीदयालस्वरूप स्वामीदीन स्वामीदीनप्रसाद स्वामीनाथ स्वामीनारायण स्वामीप्रसाद स्वामीविहारी स्वामीशरण स्वामीस्वरूप।

(१०) 'सुमति'—सुमतिचंद्र सुमतिनाथ सुमतिप्रकाश सुमतिप्रसाद सुमतिलाल।

(११) 'यशोधर'—यशोधर यशोराज।

(१२) 'कृतार्थ—कृतराजसिंह कृतराम कृतार्थराम।

(१३) जिनेश्वर'—जिनवरदास जिनेंद्रकुमार जिनेंद्रप्रकाश जिनेश्वर जिनेश्वरदास जिनेश्वरप्रसाद।

(१४) ऋषभ—आदिनाथ आदिनारायण ऋषभ ऋषभचरण ऋषभदेव रिखबचंद रिखबलाल।

---

[१] धातुः कमंडलु जलं तदुरुक्रमस्य
पादावनेजन पवित्रतया नरेन्द्र
स्वर्धुन्यभून्नभसि सा पतती निमार्ष्टि
लोकत्रयं भगवतो विशदेव कीर्तिः
(भाग० पु० ८-२१-४)

(१५) अजितनाथ—अजित अजीतकुमार अजीतप्रकाश अजीतप्रसाद अजीतप्रसादसिंह अजीतप्रसादसिंहदेव ।

(१६) अभिनंदन—अभिनंदन अभिनंदनकुमार अभिनंदनदास अभिनंदनप्रसाद ।

(१७) सुपार्श्वनाथ—सुपार्श्वकुमार ।

(१८) शीतलनाथ—शीतल शीतलचंद्र शीतलनाथ शीतलप्रसाद ।

(१९) श्रेयांश—श्रेयांशशरण ।

(२०) अनंतनाथ—अनंत अनंतनाथ अनंतप्रतापसिंह अनंतप्रसाद अनंतराज अनंतलाल अनंतसिंह अनंतस्वरूप ।

(२१) 'धर्मनाथ'—धर्मकिशोर धर्मकिशोरलाल धर्मकीर्ति धर्मकीर्तिशरण धर्मचंद धर्मजीत धर्मदत्त धर्मदास धर्मनाथ धर्मपाल धर्मप्रकाश धर्मप्रिय धर्मभिक्षु धर्ममित्र धर्मसहाय धर्मसिंह धर्मस्वरूप ।

(२२) 'शांति नाथ'—शांतिकुमार शांतिचंद्र शांतिदेव शांतिनंदन शांतिनारायण शांतिप्रकाश शांतिप्रपन्न शांतिप्रसाद शांतिप्रिय शांतिभूषण शांतिमोहनसिंह शांतिरूप शांतिलाल शांतिशेखर शांतिसागर शांतिसेवकसिनहा शांतिस्वरूप शांत्यानंद ।

(२३) 'अमरनाथ'—अमरचंद्र अमरजीतसिंह अमरनाथ अमरपाल अमरपालसिंह अमरलाल ।

(२४) 'नेमिनाथ'—नेमिचंद नेमिदत्त नेमिदास नेमिनारायण नेमिराज ।

(२५) 'पार्श्वनाथ'—पारस पारसचंद्र पारसदास पारसनाथ पारसनाथलाल पारसनाथसिंह पारसमल पारसमुनि पारससिंह पार्श्वनाथ ।

(२६) 'महावीर'—महावीर महावीरनारायण महावीरप्रसाद महावीरप्रसादनारायण महावीरप्रसादसिंह महावीरराम महावीरशरण महावीरशरणदास महावीरसिंह वर्द्धमान ।[1]

(३) महात्मा अ—ऋषिमुनि—अंगिरा अंगिराप्रसाद अंगिरामणि अंबरीष अंबरीषप्रसाद अगस्त्य अगस्त्यनारायण अतरलाल अतरवीरसिंह अतरसिंह अतरसेन अतिबल अतिराज अतिराम अत्तु अत्रि अत्रिकुमार अत्रिदेव अत्रिभरनसिंह अत्रिमुनि अत्रेयनारायणसिंह अनसुइयाप्रसाद अनसूयाप्रसाद अनसूयालाल अनूपदत्त अमरिकाप्रसाद अमरीकसिंह अश्वथामा उद्धव उद्यालक उधई ऊधमपालसिंह ऊधमसिंह ऊधवप्रसाद ऊधो ऊधोदास ऊधोप्रसाद ऊधोराम कपिल कपिलकांत कपिलचंद्र कपिल देव कपिलदेवनारायण कपिलदेवनारायणलाल कपिलदेवनारायणसिंह कपिलदेवराय कपिलनाथ कपिलनारायण कपिलमुनि कश्यपकृष्ण कात्यायन कृपाचार्य गर्गनाथ गार्गीदीन गार्गीप्रसाद गार्गीशरण गालव गालवनंदन गोतम गोतमचंद गोतमदास च्यवन जंबूप्रसाद जनुराम जमदग्नि जलभरतराम जलभरतराय जवालीराम जावाली जैमिन जैमिनकुमार जैमिनसिंह तोखीसिंह त्रिपानसिंह दत्तप्रसाद दत्तराम दत्तसिंह दत्तात्रेय दत्तामल दत्तीलाल दत्तूप्रसाद दत्ते दधीचसिंह दुर्वासाप्रसाद देवव्रत द्रोण द्रोणकुमार द्रोणपालसिंह द्रोणाचार्य धन्वंतरि[1] धूनीलाल धूपाल धूमप्रसाद धूमबहादुर धूमसिंह धूराम ध्रुव ध्रुवकुमार ध्रुवविहारीलाल ध्रुवसिंह नरनारायण पतंजलि पहलाद पहलादशरण पातंजलि

---

[1] सन्मतिर्महतिर्वीरो महावीरोऽन्त्यकाश्यपः ।
नाथान्वयो वर्धमानो यत्तीर्थमिह साम्प्रतम् ॥
(नाममाला श्लो० ११५)

[1] धन्वंतरि—इस नाम से प्राचीन शल्य चिकित्सा-ज्ञान का परिचय मिलता है धनुरुपलक्षणत्वात्शल्यादि चिकित्सा शास्त्रं तस्य अंतम् ऋच्छति, <√ ऋ

पाराशर पुलस्त्यपुरी प्रहलाद प्रहलाददास प्रहलादराय प्रह्लादकिशोर प्रह्लादकुमार प्रह्लादकृष्ण प्रह्लादचंद प्रह्लादनारायण प्रह्लादप्रकाश प्रह्लादप्रसाद प्रह्लादमणि बलिराम विखम भरत भरद्वाज[1] भीकमलाल भीखमचंद्र भीखमदास भीखमसिंह भीषमराम भीष्म भीष्मकुमार भीष्मचंद भीष्मदत्त भीष्मदाससिंह भीष्मदेव भीष्मपितामह भीष्मपितामहसिंह भीष्मसेन भीष्मानंद भृगुदत्त भृगुदास मनुश्रा मनुजी मनुदत्त मनुदेव मनुराजसिंह महादत्त मानवेंद्रनाथ मारकंडेप्रसाद मारकंडेय मारकंडेराय मारकंडेसिंह मीनाराम मेधातिथि मेधाव्रत यमदग्नि याज्ञवल्क्य रामकौशिक लालरत्नाकरसिंह लोमश लोमशप्रसाद वशिष्ठ वशिष्ठदेव वशिष्ठनारायण वशिष्ठमुनि वशिष्ठराज वात्स्यायन वामदेव वाल्मीकराय वाल्मीकि वाल्मीकिप्रसाद वाल्मीकिराम विदुरजी विदुरदत्त विश्वश्रवा विश्वामित्र वेदव्यास वैशंपायन व्यास व्यासजीसिंह व्यासदेव व्यासनंदन व्यासनारायण व्यासमाधव व्यासमुनि व्यासराम व्यासराय व्यासस्वरूप शिलंकु शिवदधीचसिंह शुकदेव शुकदेवदास शुकदेवनारायण शुकदेवप्रसाद शुकदेवविहारी शुकदेवशरण शुकदेवसिंह शुकन शुकलाल शौनक श्रवण श्रवणकुमार श्रवणकृष्ण श्रवणप्रसाद श्रवणसिंह श्रीप्रहलाद श्वेतकेतुसिनहा संजय संजयलाल सतानंद सत्यकाम सत्यकेतु सत्यभारत सत्यवान सरमन सरवनकुमार सरवनप्रसाद सरवनलाल सावित्रीकुमार सुकई सुखदेव सुखदेवनारायण सुखदेवप्रसाद सुखदेवलाल सुखदेवविहारी सुखदेवस्वरूप सुदामा सुदामानंद सुदामाप्रसाद सुदामाशरण सुनीतिकुमार सुश्रुत सुश्रुतकुमार ।

(अ) मत प्रवर्त्तक (१) कबीर—कबीर कबीरचंद कबीरदास कबीरराम कबीरशरण कबीरसिंह ।

(२) गरीबदास—गरीब गरीबचंद गरीबदास गरीबसिंह गरीबा ।

(३) गोरखनाथ—गोरख गोरखदयाल गोरखदास गोरखनाथ गोरखप्रसाद गोरखमल गोरखराय गोरखलाल ।

(४) चरणदास—अमूल्यचरणसिनहा चरणजीतसिंह चरणदत्त चरणदास चरणधर चरणप्रसाद चरणलाल चरणवल्लभ चरणविहारीलाल चरणशरण चरणसहाय चरणसिंह चरणसेवक चरणाधार शुभचरण ।

(५) चैतन्य—कृष्णचैतन्यदास चेतनदत्त चेतनदास चेतनप्रकाश चेतनमल चेतनलाल चेतनसरूप चेतनसिंह चेतनानंद चैतन्य चैतन्यकृष्ण चैतन्यदेव चैतन्यपालसिंह चैतन्यप्रसाद चैतन्यब्रह्मचारी चैतन्यस्वरूप वीरचैतन्यनारायण श्यामचैतन्य सत्यचैतन्य ।

(६) जगजीवन तथा जग्गू—जगजीवन जगजीवनदास जगजीवनप्रसाद जगजीवनराम जगजीवनराय जगजीवनलाल जगजीवनसहाय जग्गा जग्गू जग्गूप्रसादसिंह जग्गूसिंह जीवनदत्त जीवनदास जीवनदेव जीवनराम जीवनलाल जीवनसिंह ।

(७) दयानंद—दयानंद दयानंदप्रकाश दयानंदप्रसाद दयानंदशंकर दयानदस्वरूप ।

(८) दरिया—दरियाईसिंह दरियाप्रसाद दरियालाल दरियाब दरियाबचन्द दरियाबसिंह ।

(९) दादूदयाल—दादू दादूदयाल दादूराम दादूसिंह ।

(१०) नानक—गुरुनानकप्रसाद नानक नानकचन्द नानकचरण नानकनाथ नानकप्रसाद नानकबक्ससिंह नानकराम नानकलाल नानकशरण नानकसहाय नानिगराम ।

(११) पलटूदास—पलटराम पलटूराम पलटूसिंह पल्टन पल्टा ।

---

[1] भरद्वाज-भरश्चासौ द्वाजश्च —द्वाभ्यां जायते इति द्वाज :—संकरः —
√जन्, भ्रियते मरुद्भिः— √भृ

(१२) प्राणनाथ—पिरानू पिरोनी प्राणजीवन प्राणदत्त प्राणदास प्राणदीन प्राणनाथ प्राणपति प्राणवल्लभ प्राणसुख प्राणेश्वरनाथ।

(१३) बाबालाल—बाबा बाबाचेला बाबादीन बाबाबक्ससिंह बाबाराम बाबालाल।

(१४) भीखा—भिक्कू भिक्खन भिक्खीलाल भिक्खूसिंह भिखई भिखारीराम भीकराम भीका भीकाराम भीकेलाल।

(१५) मलूकदास—मलूकचंद मलूकदास मलूकसिंह मलूके।

(१६) मध्वाचार्य—माधवाचार्य माधवानंद।

(१७) रत्ता—रत्ता रत्तीदास।

(१८) रविदास—रविदास।

(१९) रामचरण—रामचरण रामचरणदास रामचरणप्रसाद रामचरणराम रामचरणराय रामचरणलाल रामचरणसिंह।

(२०) राममोहनराय—राममोहन राममोहनराय राममोहनलाल राममोहनसिंह।

(२१) रामानंद—रामानंद रामानंदप्रसाद रामानंदराम रामानंदलाल रामानंदसिंह रामानंदस्वरूप।

(२२) रामानुज—रामानुज रामानुजदयाल रामानुजदास रामानुजप्रसाद रामानुजराय रामानुजलाल रामानुजसिंह रामानुजाचार्य।

(२३) लालदास—लाल लालदास लालसाहिब लालसिंह।

(२४) वल्लभ—वल्लभ वल्लभचंद वल्लभदास वल्लभप्रसाद वल्लभरसिक वल्लभराम वल्लभलाल वल्लभसिंह।

(२५) वीरभान—वीरभान वीरभानसिंह सत्तवीरभान।

(२६) शंकर—शंकर शंकरचंद्र शंकरदत्त शंकरदयाल शंकरदास शंकरदीन शंकरप्रसाद शंकरबहादुर शंकरलाल शंकरशरण शंकरसहाय शंकरसिंह शंकरस्वरूप शंकराचार्य शंकरानंद।

(२७) शिवदयाल तथा शिवनारायण—शिवदयाल शिवनारायण शिवनारायणप्रसाद शिवनारायणलाल शिवमुनि शिवमुनिराय।

(२८) सहज—सहजराम सहजसिंह सहजानंद।

३—साधु संत तथा गुरु—अंगद अंगदप्रसाद अंगदराम अंगदसिंह अक्रूर अग्रसेन अग्रेनाथ अजबदयालसिंह अजबदास अजबनारायण अजबसिंह अमरदास अर्जुन अर्जुनदत्त अर्जुनदास अर्जुनदेव अर्जुननाथ अर्जुनप्रसाद अर्जुनराम अर्जुनराय अर्जुनलाल अर्जुनसिंह अहिल्यासिंह आनंद आनंदकुमार आनंदचंद्र आनंदचरण आनंददास आनंददेव आनंदनारायण आनंदपाल आनंदपालसिंह आनंदप्रकाश आनंदप्रसाद आनंदप्रिय आनंदबहादुर आनंदबाबू आनंदबोध आनंदभास्कर आनंदभिक्षु आनंदभूषण आनंदमूर्ति आनंदराम आनंदराय आनंदवन आनंदवर्द्धन आनंदवल्लभ आनंदशरण आनंदसहाय आनंदसागर आनंदसिंह आनंदस्वरूप एकनाथ एकराज एकराम कोकराज कोकामल कोकाराम कोकीराम गहरीदीन गहरीलाल गुरुगोविंद गुलाब गोपीचंद गोविंदसिंह गोविंदसेवकसिंह चाणक्य छीतमल जयदेव जयदेवकुमार जयदेवदास जयदेवनारायण जयदेवप्रकाश जयदेवप्रसाद जयदेवाचार्य ज्ञानदेव ज्ञानेश्वर ज्ञानेश्वरकुमार ज्ञानेश्वरदयाल ज्ञानेश्वरदास ज्ञानेश्वरनाथ ज्ञानेश्वरप्रसाद ज्ञानेश्वरसहाय तुकाराम तुकीराम तुलसी तुलसीदत्त तुलसीदास तुलसीप्रसाद तुलसीभगत तुल्सी तेगधर तेगबहादुर तेगराम त्यागराय दीनदयाल दीनदयालप्रसाद दीनदयाललाल दूलम दूलमचंद दूलमसिंह दूलहेराम देवेंद्र देवेंद्रकुमार देवेंद्रचंद्र देवेंद्रदत्त देवेंद्रदेव देवेंद्रनाथ देवेंद्रनाथदेव देवेंद्रप्रकाश देवेंद्रप्रताप देवेंद्र-

प्रतापनारायणसिंह देवेंद्रप्रतापसिंह देवेंद्रप्रसाद देवेंद्रभूषण देवेंद्रमोहन देवेंद्रलाल देवेंद्रविजय देवेंद्रसिंह देवेंद्रस्वरूप धन्नन धन्ना धन्नाचरण धन्नामल धन्नाराय धन्नासिंह धन्नूराम धन्नूलाल नरसीदास नरहरि नरहरिदत्त नरहरिनारायण नरहरिप्रसाद नरहरिराम नरहरिराय नवनाथलाल नागार्जुन नाभादास नामदेव नामप्यारा नामप्रसाद नामस्वरूप निश्चलदास निहालचंद निहालसिंह पवनहारीशरण पीपासिंह पूरणदत्त पूरणमल पूरणसिंह पूरन पूरनदास पूरनप्रसाद पूरनबहादुर पूर्णप्रकाश पूर्णप्रताप पौहारी पौहारीशरण बंदा बंदाराम बंदासिंह बैजसिंह बैजराम बैजलाल बैजू बैजूदास बैजूप्रसाद बैजूसिंह भरथरी भरदलीसिंह भर्तृहरि भिरतारीदास भिरतारीसिंह मत्स्येंद्रनाथ महींद्रनाथ महीधर महीधरप्रसाद महेंद्र महेंद्रकुमार महेंद्रजीतसिंह महेंद्रदत्त महेंद्रदयाल महेंद्रदेव महेंद्रनाथ महेंद्रनारायण महेंद्रपति महेंद्रपाल महेंद्रपालसिंह महेंद्रप्रकाश महेंद्रप्रकाशबहादुर महेंद्रप्रताप महेंद्रप्रतापनारायण महेंद्रप्रतापसिंह महेंद्रप्रसाद महेंद्रबहादुर महेंद्रबहादुरसिंह महेंद्रमानसिंह महेंद्रमोहन महेंद्रलाल महेंद्रवीरसिंह महेंद्रशंकर महेंद्रशरण महेंद्रसिंह महेंद्रस्वरूप मीरा मीरासिंह मीरूसिंह रंगाचारी रंगाचार्य रामकृष्ण रामकृष्णदास रामकृष्णदेव रामकृष्णप्रसाद रामकृष्णराम रामकृष्णलाल रामकृष्णसहाय रामकृष्णसिंह रामतीर्थ रामदास रामदासराम रूपप्रसाद लहनासिंह लेहनीराम विवेकानंद विष्णुगुप्त विष्णुदिगंबर शिवव्रतलाल सदनू सधना सुंदरदास सुखानंद सूरदास सेनसिंह स्वामीशंकर हरिकिशनदास हरिगोविंद हरिदास हरिदासकुमार हरिराय हेमचंद्र।

४—तीर्थ—(अ) "चार धाम"—(१) जगन्नाथ—जगन्नाथ पुरई पुरईदास।

(२) द्वारका—द्वारकादास द्वारकाप्रकाश द्वारिका द्वारिकाप्रसाद।

(३) बद्रीनाथ—बदरी बदरीदास बदरीप्रसाद बदरीप्रसादलाल बद्द बद्री बद्रीकेदार बद्रीदत्त बद्रीदयाल बद्रीप्रसाद बद्रीलाल बद्रीविशाल बद्रीविशाललाल बद्रीशरण बद्रीसिंह।

(४) रामेश्वर—रामसेत सेतनसिंह सेतुबंधु सेतुबंधुरामेश्वर सेतू।

(आ) 'सप्तपुरी—[1] (१) 'अयोध्या'—अजुद्दी अजुद्दीसिंह अजुध्यादीन अजुध्याप्रसाद अजोध्याप्रसाद अयोध्यादास अयोध्याप्रसाद[2] अवध अवधशरण औधू कौशलदत्त कौशलप्रसाद कौशलशरण रामअवध।

(२) 'अवंतिका'—अवंतीलाल।

(३) 'कांची'—कांचीदत्त कांछीमल कांछीलाल।

(४) 'काशी'—आनंदवन कशिया कांसीराम काशी काशीचरण काशीदत्त काशीदयाल काशीदीन काशीनारायण काशीप्रसाद काशीबक्ससिंह काशीलाल काशीसिंह पंचकोशी।

(५) 'व्रज' (मथुरा) के अंतर्गत—कोकिलाप्रसाद गिरवर गिरवरदयाल गिरिराजचरण गिरिराजप्रसाद गिरिराजसिंह गिरिवरप्रसाद गिर्राजशरण गोकुल गोकुलदास गोकुलप्रसाद गोधनसिंह गोधा गोधाराम गोधू गोरधनसिंह गोवर्धन गोवर्धनदत्त गोवर्धनदास गोवर्धनप्रसाद गोवर्धनसिंह बिंदावन बिंद्रा-

---

[1] अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवंतिका
पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैतामोक्षदायिका।

[2] सुनु कपीस अंगद लंकेसा ॐ पावन पुरी रुचिर यह देसा॥
जद्यपि सब वैकुंठ बखाना ॐ बेद पुरान विदित जग जाना॥
अवध सरिस प्रियमोहि न सोऊ ॐ यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ॥
जनम भूमि मम पुरी सुहावनि ॐ उत्तर दिशि बह सरजू पावनि॥
अति प्रिय मोहि इहां के बासी ॐ मम धामदा पुरी सुखरासी॥
(राम० उत्तर०)

वनदास मथुरा मथुरादत्त मथुरादास मथुराप्रसाद मथुरी मधुवन मधुवनदास मधुवनप्रसाद महावन रामब्रज वृंदावनदत्त वृंदावनदास वृंदावनप्रसाद बृंदावनशरण वृंदावनसहाय व्रजवंश ब्रजशंकर[1] ब्रजशरण ब्रजस्वरूप ब्रजी।

(६) हरिद्वार (मायापुरी)—हरिद्वार हरिद्वारदत्त हरिद्वारसिंह हरिद्वारी हरिद्वारीलाल हरिद्वारीशरण हरिद्वारीसिंह।

(७) अन्य तीर्थ—अक्षतबड़राय अक्षयबट[2] अक्षयवटनारायण अक्षयवर अक्षयवरनाथ अक्षयवरप्रसाद अक्षयवरलाल अक्षयवरसिंह अचल अचलदत्त अचलसिंह अचलू ऋषिकेश ऋषिकेशसिंह कड़ी कड़ेदीन कड्डी कढ़ा कमतू कमसानदीन कविलास कविलासप्रसाद कामताप्रसाद कामतासिंह किद्वामल किद्वासिंह कुमारीनंदन कुरुप्रसाद कुलक्षेत्रप्रसाद केदार केदारदत्त केदारमल केदारलाल केदारविहारी केदारसिंह केदारी कैलाश कैलाशकिशोर कैलाशनंदन कैलाशनंदनप्रसाद कैलाशप्रकाश कैलाशप्रसाद कैलासबक्ससिंह कैलासलाल कैलाशशरण कैलासस्वरूप क्षेत्रदत्त खिरोधर गंगासागर गंगोत्री गंगोत्रीप्रसाद गया गयागजोधरप्रसाद गयाचंद्र गयाचरन गयादत्त गयादास गयादीन गयानाथ गयापाल गयाप्रसाद गयाबक्ससिंह गयामल गयाराम गयारी गयालाल गयालू गयासिंह गिरिनारसिंह गिरिविंध्यबहादुरसिंह गुप्तार गुप्तारनाथ गुप्तारप्रसाद गुप्तारसिंह गोकरण गोकरणनाथ गोकरणसिंह चित्रकूट चित्रकूटलाल चौहरजाप्रसाद चौहरजालाल चौहरिया चौहरियालाल चौहरियासिंह चौहारी चौहारीबक्ससिंह जगमंदरदास जगमंदरलाल जगमंदरसिंह जागेश्वर जोगमंदरदास झूंसीप्रसाद तखतसिंह तीरथवासी तीर्थप्रसाद तीर्थराज तीर्थराजमणि तीर्थराजसिंह तीर्थराम तीर्थसिंह तुंगलसिंह त्रिवेणी त्रिवेणीचंद त्रिवेणीदत्त त्रिवेणीदयाल त्रिवेणीप्रकाश त्रिवेणीप्रसाद त्रिवेणीप्रसादराम त्रिवेणीमाधव त्रिवेणीराम त्रिवेणीलाल त्रिवेणीशरण त्रिवेणीसहाय थरियालाल देवप्रयागसिंह धनुकक्षेत्र धनुष्कोटीलाल नंदाचल नाथप्रसाद नाथमल नाथसिंह नाथूराम नाथूलाल पयाग परगूलाल परागसिंह परागी परागीलाल परागू पाटन पाटनदीन पाटनदीनलाल पिलखिनदीन पुष्कर पुष्करचंद्र पुष्करदत्त पुष्करनाथ पुष्करराम पुष्करलाल पुष्करसिंह पुहकरसिंह पोकरसिंह पोखकरदास पोखरमल पोहकरपाल प्रतिष्ठानसिंह प्रभासकुमार प्रभासचंद प्रभाससिंह प्रयाग प्रयागदत्त प्रयागदास प्रयागदीन प्रयागध्वजसिंह प्रयागनाथ प्रयागनारायण प्रयागराज प्रयागराजकृष्ण प्रयागराम प्रयागलाल प्रयागसिंह प्रयागी प्रयागीलाल बिसराम बेनी बेनीकृष्ण बेनीचरण बेनीप्रकाश बेनीप्रसाद बेनीबहादुर बेनीमाधव बेनीमाधवप्रसाद बेनीमाधवलाल बेनीमाधवसहाय बेनीमोहनसिनहा बेनीराम बेनीशंकर बेनीशरण मनकर्णिकाबक्ससिंह मनिकरन मनोकनिक मिथिलाप्रसाद मिथिलाशरण मुक्तिनाथ मैहरूसिंह राजगिरि राजगृहीसिंह रामप्रयाग रामसरोवर रामसागर रामसागरराय रामसागरलाल रामेश्वरदयाल रामेश्वरदास लहरीचरण लहरीदत्त लहरीमल लहरीराय लहरीसिंह लोलार्कप्रसाद वंकटलाल विंध्यबहादुर विंध्याचलप्रसाद विंध्याचलमणि विंध्याचललाल विंध्याचलसिंह विश्राम विश्रामप्रसाद वेंकट वेंकटप्रसाद वेंकटलाल वेंकटरमण वेंकटरमणसिंह वेंकटलाल वेणीमाधव वेणीमाधवसिंह वैकुंठ वैकुंठप्रसाद शत्रुंजय शत्रुंजयप्रतापसिंह शिवकेदारसिंह शिवकैलाश शिव-

[1] 'रसखानि' कबौं इन आँखिन सों ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।
कोटिन हूँ कलधौत के धाम करीर के कुंजन ऊपर वारौं॥

[2] वटमूले स्थितो ब्रह्मा वटमध्ये जनार्दनः
वटाग्रे तु शिवो देवो सावित्री वट संश्रिता
वट सिंचामि ते मूलं सलिलैरमृतोपमैः
यथा शाखा प्रशाखाभिर्वृद्धोऽसि त्वं महीतले
तथा पुत्रैश्च पौत्रैश्च सम्पन्नं कुरु मां सदा।

कोटिलाल शिवशेखर श्रीमंदरदास संगतदास संगतमल संगतराय संगतशरण संगतसिंह संगम संगमप्रकाश संगमप्रसाद संगमलाल सम्मलसिंह सरोत्तमप्रसाद सांची सांभर सागरचंद सागरदत्त सागरप्रसाद सागरमल सागरलाल सागरसिंह सारनाथसिंह सिंहाचलदास सीमाचल हरगिरि हरिहर हरिहरकृपालसिंह हरिहर गोपाल हरिहरदयाल हरिहरदास हरिहरनाथ हरिहरनाथप्रसाद हरिहरनारायण हरिहरनिवास हरिहर-प्रसाद हरिहरप्रसादसिंह हरिहरबक्ससिंह हरिहरराम हरिहरशंकरराय हरिहरशरण हरिहरसिनहा हरिहरा-नंद हिंगलाजशरण हिंगालाल हिंगूसिंह हिमराज[1] हिमांचलसिंह हिमेंद्र हिमेशचंद्र ।

५—धर्म ग्रन्थ (अ) वैदिक काल—निगमपालसिंह निगमानंद निगमेंद्रसेन बेदा बेदीचंद वेद वेदकांत वेदकुमार वेदनाथ वेदनारायण वेदनिधि वेदपाल वेदप्रकाश वेदप्रकाशचंद्र वेदप्रताप वेदप्रिय वेदमणि वेदमणिकुमार वेदमित्र वेदराज वेदराम वेदव्रत वेदव्रतभूषण वेदसिंह वेदा-नंद वेदानंदलाल वेदीराम श्रुतिकांत श्रुतिदेव श्रुतिनारायण ।

(आ) दर्शन—दर्शन दर्शनदयाल दर्शनदीन दर्शनप्रसाद दर्शनलाल दर्शनसिंह दर्शनानंद वेदांतप्रसाद ।

(इ) पौराणिककाल—गीतमसिंह गीतादास गीतानंद गीताराम[2] भागवतप्रसाद भागवत-लाल भागवतानंद श्रीभागवत हरिवंश हरिवंशदयाल हरिवंशप्रसाद ।

(ई) आधुनिककाल—गंगालहरी पत्रा पत्रिकाराम प्रेमसागर भक्तमालप्रसाद रघुवंश रघुवंश-स्वरूप रामायणप्रसाद रामायणलाल रामायन रामायनजी रामायनराम रामायनसिंह रामायनी सुखसागर सुखसागरलाला ।

६—मंगल-अनुष्ठान (अ) धार्मिककृत्य—ग्यारीलाल जगमेघसिंह दरसबहादुर दर्शन दर्शनदयाल दर्शनदीन दर्शनप्रसाद दर्शनलाल दर्शनसिंह दर्शनानंद देवपूजनराय पूजाप्रसाद पूजाराम भजदत्त भजनदयाल भजनराम भजनलाल भजनविहारीलाल भजनसहाय भजनसिंह भजनस्वरूप भजनानंद भजामिशंकर भजुरामराय भजोरीलाल भजौरामराय भज्जा भज्जूसिंह मखोले मनसुमिरनदास सुखरामराय यज्ञकुमार यज्ञचंद्र यज्ञदत्त यज्ञनंदन यज्ञप्रसाद यज्ञभू यज्ञमोहनस्वरूप यज्ञराज यज्ञराय यज्ञ-लाल यज्ञशरण यागप्रसाद लीला लीलाप्रसाद लीलासिंह विश्वजीतनारायण सर्वजीत सुमिरनलाल सुमिरनसिंह होमनिधि होमसिंह होमा ।

(आ) पर्व तथा उत्सव—अंतराम अंता अंतीलाल अंतू अंतूराम अंतूराय अंनूलाल अंतूसिंह अक्षयकीति अक्षयकुमार अक्षयचंद्र अक्षयधन अक्षयराज अक्षयलाल अक्षयविनोद अचल अचलदत्त अचलनाथ अचलसिंह अचलू अधिकलाल अनंत अनंतदेव अनंतदेवनारायण अनंतनाथ अनंतनारायण

---

[1] अस्ति तत्र महानेको हिमवान् नग उत्तमः ।
नानाभूतिसमाकीर्णो नानाद्रुमसमाकुलः ॥
नानापक्षिसमायुक्तो नानामृगविचित्रितः ।
स्फाटिकैः काञ्चनैः शृङ्गैर्मणिवैदूर्यभूषितैः ।
हिमेन पूरितो नित्यं गङ्गाध्वनिनिनादितः ॥
हरितालिका व्रत कथा श्लोक १३-१६ (संक्षिप्त)

[2] १२ परम वैष्णव भक्त—मनु, सनकादि, नारद, जनक, कपिल, ब्रह्मा, बलि, भीष्म, प्रह्लाद, शुकदेव, धर्मराज, शंभु ।

अनंतप्रतापसिंह अनंतप्रसाद अनंतबहादुरसिंह अनंतभगवान अनंतराज अनंतराम अनंतलाल अनंत-शरण अनंतसहाय अनंतसिंह अनंतसुमिरनदास अनंतस्वरूप अनंतानंद अनंतीप्रसाद अनंतीलाल अवतार अवताराय अहोई अहोईलाल इंद्रदमनसिंह ऋतुपाल ऋतुराज ऋतुराजकुमार ऋतुराजप्रसाद ऋतुराज-राय ऋतुराजसिंह ऋतुराम ऋषि ऋषिकुमार ऋषिकृष्ण ऋषिदत्त ऋषिदेव ऋषिदेवप्रसाद ऋषिदेव-राम ऋषिनन्दन ऋषिनाथ ऋषिनारायण ऋषिनारायणसिंह ऋषिपति ऋषिपाल ऋषिप्रसाद ऋषिमित्र ऋषिमुनि ऋषिराज ऋषिराजसिंह ऋषिराम ऋषिलाल ऋषींद्रदत्त ऋषीद्रनाथ औतारसिंह कल्पनाथ कल्पनाथप्रसाद कल्पनाथसहाय कल्पनारायण कल्पू कोकिला कोकिलाप्रसाद क्रांतिकुमार क्रांतिचंद्र क्रांतिनंदन क्रांतिप्रकाश क्रांतिप्रसाद क्रांतिसेवक क्रांतिस्वरूप खिचड़ीराम खिच्चूमल गहनसिंह गहनीराम गिरवानसिंह गीर्वाणदत्त गुरुकृपाल गुरुचरण गुरुचरणनिवास गुरुचरणप्रताप गुरुचरणराम गुरुजी गुरुदत्त गुरुदयाल गुरुदयालदास गुरुदयालप्रकाश गुरुदयालप्रसाद गुरुदर्शन गुरुदास गुरुदीन गुरुदीप-सिंह गुरुदेव गुरुदेवनारायणलाल गुरुदेवप्रसाद गुरुदेवप्रसादसिनहा गुरुदेवराय गुरुदेवसिंह गुरुनामसिंह गुरुनारायणलाल गुरुप्रकाशलाल गुरुप्रतापसिंह गुरुप्रसाद गुरुबक्सराय गुरुबक्सलाल गुरुबक्ससिंह गुरुबचनसिंह गुरुबच्चनसिंह गुरुबालकप्रसाद गुरुमौजप्रकाश गुरुमौजशरणसिनहा गुरुरत्नप्रसाद गुरु-राम गुरुरामप्यारे गुरुलिंगदेव गुरुशंकरलाल गुरुशरण गुरुशरणनारायण गुरुशरणप्रसाद गुरुशरण-लाल गुरुसहाय गुरुसहायलाल गुरुसहायसिंह गुरुसेवक गुरुसेवकनाथ गुरुसेवकराम गुरुसेवकलाल गुरु-स्वरूप ग्यारसीलाल ग्यारीलाल ग्यासिया ग्यासीराम ग्यासीलाल चतुर्थीलाल चौथमल चौथीप्रसाद चौथी-राम छुटेबहादुर छुट्टनलाल छुट्ठराम छठीसिंह जिउत जिउतप्रसाद जिउतबंधन जिउतबंधनप्रसाद जिउत-राम जिउतिया जिउधन जिउधारी जिउभारी जिउराखन जितई जितबंधनसिंह जितमन जितरसिंह जितारू जितुआ जित्ता जित्तू जित्तूलाल जीतगिरि जीतनराय जीतनलाल जीतनाथ जीतनारायण जीतपाल जीतप्रसाद जीतबहादुरलाल जीतमणि जीतमल जीतराम जीतलाल जीतसिंह जीतूराय जीवराखन जीव-राखनलाल झुलई झुलईसिंह झुल्लरसिंह झुल्ली झूलन झूलनलाल झूलनविहारी झूलर झूलाराम झूला-सिंह ढिलई ढिल्लूराम तिजई तिजू तिजौली तिज्जा तेजई तेजा तेजामल तेजाविहारी तेरस तेरसराम तौहारीराय दशादीन दशाराम दसईराम दसवंतसिंह दसवनसिंह दसेकुमार दसैया दस्सू दिबारी दिबारीलाल दिब्बू दियालीराम दुजई दुजवा दुजेसिंह दुज्जी दुज्जू दूजाराय दूजीलाल देव देवई देवकरण देवचंद देवचरण देवजस देवजीत देवता देवतादत्त देवतादयाल देवतादीन देवताप्रसाद देवतालाल देवतासिंह देवदमन देवदर्शनसिंह देवदास देवदीपसिंह देवधर देवधारी देवधारीप्रसाद देवनन्दन देवनन्दनराम देवनन्दलाल देवपूजनराय देवप्रकाश देवप्रतापनारायणसिंह देवप्रसाद देवबचन देवबलीसिंह देवभक्त देवमंगलप्रसाद देवमित्र देवमूर्ति देवलाल देववंश देववंशसहाय देवशरण देवशरणप्रसाद देवशरण-लाल देवशरणसिंह देवसुख देवसुचितराम देवसृष्टि देवसेन देवहर्ष देवानंद दौजीराम दौजीलाल धुरई धुरी धुरीसिंह धूरीलाल धूरूप्रसाद धूरूसिंह धूरे धूलचंद धूलसिंह धूलीलाल नवनाथ नागचंद्र नागदेव नागदेवलाल नागनारायण नागनारायणलाल नागमणिलाल नागमल नागराम नागाराम नागाराय नागू नागूराम निरौतीलाल नौमी नौमीनाथ नौमीलाल नौरताराम नौरतू पंचदेव पंचनंदनराय पंचम पंचमदास पंचमदेव पंचमनाथ पंचमप्रसाद पंचमराम पंचमलाल पंचमसिंह पंचमरत्न पंचलाल पंच-सुखलाल पंचा पंचानंद पंचानंदराय पंचू पचई पचईराम पचईलाल पचऊ पचऊलाल पचवासिंह पचोली पचोलीलाल पच्चा पच्चूलाल पर्वलाल पांचा पांचीलाल पांचू पांचेराम पितृशरण पुनःराम पुनई पुनवासीराम पुनेश्वराम पुन्ना पुन्नालाल पुन्नू पुन्ही पुरुषोत्तम पुरुषोत्तमकुमार पुरुषोत्तमचंद्र पुरुषोत्तम-दयाल पुरुषोत्तमदास पुरुषोत्तमदेव पुरुषोत्तमनाथ पुरुषोत्तमनारायण पुरुषोत्तमप्रसाद पुरुषोत्तमभगवान पुरुषोत्तमलाल पुरुषोत्तमशरण पुरुषोत्तमसिंह पुरुषोत्तमस्वरूप पूनमचंद पूनामल पूरनमासी पूरनमासीराय पूर्णमासी पूर्णमासीराम पूर्णिमाप्रसाद फगनासिंह फगवा फगुआ फगुना फगुनी फगुरिया फगुहार फग्गन फग्गू फग्गूसिंह फनदास फागू फागूचंद फागूप्रसाद फागूराम फागूलाल फाल्गुन बसूँ बसावन बसावनराय

बसावनसिंह बसोरा बासराम बासासिंह बासी बासीराम बासौरे भुजंगसिंह भूधर भूधरसिंह भूमिधर मकर मदन मदननारायण मदनपाल मदनप्रकाश मदनप्रसाद मदनराय मदनलाल मदनसिंह मदनानंद मनधारी मनिराज मनोरथ मनोरथप्रसाद महामंगल रक्खासिंह रक्षपाल रक्षा रक्षाराम राजवंसत रामनौमीराय रिक्खा रिक्खाराय रिक्खूसिंह रिखई रिखईराम ललई ललईराम ललकप्रसाद ललकालाल ललकूराम ललकूसिंह ललनकुमार ललनजी ललैयन लल्लन लल्लनप्रसाद लल्लनलाल लल्लानाथ लल्लामल लल्लाराम लल्लासिंह लल्ली लल्लीप्रसाद लल्लीराम लल्लू लल्लूप्रसाद लल्लूमल लल्लूराजा लल्लूसिंह लिक्खा लिक्खू लिक्खेराय लिखई लिख्या लेखराम लेखा लेखासिंह लोदीराय लोदीसिंह लोधी वसंत वसंतकिशोर वसंतकुमार वसंतकृष्ण बसंतनारायण वसंतबहादुरसिंह वसंतराम वसंतराय वसंतलाल वसंतबल्लभ वसंतविनोद वसंतविहारी वसंतसिंह वसंता विजय विजयइंद्रसूरि विजयकिशोर विजयकुमार विजयचंद्र विजयदत्त विजयदयाल विजयधारी विजयनंदन विजयप्रताप विजयप्रसाद विजयबाबू विजयमल विजयमित्र विजयलाल विजयसिंह विज्जोलाल वैकुंठ वैकुंठप्रसाद शीतलाप्रसाद सकटविहारीलाल सकटाराय सकटू सकटूमल सकटूराम सकटूलाल सकटूसिंह सकटेलाल सरूपदेव सरूपसिंह सरूपा सुकृतनारायण सोमवतीनारायण स्वरूपानंद हलछठी होरा होरी होरीलाल होरीसिंह होली होलीराम।

(इ) **षोडशोपचार**—(१) **आसन** – आसन आसनीप्रसाद तखतसिंह सिंहासन सिंहासनसिंह।

(२) **जल**—जलईराम जलुआ जल्लू नीरसिंह।

(३) **आभूषण**—भूषण भूषणचंद भूषणराम भूषणलाल भूषणशरण भूषणसिंह।

(४) **शृङ्गार**—शृंगारसिंह साँझीराम सिंगारसिंह सिंगारु।

(५) **सुगन्ध**—अगरचंद चोई चोयालाल धुपई धूपचंद धूपसिंह धूपी बासराम बासासिंह बासी बासीराम सुगन्ध।

(६) [1]**पुष्प**—कुसुम कुसुमकांत कुसुमचंद्र कुसुमनारायण गुलई गुलबक्स पद्मप्रकाश पहुपदत्त पहुपसिंह पहुपी पुष्पानंद पुष्पीलाल पुष्पेंद्रराय पोप पोपराम पोपी फुलई फुलावन फुलेना फुलेनानारायण फुलेनासिंह फुल्लरराय फुल्ली फुल्लूसिंह फूलगिरि फूलचंद फूलचंदराम फूलदेव फूलदेवसहाय फूलदेवसिंह फूलनारायण फूलराजसिंह फूलशंकर फूलशरण फूलसहाय फूलसिंह फूला फूलूसिंह सुमन सुमनकुमार सुमनचंद्र।

---

[1] सूर्यदेव पर भिन्न भिन्न प्रकार के फूल चढ़ाने का माहात्म्य :—

फूल	फल
मालती	देवसान्निध्य
मल्लिका	भाग्योदय
कमल	सौभाग्य
कदंब	परमैश्वर्य
वकुल	अक्षय मंत्र सिद्धि
मंदार	सर्व कुष्ठ निवारण
विल्व	श्री
किंशुक	पीड़ानाश
अगस्त	अनुकूलता
कनेर	अनुचर पद
शतपत्र	सालोक्यता
आक	दरिद्रनाश

(७) दीप[1]—दिपईराम दियालीराम दीपक दीपकसिंह दीपकुमार दीपचंद दीपदानराय दीपनंदनसिंह दीपनराम दीपनारायण दीपनारायणप्रसाद दीपनारायणसिंह दीपनारायणसिनहा दीपराज प्रदीपकुमार प्रदीपचंद्र प्रदीपनारायण प्रदीपनारायणसिंह प्रदीपशाह महादीपक सकलदीप।

(८) नैवेद्य—परसादी परसादीलाल प्रसाद प्रसादराम प्रसादसिंह प्रसादीराम प्रसादीलाल भोगनाथ भोगा महाप्रसाद।

(९) तांबूल—गिलोरीराम पनालू पनुआ पानदेव पानसिंह।

(१०) कलश[2]—कलशनारायण घल्ला सैकूलाल।

(११) पंखा—विजनू।

(१२) माला—मनकीराय मालचंद मालाराम मालू।

(१३) वाद्य—घंटर घंटरसिंह घंटोली नौबत नौबतदयाल नौवतराय नौबतराम नौबतलाल नौबतसिंह।

(१४) शंख—शंखराम संखूप्रसाद संखूराम।

(१५) तिल—तिलई तिलसिंह तिलोमनि तिल्ला।

(१६) अक्षत—अक्षत।

(१७) कपूर—कपूरचंद कपूरसिंह कपूरीलाल कर्पूरचंद्र।

(१८) चंदन—चंदन चंदनगोपाल चंदनदास चंदनपालसिंह चंदनप्रसाद चंदनमल चंदनलाल चंदनसिंह संदलसिंह हरिचंदन।

(१९) रोरी—ईंगुर रोरीमल रोरीलाल।

(२०) सुपारी—सुपारी।

(२१) नारियल—नरियल सदाफल।

(२२) दूब तथा कुश—दूर्वाप्रसाद कुश[3]।

(२३) मंगल सूत्र—नाराप्रसाद नाराराय।

(२४) शमी—छोकर शमीनंद।

(२५) चमर—चंवरी चमरीलाल चमरू चमरूलाल चौरी।

ज्योतिष—(अ) राशि नक्षत्र—अश्विनीप्रसाद आर्द्राप्रसाद कुंभनाथ क्षितिजकुमार चित्तर तुलाराम तुल्ला धनुआ धनुकप्रसाद पुक्खनलाल पुक्खलाल पुक्खू पुखराज पुखराम पुखलाल पुष्यजित पुष्यदत्त मकर मघराज मिथुनसिंह मीनाराम मीनालाल मुरहू मुरहूराम मुराहूसिंह मुलई मुलईराम मुलईलाल मुलहू मुलुआ मुल्ला मुल्लाप्रसाद मुल्लू मूलकृष्ण मूलचंद्र मूलचंद्रप्रसाद मूलनारायण मूलप्रकाश मूलराज मूलशंकर मूला मूलामल मूलासिंह मूलीराम मूलू मूलूसिंह मूलेसिंह मेखचंद मौलासिंह मौलिया मौली राहुनाथ राहुवीरसिंह रेवती रोहिणीप्रसाद वृषभानसिंह श्रवण सिंहराम हस्तीप्रसाद हत्थीप्रसादलाल हस्तीमल।

---

[1] दीपः पापहरः प्रोक्तस्तमोराशि विनाशनः।
दीपेन लभ्यते तेजस्तस्माद् दीपं ददामि ते॥

[2] गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

[3] विरंचिना सहोत्पन्न परमेष्ठिनिसर्गज।
नुद सर्वाणि पापानि दर्भ स्वस्तिकरो भव॥

(आ) सिद्ध योग—(१) 'धर्म'—धर्मात्माप्रसाद धर्मात्माशरण धर्मात्मासिंह धर्मू धर्मेष्टि।

(२) 'अर्थ'—दौलत दौलतचंद दौलतप्रसाद दौलतराम दौलतराय दौलतसिंह दौली दौलीराम दौलू द्रव्यप्रकाश धन धनई धनकलाल धनकुमार धनकूसिंह धनदयाल धनप्रकाश धनफूलनारायण धनरूप धनरूपमल धनलाल धनवंत धनवंतनारायण धनवंतसिंह धनवानसिंह धनवीरप्रसाद धनसुखलाल धनानंद धनियां धनी धनीराम नवनिधिलाल निद्धा निद्धामल निद्धालाल निद्धीसिंह निद्धूराम निधिदास निधिस्वरूप पूंजीराम पूंजीलाल मिलखीराम विभवसिंह विभूतिलाल विभूतिसिंह शुभधनसिंह संपत संपतिकुमार संपतिमल संपतिराम संपतिलाल संपतिसिंह।

(३) 'काम'—आरामदास आरामीलाल इकबाल इकबालकिशोर इकबालकृष्ण इकबालचंद्र इकबालनारायण इकबालनारायणलाल इकबालप्रसाद इकबालबहादुर इकबाललाल इकबालशंकर इकबालसिंह इकबालीप्रसाद ऐश्वर्यनारायणसिंह ऐश्वर्यभूषण खुशबख्तराय खुशहाल खुशहालचंद्र खुशहालसिंह खुशहालीराम खुशहालीलाल खुशाकरलाल खुशालचंद्र खुशालसिंह खुशाली खुशालीमन खुशालीराम नसीबधारी नसीबसिंह बख्तबहादुरसिंह बख्तावरलाल बख्तावरसिंह भागचंद भागमल भागवंतसिंह भागी भागीमल भागूमल भावीचंद भावीराय भोगी भोगीराम भोगीलाल रायशुभगदास विकासचंद विलासचंद विलासनारायण विलासराम विलासराम विलाससिंह सुक्खन सुक्खनलाल सुक्खनसिंह सुक्खा सुक्खामल सुक्खाराम सुक्खासिंह सुक्खी सुक्खीलाल सुक्खू सुक्खूलाल सुक्खे सुखई सुखईदयाल सुखईराम सुखदर्शन सुखदर्शनदयाल सुखदर्शनलाल सुखदीन सुखधनजोसहाय सुखध्यान सुखनंदन सुखनंदनप्रसाद सुखनंदनराम सुखनंदनलाल सुखनंदनसिंह सुखनप्रसाद सुखना सुखनारायण सुखनिधानसिंह सुखपाल सुखबिन सुखभावनसिंह सुखमंगलसिंह सुखमय सुखमल सुखमलचंद सुखराज सुखराजबहादुर सुखराजसिंह सुखराम सुखरामपाल सुखरामलाल सुखरामसिंह सुखलाल सुखवंतराय सुखवासी सुखवासीलाल सुखविलासशरण सुखवीर सुखवीरदत्त सुखवीरशरण सुखवीरसिंह सुखसंपतिराय सुख स्वरूप सुखानंद सुखानंदस्वरूप सुखारी सुखारीराय सुखारीसिंह सुखीबक्स सुखुआ सुखूराम सुखेंद्रकुमार सुखेंद्रदेव सुखेंद्रपालसिंह सुखेंद्रसिंह सुभागचंद सुभागमल सूखा सेहतबहादुर सेहतराम सेहतसिंह सौभागनारायणसिंह सौभागमल सौभागसिंह।

(४) लोकैषणा—अक्षयकीर्ति अजमतसिंह आशादत्त आशाराम इसमचंद इसमसिंह उदित उदितप्रसाद उदितलाल उदितसिंह कीरतभान कीरतराम कीरतसिंह कीर्तानंद कीर्तिभदेव कीर्तिकर कीर्तिगोपाल कीर्तिचन्द कीर्तिदेव कीर्तिपालसिंह कीर्तिप्रकाश कीर्तिप्रसाद कीर्तिभूषण कीर्तिभूषणप्रकाश कीर्तिभूषणस्वरूप कीर्तिमान कीर्तिवर्द्धनदेव कीर्तिवल्लभ कीर्तिविहारी कीर्तिशंकर कृतराजसिंह कृतराय ख्यातसिंह जगरोशन जगरोशनलाल जयवंतकुमार जसईराम जसकरनसिंह जसजीतसिंह जसपतराय जसपतिराम जसपाल जसपालसिंह जसमलसिंह जसवीरसिंह तारीफसिंह नामवरसिंह परमकीर्तिशरण प्रसिद्धराय महिमाचन्द्र महिमाचरण महिमानंद महिमाराजध्वजसिंह यशकरण यशपाल यशपालचंद्र यशपालसिंह यशराज यशराय यशवीर यशवीरशरणदास यशवीरसिंह यशोधर यशोराज यशोविमलानंद रोशनमल रोशनलाल रोशनसिंह ललितकीर्ति वरनाम शोहरतप्रसाद श्लोक सन्नामल सन्नूलाल सरनाम सरनामकुमार सरनामसिंह सुकीर्तिदास सुनामराय हसमत हसमतराय हुकुमचंद हुकुमपाल हुकुमराज हुकुमसहाय हुकुमसिंह।

(५) चार पदार्थ—पदारथ।

(८) सम्प्रदाय—अदंडीलाल अनहदशब्दशरण अमूल्यचरणसिनहा अमृतबहादुर अमृतसिंह अर्हदास अलखधारी अवधू अवधूत अवधूतसिंह अवधूतानंद आर्यदत्त इमरतसिंह उदासी केवलसिंह कौलधारीसिंह गिरिप्रसाद गिरिलाल गुरुकुल गुरुदयाप्रकाश गुरुमुखदास गुरुमुखराम गुरुमुखशरण गुरुमुखसिंह गुसाई गुसाईदत्त गुसाईराम गुसाईसिंह छप्पनलाल छप्पनसिंह जैनकुमार जैननाथ जैन-

प्रकाश जैनूराम जैनेंद्र ज्योतिषसिंह तपसी तपसीसहाय तपसीसिंह तपस्वीप्रसाद तपस्वीराम तपोनिधि तपोराज तिलकधारी थावरचंद दयाल दयालचंद्र दयालदास दयालनंद दयालनारायणसिंह दयालप्रसाद दयालराम दयालशरण दयालसहाय दयालसिंह दयालुदास दिगंबर दिगंबरचंद दिगंबरदत्त दिगंबरदयाल दिगंबरनाथ दिगंबरप्रसाद दिगंबरराम दिगंबरलाल दिगंबरसिंह देवलधारीसिंह नक्षत्रबली नाथप्रसाद नाथमल नाथसिंह नाथूराम नाथूलाल नामप्यारा नामप्रसाद नामसिंह नामस्वरूप नेतिरामसिंह परमगुरुदयाल परमहंस परमहंसप्रसाद परमहंसभक्तसिंह पुष्टिवल्लभ प्यारेसिंह प्रपन्नाचार्य ब्रह्ममुनि भक्तदर्शन भक्तदर्शनस्वरूप भक्तनंदन भक्तप्रसाद भक्तभूषण भक्तमल भक्तमोहन भक्तरत्न भक्तराज भक्तराम भक्तशिरोमणि भक्तसज्जन भिक्षुप्रसाद महंत महंतपति महंतराम महंतसिंह महात्मा महात्माप्रसाद महात्माराय महात्मालाल महात्मासहाय महाप्रसाद महामुनि महावरदयाल मुखीनाथ मुनईलाल मुनिकांत मुनिकुमार मुनिचंद मुनिजिनविजय मुनिज्ञानसुन्दर मुनिदीक्षित मुनिनारायणसिंह मुनिप्रसाद मुनिराज मुनिराजशरण मुनिराम मुनिलाल मुनींद्रप्रताप मुनींद्रप्रसाद मुनींद्रबहादुर मुनींद्रसिंह मुनींद्रानंद मूरतसिंह मूरतिप्रसाद मूरतिराय मूर्ति मूर्तिकिशोर मूर्तिनारायण मूर्तिलाल रामसनेही रामसनेहीलाल रेखराज विष्णुधारीसिंह [1]वैष्णवदास शब्दकुमार शब्दप्रसाद शब्दमोहनलाल शब्दलसिंह शब्दशरण शब्दस्वरूप शब्दानंद शब्दानंदराय संत संतकुमार संतगोपाल संतचरण संतदयालसिंह संतदास संतदेव संतनारायण संतपाल संतप्रकाश संतप्रसाद सतप्रसाददास संतबक्ससिंह संतबहादुरसिंह संतमिलन संतराज संतराम संतलाल संतलालदास संतविलास संतशरण संतसागर संतसिंह संतसेवकराय संतसेवकलाल संतस्वरूप संता संतान संतानप्रसाद संतानसिंह संताश्रयलाल संतूदास संतूराम संतूलाल संतोदास सकलदीप सकलसिंह सकलानंद सकलू सतगुरुचरण सतगुरुदयाल सतगुरुप्रसाद सतगुरुबक्ससिंह सतगुरुशरण सतगुरुसहाय सतगुरुसिंह सतगुरुसेवकसिंह सधवा साधवराम साधवसिंह साधू साधूचरण साधूदास साधूराम साधूशरण साधूशरणप्रसाद साधो साधोप्रसाद साधोलाल साधोशरण साधोसिंह सिद्धनारायण सिद्धप्रसाद सिद्धानंद सिद्धिशरण सिद्धू सिद्धूराम सुरतिकुमार सुरतिनारायणसिंह सुरतिप्रकाश सुरतिराम सोहम् स्वामीचरण स्वामीदयाल स्वामीदयालस्वरूप स्वामीदीन स्वामीदीनप्रसाद स्वामीनाथ स्वामीनारायण स्वामीप्रसाद स्वामीविहारी स्वामीशरण स्वामीस्वरूप हंस हजूरसिंह हजूरीसिंह हाकिमहुकुम हुकुमचंद हुकुमराज हुकुमसहाय हुकुमसिंह हुक्मी होतमसिंह होतीप्रसाद होतीलाल होतृदत्त ।

६—अन्ध-विश्वास (अ) अशुभनाम—अजामिल अनरूपसिंह अनेकसिंह अपरूपनारायणलाल अपरूपसिंह इंद्रजीत ओछे ओछेलाल ओछेसिंह करलू करिया करियासिंह कलंक कलुआ कलूटीराम कलूटीसिंह कसूरराम कुंभकरण कुमनी कुशंककुमार कोबरनशाह खरदूषण खोट्टू खोटे गुलामी गैरी घरभारी घिनई चूहड़मल चूहरसिंह चूहरा चूहरीमल जालिम जालिमचंद जालिमप्रसाद जालिम सिंह दसैया दस्सू दासूसिंह दुर्जन दुर्जनराम दुर्जनलाल दुर्जनसिंह दुर्जाराम दुर्जा दुर्वचनसिंह धिक्कीसिंह नंगा नंगाराम नंगू नंगूराम नंगेदास नंगेसिंह निखिद्दी[2] भिक्षुकसिंह भिखारी भिखारीलाल मकतूलसिंह लुचई लौधर सिरिया ।

(आ) निकृष्ट तथा नगण्य नाम—अलियावन कचरूमल कजोरीमल कतवारू कत-

---

[1] वैष्णवजन तो तेने कहिये जे पीर पराई जाणे रे ।
परदुःखे उपकार करे तोपे मन अभिमान न आणे रे ॥
(भक्त नरसी)

[2] I, Nikhiddi Singh R. No. 197879 passed the High School Exam. of the Board of High School & Inter. Edn. U. P. in 1954 & want to change my name to Shri Narain Sharma. —18-9-57

बारूलाल कच्चू किरही कुकरियासिंह कुक्कुर कुनाईसिंह कुरकुट कूड़ासिंह कूड़ेमल कूड़ेराय कूढ़ी कूरे कूरेसिंह खतुआ खत्तू खरपत्तू खरपत्तूराम खुद्दी खेखरूराम खोभारीराम गासीराम गिजुआ गुदड़ी गुदड़ी-प्रसाद गुदड़ीराम गुदड़ीलाल गुदड़ीसिंह गुबरी गुबरीराम गुबरीलाल गुहरी गूदड़मल गूदड़राम गूदड़लाल गूदड़सिंह गूदड़िया गोजर गोबरसिंह गोबरीराम गोबरू घसिया घस्सा घासी घासीराम घासीलाल घासीसिंह घुन घुनऊ घुन्नन घुन्नीसिंह चिथरू चिथरूराम चिथरूसिंह चिरकिट चिरकुट चिरकुटलाल चिरकुटसिंह चिरकू चिलरू चिलरूराम चिल्लर चिल्लरसिंह चीथर चीलर चीलरमल चीलरसिंह चीलरू चूखर चोकर चोकरचंद छिलकू जीमिट्टीसिंह जुठई जुठईराम जूठनराम झंजी झंजू झंजूराम झंजूसिंह झमई झम्मन झम्मनराम झम्मनराय झम्मनलाल झम्मनसिंह झम्मा झाऊराम झाऊलाल झाऊसिंह झागूलाल झाड़ू-सिंह झिंगई झिंगईसिंह झिंगन झिंगनसिंह झिंगुरी झिंगुरीराम झिंगुरीलाल झिलंगीराम झींगुर झींगुर प्रसाद झींगुरी झींगुरीलाल झेंगई झेंगनप्रसाद टिड्डी डढ़ोरे डींगुर तिनकूलाल तुल्लू दलेराम दूनाराम धुरई धुरीलाल धूरे धूलचंद धूलसिंह पत्तर पातीराम पातीलाल फतिंगन फुनई फुनईराम फूचोलाला फूसन फूसीराम फूसे फोगलसिंह बालूचरण बालूराम बालूलाल भुस्सूराय भूआ भूसी भूसीराम भूसूराम मटइयाँ मटोला मट्टन मनकीराम मल मलईसिंह मिट्टीचंद मिट्टीलाल रेतराम रोड़ामल लुखईप्रसाद लुखई-राम सगवामल सगवासिंह सग्गल सग्गू सरपत सहिजनराय ।

(इ) विनिमय साधन—(१) अन्नादिद्रव्य—अंडीराम कदनलाल कुदई कुदईराम कुदई-सिंह कुदीराम कुदीराम कुद्दू कुद्दूलाल कूदन केरावसिंह कोदई कोदईलाल कोदूराम खेसरीप्रसाद गुच्चन-सिंह गुच्चालाल गुजईराय चनेसिंह चुनकई चुनकईलाल चुनकूराम चुनियांसिंह चुन्नी चैना जिनसी-राम जुआरमल तंदूराम तिलई तिलसिंह तुअरप्रसाद तूरीसिंह दौली दौलीराम दौलू धानजू पसई बीजा-सिंह बूटे बेझूराय भुट्टूराम भुट्टूसिंह मक्का मकाराम मक्कालाल मक्कू मक्कूराय मक्कूसिंह मटरादास मटरू मटरूमल मटरूराम मटरूलाल मटरूसिंह मटरे सत्तूसिंह समाईलाल समासिंह सम्मा सम्मीलाल होरा-लाल होरासिंह ।

(२) मुद्रा—अद्दू अशर्फी अशर्फीराम अशर्फीलाल अशर्फीसिंह कंचन कंचनप्रसाद कंचनलाल कंचनसिंह कंचनस्वरूप कनककुमार कनकराम कनकसिंह कनिकलाल कुंदन कुंदनमल कुंदनलाल कुंदनसिंह कौड़ा कौड़ी गिन्नीलाल चदगीराम चवन्नीमल चवन्नीलाल चाँदीराम चौअन्नीमल छकौड़ी-छकौड़ीलाल छक्कन छक्कनलाल छक्कीदास छक्कीमल छक्कूलाल छदम्मीलाल छदामी छदामीलाल छदामीसिंह तिनकौड़ी दमड़ी दमड़ीराम दमड़ीलाल दम्मासिंह दम्मी दामलाल दावनसिंह दुअन्नबीलाल पँचकौड़ी पँचकौडीलाल बिसई बीसी बोड़ई बोड़ी बोड़ीराम मुहरदत्त मुहरलाल मुहरसिंह मोहरचंद मोहर-पाल मोहरमनि लालमुहरराम लालमोहरराय सरिया सरियाप्रसाद सुनई सुनईराम सुनईसिंह सुनकी सुनहरी सुनहरीमल सुनहरीलाल सुनहरीसिंह सन्नी सुवर्णकुमार सुवर्णसिंह सोनईप्रसाद सोना सोनाराम सोनाराय सोनालाल सोनिया सोनियासिंह सोनीराम सोनीलाल सोनेलाल सोनेसिंह सोबरणसिंह सौनीराम सौनू स्वर्णजीतसिंह स्वर्णसिंह हेमन हेमप्रकाश हेमबहादुरसिंह हेमा ।

(ई) अन्ध रूढ़ियाँ—(१) अलग करना—अर्पणीचरण अर्पितसिंह अलगू अलगूराम अलगूराय अलगूसिंह खदेरनप्रसाद खदेरनसिंह खदेरू[1] खदेरूमल खदेरूराम खदेरूसिंह जुदागीलाल डरी डरेलाल डरैले डलई डल्लन डल्लासिंह डल्लू डाल डालचंद डालसिंह डालिमचंद डाली डाली-सिंह डालूराम डालूसिंह पटकन पड़रूसिंह पड़ेलाल पड़ेसिंह पबारू पब्बरराम पब्बार परहू परोहीराम

[1] ससुर खदेरी नदी जो प्रयाग में जमुना से मिलती है ।

परोहीसिंह फेंकू पेंकूमल पेंकूराम पेकूसिंह बखोरीलाल लुटई लुटईराम लुटावन लुटावनसिंह लुट्टीप्रसाद लुट्टूसिंह लोटन लोटनदास लोटनसिंह लोटना विसर्जनसिंह सौंपलाल सौंपीराम सौंपीलाल सोपन।

(२) **खींचना**—कढ़ा कढ़ीलेराम कढ़ीलेलाल कढ़ेरमल कढ़ेरा कढ़ेरासिंह कढ़ोरमल काढ़ेराम खचेड़सिंह खचेरन खचेरपालसिंह खचेरमल खचेरसिंह खचेरा खचेरूमल खचेरूसिंह खचोड़ेसिंह खच्चूमल गाजीदीन घसीटा[1] घसीटाराम घसीटासिंह घसीटेप्रसाद घसीटेराम घिराऊप्रसाद घिराऊसिंह घिरावन घिरूलाल घिसई घिसलाईप्रसाद घिसियावन घिसीराम घीसम-घीसा घीसाराम घीसासिंह घीसू घीसूलाल घेराऊ।

(३) **छेदना**—कंछीमल कंछीलाल कंछेदलाल कंछेदीलाल कनछिदमल कनछेदमल छिद्दन छिद्दा छिद्दामल छिद्दासिंह छिद्दू छिद्दूसिंह छेदालाल छेदासिंह छेदी छेदीप्रसाद छेदीराम छेदीलाल छेदीसिंह छेदुआ छेदू नकछेद नकछेदधर नकछेदराम नकछेदसिंह नकछेदी नत्था नत्थाराम नत्थासिंह नत्थीमल नत्थीलाल नत्थीसिंह नत्थूबक्स नत्थूराम नत्थूलाल नत्थूसिंह नत्थोला नथई नथईनाथ नथमल नथवा नथाराम नथुआ नथुनप्रसाद नथुनी नथुनीचंद्र नथुनीनंदन नथुनीप्रसाद नथुनीराय नथुनीसिंह नथोला नथोलिया।

(४) **तौलना**—जुखासिंह जुखई जुखईलाल जुखतारसिंह जोखन जोखनप्रसाद जोखनराम जोखी जोखीराम जोखू जोखूलाल तुलई तुला तुलाकृष्ण तुलाधर तुलाराम तुलासिंह तुलिया तुल्ला तुल्लासिंह तुल्लू तोलाराम तोलाशंकर तोलासिंह तौले।

(५) **फेरना**—अहोरवा अहोरवादीन अहोरवाप्रसाद अहोरे फिरई फिरईसिंह फेर फेरऊराम फेरनराम फेरनसिंह फेरू फेरूमल फेरूलाल फेरूसिंह बगदू बहोरनसिंह बहोरीमल बहोरीराम बहोरीलाल लूटन लूटरामसिंह लौटीराय लौटूराम लौटूसिंह सुफेरसिंह।

(६) **बदलना**—फेजूप्रसाद बदलन् बदलसिंह बदली बदलीप्रसाद बदलू बदलूचंद्र बदलूप्रसाद बदलूराम बदलूसिंह बदले।

(७) **बेचना**—बिकाऊ बिकाऊनाथ बिकाऊलाल बिकानू बिक्कालाल बिग्गा बेचईलाल बेचन बेचनराम बेचनलाल बेचालाल बेचोराम बेचूदयाल बेचूनारायण बेचूप्रसाद बेचूराज बेचूराम बेचूलाल बेचूसिंह बेचेलाल सुबेचनराम सौदू।

(८) **मनौती**—निहोरमल निहोरराम मंतूलाल मनतोले मनाऊ मन्नन मन्ना मन्नालाल मन्नीराम मन्नीराय मन्नीलाल मन्नीसिंह मन्नू मन्नूराम मन्नूलाल मन्नूसिंह मन्ने मन्नोलाल मन्होती मानताप्रसाद माना मानाप्रसाद मानाराम मानोलाल।

(९) **माँगना**—मंगतराम मंगतसिंह मंगतीराम मंगतूराम मंगतूराय मंगन मंगनीप्रसादसिंह मंगनीराम मंगनूराम मंगा मंगाराम मंगासिंह मंगीनारायण मंगीलाल मंगू मंगूलाल मंगूसिंह मंगेराय मंगेलाल मांगीमल मांगीलाल मांगू मांगेसिंह।

(१०) **मोल लेना**—किनयान किनवनराम किन्नूराम कीनाराम बिसई बिसऊराम बिसार बिसाहन बिसाहूराम बिसाहूलाल मुलई मुलईराम मुलईलाल मुलहू मुलुआ मोलकचंद मोलकप्रसाद मोलकराम मोलकराय मोलहरसिंह मोलहूराम मोलूराम मोल्हासिंह मौलया।

(उ) **भ्रममूलक उपपत्तियाँ**—अलियार अलियारराम अलियारसिंह आमिला इंधारीलाल ओड़ीराम ओड़ीसिंह ओरी ओरीलाल औघड़बक्ससिंह कबूलचंद कबूलसिंह कलंदर कुरबानराम

---

[1] Be it known to all that I, Ghaseete Ram, Roll Number 72725 who passed the U. P. Inter. Board's High School Examination of 1955 want to change my name to Anil Kumar Maurya. —26-12-57

खलीफाराय खाकनजीसिंह खाकनसिंह खाकीप्रसाद खैराती खैरातीलाल खैरातीसिंह खोपीराम गंडामल गंडासिंह गाजीदीन गाजीराम घुरई घुरईलाल घुरनाथ घुरपत घुरपत्तर घुरपत्तरराम घुरफेकन घुरफेकन-लाल घुरबटोरराय घुरबिन घुरबिनराम घुरभरी घुरभरीसिंह घुरभूसिंह घुरमल घुरहूराम घुरहू घुरहूलाल घुराऊ घुराऊराम घुराऊलाल घुरां घुरांसिंह घुरू घुरूसिंह घूयेमल घूरनप्रसाद घूरनसिंह घूराराम घूरारामप्रसाद घूरे घूरेमल घूरेलाल घूरेसिंह चौरी छज्जुआ छज्जू छज्जूमल छज्जूराम छज्जूलाल छज्जूसिंह छन्नू छन्नूलाल छितना छितरियाप्रसाद छितानीराम छित्ताराम छीतमल छीतरमल छीतरिया छीतामल छीतू छीतूराम जंत्रीप्रसाद जखईराम जखईलाल जतन जतनलाल जतनस्वरूप जरबंधनसिंह जहरीराम जहरीलाल जहरू जाहर जाहरमल जाहरलाल जाहरिया जाहरियासिंह जाहरी जाहिरसिंह जिदालाल जुगतराम जोगरा जोगिया जोगीदान जोगीदास जोगीभगत जोगीराम जोगीसाहु जोती जौनदास झंडा झंडानंद झंडासिंह झंडू झंडूदत्त झंडूमल झंडूराम झंडूल झंडूलाल झंडूसिंह झंडे झंडेसिंह झन्नासिंह झब्बामल झब्बालाल झब्बू झब्बूदास झब्बूप्रसाद झब्बूलाल झब्बूसिंह झाड़ेगिरि झाबूलाल टहलराम टहलू टोढ़ी डूंगरा डोरी डोरीदत्त डोरीलाल डोरीसिंह तकियाराम तक्कूराम तखतसिंह थनई थन्नू थम्मनदत्त थम्मन-लाल थम्मनसिंह थानसिंह थानी थानू दरगाही दरगाहीराम दरगाहीलाल दरगाहीशरण दरगाहीसिंह दिहल धज्जू धूनीराम धूनीसिंह धूनीसेवक धूनेश्वरसिंह ध्वजाचंद ध्वजाधारी ध्वजालाल नगरसेनसिंह नागाराम नागाराय नागू नागूराम निशानसिंह परसादी परसादीलाल पाली पालीराम पीरचंद पीरदीन पीरीमल पीरीराम पीरूमल पीरूसिंह पुड़ियासिंह फकीर फकीरचंद फकीरचरण फकीरदास फकीरबक्स फकीरराम फकीरा फकीरसिंह फकीरेमल बक्सनारायणसिंह बभूती बलकेश बलिकरणलाल बलिकरण सिंह बलिदू बल्कनदेव बहराइची बहराइचीलाल बाघसिंह बिरागीराय बैताल बैतालसिंह बैरंगीलाल बैरागीदास बैरागीराम बैरागीलाल भगत भगतदयाल भगतदयालदास भगतदास भगतराम भगतशरण भगतसहाय भबूती भभूतीप्रसाद भभूतीलाल भभूतीसिंह भुइयाँसिंह भुय्यादीन भूडदेव भैयाबक्ससिंह भोपा भोपीलाल मंत्रीदास मखदूम मखदूमप्रसाद मदारबक्स मदारी मदारीलाल मसानीदीन मिढ़ईलाल मिढ़ईसिंह मियाँलाल मुगलचंद मुल्ला मुल्लाप्रसाद मुल्लू मूड़नदेव मेड़ई मेड़ू मेढ़ा मेढ़ीलाल मेढ़ूमल मौलवीराम मौलवीसिंह मंत्रीलाल रक्खासिंह वचनसिंह सक्कू सगुनचंद सगुनलाल सतोलेराम सत्तीदीन सत्तीप्रसाद सत्तीलाल सत्तूसिंह सधवा सधारीलाल सांईदास सांईलाल साधनलाल सुपईराम सेचनप्रसाद सेवनलाल सेवा सेवादीन सेवाधर सेवानंद सेवाराम सेवाशंकरलाल सेवासिंह सैकूलाल।

दार्शनिक प्रवृत्ति

१—आध्यात्मिक (अ) ब्रह्म—अखंडानंद अखिलानंद अच्युतानंद अद्वैतकुमार अद्वैतप्रसाद अद्वैतानंद अनंत अनादिलाल अविनाश असीमरंजन आत्मप्रकाश आत्मानंद आत्माराम ईश्वर ईश्वरानंद ओम् केवल चिदानंद जीवधर जीवेंद्रनाथ नित्यानंद निरंजन निराकारसहाय निर्विकारशरण परमात्मा प्रणवदेव प्रभु मायाकांत मायाधारी मायापति मायाराम विभुकुमार सच्चिदानंद सर्वशक्तिमान्लाल सृष्टिनारायण सोऽहम् हंसनाथ हंसराम।

(आ) आत्मा[1]—आत्मचंद्र आत्मनारायणलाल आत्मप्रकाश आत्मस्वरूप आत्माचरण आत्मादत्त आत्मानंद आत्मानंदप्रसाद आत्मानारायण आत्माप्रसाद आत्माराम आत्मालाल आत्माशरण आत्मासहाय आत्मासिंह जीवनंदनदास जीवप्रकाश जीवबोधसिंह जीवहर्षण जीवानंद जीवानंद-लाल हंसकुमार हंसदत्त हंसबहादुरसिंह हंसलाल हंसादत्त हंसूसिंह।

---

[1] न जायते म्रियते वा कदाचि—
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥ २०॥ (गीता अध्याय द्वितीय)

(इ) माया—त्रिगुणसिंह ब्रह्मकलाप्रसाद मायादत्त मायादास मायादीन मायानंद मायाप्रकाश मायाप्रसाद मायासहाय मायास्वरूप रामकलादीन।

(ई) लोक—खलकई जगत जगतप्रसाद जगतीप्रसाद जगतीशरण जगदयाल जगप्रसाद जग-फलसिंह जहान[1] त्रिभुवन त्रिभुवनदत्त त्रिभुवनप्रसाद त्रिलोक त्रिलोकी त्रिलोकीदत्त दुनिया दुनिया-दयाल दुनियाप्रसाद भवसागरसिंह भूमंडलदास मुल्कू लुकई लुकईलाल लुक्की लोकप्रसाद लोकलाल लोका लोकानंद लोकाराम विश्वप्रकाश विश्वप्रसाद संसारदीन।

(उ) जीवन—जीवन जीवनकिशोर जीवनशरण जीवनचंद्र जीवनदत्त जीवनदास जीवनदेव जीवनप्रकाश जीवनप्रसाद जीवनमल जीवनमुनि जीवनराम जीवनराय जीवनलाल जीवनसहाय जीवनसिंह जीवा जीवाराम जीवालाल हयातसिंह।

(ऊ) कर्म तथा फल—कर्मचंद्र कर्मसिंह कर्मेंद्रनारायण फलई फलजीतसिंह फलराम।

(ओ) स्वर्ग—देवलोकसिंह देववास बैकुंठ बैकुंठचंद बैकुंठप्रसाद हरिनिवास।

(औ) मुक्ति—दिव्यानंद दिव्यानंदविहारी निर्वाणचंद निर्वाणदत्तलाल निर्वाणदास निर्वाणबक्ससिंह परमारथसिंह मुक्तिराम मोखा।

२—मनोवैज्ञानिक (अ) अन्तःकरण चतुष्टय—(१) मन—मनईसिंह मनप्रसाद मनुआ मनोलाल।

(२) चित्त—चित्तनसिंह चित्तप्रसाद।

(३) बुद्धि—धीमल बुद्धि बुद्धिप्रकाश बुद्धिभद्र बुद्धिराम बुद्धिविजयपाल मेधा।

(४) अहंकार—मामचंद मामराज।

(आ) पंचतन्मात्रा—(१) रूप—रूपई रूपदयाल रूपप्रकाश रूपप्रसाद रूपबाबू रूपसिंह रूपी रेखाराय सूरत सूरतदेव सूरतनारायण सूरतराम सूरतसहाय सूरतसिंह स्वरूपकिशोर स्वरूपचंद्र स्वरूपानंद।

(२) शब्द—शब्दकुमार शब्दप्रसाद शब्दमोहनलाल शब्दलसिंह शब्दशरण शब्दस्वरूप शब्दानंद शब्दानंदराय।

(३) रस—रसमयसिंह।

(४) गंध—महकसिंह सुगंध।

(इ) ज्ञानेन्द्रिय—(१) नेत्र—अच्छपालसिंह दृगपाल दृगपालसिंह दृगराज नयनदास नयन-बहादुर नयनसिंह नेत्र नेत्रचंद नेत्रपाल नेत्रपालसिंह नेत्रवल्लभ नेत्रसिंह नैनसुख नैना नैनाराम लोचन लोचनप्रसाद लोचनराम लोचनलाल लोचनसिंह।

(ई) योग सम्बन्धी—(१) योग—जोगध्यान जोगमल योगदत्त योगमणि योगानंद योगांवरसिंह।

(२) ध्यान तथा स्मृति—खयाली खियालीराम चित्यानंद ध्यानपालसिंह ध्यानप्रकाश ध्यान-स्वरूप ध्यानी यादकरण लगनसिंह सुरतिकुमार सुरतिनारायण सुरतिप्रकाश सुरतिराम सुरतिसिंह स्मृतिकुमार।

---

[1] आलम कवि के पुत्र का नाम जहान था। कहते हैं कि एक दिन जहाँगीर बादशाह ने उसकी स्त्री से पूछा कि क्या तुम ही आलम की स्त्री हो? उसने तुरंत उत्तर दिया—सरकार जहान की माँ मैं ही हूँ।

(उ) **विचार तथा अनुभव**—अनुभवनारायण अनुभवानंद विचारानंद ।

(ऊ) **मनोवेग**—(१) **आनंद**—अह्लादसिंह आनंद आनंदप्रकाश आनंदप्रसाद आनंदप्रिय आनंदबहादुर आनंदरूप आनंदवर्धन आनंदवल्लभ आनंदवीरसिंह आनंदानंद आमोदकुमार उल्लासचंद्र खुशींदयाल खुशीनारायण खुशीराम खुशीलाल चित्तबहलराम चितबहलसिंह चैनकुमार चैनपाल चैनराम चैनसिंह चैनसुख चैना प्रमोद प्रमोदकुमार प्रमोदचंद्र प्रमोदचरण प्रमोदनाथ प्रमोदनारायण प्रमोदनारायणसिंह प्रमोदानंद प्रसन्नकुमार प्रसन्नचंद्र प्रसन्नदेव मगनमल मगनसिंह मगनस्वरूप मगनानंद मगनू मगनूसिंह मनफूल मनफूलदत्त मनफूलासिंह मनमोदसिंह मोदनाथ मोदी मोदीलाल विनोद विनोदकुमार विनोदचंद विनोदपालसिंह विनोदप्रकाश विनोदभास्कर विनोदभूषण विनोदराय विनोदसिंह विनोदानंद विनोदीलाल शर्मधर शर्मानंद शादीराम शादीलाल हरकुआ हरखचंद हरखपालसिंह हरखबहादुरसिंह हरखू हरखी हुलसनलाल हुलसनसिंह हुलास हुलासचंद हुलासराम हुलासराय हुलासी हुलासीलाल हुलासीसिंह हृषिग् ।

(२) **आशा**—आशकरन उम्मेदराम उम्मेदराय उम्मेदसिंह ।

(३) **आश्चर्य**—अचंभेलाल अचरज अचरजनाथ आश्चर्यनाथ ।

(४) **इच्छा**—अंछा अभिलाख अभिलाखदेव अभिलाखराय अभिलाखसिंह अभिलाष अभिलाषचंद्र अभिलाषीलाल अरमानसिंह इंछाराम इच्छाराम गरजनारायणराय गर्जनसिंह गर्जू गर्जूसिंह तिरखाराय तृषाराम तृषासिंह मनकामनासिंह मनोरथ रुचिराम ललकप्रसाद ललकालाल ललकूराय ललकूसिंह हिंच्छाराम ।

(५) **गर्व**—अभिमानसिंह गुमान गुमानमल गुमानसिंह गुमानी गुमानीसिंह घमंडी घमंडीलाल घमंडीसिंह दरबसिंह दर्पनारायण दर्पराय ।

(६) **ग्लानि तथा लज्जा**—छोभदत्तसिंह लज्जू ।

(७) **चिंता**—औसेरीगिरि औसेरीलाल कुलफतराय चिंता चिंताप्रसाद सोचनलाल ।

(८) **ज्ञान**—ज्ञान ज्ञानचंद ज्ञानदत्त ज्ञानदास ज्ञानदासराय ज्ञानपाल ज्ञानप्रकाश ज्ञानबन ज्ञानमोहन ज्ञानशंकर ज्ञानशरण ज्ञानसिंह ज्ञानानंद ज्ञानीराम प्रबोध प्रबोधचंद प्रबोधनाथ प्रबोधनारायण प्रबोधशंकर बोधनंद बोधन बोधनारायण बोधपाल बोधराज बोधराम बोधीलाल बोधेसिंह सुबोध सुबोधचंद सुबोधनारायण सुबोधशंकर सुबोधस्वरूप होशनाथ होशराम ।

(९) **प्रेम**—अनुरागदास अनुरागशंकर इश्कलाल उलफतराम उलफतराय उलफतसिंह नेहपालसिंह नेहराजसिंह पिम्मा पिरुआ पेमसिंह पेमा प्यारचंद प्रीतिमनोहर प्रीतिवर्धन प्रेम प्रेमकांत प्रेमचन्द प्रेमदत्त प्रेमदयाल प्रेमदास प्रेमदीन प्रेमवर प्रेमनंदन प्रेमनाथ प्रेमनारायण प्रेमनारायणलाल प्रेमनिदेश प्रेमनिधि प्रेमनिधिप्रसाद प्रेमपतराय प्रेमपति प्रेमपाल प्रेमप्रकाश प्रेमप्रतापसिंह प्रेमप्रसाद प्रेमबहादुर प्रेमबाबू प्रेममणि प्रेममनोहर प्रेममाधव प्रेममित्र प्रेमरत्न प्रेमरमण प्रेमराज प्रेमराम प्रेमरुचि प्रेमवल्लभ प्रेमशंकरलाल प्रेमविहारी प्रेमविहारीलाल प्रेमशरण प्रेमशरणसहाय प्रेमसनेही प्रेमसिंह प्रेमसुंदरसिंह प्रेमसुख प्रेमसुखदास प्रेमसुखलाल प्रेमसुमिरन प्रेमसेवक प्रेमस्वरूप प्रेमानंद प्रेमी मुहब्बत रागदेव रागदेवसिंह लगनसिंह वत्सप्रेम श्रीप्रेमवर्धनशाह सनेही सन्हैयालाल स्नेहकुमार स्नेहदास स्नेहपालसिंह स्नेहीराय स्नेहीलाल हुबई हुबदारसिंह हुबनाथ हुबराम हुब्बनारायण हुब्बलाल हुब्बाराय हेतपाल हेतपालसिंह हेतमपाल हेतमसिंह हेतराय हेतराम हेता ।

(१०) **भय**—भयदेव ।

(११) **लोभ**—लोभानंद ।

(१२) **वैराग्य**—वैरागदास ।

(१३) शांति—शमानंद शमीनंद शाति शांतिकुमार शांतिनंदन शांतिप्रकाश शांतिप्रसाद शातिलाल शांतिवर्द्धन शांतिवीर शांतिशरण।

(१४) शोक—कलकू खेदनलाल खेदू।

(१५) श्रद्धा, भक्ति तथा विश्वास—भक्तिप्रकाश भक्तिप्रसाद विश्वासराय श्रद्धानंद श्रद्धनंदसिंह सरधूराय।

(१६) साहस—हौसिलाप्रसाद हौसिलाशाह हौसिलेदार।

(ए) रस—(१) श्रृंगार रस—रसराज श्रृंगारसिंह सिंगारसिह सिंगारू।

(२) हास्य रस—हासानंद।

(३) वीर रस—दानवीर धर्मवीर धर्मवीरप्रसाद धर्मवीरसिंह दयावीर युद्धवीर युद्धवीरसिंह वीर वीरकिशोर वीरचंद वीरप्रकाश वीरसहाय।

(४) शांत रस—शांतराम।

३—नैतिक (अ) धर्म—धम्मीसिंह धर्मकिशोर धर्मकिशोरलाल धर्मचंद धर्मजीत धर्मदत्त धर्मदास धर्मधारी धर्मधीरसिंह धर्मप्रतापनारायणसिंह धर्मप्रसाद धर्मप्रिय धर्मबोध धर्मसहाय धर्मसिंह धर्माशानाथ धर्मानंद धर्मू।

(१) धृति—धीरजकुमार धीरजपालसिंह धीरजलाल धीरसिंह धीरसेन धीरादास धीरूमल धीरूलाल धृतिमान धैर्यनाथ धैर्यराज धैर्यलाल सुधीरकुमार सुधीरचंद।

(२) क्षमा—क्षमाचंद क्षमानंद क्षमानारायण क्षमापति क्षमापाल क्षमास्वरूप।

(३) दम—इंद्रीदमन जितेंद्रिय दमनकुमार दमनप्रकाश।

(४) सत्य—ऋतानंद यथार्थानंद सचई सचईराम सतनिरूपनसिंह सत्यकिशोर सत्यजीवन सत्यतीर्थ सत्यधोर सत्यनिवास सत्यपाल सत्यप्रकाश सत्यप्रसाद सत्यप्रीतिसिंह सत्यशरणलाल सत्यशील सत्यसहाय सत्यसाधन सत्याचरण सत्याचरणलाल सत्यानंद।

(५) दया—अनुग्रह अनुग्रहनारायणसिंह करुणापति करुणाभूषण करुणासागर कृपादयाल कृपानंद कृपानाथ कृपानारायण कृपानिवास कृपाराम तवाक्कुलसिंह दयाकांत दयाकृष्ण दयाचंद दयानाथ दयानाथस्वरुप दयाप्रकाश दयाप्रसाद दयाराम दयारामप्रसाद दयावंतलाल दयाव्रत दयाशेखर निवाजीलाल मयाराम महरलाल मेहरचंद मेहरबानसिंह मेहरसिंह।

(आ) दान—खैराती खैरातीलाल खैरातीसिंह दानजी दानदयाल दानपालसिंह दानप्रकाश दानविहारीलाल दानमल दानसहाय।

(इ) संतोष—तोखी त्रिपतिसिंह दिलासा दिलासाराम परितोषकुमार संतोकीराम संतोखीलाल संतोषकुमार सतोषचंद्र संतोषनारायण संतोषप्रसाद संतोषमल संतोषराम संतोषलाल संतोषसिंह संतोषानंद सबरूराम।

(ई) तप—तपनाथ तपनारायण।

(उ) व्रत-प्रतिज्ञा—कौलधारीसिंह कौलीराम कौलूराम टेकचंद टेकनसिंह टेकराज टेकराम टेकसिंह तोबाराम परनपतिराम परनसिंह व्रतपाल व्रतराम व्रतानंद।

४—नागरिक गुण—(अ) आदर्श—आदर्शकुमार आदर्शनारायण आदर्शमित्र।

(आ) त्याग—त्यागराय त्यागानंद।

(इ) न्याय—न्यायव्रत।

(अं) मान-मर्यादा—आनदेव आनसिंह आनू इज्जतराय पतिपाल पतिराखन पतेईलाल मर्यादपति महातम महातमराय महातिमसिंह ।

(अः) विनय—विनयकांत विनयकुमार विनयप्रकाश विनयभूषण विनयमोहन विनयसिंह विनयानंद ।

(क) शील—चरित्रराय शीलकुमार शीलचंद्र शीलभद्र शीलवंत शीलस्वरूप सुशील सुशीलकुमार सुशीलचंद्र सुशीलदेव सुशीलप्रकाश सुशीलबहादुर सुशीलभूषण सुशीलविहारीलाल सुशीलस्वरूप ।

(ख) सहायता—सहाय ।

(ग) 'हित'—उपकारीसिंह नेकीदास नेकीराम परोपकारसिंह हितकारीसिंह हितजीवन हितनारायण हितपाल हितप्रकाश हितलाल हित्तू ।

(घ) भरोसा—अधारसिंह आधारसिंह आधारी आसरासिंह टेकचंद टेकनसिंह टेकराज टेकराम टेकसिंह भरोखनलाल भरोस भरोसमल भरोसा भरोसाराम भरोसेलाल भरोसेसिंह ।

(ङ) शरण—शरण शरणकुमार शरणजीतसिंह शरणदेव शरणप्रसाद शरणबक्ससिंह शरणसिंह शरणाधार शरणानंद ।

(च) मेल मिलाप—मिलई मिलापचंद्र मिलापसिंह मिल्लूराय सुलहदीनसिंह ।

(छ) नीति-नियम-उपदेश—उपदेशनारायण नियमधारी नियमपाल नियमपालसिंह नियमीसिंह नियमीस्वरूप नीतिकिशोर नीतिप्रसाद नीतिराजसिंह ।

राजनीति

(अ) वीरपूजा—अजितप्रतापसिंह अमर अमरचंद अमरजीतसिंह अमरतू अमरदेव अमरदेवसिंह अमरधारी अमरध्वजसिंह अमरबहादुर अमरबहादुरलाल अमरबहादुरसिंह अमरलाल अमरसिंह अमरा अमरू अम्मर अरविंद अरविंदकुमार अरविंदनाथ अरविंदनारायण अरविंदपालसिंह अरविंदप्रकाश अरविंदप्रबोध अरविंदमोहन अरविंदसिंह अरविंदस्वरूप आल्हा इंदल इंदलसिंह इंदुल इंद्रजीत ईश्वरचंद्र उदई उदईसिंह उदन उदनसिंह उदयकांत उदयचंद उदयनंदन उदयनंदनप्रसाद उदयप्रकाश उदयप्रतापसिंह उदयप्रसाद उदयबहादुरसिंह उदयराम उदयलाल उदयबीर उदयवीरसिंह उदयशंकर उदयसिंह उदयानंद उदिया उदैराजसिंह उद्या ऊदल ऊदलसिंह ऊदा ऊदादास एदलप्रसाद एदलसहाय एदलसिंह खुदीराम गांधीप्रसाद गामा गामू चितरंजनदास चित्तरंजनविहारी चित्तरंजनशाह छत्तरू छत्तनलाल छत्तरसिंह छत्ता छत्ताराम छत्तासिंह छत्तूराम छत्रजीतसिंह छत्रधारी छत्रधारीसिंह छत्रपाल छत्रपालसिंह छत्रसाल छत्रसालसिंह छत्रानंद छत्री जगनप्रसाद जगनबहादुर जगनलाल जगनसिंह जगनू जगनूप्रसाद जयमल जयमलसिंह जवाहर जवाहरकांत जवाहरलाल जवाहरसिंह जसई जसईराय जसराज जसराजसिंह जस्सन जस्सा जस्सूलाल जागन जागनसिंह टोपीलाल तन्नू तन्नूलाल तन्नूसिंह तातियां तालासिंह ताहरसिंह तानासिंह तिलक तिलककुमार तिलकनदास तिलकनारायण तिलकभानतिलकराज तिलकराम तेजा[1] तेजामल तेजाविहारी दसवंतसिंह दसवनसिंह दसेकुमार दसैया दस्सू दुर्गादास देशराज देशराजसिंह नानानंद नानालाल नानासाहब प्रणवीरप्रतापसिंह प्रताप प्रतापकिशोर प्रतापकुमार प्रतापकृष्ण प्रतापचंद प्रतापबहादुर प्रतापबहादुरशरणसिंह प्रतापभानु प्रतापवर्द्धनदेव प्रतापविक्रमसिंह प्रतापशंकर प्रतापशंकरसिनहा प्रतापसिंह प्रतापस्वरूप प्रतापी प्रबलप्रतापनारायणसिंह प्रबलप्रतापसिंह फतहचंद फतहबहादुर फतहबहादुरलाल फतहबहादुरसिंह फतहलाल फतहसिंह फतेहराम फतेहजंगसिंह फतेहनारायण फतेहराजविहारी फत्ता फत्तासिंह फत्तेसिंह बंदा बंदादास बंदासिंह बंदू बंदूसिंह

५७

बंदेप्रसाद बच्छराज बच्छराजप्रसाद बच्छराजलाल बदनलाल बदनसिंह बदना बनाफरसिंह बादल बादलसिंह बालगंगाधर बापूमल बापूलाल बिकरमाजीत बिकरमासिंह ब्रह्मानंद भगतसिंह भूपेंद्रविक्रम-सिंह मलिखान मलिखानसिंह मलिहा मल्हनसिंह मल्हू मल्हेशसिंह मल्होसिंह मूलशंकर मूलशंकरलाल रणवीरप्रतापसिंह रवींद्र रवींद्रकुमार रवींद्रकुमारनाथ रवींद्रनाथ रवींद्रनारायण रवींद्रपाल रवींद्रप्रकाश रवींद्रप्रतापसिंह रवींद्रबहादुरचंद्र रवींद्रमोहन रवींद्रलाल रवींद्रबिहारी रवींद्रशंकर रवींद्रशरण रवींद्रसहाय रवींद्रसिंह रवेंद्र राजाप्रताप राजाप्रतापकिशोरनारायणमल राजेंद्रप्रतापभानु राणाप्रतापसिंह रानाराय रानासिंह रामदास रामदासराय राममूर्ति राममूर्तिनारायणसिंह राममूर्तिराय राममूर्तिलाल राममूर्तिसिंह रासविहारी रासविहारीराय रासबिहारीलाल लाखन लाखननारायण लाखनसिंह लाजपति लाजपतिराय लालउदयरायसिंह लालचंद लालचंदप्रसाद लालचंदसिंह बिक्रम विक्रमचंद्र बिक्रमपाल बिक्रमप्रसादलाल बिक्रमसिंह विक्रमादित्य विक्रमादित्यप्रसाद बिक्रमादित्यसहाय बीरप्रतापसिंह शिवराज शिवराजकिशोर शिवराजकुमार शिवराजचंद शिवराजप्रसाद शिवराजबहादुर शिवराजशरण शिवराजसिंह शिवाजी श्योराजसिंह श्रद्धानंद श्रद्धानंदसिंह श्रद्धाराम श्रद्धासिंह समरथ बहादुरलाल समरथमल समरथराम समरथ-सिंह समरथी सुभाषचंद सुरेंद्र सुरेंद्रकिशोर सुरेंद्रकुमार सुरेंद्रदेव सुरेंद्रनाथ सुरेंद्रनारायण सुरेंद्रपालसिंह सुरेंद्रप्रकाश सुरेंद्रप्रताप सुरेंद्रप्रतापबहादुर सुरेंद्रप्रसादसिंह 'सुरेंद्रबहादुर सुरेंद्रभूषणप्रसाद सुरेंद्रमोहन सुरेंद्रमोहनराय सुरेंद्रलाल सुरेंद्रविहारीलाल सुरेंद्रसिंह सुरेंद्रस्वरूप सुहेलसिंह **सूरज** सूरजमल सूरजसिंह सेवाजीआनंद हकीकतराय हरीसिंह ।

(आ) साहित्यकार—अमरसिंह अयोध्यासिंह कबीर कालिदास केशवदास गिरिधरदास जगन्नाथ जयदेव जयशंकरप्रसाद जल्लनप्रसाद जल्लू तुलसीदास देवदत्त द्विजदेव द्विजेंद्र द्विजेंद्रकुमार द्विजेंद्रनाथ द्विजेंद्रमणि द्विजेंद्रप्रताप नारायण पद्माकर प्रतापनारायण प्रेमचंद्र भर्तृहरि भवभूति भस्सू भास भासू भिखारीदास भूषण भूषणचंद्र भूषणराय भूषणलाल भूषणशरण भूषणसिंह मतिराम मयूर-दत्त महावीरप्रसाद रत्नाकर रवींद्र लल्लूलाल बंकिमचंद बाल्मीकि विद्यापति विश्वनाथ विहारीलाल व्यास शंकर श्रीहर्ष सदल सदलसिंह सदासुखराय सदासुखलाल सबलसिंह सूदनलाल सूरदास सेनापति हरिश्चंद हरिश्चंद्रदास हर्ष हेमचंद्र ।

(इ) राष्ट्रीय आन्दोलन—(१) देशभक्ति—देशदीपक देशनंदनसहाय देशपति देश-पालसिंह देशभूषण देशरत्न देशराज देशव्रत देशसिंह देशहितैषी भारत भारतचंद भारतज्योति भारत-नरेश भारतप्रकाश भारतप्रसाद भारतभानु भारतभूषण भारतभूषणस्वरूप भारतमित्र भारतरत्न भारत-वासी भारतविजयपालसिंह भारतवीर भारतसपूत भारतसिंह वतनसहाय वतनसिंह सुदेशचंद स्वदेशसिंह हिंदपालसिंह ।

(२) स्वदेशी—स्वदेशीलाल ।

(३) क्रांति—क्रांतिकुमार क्रांतिचंद्र क्रांतिनंदन क्रांतिप्रकाश क्रांतिप्रसाद क्रांतिसेवक क्रांतिस्वरूप ।

(४) अमन—अमनलाल अमनसिंह अमना अम्मन ।

(५) संघ—संघीराम ।

(६) स्वतंत्रता—स्वतंत्रकुमार स्वतंत्रनारायण स्वतंत्रपाल स्वतंत्रानंद स्वाधीनचंद्र ।

---

[१] तेजा—एक वीर राजपूत जिसकी वीरता के विषय में यह दोहा प्रसिद्ध है—
तेजा नेजा सों हत्यौ सब डाकुन सरदार ।
सरपहि जीव चटाइ के गयो स्वर्ग के द्वार ॥

(७) स्वराज्य—स्वराजप्रकाश स्वराजबहादुर स्वराजबाबू स्वराजविहारी स्वराज्यप्रसाद स्वराज्यवीर स्वराज्यानंद।

इतिहास

(अ) पौराणिक काल—अंशुमान अंशुमानसिंह अज अजकुमार अजनाथराय अजराज अजेंद्रपाल असमंजससिंह उत्तम उत्तमचंद उत्तमप्रकाश दिलीप दिलीपकुमार दिलीपचंद दिलीपदत्त दिलीपनारायणसिंह दुष्यंत दुष्यंतकुमार बलिबहादुर बलिराज बलिराजराम बलिराज-सिंह भगीरथ भगीरथप्रसाद भगीरथमल भगीरथराय भगीरथलाल मांधाता मानधाता मानधातासिंह मोरध्वज मोरध्वजसिंह रंतूलाल रघू रघुआ रघुचरनप्रसाद रघुमल रोहिताश्व रोहिताश्वकुमार रोहि-ताश्वनारायण रोहितास शाल्वेंद्रपालसिंह सर्वदमन सर्वदमनसिंह हरिचंद हरिश्चंद्र हरिश्चंद्रदास हरिश्चद्रराम हरिश्चंद्रविहारी हरिश्चंद्रसहाय हरिश्चंद्स्वरूप।

(आ) रामायण काल—अंगद अंगदप्रसाद अंगदसिंह इंद्रजीत इंद्रजीतप्रसाद इंद्रजीतसहाय इंद्रजीतसिंह कुंभकर्ण कुशकात कुशकुमार कुशदेव कुशध्वज कुशनारायण कुशवीरप्रसाद कुशिया चंद्रकेतु चंद्रकेतुनारायणसिंह चंद्रकेतुसिंह जनक जनकदेव जनकदेवसिंह जनकधारीप्रसाद जनक-प्रसाद जनकराज जनकराय जनकलाल जनकसिंह जनकू जामवंत दधिबल दधिबलप्रसाद दधिबलसिंह दशरथ दशरथदास दशरथप्रसाद दशरथमल दशरथसिंह दूतराम बाली बालेराम मिथिलाबिहारी मिथि-लेश मिथिलेशकांत मिथिलेशकिशोर मिथिलेशकुमार मिथिलेशसिंह मिथिलेश्वर मेघनाद रामजनक रामविभीषणसिंह रामसखा रावन रिच्छेश्वरमल रिच्छपालसिंह लंकेश लंकेशसिंह लक्ष्मीनिधि लवकुमार लवकुश लवकुशसिंह लवराजकुमार लवसिंह लवाराम सखाराम सुखेनप्रसाद सुग्रीव सुग्रीवप्रसाद सुग्रीव सिंह सुमंत सुमंतप्रकाश सुमंतप्रसाद सुमतसिंह हरिनाथ हरिराज हरिराजशरण हरिराजसिंह हरिराज-स्वरूप हरीशकुमार हरीशप्रसाद।

(इ) महाभारत काल—अभिमन्यु अभिमन्युकुमार अभिमन्युनाथ अभिमन्युसिंह अर्जुन अर्जुनदत्त अर्जुनदास अर्जुनदेव अर्जुननाथ अर्जुनप्रसाद अर्जुनराम अर्जुनराय अर्जुनलाल अर्जुन-सिंह उग्रसेन उग्रसेनसिंह उत्तराकुमार कंसराज कन्ना कन्नूलाल कन्नोमल करना कर्ण कर्णदेव कर्णपाल कर्णसिंह कर्णप्रसाद कर्णराज कर्णराजसिंह कर्णराम कर्णलाल कर्णवीरसिंह कर्णसिंह कुंतीलाल कुंतीश-नंदनप्रसाद कृष्णा कृष्णादत्त कृष्णानंद कृष्णानंदनाथ कृष्णानंदस्वरूप कृष्णार्जुनसहाय कृष्णाराम गंधारीसिंह चंद्रभान चंद्रभानप्रतापनारायणसिंह चंद्रभानप्रसाद चंद्रभानशरणसिंह चंद्रभानसिंह चंद्रहास चंद्रहासराय चित्रांगद चित्रांगदसिंह जनमेजय जनमेजयसिंह जुरजोधन दुर्योधन दुर्योधन-राम दुश्शासन दूनाराजसिंह देवव्रत द्रौपदप्रसाद धनंजय धनंजयप्रसाद धनंजयप्रसादराम धनंजयप्रसाद-सिंह धर्मध्वज धर्मराज धर्मावतार धर्मेंद्र धृष्टद्युम्न धौकल धौकलसिंह नकुल नकुलदेव नकुलसिंह परीक्षित परीक्षितकुमार परीक्षितनारायण बभ्रुवाहन भिम्मा भीम भीमचंद्र भीमजीत भीमराज भीमराम भीमसिंह भीमसेन भीमा युधिष्ठिर युधिष्ठिरकुमार युधिष्ठिरप्रसाद युधिष्ठिरराम युधिष्ठिरसिंह रुकमसिंह रुक्म रुक्मपालसिंह रुक्मांगदसिंह रेवत रेवतसिंह विचित्रवीर्य वीरअभिमन्यु शिशुपाल शूरसेनसिंह सकनूराम सकने सकुनचंद सकुनराय सखालाल सहदेव सहदेवप्रसाद सहदेवराय सहदेवशरण सहदेव सिंह सुफलकसिंह सुयोधन।

(ई) आधुनिक काल—अकबर अकबरसिंह अजयपाल अजयपालसिंह अजयसिंह अनंग-पाल अनंगपालसिंह अमरसिंह अमरू अमीचंद अमीदास अशोक अशोककुमार अशोकनंदन अशोक-प्रकाश अशोकप्रसाद अशोकवर्धन अहिल्याप्रसाद अहिल्यासिंह कुंभनाथ कुंभाराय कुमारपाल खड्ग-सिंह खुर्रम खुर्रमसिंह गोपीचंद गोरा गोराचांद चंद्रगुप्त चंपतराय चंपतलाल चंपतसिंह चंपा चंपादास चंपाप्रसाद चंपाराम चंपाराय चंपालाल चंपासिंह चंपूराय चित्तू चित्तूराय चित्रकेतुसिंह जयचंद जयचंद-

किशोर जयचंदसिंह जयपाल,जयमल जयमलसिंह,जयसिंह जसवंत जसवंतकुमार जसवंतनारायण जसवंतप्रसाद जसवंतराय जसवंतसिंह जहाँगीर जहाँगीरमल जहाँगीरसिंह जहाँदार जालिमसिंह जुझारसिंह जोधन जोधराज जोधा जोधाप्रसाद जोधाराय जोधासिंह टीपू टोडर टोडरपालसिंह टोडरमल टोडरसिंह टोड़ी टोड़ीलाल टोड़ीसिंह दलीपमल्ल दलीपसिंह दिलसुखराय धानजूराम ध्यानसिंह नंदकुमार नलुआ नवनिहारसिंह नवरत्न नवरत्नकुमार नौरंगमल नौरंगराम नौरंगराय नौरतनसिंह परमालसिंह परमालिक पिरथीसिंह पुष्पजित पुष्पदत्त पुष्पमित्र पुष्यमित्र पृथ्वीचंद पृथ्वीचंददेव पृथ्वीनरेश पृथ्वीनाथ पृथ्वीनारायण पृथ्वीपति पृथ्वीपतिनाथ पृथ्वीपालशरण पृथ्वीपालसिंह पृथ्वीराज पृथ्वीराजसिंह बद्दल बद्दललाल बहादुर बहादुरप्रसाद बहादुरराम बहादुरलाल बहादुरसिंह बाजबहादुरसिंह बाजसिंह बाजी बाजीलाल बादल बादलसिंह बालादित्य बीरबल बीरबलदत्त बीरबलराम बीरबलसिंह बीरम भगमल भम्मालाल भम्मासिंह भारामल भाराराम भावसिंह भोज भोजदत्त भोजराज भोजवीरसिंह भोजामल भोजीसिंह भोजेंद्रप्रतापसिंह मकरंद मलहरसिंह महानंद महानंदलाल महानंदसिंह महासिंह मानचंद मानजीतसिंह मानदेव मानपालसिंह मानबहादुरसिंह मानमल मानशंकर मानसिंह मालचंद मौर्यदत्त यशवंत यशवंतराम यशवंतसिंह रणजीत रणजीतकुमार रणजीतनारायण रणजीतसिंह रणधीरसिंह रणबीरसिंह रतनसिंह राजसिंह राजाभोज रामराय रायसिंह रूपवसंत लखमीचंद विशाल विशालमणि विशालसिंह वीरवृपलसिंह शक्तिसिंह शालिवाहनसिंह संग्रामसिंह समुद्रमल समुद्रसिंह सलेमसिंह सुजान सुजानदत्त सुजानमल सुजानसिंह सुजानी स्कन्दकुमार हमीरमल हमीरसिंह हर्षचंद्र हर्षदेव हर्षदेवनारायण हर्षनारायण हर्षपति हर्षवर्धन हर्षबहादुर हर्षराज हर्षशिलादित्य हिम्मतबहादुर हिम्मतराय हिम्मतसिंह हिम्मा हुलकरसिंह ।

(उ) वैदेशिक—अफलातून नादिर नियादरमल न्यादरसिंह बहराम रुस्तम रुस्तमलाल रुस्तमसिंह लुकमानसिंह सिकंदर सिकंदरलाल सिकंदरसिंह सुलेमान सोहराबसिंह हातिम हातिमसिंह ।

सामाजिक प्रवृत्ति

संस्थाएँ (अ) वर्ण तथा जाति—अंगरेजसिंह अंगरेजीलाल आर्यदत्त ओसवाल खन्ना खन्नासिंह खन्नूमल गुप्तप्रसाद गूजरमल गूजरा गोपी गोपीप्रसाद गोपीमल गोरखाराम घोसी घोसीराम चमरू चौबेराम चौबेसिंह जदुप्रसाद जद्दू डोमन डोमनसिंह डोमरसिंह डोमा डोमाराम तेलहीप्रसाद तेलूराम थवई द्विजराज धूसर नरदेव नरदेवसिंह पंडासिंह फिरंगी फिरंगीराय फिरंगीलाल फिरंगीसिंह बंगाली बंगालीदास बंगालीप्रसाद बंगालीराय बंगालीलाल बुंदेला बैसबहादुर बैसी भीलचंद भुस्सूराय भूदेव भूदेवप्रसाद भूदेवलाल भूसुर भोटीराय मल मलईसिंह मलना माथुर मालीराम मावलीप्रसाद मुकरजी मुदई मोदी मोदीलाल राजपूतलाल लखरू लोदी लोहारी हिन्दू।

(आ) कुल तथा वंश—कुलवंत कुलवंतनारायण कुलवंतप्रसाद कुलवंतराय कुलवंतलाल कुलवंतसहाय कुलवंतसिंह कुल्लूराय वंशकुमार वंशनारायण वंशनारायणप्रसाद वंशरूप ।

(इ) प्रथा तथा संस्कार—जौहर जौहरसिंह रीतिराम शादीराम शादीलाल स्वयंबरदत्त स्वयंवरनाथ स्वयंवरलाल स्वयंवरसिंह ।

(ई) उत्सव-मेला—उत्सवलाल उत्सवसिंह जुबलीसिंह तौहारीराय दियालीराय मेलाराम रक्खासिंह विजयाप्रसाद होरीलाल ।

अद्यधारा निराधारा निरालम्बा च सरस्वती
पंडिता खंडिता सर्वे भोज राजा दिवंगते
(कालिदास)

२ शिष्ट प्रयोग (अ) अभिवादन—जयकिशोर जयकृष्ण जयकृष्णदास जयकृष्ण-नारायण जयकृष्णनारायणबहादुर जयकृष्णलाल जयगणेशप्रसाद जयगोपाल जयगोविंद जयगोविंदसहाय जयजगदीश जयदयाल जयनंद जयनंदनप्रकाश जयनंदनप्रसाद जयनंदनलाल जयनारायण जय-नारायणदेव जयनारायणसिंह जयप्रकाशनारायण जयप्रभुनंदन जयभगवान जयभगवानस्वरूप जयमुरारी-लाल जयराजविहारीलाल जयराम जयरामदत्त जयरामदास जयरामप्रसाद जयविहारी जयविहारीलाल जयवीर जयशंकर जयशंकरप्रसाद जयशिव जयश्रीकिशनभगवान जयश्रीदेव जयश्रीनाथ जयश्रीप्रसाद जय-श्रीराम जयश्रीलाल जयश्रीसिंह जयहिन्द जुहारदत्त जुहारमल जैजैराम जैजैरामकिशोर जैजैरामराय जैजै-लाल जैजैसिंह जैजोति जैविशुनलाल जैवेनी नमोनारायण नमोनारायणराय रामराम हरेकृष्ण हरेराज हरेराम ।

(आ) आशीर्वाद तथा बधाई—अजरैलदास अमरतू अमृतबहादुर अमृतलाल आनंदमंगल आशीर्वाद आशीर्वादी आशीर्वादीलाल आशीर्वादीसिंह उद्धरनसिंह उमरचंद उमरसिंह उमराखी कलि-यान कलियानराय कलियानसिंह कल्याण कल्याणकुमार कल्याणचंद्र कल्याणदत्त कल्याणदास कल्याणप्रसाद कल्याणबक्स कल्याणमल कल्याणलाल कल्याणसहाय कुशल कुशलकुमार कुशलचंद्र कुशलपाल कुशलपालसिंह कुशलमणि कुशलानंद खुमान खुमानशंकर खुमानसिंह खुमानी खुमानी-लाल खुमानीसिंह चिरंजीलाल चिरंजीवनारायण चिरंजीवप्रसाद चिरंजीवलाल चिरंजीवी चिरंजीवीलाल चैनसुख चैनसुखदास जई जयदत्त जयमंगल जयमंगलप्रसाद जयलालबहादुर जयलाल जयलालसिंह जयविभव जयवीर जयवीरकुमार जयवीरबहादुर जयशील जयसुख जयानंद जिदालाल जिआनंद जिआ लाल जीआ जीवनलाल जीसुख जीसुखराम तालेवर तालेवरसिंह तेजस्वीप्रसाद धन्यकुमार बरकतराम बरकतसिंह मुवारिकसिंह राजमंगल राजमंगलनाथ राजमंगलप्रसाद राजमंगलराय राजमंगलसिंह रोशन-मल रोशनलाल रोशनसिंह रोहनप्रसादसिंह विजय विजयप्रतापसिंह वृद्धिचंद्र वृद्धिनारायण वृद्धिशंकर शुभघनसिंह शुभलाल सजीवनराम सजीवनलाल सजीवनसहाय सतजीवनप्रसाद सतमंगलसिंह सदाजीवन-लाल सरजीवनलाल सलामतसिंह सुखमंगलसिंह सुखानंद सुफलदास सुफलराम सुभाग सुभागचंद्र सुभागमल ।

(इ) शिष्ट सम्बोधन—गुरुदेव गुरुदेवनारायण गुरुदेवप्रपन्न गुरुदेवप्रसाद गुरुदेवराय गुरुदेवसिंह धर्मावतार प्राणजीवन प्राणनाथ प्राणपति प्राणवल्लभ प्राणेश्वरनाथ बड़ेबाबू बड़ेलल्ला बड़ेलाला बबुनीनारायण बबुनीनारायणपति बबुनीनारायणसिंह बापूमल बापूलाल बाबू बाबूजी बाबूदयाल बाबूनंद बाबूनंदन बाबूनंदनप्रसाद बाबूनंदनराय बाबूनंदनलाल बाबूनंदनसिंह बाबू मणि बाबूराम बाबूलाल बाबूशंकर बाबूश्याम बाबूसिंह महाराज महाशय लाला लालाबाबू लालाराय लालासिंह श्रीपद श्रीमंत श्रीमत् श्रीमहाराज श्रीमान श्रीमानसिंह श्रीवंतसिंह साहब-सिंह हजूरसिंह हृदयनंदन हृदयनाथ हृदयनारायण हृदयप्रकाश हृदयमोहन हृदयराम हृदयस्वरूप हृदयानंद हृदयेश हृदयेशचंद्र हृदेशनारायण हृदेश्वर ।

३—आजीविका वृत्ति (अ) बुद्धिजीवी, व्यवसायी तथा श्रमजीवी—उद्यमपति किंकरपालसिंह किंकरसिंह जंगी जंगीप्रसादसिंह जंगीमल जंगीराम जंगीलाल जंगीसिंह जंगूसिंह जौहरिया जौहरी जौहरीमल जौहरीलाल डाक्टरसाहब तिलंगीराम दलालसिंह दस्सू दासूसिंह दूतराम बसीठनसिंह बालिस्टर बैरिस्टर बैरिस्टरसिंह बौपारी भंडारी महाजन महाजनलाल मुखतारबक्ससिंह मुखतारराम मुखतारसिंह योधालाल वकील वकीलमल वकीललाल वैद्यपाल सईसलाल सवारू साहूकार सेवक सेवक-राम सौदागर सौदागरमल सौदागरराम सौदागरराय सौदागरसिंह हकीम ।

(आ) राजकर्मचारी—अमलदारसिंह अमीनचंद्र अमीनलाल अमीनसिंह इसपेक्टर इंसपेक्टरसिंह इलाकेदार कंपोंडरसिंह कर्नैलसिंह कप्तान कप्तानशाह कप्तानसिंह कर्नलसिंह कलक्टर कोतवाल कोतवालसिंह खजांचीलाल चौधरिया चौधरी चौधरीराम जर्नैलसिंह जमादार जमादारसिंह जिलेदारसिंह टिकैतनारायण डिप्टीलाल डिप्टीशंकर डिप्टीसिंह डिप्टीस्वरूप थानेदारसिंह दफेदार दफेदारसिंह दरपाल दरवानसिंह दरोगासिंह दलपति दलपतिसिंह दलमीरसिंह दलेंद्र दीवानचंद दीवानराम दीवानसहाय दीवानसिंह दीवानी दीवानीलाल दुर्गपाल नंबरदार नाजिरलाल नायकराम नायकसिंह नायवसिंह निरीक्षणपति पहरनाथ फज्जे फौजदारराम फौजदारसिंह बक्सीराम बक्सीलाल भंडारी मंत्रीदास मास्टर मीरचंद मंगरमुंशी मुंशीलाल मुंशीसिंह मुंसिफसिंह मुखिया मुसद्दीराम मुसद्दीलाल मेजरसिंह बजीरचंद बजीरदयाल सरिस्तेदार सरिस्तेलाल सिकन्दर सिकदारसिंह सिपाहीलाल सुपरींडैंट सूबेदार सूबेदारसिंह सूबेसिंह सेनपालसिंह सेनापति हवलदार हवलदारप्रसाद हवलदारसिंह हाकिम हाकिमचंद हाकिमलाल हाकिमसिंह हाकिमहुकुम ।

४—स्मारक (अ) देश—अंबरजीत अंबरदयाल अंबरनाथ अंबरप्रसाद अंबरलाल अंबरसहाय अंबरसिंह अजमेरसिंह अजमेरी अमरावतीप्रसाद अमरीकाप्रसाद अलवरसिंह ईंदरसिंह कनौजी कन्नौजीलाल कलकत्तासिंह कलकत्ती कश्मीरबहादुर कश्मीरसिंह कश्मीरीलाल कालपी काश्मीरचंद्र खंधारीसिंह गुजरातसिंह गुजरातीलाल चनारदेव चनारराम जंबूदास जंबूप्रसाद जंबूसिंह झारखंडीप्रसाद झारखंडेसिंह डिल्लीराम डिल्लीसिंह दिल्लीपति दिल्लीरमण दिल्लीलाल दिल्लू नैपाल नैपालचंद नैपालसिंह पंजाबसिंह पंजाबीलाल पेशावरसिंह पेशावरीलाल बंगराम बगामल बंगाली बंगालीदास बंगालीप्रसाद बंगालीभूषण बंगालीराम बंगालीलाल बक्सर बनारस बनारसराय बनारससिंह बनारसीदास बनारसीप्रसाद बनारसीराम बनारसीलाल बलिया भूटानसिंह मंद्राज मघहरसिंह महबासिंह माडूलाल मांडूसिंह मारूसिंह मालचंद मुलतानसिंह मोरंग रैवारी लाहौरी लाहौरीप्रसाद लाहौरीमल लाहौरीलाल लाहौरीसिंह शांतिनिकेतन शिमलानंदनप्रसाद सांची ।

(आ) काल—इतवार इतवारी इतवारीलाल इतवारसिंह कार्त्तिकचंद कार्त्तिकप्रसाद कार्त्तिकीप्रसाद कोजीलाल गुरुआ गुरुवारी चितई चितईसिंह चितानी चेतनाथ चेतनारायण चेतनारायणलाल चेतनारायणसिंह चेतराम चेतरामसिंह चेतसिंह चेना चैतवा चैतवार चैतू चैत्र छप्पनलाल जड़ाऊलाल जुम्मासिंह जेठमल जेठवा जेठानंद[1] जेठामल जेठाराम जेठालाल जेठू जेठूप्रसाद जेठूमल जेठूलाल ज्येष्ठमल तायन थावरचंद नौम्बरसिंह नौअगस्त पूसा पूसाराम पूसासिंह पूसी पूसीराम पूसूलाल पूसेलाल पोकेसिंह पोखई पोखदयाल पोखपाल पोसन पोसीराम पोसू फाल्गुन बरखागिरि बरसाती बरसातीराम बरसातीलाल बरसातीसिंह बसंत[2] बसंतकिशोर बसंतकुमार बसंतकृष्ण बसंतनारायण बसंतबहादुर बसंतराम बसंतराय बसंतलाल बसंतवल्लभ बसंतविनोद बसंतविहारी बसंतसिंह बसंता बसंतीलाल बुद्धन बुद्धनराम बुद्धनराय बुद्धनलाल बुद्ध बुद्धामल बुद्धासिंह बुद्धू बुद्धूराम बुद्धूलाल बुद्धूसिंह बुधई बुधईराम बुधईलाल बुधनाथ बुधनारायण बुधपालसिंह बुधमल बुधराज बुधराम बुधलाल बुधसिंह बुधुआ बुधैराजसिंह बैसाखू भदई भदईराम भदैयां भदोले भदौआ भादोंदास मंगर मंगरी मंगरू मंगरूप्रसादसिंह

---

[1] सिक्खों के गुरु रामदास का नामान्तर जेठा ।

[2] आम्रीमंजुलमंजरीवरशरः सत्किंशुकं यद्धनु-
ज्यां यस्यालिकुलं कलङ्करहितं छत्रं सितांशुः सितम् ।
मत्तेभो मलयानिलः परभृतो यद्बन्दिनोलोकजि-
त्सोऽयं वो वितरीतरीतु वितनुर्भद्रं वसन्तान्वितः ॥ (ऋतुसंहार ६-२८)

मंगरूराम मंगरूसिंह मंगरे मंगल मंगलकिशोर मंगलचंद मगलदत्त मंगलदयालसिंह मंगलदास मंगलदेव मंगलदेवप्रसाद मंगलनाथराय मंगलप्रसाद मंगलबहादुरसिंह मगलविहारी मंगलसिंह मंगलसेन मंगल-स्वरूप मंगला मंगलिया मंगली मंगलीप्रसाद मंगलू मघई मघईमल मघराज मघानासिंह माघीराय बृहस्पति शनिकुमार शनिलाल शरच्चंद्र शरतकुमार[1] शिशिरकुमार शिशिरचंद शुक्रराज शुक्रलाल शुक्लू शुक्लूलाल श्यामकान्तिकलाल समारू सावन सावनमल सावनसिंह सावनिया सुकई सुकरू सुकरूराम सुकरूराय सुक्करमल सुमरियादीन सुमारू सुमारूलाल सुमिरा सुमेर सुमेरचंद सुमेरपाल सुमेरबक्स सुमेरराय सुमेरसिंह सुमेर सुमेरीलाल सुम्मारी सुम्मारीलाल सोमारूसिंह सोमवारलाल सोमवारी हेमंत हेमंतकुमार हेमंतराय।

५—भोग पदार्थ (अ) फल-मेवा—अंगूरसिंह अंगूरीलाल अनारसिंह अनारसी केरा केराप्रसाद केलासिंह कैथाराम खिन्नीमल खिन्नीलाल खीरासिंह खीरूसिंह जंबूदास जंबूप्रसाद जंबूसिंह जमीरीलाल बादामसिंह मुनक्काराम मेवा मेवादीन मेवाराम मेवालाल मेवालालप्रसाद शरीफाराम सपड़ी सपरू।

(आ) मिठाई आदि खाद्य पदार्थ—इमरतीप्रसाद इमरतीलाल खजला खुर्चन खुर्चनराम गुलगुल घेवरचंद चमचमजी चिन्नीसहाय चिन्नू चीनीप्रसाद चीनीलाल दधिराम दुधई दुधईसिंह दूध-सिंह दूधी नवनीतिदास नीनू पकौड़ी पेड़ीराम बतासू बरफू बेसनराम बेसनलाल मक्खन मक्खनसिंह मक्खनू मक्खी मक्खूराम मखना मखन्नू मठरासिंह मठरू माखन मावाप्रसाद मावासिंह मिठाईराम मिठाईलाल मिठाईशंकर मिठौन मिश्रीदीन मिश्रीप्रसाद मिश्रीमल मिश्रीराम मिश्रीलाल मिश्रीसिंह मिसि-रिया मिसिरी मीठालाल लुचई लोनीराम सिमईराम सिमईसिंह।

(इ) औषध—ईंगुर कपूरचंद कपूरसिंह कपूरीलाल कर्पूरचंद्र कस्तूरचंद्र कस्तूरमल कस्तूरी कस्तूरीमल कस्तूरीलाल कुंकुमसिंह केशरचंद्र केशरदेव केशरनाथ केशरराम केशरसिंह गुलकंद गुलाल चूरनसिंह चूर्णसिंह दवालाल दवाईलाल दारू धनिया फीमचंद फुलेलसिंह भेषजदत्त महकसिंह मिर्चा मिर्चामल मिर्चासिंह मेंहदी मेंहदीलाल मेंहदीसिंह मोमराज हरिचंदन हिंगनलाल हिंगालाल हिंगूसिंह।

(ई) द्रव्य-विशेष—इत्रसिंह कमोरामल कलमसिंह किताबसिंह गंगाजलीप्रसाद गुंजीलाल टिकटनारायण दुरबीनसिंह पोथीराम बटनलाल मशाल मशालसिंह लोहाराम हंडुल।

६—कलात्मक (अ) वस्त्र—अंडीराम खासेराम खासेसिंह गंछीराय चोगालाल जाली जालीचरण झंगूसिंह झगईसिंह झगाराम झग्गनसिंह झग्गा झलरू झल्लर झिलमिलराम झिलमिलसिंह दूला टोपीलाल तनसुख तनसुखराय तनसुखलाल मकतूलसिंह मखमलसिंह मेखरीलाल रेशमपाल रेशम-लाल रेशमसिंह।

(आ) रत्नाभूषण—आरसीप्रसाद इंद्रमणि कंठाप्रसाद कंठीमल कड़ा कड़ेदीन गुच्छकप्रसाद गुच्छन गोमिद चीजसिंह चुटकई चुन्नाप्रसाद चुन्नामल चुन्नाराम चुन्नालाल चुन्नासिंह चुन्नी चुन्नीनाथ चुन्नीलाल चुन्नूराय चुरई चुराऊ चुर्रु चूड़लसहाय चूड़ा चूड़ामणि चूरामन चूरामनसिंह चूरामल चैकराम छगलराम छप्पनलाल छप्पनसिंह छप्पू छप्पूसिंह छल्लन छल्लूसिंह जौहरसिंह झांझनराम

---

[1] शरदि कुमुदसङ्गाद्वायवो वान्ति शीता
विगतजलदवृन्दा दिग्विभागा मनोज्ञा
विगतकलुषमम्भः श्यानपङ्का धरित्री
विमल किरण चन्द्रं व्योम ताराविचित्रम्। (ऋतुसंहार ३-२२)

झांझनलाल झाम झामरसिंह झामसिंह झामासिंह झुमकनलाल झुमरावराम झुल्लरसिंह झुल्ली झूमकलाल झूमकसिंह झूमरमल झूलर टिकई टिकुआ टिकोरीसिंह टिकोली टिक्कन टिक्कूलाल टीकमचंद टीकमराम टीकमराय टीकमसहाय टीकमसिंह टीकाप्रसाद टीकाराम टीकालाल टीकासिंह तिहुलीराम तुरी तुरंनसिंह तुर्सनपालसिंह तुशनपाल तेगड़ीसिंह तेहर तोड़ेलाल दूधमणि नगऊ नगीना नगीनाराम नगीनाराय नगीनासिंह नगेला नगेसिंह नत्था नत्थाराम नत्थासिंह नत्थीमल नत्थीसिंह नत्थूबक्स नत्थूराम नत्थूलाल नत्थूसिंह नत्थीला नथई नथईनाथ नथमल नथवा नथाराम नथुआ नथुनप्रसाद नथुनी नथुनीचंद नथुनीनंदन नथुनीप्रसाद नथुनीराय नथुनीसिंह नथोला नथोलिया नवरत्न नवरत्नकुमार नवलखाप्रसाद नाथूराम नाथूलाल नीलमणि नीलमसिंह नीलरत्न नूपुरदयाल नेउर नेउरलाल नौरतनकुमार नौरतनसिंह नौलखा पटरू पन्ना पन्नानंद पन्नाराम पन्नालाल पन्नासिंह पन्नीलाल पन्नू पलकदेव पलकधारी पलकधारीसिंह पलकन पलकू पलकूराम पहुँचीलाल पारसमणि पुखराज पुरई पुलई पुल्लूलाल पेचूराम पोला पोलादीन पोल्हनराम प्रशस्तमणि फुंदन फुंदनलाल फुंदनसिंह फुंदी फुंदीलाल फुन्नन फुन्ननलाल फुन्नीलाल फूलगिरि फूलचंद फूलसिंह फूला फूलूसिंह बदी बारीदत्त बारीराम बारूलाल बारूसिंह बाली बाले बालेराम बालेसिंह बिंदूसिंह बीरा बीरिया बीरीसिंह बीरूमल बीरूलाल बुंदन बुलाकराय बुलाकी बुलाकीदास बुलाकीराम बुलाकीलाल बुल्लनसिंह बुल्ला बुल्लूप्रसाद बुल्लूसिंह बुल्लोराम बूँदी बूँदीराम बूँदीसिंह बूलचंद बोरीनाथ बोरीसिंह बोरे बोला भूकनलाल भूगल भूषण मनिप्रसाद मनिका मनियाँ मनिराम मनीलाल माणिकचंद माणिक्यचंद मानिक मानिकराज मानिकलाल मानिकसिंह मुंदर मुंदरराम मुकुटचंद मुकुटमणि मुकुटसिंह मुक्ताप्रसाद मुक्तामणि मुक्तालसिंह मुक्तावनदास मुक्ताशाह मुद्रिकाबक्स मुद्रिकाराय मुद्रिकासिंह मुरकीसिंह मूंगा मूंगामल मूंगाराम मूंगालाल मूंगासिंह मूंगीलाल मोगासिंह मोता मोती मोतीकांत मोतीचंद मोतीप्रसाद मोतीबाबू मोतीराम मोतीलाल मोतीसिंह मौरीलाल रतना रत्नकिशोर रत्नकुमार रत्नचंद रत्नज्योति रत्नपालसिंह रत्नप्रकाश रत्नमणि[1] रत्नलाल रत्नस्वरूप रामनामाप्रसाद लाल लालचूड़ामनशाह लुरदेव लूरीसिंह लौंगीराय शेखरचंद शेखरदत्त शेखरशरण शेखरानंद हमेलसिंह हमेलासिंह हिरैया हीरा हीरादत्त हीराप्रकाश हीराप्रसाद हीरामणि हीरालाल।

(इ) प्रसाधन-साधन (फूल)—इंदीवर कँवलदीप कंवल्लू कदंवलाल कदमलाल कदमसिंह कमल कमलकृष्ण कमलचंद कमलफल कमलसिंह कमोद कमोदसिंह कुमुदप्रसाद कुमुदू कुवलयानंद गुलाब गुलाबचंद गुलाबचंदलाल गुलाबदत्त गुलाबदास गुलाबधर गुलाबनारायण गुलाबप्रसाद गुलाबरत्न गुलाबराम गुलाबराय गुलाबशंकर गुलाबशंकरलाल गुलाबसिंह गेंदल गेंदन गेंदनदास गेंदनलाल गेंदामल गेंदाराय गेंदालाल गेंदासिंह चंपकलाल चंपा चंपादास चंपाप्रसाद चंपाराम चंपाराय चंपालाल चंपासिंह चंपूराम चमेलासिंह चमेलीप्रसाद पदनू पदमू पदुआ पदुमशंकर पदोईसिंह पद्दन पद्द पद्मचंद पद्मप्रसाद पद्मबहादुर पद्मसिंह सेवतीप्रसाद सेवतीलाल हरिचंपाराम।

(ई) आयुध—असिकांत खंगनाथ खंगसिंह खंगा खड्गे खरगा खरगाई खरगी खरगूदास चंद्रहास चंद्रहासराय चोबसिंह टेंगारीराम ढालसिंह ढुल्ली त्रिशूल धनुआ धनुकप्रसाद धनुकराम भालादीन भालासिंह सांगीदास।

---

[1] लक्ष्मीकौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमा ।
गावः कामदुधाः सुरेश्वरगजो रम्भादिदेवाङ्गना ॥
अश्वः सप्तमुखः सुधा हरिधनुः शङ्खो विषं चाम्बुधेः ।
रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥

(उ) वाद्ययंत्र—चिकाड़ा चेगाड़ाप्रसाद झलई झल्लू झालीलाल डंवरलाल डंवरसिंह डंबरा डंबल डमरू डमरूलाल ढक्कनलाल ढक्कूराम ढगाप्रसाद ढुरई ढुल्ली तंत्री तुनतुनसिंह तुनतुनिया तुन्नू तुमरी निशानसिंह नौबतदयाल नौबतराम नौबतराय नौबतलाल नौबतसिंह बंशूसिंह बजऊसिंह बाँसुरी बाजाराय बाजेसिंह बीनसिंह बीना मंजीराराम मंजीरालाल मुरलिया मुरली मुरलीदास मुरलीसिंह वंशीप्रसाद वंशीसिंह सरंगी ।

(ऊ) ललित-कला—(१) वास्तु कला—जगनिवास जगमंदर मंडलसिंह मंडिल मंदिरराम ।

(२) तक्षण-कला—मूरति मूरतिप्रसाद मूरतिराम मूर्ति मूर्तिकिशोर मूर्तिनारायण मूर्तिलाल ।

(३) चित्र-कला—चित्तर चित्तरसिंह चित्रकृष्ण चित्रगोपाल चित्रदत्त चित्रपाल चित्रपालसिंह चित्रमणि चित्रशरण चित्रूराय ।

(४) रागरागिनी—कल्याण गौरी झूमर टप्पा टोड़ी टोड़ीलाल टोड़ीसिंह देवकलीदीन देवकलीप्रसाद देवकलीसिंह देवकलीस्वरूप ध्रुव पूर्वी बागेसरी भैरव भैरवी वसन्त श्री ।

७—समाज सुधार (अ) अछूत—अछूतानंद महाशय हरिजन हरिजनसिंह ।

(आ) गोरक्षा—गोरक्षपालसिंह ।

(इ) शुद्धि—शुद्धिप्रकाश शुद्धिराम शुद्धू शुद्धूप्रसाद शुद्धूराय शुद्धूलाल ।

१—दुलार—अच्छेलाल आत्मानंद आत्माराम कक्कू कीरेंद्रसिंह कीरेचंद कीरेसिंह कुँअर कुँअरजी कुँअरजीलाल कुँवरलाल खिलावन खुनखुन खुनखुनराम खोखा खुखई गुड्डूप्रसाद गुड्डेसिंह गुलगुल गुलाबचंद चंदालाल चमचमजी चिगनू चिगुड़ चिरई चुनचुनसिंह चुनमुन चुनमुनलाल चुनमुनसिंह चेंघूसिंह छगन छगनमन छगनराम छगनलाल छगनसिंह छग्गा छब्बालाल छब्बूसिंह छुन्नालाल छुन्नुनराम छुन्नू छुन्नूलाल झुनझुनलाल तोताकुमार तोताकृष्ण तोतानाथ तोताराम तोतासिंह तोती तोफामल तोफीराम ददई ददनराम ददनी दद्दनराय दद्दनलाल दद्दी दद्दूराम दुलवारी दुलारलाल दुलारे दुलारेलाल दुलारेसहाय दुलारेसिंह दुलिया दुलीचंद दुलीराम दुलुआ दुलेराम दुलेसिंह दुल्ला दुल्लासिंह दुल्ली दुल्लेराम दुहितानंद दूलचंद दूलचंदराय नवजादिकलाल नाती नौनिहाल नौनिहालसिंह पंछी पंछीलाल पंतू पंते पटरु पटे पट्टूराम पट्टूमल पट्टेसिंह परमहंस पुतन्नीलाल पुत्तनलाल पुत्ती पुत्तीलाल पुत्तूलाल पुत्तूसिंह पोतनसिंह प्यारचंद प्यारेलाल फरजंदराय बचई बचऊ बचनसिंह बचनू बचन्नूराम बचाऊ बचीराम बचुलीसिंह बचुल्ली बचुल्लीराम बच्चन बच्चनजी बच्चनदास बच्चनराय बच्चनसिंह बच्चा बच्चाजीराय बच्चादीन बच्चाबाबू बच्चाराम बच्चालाल बच्चासाहेब बच्चासिंह बच्चूसिंह बच्चेनारायणसिंह बच्चेलाल बटुआ बट्टनलाल बट्टा बट्टीलाल बट्टूमल बट्टूलाल बट्टूसिंह बबुआ बबुआप्रसाद बबुआराय बबुआसिंह बबई बबऊराय बबनविहारीलाल बबुनीनारायण बबुनीनारायणपति बबुनीनारायणसिंह बब्बन बबब्नजी बब्बनपति बब्बनप्रसाद बब्बनराम बब्बनलाल बब्बू बब्बूदास बाबुलीराय बालक बालकदास बालकसिंह बालदत्त बालप्रकाश बालबचनलाल बालरूप बालरूपसिंह बालस्वरूप बिटनलाल बिड्डकनराम बिटुन्ना बिट्टनलाल बुटईराम बुट्टन बुट्टी बेटालाल भइआ भउआ भाईजीलाल भाईनरायन भाईलाल भाईशंकर भाईसिंह भाऊ भाऊनाथ भाऊलाल भाऊसिंह भैयाजी भैयाजीदीन भैयाप्रसाद भैयाबक्ससिंह भैयाराम भैयालाल मिठन मिठनलाल मिठनसिंह मिठ्ठू मिठ्ठूप्रसाद मिठ्ठूराम मिठ्ठूलाल मिठाईराम मिठाईलाल मिठाईशंकर मिठौन मिन्नी मिसिरिया मीठालाल मुनियाप्रसाद मुनियासिंह मुनुआ मुन्ना मुन्नाराम मुन्नालाल मुन्नासिंह मुन्नी मुन्नीराम मुन्नीलाल मुन्नू मुन्नूप्रसाद मुन्नूलाल मोतीलाल रतनलाल राजदुलारे राजहंस राजाबाबू लड़ेतीलाल ललई ललईराम ललन-

कुमार ललनजी ललैयन लल्लन लल्लनप्रसाद लल्लनलाल लल्लानाथ लल्लामल लल्लाराय लल्लासिंह लल्ली लल्लीप्रसाद लल्लीराम लल्लू लल्लूप्रसाद लल्लूमल लल्लूराजा लल्लूराम लाडूराम लालबच्चाराय लालबच्चासिंह लालमन लालहंस लालू लालूसिंह शिशुचंद साहबजादा साहबजादाप्रसाद सुंदरलाल सुन्नाराम सुन्नालाल सुगईराम सुगनचंद सुग्गनलाल सुग्गा सुग्गासिंह सुबच्चनलाल सुबनराम सुबनूराय सोहन सोहनपाल सोहनलाल सोहनसिंह सोहनस्वरूप हंसस्वरूप हबीबराय हीरामणि हीरामन हीरालाल होरिलप्रसाद।

२—उपाधियाँ (अ) वीरता—अंबरजीत अंबरसिंह अख्तियारसिंह अगरनीसिंह अग्रबहादुरसिंह अजय अजयदेव अजयबहादुर अजयसिंह अजयस्वरूप अजयेंद्रपालसिंह अजीतसिंह अतिबलसिंह अनीबहादुर अभिराजसिंह आदिवीरसिंह आर्यवीर आलमसिंह उत्तमसिंह उद्भिदसिंह कटकबहादुरसिंह कटारसिंह केशरीमर्दनसिंह खंधारीसिंह खड्गसिंह खरगजीतसिंह खरगबहादुर खलकसिंह चमूसिंह जंगजीत जंगजीतसिंह जंगबहादुर जंगबहादुरलाल जंगबहादुरसिंह जंगविजयसिंह जंगवीरसिंह जंगशेरबहादुरसिंह जगजीत जगजीतचंद जगजीतनलाल जगजीतनारायण जगजीतप्रसाद जगजीतबहादुर जगजीतसिंह जगतवीरसिंह जगतसिंह जगवीर जगवीरप्रसाद जगवीरसिंह जगसिंह जन्येसिंह जयकृतसिंह जहानसिंह जैत जैतबहादुरसिंह जैतू तेजवीरसिंह तेजसिंह दलगजनप्रसाद दलगंजनसिंह दलजीतसिंह दलथम्मन दलथम्मनसिंह दलमर्दनसिंह दलविजयबहादुरसिंह दलवीरसिंह दलश्रृंगार दलसिंगारसिंह दलसिंह दवनसिंह दावासिंह दिग्विजयनाथ दिग्विजयभास्कर दिग्विजयसिंह दिलबहादुरसिंह दिलावरसिंह दुनियासिंह दुनीसिंह दुन्नूसिंह दुर्गविजयसिंह दुर्गसिंह दुर्जयसिंह दुर्जेद्रनाथ दुर्जेंद्रप्रताप दुर्विजय दुर्विजयनारायण दुर्विजयसिंह द्वन्दबहादुरसिंह द्वन्दराजसिंह धनुर्धर धनुर्धराचार्य धनुषधर धनुषधारीसिंह नरबहादुरसिंह नरवीरसिंह निर्भयसिंह पंजाबसिंह पन्नासिंह प्रचण्डवीरसिंह प्रसिद्धसिंह फौजराम फौजूसिंह बंगबहादुरसिंह बंबबहादुरसिंह बलधारीसिंह बलबहादुर बलवंतबहादुर बलवंतराय बलवंतसिंह भवसागरसिंह भारतसिंह भालसिंह भुजबल भुजबलसिंह भुजवीरसिंह भुजेंद्रपालसिंह भूदलसिंह मदगंजनप्रसाद मदगंजनसिंह मल मलईसिंह मल्ला मल्लू महारथी महासिंह युद्धराजसिंह युद्धवीर युद्धवीरसिंह रणंजयप्रतापसिंह रणंजयसिंह रणकर्कशसिंह रणजोरसिंह रणधीर रणधीरनारायण रणधीरप्रसाद रणधीरप्रसादलाल रणधीरबहादुर रणपति रणबहादुरसिंह रणबाजसिंह रणभद्रसिंह रणमत्तसिंह रणविजयकुमार रणविजयबहादुरसिंह रणविजयसिंह रणवीर रणवीरचंद रणवीरदेव रणवीरप्रसादसिंह रणवीरबहादुरसिंह रणवीरविजयसिंह रणवीरविहारी रणवीरसिंह रणसिंह रसालसिंह लशकरीसिंह लालशत्रुजीतबहादुरपालसिंह विजयप्रकाश विजयबहादुर विजयबहादुरराय विजयबहादुरसिंह विजयवीरसिंह विजयमूर्ति विजयस्वरूप विजयी विजयेंद्रजीत विश्ववीर वीरपालसिंह वीरबंधु वीरबहादुरसिंह वीरभंजन वीरमणि वीरमणिप्रसाद वीरव्रत वीरशमशेरसिंह वीरसिंह वीरसेन वीरेंद्र वीरेंद्रकिशोर वीरेंद्रकुमार वीरेंद्रचंद वीरेंद्रदत्त वीरेंद्रनाथ वीरेंद्रनारायण वीरेंद्रपालसिंह वीरेंद्रप्रकाशसिंह वीरेंद्रप्रताप वीरेंद्रप्रतापनारायण वीरेंद्रप्रतापबहादुरसिंह वीरेंद्रप्रसाद वीरेंद्रबहादुरसिंह वीरेंद्रभानुसिंह वीरेंद्रविक्रमसिंह वीरेंद्रविहारी वीरेंद्रवीरसिंह वीरेंद्रशंकर वीरेंद्रशरण वीरेंद्रसहाय वीरेंद्रसिंह वीरेंद्रस्वरूप शत्रुसिंह शमशेरजंग शमशेरजंगबहादुर शमशेरबहादुर शार्दूलराज शूरवीरसिंह शूरसिंह शेरपालसिंह शेरबहादुर शेरसिंह संसारसिंह सत्यपृथ्वीसिंह समरजीतसिंह समरपालसिंह समरबहादुर समरबहादुरसिंह समरसिंह समरेंद्र समरेंद्रनाथसिंह समरेंद्रनारायणसिनहा सर्वजीतसिंह सामंत सारजीतसिंह सावंता सिरताजजंगबहादुर सिरताजजंगबहादुरसिंह सिरताजबहादुर सेनबहादुरसिंह सेनसिंह हस्तबहादुर हस्तमल।

(आ) धन—अमीरचंद अमीरबहादुर अमीरराय अमीरसहाय अमीरसिंह अमीरीलाल अमीरीसिंह उमराय उमरायलाल उमरायसिंह उमरावचंद करोड़पति करोड़ी करोड़ीप्रसाद करोड़ीमल

करोड़ीलाल करोड़ीसिंह जगतसेठ जगतसेठराय धनवीरप्रसाद लक्खी लक्खीमल लक्खीराम लक्खीसिंह लक्खू लक्खूराय लक्खूलाल लक्षपति लक्षपतिलाल लक्षरायसिंह लक्ष्मीसागर लखईसिंह लखटकिया लखपति लखपतिराय लखपतिसिंह लखमीरसिंह लखरू लखियालाल लखी लखीचंद लखीराम लखेश्वर श्रीसागर श्रेष्ठमणि श्रेष्ठीलाल साहु साहूकार सेठ सेठमल सेठू हजारी हजारीचंद हजारीप्रसाद हजारीमल हजारीलाल हजारीसिंह।

(इ) विद्या—अलूमसिंह आचारीप्रसाद आचार्य आलिम इलमचंद इलाचंद कवींद्र कवींद्रकुमार कवींद्रनाथ कवींद्रनारायण कवींद्रविक्रम कवींद्रशेखर ज्ञानचंद ज्ञानदेव ज्ञानधर ज्ञाननाथ ज्ञानप्रकाश ज्ञानभानु ज्ञानभूषण ज्ञानसागर ज्ञानसिंह ज्ञानानंद ज्ञानेंद्र ज्ञानेंद्रकुमार ज्ञानेंद्रदत्त ज्ञानेंद्रदेव ज्ञानेंद्रप्रकाश ज्ञानेंद्रप्रताप ज्ञानेंद्रबहादुर ज्योतिषभूषण तीव्रमेध त्रिवेदीदत्त त्रिवेदीप्रसाद पंडितलाल पंडितसिंह परीक्षासिंह प्रतिभाभूषण बुद्धिसागर ब्रह्मविशारद मुंशी मुंशीदयाल मुंशीपाल मुंशीप्रसाद मुंशीराम मुंशीलाल मुंशीशंकर मुंशीसहाय मुंशीसिंह मेधार्थी मौलवीराम मौलवीसिंह विज्ञानभिक्षु विज्ञानस्वरूप विज्ञानहंस विज्ञानानंद विद्याकांत विद्याधर विद्यानंद विद्यानिधि विद्यानिवास विद्याप्रकाश विद्याभानु विद्याभास्कर विद्याभूषण विद्यारत्न विद्यार्थीसिंह विद्यावंत विद्यावागीश विद्याविनोद विद्याशिरोमणि विद्यासागर विद्यासिंधु विद्यासिंह विद्वत्तमचंद विद्वाननाथ विद्वानसिंह विवेकरंजनसिनहा विवेकशरण विवेकशील वेदप्रकाश वेदप्रकाशचंद वेदप्रिय वेदभानु वेदभास्कर वेदभूषण वेदमणि वेदमणिकुमार वेदमित्र वेदरत्न वेदव्रत वेदव्रतभूषण वेदव्रतसिनहा वेदांतीप्रसाद वेदानंद वेदानंदलाल सुधींद्र सुधींद्रकुमार सुधींद्रनाथ सुमेदीलाल।

(ई) सम्मान विशेष—अमूल्यरत्नप्रभाकर आनंदभूषण आनंदमूर्ति आनंदस्वरूप आर्यभास्कर आर्यभूषण आर्यमणि आर्यमित्र आर्यमुनि आर्यरत्न आलमचंद इलाचंद्र उत्तमशील उपदेशबहादुर करुणानिधान करुणानिधि करुणासागर करोड़ी कर्मबहादुर कर्मवीर कर्मवीरसिंह कार्येंद्रनारायण कीर्तिभूषण कीर्तिभूषणप्रकाश कीर्तिभूषणस्वरूप कुमनी कुलकांत कुलचंद कुलजीतराय कुलदीपकचंद कुलदीपदास कुलदीपनारायण कुलदीपनारायणसिंह कुलदीपशंकर कुलदीपसहाय कुलदीपसिंह कुलदेव कुलदेवनारायणसिंह कुलदेवसिंह कुलनंदन कुलपतिराम कुलभास्कर कुलभूषण कुलभूषणचंद कुलभूषणस्वरूप कुलरञ्जन कुलराज कुलवंत कुलवंतनारायण कुलवंतप्रसाद कुलवंतराय कुलवंतलाल कुलवंतसहाय कुलवंतसिंह कुलवीरसिंह कुलानंद कुलेंद्रप्रसाद कुलोमणि कुल्लनसिंह कृपाशील कृपासागर कृपासिंधु क्षमाकर क्षमास्वरूप खंजादेसिंह ख्यातसिंह गढ़पति गुणज्ञ गुणबहादुर गुणवंतराय गुणवीरप्रसाद गुणागार गुणानंद गुणीनाथ गुनईप्रसाद गुनूसिंह जगजोतसिंह जगज्योतिनाथ जगतचंद जगतप्रकाश जगतबंधन जगतबंधनराम जगतबंधु जगतभास्कर जगतमणि जगतसिंह जगबंधुसिंह जगभानुसिंह जगभूषणकुमार जगमल जगमानसिंह जगमेहरसिंह जगरतन जगरोशन जगरोशनलाल जगवंश जयप्रकाश जयमूर्ति जयमूर्तिलाल जयरत्न जयस्वरूप जसकरणसिंह जसजीतसिंह जसपतराम जसपतिराय जसपाल जसपालसिंह जसवीरसिंह जसमलसिंह जितेंद्र जितेंद्रप्रकाश जितेंद्रप्रतापबहादुरसिंह जितेंद्रप्रतापसिंह जितेंद्रविक्रमसिंह जितेंद्रवीरसिंह जितेंद्रव्रत जीवनज्योति टेकबहादुर ताजबहादुर ताजमल ताजसिंह तालुकेदार तालुकेदारसिंह दयानिधान दयानिधि दयासागर दयासिन्धु दयास्वरूप दरबारी दरबारीप्रसाद दरबारीमल दरबारीलाल दरबारीसिंह दानबहादुर दानसिंह दानिशराय दानीसिंह दानवसिंह दावासिंह दीनबंधु दीनानाथ दीवानबहादुर दीवानवंशधारीलाल दुनियामणि दुनीचंद देशकरण देशबंधु धर्मकीर्ति धर्मकीर्तिशरण धर्मभिक्षु धर्मभूषण धर्ममित्र धर्मवीर धर्मवीरप्रसाद धर्मवीरसिंह धर्मव्रत धर्मशिरोमणि धर्मशील धर्मस्वरूप धर्मात्माप्रसाद धर्मात्माशरण धर्मात्मासिंह धर्मावतार धर्मेंदु धर्मेंद्र धर्मेंद्रकुमार धर्मेंद्रचंद धर्मेंद्रनाथ धर्मेंद्रनारायणसिंह धर्मेंद्रपाल धर्मेंद्रप्रसाद धर्मेंद्रमोहन धर्मेंद्रसहाय धर्मेंद्रसिंह

धर्मेंद्रस्वरूप धर्मेष्ठी धीरात्मानंद धीरेंद्र धीरेंद्रकुमार धीरेंद्रनाथ धीरेंद्रप्रतापसिंह धीरेंद्रवम धीरेंद्रसिंह धीरेशचंद्र धुरंधर धुरंधरसिंह धुरीधर धुरेंद्र नेकपालसिंह नेकभूषण नेवाजसिंह परमजीतराय पुण्यश्लोक पृथ्वीसिंह पेशलमुकुट प्रणवीरसिंह प्रियदर्शन प्रियदर्शनलाल प्रियदर्शी प्रियव्रत प्रियव्रतनारायणसिंह बलतेजसिंह बसुधानंद बसुधासिंह भंवरपालसिंह भंवरमल भंवरलाल भंवरसिंह भक्तसिंह भारतचंद भारतज्योति भारतनरेश भारतप्रकाश भारतभानु भारतभूषण भारतभूषणस्वरूप भारतमित्र भारतवीर भारतसिंह भारतेंदु भारतेंदुकुमारसिंह भारतेंदु नारायण भारतेंदुप्रकाश भारतेंदुसिंह भारतेंद्रनाथ भारतेश्वरनाथ भुनाल भुवनचंद्र भुवनदिवाकर भुवनभास्कर भूप्रकाश भूमित्र भ्रमरलाल भ्रमरसिंह मंडलसिंह मनईसिंह मालचंद मित्रानंद मिर्जाराय यशोविमलानंद युवराज युवराजदत्त युवराजबहादुर युवराजसिंह योगधारीराय राजकरण राजकिशोर राजकिशोरनाथ राजकुली राजकुँवर राजकुमार राजकुमारलाल राजकुमारसिंह राजनीतिसिंह राजबंधु राजरोशनराय राजरोशनलाल राजरोशनसिंह राजलाल राजवंत राजवंतसिंह राजवंश राजवंशी राजवल्लभ राजवल्लभसहाय राजवल्लभसिंह राजाबहादुर रायचंद्र रायचरण सिनहा रायजादा रायबहादुर रायसिंह रावराजा रुकनसिंह लोकमणि लोकमणिदास लोकमन लोकमित्र लोकसिंह वंगेंद्र वंगेंद्रनाथ वंगेश्वरनाथ वंगेश्वरप्रसाद वंशदेव वंशधारीलाल वशपति वशबहादुर वंशबहादुरलाल वंशभूषण वंशराज वंशरोपनसिंह वंशलोचनसिंह बशींद्रदत्त वसुधानंद वसुधासिंह विश्वचंद्र विश्वप्रकाश विश्वप्रिय विश्वबंधु विश्वमित्र विश्वरंजन विश्वविनोद शम्मूर्ति शर्मधर शांतिप्रिय शांतिभूषण शांतिसागर शांतिस्वरूप शाहजादाप्रसाद शाहजादाराम शाहजादाविहारी शाहजादे शाहजादेलाल शाहजादेसिंह शिरोमणि शिरोमणिदत्त शिरोमणिलाल शिरोमणिसिंह शीलस्वरूपानद शीलेंद्र शीलेंद्रकुमार शीलेश शीलेशचंद सज्जनसिंह सत्यनिष्ठ सत्यप्रिय सत्यप्रेमी सत्यभक्त सत्यभानु सत्यभूषण सत्यमित्र सत्यमूर्ति सत्यरंजन सत्यरूप सत्यवादी सत्यवीरसिंह सत्यव्रत सत्यव्रतराय सत्यव्रतसिंह सत्यस्वरूप सभाकांत सभाचंद सभाजीत सभाजीतसिंह सभापति सभापतिनाथ सभामोहन सभासिंह सरकारबहादुर सरताजबहादुर सरदार सरदारबहादुर सरदारमल सरदारबिहारी सरदारसिंह सरदारीलाल सरफराजसिंह सल्तनतबहादुर सल्तनतबहादुरसिंह सल्तनतरायसिंह सल्तू सवाईसिंह सिद्दार सिरताजबहादुरसिनहा सिरताजसिंह सिरतूसिंह सुगुणचंद सुधीरकुमार सुधीरचंद सुल्तान सिंह सुशील सुशीलकुमार सुशीलचंद्र सुशीलप्रकाश सुशीलबहादुर सुशीलभूषण सुशीलस्वरूप सुशीलेंद्र हजारी हिन्दूपति हुकमपाल हुकमसिंह हुकुमतराय ।

(उ) राजपद—अवनींद्र अवनींद्रकुमार अवनींद्रनाथ छत्रपति छत्रपतिसिंह छत्रपाल छत्रपालसिंह छमापति छमापाल छितिपाल छितीशमोहन छितीश्वर छितीश्वरराम छितेश्वरप्रसाद छमापति चक्रवर्ती चक्रवर्तीसिंह जनेश्वर जनेश्वरदास जनेश्वरप्रसाद जमीपाल दुनियांपति दुनियांराय धरणीकांत नरदेव नरदेवसिंह नरपतिसिंह नरेंद्र नरेंद्रकिशोर नरेंद्रकुमार नरेंद्रचंद्र नरेंद्रजीत नरेंद्रदत्त नरेंद्रनाथ नरेंद्र नारायण नरेंद्रप्रकाश नरेंद्रप्रतापनारायणसिंह नरेंद्रप्रसाद नरेंद्रबहादुर नरेंद्रभान नरेंद्रभूपबहादुर नरेंद्रभूषण नरेंद्रमित्र नरेंद्रमोहन नरेंद्रमोहनस्वरूप नरेंद्रविहारीलाल नरेंद्रवीर नरेंद्रवीरप्रताप नरेंद्रवीरसिंह नरेंद्रसिंह नरेंद्रसेन नरेंद्रस्वरूप नरेश नरेशकुमार नरेशचंद्र नरेशचंद्रनारायण नरेशदत्त नरेशनारायण नरेशप्रसाद नरेशबल नरेशबहादुर नरेशभूप नरेशलाल नरेश्वरप्रसाद नवाब नवाबलाल नवाबशाह नवाबसिंह नवाबीलाल नब्बूसिंह नाहा निरपति नृपतिसिंह नृपलालसिंह नृपसिंह नृपेंद्र नृपेंद्रचंद्र नृपेंद्रनाथ नृपेंद्रनारायण नृपेंद्रप्रताप नृपेंद्रशंकर नृपेशप्रसाद पुरुषपाल पृथ्वीपाल पृथ्वीशचंद बादशाह बादशाहसिंह बोपति भुआर भुआलराम भुवनकांत भुवनपाल भुवनेंद्र भुवनेंद्रप्रतापसिंह भुवाल भुवालप्रसाद भूप भूपति भूपतिप्रसाद भूपतिराय भूपतिसिंह भूपदेव भूपन भूपनलाल भूपनाथ भूपनारायण भूपराम भूपलाल भूपसिंह भूपस्वरूप भूपा भूपानंद भूपाल भूपालप्रसाद भूपालराय भूपालसिंह भूपाली भूपालीदीन भूपेंद्र भूपेंद्रकुमार भूपेंद्रनाथ भूपेंद्रनाथसिंह भूपेंद्रनारायणसिनहा भूपेंद्रपति भूपेंद्रपालसिंह भूपेंद्र-

प्रसाद भूपेंद्रबहादुरसिंह भूपेंद्रमणि भूपेंद्रलाल भूपेंद्रविहारी भूपेंद्रवीरसिंह भूपेंद्रशंकर भूपेंद्रसहाय भूपेंद्र-सिंह भूपेशचंद्र भूमिनाथ भूमींद्रदेव महरजवा महाराज महाराजकिशोर महाराजकुमार महाराजदीन महाराजनारायण महाराजबक्सलाल महाराजबहादुर महाराजबहादुरलाल महाराजलाल महाराजसिंह महाराजस्वरूप महिपाल महिपालप्रसाद महिपालबहादुरसिंह महिपालशरण महिपालसिंह महिराजध्वज-सिंह महीपति महीपतिदयाल महीपतिराम महीपतिशरण महीपतिसिंह महीपदत्त महीपनारायण महीपलाल महीशनारायण मुलकराज रजई रजना रजुआ रजोला रज्जनलाल रज्जनसिंह रज्जा रज्जूलाल रज्जूसिंह राजकरण राजकेश्वर राजदत्तप्रसाद राजदयाल राजदेव राजदेवप्रसाद राजदेवराम राजदेवलाल राज-देवसिंह राजधर राजधारीसिंह राजनंद राजनंदनसिंह राजनलाल राजनाथ राजनाथलाल राजनाथसहाय राजनाथसिंह राजनारायण राजनारायणप्रसाद राजनारायणलाल राजनारायणसिंह राजनेतिसिंह राज-पतलाल राजपति राजपतिसिंह राजपाल राजपालसिंह राजप्यारेलाल राजप्रतापसिंह राजप्रसाद राजबरनसिंह राजबल राजबलप्रकाश राजबलसिंह राजबली राजबहादुर राजबहादुरसिंह राजभूषण राजमणि राजमन राजमनोहरसिंह राजमल राजमहेंद्र राजमुकुट राजमोहन राजरतन राजराजसिंह राजराजेश्वरप्रसाद राज-राजेश्वरसहाय राजरूपराय राजलाल राजविजयसिंह राजवीरसिंह राजव्रत राजशरण राजा राजादत्त राजाबक्ससिंह राजालाल राजूलाल राजेंद्र राजेंद्रकिशोर राजेंद्रकिशोरशरणसिंह राजेंद्रकीर्तिशरण राजेंद्र-कुमार राजेंद्रचंद्र राजेंद्रनाथ राजेंद्रनाथराय राजेंद्रनाथसिनहा राजेंद्रनारायण राजेंद्रपाल राजेंद्रपाल-सिंह राजेंद्रप्रकाश राजेंद्रप्रताप राजेंद्रप्रतापचंद्र राजेंद्रप्रसाद राजेंद्रप्रसादसिंह राजेंद्रबहादुर राजेंद्रराय राजेंद्रलाल राजेंद्रवीरसिंह राजेंद्रशरण राजेंद्रसहायसिनहा राजेंद्रसिंह राजेंद्रस्वरूप राजेशकुमार राजेशचंद्र राजेशनारायण राजेशप्रसाद राजेश्वर राजेश्वरदत्त राजेश्वरदयाल राजेश्वरदास राजेश्वर-नाथ राजेश्वरनारायणसिनहा राजेश्वरप्रसाद राजेश्वरबली राजेश्वरशरण राजेश्वरसहाय राजेश्वरस्वरूप राजेसिंह रायराजेंद्रबहादुर रायराजेश्वरबली रावतमल रावलसिंह लालराजकिशोरनाथ शाहमल सम्राट्-लाल साहु सुल्तान सुल्तानराय।

(३) **व्यंग्य**—अंगनदास अंगनविहारीलाल अंगनलाल अंगना अंगनूप्रसाद अंगनूराम अंगने अंगनेलाल अग्रजलाल अग्रजशरण अचकलाल अचपलसिंह अचानकप्रसाद अच्छे अच्छेलाल अजगर अजगरसिंह अजायबलाल अजायबसिंह अज्ञातबाबू अटलचंद अटलबहादुर अटलसिंह अटलू अटल्ली अणुकप्रसाद अदालतसिंह अद्रिकुमार अधिकलाल अधीन अधीनप्रसाद अनमोल अनमोलक-राम अनमोलराय अनमोलसिंह अनवरसिंह अनाड़ीलाल अनुआ अनुजप्रसाद अनुरूप अनुरूपप्रसाद अनुरूपसिंह अनूप अनूपकिशोर अनूपकुमार अनूपचंद अनूपदत्त अनूपदेव अनूपनारायण अनूपलाल अनूपशाह अनूपसिंह अफीमी अबलकसिंह अब्बलसिंह अभिराज अभिराम अमलकांत अमलधारी अमलराय अमानसिंह अमोलकचद अमोलकप्रसाद अमोलकराम अमोलचंद अमोलसिंह अमोला अलग-गरजसिंह अलबेलसिंह अलबेला अलबेलीप्रसाद अलबेलेलाल अलबेलेसिंह अहरवादीन अहलूराम आगर आनननारायण आफतचंद आलूमल आलोक इकरामसिंह इलाकाप्रसादसिंह उगमदेव उगमसिंह उचित-लाल उजबकसिंह उजागरलाल उजागरसिंह उजालासिंह उजियारीलाल उजियारेलाल उज्जा उज्जीलाल उज्जू उज्ज्वलसिंह उदयपालसिंह उदयप्रकाश उम्दासिंह ऊदा ऊधमपालसिंह ऊधमसिंह ऋजुमल ऋतुलाल एकांतदास ऐतराजसिंह औदान कंगलिया कंगलियाराम कंगलू कंगाली कंगालीचरण कंगालीराम कंजरा कंजू कंपनलाल कट्टर कट्टलराम कठिनदत्त कद्दलसिंह कद्दी कद्दूसिंह कनौड़ासिंह कब्जासिंह करिंगनलाल करिया करियासिंह करेरेराम कर्णसुखलाल कलंदर कलई कलवा कलवासिंह कलिया कलुआ कलूटा कलूटीराम कलूटीसिंह कल्लन कल्ला कल्लाराम कल्लू कल्लूदास कल्लूप्रसाद कल्लूमल कल्लूराम कल्लूसिंह काबिजसिंह कायमसिंह कारू कारे कारेप्रसाद कारेलाल कालू कालूराम कालू-लाल कालेसिंह किलोला किल्कू कुंजन कुंजनसिंह कुंजरलाल कुंजरसिंह कुंजल कुंजलसिंह कुंजामल

कुंठीसिंह कुंडीलाल कुकई कुकरियासिंह कुक्कुर कुटईराम कुटिलसिंह कुटिलू कुनरू कुनुरूप्रसाद कुन्नुन कुन्नू कुन्मुन कुन्हुन कुब्बतसिंह कुमले कुरियासिंह कुलंजन कुलबुल कुलबुलराय कुलबुलसिंह कुलाहल-राम कुल्लनसिंह कुल्तूराम कूदन केकचंद केकाराय केतवानमल केरा केराप्रसाद केशरी केशरिया केहरिया केहरिसिंह केहरी कैरा कौंचामल कोकामल कोकाराम कोकिलेसिंह कोकीराम कोठीराम कोमल कोमल-चंद कोमलनाथ कोमलप्रसाद कोमलराम कोमललाल कोमलसिंह कोयलसिंह कोरेसिंह कौलीन खंजन खंजनलाल खंजनसिंह खंडेरनसिंह खगनलाल खजानचंद खजानदत्त खजानसिंह खडगा खबरदारसिंह खरखरदेव खचूँ खर्चे खागाराम खासाराम खासेसिंह खितईसिंह खिताऊ खिलई खिलईराम खिलपतसिंह खिलाड़ी खिलानंद खिलावन खिलावनप्रसाद खिलावनराम खिलावनसिंह खिल्लनसिंह खिल्ला खिल्लू खिल्लूसिंह खुन्ना खुन्नीलाल खुन्नू खुन्नूराम खुन्नूलाल खुरखुरलाल खुरबुन खुरबुर खुरभुर खुरभुरराम खुरमल्लो खुल्लाराम खुल्ले खुशदिलप्रसाद खुशमनसिंह खुशवनराय खूंटी खूबचंद खूबलाल खूबसिंह खूबीराम खूबी-लाल खूबीसिंह खूबेंद्रसिंह खेखरूराम खेतल खेतलप्रसाद खेतसिंह खेरीलाल खेरीसिंह खेलाराम खेतु खैरा-दास खौनीदास खोनीमल ख्शालीसिंह गंजनराम गंभीरदत्त[1] गंभीरसिंह गंभूराम गजानंद गजानंददेव गज्जन गज्जीराम गज्जू गज्जूराम गज्जूलाल गट्टनसिंह गट्टी गट्टीराम गट्टू गट्टूमल गट्टूराम गट्टूलाल गठोले गद्दू गद्दरमल गन्ना गन्तूसिंह गप्पी गप्पू गप्पूमल गफ्लू गवड़ुआ गबदीदास गबदू गबद्दी गबरसिंह गबरी गबरूलाल गब्बर गब्बरलाल गब्बरसिंह गब्बू गब्बूलाल गमलासिंह गमलूराम गरजनारायणराय गर्जनसिंह गजूँ गलेसिंह गहनसिंह गहनीराम गहोताप्रसाद गाजर गिरिप्रसाद गिरिलाल गुट्टन गुठीले गुढ़ाईप्रसाद गुड्डूप्रसाद गुड्डूसिंह गुदनासिंह गुदाईप्रसाद गुद्दीप्रसाद गुन्ना गुरवतसिंह गुलगुल गुलजार गुलजारसिंह गुलजारी गुलजारीराम गुलजारीलाल गुलजारीसिंह गुलफामसिंह गुलबदनलाल गुलराज गुलवंतप्रसाद गुलशन गुलशनराय गुलशनलाल गुलशनविहारी गुलशनसिंह गुलशनस्वरूप गूदनराम गूलर गेंझनराय गेनीलाल गेनीसिंह गेनूराम गोगासिंह गोजर गोटन गोटी गोटीमल गोटीराम गोड़ूमल गोदीसिंह गोनासिंह गोरेलाल गोलैया गोसूदीन गौरसुन्दर गौरसिंह घनसूर घमनूमल घमरू घम्मन घर-भरनराम घरभरनलाल घरभरुसिंह घरभावन घानू घामूसिंह घिगई घिनई घुच्चनसिंह घुटई घुट्टनराम घुमचीसाहु घुम्मनसिंह घुरबिन घूरे घेंघई चंगड़ चंगालाल[2] चंगुल चंगू चंचल चंचलकुमार चंचलराय चंचलवल्लभ चंचलसिंह चंद्रोदयसिंह चक्खन चक्खनलाल चतुरगुनसिंह चतुरजीतसिंह चतुरदत्त चतुरभाई चतुरमल चतुरलाल चतुरसिंह चतुरसेन चतुरी चतुरीनारायण चतुरेमल चनकी चनखीसिंह चमकूराम चमनगोपाल चमनलाल चम्मनलाल चातक चाली चाहतराम चाहतेलाल चाहिली चिखुरी चिखुरीराम चिखुरीसिंह चिटकऊ चिट्टन चित्तरसिंह चित्तरसिंहजूदेव चिनकुवा चिनगी चिपुन्नी चिम्मन चिम्मनलाल चिम्मनशाह चिलमसिंह चुंदू चुंबन चुकता चुक्खनसिंह चुखई चुखईलाल चुखारू चुटकई चुरई चुलबुल चुल्हन चुहलसिंह चूहासिंह चेंटासिंह चेंखुरराम चेखुरीसिंह चेखूसिंह चेतकर चेलाराम चोंच चोंचूसिंह चोकीराम चोखाराम चोखे चोखेदत्त चोखेदयाल चोखेसिंह चौकियाप्रसाद चौंघी चौंघी-दास चौबारसिंह चौहरी छंगनलाल छंगाराम छंगालाल छंगासिंह छंगीमल छंगुर छंगुरप्रसाद छंगुरसिंह छंगुल छंगूलाल छंगेलाल छउराम छकरादत्त छक्कन छक्कनराय छक्कनलाल छक्कीदास छक्कीलाल छक्कूमल छक्कूलाल छगलराम छटंकी[3] छटंकीप्रसादसिंह छटंकीराम छटंकीलाल छप्पनलाल छप्पन-सिंह छप्पीमल छप्पू छप्पूलाल छबील छबीलचंद छबीलदास छबीलसिंह छबीले छबीलेराम छम्मन छम्मनलाल छम्मनसिंह छम्मीलाल छांगुर छांगुरलाल छिंगा छिंगामल छुटकऊ छुटकन छुटकनलाल छुटकनू छुटकुन्तू छुटके छुटमनराम छुटवारी छुट्टन छुट्टनपालसिंह छुट्टनलाल छुट्टा छुट्टानंदजी छुट्टीसिंह

[1] गंभीर—एक नदी।

[2] चंगा <चंग।

[3] छटंकी<षट् + टंक।

छैलबहादुर छैला छैलामल छैलूराम छैलूसिंह छोटकचंद छोटकराम छोटकूप्रसाद छोटन छोटनलाल छोटमल छोटवा छोटूदास छोटूनारायण छोटूपत छोटूप्रसादसिंह छोटूभाई छोटूराम छोटूसिंह छोटेदास छोटेबहादुर छोटेलाल जंगलदेवसिंह जंगलिया जंगली जंगलीप्रसाद जंगलीराम जंजालीप्रसाद जगमगलाल जगारसिंह जट्टनराम जबरसिंह जबरू जबला जब्बा जब्बारसिंह जमानसिंह जरबंधनसिंह जलाहलदीन जायसीराम जिन्दालाल जिश्रानंद जिश्रालाल जिनसीराम जिबई जियाराम जियावन जिलई जिलेराम जिल्ला जिह्वासिंह जीश्रा जीबा जीबानंद जीबाराम जीवालाल जीवोध जुंगाड़सिंह जुंगी जुंगीराम जुंगीलाल जुंगीसिंह जुगई जुगतराम जुगराजसिंह जुगरे जुगल जुगलशरण जुगलसिंह जुगली जुगलू जुगुलचंद जुग्गड़ जुग्गा जुग्गासिंह जुग्गीमल जुग्गीलाल जुग्गू जुट्ई जुलफसिंह जोंकराज जोंकीराम जोजनसिंह जोड़ामल जोड़ेराम जोरा जोरावर जोरावरलाल जोरावरसिंह जोल्ला जौमसिंह झंकारू झक्कड़ी झक्कड़ीप्रसाद झगईसिंह झगड़ू झगड़ूराम झगड़ूसिंह झग्गड़ झग्गड़सिंह झग्गनराम झग्गनसिंह झग्गा झडुश्राप्रसाद झडुले झडोलेसिंह झनकू झनकूलाल झपटलाल झप्पामल झबरू झब्बनप्रसाद झब्बामल झब्बालाल झब्बू झब्बूदास झब्बूप्रसाद झब्बूलाल झब्बूसिंह झमई झमेलासिंह झरगतसिंह झरगदा झरगामल झरिया झरिहगसिंह झरीसिंह झरूलाल झलई झलकसिंह झाइयां झांवर झावरमल झिनकई झिनकन झिनकू झिनकूलाल झिनकूसिंह झिनकोराय झिन्नू झिन्नूसिंह झिलंगीराम झिल्लूप्रसाद झिल्लूराम झीनक झीनकसिंह झीमलराम झीमलसिंह झीलनजीराम झीलरराम झुंट्टू झुनकूलाल झुनखुन झुनझनलाम झुन्ना झुन्नीमाल झुन्नीसिंह झुन्नू झुवीला झूरी झूरीप्रसाद झूरीलाल झूरीसिंह झूरू झोंटा झोरीनाथ टंटाराम टंटू टंटूराम टिड्डी टिन्नी टिम्मल टिरिश्रवा टिर्रा टिल्ला टीमलसिंह टुंटन टुंडई टुंडराम टुंडामल टुंडाराम टुंडासिंह टुंडी टुंडीराम टुइयाँ टुइयाँसिंह टुकई टुकीराम टुक्कीमल टुड़िया टुनटुनसिंह टुनटुनियां टुन्नामल टूंडीमल टूंडीलाल टूला टेंगचूराम टेंटी टेटीराम टेनी टेंटनारायण टेकोराम टेलासिंह ठंडोलाल ठडेसिंह ठक्कन ठगराम ठाटराम ठाटसिंह ठुकीराम ठेलासिंह डंगर डंडाराम डगमगराज डगरू डबलूसिंह डलमीरसिंह डाँगरराम डाँगरसिंह डिगरीराम डिब्बासिंह डीपू डुंडबहादुर डुल्लकराम डुल्लनसिंह डुल्लासिंह डूंगर डूंगरदत्त डूंगरमल डूंगरलाल डूंगरसिंह डूंगरा डेबरा डेराराज डेरू डाकरीराम ढंमू ढाकराज ढाकलाल ढाकनसिंह ढिलई ढिल्लूराम ढुनमुनलाल ढुरई ढेलांकी ढुल्ली ढोंडा ढोंढ़ई ढोंढ़ईलाल ढोंढ़ा ढोंढ़ाराम ढोढासिंह ढोंतल तनकूलाल तनारूराम तब्बाराम तलफसिंह तलफीराम तल्फराजसिंह तहसील तहसीलसिंह तांतिया ताड़ीमल ताड़ीलाल तालुकसिंह तीतरसिंह तीतल तुंडीलाल तुनतुनसिंह तुनतुनियाँ तुरंतनाथ तुरंतलाल तुरंतीलाल तुरंनसिंह तूती तूफानीराम तूरीसिंह तेजबहादुरसिंह तेजी तेजीराम तेजीलाल तोंदीमल थम्मनसिंह थावरचंद थोपराम दंगलसिंह दंगलीप्रसाद दंगलीसिंह दखलदेव दखलसिंह दब्बूराम दलेलसिंह दावासिंह दिमागसिंह दिलखुल दिलदारसिंह दिलप्रसाद दिलवदनसिंह दिलभरसिंह दिलभरी दिलमनलाल दिलमोहन दिलराज दिलराजसिंह दिलवंतसिंह दिलवरीलाल दिलसुख दिलसुखराय दिलावर दीदारसिंह दीनचंद दीना दीनू दीपवर दं-दी दुक्खी दुक्खीराम दुक्खीलाल दुखई दुखांतीप्रसाद दुखीराम दुबरी दुभईसिंह दुर्वचनसिंह दुर्बल दुर्बलदास दुर्बली दुर्बलीप्रसाद दुर्लभ दुर्लभसिंह दूंदुरदेव दूंदेलाल दूभरराम दूल्हेराम देहरीप्रसाद दोंदीसिंह द्वंद द्वारी द्वीपनारायण द्वीपनारायणसिंह धवलसिंह धारा धाराजीत धारासिंह धारीसिंह धारेलाल धुंधई धुंधले धुनधुना धुनमुन धुनमुनदास धुनमुनलाल धुन्नी धूंधासिंह धूमप्रसाद धूमबहादुर धूमसिंह धूसर धौंकलसिंह धौंधन धौंधा धौतालसिंह धौरीसिंह धौरेलाल नंगा नंगाराम नंगू नंगूराम नंगेदास नंगेसिंह नकईसिंह नकचूराम नकटा नकटाराम नकटूलाल नकली नकलीदास नकलीदेव नकलीराम नकलीसिंह नक्का नगऊ नगदबिहारीलाल नगदसिंह नगिनराम नगेला नचकसिंह नचकोराम नचरीलाल ननई ननकऊ ननका ननकू ननकूराम ननकूलाल ननकूसिंह नन्नी नन्नू नन्नमल नन्ने नन्नेमल नन्हकू नन्हकूधारीसिंह नन्हा नन्हाराम नन्हासिंह नन्हूदेव नन्हूमल नन्हेंबाबू

नन्हेमल नन्हेराजा नन्हेराम नन्हेलाल नन्हेसिंह नयाराम नवरंगलाल नवल नवीनप्रसाद नहरदेव नाटे नान्हूराम नाहरसिंह नाहरिया निकई निक्कासिंह निगाही निगाहूसिंह निजर निठुरचंद निनुआ निनुआ-राम निन्नूसिंह निन्हकू निर्बलसिंह निवास नीबरदास नीबू नीमन नीमर नीमरसिंह नुखई नुखईराम नेउर नेउरलाल नेकसहाय नेकसा नेकसीलाल नेकसेसिंह नेका नोखासिंह नोखे नोखेलाल नोहर नोहरराम नोहरसिंह नौवस्ता नौबहारसिंह नौरंग नौशे नौशेलाल नौहर नौहरियाराम न्यादर न्यादरसिंह पंथनाथ पंथू पकौड़ी पक्कूराम पक्कूलाल पगरोपन पघइंया पटकन पठेमल पठेलाल पठेसिंह पतंगीराम पतरीक-सिंह पतरे पतवारू पत्तर पनकोही पबारू पव्बरराम पव्बार परचनराय परदेशी परदेशीराम परसन परांकुश परिखाराय परोनीराम परोहीसिंह पर्वतलाल पर्वतसिंह पलई पल्लासिंह पसेरा पहलवानसिंह पहलसिंह पहलीप्रसाद पहलूराम पहाड़ी पहाड़ीराम पाखंडीराम पाढ़ पालो पालीराम पुचई पुदई पुदईराम पुद्दन पुरई पुरईंदास पुलकित पुलिंदासिंह पूंजीराम पूंजीलाल पेच्चू पेशीराम पेशीलाल पोखरदास[1] पोखरमल पोच्चूसिंह पोदना पोप पोपराम पोपी पोशाकीराम पोशाकीलाल पोस्ती पोस्तीलाल प्रगटसिंह प्रतिपालसिंह प्रथमलाल प्रभात प्रभातकुमार प्रभातचंद्र प्रभातरंजन प्रभातशंकर प्रभाती प्रभातीलाल प्रभूतसिंह प्रमादकरन प्रवीणसिंह प्रवेशचद्र प्रवेशनारायण प्रसन्नदेव प्रसन्नदेवप्रकाश प्रियंवदसहाय फक्कड़ फक्कू-फक्कूलाल फलई फलजीतसिंह फलराम फसादी फुटवालसिंह फुदकई फुदनी फुद्दन फुद्दी फुनई फुनईराम फुन्ननलाल फुन्नीलाल फुलझरीलाल फुलवारीलाल फूचोलाल फूलबदन फूलबदनराम फूलबदनराय फूलबदन-लाल फैलीराम फोइयामल फोगलसिंह फोपी फौरनसिंह बंका बंकाराम बंढुआ बंटे बंधन बंधनमल बंधनसिंह बंबल बखेड़ीराम बखेड़ीसिंह बगई बगेशचंद बग्गेसिंह बजरीदास बटोही बड़कन्नू बड़का बड़के बड़ेराम बढ़ऊलाल बतोलेसिंह बतोसीलाल बनखंडी बनखंडीलाल बनखंडीसिंह बनच्चा बनवासी बन्ना बन्नेसिंह बरखंडी बरखंडीदीन बरखंडीप्रसाद बरजोर बरजोरसिंह बराती[2] बरातीलाल बरियार बरियारसिंह बसू बलवानसिंह बसगीतराय बसगीतसिंह बसावन बसावनराम बसावनसिंह बस्तीप्रसाद बस्तीराम बहरीदयाल बहालीसिंह बहोरनलाल बाँकामल बाँकेबहादुरसिंह बांकेसिह बागुरराम बाउरराम बाउलराय बाउलिया बाखू बागसिंह बागेशचंद्र बागेश्वर बागेश्वरदयाल बागेश्वरप्रसाद बागेश्वरलाल बाघसिह बाजारीसिंह बाटूराम बाटूलाल बादीप्रसाद[3] बादीलाल बालबोध बिकटबाबो बिचई बिचईलाल बिचेलसिंह बिच्चा बिपतस्वरूप बिपति बिपतिप्रसाद बिपतिया बिलटू बिलाई बिल्मन बिल्ला बिल्ले बिल्हड़ बिल्हड़राम बिसई बिसार बीचपालसिंह बुआदास बुआसिंह बुचन्नू बुच्चूराय बुज्झी बुझारतराम बुझावनराम बुझा-वनराय बुटईराम बुट्टन बुढ़ऊ बुनियादीदास बुलंद बूचनसिह बूचाराम बूचीराय बूचे बूझाराय बूढ़े बूतानसिह बेगराज बेगराम बेगलाल बेदरिया बेदलसिंह बेपरवाहीसिह बेरीसिह बेलनराम बेलनसिंह बेहवलसिंह बैठोलराम बोतलसिंह बोदड़ बोदा बोदाराम बोदिल बोदिलसिंह बोदेराम बोदेसिंह बोना बोनाराम बोनीसिंह बोबल्ली बोरीनाथ बोरीसिंह बोरे बौड़म बौड़मराम बौड़मसिंह बौरंगी भंगड़ी भंग-बहादुर भंगबहादुरसिंह भंगूसिंह भक्कू भगलीया भगोला भगोलेसिंह भटामल भरपूरमल भरपूरसिंह भमना भल्लर भल्लु भवन भवनचंद भवनदास भवनप्रकाश भवनभूषण भवनसिह भालू भिनका भिनकू भिन्नू भुंडा भुंडीलाल भुंदनसिंह भुकुईसिंह भुखई भुजाराम भुजालाल भुट्टूराम भुट्टूसिंह भुनईसहाय भुरई भुरईसिंह भुलंदर भुलुआ भूआ भूड़देव भूमिकासिंह भूरसिंह भूरालाल भूरीसिंह भूरेबक्स भूरेलाल भूरेसिंह भूलोटन भेगनाथ भेजूप्रसाद भेदीदत्त भेदीराय भड़ोंसिंह भोंदल भोंदू भोंदूभैया भोंदूमल भोंदूराम भोनू भोनूराय भोपू भोरिया भोरी भोरीलाल भोरीसिंह भौंरीलाल मंडितसिंह मंडिल

---

[1] पोखर < पुष्कर – ताल, कमल ।

[2] बरात < वरयात्रा, व्रात ।

[3] बादी ∠ वाद-झगड़ा ; उचित समय के बाद पैदा हुआ ।

मंथनप्रसाद मंदरा मकड़ा मकनू मगनमूर्ति मचलूप्रसाद मचलूसिंह मचानसिंह मच्चोला मजनूलाल मजबूतसिंह मटकनलाल मट्ठकी मटोला मट्टन मठरासिंह मठरू मठोलीप्रसाद मढ़ई मढ़ीलाल मतवार मत्तोहनलाल मदऊ मद्दू मद्दूराय मनफेर मनफूले मनबहल मनबीरराय मनबोध मनबोधनलाल मनबोधनारायण मनबोधसिंह मनराज मनरूप मनसुखलाल मनसुखा मनसूबासिंह मनियारराम मनियारसिंह मनोगी मनोरंजन मनोरंजनप्रसाद मनोरंजनसिंह मर्कटविहारीलाल मलतूराम मल्लू मवासी मवासीराम मवासीलाल मवासीसिंह मस्तू महँगीराम महँगू महँगूलाल महँगे महँगेराम महँगेलाल महलचंद महाजीत महादीन महादीनप्रसाद महादीनलाल महिलानंद माठूराम मिचकू मिजाजी मिजाजीलाल मिज्जा मिथुनसिंह मिलई मिहींलाल मीठालाल मुंडा मुंडेसिंह मुक्खा मुखई मुखराम मुचुआ मुरलीलाल मुरादीलाल मुलायमसिंह मुसई मुसईसिंह मुसाफिर मुसाफिरप्रसाद मुसाफिरराम मुसाफिरसिंह मुहकम मुहलतसिंह मूकराम मूडनदेव मूसा मूसाराम मूसी मूसेसिंह मृगराज मृणालकांति मेंहदी मेंहदीराम मेंहदीलाल मेंहदीसिंह मेलाराम मैकासिंह मैकू मैकूदास मैकूराम मैकूलाल मोकलसिंह मोखा मोटाराम मोटासिंह मोहकमनारायण मोहकमसिंह मौजनाथसिंह मौजस्वरूप मौजानंद मौजी मौजीराम मौजीलाल मौजीसिंह मौजू मौदू मौदूराम मौदूलाल मौनी[1] मौनीराम यात्राप्रकाश यादकरण युगलदास युगलराम युगलस्वरूप रंगबाजसिंह रंगीलासिंह रंजन रंजनसिंह रजनीसिंह रजनूराम रतुआप्रसाद रनुजबहादुरसिंह रसमयसिंह रहतू रहतूमल रहतूलाल रहबासिंह रहोबा रामतीप्रसाद रावतीलाल राहूमल रुकमकेश रुदनसिंह रूआ रूरसिंह रूरा रेतराम रोजीलाल रोताराम रोमन रोमल रोमसिंह रोटीसिंह रौनकसिंह लंगड़ लंगड़ी लंबराज लघुआ लटूरसिंह लटूरीलाल लटूरीसिंह लटोरे लट्टी लट्टूसिंह लड़ेराम लड़ेरु लत्तासिंह लत्तोसिंह लबतूराम लबरू लशकरी लहरीचरण लहरीदत्त लहरीमल लहरीराय लहरीलाल लहरीसिंह लहूरप्रसाद लाऊ लातूराम लाभचंद लाभशंकर लायकसिंह लालहंस लुचई लुचुरदास लुटुर लुटुरसिंह लुतरीलाल लुरखुर लुरखुरराम लुरखुरराय लूरीसिंह लूले लेश लोहीराय लौघर लौबासिंह लौलीनसिंह लौहर ल्हौरे विकल विकारीलाल विचित्रनारायण विचित्रानंद विजयाभिनंदन विदेशी विदेशीलाल विद्युतकुमार विद्युतप्रकाश विपिननाथ विपिनस्वरूप विलक्षण विलायतीराम वीरभारी वृतांती बृहद्दल शरवतीलाल शर्फनलाल शिलीमुख शीशराम शेरा शैतानसिंह शैलकुमार शैलजीतसिंह शैलद्वीपराय शैलबहादुरसिंह शोभांग शोभित शौकतराय शौकीराय शौकीलाल संचितसिंह संतोषजनक संबोधन सकढ़े संच्चल सच्चा सजना सजीवनसहाय सज्जनकुमार सज्जनपाल सज्जीसिंह सटटूराय सतोवनसिंह सदनराम सदनलाल सदनसिंह सदनसोहनलाल सदनू सदर सदरी सदरीराम सनहू सनाथ सनूनीराम सप्पू सफरी सफरुद्दीन सफरोराय समईलाल समयप्रसाद समयलाल समभावनसिंह समुंदर सम्मुख सयानसिंह सरबतीलाल सरलसिंह सरितानंद सरिया सरियाप्रसाद सलेटीसिंह सवारसिंह सस्तीराम सहँगूराम सहती सहतीराम सहतू सहतूमल सहतूराय सहते सहलसिंह सहवीरराय सहेलसिंह सहेसिंह सांभीराम सांवरे सानंदसिंह सामर्थी सारसपाल सिताब सिताबराय सिताबसिंह सिल्लू सीमांचल सीरेमल सुन्दरु सुन्दा सुकुमारचंद सुकुमारीलाल सुकेशचंद्र सुगमचंद सुघड़दीन सुथड़लाल सुघड़सिंह सुचितनाथ सुचितसिंह सुचेतसिंह सुढालसिंह सुदई सुदईसिंह सुदनलाल सुद्धू सुद्धूप्रसाद सुद्धूराम सुद्धूलाल सुदर्शीलाल सुधनलाल सुधारसिंह सुधुआ सुधैया सुनकी सुनहरासिंह सुवेदासिंह सुब्बनसिंह सुब्बाराम सुभई सुरदेसिंह सुरफूराम सुरहल सुलायकचंद सुल्हड़ सुबचनराम सुवचनलाल सुहावन सुहृतरंजन सूखा सूचित सूबा सूबालाल सूरू सूरेसिंह सेखू सैकूलाल सोंधीमल सोंध सोंधूराम सोंपीराय सोंफीलाल सोखनराय सोतासिंह सोतिम सौखीलाल स्यारू स्वारथ स्वास्थ्यरंजन हंगनलाल हंगूसिंह हंडुल हँसमुखलाल हठीप्रसाद हठीसिंह हत्तीप्रसाद हत्थीप्रसादलाल हत्थूसिंह हरकसिंह हरकानंदप्रसाद हरदिया हरवरराम, हरहंगीसिंह हरियोंद्रप्रसाद हलकू हलके हवेलीसिंह हस्तीमल हानोराय हिलशा हुंकारनाथ हुंकारस्वरूप हुंडीलाल हुनर होशियारसिंह ।

[1] मौनं सर्वार्थ साधकम् ।

(र) कुछ आवश्यक तालिकाएँ

१—प्रवृत्तियों के नामों की संख्या, प्रसंख्या तथा प्रतिशत।

धार्मिक प्रवृत्ति

प्रवृत्ति	संख्या	प्रसंख्या	प्रतिशत
ईश्वर		४२८	२७
त्रिदेव	२६३१		१६ १
त्रिदेववंश	८७२		५'३५
लोकपाल	८३५		५'१
विष्णु के अवतार	२८०५		१७'३
अन्य देव देवियाँ	१८७		१'१
अन्यावतार	४१६		२'६
नदियाँ	१०३		'६३
तीर्थंकर	१७१		१'१
	देववर्ग का योग	८०२३	४६'२५
महात्मा	६७२		४'२
तीर्थ	३८२		२'४
धर्म ग्रंथ	६५		'४
मंगल-अनुष्ठान	७४०		४'४
ज्योतिष	३४०		२'०६
सम्प्रदाय	२४५		१'५
अन्धविश्वास	८८६		५'४
	अन्य धार्मिक प्रवृत्तियो का योग	३३३३	२०'४
	समस्त धार्मिक प्रवृत्ति का योग	११७८४	७३'८

दार्शनिक प्रवृत्ति

प्रवृत्ति	संख्या	प्रसंख्या	प्रतिशत
आध्यात्मिक	१४६		'६
मनोवैज्ञानिक	३८७		२'४
नैतिक	२२५		१'३
	दार्शनिक प्रवृत्ति का योग	७६१	४'६

राजनीतिक प्रवृत्ति

प्रवृत्ति	संख्या	प्रसंख्या	प्रतिशत
राजनीतिक	४१५		२'६
ऐतिहासिक	४६४		२'८
	राजनीतिक प्रवृत्ति का योग	८७६	५'४६

सामाजिक प्रवृत्ति

संस्थाएँ	९८		·६
शिष्ट प्रयोग	२२६		१·८
आजीविकावृत्ति	१३८		·८
स्मारक	२५२		१·५
भोग पदार्थ	१३३		·९
कलात्मक नाम	४६२		२·८
समाज सुधार	११		·०७
सामाजिक प्रवृत्ति का योग		१३२०	८·६

अभिव्यंजनात्मक प्रवृत्ति

दुलार के नाम	२७२		१·७
उपाधियाँ	१०४९		६·४
व्यंग्यात्मक नाम	१७२९		१०·७
अभिव्यंजनात्मक प्रवृत्ति का योग		३०५०	१८·८

संख्या के विचार से प्रधान प्रवृत्तियों का क्रम इस प्रकार है—(१) धार्मिक प्रवृत्ति, (२) अभिव्यंजनात्मक प्रवृत्ति, (३) सामाजिक प्रवृत्ति, (४) राजनीतिक प्रवृत्ति, (५) दार्शनिक प्रवृत्ति। इस सारिणी से भारतवर्ष की तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों का कुछ आभास मिल जाता है और साथ ही संस्कृति के अन्य अंगों पर भी प्रकाश पड़ता है।

२—चार गौण प्रवृत्तियों की तुलना

इस तालिका के अंतर्गत नारायण प्रसाद, राम और लाल इन चार बहुप्रचलित गौण शब्दों पर न्यूनाधिक प्रयोग की दृष्टि से विचार किया गया है। शिव प्रवृत्ति के १७१३ नामों में से गणना करने पर इस परिणाम पर पहुँचते हैं :—

गौण शब्द	संख्या	प्रतिशत
नारायण	७८	४·६
प्रसाद	१४२	८·३
राम	६७	३·९
लाल	७८	.४६

उल्लिखित तालिका से यह रोचक निष्कर्ष प्राप्त होते हैं :—

(१) प्रसाद शब्द सबसे अधिक प्रयोग किया जाता है जिससे मनुष्यों की पूजाभक्ति की भावना अधिक प्रबल प्रतीत होती है।

(२) नारायण तथा लाल समान रूप से व्यवहृत हुए हैं इसका तात्पर्य यह है कि जनता में देवत्व तथा वात्सल्य रस की भावना एक सी है।

(३) अन्य शब्दों की अपेक्षा राम (गौण प्रवृत्ति में) का प्रयोग कम है।

३—शब्दों के अनुसार नाम-गणना

इसमें एक से सात शब्दों के नामों की संख्या प्रत्येक प्रवृत्ति के अनुसार दी जाती है।

प्रकरण	प्रवृत्ति	एकपदी नाम	द्विपदी नाम	त्रिपदी नाम	चतुष्पदी नाम	पंचपदी नाम	षट्पदी नाम	सप्तपदी नाम
१	ईश्वर	३४	२८८	८८	१६	२		
२	त्रिदेव	८४	११८२	२१४१	१८१	३७	४	१
३	त्रिदेव वंश	५३	५४७	२४७	१९	४	२	
४	लोकपाल	३३	५२	१८२	६२	१४	२	
५	विष्णु के अवतार	६९	१४८०	१११३	१२५	१७	१	
६	अन्य देव-देवियाँ	८३	४४२	१६२	२१	२		
७	तीर्थंकर	१४	११८	३४	५			
८	महात्मा	९५	२८६	१३६	१९	३	१	
९	तीर्थ	५४	२३५	८२	११			
१०	धर्म ग्रन्थ	५	४१	१९				
११	मंगल अनुष्ठान	१६१	४४४	१२०	१३	२		
१२	ज्योतिष	४७	२०८	६९	८			
१३	सम्प्रदाय	१९	१३१	५९	६			
१४	अंधविश्वास	२७५	६४८	२७	१			
१५	दार्शनिक	९४	५६८	९३	६	१		
१६	राजनीति	१२७	५००	२२१	२६	३		
१७	सामाजिक	२०१	८७४	१२५	१९	१		
१८	दुलार	६९	१८३	१७	३			
१९	उपाधियाँ	६०	५३१	३७१	७१	१५	१	
२०	व्यंग्य	५७६	१०६२	८७	४			
	योग	२५५३	१०८१	३६६	६१६	१०१	११	१

शब्द गणना की दृष्टि से नामों का क्रम इस प्रकार होगा :—

(१) दो शब्दवाले नाम, (२) तीन शब्दवाले नाम, (३) एक शब्दवाले नाम, (४) चार शब्द वाले नाम, (५) पाँच शब्दवाले नाम, (६) छः शब्दवाले नाम, (७) सात शब्दवाले नाम।

साधारण जनता दो या तीन शब्दवाले नाम रखना पसन्द करती है। एक शब्दवाले लघु नाम अशिक्षित ग्रामीण अथवा विद्वन्मंडली में ही विशेषतः पाये जाते हैं। चार या पाँच शब्दवाले नाम कुछ उच्च श्रेणी के सम्पन्न पुरुष ही रखते देखे गये हैं। छः शब्दवाले लंबे नाम बहुत कम मिलते हैं और वे भी अधिकांश में बड़े रईसों और जमींदारों के होते हैं। सात शब्दवाले बहुत लम्बे नाम केवल नमूने के लिए एकाध ताल्लुकेदारों अथवा राजाओं के ही देखे गये हैं। इससे अधिक लम्बे नाम रखने का प्रचलन हिंदी में दिखलाई नहीं देता।

४—अकारादि क्रमानुसार वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर से प्रारम्भ होने वाले नामों की संख्या—समस्त नामों की प्रसंख्या १६२६३ है। प्रत्येक वर्णसे आरम्भ होने वाले नामों की संख्या उस अक्षर के आगे नीचे की तालिका में दी गई है। स्वर पंचवर्ग, अन्तःस्थ एवं ऊष्म का योग भी पृथक् पृथक् दिखला दिया है।

वर्ण	संख्या	प्रसंख्या	वर्ण	संख्या	प्रसंख्या
अ	६७४		इ	१२६	
आ	१८७		ई	४२	

वर्ग	संख्या	प्रसंख्या	वर्ग	संख्या	प्रसंख्या
उ	१६१		द	३८६	
ऊ	१०		ध	५४५	
ऋ	४५		न	६५२	
ए	१०			तवर्ग का योग	१९३०
ऐ	२		प	८०४	
ओ	५५		फ	१४२	
औ	९		ब	८६४	
			भ	६१९	
			म	११६६	
	स्वरों का योग	१३२६		पवर्ग का योग	५९६८
क	१०५२		य	१७०	
ख	२०२		र	१४९३	
ग	७१९		ल	३७६	
घ	११८		व	८०१	
	कवर्ग का योग	२०९१		अन्तःस्थ का योग	२८४०
च	४८९		श	८३०	
छ	१७०		ष	१	
ज	८२१		स	१२९६	
झ	१५८		ह	५४८	
	चवर्ग का योग	१६३८		ऊष्म का योग	२६७५
ट	७७				
ठ	२८			समस्त योग	१६२९३
ड	६५				
ढ	२५				
	टवर्ग का योग	१९५			
त	३३४				
थ	१३				

प्रयोग की दृष्टि से इन वर्ण-समुदायों का क्रम निम्नलिखित होगा :—

(१) पवर्ग (२) अंतःस्थ (३) ऊष्म (४) कवर्ग (५) तवर्ग (६) चवर्ग (७) स्वर (८) टवर्ग

५—न्यूनाधिक प्रयोग की दृष्टि से नामों के प्रथमाक्षर का क्रम तथा प्रतिशत

इस अभिधान कोश से यह स्पष्ट हो जाता है कि नामों की सबसे अधिक संख्या र से और सबसे कम ष से प्रारम्भ होती है। इस न्यूनाधिक प्रयोग दृष्टि से नामानुसार वर्णों का क्रम निम्न तालिका में दिया जाता है। यह विलक्षण बात भी ध्यान देने योग्य है कि र के अंतर्गत राम के नामों का बाहुल्य है और क में कृष्ण सम्बंधी नामों का। ॠ लृ ङ ञ ण अक्षरों से आरम्भ होनेवाले नामों का अभाव है।

वर्ण	संख्या	प्रतिशत
र	१४६३	६·१६
स	१२६६	७·६५
म	११६६	७·१६
क	१०५२	६·४२
ब	८६४	५·३०६
श	८३०	५ ०६
ज	८२१	५·०४
प	८०४	४·६३
व	८०१	४ ६२
ग	७१६	४·४१
द	६८६	४·२२
अ	६७४	४·१४
न	६५२	४ ००२
भ	६१६	३ ७६
ह	५४८	३·३६
च	४८६	३·००१
ल	३७६	२·१२
त	३३४	२० ५
ध	२४२	१·४३
ख	२०२	१·२४
आ	१८७	१·१५
य	१७०	१·०४
छ	१७०	१·०४
उ	१६१	·६६
झ	१५८	·६७
फ	१४२	·८७
इ	१२६	·७७

वर्ण	संख्या	प्रतिशत
ण	११८	·७२
ट	७७	·४७
ड	६५	·३६६
ओ	५५	·३४
ऋ	४५	·२७
ई	४३	·२६
ठ	२८	१७
ढ	२५	·१५
ऊ	१४	०८
थ	१३	·०८
ए	१०	·०६
औ	६	·०६
ऐ	२	०१
ष	१	·००६

टिप्पणी—१००० से अधिक क म स र।
५०० से १००० तक ह भ न अ द ग व प ज श ब
१०० से ४९९ तक घ इ फ झ उ छ य आ ख ध त ल च
५० से ९९ तक ओ ड ट
२५ से ४९ तक ट ठ ई ऋ
१ से २४ तक ष ऐ औ ए थ ऊ

इस तालिका से एक अन्य रोचक बात यह स्पष्ट होती है कि सर्वप्रथम तथा अंतिम स्थान मूर्धन्य वर्ण ही ले रहे हैं। प्रयोग की दृष्टि से र सर्वोच्च है तो ष सबसे अधोदेश में।

———

प्रमुख प्रवृत्तियों का चित्रांकन (ग्राफ)
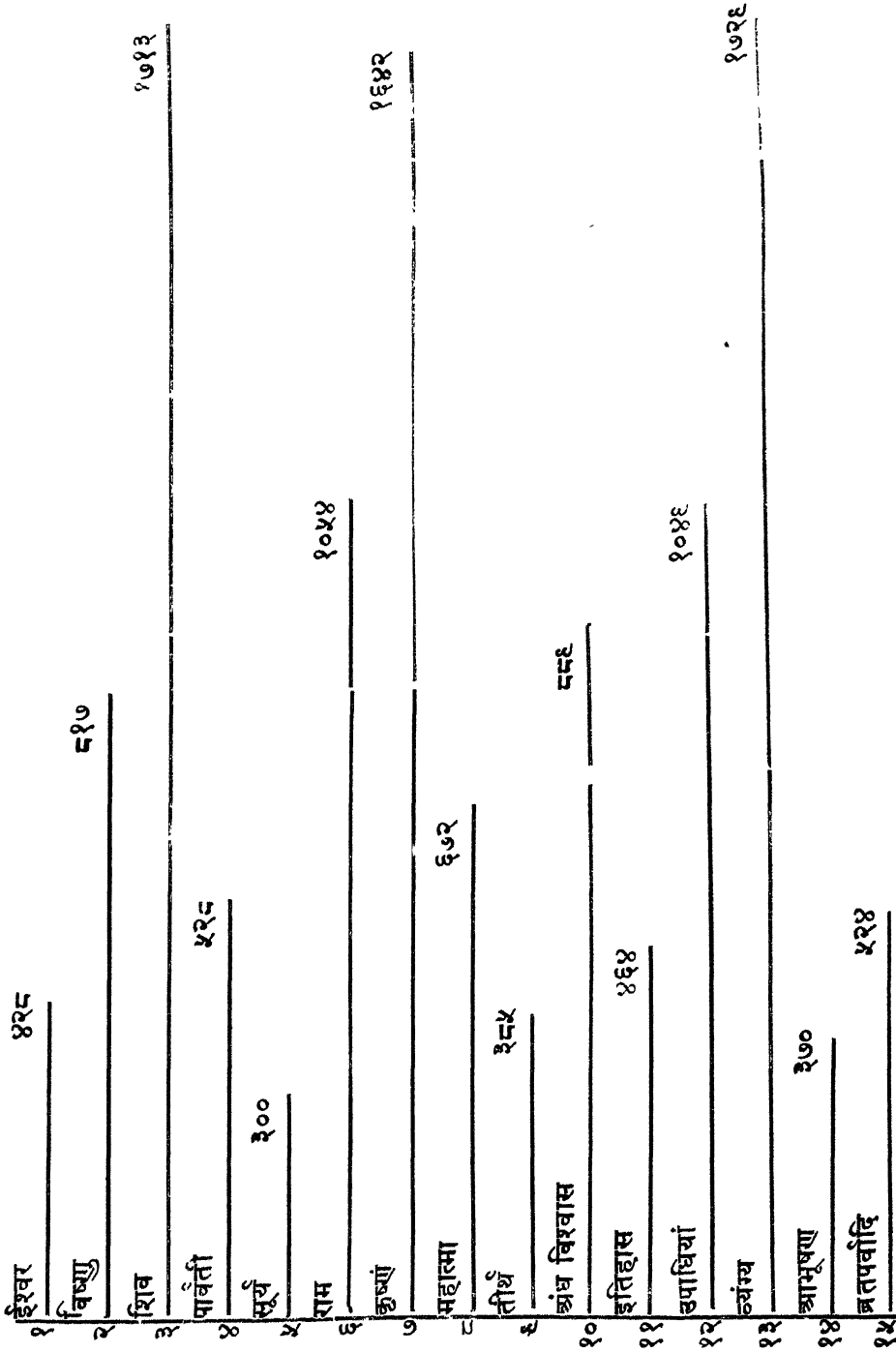
तीन सौ से कम नामवाली प्रवृत्तियों को यहाँ स्थान नहीं दिया गया है। विष्णु के बहुत से नाम राम और कृष्ण प्रवृत्तियों में प्रचार की दृष्टि से सम्मिलित कर दिये गये हैं। इसलिए विष्णु की रेखा छोटी हो गई है।

(ल) नामों के सम्बन्ध में कुछ स्मरणीय बातें

१—सम्बोधन, निर्वाचन, प्रवरण (Selection), निरसन (Elimination), अप-वर्जन (Exclusion) आदि पृथक्करण के लिए सबसे उत्तम तथा एक मात्र साधन नाम है।

२—नाम चार प्रकार के होते हैं—यदृच्छा नाम या जन्मनाम (इनमें दुलार, व्यंग्य, अंधविश्वास, महदाकांक्षामूलक आशीर्वाद के नाम सम्मिलित हो सकते हैं) (२) गुणनाम (३) क्रियानाम (४) सम्बन्ध या जाति नाम। पदवी के नामों का सम्बंध गुणनामों से भी हो सकता है और जन्मनामो (यदृच्छा नामों) से भी।

३—पदार्थों (प्राकृतिक, कृत्रिम, कल्पित), भावो (गुणों या विचारों) तथा क्रियाओं व्यापारो पर नाम मिलते हैं।

४—अधिकांश हिन्दी नाम धार्मिक, ऐतिहासिक तथा व्यंग्यात्मक हैं।

५—व्यक्तिवाचक, जातिवाचक तथा भाववाचक तीनों ही संज्ञाओं से व्यक्तियों के नाम बनाये जाते हैं।

६—ऋचाओं के शब्दो के बाद राशियों और धर्म-ग्रन्थों से नाम निकाले गये। इसके बाद नामों का सम्बंध देव, मनुष्य, पशु-पक्षी, वस्तु, स्थान, काल घटना-परिस्थिति, गुण, कृत्य, पद, पदवी आदि से हुआ। आजकल गुणबोधक नाम अच्छे समझे जाते हैं।

७—प्रत्येक प्रवृत्ति अपनी विशेषता रखती है भक्तिभाव धार्मिक प्रवृत्ति की विशिष्टता है। इस प्रवृत्ति में देव, तीर्थ, व्रत तथा महात्मा मुख्य हैं। देवों के नाम उनके अलौकिक रूप, गुण, लीला, धाम, क्रिया, प्रभाव, फलादि के कारण अपनालिये जाते हैं। देवों के अधिकांश नाम उनसे सम्बद्ध, तिथियों[1] राशियो,[2] नक्षत्रों, मूर्तियो, तीर्थों[3] (जलकुंड आदि), व्रत-पर्वों, जयंतियों आदि के कारण प्रयोग में आ रहे हैं। यह आवश्यक नहीं कि एक स्थान मे एक ही देवता और उसका मंदिर हो। एक देव अनेक स्थानो पर और अनेक देव एक स्थान पर हो सकते हैं।

---

[1] भिन्न-भिन्न ग्रंथों में तिथि—देवों के विभिन्न नाम पाये जाते हैं। दो प्रकार के नाम पृ० ५३ की पाद—टिप्पणी में दिये गये हैं। तोसरी सूची इस प्रकार है।

तिथियों के स्वामी

प्रतिपदा—अग्निदेव, द्वितीया—ब्रह्मा, तृतीया—गौरी,
चतुर्थी—गणेश, पंचमी—सर्प, षष्ठी—स्वामिकार्तिक,
सप्तमी—सूर्य, अष्टमी—शिव (भैरव), नवमी—दुर्गा,
दशमी—अन्तक (यमराज), एकादशी—विश्वेदेवा,
द्वादशी—हरि (विष्णु), त्रयोदशी—कामदेव, चतुर्दशी—शिव,
पूर्णिमा—चन्द्रमा, अमावस्या—पितर

(व्रत—परिचय पृ० ७०)

[2] राशि स्वामी—मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः
बुधःकन्यामिथुनयोः पतिः कर्कस्य चन्द्रमाः
जीवो मीनधनुः स्वामी शनिर्मकरकुंभयोः
सिंहस्याधिपति सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः।

(होडाचक्रम्)

[3] प्रयाग में १० करोड़ १० हजार तीर्थों का वास महाभारत में बतलाया गया है। तीर्थों का विस्तृत वर्णन मत्स्यपुराण तथा पद्मपुराण में मिलता है।

८—नदियों, तीर्थों तथा व्रत-पर्वोंवाले नाम जातक के जन्म सम्बंधी देश काल या मान्यता के कारण रखे जाते हैं।

९—महात्मा तथा महापुरुषों के लोकसंग्रही गुणों से प्रभावित हो मनुष्य श्रद्धा से उनके नाम ग्रहण कर लेते हैं।

१०—अजातपुत्रा तथा मृतवत्सा माताओं के कारण अंध-विश्वास के निकृष्ट नामों का श्रीगणेश हुआ।

११—दार्शनिक नामों में विषय की गंभीरता अथवा पांडित्य प्रदर्शन रहता है। भाव-भावना के नामों से अंतरावेश अभिव्यंजित होता है।

१२—गुण, उपाधि, पद, पदवी, अधिकार, धन, बल, विद्या, बुद्धि, आयुष्य, यश एवं ऐश्वर्य सम्बन्धी नाम आशीर्वादात्मक होते हैं। गुणों पर नाम रखने का मुख्य हेतु यह होता है कि जातक में उस गुण का बीज रूप से अस्तित्व पाया जाता है या उस गुण निष्पत्ति के लिए गुरुजनों का आशीर्वाद है या ज्योतिष का कोई ऐसा योग पड़ा है जिससे उस गुण का उद्रेक अवश्यम्भावी है या वह किसी महत्त्वपूर्ण उपाधि का व्यंजक है जिससे संज्ञी या उसका अभिभावक प्रभावित हुआ है।

१३—क्रियात्मक नामों में नामी के क्रिया-कलाप का उल्लेख रहता है। ये नाम प्रायः बड़ी आयु में ही सम्भव हो सकते हैं।

१४—आभूषण, मिठाई, खिलौना आदि प्रिय वस्तुओं पर नाम उनके प्रति विशेष आसक्ति प्रकट करते हैं।

१५—पशु-पक्षियों पर नाम उनकी रूपाकृति, स्वभाव अथवा गुण के बोधक होते हैं।

१६—फूलों पर नाम जातक के रूप—सौंदर्य की ओर संकेत करते हैं। कपूर, केशर, कस्तूरी, चंदनादि रंगीन द्रव्य तथा रंगों पर नाम बच्चों के कायिक वर्ण से सम्बंध रखते हैं।

१७—देश, काल, तथा घटना सम्बंधी नाम जन्म-परिस्थिति बतलाते हैं।

१८—ध्वन्यात्मक, निरर्थक, अन्वयरहित (असंगत), घरेलू, अशुभ, दोषपूर्ण एवं द्वेषपूर्ण नाम लोकप्रिय नहीं होते। उच्चारण में असुविधा तथा विलम्ब के अतिरिक्त दीर्घनाम लिखने में स्थान भी अधिक घेरता है, अतः ऐसे असुविधाजनक नाम भी वाञ्छनीय नहीं होते[1]।

---

[1] जरमनी की विश्वविख्यात लोहे की क्रप कम्पनी के अध्यक्ष का दीर्घनाम

Herr Krupp Von Bohlen und Holbach

एक दीर्घ तेलगु नाम—

Cherukuri Venkateswarlu Chhepulla Veeraswamy

लु तैलगु में आदरसूचक जी के स्थान में प्रयुक्त होता है।

स्थान तथा काल के अधिक व्यय होने के अतिरिक्त लम्बे नाम कभी-कभी परेशानी के हेतु भी हो जाते हैं। इसके सम्बंध में रूस के बादशाह जार के जीवन की एक मनोरंजक घटना इस प्रकार कही जाती है—एक बार रूसीजार आखेट खेलते-खेलते राह भूल गया। रात हो रही थी। पानी भी बरसने लगा। दूर से प्रकाश आते हुए देखकर मंत्री ने जार से कहा—'महाराज! चलिए उस घर में रात बिताई जाय'। दोनों उस ओर चल पड़े। वहाँ पहुँच कर मंत्री ने द्वार खट-खटाया तो अंदर से आवाज आई—'कौन है?' यह सोचकर कि उपाधि सहित जार का पूरा नाम लेने से गृहपति पर अधिक प्रभाव पड़ेगा और स्वागत भी अच्छा होगा, मंत्री लगातार आध घंटे तक नाम के साथ जार की सब उपाधियाँ सुनाता रहा तो अंदर से फिर आवाज आई कि इतने आदमियों के लिए यहाँ जगह नहीं है। हँसते-हँसते जार और मंत्री वर्षा में ही आगे चल दिये।

१९—लघु, सरस, सरल तथा सार्थक[1] नाम ही सुन्दर समझा जाता है।

२०—नामों में धार्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि अनेक तथ्य सन्निहित रहते हैं।

यह भी स्मरण रखना चाहिए कि निर्वचन-भेद से अर्थ-भेद तथा अर्थ-भेद से निर्वचन-भेद हो जाया करते हैं।[2]

(ब) लम्बे नामों के स्पष्टीकरण के कुछ नमूने

नामों का अर्थ करने में संकेत ग्रहण[3] के साधनों के अतिरिक्त शब्दान्वय, संधिविच्छेद, समास-विग्रह, घटना-परिस्थिति, नाम रखने का हेतु आदि पर भी ध्यान देना परमावश्यक है। इन बातों की उपेक्षा करने से लालबुझक्कड़ी अर्थ उपहास का कारण हो जाता है।[4]

अजीतप्रसाद सिंह जूदेव—राजा, तालुकेदार तथा बड़े जमींदार के नाम के अंत में बहुधा 'सिंह जूदेव' का प्रयोग मिलता है। अजीत अजित का अपभ्रंश रूप है। विष्णु, शिव, बुद्ध तथा जैनियों के दूसरे तीर्थंकर के लिए अजित शब्द व्यवहृत होता है। इन अजित देवों में से किसी एक का प्रसाद है। देव पदसूचक भी है। सिंह जाति परिचायक है। प्रसिद्ध देशभक्त अजीतसिंह की ओर भी संकेत करता है। अजित के योग से बने हुए दो नाम इतिहास में भी प्रसिद्ध हैं।

(१) अजितापीड नाम का एक राजा हुआ है।

(२) चंद्रगुप्त द्वितीय को भी अजित विक्रम कहते हैं। भादों बदी एकादशी का नाम अजिता है। कदाचित् इससे जन्म का सम्बन्ध हो।

उदयप्रताप बहादुरसिंह—उदय शब्द से अनेक सूचनाएँ मिलती हैं अभ्युदय, आगमन,

---

[1] शाहपुराधीश महाराज उम्मेदसिंह द्वारा आयोजित विदा-समारोह के समय श्रद्धेय श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय ने महाराज को धन्यवाद देते हुए कहा था 'महाराज कैसे भाग्यशाली हैं जिनके सेनानायक श्री जोरावरसिंह हैं, जिनके कोष की कुंजी श्री दौलत सिंह के करों में रहती है और श्रीकुशलपालसिंह जिनके राज्य के स्वास्थ्य संरक्षक हैं।' यह सुनकर महाराज और श्रोतागण हँस पड़े (जीवन के साथ समन्वय होने से ये नाम कैसे सार्थक हो गये हैं)

[2] नारद के निर्वचन से यह भेद स्पष्ट हो जाता है—नारद-(१) नारंपरमात्मविषयकंज्ञानं ददाति (नारं√दा + क) – ब्रह्मज्ञानी। (२) नारं नरसमूहं द्यति खण्डयति कलहेन (नारं√द्यो + क) कलहप्रिय, (३) नारं जलं पितृभ्यो ददाति (नारं√दा + क) तर्पणकर्त्ता। (संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ)

[3] शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानकोशाप्तवाक्याद् व्यवहारतश्च।
वाक्यस्य शेषाद् विवृतेर्वदन्ति सान्निध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः॥
अर्थात्—व्याकरण, उपमान, कोश, आप्तवाक्य, व्यवहार, वाक्यशेष विवरण और प्रसिद्ध शब्द के सान्निध्य से संकेत ग्रहण होता है।

[4] लालबुझक्कड़ी अर्थ का नमूना—मंदोदरी = मन + दो धरी (धड़ी) अर्थात् एक मन दस सेर, मंदोदरी का यथार्थ अर्थ कृशोदरी है जो लंबोदर के विलोम का स्त्रीलिङ्ग रूप है। अगस्त्य मुनि की रूपवती पत्नी लोपामुद्रा का असली अर्थ है जिसने विश्व की समस्त सुन्दरियों के रूपाभिधान को लोप कर ब्रह्मा की सृष्टि पर अपनी मुद्रा लगा दी हो। यहाँ अनुमान से काम चलना कठिन प्रतीत होता है।

उदयसिंह, उदयपुर, उदयन, उदयराज, उदयातिथि। प्रतापगुण बोधक है और महाराणाप्रताप की ओर भी संकेत करता है। बहादुर विशेषण है और सिंह जातिपरक हो सकता है। जातक का जन्म सूर्य चन्द्रादि नक्षत्र अथवा तिथि के उदय काल में हुआ है। जन्मस्थान उदयपुर हो सकता है। नवजातशिशु भाग्यशाली, प्रतापी तथा सिंह से समान बहादुर हो।

कृष्णार्जुन—यह लघु नाम रहस्यपूर्ण प्रतीत होता है। सबसे प्रथम यह व्यक्ति के रंग रूप की ओर इंगित करता है। कृष्ण श्यामल हैं और अर्जुन श्वेत, स्थूल रूप से उसे तिल-तंडुल वर्णी कह सकते हैं अथवा श्यामल-शुभ्र बादल की उपमा अधिक उपयुक्त होगी। इस अभिधान-माला में रंगों का सुन्दर समावेश हुआ है। लाल-पीले नीले आदि विविध प्रकार के रंगों के नाम स्पष्ट रूप से मिलते हैं। लक्षणा के द्वारा भी अनेक रंगों को इन वस्तुओं से प्रकट किया गया है।

(१) फूल—गुलाब, सेवती, कमल, कुमुद, चम्पा आदि।

(२) फल—नारंगी, नीबू, बादाम, अनार, अंगूरादि।

(३) मणियाँ—हीरा, मोती, लाल, प्रवाल, नीलमादि।

(४) धातुएँ—सोना, चाँदी, ताँबा, लोहादि।

(५) प्राकृतिक पदार्थ—चन्द्र, चाँदनी, ऊषा, प्रकाश, मेघ गगनादि।

(६ अन्य वस्तुएँ—कपूर, केशर, कस्तूरी, मक्खन, मिश्री, दूध, दही, तिल, गेहूँ, कुंकुम, चन्दन आदि।

दूसरी विचित्र सूचना यह मिलती है कि नामी फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष में उत्पन्न हुआ है। अर्जुन का एक नाम फाल्गुन भी है।

भक्त भगवान का अत्यन्त प्यारा होता है अतः दोनों का मेल सोने में सुहागा या सुगंध का काम करता है। अर्जुन कृष्ण के सखा होते हुए भी उनके अनन्य भक्त हैं। यह नाम सदा उसी अनन्यता का स्मरण दिलाता रहता है। इसके अतिरिक्त अर्जुन और कृष्ण नर-नारायण के अवतार भी माने जाते हैं।

कृष्णा (द्रौपदी) के पति अर्जुन विच्छेद करने से यह नाम पति-पत्नी का आदर्श प्रेम उपस्थित करता है। द्रौपदी आदर्श भार्या है और अर्जुन आदर्श भर्ता। यह नाम सौभाग्य का भी सूचक है। अर्जुन अपने शौर्य, औदार्य, सौन्दर्यादि गुणों के लिए प्रसिद्ध थे। जैसी उनकी बाह्याकृति सुन्दर थी वैसा ही उनका अंतःकरण भी पवित्र था। उनके सब काम शुद्ध होते थे। यथा

पृथिव्यां चतुंरतायां वर्णोमे दुर्लभः समः।
करोमि कर्म शुद्धंच तेन मामर्जुनं विदुः।

कृष्णा (दुर्गा) के अर्जुन (इंद्र) अर्थात् शिव ऐसा आशय भी सम्भव है। सितासित रंग के अर्थ में लेने से यह बलराम का बोधक है।

गगनदेव नारायणसिंह—(१) हिन्दुओं में पंच तत्वों को भी देव संज्ञा दी गई है। (२) गगन को विष्णु का पद तथा शिव का केश माना गया है। (३) यह दिव्य स्वरूप है तथा शब्द का आश्रय है अतः गगन की गणना देवों में की गई है। नारायण देवत्वबोधक है।

गगनदेव सूर्य के अर्थ में भी लिया जा सकता है। एक भावना यह भी हो सकती है कि गगन के सदृश असीम, नीलाभ दिव्य स्वरूप नारायण (विष्णु)। गगन शब्द से व्यक्ति के (नील वर्ण) की ओर भी संकेत होता है। सिंह जातिसूचक है।

घनेन्द्रसिंह जूदेव—इस नाम से व्यक्ति के विषय में इन बातों का पता चलता है। (१) सिंहजूदेव से उसके प्रभुत्व का बोध होता है। (२) सिंह से क्षत्रिय जाति विदित होती है। (३) घन से उसके शरीर की श्यामता लक्षित होती है। घनेंद्र अर्थात् इंद्र के प्रति श्रद्धा प्रकट होती है।

राजाओं में आदर के लिए जी के स्थान पर जू का प्रयोग होते हुए देखा जाता है। देव सम्मानार्थक उपाधि है। यह घनेंद्र के देवत्व की सूचना देता है।

चन्द्रभान प्रताप नारायणसिंह—इस दीर्घ नाम से यह विज्ञप्तियाँ प्राप्त होती हैं।

(१) यह नाम किसी बिहारी अथवा किसी समृद्धशाली क्षत्रिय का प्रतीत होता है, क्योंकि इन्हीं दोनों वर्गों में सिंह समन्वित दीर्घ नाम पाये जाते हैं।

(२) चन्द्र, सूर्य दोनों प्रतापी देव हैं।

(३) कृष्ण तथा सत्यभामा के प्रतापी पुत्र चन्द्रभानदेव संज्ञक हैं अथवा उनके प्रताप गुण को नारायण रूप माना है।

(४) चन्द्र के प्रकाशवाले प्रतापी नारायण अर्थात् शिव अथवा सूर्य चन्द्र दोनों के प्रताप से युक्त शिव।

(५) सूर्य, चन्द्र दोनों ज्योतिर्मय पिंडों के ग्रहण करने से २४ घटे अर्थात् अक्षुण्ण प्रतापवाले नारायण विष्णु।

(६) यह नाम जन्म काल की ओर भी संकेत करता है। प्रदोष वेला से पूर्व ही जन्म हुआ है जब कि सूर्य अस्ताचल पर अपनी अंतिम आभा विसर्जन कर रहा है और चन्द्र ने अपने आगमन की सूचना दी है।

जयकृष्णनारायणबहादुर—यह अभिवादन प्रवृत्ति का नाम है। नारायण शब्द कृष्ण के देवत्व का बोधक है और बहादुर वीरता के अर्थ में आता है। सम्पूर्ण नाम का अर्थ हुआ वीर कृष्ण भगवान की जय हो अथवा उक्त गुणयुक्त कृष्ण तुम्हारा कल्याण करें—यह आशीर्वाद भी निहित है। इस अभिधान में इष्टदेव का नाम, अभिवादन तथा आशीर्वाद इन तीन प्रवृत्तियों का समन्वय पाया जाता है।

राजा प्रतापकिशोर नारायणमल—इसमें राजा पद सूचक है तथा मल (मल्ल) गोरखपुर के शाही ठाकुरो को कहते हैं। इस नाम से महाराणा प्रताप के प्रति श्रद्धा की भावना प्रदर्शित होती है। एक अन्य अभिप्राय यह भी हो सकता है कि भक्त किशोरनारायण अर्थात् कृष्ण के प्रताप से आकृष्ट हुआ है। व्यक्ति के प्रताप गुण के लिए विशेष कामना भी प्रतीत होती है।

राजा शारदा महेशप्रसादसिंह शाह—इस नाम में राजा और शाह दो उपाधियाँ हैं। शारदा महेश शब्द अर्द्धनारीश्वर की युवयुग्म प्रतिमा की ओर संकेत करते हैं। प्रसाद पूजासक्ति प्रकट करता है और सिंह जातिसूचक है। शारदा, कमला, लक्ष्मी, रमा आदि शब्द शिव के सम्पर्क से दुर्गावाची होते हैं।

रामरणविजय प्रसादसिंह—इसका तात्पर्य यह प्रतीत होता है कि राम के रण-विजय के प्रसादस्वरूप व्यक्ति। सिंह क्षत्रियत्व का बोधक भी है। रण-विजय से विजयादशमी की ओर भी लक्ष्य है।

सुरेन्द्र वीर विक्रमबहादुरसिंह[1]—इंद्र (सुरेन्द्र) और वीर उपेंद्र (विक्रम = त्रिविक्रम) के सदृश बहादुर क्षत्रिय पुत्र अथवा अंतिम चारों शब्द सुरेंद्र के विशेषण हैं। इंद्र और वीरविक्रमादित्य के समान बहादुरों में श्रेष्ठ का भाव भी व्यक्त हो रहा है।

सिंह शब्द का इतिहास

[1] महाभारत और पुराण काल तक नामों के अन्त में सिंह शब्द का प्रयोग नहीं पाया जाता। सिंह का सबसे पहला प्रयोग गौतम बुद्ध के नाम शाक्यसिंह में मिलता है—

सशाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्चसः
गौतमश्चार्कबंधुश्च मायादेवी सुतश्चसः ।१६ (अमरकोष कांड १, स्वर्गवर्ग)

यह २५०० वर्ष पूर्व की बात है। उस समय सिंह तथा उसके पर्याय केसरी, शार्दूल आदि गुणबोधक उपनाम ही रहे होंगे। शाक्यसिंह का अर्थ हुआ शाक्यवंश में सिंह के समान शक्तिशाली, श्रेष्ठ आदि।

इसके पश्चात् विक्रम के नवरत्न अमरसिंह कोशकार (ई० पू० ५७ के लगभग) के नाम में सिंह का दर्शन होता है। इसके बाद महाराज रुद्रसिंह (वि० सं० २३८ ई० सन् १८१) और राजा विश्वसिंह (वि० सं० ३३५ के लगभग) के नामों में सिंह प्रयुक्त हुआ है (दे० भावनगर इंस्क्रिपशंस पृष्ठ २२)। उन्हीं शक क्षत्रपों में सिंह नामधारी रुद्रसिंह (वि० सं० ४४५) और सत्य सिंह का उल्लेख प्राचीन शिलालेखों, ताम्रपत्रों और सिक्कों पर मिलता है। (दे० ऐपिग्राफिया इंडिका पृ० ८५)

दक्षिण के सोलंकी राजवंश में दो जयसिंहों (वि० सं० ५६४, १०८६) के नाम मिलते हैं। (दे० पृष्ठ १२ इंडियन एंटीक्वेरी भा० तथा म० म० रा० ब० गौरीशंकर ओझा कृत सोलंकियों का प्राचीन इतिहास पृष्ठ १५, ९१)। मालवा के परमार राजा बैरसिंह प्रथम (वि० १० श०) (दे० ऐपिग्राफिया इंडिका भाग १ पृष्ठ २३४) तथा गहलौतवंशी महाराणा उदयपुर (मेवाड़) के पूर्वज वैरीसिंह, विजयसिंह, अरिसिंह आदि के सिंहांत नाम मिलते हैं। (दे० वार्षिक रिपोर्ट राजपूताना अजायबघर सन् १९१५-१६ ई०, पृ० ३ तथा ऐ० इं० भाग २ पृष्ठ १०)। कछवाहों में नरवर (ग्वालियर) के गगन सिंह, शरदसिंह और वीरसिंह सबसे पहले सिंह नामधारी राजा हुए (दे० बीरसिंह देव कछवाहा का शिलालेख वि० सं० ११७७ कार्तिक वदि ३० रविवार—जर्नल आफ अमेरिकन सोसाइटी भाग ६, पृ० ५४२)

वि० सं० १२३६ वैशाख सुदि ५ गुरुवार के शिलालेख में चौहानों में सबसे पहला नाम राजा समरसिंह का है (दे० इं० एंटी० भाग १, पृष्ठ १९५१ तथा ऐपि० इंडिका जिल्द ११पृ०)। बाद में राठौर सिंह का अधिक प्रयोग करने लगे (दे० म० म० रा० ब० डा० गौरीशंकर ओझा कृत जोधपुर राज्य का इतिहास भाग १, पृष्ठ ३५१)

मुगल काल में नामों के साथ सिंह शब्द जोड़ने का प्रचार बहुत बढ़ गया। राजपूतों के अतिरिक्त अन्य जातियों में भी इसका व्यवहार होने लगा। लोग सिंह के असली अर्थ को भूल गये। अब वह न उपाधि रहा, न गुणबोधक। गुरुगोविन्द सिंह (वि० सं० १७२२—६५ तक) ने धार्मिक रूप देकर सिक्खों के लिए नाम के साथ सिंह रखना अनिवार्य कर दिया। १८वीं शती से पंजाब के सिक्खों और राजस्थान के राजपूत क्षत्रियों में सिंह का प्रचार अधिक हो गया। वीरत्व का बोधक समझकर अन्य जातियों के व्यक्ति-विशेष ने भी सिंह शब्द का प्रयोग आरम्भ कर दिया। जोधपुर के महाराज अजीतसिंह राठौर (वि० सं० १७६३—८१) के दीवान दिल्लीवाले पंचोली (कायस्थ) केसरीसिंह झामरिया, महाराज अभयसिंह राठौर (वि० सं० १७८१ से १८०६ तक) के कामदार (दीवान) भंडारी रतनसिंह ओसवाल आदि अनेक उदाहरण पाये जाते हैं।

इस विवरण से स्पष्ट है कि बौद्ध काल से गुप्तकाल (सातवीं शती) तक सिंह उपाधिस्वरूप रहा। १० से १७वीं शती तक वीरता का चिह्न समझा जाता था। बाद में कई जातियाँ बिना किसी भेद भाव के सिंह का प्रयोग करने लगी। पंजाब और राजस्थान के अतिरिक्ति उत्तर प्रदेश की अनेक जातियों में भी सिंह का प्रयोग प्रचुर रूप से होने लगा।

—संकलित (दे० धर्मयुग जून १४,१९५३ में श्रीजगदीशसिंह गहलौत-अध्यक्ष, पुरातत्व विभाग जोधपुर का लेख 'सिंह शब्द की मीमांसा')

(श) अतिरिक्त नामों की सूची*

(अ)—अंगराज (कर्ण) अंजनीरंजन अकिंचन (निर्धन) अखंडप्रतापसिंह अखिलेंद्रप्रसाद अग्नेश्वर प्रसादसिंह अघोरनाथ[1] अच्छूराम अजंटी (Agent प्रतिनिधि) अजुगनाथ[2] अणुगोपालराम (अणु-छोटा) अतनुमोहन (कामदेव.) अतवारूलाल (आदित्यवार.) अतींद्रकुमार इंद्रियों से परे.) अथर्वानंद (अथर्ववेद अथर्वऋषि) अद्भुतप्रकाश अधिपकुमार अधीशचन्द्र अध्यात्म[3] अनंतजीतसिंह अनंतपाल अनतसागर अनग्राहित (त्यक्त) अनमोलकुमार अनाथबन्धु अनादिनाग अनादिनिधन (आदिअंतरहित) अनामोरामसिंह (नामरहित, मलमास) अनियकुमार अनित्यकुमार[4] अनिमेष अनिलरंजन अनिलेश्वर अनुगृहितनारायणसिंह अनेगसिंह (दाई को पुत्र जन्म का नेग नहीं दिया) अपूर्वबन्धु अभयकांत अभिजित (नक्षत्र, एक राजा) अभिनंदनशरण अभिन्नहरि अमलकुमार अमलाराम अमलेंदु अमिताभ-राय[5] अमितकुमार अमियेंदु अमूल्यरत्न अमृतकृष्ण अरविंदप्रताप अरिहंत (शत्रुघ्न, अर्हत्) अरुण-गोपाल अरुणध्वज (कुक्कुट) अरुणभानप्रसाद अर्घ्यकुसुम (देवता पर चढ़ाया हुआ फूल) अलबर्ट-कृष्णअली अवनींद्रलाल अशेषकुमार अष्टमीचन्द्र असीमकुमार।

(आ)—आकाशलाल आज्ञापाल आत्मशंकर आदित्यभूषण आदित्यविक्रमसिंह आदीशरंजन आदेशचंद्र आदेश्वरप्रसाद आफतियालाल (आपत्ति-झगड़ा) आर्तत्राण (दुखियों के त्राता) आर्द्रा-कुमार आर्यकुमार।

(इ)—इंदिरेशचरणदास (इंद्र···) इंदुभाल इंदुमोहन इंदुशंकर इद्रगोपाल (इंद्रोत्सव भाद्र शुक्ला १२) इद्रजीतकुमार[6] इंद्रबल इंद्ररमण इंद्रासनलाल इंद्रेशकुमार इकन्नीलाल इकन्हू (एक+आणक) इमिलिया (∠अम्ल) इमलियागांव (प्रयाग) में मसुरिया देवी का मंदिर है।

---

[1] अघोर भैरव का विलोम था और सौम्य अर्थ में आता था। यह शिव का नामान्तर है। परन्तु कुभक्षी अघोरी साधुओं की कुसंगति के कारण यह कुत्सित अर्थ देने लगा। नामी किसी अघोरी बाबा के आशीर्वाद का फल है अथवा इसके जन्म का सम्बन्ध अघोरा तिथि (भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी) से है।

[2] एकमेवद्वितीयोनास्ति।

[3] कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः का मे जननी को मे तातः
इति परिभावय सर्वमसारं विश्वंत्यक्त्वा स्वप्नविचारम्

भज गोविन्दं भज गोविन्दं (शंकर)

[4] कुछ दिन अन्य से पाला गया, जिसकी किशोरावस्था नित्य नहीं है (दार्शनिक भाव)। नित्य किशोर (कृष्ण) का विलोम।

[5] बुद्ध को भिन्न भिन्न जन्मों में भिन्न भिन्न नामों से अभिहित किया गया है इन नामों की तीन कोटि हैं। प्रथम वर्ग में अक्षोभ्य, रत्नसंभव, अमोघसिद्धि, अमिताभ, वैरोचन तथा ध्यानी बुद्ध हैं। ये अलौकिक सत्व तत्वों के दूषित प्रभाव से मुक्त होते हैं और अपार दिव्य शक्तियाँ रखते हैं। द्वितीय में अवलोकितेश्वर, अशोककांत, हयग्रीव आदि हैं और तृतीय में बोधिसत्व मंजुश्री मुख्य हैं।

[6] सुपर्णो गरुडस्तार्क्ष्यो गरुत्मान् शकुनीश्वरः
इन्द्रजिन्मंत्रपूतात्मा वैनतेयो विषाशयः ।१२८। (नाममाला पृ० २६)

* इस नाम सूची में कहीं कहीं नामों के मूल तत्सम रूप या अर्थ कोष्ठक में दे दिये गये हैं। स्थान की बचत के लिए आगे पीछे के त्यक्त शब्दों को कोष्ठक में बिंदुओं से दिखलाया गया है। स्पष्टीकरण के लिए कहीं कहीं पाद टिप्पणियां भी दी गई हैं।

(ई)—ईशकुमार ईश्वरप्रसन्न ।

(उ)—उग्रवीर उज्ज्लकीर्ति उत्तमकुमार उत्पलकुमार (कमल.) उत्पलाक्षरक्षित उत्पाती (झगड़ू) उदमीसिंह (∠ उद्यमी.) उदयकृष्ण उदयन (वत्सराज) उदयसरोज उद्गीथ[1] (प्रणव) उद्देशकुमार उपजीतसिंह उपकारशील उपदेशनंदनप्रसाद उपदेशबहादुर उपेंद्रवीरसिंह उमारक्षित उमारचित उमावर उमेंद्रनारायण उम्मीदपालसिंह उरुक्रम (विष्णु) उर्वीशचंद्र (भूप.) उसानारायणसिंह ।

(ऋ)—ऋतध्वज (सत्यकेतु) ऋतुपर्णकिशोर ऋतेंद्रकुमार ऋत्विकनाथ ऋषिकांत ऋषिगोपाल ऋषिदयालु ।

(ए)—एकांबरेश्वर (शिव) एवजसिंह (बदले में) ।

(ऐ)—ऐश्वर्यलाल ।

(ओ)—ओमऔतार ओमकृष्ण ओमचद्र ओमदयाल ओमनंदनशरण ओमप्रभात ओमभूषण ओमरामेश्वरप्रसाद ओमवीरसिंह ओमेंद्रपाल ।

(क)—कंचनवरणश्याम कणादऋषि[2] कनिष्ककुमार कमलकाति कमलेंदु करुणाप्रसाद कर्णचंद्र कल्याणशकर कल्लोलकुमार कवींद्रकिशोर काचीलाल कांतकुमार कातिभूषण काजलबरन कामाख्याराम कामिनीकुमार कार्तिककुमार कालाचांद (कृष्णचंद्र) काशिकानंद (काशी.) काशीगोपाल किरण-कुमार किरणबीरसिंह किरीटसिंह (मुकुट.) किलागीरसिंह (दुर्गाध्यक्ष) किशोरकुमार किसबर (बिसंबर की नकल पर कृष्ण का विकृतरूप) कीमतीलाल कीर्तिकुमार कुंजरमणि (गणेश) कुंडलचंद्र कुंवरकंधैया[3] कुक्कुर (कुकुरदंत) कुटुंबप्रसाद कुणालकुमार (अशोक पुत्र) कुमारकांत कुमारचंद्र कुमारज्योतिभूषण-प्रताप कुमारेंदु कुमुदबिहारीसिंह कुमुदबंधु (चंद्र) कुलजीतनारायण कुलदीपकुमार कुलदीपप्रकाश कुलदीपराज कुलतारचंद कुलप्रकाश कुलप्रसाद कुलबंधु कुलमणि कुलहारसिंह कुलेंद्रचंद्र कुशप्रसाद कुशेंद्रसिंह कुसुमाकरनाथ (बसंत.) कृत्यानंद (कृति, कृत्य, कृत्या + आनंद) कृपाकात कृष्णकन्हैया कृष्णमायाशरण कृष्णविभूति केलाप्रसाद केवलकिशोर केशरभान केशरीनाथ कैलासप्रतापसिंह केशिनी-प्रसाद (दुर्गा.) कोटिउदयभान[4] कोमलबहादुर कौशलेंद्रनाथ कौशलेशनारायण क्रतुंजयप्रसाद (शिव.) क्षितीशकात क्षितेंद्रनाथ ।

(ख)—खक्कूराम (खाकीसाधु) खगेंदनाथ खद्योतचंद (जुगनू) खियामल खुरमालाल खुशदयाल खुशीराज खेतीलाल खेदीलाल खेरा खेरेश्वरप्रसाद ।

(ग)—गंगासागरराम गगनचन्द्र गजमोचनसिंह (विष्णु) गजपालसिंह गजरपालसिंह (गजरा-फूलमाला, कलाई का गहना) गरुडध्वजलाल गर्भदेवसिंह गिन्नोलाल गिल्लौ गीतास्वामी (कृष्ण)

---

[1] यः उद्गीथः स प्रणवः यः प्रणवः स उद्गीथः (छां० १·५·१)

[2] सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया जाय तो कणाद (खेत से दाने बीनकर खानेवाला), चणक (चना), उद्दालक (वनकोदो) जैसे तपस्वियों के नाम न तो कुदई की तरह अंधविश्वास के अंतर्गत आते हैं और न बैंगन नाम की भाँति व्यंग्य में । आगरा के आलूबाबा (यह केवल आलू खाकर ही रहते थे) के सदृश वे केवल उन अन्नों पर ही जीवन निर्वाह करते रहे होंगे । शिव प्राप्ति के लिए पार्वती कुछ दिनों वन में पत्तियां खाकर ही तपस्या करती रही थी, फिर पत्ते खाना भी बंद कर दिया था तब वह अपर्णा कहलाई । ऐसे नाम घटना-परिस्थिति की ओर संकेत करते हैं ।

[3] कुछ विद्वान् कन्हैया, कन्धैया काहन आदि की निरुक्ति फारसी के कह (छोटा) से कल्पना करते हैं । क्योंकि कृष्ण नाटे थे ।

किसी किसी की यह भी धारणा है कि कृष्ण का सदा नंदबाबा के कंधे पर बैठने का स्वभाव सा पड़ गया था । इसलिए कंधा से कन्धैया (कन्हैया) नाम पड़ा । जैसे दिन भर गोदी में रहनेवाले बालक को गुदना कहने लगते हैं ।

[4] कोटिसूर्यप्रतीकाशंत्रिनेत्रंचंद्रशेखरं ।

गीष्पति (बृहस्पति) गुरुजीतसिंह गुरुभजनसिंह गुरुभीतसिंह गुरुशिवचरणसिंह गुरुसुमिरनसिंह ('स्मृति') गुलहजारीलाल गोकुलभाई गोकुलमोहनगोपाल गोतमऋषि गोतमलाल गोपबंधु गोपालचन्द्रनाथ गोपालमुरारी गोपालमूर्ति गोरखनाथराम गोमल (गोबर) गोरागचरण गोलकविहारी (गोलोक.) गोलोकचंद गोलोकविहारी गोष्ठशाल (गोपाल) गोष्ठविहारी गौचरणसिंह गौतमस्वरूप गौरगोविंद ग्यारसी (एकादशी) ग्रंथसिंह (गुरुग्रंथ, धर्मग्रंथ)।

(घ)—घनसारसिंह (कपूर.) घुंडीलाल (फुदना < ग्रंथि) घुघलीसिंह घोटू।

(च)—चंद्रअवतंस[1] (शिव) चंद्रकमल चद्रकिरण चंद्रप्रभाकर चंद्रभागा (चिनावनदी. दक्षिण की एक नदी) चंद्रभाग्यप्रसाद चंद्रमधुसिंह चंद्रमाधवप्रसाद चंद्रविजेशरनारायणसिंह चंद्रविहारी चंद्रवीरसिंह चक्रनाथ चपलकुमार चरणआधीन चितरंजननारायण चितानीलाल चित्रमयभूषण चित्रमल (चित्रानक्षत्र.) चिन्मय चिरंजीत (चिरंजीव, कामदेव) चीवरचंद्र (चिथड़ा.) चुखईप्रसाद चुल्हईराम (<चुल्लि.) चोखर (भूसी)।

(छ)—छंगुरिया[2] (<षडगुलि) छकौड़ीमल छत्तराम (<छत्र, क्षत्र) छितानीलाल (डलिया) छुन्नूराम छेदानंदप्रसाद[3]।

(ज)—जक्खू (< यक्ष — जघैयादेवता) जगतपते जगतभूषण जगतरंजन जगतराजसिंह जगधन जगप्रवेशसिंह जगभावन जगमित्र जगसुहावनसिंह जननीराम जनमचंद जमरुदलाल (जमुर्रुद-मरकतमणि.) जयकेतु जयप्रदीप जयप्रसाद जयराजकृष्ण जयराम जयसूर्य जयेंदुविकास जयेंद्रमोहन जसमेरसिंह जलसिंह जागीरसिंह जागेद्प्रकाश जातिभूषण जालपावत्ससिंह जुगेश्वरप्रसाद जूठनलाल (<जुष्ठ) जिनेशचंद जीवनप्रकाश जीवेंदुभूषण जैराधेश्याम ज्ञानपति ज्ञानरंजन ज्ञानवर्द्धन ज्ञानेंदुविकास ज्ञानेंद्रविहारी ज्ञानेंद्रनरेंद्र ज्ञानेंद्रनाथ ज्ञानेंद्रवीर ज्ञानेशकुमार ज्योतिप्रकाश ज्योतिप्रिय ज्योतिभानुपति ज्योतिर्मय ज्योतिमोहन।

(झ)—झंमना[4] (झाम झब्बा फुदना) झकझक (झगड़ा) झट्टू (झटिति) झपसू (निद्रालु) झांगीराम (झंगा.) झींगुरराम झुठनलाल (< अयुक्त.) झौवा (डलिया)।

---

[1] आहुर्नेत्रोत्थमत्रेः स्तुतममृतनिधेयं हरेर्नर्मबंधुं,
मित्रं पुष्पायुधस्य त्रिपुरविजयिनो मौलिभूषाविधानं
वृत्तिश्चैत्रं सुराणां यदुकुलतिलकं बाधवं कैरवाणां
सम्प्रीतिं वस्तनोतु द्विजजनयतिश्चंद्रमाः सर्वकालम्
(यशस्तिलक)

[2] ह्रानिवदाधिक्यमप्यङ्गानांविकारः (यास्क)

हीनत्व अथवा आधिक्य के अतिरिक्त अंग की अन्य विकृति भी व्यंग्य नाम का हेतु हो सकती है। अष्टांगी वक्रता होने से अष्टावक्र नाम पड़ा। (कहते हैं कि एक बार उदर से ही अष्टावक्र ने अपने पिता कहोड (क — जल + होड — नाव) को एक अशुद्धि पर टोक दिया था। इस उद्दण्डता से क्रुद्ध हो पिता ने शाप दिया जिससे पुत्र का शरीर आठ स्थानों में टेढ़ा हो गया। इस विचित्र वक्रता को देखकर जनक की सभा के लोग हंसने लगे तो अष्टवक्र के मुँह से सहसा ये शब्द निकल पड़े—अरे क्या मैं चमारों की सभा में आ गया।)

[3] अंध रूढ़ियों में विश्वास रखनेवाले मनुष्यों की यह ध्रुव धारणा है कि विकलांगी व्यक्ति को किसी भावी अनिष्ट की आशंका नहीं रहती। इसलिए जातक का कान या नाक छेद देते हैं।

[4] झम्मन नाई के पेट में बात न पची। राजा के डर के मारे उसने किसी आदमी से तो न कहा, परन्तु चुपचाप एक दिन एक पेड़ से कह आया कि हमारे राजा के बकरी के कान हैं। थोड़े दिनों बाद उस पेड़ को काट कर एक सारंगी और एक तबला बनाये गये। गायक उन बाजों को

(ट)—टिगरी (<टेगरी<तितिडी –इमली) टेसू (ढाक के फूल, एक उत्सव)।

(ठ)—ठनठनप्रसाद (निर्धन)।

(ड)—डंबर डबलू[१] डब्बलिया डालिम (दाडिम—अनार) डींगराम (<डीन) डोरिया[२] <डोरक (सुरति, मंत्रित सूत्र, मेढ़)।

(ढ)—ढाकनसिंह[३] (पलाश वन में जन्म)।

(त)—तकदीरबहादुर तडितकुमार तपनकांत तपेंद्रनाथ तपोवर्द्धन ताड़ीलाल (ताड़-हाथ का गहना) तानाजीसिंह तापस ताम्रध्वज (मुर्गा) तारनी ताराभान तारिणीश तारेश्वरप्रसाद तिमिरवरण (कृष्ण) तिलकभगवान तिलकुआ तिलसू तीरथनाथसिंह तीरथप्रकाश तुंगेश्वरप्रसाद तुषारकुमार तेजवर्द्धन त्रिजगतभाष्कर (कृष्ण) त्रिपुरमर्दनप्रसाद (शिव) त्रिपुरेश त्रिभुवनबहादुर त्रिवेदीभाष्कर।

(थ)—थानूराम थुन्नी (<स्थूण)।

(द)—दक्खिनीप्रसाद दमनसिंह दर्पेंद्रकुमार दलप्रतापसिंह दादाभाई (नौरोजी) दानेश्वरप्रसाद दिगबरनारायण दिग्विजयप्रतापनारायण दिग्विजयबहादुर दिनेशप्रतापबहादुर दिलजीतसिंह दिलबागराय (.हर्ष.) दिललागराय (.लग्न.) दिव्यरूप दिव्येश्वरसिंह दिन्हारी (अधिक दिनों में उत्पन्न) दीनसेनसिंह दीपक[४]कुमार दीपकनारायण दीपकशंकर दीपाकर दीप्तेंदुकुमार दुखदमनानंद दुखबंधु दुबराई दुबरीप्रसाद दुर्गेशकुमार दुलारचंदराम दूरदर्शक (यंत्र) देवनंदनप्रसाद देवरत्न देवलोचनसिंह देवशेखर देवसुमन (लवंग) देवीअधार देवेंद्रविहारीलाल देशचंद देशज्योति देशदीपक देशप्रिय देशवीरसिंह देवेश्वर द्वारकानरेश द्वारराम द्विजमणि द्विपेंद्रनाथ (गणेश)।

लेकर राजा की सभा में आये। बाजे बजने लगे। सारंगी ने तान छेड़ी —राजा के बकरी के कान—बकरी के कान। मंजीरा बोला —किन किन किन्ने कही—किन्ने कही। मृदंग से आवाज निकली —झम झम झम्मन ने —झम्मन ने। झम्मन नाई का राजा के हुक्म से सिर काट लिया गया। (इस कथा से मूल अव्यक्त ध्वनि की ओर संकेत है।)

[१] बचपन में एक बालक को अँगरेजी का डबलू (W) कहना नहीं आता था इसलिए नाना ने उसका नाम डबलू रख दिया। बड़े होने पर भी डबलू ने पीछा नहीं छोड़ा। उर्फ (उपनाम) के साथ चिपका ही रहा। इसी तरह एक बच्चे को 'मी' कहने लगे क्योंकि वह बोलने पर हर चीज को मी कहता था।

[२] जननी जनक बंधु सुत दारा
तनु धनु भवन सुहृद परिवारा।
सबकै ममता ताग बटोरी
मम पद मनहि बांध बरि डोरी॥ (तुलसी)

[३] व्यंग्य का रंग कितना गहरा होता है, यह बात नीचे लिखी एक मनोरञ्जक कहानी से स्पष्ट हो जायगी।

काश्मीर के वासुदेव पंडित के घर एक शहतूत का पेड़ था। इसलिए लोग उसे तूल (तूत) पंडित कहते थे। इस व्यंग्य नाम से बचने के लिए उसने पेड़ को ऊपर से कटवा दिया। लोगों ने अब उसे मुंड पंडित कहना शुरू कर दिया। वासुदेव ने उस पेड़ को जड़ से खुदवा दिया तो उस जगह एक गड्ढा सा हो जाने से वह खड्डु पंडित कहलाने लगा। अन्त में परेशान होकर उसने उस गड्ढे को मिट्टी से भर दिया। मिट्टी के अधिक हो जाने से उस स्थान पर एक टीला सा बन गया, तब से वह बेचारा टेंग (तुंग) पंडित हो गया। (Dr. Krishna Lal Shridharani—Secularism is in the veins of Kashmir People—A. B. Patrika, June 29, 1958)

[४] भैरवः कौशिकश्चैव हिंदोलो दीपकस्तथा।
श्रीरागो मेघरागश्च रागाः षडिति कीर्तिताः॥

(ध)—धनंजयकुमार[1] धनाधीश (कुबेर) धर्मभानु धर्मरत्न धर्मरक्षित धर्मेंद्रवीरसिंह धर्मेश्वरनाथ धारानाथ धीमानकुमार धीरजगोपाल धीरजभानसिंह धीरेंद्रनारायण धीरेंद्रस्वरूप धुंधबहादुर (ढुंढि) धूमवीरसिंह धैर्यशील धोतासिंह (<धेवता) ध्रुवज्योति।

न—नंदपालसिंह नंदबाबा नन्हेश्वर नभकान्त नमसबहादुर[2] (नमस्कार) नरेंद्रप्रतापबहादुर नरेश्वरसहाय नलिनीरंजन (चंद्रमा) नलिनीश नवगोपाल नवजीवन (विलोमानुलोम) नरकेशरीप्रसाद नवनाथप्रसाद नवलकुमार नहुषपालसिंह[3] नागरप्रसाद नागेंद्रप्रतापसिंह (बासुकि, शेष) नाथविहारी नानकीप्रसाद (नानक की बहिन) नामप्रकाश निखिलकुमार निखिलेशचंद्र निगमनारायण निताईलाल (नित्यानंद का सूक्ष्मरूप) निपुणकुमार निरंजनदयाल निरालंबस्वामी (ईश्वर) निर्भयकान्त निर्माल्य (देवार्पित वस्तु) निर्मोलकसिंह निर्विकारस्वरूप निशामणि (चंद्र) निशिकात निहोरीलाल (<मनोहार) नीतीशकुमार नीतीशनदराय नीरजकांत नीरजकुमार नीरजप्रकाश नीरदलाल नीलकमल नीलकमलेशकुमार नीलम नीलोफर (फूल) नीहारचंद नीहाररंजन नीहारेन्दु नूतन नृपजीतसिंह नेकबहादुर नेत्ररंजन नेमकुमार(<नियम) नेमछत्र (नेमिनाथ तीर्थंकर) नौजागीरसिंह (फा०) नौहरचंद (∠ नव + घर)।

प—पंकजकुमार पंचूराम (पंच फैसला से सम्बन्धित) पंजाबरत्न **पंढरीनाथ** (पाडुरङ्ग) पखंडी पग्गल पतंगी पतंजलिदेव पताली[4] पतिरामराम पदरेणु **पद्महंस** परमकिशोर परममित्र परमहंसकुमार परमेंद्रप्रकाश पराशरमुनि[5] पराहू (पराया) परिक्रमादीन[6] परिमलकुमार

---

[1] धनंजय कवि के विषय में यह जनश्रुति प्रसिद्ध है कि एक बार उसने अपने शिष्य के द्वारा राजा भोज के पास यह श्लोक भेजा—

अपशब्दः शतं माघे भारवे च शतत्रयं।
कालिदासन्न गण्यंते कविरेको धनंजयः॥

मार्ग में कालिदास ने प्रथमाक्षर में एक मात्रा लगाकर ह्रस्व 'अ' का दीर्घ 'आ' कर दिया जिससे अर्थ बदल गया और निंदा के स्थान में कालिदास की स्तुति हो गई।

आपशब्द शतं माघे भारवे च शतत्रयं।
कालिदासन्न गण्यंते कविरेको धनंजयः॥

इस श्लोक को पढ़कर राजा कालिदास का कौशल समझ गया। धनंजय कवि अत्यन्त लज्जित हुआ।

[2] कन्या का नाम नमस्ते।

[3] अपने तपोबल से इंद्रासन प्राप्त करने पर राजा नहुष ने इंद्राणी को लेने के लिए पालकी में लगे हुए सप्तर्षियों से जल्दी-जल्दी (सर्प-सर्प) चलने को कहा, अगस्त्य ने क्रुद्ध हो राजा को शाप दिया जिससे वह सर्प होकर भूमि पर गिर पड़ा। द्वापर में युधिष्ठिर के प्रश्नोत्तरों से वह सर्पयोनि से मुक्त हुआ।

[4] पताली (<पाताल)—यह नाम कुए में गिरने की एक दुर्घटना का स्मरण दिलाता है। पताली की माँ संयोग से एक दिन कुए में गिर पड़ी। जैसे ही उसे निकालकर कुए की जगत पर रखा पताली भी उदर के बाहर आ जगत में प्रगट हो गया। जन्म से पहले वह पाताल (कुए की तली) हो आया था। इसलिए उसका नाम पताली हुआ।

[5] परासुः स यतस्तेन वसिष्ठः स्थापितो मुनिः।
गर्भस्थेन ततो लोके पराशर इति स्मृतः॥

[6] यानिकानि च पापानि जन्मांतरकृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यंति प्रदक्षिण पदे पदे॥

(सुगन्ध) परिवर्तनप्रकाश परेशनाथ पल्लवकुमार (कोपलोंसा कोमल) पशुपतिराम पहाड़ागूजर (विशालकाय) पांडुरङ्ग (बिट्ठल) पागलानंद पारब्रह्म पालेराम (दूसरे से पाले गये) पावसकुमार पिंडीदास (पं-नगर.) पिनाकीरंजन पीयूषकाति पीयूषकुमार पीयूषप्रकाश पीयूषमणि पीयूषरञ्जन पीयूषराज पुंडरीक (कमल, एक महात्मा) पुण्यात्मासिंह पुतलू (<पुत्र, पुत्तलि) पुलकचंद्र पुष्पकुमार पुष्पबदन पुष्पराज पुष्करनारायण (ब्रह्मा) पृथुवीरसिंह (महा, विष्णु) पृथ्वीदयाल प्यारासिंह प्रजापतिप्रसाद प्रजापतिसहाय प्रजापालन प्रणतपालसिंह प्रणपाल प्रणवरञ्जन प्रतापकेशरीदेव प्रतापरञ्जन प्रतापवीर प्रतापादित्यराम प्रतिभाकुमार प्रतिभारञ्जन प्रतिमारञ्जन प्रतीपकुमार (शांतनु) प्रत्यूषप्रसून (सवेरा.) प्रदोषकुमार (संध्या.) प्रद्युतविकास प्रदोषप्रसून प्रद्योतकुमार प्रद्योतदत्त (कांति) प्रभाजीतसिंह प्रभाकरराय प्रभुआश्रित प्रमथकुमार (शिव के गण) प्रमुखप्रकाश प्रवासीलाल प्रवीणकांत प्रवीणकृष्ण प्रवीणचंद्र प्रवीरकुमार प्रशांतचंद्र प्रसूनसहाय प्रह्लादशंकर प्राणगोविददास प्राणमोहनप्रसाद प्रियातोष (कृष्ण) प्रीतमप्यारा प्रीतींद्रसिंह प्रेमप्रदीब (.निष्णात) प्रेमनिवास प्रेमफल प्रेमरूप प्रेमानंदकिशोर।

फ---फणींद्रराज फलहारीलाल फारूसिंह (हलधर) फिरायालाल फिरोजीलाल (नीलम) फुटकर (अकेला) फुलेनाप्रसाद फूलगंध फूलगेंदासिंह फूलमणिदयाल फूलरेणु (पराग) फूलबहादुर।

(ब) बंगेश्वरनाथ बंदोबस्तीलाल बक्सीजयराम बचनवीरसिंह बटुकबिहारी बटेश्वरदयाल बदलराम बधावासिंह (बधाई) बनजकुमार (कमल, जंगली.) बनफूल बनीसिंह बमबमसिंह बरफसिंह बरसूराम (वर्ष, वर्षा) बर्द्धराजसिंह बलईलाल बलरूप (बलदेव) बलविक्रमसिंह बलिदानसिंह बलेश्वर सहाय बसंतकरण बांसरीलाल बादलकुमार बाबुलदास बालगोविंदराम बालीकृष्ण बालेन्दुकिशोर बालेन्दुप्रसाद बिंबधर बिजनबिहारी बिबुधेश (इंद्र) बिरई (<वीर) बिलग (पृथक्) बिसारीराम (दूर करना.) बुलगानिनसिंह[1] (दे० पृ० २६३) बूटासिंह (<विटप.) बेअंतसिंह (दे० पृ० ३७) बेधनराम (निर्धन, बिधाता) बैकुंठबहादुर (विष्णु) बैनीबहादुर ब्रह्मनारायणशङ्कर[2]।

(भ) भंबा (<भवन, <भ्रमर) भकुआ (भेक, मूर्ख) भजिहरि भदंतबुद्धि (पूजित) भद्रबहादुर भरणदयाल भरपूरचंद्र भवनिधि (शिव) भवधर भवरंजन भविष्यभूषण भवेंद्रसिंह भानुप्रतापेंद्रप्रसाद भारतगोपाल भारतभाल भारतीभूषण भारतेश्वरीप्रसाद भार्गवप्रसाद भावनदास (प्रिय.) भावित भाषासिंह भास्करमित्र भास्करसेन भिक्षुअश्वघोष (बुद्धचरित-रचयिता) भीमनारायण (शिव.) भीमराज[3]

---

[1] वर्तमान युग के प्रसिद्ध विदेशी महापुरुषों के हिटलर (जरमनी), मुसोलिनी (इटली), टीटो (यूगोस्लेविया) आदि नाम उपनाम के रूप में पाये जाते हैं।

[2] एकंसद् विप्रा बहुधा वदंति—एक ही ब्रह्म के अनंत नाम, अनंत रूप तथा अनंत शक्तियाँ हैं। वह सृष्टि रचने से ब्रह्मा, पालने से विष्णु और मारने से शंकर कहलाता है। अन्य नाम भी उसके गुणों और कर्मों के बोधक हैं। इस नाम से भिन्न-भिन्न देवों के प्रति द्वैधी भावना का निवारण कर उनके बीच समन्वय स्थापित किया गया है।

तमादि देवमजरं केचिदाहुः शिवाभिधम्।
केचिद्विष्णुं सदा सत्यं ब्रह्माणं केचिदुच्यते॥ (बृहन्नारदीय पुराण १-२-४)
सृष्टिस्थित्यंतकरणीं ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकाम्
स संज्ञां याति भगवानेक एव जनार्दन॥ (विष्णु पुराण १-२-६६)
त्वं ब्रह्मा त्वं च वै विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वं प्रजापतिः।
त्वमग्निर्वरुणोवायुस्त्वमिन्द्रस्त्वं निशाकरः॥
त्वं मनुस्त्वं यमश्चत्वं पृथिवी त्वमथाच्युतः।
स्वार्थे स्वाभाविकेऽर्थे च बहुधा तिष्ठवेदिवि॥ (मैत्रायण्युपनिषत् ४-१२, १३)

[3] माघ सुदी, ज्येष्ठ शुक्ला और निर्जला एकादशियाँ भीमा तिथि कहलाती हैं।

भुवनेशभूषण भूधरलाल भूमेशकुमार भूरचंद्र (भूरा-धवल) भूररत्नसिंह भूलाशंकर भूलोकभूषण भूषणकुमार भूपणप्रकाश भोगराम (नैवेद्य) भोगेंद्र भोपालसिंह भोमाराय (भौम-मंगल) भौमेंद्रप्रसाद।

(म) मंगलकिरण (शुभ-सूचक) मंगलमूर्ति[1] मंगलेश्वरप्रताप मंडनमिश्र[2] मंत्रेश्वर मगरलाल मणिदीप मणिभूषण मणींद्ररंजन मतंगी (एक ऋषि) मतैया मथुरेशनारायण मदनचंद्र मदनजित मदनमूर्ति मधुरकुमार मधुरशमशेरजंगबहादुर मधुराज मधुवनबिहारीलाल मनिहारलाल मनीषानंद (बुद्धि, विचार.) मनोजकाति (मनोज्ञ—सुन्दर, कामदेव.) मनोजकुमार मनोजमोहन मनोजस्वरूप मनोराज (मनमौजी) मन्नाप्रसाद ममेंद्रसिंह (ममता.) मयंकनारायण मयंकमोहन मयूरदत्त[3] मरदानसिंह मलयेशमित्र मस्तराम मस्तलाल महादेवनिहोर महाबलसिंह महाराजभूषण मानवेंद्रकुमार (पुरुषोत्तम.) मानसकुमार (कामदेव) मानसरंजन मार्गराम (मार्ग यात्रा में उत्पन्न) मित्तललाल (<मित्र.) मित्रभानु मित्रसेन (कृष्ण-पुत्र, मनुपुत्र, एक बुद्ध) मित्रावसु (एक ऋषि) मित्रोदयप्रकाश (सूर्योदय) मिथिलेशचंद्र मियांदीन मिरखूलाल (<मृषा.) मिलनकुमार मिसिरीकांतराय मिहिरकुमार (सूर्य, चंद्र.) मिहिरतिलक (शिव) मीनाक्षीसहाय (मदुरा की प्रसिद्ध देवी.) मीरपालसिंह मीरीलाल मुक्खीप्रसादसिंह (मुखिया पुजारी) मुकुटनाथ मुकुटमहेंद्रनारायण मुकुलकुमार (कली) मुकुलेंदु मुचकुंद[4] मुदितमन मुनेंद्रस्वरूप मुरलीलाल मुरारीमोहनगोपाल (कृष्ण के तीन पर्याय) मुसाफिरदास मुस्ताकराय (प्रेमी.) मूकेश (शिव) मूलवर्द्धन मूलविहारी (मूलनक्षत्र) मूलसजीवन (संजीवनी बूटी) मृगशमशेरबहादुर मृगांकमोहन (शिव) मृदुल-मनोहर मेघराज (इंद्र) मेघराजप्रसाद मेधाकर मैथिलीरमणशरण मोतीकरण मोतीसागर (एक झील) मोदव्रत मोहनमित्र मौसे (मौसी द्वारा पालित या मौसी के यहाँ जन्म)।

(य) यक्षेंद्रकुमार (कुबेर.) यज्ञव्रत यज्ञानंद यतींद्रप्रसाद यदुकुलभूषण यशवंतकुमार यशोधन-सिंह यशोवर्द्धन यादवेशकुमार युक्तिभद्र (साधनों से प्राप्त) युगराज युवनाश्व (मांधाता का पिता) योग-ध्यान योगेंद्रचंद्र योगेंद्रवीरसिंह योगेशवर।

(र) रंजनकिशोर रकमसिंह रक्षाकुमार रघुचंद्रबहादुर रघुवंशमणिप्रसाद रजतकुमार (चाँदी) रजनीरंजन (चंद्र) रजनीशचंद्र रणजीतरंजन रतनजीत रतनमोहन रतिरंजन (कामदेव) रतींद्रनाथ (कामदेव) रत्नेश रत्नेश्वरीनंदनसिंह रथींद्रगोपाल (कृष्ण) रथींद्रनाथ रथींद्रमोहन रफलसिंह (बंदूक) रविनंदनप्रसाद रविभूषण रविरंजन (शिव) रतींद्रनाथ रतीशचंद्र रश्मिमोहन राफासिंह राकेशचंद्र राकेशमोहन राजकमल राजभानुसिंह राजमंत्रीप्रसाद राजमूर्ति[5] राजर्षि राजवंशकृष्ण राजवीरप्रसाद

---

[1] मंगलायतनं हरिः।

[2] स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं
कीराङ्गना यत्र गिरो गिरन्ति।
द्वारस्थनीडान्तरसंनिरुद्धा
अवेहि तन्मण्डनपण्डितौकः॥ (शंकरदिग्विजय)

[3] यस्याश्चौरः चिकुर निकुरः कर्णपूरो मयूरो
भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः
हर्षो हर्षो हृदयवसति पञ्चबाणस्तु बाणः
केषांनैषा कथय कविता-कामिनी कौतुकाय।

[4] मुचकुंद (मुचुकुंद)—मान्धाता का पुत्र जिसकी नेत्राग्नि से कालयवन भस्म हो गया था।

[5] राजाचंद्र महीपत्योः (कोश के अनुसार राजबली और चंद्रबली में कोई भेद नहीं है)

राजशिरोमणि राजाभैया राजीवकुमार राजीवरंजनसिंह (सूर्य.) राणापराक्रमजंग रामअलंकार रामकांति रामकेश रामजपितसिंह रामभूल रामनरेंद्र रामप्रसिद्ध रामप्राण राममोग (.प्रसाद) रामराजराजेश्वरप्रसाद रामरुचिराम रामलुभाया रामवीरप्रकाश रामवृत्तराय[1] रामश्रवण रामसदय रामसुमेरसिंह रामोराम रिजू (<ऋजु सरल) रुकमनदयाल रुक्मानंद रुग्गनसिंह (रुग्णावस्था का सूचक) रूदल (रुद्र) रूपकदत्त (चाँदी.) रूपेंद्रकुमार रूबीलाल (Ruby लालमणि) रेवाचंद्र (धूतपापा, नर्वदा.) रोबिनकुमार[2]।

ल—लक्ष्मीश्वरप्रसाद लखवीरसिंह लड्डूगोपाल (∠√लाड्) लड्डूझा ललितभू लवेंद्रसिंह (राम) लखननारायण लाजवर्दीसिंह (फा० हल्के नीले रंग का मणि) लाड़लेलाल लायकलाल लालप्रताप लालभगतसिंह लालरावणेश्वरसिंह लालसालाल (पुत्रप्राप्ति की प्रबल इच्छा) लालसूरत प्रकाश लिंगराज (शिव) लेखवीरसिंह लोकप्रिय लोकप्रियराजा लोकेशनारायण लोरी (एक गहना)।

व—वत्सराज (राजा उदयन) वनदेव वररुचि[3] वरुणकुमार वसुदेवकीनंदन (कृष्ण) वसुवीरसिंह वारेवीर[4] वासुकिनाथ वाहशूर विदमाधव[5] विंदानिधि (विष्णु) विंदुदेव (शिव) विजयभूषण

---

[1] अशोक को कदाचित् राम वृत्त इसलिए कहा गया है कि लंका की अशोक वाटिका में अशोक के नीचे सीता जी निरंतर राम के ध्यान में निमग्न राम नाम जपती रहती थीं और राम नाम अंकित मुद्रिका भी हनुमान ने अशोक से सीता जी के पास डाली थी। राम की भांति अशोक भी सब शोकों को हरने वाला माना गया है—अशोक शोकशमनो भव सर्वत्र नः कुले।

[2] यह नाम प्रत्यक्ष में अंगरेजी रोबिन (Robin) मालूम पड़ता है। परन्तु यह वस्तुतः रवींद्र का बंगाली तथा अंगरेजी मिश्रित रूप है। क्या आप जानते हैं कि बेलवेडीयर (Belvedere) बलभद्र का ही आंगिल रूपान्तर है।

[3] वररुचि—एक दिन एक आदमी राजा भोज की सभा में एक पत्ता लेकर आया जिस पर अ-प्र-शि-ख ये चार अक्षर लिखे हुए थे। सभा का कोई पंडित उसका अर्थ न लगा सका। प्रधान पंडित वररुचि इस समस्या-पूर्ति के लिए एक सप्ताह की छुट्टी लेकर घर चला गया। अवधि बीत गई। वररुचि दंडभय से नगर त्याग रात्रि के अन्धकार में घर से चल दिया। चलते-चलते थककर वह एक बरगद के नीचे विश्राम लेने लगा। पेड़ पर प्रेतनी प्रेत से पूछती है—क्या बात है जो कल पंडित मारे जायेंगे। प्रेत ने कहा—राजा ने एक समस्या दी थी उसकी पूर्ति किसी से न हो सकी। प्रेतनी ने पूछा - तुम जानते हो? प्रेत ने हंसकर कहा—मैं क्या नहीं जानता। प्रेतनी के अधिक आग्रह करने पर प्रेत को उसे दोनों भाइयों की पूरी कथा बतलानी पड़ी। वररुचि यह सुनते ही चुपचाप अपने घर लौट आया। सबेरे राजसभा में जाकर उस समस्या की इस प्रकार पूर्ति की।

अरण्ये निर्जने देशे
प्रसुप्तस्य वनांतरे
शिखामादाय हस्तेन
खड्गेन निहतं शिरः

पहेली के सुलझते ही छोटे भाई की हत्या के लिए उस मूर्ख आदमी को प्राणदंड मिला और वररुचि को पुरस्कार। नीचे लिखे श्लोक का सम्बन्ध उसी घटना से है—

दिवा निरीक्ष्य वक्तव्यं रात्रौ नैव च नैव च
दूताः सर्वत्र तिष्ठंति वटे वररुचिर्यथा

[4] वाह शूर पीठ ठोंककर उसकी बहादुरी की दाद दे रहा है और वारे वीर उस पर कुरबान हो रहा है।

[5] प्रयाग के १२ माधव—शंखमाधव, चक्रमाधव, गदामाधव, पद्ममाधव, अनन्तमाधव, मनोहरमाधव, अशिमाधव, संकष्टहरमाधव, आदिवेणीमाधव, आदिमाधव या विष्णुमाधव, श्री वेणीमाधव, वटमाधव। (विशेष विवरण के लिए प्रयाग माहात्म्य देखिए)

विजयविक्रमसिंह विजयशंकरप्रसाद विज्ञानसागर विद्याभ्यासी विद्यालय विद्युन्मणि विधाता विनीत-कुमार विनोदनारायण विपलकुमार विपिनकुमार विपुलकुमार विप्रदास विप्लवभूषण (उपद्रव.) विभाकर (सूर्य, चंद्र) विभूति कृष्णबहादुर विमानमोहन विमानविहारी[१] विलासरंजन विवेकचंद्र[२] विसर्जनराम (जन्मकाल में त्यागने की भावना) विश्वकुमार विश्वनाथचंद्र विश्वजित विश्वभूषण विश्वराज विश्वराम विष्णुभगवान विष्णुविनोद वीरनाथ वीरभानुप्रताप वीरभारताधीश वीरेंद्रजीत वेणुकांत वेणुधर (मुरलीधर) वैनतेयानंद (विष्णु) वैभवभूषण वैष्णवकुमार व्रजमहेंद्रनंदनसिंह व्रजेशविहारीलाल व्रजेश्वरीप्रसाद व्रतींद्रनाथ व्रतेंद्र ।

श——शंकरमय शंकरविहारी शंकरेश्वरचन्द्र शचिनंदन शत्रुघ्नधर शमी (छोकरवृक्ष) शरण-अली (इस प्रकार के वर्णशंकरी नाम नौ मुसलिम परिवार का हिंदी प्रेम और नव स्वीकृत धर्म में अटल श्रद्धा व्यक्त करते हैं। हजरत अली मुसलमानों के एक खलीफा) शर्मीप्रसाद शशांक-शेखर (शिव) शशिपाल शांतनुकुमार (भीष्म) शारदापति शार्दूलसिंह शाहविहारी (शाहसाहब के आशीर्वाद से प्राप्त) शिलादित्य (सूर्यमूर्ति) शिवकुटीलाल शिवचंद्रिकाप्रसाद शिवयश शिवरमणसिंह शिवाशिव शिवेंद्रगोपाल शिशिरकात शीतांशुकुमार (चंद्र.) शीर्षेंदुकुमार (शिव.) शुकसेन शुक्लकुमार शुद्धतत्व शुद्धसत्व (जीव) शुभकुमार शुभचंद्र शुभनदंनलाल शुभमन्यु (शुभकर्म) शुभ्रभूषण शुभाशीष शून्यस्वामी (ईश्वर) शेखरकीर्ति शेषकुमार शेषबली शैलनारायण शैलविहारी शैलेंद्रशंकर शैवाल (सिवार) शोकलाल शोभाजीतसिंह श्याममणि श्यामलकुमार श्यामलेंदु श्यामलेंदुविकास श्यामसुख श्रद्धाकर श्रवणदेव श्रीआमोद (विष्णु) श्रीकृष्णकन्हैया (स्कंध) श्रीचंद्र-नारायणसिनहा श्रीदेवनारायण श्रीपंचमीराम श्रीभानसिंह (विष्णु) श्रेष्ठिप्रसाद (सेठ.)।

स——संजय (धृतराष्ट्र-सारथि) संजयकुमार संजीवचंद्र संतकांत संतोषबहादुर संदीपकुमार संन्यासी-बहरा संवित्स्वरूप (ज्ञान) संसारनाथ संसारपाल सईदत्तमल (सई नदी) सतवंतसिंह सतीरमणप्रसाद (शिव.) सतेश्वरप्रसाद सत्यव्रतधर सत्यार्थप्रकाश (स्वा० दयानंद कृत एक ग्रंथ) सत्येंद्रप्रतापलाल सत्रजीत (यज्ञ.) सत्संग (राधास्वामी मतानुयायियों के गुरु-उपदेश श्रवणार्थ नित्य एकत्रित होने का स्थान) सनकसिंह (एक मानसपुत्र, पागल) सनीचरदास (∠शनिश्चर) सप्तमीप्रसाद सबरसिंह समयनाथ समरविजय समरेंद्रकुमार समुद्रनाथ सरमनलाल (हरदोई की एक देवी.) सरसराम सरोजमोहन सर्वज्योति सर्वदयाल सर्वप्रिय सर्वेंद्र सर्वेशकुमार सर्वोत्तमपाल सलिलकुमार (किसी जलाशय के पास उत्पन्न) सवाईमल सव्यसाची[३] (अर्जुन) सांबभक्त (शिव.) सांवरमल सागरमोहन सागरशरण (एक तीर्थंकर) साजनकुमार साधनकुमार (सेना, उपचार.) सिखरीलाल (गहना.) सितांशुशेखर(शिव) सिमरजीतसिंह सियाप्रतापसिंह सिलेटीसिंह (सिलेटीरंग) सीतेश (राम) सुकृतदेव (विष्णु) सुखदर्शनकुमार सुखदेवसहाय सुखवदन सुखवंसनारायण सुखस्वरूप सुखीनाथ सुगनलाल (∠

---

[१] यह विशेष कालिदास का अस्तिकश्चित् वाग्विशेष नहीं है। इस नाम की यही विशेषता है कि विशेष के सब भाइयों के नाम 'वि' अक्षर से ही आरंभ होते हैं।

[२] क्वचित् पथा संचरते सुराणाम्
क्वचित् घनानाम् पततां क्वचिच्च
यथाविधो मे मनसोऽभिलाषः
प्रवर्तते तत्र तथा विमानम्

(कालिदास——रघुवंश)

[३] उभौ मे दक्षिणौ पाणी गाण्डीवस्य विकर्षणे
तेन देवमनुष्येषु सव्यसाचीति मां विदुः।

शुक) सुजावलसिंह (तु० सुजावलराजकर्मचारी)[1] सुजीतचंद्र सुतीक्ष्णप्रसाद[2] सुद्युम्न[3] सुधांशुकुमार सुधांशुभूषण सुधाकांत (चंद्र) सुधाशंकर सुधींद्रशंकर सुधीभूषण सुधीरकिशोर सुधीरनारायण सुधीरमोहन सुधेंदु सुधेंदुविकाश सुनीतकृष्ण सुप्रतीक सुप्रभात सुप्रभातरंजन सुबोधरंजन सुभद्रराम सुभाषेंदुप्रकाश सुमतकुमार सुमनकांत (इंद्र) सुमेधकुमार सुमेरमल सुरभिबहादुर सुरसरचरण सुरसरधर सुरेशशंकर सुरेश्वरीशरणसिंह सुल्लू[4] सुवीरकुमार सुवीरचंद्र सुव्रत सुशांतसेन सुशीलकिशोर सूचासिंह (जन्मसूचना, ∠ सुचित सावधान) सूबाबहादुरसिंह सूर्यउदयप्रताप सूर्यजीतसिंह सूर्यधारी सूर्यशमशेरजंगआनन्द सृष्टिधर सोमधर सोमशंकर सोमेश सोहनवीरसिंह सौभाग्यचंद्र सौमित्र (लक्ष्मण) सौम्येंद्रनाथ स्मरणकुमार स्मृतिभूषण स्वदेशकुमार स्वनाम[5] स्वप्नकुमार (पुत्र जन्म की सूचना स्वप्न में मिली) स्वयंज्योति (आत्म प्रकाश) स्वयंबरप्रसाद स्वस्तुगुप्त स्वामीज्ञानेश्वरनंद स्वार्थदास (पुत्र रूप में स्वार्थ सिद्धि)।

ह—हनुमंतेश्वरप्रसाद हनुमानभावन हनुमानराम हमीरचंद हयग्रीव (विष्णु का अवतार) हरकंठ (नीलकंठ) हरगनेशसिंह हरछठी हरज्ञानशंकर हरमहेंद्रसिंह हरिजीवन[6] हरिज्योतिसिंह हरितालिकासिंह हरिभाऊ (भाई का मराठी रूप, बलदेव) हरिवीरसिंह हरिसाधन हरीरमण हरीशभूषण हरीशविहारी हरेसुरारे[7] हरेश्वर हर्म्येंद्रकुमार (महल.) हर्षेंदराय हलकूसिंह (किसी हलका में उत्पन्न) हितशरण हिताभिलाषी हिमांशुकुमार (चंद्र.) हिमाद्रिकुमार (हिमालय) हिमाद्रिशेखर हिमेश्वरनारायण हिम्मतसहाय हिरण्मय (ब्रह्मा) हिरावनसिंह हिल्लोलकुमार (हर्ष को लहर) हीरकशुभ्र हीरककुमार हीरावन (शिव) हीरानंदन हीरेन्द्रप्रतापसिंह हुस्नसिंह (सौंदर्य.) हृदयनंद हृदयलाल हृदयबचनसिंह हृदयविकास हृदयविहारी हृदेशकुमार हृदेश्वरपति*।

---

[1] प्रयाग के पास जमुना में एक पहाड़ी टीले पर सुजावन देवता (शिव) की मूर्ति है। सुजानदेव के पास ही शृङ्गार देवी का मंदिर है।

[2] मुनि अगस्ति कर सिष्य सुजाना। नाम सुतीछन रति भगवाना॥ (रामायण)

[3] यज्ञ में विपर्यय हो जाने से मनु के पुत्र के स्थान में इला नाम की कन्या हुई जो मित्रावरुण की कृपा से सुद्युम्न नामक पुत्र बन गई। वह महादेव के शाप से फिर स्त्री हो गई और बुध के द्वारा उसे पुरूरवा नामक पुत्र लाभ हुआ। परमर्षिगण की कृपा से उसने फिर पुरुषत्व प्राप्त किया। उस सुद्युम्न के फिर तीन पुत्र हुए। (विष्णु पु० ४ अंश १ अ० श्लो० ८-१३)

[4] सुल्लू की माँ प्रसव काल में ऐसी सोई कि उसे जातक के जन्म की कुछ खबर ही न पड़ी।

[5] स्वनाम (धन्य)—अपने ही नाम से प्रसिद्ध, तीन महाव्याहृतियों (भूः भुवः स्वः) में से अन्यतम। सुखस्वरूप ईश्वर।

[6] चंद्रे सूर्ये यमे विष्णौ वासवे दर्दुरे हये
मृगेंद्रे वानरे वायौ दशस्वपि हरिः स्मृतः॥२८॥ (अनेकार्थ नाम माला पृ० ६८)

[7] यह नाम स्तोत्र की निम्नलिखित पंक्तियों का प्रतीक प्रतीत होता है।

हरे मुरारे मधुसूदनाय श्रीराम सीतावर रावणारे।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव गोविन्द दामोदर माधवेति॥ (गोविन्द दामोदर स्तोत्र)

* अजातशत्रु, अवेद्यनाथ, आस्तीकमुनि, चेलाराम, चोलानंद—ये ५ नाम इस सूची में मुद्रित होने से रह गये हैं।

सन्दर्भ-ग्रन्थ तथा ग्रन्थकार

हिंदी-संस्कृत-ग्रंथ

अद्वैतवाद (गंगाप्रसाद उपाध्याय)
आल्हखंड
उत्तरी भारत की संत परंपरा (परशुराम चतुर्वेदी)
उपनिषद्—कठ, माण्डूक्य, श्वेताश्वतर।
कविता कौमुदी ३ भाग (रामनरेश त्रिपाठी)
कांग्रेस का इतिहास (पट्टाभिसीतारमैया)
काव्यनिर्णय (भिखारीदास)
काव्य प्रकाश (मम्मट)
काव्यप्रभाकर (भानु)
कोष—अमरकोष, नाम माला (धनंजय), भार्गव आदर्श हिंदी शब्दकोष(पाठक), संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी (बी० एस० आप्टे), हिन्दी प्रामाणिक कोष, (रामचंद्र वर्मा), हिन्दी विश्व कोष, हिंदी शब्दसागर।
गणेश (सम्पूर्णानंद)
गीत गोविंद (जयदेव)
गृह्यसूत्र—आपस्तंब, आश्वलायन, गोभिल, पारस्कर, मानव, शौनक
चिन्तामणि (रामचंद्र शुक्ल, काशी)
चौरासी वैष्णवों की वार्ता
जैनग्रन्थ—आदि पुराण, उत्तर पुराण, प्राचीन जैन इतिहास (मूलचंद्र)
ज्योतिष सर्वसंग्रह
तंत्रचूड़ामणि
तीर्थ सम्बंधी ग्रंथ—तीर्थांक, (कल्याण), तीर्थों के माहात्म्य तथा झांकियाँ (विविध पुस्तिकाएँ)
भारत के तीर्थ ४० भाग (दयाशंकर दुबे)
दर्शन—योग, सांख्य
दर्शन—दिग्दर्शन (राहुल सांकृत्यायन)
दुर्गा सप्तशती
धर्मकल्पद्रुम
नारद भक्तिसूत्र
पंचतंत्र
पुराण—देवी भागवत, पद्म, भविष्य, भागवत, मत्स्य मार्कंडेय, विष्णु, शिव, स्कंद,
भक्तमाल (नाभाजी)
भगवतगीता
भारत भ्रमण पांच खंड (साधुचरणप्रसाद)
भारतीय चरिताम्बुधि (द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी)
भाषा विज्ञान (श्याम सुंदरदास)
महाभारत
महाभाष्य
मिश्र बन्धु विनोद
योग वासिष्ठ और उसके सिद्धान्त (आत्रेय)
रघुवंश
रामचरित मानस
वाल्मीकि रामायण
विचारधारा (धीरेंद्र वर्मा)
व्रत सम्बन्धी ग्रंथ—व्रत परिचय (गीताप्रेस) व्रतार्क सटीक (नवलकिशोर प्रेस), व्रतराज (व्रजरत्नदास)
सन्तवाणी संग्रह (तीन भाग)
सन् १८५७ का भारतीय स्वातंत्र्य समर (सावरकर)
संस्कार विधि (दयानंद सरस्वती)
सत्यार्थ प्रकाश (दयानंद सरस्वती)
सहस्रनाम—गोपाल, ललिता, विष्णु, शिव
सामान्य भाषा विज्ञान (बाबूराम सक्सेना)
साहित्य दर्पण (विश्वनाथ)
सुरार्चन चंद्रिका
सूरसागर
स्मृतियाँ—मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति
हिंदी भाषा का इतिहास (धीरेंद्र वर्मा)
हिंदी साहित्य का इतिहास (रामचंद्र शुक्ल)
हिन्दुत्व (रामदास गौड़)

अंगरेजी ग्रन्थ

Annals and Antiquities of Rajasthan. (James Tod, Vols-1-3)
Buddhism, (Rhys Davis)
Cambridge History of India.
Caste in India. (Hutton)
Dictionary of Indian Biography, (C. E. Buckland)
Discourses on Radhaswami Faith, (Sahabji B. S. Misra)
District Gazetteers of India. (Mathura, Fyzabad, Allahabad and Benares (Varanasi)
Elements of the Science of Language. (I. J S. Taraporewala)
Encyclopaedia Britannica.
Encyclopaedia of Religion & Ethics. (Hastings)
Epics, Myths and Legends of India, (P. Thomas)
Every day Psychology for man and woman (A. E' Mande)
Geography of Ancient India.(Cunningham)
Growth of Civilization. (Parry)
Hindu Manners and Customs, (Dubois)
Hindu Religion, Customs and Manners, (P. Thomas)
History & Culture of the Indian People (B. V. B.)
History of Sanskrit Literature (Macdonell, Keith)
Imperial Gazetteers of India.
Indian Aesthetics. (Ram Swami Shastri)
Indian Culture. (Kamla Lectures by Harendra Nath Dutta)
Indian Philosophy Vols. 2 (Radha Krishnan)
Influence of Islam on Indian Culture. (Tara Chand)
Introduction to Comparative Philology (Gune)
Jatakas (Cowell)
Literary History of India (R. W. Frazer)
Manual of Buddhism. (H. Karnik)
Manual of Ethics (John Mackenzie)
Medieval Mysticism of India (Sen and Ghosh)
Modern Religious Movement in India (Farquahar)
Myths of the Hindus & Buddhists, (Noble & Kumar Swami)
Nelson's Encyclopedia
Nirguna School of Hindi Poetry (P. D. Barthwal)
Oxford History of India (Vincent Smith)
Philosophy of Fine Arts (Hegel)

Psychology (Woodworth)
Puranic Records on Hindu Rites & Customs (R. C. Hazara)
Rama Nand to Ram-Tirth (Nateson)
Thackers Directory of India, Burma & Ceylon
The cultural Heritage of India (Vol. IV The Religions)
The Essential Unity of all Religions (Bhagwandas)
The Indian Pantheon (Moor & Simpson)
The Mythology of All Races (Vol—VI India by Keith)
The New Popular Encyclopedia.
The Philosophical Discipline (G. N. Jha)
The Philosophies and Religions of India (Yogi Ram Charak)
The Popular Religion & Folklore of Northern India (Crooke)
The Religion of the Sikhs (Field)
The Religious Quest of India (Faruquahar-Griswold)
The Science of Emotions (Bhagwan Das)
The Theory of Proper Names (A. H. Gardiner)
Thoughts on Forms and symbols in Sikhism (Gyani Sher Singh
Who's Who of India.

कुछ अन्य ग्रंथों तथा पत्र-पत्रिकाओं का नामोल्लेख मूल ग्रंथ के अंतर्गत यत्र-तत्र हो चुका है।